नक्कालों से सावधान

प्रकाशक–भार्गव पुस्तकालय, बनारस

लेखक–अमरपालसिंह "विशारद,,

देखकर लीजियेगा ।

अन्यथा धोखे में पड़कर पछताइयेगा ॥

कोकशास्त्र

(छठवां संस्करण)

(मानव रति तथा जीवन सम्बन्धी एक अपूर्व ग्रन्थ)

आजकल वैवाहिक जीवन भारस्वरूप और दुनि झंझटों का केन्द्र बन रहा है। पति और पत्नी इच्छा रखत भी एक दूसरेको प्रसन्न नहीं रख सकते। कारण यह है पतिपत्नी अपने २ कर्तव्यों को नहीं जानते। दम्पति का ए दूसरे के प्रति क्या कर्तव्य है, वैवाहिक जीवन क्योंकर सफल और सुखमय हो सकता है। गृहस्थाश्रम किस प्रकार स्वर्ग का नमूना बनाया जा सकता है, स्त्री पुरुष को–पुरुष स्त्री को किस प्रकार प्रसन्न और वश में रख सकता है इत्यादि २ बातों को सर्व साधारण के सामने रखने के लिये ही यह पुस्तक प्रकाशित की गई है। पृष्ठ संख्या ४००। सचित्र और जिल्ददार पुस्तक का दाम २)

पुस्तक मिलने का पता–

भार्गव पुस्तकालय,

गायघाट, बनारस सिटी।

विषय सूची

* इति *



* इति *

भूमिका



सम्पूर्ण आल्हा के रसिकजनों को विदित हो, कि मुझको छोटी अवस्था से ही आल्हा सुनने में बड़ा प्रेम था, जहाँ कहीं आल्हा का गाना होता हुआ सुनता तो मैं वहाँ जाकर बड़े प्रेम से सुनता था।

मैंने जहाँ तक अनुभव किया, वहाँ तक आल्हा का गान एकही प्रकार सब आल्हैतों की बाणी से सुनने में आया। अर्थात् सैकड़ों शब्द और तुक ऐसे हैं कि उनको सब अल्हैत लोग एकही प्रकार से गाते हैं जैसे कि:—

खट खट खट खट तेगा बाजै * बोलै छपक छपक तलवार ॥
चलै जुनब्बी और गुजराती * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकै बर्दवान के * कटिकटिगिरैं सुघरुआज्वान ॥

इस प्रकार आल्हा सुनते-सुनते मुझको भी आल्हा में बहुत कुछ अभ्यास हो गया। इस कारण बहुत दिनों से मेरा बिचार था कि मैं आल्हा की एक पुस्तक लिखूँ इतने ही में काशीजी के भार्गव पुस्तकालयाध्यक्ष की ओर से मुझे आल्ह-खण्ड लिखने की आज्ञा हुई, तब मैंने इस देश की बोली में आल्हैतों के गाने के अनुसार यह आल्हखण्ड लिखा है।

इस आल्ह खण्ड में असली तेइस लड़ाइयों के अन्तर्गत बावन लड़ाइयाँ हैं जो महोबे के आल्हा ऊदन आदि वीरों और दिल्ली के पृथ्वीराज आदि महाराजाओं से हुई हैं।—

लेखक—

शुभमिति

सम्वत् १९८१ सन् १९२५ ई० } शिवचरणलाल मास्टर

लखीमपुर, खीरी।



प्रस्तावना

* दोहा *

प्रथम सुमिरि गणपति चरण, बहुरि शारदा माय ॥
आल्ह खण्ड प्रस्तावना, लिखत सु अवसर पाय ॥

* आल्हा *

ब्रह्म सनातन को सुमिरौं मैं * सुमिरौं पुनिअनन्त भगवान ॥
जो उपजावत जग ब्रह्मा हुइ * रक्षा करत विष्णु हुइ जान ॥
पुनि संहारत महादेव हुइ * महिमा अमित कहीनाजाय ॥
भीर परत जब जब भक्तनपर * तब तब आपुइ करत सहाय ॥
दश अवतार प्रगट जगमें हैं * तिनके नाम लेउँ हर्षाय ॥
प्रथम मत्स्य अवतार धारिके * शङ्खासुरहि कीन्ह बधजाय ॥
रक्षा कीन्हीं सब देवन की * दूजो कूर्म रूप भगवान ॥
पीठि आपनी पर गिरि धारो * ताते मथो समुन्द्र महान ॥
हुइ बराह पृथिवी धारणकरि * मारो हिरणयाक्ष बलधाम ॥
यह अवतार तीसरा जानहु * सुमिरत होय सिद्धसबकाम ॥
चौथो रूप धरो प्रभु हरि ने * सोहम तुमहिंकहतसमुझाय ॥
बैर कियो हिरणाकुश प्रभुते * अरु प्रहलादहिं दोन्ह बँधाय ॥
ताहि समैया नारायण प्रभु * नरहरि रूप पहूँचे जाय ॥
उदर बिदारो हिरणाकुश को * अरुप्रहलादहिं लीन्ह बचाय ॥
पंचम रूप धरो बावन को * भिक्षुक बने दास के काज ॥
तीनि पैगपृथिवी बलिजी से * माँगी जाय छाँड़ि के लाज ॥
रूप बढ़ायो पुनि बामन ने * नापे तीनि लोक सुरराय ॥
सुमन वृष्टि भइ स्वर्गलोक से * भये प्रसन्न देव समुदाय ॥

छठो रूप श्री परशुराम को * जिनको जानतसकलजहान ॥
कहँलगिबरणौं तिनकेबलको * मारो सहसबाहु बलवान ॥
पुनि जब भीर परी भक्तनपर * पूरण रूप आय करतार ॥
सरयू निकट अयोध्याजी में * लीन्हों रामचन्द्र अवतार ॥
बहुरिसतावन लगे असुरगण * साधू सन्त भये भयमान ॥
मथुरा माहिं रूप गुण सागर * प्रगटे कृष्ण चन्द्र भगवान ॥
रक्षा कीन्हीं सब भक्तन की * मारे कन्स आदि खलराज ॥
भये सहायक पांडव कुल के * सारथि भये भक्त के काज ॥
सोई पांडव कलियुग प्रगटे * आल्हा आदि शूर सरदार ॥
गर्व नशायो सब क्षत्रिन को * अरु जग अमर रही तलवार ॥
पुनि हुइबौद्धयोगधारणकरि * राजत जगन्नाथ दरबार ॥
दशम रूप कल्की जग हुइहैं * यह हैं प्रगट दशौ अवतार ॥
भूप युधिष्ठिर भीमसेन अरु * अर्जुन नकुल बीर सहदेव ॥
पाँच पांडव यही पांडु सुत * इनको सुनहु युद्ध को भेव ॥
भई लड़ाई कुरुक्षेत्र में * कौरव रहे दूसरी ओर ॥
जीते पांडव जय बोले तब * सम्मुख कृष्ण केर करजोर ॥
इच्छा भरी नाहिं लड़िबे से * सोचे तुरत कृष्ण भगवान ॥
रहा गर्व भीमादिक के मन * ताते इन्हैं देउँ बरदान ॥
एवमस्तु कहि प्रभु बोले तब * इच्छा पूर्ण करौं कलिकाल ॥
सोई आय भए कलियुग में * आल्हा आदि शूरकलिकाल ॥
राजा दुर्योधन प्रगटे पुनि * दिल्ली पृथीराज चौहान ॥
दुस्सासन जन्मेउ धाँधू हुइ * चौंड़ा भयउ द्रोण बलवान ॥
इन्दल बेटा जो आल्हा को * सो अभिमन्यु केर अवतार ॥
ताहर बेटा पृथीराज को * सोई कर्ण क्यार अवतार ॥

मराडलीक जो भूप युधिष्ठिर * छायो सुयश जासु संसार ॥
प्रगट भये सोई आल्हा हुइ * जगमें अमर रही तलवार ॥
प्रगटे भीमसेन ऊदन हुइ * कलहा दस्सराज के लाल ॥
जन्मे अर्जुन ब्रह्मानन्द हुइ * जिनके पिता रजापरिमाल ॥
भये सहदेव प्रगट तरवरिहा * सिरसा केर वीर मलिखान ॥
बावन गढ़ के क्षत्री जीते * जीते बड़े बड़े बलवान ॥
लाखनिराना कनवज वारे * पांडव नकुल केर अवतार ॥
बेटा कहिये रतीभान के * नाती बेनि चक्कवै क्यार ॥
रानी द्रोपदि बेला हुइके * प्रगटी पृथीराज घर जाय ॥
पाराडव कौरव युद्ध हेतु महि * यहिबिधि प्रगट भये सबआय ॥
कथा पुराण केर चर्चा उठि * होवे आल्ह खराड सब ठाम ॥
ताते समर कहौं आल्हा को * क़ायर सुने होत बलवान ॥
बावन गढ को यह साखी है * भइ घनघोर जङ्ग मैदान ॥
जबहीं इच्छा होय तुम्हारी * तबहीं पढ़ौ सुनौ धरि ध्यान ॥
हाथ उठाये मैं भाषत हौं * यारो सुनलो कान लगाय ॥
कभी न भुलिहौ परमेश्वर को * रहियो प्रीति रीति मनलाय ॥
कारी बदरिया पानी बरसै * औ वर्षा की होय बहार ॥
तबहीं पढ़ौ सुनौ आल्हा तुम * मनमें सुमिरि राम करतार ॥

* इति प्रस्तावना *



वन्दना ।

श्रीगणेश जी ।

दोहा–एक रतन करिवर बदन, सुखमा सदन सुरेश ॥
बिकट कोटि संकट हरण, अशरण शरण गणेश ॥१॥

छन्द–त्रिभंगी ।

जयजय गणनायक जयति विनायक जन सुखदाय लंबोदर ।
जय जय प्रतिपाला दीन दयाला रूप बिशाला जग शेखर ॥
जय जयति अनंता जय भगवन्ता जय इकदन्ता नाग वदन ।
जय गौरीनन्दन त्रिभुवन वन्दन शत्रु निकन्दन सिद्धिसदन ॥२॥

श्रीभगवतीजी की सवैया ।

हो बरदानि अनुग्रह खानि सुनी यह बानि भवानि तिहारी ।
द्वौ कर तीव्र गदा धरि ज्यों करती सब दासन की रखवारी ॥
त्यों करिये हमरो रखवारि दया उर धारि सुनौ करतारी ।
केवल है अवलम्ब तुहीं जगदम्ब बिलम्ब कहा मम वारी ॥३॥

छन्द–चौपदी ।

जय त्रिभुवन वन्दनि सुर उर चन्दनि दुष्ट निकन्दनि सदाजये ॥
मम विपति विभंजनि खलदलगंजनि जनमनरंजनि कृपामये ॥
जय जय जय जननी भवभयहरनी जगनिस्तरणी शिववामा ॥
जय विषय निवारनिकलिमल हारनि अधम उधारनि सुखधामा ॥

सौरनी-छन्द आल्हा

सुमिरि भवानी श्रीजगरानी * दुर्गा महा कालिका माय ॥
दानव मारे मधुकैटभ से * अरु महिषासुर दीन्ह गिराय ॥
चंड मुंडका भक्षण कीन्हा * कीन्हा रक्त बीज का नाश ॥
शुम्भ निशुम्भ बिदारेउ माता * निशदिन करौं तुम्हारी आश ॥
हाथ जोरि के माता माँगौं * राखौ अम्ब नाम की लाज ॥
सदा से दानी नाम तुम्हारो * प्रतिदिन करौ संतके काज ॥
रूप अनेक धरो जगदम्बे * अरु भक्तन की करो सहाय ॥
तैसेइ दृष्टि दया की करिके * मेरे कंठ बिराजो आय ॥
गावनवाले को स्वर दीजै * औ बजवैये को दीजै ताल ॥
नाचनवाले को नैना देउ * मर्दको देउ खड्ग अरु ढाल ॥
गावनवाले को स्वर बाँधे * बाँधे ताल मँजीरन क्यार ॥
नाचनवाले को पग बाँधे * ताको करै कालिका छार ॥

श्रीकाशीजी-आल्हा

पुनि मैं सुमिरौं श्रीकाशीजी * है जहँ विश्वनाथ दरबार ॥
उमानाथ शंकर निशि बासर * सब कहँ मुक्ति देत सुखसार॥
अन्नपूर्णा के दर्शन जहँ * भैरव नाथ केर जहँ धाम ॥
लोल तरंगा तट गंगा को * सुमिरे होत सिद्धि सबकाम ॥
लसत मन्दिरन की शोभा जहँ * लोभा रहत चित्त लखि हाट ॥
बाट मनोहर जहँ बिलसतबर * मणिकर्णिका आदि जहँघाट ॥
करैं भवानी नित रक्षा जहँ * निशिदिन फिरोवरद असवार॥
पाप दुरावत जन्म जन्म के * दर्शन किये एकही बार ॥

श्रीशिवजी-आल्हा

पुनि पद बन्दौं शिवशंकरके * ज्यहि शिर गंग भंग आधार ॥
भस्म रमाये अंग अंग में * नंदी बृषभ नाथ असवार ॥
भाल चन्द्रमा अति सोहत है * धारे कराठ मुराड की माल ॥
बीछू साँप आभरन तन में * अम्बुज सरिस नैनत्रयकाल ॥
जटा जूट अर्धंग बिराजै * आधे अंग अम्बिका माय ॥
भूत पिशाच प्रेत सँग डोलैं * बोलैं बचन बनाय बनाय ॥
डमरू हाथ त्रिशूल बिराजै * शोभा जासु बरनिनहिं जाय ॥
सुखराशी कैलाश निवासी * हैं अबिनाशी शंभु सुजान ॥
जन सुखदायक हैं सब लायक * पूरन करैं दास मन लाय ॥
जाके सुमिरे दोउ दिशि सुधरैं * अरु मनमोद होय अधिकाय॥
अब मैं बरणों आल्हखंड से * नीकी भाँति युद्ध सवक्यार ॥
गावन वारे की इच्छा से * कहिहौं बीर पँवारो गाय ॥
भारत शूरन को पुरुषारथ * यारो सुनियो कान लगाय ॥

इति वन्दना ।



आल्हाका संक्षिप्त इतिहास ।



जब युधिष्ठिर आदि पाण्डवों तथा दुर्योधन आदि कौरवोंका कुरुक्षेत्र में महाभारत नामका घोर युद्ध हुआ तो उसमें भगवान् कृष्णचन्द्रजी की सहायता से पाण्डवों की विजय हुई और अन्यायी कौरवों की पराजय। कुछ दिन बीतने पर एक दिन भीमसेन ने कृष्णचन्द्रजी से कहा-"भगवन्! युद्ध तो हुआ और उसमें जीता भी; लेकिन अभी युद्ध से मेरी इच्छा पूर्ण नहीं हुई है। मैं चाहता हूँ कि मुझे कोई अवसर मिले तो मैं युद्ध करके अपनी इच्छा पूर्ण करलूँ" इस तरह भीम की गर्वित वाणी सुनकर भगवान् ने सोचा कि, युद्ध में विजय पाने से इनको अभिमान होगया है इनका अभिमान किसी तरह नष्ट करना चाहिए। फिर भीमसेन से कहा—"अच्छा अब कलियुग में तुम्हें युद्ध करनेका अवसर मिलेगा। उसी युद्धमें शत्रुओंके हाथसे तुम्हारी मृत्यु होगी और तुमको परमधाम मिलेगा"। भगवान्के कथनानुसार दूसरे जन्ममें युधिष्ठिर आल्हा, भीमसेन ऊदन, अर्जुन ब्रह्मानन्द, नकुल लाखनि, सहदेव मलिखान तथा अभिमन्यु इन्दल हुए। उधर कौरवोंमें दुर्योधन पृथ्वीराज, दुःशासन धाँधू, कर्ण ताहर और द्रोणाचार्य चौंड़ा नामक ब्राह्मण हुए। यहींसे आल्हखण्ड का बीजारोपण होता है।

महाराज परिमाल (चन्देले) की उत्पत्ति ।

कलियुगके कुछ वर्ष बीतनेके अनन्तर चंदेले नगरमें चन्द्रवंशीय चन्द्रब्रह्म नामक एक बड़े धर्मात्मा तथा न्यायशाली राजा हुए।' महाराज चन्द्रब्रह्म पर प्रसन्न होकर चन्द्रदेव ने एक पारसमणि दिया जिसके स्पर्शसे लोहा भी सोना बन जाया करता था। इस कारण महाराज चन्द्रब्रह्म ने कितने ही यज्ञ किये और विशाल सेना लेकर पृथ्वीके राजाओं से युद्ध किया, सबको अपने आधीन करके कालिंजर में क़िला बनाया और वहीं रहने लगे। चन्द्रब्रह्मके मन्त्री चिंतामणि तोमर वंशीय क्षत्री थे। इसके अनन्तर चन्द्रब्रह्मका देहपात हुआ। चन्द्रब्रह्मका पुत्र वीरब्रह्म, वीरब्रह्मके रूपचन्द्र, रूपचन्द्रके ब्रजब्रह्म, ब्रजब्रह्मके वन्दन, वन्दनके जगब्रह्म, जगब्रह्मके सत्यब्रह्म, सत्यब्रह्मके सूर्य-

ब्रह्म हुए। सूर्यब्रह्मने एक सूर्यकुण्ड बनवाया था। फिर सूर्यब्रह्मके मदनब्रह्म, मदन ब्रह्मके कीर्तिब्रह्म हुए, कीर्तिब्रह्मके नामसे कीर्तिसागर आज भी प्रसिद्ध है। महाराज कीर्तिब्रह्म एक असाधारण योद्धा थे, इनके पास हमेशा बीस लाख सेना युद्ध करनेके लिए तैयार रहती थी (इन्हीं) कीर्तिब्रह्मके सुपुत्र परिमाल (चंदेले) हुए।

महाराज परिमालका विवाह।

राजा वासुदेवका दूसरा नाम था मालवन्त, वे महोवेके एक प्रतापशाली राजा थे। उनके दो बेटे थे जिसमें एकका नाम था माहिल और दूसरेका भोपति। एक कन्या थी मल्हना। मल्हना बड़ी ही सुन्दरी थी उसके अलौकिक सौन्दर्यके सामने चाँद शरमा जाता, गुलाब कुम्हला जाते और कमल पानी में डुबकी लगा लिया करते थे। वह अपनी एक मुस्कानसे रोतेको हँसा सकती थी और ज़रासा भृकुटी टेढ़ी करके बड़े-बड़ों को रुला देती थी। उसके सौन्दर्य की तारीफ महाराज परिमालके कानों तक पहुँची। उन्होंने वासुदेव पर चढ़ाई की। वासुदेव ने हार मान कर मल्हनाका विवाह परिमालके साथ कर दिया। मल्हना ने चंदेली में रहना पसंद नहीं किया, इस कारण परिमाल अपनी पटरानियों तथा मल्हनाको साथ लेकर महोबा ही में रहने लगे। वासुदेव अपने दामाद परिमालको महोवे में बिठालकर स्वयं उरई में रहने लगे। वासुदेवका कुछही दिनों बाद देहान्त हो गया और उनके स्थान पर माहिल राज काज करने लगा।

माहिलने राजा परिमालसे चुगली माफ कराली किन्तु मनही मन वह अपने पिताका बदला लेनेके दाँव घात में लगा रहा करता था। माहिल परिहार क्षत्रिय था और उसके सवारीके लिए एक लिल्ली नामकी घोड़ी थी। परिमाल माहिलको अपना सच्चा साथी मानते थे। वही आगे चलकर इस सर्वनाशका कारण हुआ। वृद्धावस्थामें पहुँचकर परिमाल ने तीर्थयात्रा की और दीन हीन ब्राह्मणोंको दान दिया। उस समय तक प्रायः सभी रजवाड़े, युद्ध से या मित्रता से परिमालके वशवर्ती हो चुके और परिमाल अमरनाथ गुरुका आज्ञानुसार अपनी तलवार सद्दमुद्रस्नात करके शपथ खा चुके थे कि, अब मैं किसी अस्त्रको हाथ से छुऊँगा भी नहीं। इसी कारण उस वृद्धावस्था में युद्धका नाम भी सुनकर परिमाल काँप उठते थे। दूसरे अपनी घरसंचित

कीतिका भी उन्हें ख्याल था कि, कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ अपने जीवन में मैंने कमाया है उसे थोड़ी ही गलती पर गँवादूँ। राजा पारमालके ही वंश में एक चंपावती नामकी कन्या राठौर वंशज कन्नौज महाराजको व्याही थी। उसी वंश में देशके कलंक स्वरूप राजा जयचंद भी थे।

दस्युराज बच्छराज (बनाफरों) का वृत्तान्त—

चन्द्रवंशीय महाराज चंद्रब्रह्मके देहांत होने से उनके मंत्री चिंतामणिको दारुण शोक हुआ। शोककी मात्रा बढ़ती ही गई और वे उरई से चलकर हिमालय पर्वत पर पहुँचे और वहाँ १२ वर्ष तक शिवजीका घोर तपस्या की, शिवजी प्रसन्न होकर प्रगट हुए और कहा कि वर माँगो, तब चिंतामणि ने यही वर माँगा कि मेरे वंशके शूर वीर चंदेलेके राजा हों, शिवजी ने 'एवमस्तु' कहा और अन्तर्ध्यान होगए। फिर चिंतामणिकी वंशावलि इस प्रकार चली—चिंतामणिके शशिपाल, शशिपालके कृपाचंद्र, कृपाचन्द्रके मकरन्द, मकरन्दके अक्रूर, अक्रूरके टोडर, टोडरके रहिमल, रहिमलके सोरठ, सोरठके सल्ल व वल्ल हुए। इन दोनोंमें बड़ा प्रेम था। बड़ा होने पर एकाएक दोनोंके मनमें वैराग्य उत्पन्न हो गया और संसार छोड़कर वनमें भाग गए। जाते २ गुरु गोरखनाथके पास पहुँचे, उन्होंने इनको देखतेही समाधी लगा ली और तीन दिनके बाद समाधि खोला तो देखा कि अब भी वे दोनों नवयुवक उनके दर्शनार्थ बैठे है। ऐसी दृढ़ भक्ति देखकर गुरु गोरखनाथ बहुत प्रसन्न हुए और इनकी प्रार्थनानुसार इन दोनोंको अपना शिष्य कर लिया। योगकी रीतियाँ सिखलाई और वे दोनो भी गुरु आश्रमके पास ही योग किया करने लगे।

गोरखनाथ जी के अखण्ड प्रताप से उस वन में सिंह और गाय दोनों एक घाट पर पानी पीते थे। कुछ दिनके बाद गुरु गोरखनाथ ने उन दोनों भ्राताओं को आज्ञा दी कि—तुम दोनों भाई यहाँ से कुछ दूर जाकर योग साधन करो। गुरुजीकी आज्ञा मानकर वे दोनों थोड़ी दूर पर नदीके किनारे एक वन में योग साधन करना प्रारम्भ किया। एक दिन अचानक सिंहके बच्चे और गाय के बछड़े आपस में खेलते हुए उनके आश्रम पर आ पहुँचे। उन्हें देख कर सल्लने अपने मनमें विचार किया कि यदि सिंहका बच्चा होता तो मैं भी इसी तरह खेलता कूदता रहता। वल्लने विचार किया कि, यदि गऊ का बछड़ा होता तो क्या आनन्द से जीवन बिताता।

इस प्रकार दोनों भाइयों ने अपने-अपने मनमें सोचकर प्राणायाम किया समाधिके लिए वायुको खेंचकर ब्रह्माण्ड में चढ़ा लिया। दोनों भाई प्राण-वायु को चढ़ाना तो जानते थे, लेकिन उतारना नहीं जानते थे। तीन दिन तक वैसेही पड़े रहे और चौथे दिन उनके प्राण पखेरू उड़गए। शास्त्रका वाक्य है कि, अन्ते मतिः सा गतिः—अर्थात् मृत्युके समय जिसका जैसा विचार होता है वैसाही उसकी गति होती है। इसी वाक्यके अनुसार दूसरे जन्म में सल्ल सिंह की योनिमें उत्पन्न हुआ और वल्ल गऊकी योनि में। पूर्व जन्म के सम्बन्ध से इन योनियों में भी ये दोनों आपस में बड़ी प्रीति रखते थे। सिंहका बच्चा तथा गायका बछड़ा दोनों हमेशा एक साथ उठते बैठते और खेलते कूदते थे। धीरे २ दोनों बड़े हुए और जीविका की चिंता हुई। तब सिंहने अपने चिरसंगी बछड़े के गले में एक घंटा बाँध दिया और कहा कि 'तुम आनन्द के साथ इसी बनमें चरते रहा करो, मैं शिकारकी खोज में कुछ देरके लिए तुमसे अलग हो जाया करूँगा। संयोग वश तुम्हारे ऊपर कभी कोई विपत्ति आजाये तो इस घंटेको बजाना मैं तुरन्त आ पहुँचूँगा और तुम्हारा कष्ट दूर करूँगा। इस प्रकार समझा बुझाकर सिंह चला गया। उसके चले जाने पर बछड़े ने चरते २ देखा कि देखें तो यह घंटा सचमुच मेरी विपत्कथा मेरे मित्रके पास पहुँचा सकता है या ऐसे ही जीको तसल्ली देनेही के लिये है। यह विचार कर बछड़े ने घंटा बजाया और क्षण भरके भीतर ही सिंह आ पहुँचा। बछड़े ने कहा भैया! माफ करना अबकी बार तो मैंने परीक्षा के लिये बजाया था। सिंह फिर उधर ही लौट गया जिधर से आया था।

एक दिन सिंह शिकार को चला गया, बछड़ा चरने लगा। उधर से एक कसाइयों का जत्था आ पहुँचा। उसमें से एक ने कहा—यार यह तो बड़ा मोटा ताजा बछड़ा है, लावो फन्दा डालकर इसे फँसालें। बात पक्की होगई और बछड़े राम फँस गए वधिकों के जाल में। घण्टा बजाया, बहुत कुछ उछले कूदे, रस्सा तोड़ना चाहा, लेकिन कैसे टूटता, वह तो उस तुन्दिल बछड़े के लिए कालपाश था। उधर सिंह ने घण्टेकी आवाज़ सुनी तो सोचा "वह खेलवाड़ी है, उस रोज की तरह आज भी परीक्षा ले रहा होगा" थोड़ी देरके बाद जब उसकी चीत्कार सुनी तो भागा लेकिन वह अपने एक मात्र मित्रके पास पहुँचा तब; जब उसके शरीरसे शिर अलग होगया था, प्राण वायु उड़कर अनन्त आकाशमें विलीन होगये थे। अपने प्यारे सखाको इस दशामें देखकर उसे जो तीव्र वेदना

हुई होगी यह भुक्त भोगी ही समझ सकता है। फिर भी उसके आँखों से आँसू नहीं निकलते थे और उसने उन भयभीत पिशाचों से कहा कि—मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ लेकिन इसके दण्डरूप में तुम्हें एक बड़ीसी चिता बनानी होगी झटपट लकड़ियाँ इकट्ठी करो। सिंह के कथनानुसार वधिकों ने लकड़ियाँ जुटाई और चिता बनाकर आग लगादी। बच्चेको उन्हीं लोगोंसे चितामें डलवा दिया और उन वधिकोंको वहाँसे चले जानेकी आज्ञा दे दी। सिंह उस धधकती हुई चिताको देखकर कुछ देरतक रोता रहा फिर साथी बन गया। उसी समय शिवपार्वती अचानक वहां आ पहुंचे। पार्वती ने पूछा हे प्रभो! इस वियावान जङ्गल में यह चिता किसकी जलरही है। शिवजीने पहिले तो टाल मटोल किया फिर उनका सारा इतिहास कह सुनाया। फिर पार्वतीजी ने कहा महाराज! हम लोगों के पहुंचने पर भी क्या ये बिचारे जलकर राख हो जायेंगे? दयामय! दयाकरो और इन बेचारोंको फिरसे जीवित करदो। पार्वतीजीके कहने से शिवजी ने उस चिता पर अमृत छिड़ककर उन दोनोंको जीवित किया। पलमात्रमें उस चितासे दो नवयुवक निकलकर शिवजीके सामने खड़े हुए। शिवजी ने उन दोनों में से एकका नाम दस्युराज और दूसरेका नाम वत्सराज रक्खा और वरदान दिया कि तुम दोनों बड़े पराक्रमशाली होओगे। तुम दोनों कुछ दिन कन्दमूल खाकर इसी वन में समय बिताओ। एक रोज राजा परिमाल यहाँ आएगा और तुम्हें अपने राजका अधिकारी बनाएगा। यह कहकर शिव पार्वती अन्तर्ध्यान हो गए और दस्युराज तथा वत्सराज वहीं हा रहने लगे। कुछ समयके कथनानुसार परिमाल वहां आ पहुंचे तो क्या देखा कि दो बलवान भैंसे आपसमें लड़ रहे हैं परिमाल तो खुद उन्हें उठाने में असमर्थ थे, उन्होंने अपने आदमियोंसे कहा—"मार्ग में खड़े हुए इन भैंसोंको भगाओ" परन्तु उनमें से हटानेवाला कोई भी वीर न निकला जो उन भैंसोंको हटानेका सामर्थ्य रखता। इसी दर्मियानमें दस्युराज, वत्सराज सहोदर दोनो भाई उसी रास्ते से गुजर रहे थे। उन्होंने उन भैंसोंको तुरंत हटा दिया, उनका यह अनुपम साहस सराहनीय था। उन्हे वीर समझकर राजा परिमाल ने पूछा 'तुम कौन हो कहाँ से कहाँ जा रहे हो और तुम्हारा नाम क्या है और तुम्हारे माता पिताका नाम क्या है?' उन्होंने उत्तर दिया—हम अपने माता पिताको नहीं जानते, वे हमको दुधमुहें छोड़कर चलबसे। एक साधु अपनी धर्मपत्नी सहित हमको मिला। आज दिनतक उसने हमारा भरण-पोषण किया और हमारा नाम दस्सराज बच्छराज रखकर कहा

कि, तुम्हें राजा परिमाल ले जावेगा। यह सुनकर परिमालने सादर उनको अपने साथ लेकर वहाँसे कूँच किया। अपने राजमहलमें जाकर राजा परिमाल ने उन्हें अपनी रानीके सपुर्द किया। रानी भी उनकी सुन्दर सलोनी मूर्तिको देखकर मनमें फूली न समाई। राजा से उनकी दिन चर्चा पूछने लगी। राजा ने भी उन्हीं के मुखसे सुनी हुई बात रानीसे कह सुनाई। रानी उन्हें अनाथ समझ कर अपने बच्चोंका सा प्रेम करने लगी। वे भी बालकोंकी भाँति रहने लगे। उसी वर्ष में उनका यज्ञोपवीत, विद्याध्ययन आदि संस्कार बडे धूमधाम से किये गए। वीर, युद्धविद्यामें निपुण समझकर राजा परिमाल ने उन्हें बकसर में रहिसल, टोडरमल सगे भाई जो युद्ध विद्या में पूरे जानकार थे उनके पास भेजदिया। दोनों भाइयों ने उन्हें वीर समझकर अपना दोस्त बना लिया, चारोंमें घनिष्ठ मित्रता होगई। अपने सगे भाई समझकर अपना सब हुनर सिखा दिया। दस्सराज बच्छराज बनमें रहते थे। इनकी पैदाइश भी वहीं की थी, यही कारण है कि लोग इन्हें बनाफर कहते थे।

एक दिन इन चारोंसे बनारसी वाली मीरताल्हनसे कुछ बखेड़ा हो गया। पाचों मिलकर राजा जयचन्दके पास फैसला कराने कन्नौज जा रहे थे कि महोबे में हरकारे से कन्नौज जा रास्ता पूछने लगे। हरकारा समाचार सुनकर कहने लगा कि "राजा जयचन्द परिमालको दिल से मानते हैं, तुम यहीं ठहर जावो वे जोकुछ लिख देंगे वही फैसला हो जायगा"। वे वहीं राजद्वार पर ठहर गये। उसी रातको जम्बेका कुँवर करिया; माहिल परिहारके बहकानेसे मल्हना का नौलखा हार लेने आया था। फाटक पर अपने तीखे कुल्हाडे को बेधड़क मारने लगा। यह देख विचारे बनाफर और ताल्हन सैयद ने अपने पुत्र और नातियों सहित उनपर धावा कर उसे भगा दिया। राजा परिमाल ने उनको वीरता सराहते हुए उन्हें धन्यवाद देकर सम्मानित किया। वीर समझकर दस्सराज, बच्छराजका विवाहकर अपने राज्य में रहने की प्रतिज्ञा दी। वे दोनों वहीं बसने लगे और ताल्हनको वीर समझकर नातीपोतों सहित वहीं रोक कर अपनी फौजका मालिक बना दिया। महोबे से आधा कोस दूरी पर दशहर-पुरवा नामक एक गाँव बसाकर भिभावटकोट बनाया, जिसमें दस्सराज रहने लगे। बच्छराजको सिरसागढ़ देकर वहाँ रहनेका हुक्म दिया। परन्तु दोनों में गाढ़ी प्रीति होनेके कारण दशहरपुरवा में रहनेको निश्चित किया।

पृथ्वीराजकी संक्षिप्त जीवनी—

राजा पृथ्वीराजके पिता राजा सोमेश्वर अजमेर नगरके राजा थे। उसी समय राजा अनंगपाल दिल्लीमें, राजा अजयपाल कन्नौजमें, जोधपुरमें नाहरराय, चित्तौर में समर सिंह, पाटन में देव, जैसलमेरमें भोजदेव, आबू में जयसिंह पँवार राज्य करते थे।

कविचन्द भाटने अनंगपाल और कामध्वजके युद्ध-वर्णन में लिखा है कि सोमेश्वर ने अनंगपाल की सहायता की थी। प्रसन्न होकर अनंगपालने अपनी कनिष्ठ पुत्री कमलाका विवाह सोमेश्वरके साथ किया। कमला (इन्द्रवत) के गर्भसे राजा पृथ्वीराजका जन्म कविचन्द भाटने सं० ११११५ में बताया है। परन्तु बलभद्र विलास नामक जो प्रामाणिक ग्रन्थ है उसमें राजा पृथ्वीराजका जन्म इसभाँति लिखा है। तोमर वंशीय महाराज अनंगपालकी कन्या कमला जिसका उपनाम इन्द्रवती भी था जब गर्भवती हुई तो तीसरे महीने श्रावणमें उनके पिता ने उन्हें बुलाया और गर्भवती समझकर पं० चन्द्रपालसे गर्भस्थ बालकके लक्षण पूछे। उत्तर में पंडित जीने यों उत्तर दिया।

श्लोक–अश्याश्चोत्तर देशेतु प्रतापी राज वन्दितः॥
नृप संघ प्रहंता च भुवो भारावितारकः॥ १॥
आजानुबाहुश्चाखण्डस्य शूरः शूरनिसेवितः॥
जनिष्यते प्रमाता च नर देहोति अद्भितः॥ २॥

"कन्याके गर्भस्थ बालक संसारका भार हलका करने वाला सम्राट् होगा आजानु बाहु, महातेजस्वी, वीर संसारमें प्रसिद्ध तथा यश कमानेवाला राज-शिरोमणि होगा। तुम्हारे वंश भरको दिल्लीसे निकालकर खुद राजा बन बैठेगा"।

पण्डितजीकी बात सुनकर राजाने चिन्ता युक्त होकर कुटुम्बियोंको बुलाकर सब हाल कह सुनाया। कुटुम्बियोंकी सम्मतिसे कन्याको एकान्त में बुलाकर राजा ने कहा कि, "तुम्हारे गर्भस्थ बालकके लक्षण पंडितों ने इस प्रकार बतलाए हैं कि तुम्हारी कन्याके गर्भसे वीर बालक पैदा होगा। वह यदि ननिहाल में रहे तो उसका गर्भ गिर जायगा। इसलिये उसे तीर्थाटनके लिये भेज दो। मेरी यही सलाह है कि अच्छा होगा कि तुम तीर्थयात्रा करने चली जाओ।

कन्याने स्वीकार कर लिया। राजाने कुछ सेनाको उसके साथ भेजकर विदाकी उन लोगोंने उसे अगम वनमें लेजाकर एक अँधेरे कुएँ में ढकेल दिया और झटपट आकर राजासे निवेदन किया कि, आपका काम कर आये।

अनाथ इन्द्रवती अँधेरे उस निर्जल कूप में विलपती ही थी कि भाग्यसे एक साधु (अश्वत्थामा) आया। और कुँएँ से निकाल कर पूछने लगा कि सुन्दरी! तुम्हे इस कुँवे में किसने फेंका, तुम्हारा नाम क्या है? इन्द्रवती ने कहा नाथ! मैं महाराज दिल्ली नरेश की कन्या अजमेर नरेश महोबेकी अर्द्धाङ्गिनी हूँ। न जानै रातको कौन देव राक्षस उठा लाकर इस कुँवे में फेंक दिया। साधुने उसके करुणापूर्ण वचनको सुनकर कहा—"कहो तुम अपने पतिके घर जाना चाहती हो"? मैं तुझे वहीं पहुँचा दूँगा। वह बोली-"मैं कहीं नहीं जाऊँगी, आपही मेरे पिता हैं"। यह सुनकर साधु इन्द्रवतीको अपनी ही कन्या समझ कर मढ़ी में ले आया। साधु जगत्प्रसिद्ध द्रोणाचार्यजी के पुत्र अश्वत्थामा थे। जिन्होंने महाभारत में कौरवों की सहायता की थी। इन्द्रवती ननिहाल से भी ज्यादा सुखमें रहने लगी।

सम्वत् ११२२ के माघ, शुक्ल त्रयोदशी, शुक्रवार मध्याह्न अभिजित् योग, पुष्प नक्षत्रमें मन्द, सुगन्ध, शीतल तीनों प्रकारकी वायु बह रही थी, सूर्यादि शुभ ग्रह अनुकूल थे, संसारमें खुशियाली की धूम मची थी, उसी समय इन्द्रवती को पुत्ररत्न प्राप्त हुआ। जिसे राजाधृतराष्ट्रका पुत्र दुर्योधनका अवतार कहते हैं। उसके जातकर्म आदि संस्कार करके अश्वत्थामाजी ने पृथ्वीराज नाम रक्खा। आजानुबाहु, चन्द्रमुख, कमल नयन, खूबसूरतीमें कामदेवके गर्वको चूर करने वाला, पृथ्वीके भारको हलका करनेवाला, चौहान वंशावतंस नररूपधारी संसार मंच पर उतरा था। साधुको मढ़ी में बसते हुए पृथ्वीराज के अवयव शुक्ल पक्षके चन्द्रमाके समान परिपुष्ट हो रहे। पाँच वर्षकी ही अवस्था में वीर बालक पृथ्वीमें अश्वत्थामाजी से बाण विद्या सीख लिया था और अश्वत्थामाजीने भी हर प्रकार की विद्याभ्यास करा लिया था। सात वर्ष की अवस्था में बालक वनमें निर्भय घूमने लगा। सिंहादि भयानक वनजन्तुओं को पकड़कर मढ़ी में ले आता। इस भाँति अनहोनी बाल-लीला से माता व साधुको सुखी करने लगा।

अचानक सोमदेव राजा भी शिकार खेलते खेलते उस वन में आपहुँचे उस लड़केको देखकर मनमें विचारने लगे कि यदि मेरी स्त्री जिन्दी होगी तो

उसका भी इतना ही बड़ा बालक होगा— जा हो बालक को देखने से मन पिघल उठा। ज़रा पूछ लूँ कौन है—यह विचारते हुए राजा सोमदेव ने लड़के से पूछा कि "हे वीर बालक! आचरण से ब्राह्मण पुत्र, कर्म और चेष्टा से क्षत्रिय बालक जान पड़ते हो, क्योंकि धनुष बाण लिए हुए निडर, एकाकी इस घोर वनमें घूम रहे हो बताओ तुम कौन किसके पुत्र किस वंसके अवतंस हो' वीर बालक ने उत्तर दिया कि "महाराज! मैं ऋषि पुत्र हूँ, मेरे पिता अश्वत्थामा हैं, यदि आप हमारी मढ़ी तक चलने की कृपा करें तो मैं आपका आभारी हूँगा, बालकको स्नेहार्द्रवाणीके सारगर्भित वचनोंको सुनकर राजा सोमेश्वर बालक के साथ मढ़ी में पहुँचे। अश्वत्थामाजीने सत्कार करते हुए राजा से कुशलके साथ निवासस्थान भी पूछा। राजा सोमदेव सोमेश्वर ने कहा—'हे महर्षि! मैं चौहान राज वंशीय अजमेर का राष्ट्रपति सम्राट हूँ। मेरी दो स्त्रियाँ हैं। एक कुशवशी कोरलजो की पुत्री और दूसरी अनंगपाल की कन्या इन्द्रवती है। इन्द्रवती में मेरा असीम स्नेह है, उसके तीन महीनेका गर्भ था कि उसके पिताने उसको बुलाया, पण्डितों से गर्भस्थ बालक के लक्षण पूछे, पण्डितों ने कहा कि यह बालक पैदा होने पर तुम्हार वंशभर को निकाल कर स्वयं राष्ट्रपति बन बैठेगा। राजाने इसी शंकासे उसे मरवा डाला, वह मेरी प्राणाधार थी; तभी से मैं वन में भटकता फिरता हूँ। यह कहते हुए सोमदेव के आँखों से आँसुवों की झड़ी लगगई। राजन्! घबड़ाने की बात नहीं, दैवी गति विचित्र है जो किसी को मारना चाहता है वह स्वयं नष्ट हो जाता है। देखो—"इस वटवृक्ष के नीचे एक व्याध कबूतरों के जोड़ को मारने की इच्छा से धनुष बाण चढ़ा चुका था कि इसी बीच बाज पक्षी भी कबूतरों की शिकार पर उतारू हुआ। व्याध बाण मारना ही चाहता था कि वृक्षकी बाँबी से एक सर्प ने व्याध को काट खाया उसका निशाना जाकर बाज पर लगा। दूसरों की हत्या करनेवाले बाज; व्याध स्वयं अनायास मर मिटे। इसी विचित्र गति से मैं भी इस घोर वनमें अकेले रहता हूँ। राजन्! यही वृत्तान्त तुम्हारी धर्म-पत्नी का भी है। यह बेचारी अनाथ गर्भवती एक निर्जल अँधेरे कुँवे में पड़ी थी। दैवयोगसे मैं वहाँ जा पहुँचा। उसका आर्तनाद सुनकर मैंने उसे बाहर निकला। उच्चकुल की वह, बेटी समझकर मैं उसे मढ़ी में ले आया। अपनी ही कन्या समझ कर उसका पालन-पोषण किया। कुछ दिन बाद उसका यह वीर बालक पैदा हुआ जिसको मैं अपना सारा हुनर सिखा चुका हूँ। ईश्वर

की कृपा से बालक बड़ा ही होनहार बुद्धिमान् निकला । आप उदास न हों अपने स्त्री बालक को ले जायं ।" यह सुन सोमदेव का आनंदार्णव असीम होगया, खुशी के मारे पुत्र को अपने हृदय से लगाया । पुत्र ने पिता को प्रणाम किया तीनों से भेंट हुई, एक दूसरे को एकटकी नज़रसे देखने लगे । तीनो के आनंदार्णवकी उतरङ्गों में जमी, आशमाँ कूदने लगे । अन्त में मिलजुल कर तीनों ने अश्वत्थामाजीको परिक्रमा कर चलने की तैयारी की । तब अश्वत्थामा जीने राजा सोमदेवसे आशीर्वाद देते हुए यों कहा "राजन् ! तुम्हारा पुत्र बड़ा पराक्रमी राजाओं में अग्रगण्य होगा" । यह कहकर अश्वत्थामा जी ने बिदाई में राजा को एक अर्धचन्द्राकार बाण देते हुए कहा कि "इस बाणके प्रयोग से तुम्हारा अप्रतिहत शत्रु जीता न बचेगा । साथ ही इसमें यह गुण भी है कि यह शत्रु को मार कर फिर तुम्हारे पास लौट आयेगा । शब्दवेधी बाण के मारने से तुम संसार में शब्दवेधी चौहान प्रसिद्ध होंगे । इस प्रकार आशीर्वाद पाकर राजा सोमदेव मढ़ी से अपनी राजधानी को लौटे । अपने कुटुम्बियों से प्राणाधार स्त्री पुत्र नमस्करात्मक पुष्पाञ्जलि लेकर भर पेट मिले ।

पृथ्वीराजकी वीरता

बारह वर्ष की अवस्था ही में राजा पृथ्वी में अद्वितीय सामर्थ्य का संचार होगया था । अपनी और अपनी सेनाकी रक्षा करता हुआ सौ मनुष्यों को मारने वाला पुरुष योधा कहलाता है । उसमें पाँच हाथियों के प्रमाण बलहोता है । सौ योद्धाओं को मारनेवाला शूर कहलाता है जिसमें दस हाथियों का बल होता है, सौ शूरों को मारने वाला सामन्त कहलाता है, उसे धवल कहते हैं । उसमें चालीस हाथियों का बल होता है । सौ धवलों को मारने वाला पुरुष सबल कहलाता है । उसमें अस्सी हाथियो का बल होता है ।

इन सब गुणों में राजापृथ्वी सबल गुणसे समलंकृत थे । कान्हदेव आदियों में धवल गुण का संचार था । पृथ्वीराज की राजधानी में ऐसे गुणशाली सौ वीर रहते थे जिनके वंशज आजदिन भी राजपूताने में चौहान जाति से सुप्रसिद्ध हैं । जैसे पंजून के वंशज महाराज जयपुर नरेश, रावल समरसी के वंशज सवतन्त्र स्वतन्त्र महाराज नैपाल नरेश, उदयपुर के महाराणा

साहब आदि । उन्हीं चोहान वंशजों से आज भी भारत-भूमि वीर-भूमि कहलाती है ।

चन्द्रकवि—

महाराज पृथ्वीको और चन्द्रकवि भाटकी मित्रता सराहनीय है। चन्द्र-कवि ने पञ्जाब प्रान्त लाहौरको अपने जन्मसे कृतार्थ किया था। आपके पिता राववेण नामसे तथा गुरु गुरुप्रसाद नाम से लोक प्रसिद्ध थे। चन्द्र और पृथ्वी में यजमान पुरोहित का नाता पूर्वजों से हो चला आता था। चन्द्र कवि व्याकरण, पुराण, नाटक, साहित्य, सङ्गीत-साहित्य के प्रौढ़ विद्वान् थे, आपका अभ्यास फार्सी भाषामें भी चढ़ा बढ़ा था। आपकी दो धर्म पत्नियाँ थीं। एकका नाम कमला और दूसरीका नाम गौरी था। राजबाई नामसे एक कन्या और जल्हसुजान आदि नामसे दश पुत्र थे।

चंद्रकवि पृथ्वीराज रासा का अधूरा छोड़कर चल बसे थे। उसे उनके पुत्र जल्हने पूर्ण किया था। देवी के वरदानसे चन्द्रकवि का चन्द्रवरदायी नामसे भी प्रसिद्धि है। चंदकवि, कवि ही नहीं बल्कि योधाभी थे। राजा पृथ्वी के साथ चन्दकवि प्रति संग्राम में मौजूद रहे। कन्नौजकी लड़ाई में तो कवि ने अपनी वीरताका पूरा परिचय दे डाला। शङ्कर जी के वरभद्र नामक गणके मुखसे जो राजापृथ्वीका भविष्य वर्णन किया है उससे उन्होंने अपनी परिपक्व विद्वत् शक्ति का पूरा परिचय दिया। यह भी ध्यानमें लाने लायक है।

कवि की भविष्य-वाणीः—

"यह होनहार सो होय है। दिल्ली न थिरता सोय है॥
पुन म्लेच्छ दल बलजोर है। अरु शहर दिल्लिय तोर है॥
पृथिराज युद्ध न जीति हैं। रण समय रावळ बीति हैं॥
चामुण्ड राय गुरु रामहीं। कट परहिं भारत कामहीं॥
पृथिराज बंधिहि पावहीं। षटमास विपत बिहावहीं॥
गोरीसु दिल्ली आनयं। पुनि दरत हिंदुस्थानयं॥
तिहि दुर्ग देवल भाजयं। अति अनारथ्य सता जयं॥

वर तैसो वरसां दोयसे । तापाछे चकता आवसे ॥
हिंदुवान दण्ड भरावहीं । नृप घर घराह व्यापहीं ॥
ता पाछे टोपी आवहीं । वहु इलम कलम चलावहीं ॥
नारी सुराजा वन्नसी । हिन्दु तुरक सव भज्जसी ॥
इति तखत दिल्लिय आवहीं । नृप घर घरनि सुखपावहीं ॥
वह धर्मराज जमावसी । प्रतिपाल न्याय कहावसी ॥
जव न्याय वन्धन छूटसी । तव आप पेटो फूटसी ॥
मिलि वलक कावुल थट्यं । रहि वरसपट नाट्यं ॥
सेसोद दिल्लिय आवहीं । शिर राण छत्र धरावहीं ॥
पैंतीस वरस प्रमानहीं । भोगवे हिन्दुस्थान हीं ॥
अजमेर पीरसे जग्गहीं । पुनि तखत दिल्लिहि मग्गहीं ॥
तूवरस दिल्लिय घेरहीं । पुनि आण दिल्लिय फेरहीं ॥
राठौर दिल्लिय आवहीं । पुनि धर्मनीति चलावहीं ॥

दिल्ली-पति पृथ्वीराज-

दिल्ली पति अनङ्गपाल पर पश्चिम दिशा से एक राजा चढ़ाई करने आया और अपने दूत से अनङ्गपालके पास सन्देशा भेजा कि "मैं अटक नदीके किनारे अपना डेरा जमाया हूँ । आप शीघ्र अपना वन्दोवस्त करें"। दूतके मुखसे सन्देशा सुनकर राजा अनङ्गपाल अपने मन्त्रि, कुटुम्बियोंसे कहने लगा कि "गजनीगढ़से गोरी चढ़ आया है । यदि मैं लड़ने चला जाताहूँ तो दिल्लीकी रक्षा कौन करेगा। मन्त्रियोंने कहा -"महाराज! आपके वंशमें तो कोई ऐसा वीर नज़र नहीं आता जो इस कामके योग्य हो । हाँ आपकी कन्या इन्द्रमतीका पुत्र पृथ्वीराज यदि आवे तो वह नगरकी रक्षा कर सकता है । उसने अश्वत्थामाजी से वाण विद्याका खूब अभ्यास किया है और उन्होंने उसे आशीर्वाद के साथ एक अमोघ वाण भी दिया है ।"

राजा ने मन्त्रियों की राय मानली और पृथ्वीराज को बुलाकर गले से लगाया और सारा वृत्तांत कह कर अच्छी तरह समझा दिया ।

पृथ्वीराज ने राज्यकी रक्षा इस शर्त पर स्वीकार करली 'जब तक आप

लड़ाईसे लौट कर न आवें तब तक सारी प्रजा, मन्त्रिगण कुटुम्बिजन मेरी आज्ञा के वशवर्ती रहें। बिना मेरी आज्ञासे राजधानी में कोई न आवे। यदि खुद आप भी बिना आज्ञाके आना चाहें तो नहीं आ सकते। यदि आपको मेरी यह शर्त अङ्गीकार है तो मैं भी राज्य-रक्षाका बीड़ा उठा लेता हूँ। इस बातको आप अपने प्रजागण, मन्त्रिगण, कुटुम्बिगणको भलीभाँति समझा दीजिए क्योंकि आपके जाने पर किसीको कुछ कहनेका मौका न रहे।" राजा अनङ्गपालने अपने कुटुम्बियों, मन्त्रिगणको भलीभाँति समझा दिया कि "मैं जब तक लड़ाई से लौट कर न आऊँ तब तक दिल्लीपति पृथ्वीराज हैं, उनकी आज्ञा पालन करना सबका कर्तव्य है"। यह समझाकर राजा अनङ्गपालने अपना राज्य, कोष सौंप कर स्वयं सेना लेकर युद्ध-यात्रा की।

इधर पृथ्वीराजने अपनी चातुकारता, धनादिव्ययसे सबको अपने वशवर्ती कर लिया और अजमेरसे अपने बन्धुगणोंको बुलाकर वहाँ बसा लिया। उधर दिल्लीपति अनङ्गपालने शत्रुको परास्त करके दिल्ली में प्रवेश करना चाहा पर पृथ्वीराजके वीरोंने रोक दिया। अनङ्गपालने भी अपनी बुढ़ाती याद की कि अब संसार में चन्द्रराजकी मेहमानी है। पुत्रादि भी नहीं कि वेही मेरी राज्य सम्पतिका विलासते। आखिर पृथ्वीको राज्यमंच पर बैठाने की घोषणा की और स्वयं अपने पुरखोंके बनाये हुए पाटन दुर्ग में जा बसे। पृथ्वीकी आज्ञा होने पर अनंगपाल दिल्लीमें आकर राजाओंको निमन्त्रित करके बड़े समारोहके साथ पृथ्वीको दिल्लीपति बना दिया। पृथ्वीने भी पाटनका दुर्ग अपने नाना अनगपालको दिया और निमंत्रित राजाओंको बड़े आदरके साथ विदा किया। पृथ्वीकी प्रथम शादी गुजरातके सुप्रसिद्ध राजाकी कुमारी कन्याके साथ हुआ। अनन्तर चण्डपुण्डीरकी कन्या दाहिमी और पांडव वंशीय पद्मसेनकी कन्या पद्मावतीसे और माहिलकी बहिन अगमा से, अगमा बड़ी विदुषी थी। उसके गर्भसे बेला नामकी कन्याने द्रोपदीका अवतार धारण किया था। देवगिरि सम्राट मानकी कन्या शशिव्रतासे, राठोर जयचन्दकी संयोगिता आदिसे पृथ्वीराजका पाणिग्रहण हुआ।

चौंड़ा ब्राह्मण—

सूर्यमणि और चामुण्ड दोनों सगे भाई थे। इनके पिताका नाम इन्द्रदत्त था। बकसर इनके गाँवका नाम था। दोनों भाई देवीके उपासक थे। एक दिन देवीने

प्रसन्न होकर कहा—"वर माँगो मैं प्रसन्न हूँ" सूर्यमणिने लक्ष्मी, राज्य, यश माँगा। चामुण्डने कुछ दिनके लिए सेवा सौभाग्यकी प्रार्थना की। दो वर्षतक भगवती की उपासना में लीन रहा। अन्त में देवी प्रसन्न होकर साक्षात् वरदेने खड़ी होगई। चामुण्डने युद्ध विजय पर तथा अमरत्व दुर्लभ समझ युद्ध विजय का वर प्रदान किया। उधर सूर्यमणि को रीवाँ नरेशने बुलाकर धनादि प्रचुर सम्पत्ति देकर अपना पुरोहित बना लिया। चामुण्डने दिल्ली नगर में पृथ्वीराज के पास दूत द्वारा पत्रसे अपना परिचय दिया। पृथ्वीने बुलाकर चामुण्डको प्रणाम किया और अपने पास बुलाकर कुशल पूछा। चामुण्डने अशीर्वाद देते हुए कुशल तथा अपनी दिन-चर्या कह सुनाई। पृथ्वीराजने चामुण्डकी रण कुशलता, देवीसे प्राप्त वरदान यह सब समझाकर उसे अपना सेना नायक बना लिया। चामुण्ड शब्द सेही चौंड़ा, चौंड़िया राय भ्रन्श हुआ। इसी नामसे आल्हा में इनकी प्रसिद्धि है।

राजा पृथ्वीका गर्व और अविवेकता।

भूतपूर्व दिल्लीपति अनंगपालकी रत्नमंजरी नाम वेश्याके दो पुत्र बड़े बली थे। परन्तु चौंड़िया रायके कहनेसे पृथ्वीने उसे अपनी राजधानीसे निकाल दिया। वह बहुसंख्यक योधाओं तथा धन लेकर गजनीगढ़ जा बसी वहाँ के गोरी राजा से इसने पृथ्वी की उदण्डताका व्यवहार कह सुनाया। एक वर्ष के बादही गोरी अपनी चतुरङ्गिनी सेना लेकर युद्ध करने आया। सहायताके लिए अरबका बादशाह भी एक लाख सेनाके साथ था। इस भयंकर युद्ध में पृथ्वीकी जीत हुई। गजनीका गोरी पाँच मरतबा आया पर हारता गया। अरबका मीर भी अजमेर जीतनेकी लालसा से सौदागर बनके आया। उसके पास नामी २ अरबी घोड़े थे पृथ्वी ने कप्तानको भेजकर उसके मुँह माँगा घोड़े का दाम एक लाख रुपया दिया। कई बार मीर ने हानि पहुँचाकर पृथ्वी पर चढ़ाई की पर सफल न हुआ। पृथ्वी ने सेना सहित मीरको मिटा दिया। भानजे की बुरी दशा देखकर मीरके मामा ख्वाजा पीरका दिल दहल उठा। वह खुद अजमेर में आकर हिन्दुओंको अपनी शैतानी का परिचय देने लगा। पृथ्वीराज ने अनेक प्रयत्न किये। यहाँ तक कि एक सुन्दर गानेवाली वेश्याको उसके तपो विघ्न के

लिये भेजा, पर वह भी मुरीद बनकर पीर की हो गई। अन्त में पृथ्वीराज ने कवि चन्द्रवरदायी को भेजा। चन्द्रजी ने जरूर उसे प्रसन्न कर हिन्दुओं को न सताने की प्रार्थना की। ख्वाजा ने कहा—"पृथ्वीराज अपनी सब सेना को दिल्ली में बुला लेवें। अजमेर सिर्फ पीरों के लिये छोड़ दें" पृथ्वीराजने यह स्वीकार कर लिया। अजमेर आज दिन भी ख्वाजा पीर के नाम से प्रसिद्ध है।

पीर के पहले गुजरात का राजा चालुक्य अजमेर लेने चढ़ आया था। उसी युद्ध में महराज सोमेश्वरकी मृत्यु हुई थी। पृथ्वीने उसी दिन चालुक्य के मारने की दृढ़ प्रतिज्ञा की थी।

अनङ्गपाल की बड़ी कन्या कन्नौजके राष्ट्रपति अजयपालको व्याही थी, उसका पुत्र चन्द नाम से प्रसिद्ध था। जब अनंगपाल ने पृथ्वीको दिल्लीपति बनाया था तो चन्द्र के मनमें उसी दिन यह बात खटक गई थी। शत्रुता का अंकुर पूरा जमगया था। आज मौका देखकर चन्द्र पृथ्वीके जानी दुश्मन शाहाबुद्दीन से जा मिले। यही एक पहला मौका हिन्दुओं को दुर्भाग्य मुसलमानों के हाथ में जाने का था। आजही से हिन्दुओं की स्वाधीनता हिन्दुस्तान से चलबली थी। माधव भाट और धमियन दोनों अनङ्गपालके जमानेके सरदार थे, किसी कारण आधुनिक दिल्लीपति से दोनोंकी शत्रुता हो गई थी। दोनों ही महाराजके यहाँको सब बातें गोरीको पहुँचा दिया करते थे। महाराज दिल्लीपति मान, मर्यादा तथा अपने धर्मके कट्टर पक्षपाती थे। शरणागतकी रक्षाको अपना पहला कर्तव्य समझते थे। इसी परीक्षा में कुछ राज्य विषयक अड़चनें हुईं।

गजनी गढ़ राष्ट्रपति गोरीकी वेश्या अपने हुनर से बड़ी ही चतुर थी। बादशाह उसे दिलसे चाहते थे। परन्तु गोरीका छोटा भाई हुसेन खाँ उस पर आशिक था, गोरीको यह पता चल गया। इस डाह से उन्हें कत्ल करने की आज्ञा कर दी। यह समाचार हुसेन तक पहुँचा। अपनी जान बचाने के लिए हुसेन चित्ररेखा को लेकर पृथ्वीराजकी शरण में आ पहुँचा। यह गोरी जानही गया था। उसने अपने सरदार अरब खाँ को दिल्ली भेजकर कहला भेजा कि "हुसेन खाँ सहित चित्ररेखाको वापिस कर दो वरना तुम्हें सुलतान का दासत्व स्वीकार करना होगा"। दिल्लीपति पृथ्वी ने कहा—"यदि तुम्हारे

बादशाह में छीन लेनेका हौसला हो तो आकर छीन ले जाय। बन्दर घुड़कियों से मुझे न डरावे। शरणागतकी रक्षा मैं अवश्य करूँगा"। सरदार अरब खाँ ने दिल्लीपतिका मुँह तोड़ जवाब सुनकर सब वृत्तान्त गोरी से कह सुनाया। गोरीका मुँह गुस्से से तमतमा गया और अपनी फौजको हुक्म दिया कि "दिल्ली के राष्ट्रपति पृथ्वीसे संग्राम करने चलो"। सेना ने तैयार होकर रण-यात्रा की। बीच ही में लाहौरके सरदार चंडपुंडार ने सामना किया। उधर पृथ्वीराज खबर पाकर सजधजके साथ चित्तौर के सेनापति रावल समरसिंह, चामुण्ड [चौंडा] ब्राह्मण आदि शूर सरदारोंको साथ लेकर लड़ने आये। साखड़ेके मैदानमें शत्रुसे सामना हुआ। राजा पृथ्वी की ओर से हुसेन खाँ भी अपने बड़े भाई गोरीसे लड़ने आया और शाहबुद्दीनकी ओर से तातारखाँ ने चढ़ाई की। पृथ्वीकी ओरसे हुसेन खाँ ने उनसे सामना किया। उस घमासान लड़ाई में हुसेनके सब साथी मारे गये तो वह खुद जङ्ग में उतरकर तरवार लेकर तातारखाँ पर झपटा। तातारकी गदाने हुसेनका काम तमाम कर दिया। लेकिन हुसेन की तरवार का वार भी खाली न गया, तातारको अपना शिकार बना के छोड़ा। आखीर दोनोंका खातमा हुआ हुसेनकी आशिक चित्ररेखाभी इन्हीं हुसेनके साथ कब्र में गाड़ी गई। इधर पृथ्वीराजसे शाहबुद्दीन वीरताके साथ लड़ रहा था, अन्त में सुलतानकी सेना प्राण बचाकर भागने लगी। चौंडा ने पीछाकर शाहबुद्दीन को गिरफ्तारकर पृथ्वीराजके सुपुर्द किया। पृथ्वी ने उसे कुछ दिन अपना कैदी बना रखा। अंत में आठ बहुमूल्य वस्तुओं का दण्ड लेकर छोड़ दिया।

बस, पृथ्वीराज तो अपने अविचार और घमंड में चूर हो गया। "घमंड का शर नीचा" संसारमें ईश्वरका भक्ष्य घमण्डही है। पृथ्वीराज अपनी बलवती चतुरङ्गिणी सेनाके गर्वसे फूला न समाया। पृथ्वीने कुछ विचार न किया कि आज क्या है कल क्या होगा। उस समयके राजपूतोंकी शक्ति, ऐश्वर्य, देशभक्ति सराहनीय थी। देशभक्तिके पीछे वे अपने प्राण निछावर करनेको तैयार रहते थे। यों तो इस विषय पर बहुत सी किम्वदन्तियाँ हैं पर जहाँ तक निश्चय हुआ है कि, देश की पराधीनताका श्रीगणेश आपसी फूटने कराया। क्योंकि राजपूतों ने अपने वंशके गौरव तथा जातीय रोष से अपनी स्वाधीनता का अन्त किया। उनकी फूट ने उनके पैर पर कुल्हाड़ी मारी। पृथ्वीराजके बहुत शत्रु हो गये थे। सिर्फ दोही राजा पृथ्वीका सामना करने को समर्थ थे।

एक ता गुजरात का चालुक्यराज भीमदेव, दूसरा कन्नौजका राठौर राजा जयचन्द । ये दोनों पृथ्वीसे शत्रुता न कर यदि सहायता करते तो भारतकी स्वतंत्रता कभी मुग़लोंके चंगुलमें न फँसती । अन्तमें शाहबुद्दीनने अपने शत्रु राजा पृथ्वीको तो मारनाही चाहता था पर देशद्रोही भीमदेव और जयचंदको भी अपना निशाना बनाके उनकी शिकार की ।

पृथ्वीकी परिमालसे अनबन—

दिल्लीपति पृथ्वीने बहुतसे राजधानियोंको अपने अधीन करलिया था । सिर्फ दोही कन्नौज और महोबा बाक़ी बचे थे । शहाबुद्दीन धोखेकी तारमें लगा रहता था । जब पृथ्वीराज पद्मावतीको ब्याहकर लौटे आरहे थे कि शहाबुद्दीनने हमला किया पर तब भी शहाबुद्दीनको नीचा देखना पड़ा । पृथ्वी सकुशल दिल्ली पहुँचे । कुछ घायल रास्ता भूलकर महोबेकी ओर चले । सन्ध्या समय था, प्रलय वायुके साथ पानी बरसने लगा । व्याकुल सिपाही घबड़ाये हुए परिमालके बगीचेमें जानेलगे । जानेसे मालीने रोका तो सिपाहीने उसका सिर काटडाला । मालिनि मृतपतिको देखकर रानी मल्हनाके पास पहुँची । मल्हनाके कहनेसे राजाने कुछ लोगोंको उपवन रक्षाके लिए भेजा तो उन्होंने उन्हें भी मार डाला । इस खबरको पातेही परिमालने ऊदनिको बुलाकर उन्हें बाँधलानेकी आज्ञा दी । ऊदनिने घायलोंकी गिरफ़्तारीमें अपनी वीरतामें कलंक समझा और यह भी विचारा कि पृथ्वीराजके साथ बैर बढ़ जायगा—मना किया । यह सुनकर माहिल परिहारने परिमालसे कहाकि "ऊदनि डर गया"। माहिलकी बात सुनकर परिमालने धमकीके साथ ऊदनिसे उन्हें मार डालनेको कहा । ऊदनिने जाकर ललकारा, लड़ाई छिड़गई, ऊदनिने सबको मार गिराया । बस आजहीसे पृथ्वी और परिमालसे शत्रुताका श्रीगणेश हुआ ।

पृथ्वीराजका अन्त—

संयोगिताके प्रेममें चूर होकर पृथ्वीराज राज-काज भूल गये । प्रजामें खलबली मचगई । शत्रुओं तक उनके प्रमादकी खबर पहुँच गई । दुश्मन अब अपने बदला लेनेकी टोहमें लग गये । लोगोंने पृथ्वीके चेतावनीको चन्दकबि

से प्रार्थना की। चन्दकविने पृथ्वीराजको यों लिख भेजा—"तुमपर गोरी रत्तियं अरु ता घर गोरी तक्कियं" अर्थात् तुमतो आशिकाने लहज में चकाचौंध होकर गोरीके प्रेममें चूर हो और गोरी तुम्हारी राजधानीकी ताकमें है। इस पत्रको लेकर सरदार महलमें पहुँचे। फाटक पर दासियोंका ज़बर्दस्त पहरा था। सरदारोंने दासियोंको पत्र दिया। दासियोंने संयोगिताको पत्र दिया संयोगिताने अरमानमें भरकर दासियोंको आज्ञा दी कि इन पाजियोंको मार भगाओ दासियोंने वैसाही किया,सरदारोंने स्त्रियोंपर वार करना वीरताके वाहर समझा जान बचाकर भागे। पृथ्वीराज झरोखेमें संयोगिताके साथ वैठकर हँस रहे थे। चन्दकवि और हाहुली राय भी इन्हीं लोगोंमें थे। कविको दुख तो हुआ पर अपनी विवेक वुद्धिसे मनको समझा लिया। पर हाहुलीरायने अपमानके नशेमें आकर पृथ्वीराजसे वदला लेनेका विचार किया। यह विचार कर पृथ्वीराजके जानी दुश्मन शहावुद्दीन से जा मिला। शहावुद्दीन तो यह चाहता ही था कि कब पृथ्वी को गारद करूँ। आज शहावुद्दीनको मौका मिला, अपनी सेना सजाकर दिल्ली पर टूट पड़ा। पृथ्वीके सव वीर तो और लड़ाइयोंमें मारे गये थे इने-गिने ही कुछ वीर वचे हुए थे। पृथ्वीको कुछ ख़वर न थी कि मेरी सेना वीरविहीन है। यह समाचार पाकर पृथ्वीराजका वहनोई चित्तौरका रावलसमरसिंह एकलाख सेना लेकर सहायताके लिए दिल्लीमें आ पहुँचा। पृथ्वीसे आठ दिन तक भेंट न हुई, आखीर एक सुग्गीके पास चिट्ठी देकर पृथ्वीको चेतावनी दी। वहनोईसे मिलकर पृथ्वीराजने शहावुद्दीनके साथ लड़नेकी तैयारी की। पर जीतनेकी उम्मीद न थी। पृथ्वीराज सिर्फ़ अपने पुत्र रायनेमिको छोड़कर सवको युद्धमें जा वसनेकी घोषणा की। संयोगिताके मना करने पर भी स्वयं युद्धको तैयारी को। कागरनदीके किनारे ठट्ठा नामक स्थानमें दोनों ओर की सेना लड़ भिड़ी। अपनी स्वतंत्रताके लिए राजपूतोंने तनमनसे प्रयत्न किया पर संयोगिताका प्रेमपियूष तो विषका काम कर चुका था क्योंकर जीत होती। चित्तौरके समरसिंह आदि शूर इस जङ्गमें मारे गये। शहावुद्दीन की जीत हुई। पृथ्वीने अकेले वहुत वीरतासे शत्रुका सामना किया पर आखीरमें पकड़े गये। उनके साथ अत्याचार की ऐसी हदकी गई कि दोनों आँख फोड़ कर जन्मान्ध कर दिये गये और एक भारी लोहेकी जंजीर पहनाकर ग़ज़नीने क़ैद कर लिया। चन्दकवि भी कठिनतासे ग़ज़नी पहुँचे। सुलतानने पृथ्वीराजसे मिलनेकी प्रार्थना की।

चन्दकवि मिलने गये तो पृथ्वी उस भारी ज़ंज़ीरके साथ उठ खडे हुए। निर्दयी दुराचारी सुलतानने एक दूसरी भारी जंज़ीर पृथ्वीके गलेमें डालदी। कवि चन्दने दुःख प्रगट करते हुए कहा-"मैं समझता था कि मेरे मिलनेसे पृथ्वीराज सुखी होंगे पर यह तो विपरीत हुआ। सुलतानजी आप इस अन्धेको दुःख न दें, स्वतंत्र रखने पर अन्धा होते हुए भी यह आप को अपनी शब्दवेधी आदि बड़ी बड़ी करामातें दिखावेगा। एक दिन सुलतान ने अपने सब सरदारोंको बुलाकर इसकी परीक्षा की। पृथ्वीराजके हाथ में तीर कमान दिये गये। सब लोग पृथ्वीराजकी ओर एकटकीसे देख रहे थे कि कवि चन्द ने यह दोहा पढ़ा-

दोहा-चार बाँस चौवीस गज, अंगुल अष्ट प्रमान।
एते पर सुलतान है, मत चुक्कै चौहान॥

कवि ने तीर मारनेके लिये सुलतानसे आज्ञा देने को कहा सुलतान ने कहा "मारो"। जिधरसे शब्द सुनाई पड़ा पृथ्वीने उधर ही तीर छोड़ा, वह सुलतान पर लगा। तीरके लगतेही सुलतान सदाके लिए सो गए। चन्द्र वरदायी और पृथ्वीराजके विषयके बहुत सी किंवदन्तियाँ हैं। कुछ इतिहासकार तो कहते हैं कि कविने तीखी तलवारसे अपना और पृथ्वीराजका गला काट दिया। कुछ मानते हैं कविने तलवार युद्ध किया आखीर रणशायी हुए। पर विशेष कर यही अनुमान किया जाता है कि कविने अपना और पृथ्वीराजका गला काटकर अन्त तक साथ दिया।

महोबेके घोड़े।

राजा परिमालकी रानी मल्हनाकी सुन्दरता पर इन्द्र मोहित हो गये थे। इन्द्रने परिमालको अपना मित्र बना लिया। इन्द्रने परिमालको खाँड़ा, बिजुलिया; वज्र, पपीहा घोड़ा, पचशावद हाथी—जो एक वार युद्ध में जंज़ीर घुमानेसे युद्धवीरोंको सुला देता था—आदि वस्तु दीं। अनेक वार महोवेमें आने पर भी मल्हनाके साथ इन्द्रका संयोग नहीं हुआ। एक दिन इन्द्र परिमालके वेशमें मल्हनाके महलमें पहुँचे। मल्हनाने कहा-"प्राणनाथ!

आज एकादशीके दिन कैसे आना हुआ"। इन्द्रने कहा-मैं देवेन्द्र हूँ अपने पराक्रमी तेजस्वी पुत्रको देनेकी इच्छासे तुम्हारे पास आया हूँ"। मल्हना बोली-"महाराज! आपके दर्शन मात्रसे मेरा आपके समान पराक्रमी पुत्र पैदा होगा। मैं पतिव्रता हूँ अपनी उस आशासे हाथ धो बैठें जिससे आप मेरे पास आये हैं"। यह सुनकर इन्द्र लज्जित होकर अपनी अमरावतीको चला गया। इन्द्रकी आशा पर पानी फिर गया तो इन्द्र फिर दर्शनसे दुर्लभ होगये। इसप्रकार राजा परिमालको घोड़े मिले। जब पाँच वर्ष बाद इन्द्रने फिर कृपा की तो श्यामकर्ण और चितरंगी घोड़ीके संयोग से करलिया, हरनागर, मनुरथा, वेन्दुला ये चार बछेड़े, और पाँचवीं कबुतरी बछेरी पैदा हुई। एक साधारण घोड़ी से हिरौजनी बछेरी हुई। ये सात बछेड़े, वायुके समान शीघ्रगामी थे। वेंदुलाको दलगंजन और करलियाको हंसामणि भी कहते थे।

आल्हा।

जेठ का महीना मध्याह्न समय दशहराके दिन दस्सराजकी रानी देवलकुँवरिसे पुत्र पैदा हुआ। परिमालने धूमधामके साथ उत्सव मनाया। और ज्योतिषियोंने कहा कि-यह बालक सिंह लग्नमें पैदा हुआ है, यह सिंहके समान बली वीर होगा। ज्योतिषियोंकी वाणी सुनकर राजा रानी फूले न समाये, बहुमूल्य वस्तुओंको देकर ज्योतिषियोंको विदा किया। आल्हा की सब जगह विजय हुई। वेलाके सती होने पर जो पृथ्वीराजसे लड़ाई हुई थी उसमें आल्हाके सब शूर मारे गये थे। उस समय आल्हाने क्रोधसे देवी-दत्त खड्गका प्रयोग किया तो गुरु गोरखनाथने आल्हाका हाथ पकड़कर कहा कि मनुष्योंको नाश करने वाली गदाका प्रयोग न करो। आल्हाने गुरुकी बात मानकर पृथ्वीको समझाकर दिल्ली भेज दिया और स्वयं गुरु गोरखनाथके साथ जाकर पन्द्रह वर्षतक देवीकी उपासना की। देवीने प्रसन्न होकर कहा—"तुम्हारी सर्वत्र विजय होगी"।

वीर मलिखान—

भाद्रपद कृष्ण पक्ष सूर्योदयके समय सिंह लग्न में बच्छराजकी रानी तिलका (ब्रह्मा) के गर्भसे मलिखानका जन्म हुआ ज्योतिषियोंने लग्न विचारसे

अद्वितीय वीर बतलाते हुए यह भी कहा है कि 'इसके पैर में पद्म है जब तक यह पद्म न फटेगा तब तक इसकी मृत्यु न होगी। बहुपुरस्कार पाकर परिडत मण्डली विदा हुई। मलिखानको बाल्यकालसे ही तलवार चलानेका शौक था इसीसे मलिखानकी तलवार प्रसिद्ध थी। वच्छराजका सिरसागढ़ पृथ्वीराज ने अपने आधीन कर पुत्रके सुपुर्द कर दिया था। एक समय मलिखान बापका बदला लेकर माड़ोसे महोबे आये और सिरसागढ़की ओर शिकार खेलने गये। पारथ भी उसी वनमें शिकार खेल रहे थे। दोनोंमें वाद विवाद हुआ मलिखान को पता चला कि सिरसा हमारा है तो मलिखानने पारथसे अपने सिरसागढ़ को छीन लेनेकी प्रतिज्ञा की। संग्राम करके गढ़ छीन लिया। अनन्तर मलिखान ने देवीकी आराधना की। देवीने स्वेच्छासे सर्वजित् (युधिष्ठिरकी तरह) वर दिया। माहिलके भड़कानेसे पृथ्वीराजसे भी युद्ध हुआ, रणमें जितने वीर युद्धकी इच्छासे सामने आते थे मलिखान सबको सदाके लिये विदा कर देता था। आपसकी फूटने कब, किस जातिको नीचा न दिखाया। यही कारण था कि माहिलने मलिखानकी मृत्यु पृथ्वीसे कह सुनाई कि उसके पैरके तले पद्म है जिस दिन वह फट जायगा मलिखान जिन्दा न बचेगा। पृथ्वीराजने फिर लड़ाई छेड़ी, पाद-पद्म फट जाने से वीर वसुन्धरा से चल बसा।

लाखनि राना—

कन्नौजके राजा जयचन्दका छोटा भाई रतिभानु था। रतिभानुका पुत्र लाखनि हुआ। लाखनि भी बड़ा शूर वीर था। महोबे जाकर लाखनिने आल्हा के साथ वेतवेकी लड़ाई में पृथ्वीराजका मोरचा हटा दिया था। पृथ्वीराजने क्रोधसे कुछ मर्मवेधी बातें कहीं। लाखनिने पृथ्वीराजका अरमान मिटानेके लिये कहा। पृथ्वीराजने भी वही अश्वत्थामासे प्राप्त अर्धचन्द्राकार बाण फेंका। वाण अमोघ था, मलिखान मरे ज़रूर पर तब भी उनकी वीरता सराहने योग्य है क्योंकि पृथ्वीराज छोटे मोटे वीरके लिये उस वाणका प्रयोग नहीं करते थे।

वीर ढेवा—

पण्डित चिन्तामणि महोवेके राज-पण्डित थे। उनके पुत्रका नाम देवकर्ण था। राजा परिमाल और रानी मल्हना देवकर्णको वहुत प्यार करते थे। इन्होंने लड़केका नाम ढेवा रक्खा। ढेवाकी ऊदनिसे प्रगाढ़ मित्रता थी। ढेवामें सगुन [प्रश्न] विचार अद्वितीय शक्ति थी। पण्डित ही नहीं वीर भी वड़े थे। पृथ्वी-राजके सौतेले भाई संयमरायका शिर देवकरणने गदासे अलग कर दिया था। चन्दकविने सिरकी फाँक अपने वाणसे जोड़ दी थी। अन्तको लड़ते २ संयमराय मूर्छित हो गया। इसी वीरतासे मल्हना ढेवाको समान प्यार करती थी। खुशीसे घोड़ा मनोरथा ढेवाको दे दिया।

धाँधूका संक्षिप्त जीवन—

दस्सराजकी रानी दिवलासे अभुक्त मूलमें एक बालक पैदा हुआ ज्योतिषियों ने उसके सब लक्षण शुभ बताये, पर साथ ही यह भी कहा कि "यह अपने कुलसे युद्ध करने वाला बड़ा शूर वीर होगा। यदि इसका मुख पिता देख लेगा तो पिताकी मृत्यु हो जायगी"। इसी डरसे परिमालने पुत्रको बाँदीके सुपुर्द कर उसकी रक्षा करनेको कहा। अब बालक आठ महीनेका हुआ तो बाँदीने राजा परिमालसे गङ्गास्नानका अनुरोध किया। राजाने कुछ सैनिक साथमें करके गङ्गा स्नानको बिठूर भेज दिया। बाँदी और पृथ्वीराज आस पास ही ठहरे थे। बाँदी बालकका एक ज्यौतिषीके पास लेजाकर हाथ दिखाने लगी, पृथ्वीराजने लड़केको देखकर पूछा कि "यह किसका राजकुमार है"। रक्षकोंने कहा "यह महाराज दस्सराजका पुत्र अभुक्तमूल में पैदा हुआ है। इसलिये पिताने इसको दोषी समझ कर बाँदीको दिया"।

पृथ्वीराजने बालकके होनहार लक्षण समझकर एक जादूगरसे बालक चुराकर अपने पास मँगा लिया। बालकको देखकर कान्ह ने कहा कि "मेरे सन्तान नहीं, मैं इसको गोद रखूँगा। पृथ्वीराजने यह बात मानली, लड़का कान्हको देदिया। दिल्लीमें जाकर खूब उत्सव मनाया गया, ज्योतिषियोंने नष्ट जन्म-पत्र बनाकर बालकका नाम चंडपुण्डीर रखा।-हृष्ट पुष्ट होनेके कारण कान्ह उसे धाँधू कहते थे। बस उसकी धाँधू नामसे प्रसिद्धि होगई। बलवान होनेके कारण धाँधू पृथ्वीराजके अस्सी हज़ार सैनाका नायक होगया।

उधर बाँदी बालकके खो जानेसे उद्विग्न मन मेले भर ढूँढने लगी पर बालकका पता न लगा। महोबेमें जाकर सब हाल कह सुनाया। सबलोग उदास हुए। किंचित् पता लगा कि कान्हदेवने उसे गोद रख लिया तो राजा परिमाल तथा सब लोग निश्चित् होगये।

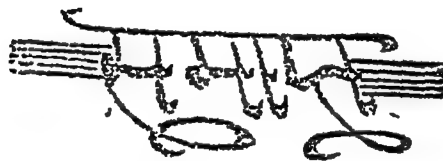
बीर ब्रह्मा—

रानी मल्हनासे बीर ब्रह्माने भी भारतभूमिको वीर भूमि कहलाया। लग्न विचारते हुए ज्योतिषियोंने कहा कि "इसी लग्न, बेला में परशुरामजी भी जन्मे थे। अतएव यह बालक भी उन्हींके सदृश बलवान, तेजस्वी होगा। पर इसको स्त्रीके कारण धोखा होगा।" बालकका नामकरण होने पर ब्रह्मा नाम रखा। ब्रह्मा दिन दूना रात चौगुना बढ़ने लगा, युवावस्थाका संचार होने लगा परन्तु, राजाने विवाहकी कुछ भी चिन्ता न की। वीर मलिखान को जिदसे ब्रह्माका ब्याह हुआ। पृथ्वीसे बड़ी लड़ाई हुई। ब्रह्माने सबको परास्त किया। पृथ्वीराज तकको अपने बाणसे घायल कर दिया था। परन्तु ब्रह्मा भी धोखेसे मारे गये।

बीर ऊदनि—

रानी देवकुँवरि के गर्भसे भीमसेनावतार ऊदन पैदा हुआ परन्तु दिवला ने सोचा कि वैधव्यमें यह पैदा हुआ है। इसी कारण बाँदीके सुपुर्द कर

कहा कि मैं इसको पालना नहीं चाहती। इसके गर्भस्थ होनेपर ही मैं विधवा होगई। बाँदी बालकको महोवे लेगई। मल्हनाके सामने रखकर सब हाल कह सुनाया। मल्हना बालकको होनहार समझकर अपने बच्चेके ताईं पालने लगी। सिंहनी नाम भैंसका दूध पिलाकर ब्रह्मा ऊदनका पालन किया था। ऊदनिकी वीरता सराहनीय थी। ऊदनिके सबही काम प्रशंसनीय थे। ऊदनि और लाखनिकी बड़ी मित्रता थी। मित्रका मरण सुनकर ऊदनिमें वैराग्यका प्रचुर संचार होगया। ऊदनिके दिन भी नगचा गये, आखिर मित्रका साथ दिया। ऊदनिके मरजाने पर आल्हा भी गुरु गोरखनाथके उपदेशसे बनको सिधारे। यह आल्हाके नायकोंका संक्षिप्त जीवन है। बाकी पाठक पुस्तक पढ़कर समझ लेंगे।





* श्रीः *

अथ

बड़ी आल्ह खण्ड

(मङ्गलाचरण)

* दोहा *

सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करहिं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥१॥

॥ सुमिरन—आल्हा ॥

सुमिरन करिये श्रीगणेशको * जासों सिद्धि होयँ सब काम ॥
हैं सब लायक गणनायकप्रभु * सुन्दर बदन रूप अभिराम ॥
मस्तक कंचन मुकुट बिराजैं * राजै कण्ठ मुण्ड की माल ॥
रक्तवर्ण लम्बोदर सोहै * सोहै अङ्ग अङ्ग सब लाल ॥
एकदन्त गज बदन बिनायक * लायक सुभट कालके काल ॥
शङ्कर नन्दन दुष्ट निकन्दन * बन्दन जगत गौरिके लाल ॥
तेज बिराजै अङ्ग अङ्ग महँ * शोभा कछु कही ना जाय ॥

ऋद्धिसिद्धिनिधिचमर डुलावैं * सुरगण हाथ बाँधि रहिजाँय ॥
मैं अज्ञान मोहवश निशिदिन * केहि बिधि रटौं तुम्हारोनाम ॥
दास आपनो जानि मोहिं प्रभु * पूरन करहु नित्य सब काम ॥
बरणौं शाखा आल्हखंड की * दहिने होउ शारदा माय ॥
बड़े बड़े क्षत्री जग में उपजे * सुनिसुनि नाम जीवहुलसाय॥
करनी सुनिसुनि कँपै करेजा * धनिधनिभूमि लिये औतार ॥
सतयुगहिरणायक्षहिरणाकुश * जिनके बलको नाहिं सम्हार ॥
त्रेता माहिं राम अरु लक्ष्मण * अंगद और बीर हनुमान ॥
परशुराम को महा पराक्रम * जिनको जानत सकलजहान ॥
द्वापर प्रगटे कौरव पांडव * जिन भारत में युद्ध रचाय ॥
जन्मधारिके पुनिकलियुगमें * आल्हा ऊदन नाम धराय ॥
सिंह रूप हुइ जग में प्रगटे * जीते बड़े बड़े उमराय ॥
बावन गढ़ में शाखो कीन्हों * भई सहाय शारदा माय ॥
राम लषन सिय महाबीर पद * सुमिरन करत रहत सबकाल ॥
बावन गढ़ को युद्ध बखानत * आल्हालिखत शिवचरणलाल॥

* अथ परिमल का बिवाह *
॥ महोबे की पहिली लड़ाई ॥

सुमिरन—आल्हा ।

सुमिरन करिये महादेव को * जिनके श्रीगणेश से क्वाँर ॥
विघन विनाश करत भक्तनके * भूले अक्षर देत सम्हार ॥
सहज बानि है दयासिन्धु की * थोड़े प्रेम मग्न हुइ जात ॥
ऐसे प्रभुको भजन छाँड़िके * केहिको और जपै दिन रात ॥

गुरु बखानौं अमरनाथ से * जिनकी विद्या अगम अपार ॥
खाँड़ा बखानौं परिमालें को * थे जो चन्द्र वंश सरदार ॥
सिगरे राजा तिन अपनाये * जीते बड़े बड़े सरदार ॥
मानी आज्ञा अमर गुरू की * खाँड़ा सागर धरेउ पखार ॥
चुगुल बखानौं उरई वारो * जाको नाम महिल परिहार ॥
करिकरि चुगुली परिमालेंकी * कीन्हों नाश क्षत्रियन ज्यार ॥
छोड़ि सुमिरनी अब महुवेको * गावत हाल शिवचरन लाल ॥
जैसे व्याही मल्हना रानी * औं बसि गये रजा परिमाल ॥
राजा वासुदेव महुवे को * ताको पुत्र महिल परिहार ॥
भारी राजा वासुदेव तहँ * रण में एक शूर सरदार ॥
ताकी बेटी मल्हना कहिये * सो महुवे की राजकुमारि ॥
खबरि उड़ानी देश देश में * बहुतै सुघर मल्हन दे नारि ॥
तेज विराजै अंग अंग में * जाको रूप न बरनो जाय ॥
सुनो हाल अबतेहि मल्हनाका * व्याहे आय चन्देले राय ॥
भूप चँदेला चन्देलों का * जाको नाम रजा परिमाल ॥
योधा जितने भारत खंड के * सो लड़ि लड़ि कीन्ह पामाल ॥
सुनी खबरि जब गढ़महुबेकी * सुन्दर कुँवरि महोबे क्यारि ॥
ऐसी सुन्दर कोउ नाहीं जग * जैसी सुघर मल्हनदे नारि ॥
सुनते मोहित भये चन्देले * जो नरनाह रजा परिमाल ॥
तुरत बुलायो चिंतामणि को * मंत्री सुनो चित्त को हाल ॥
एक तो मंत्री तुम हमरे हो * दूजे पंडित राज समाज ॥
ऐसी सम्मति हमहिं बतावो * जाते होय सिद्धि यह काज ॥
सुनते बोले चिन्तामणि तब * मनकी बात कहो महराज ॥
कौन अँदेशा है तुम्हरे मन * हुइहै सबहि तुम्हारो काज ॥

बोले राजा चिन्तामणि से * पंडित सुनौ हमारी बात ॥
राजा बासुदेव महुबे को * कन्या जासु जगतबिख्यात ॥
रूपकी अगरी सुनि कन्यावह * हमरे मन में गई समाय ॥
सगुन बताय देउ जल्दी से * औ यह ब्याह देउ रचवाय ॥
सुनतै पंडित सगुन बनायो * नीकी सायति दई बताय ॥
कूँच कराय देउ महुबे को * तुम्हरो काम सिद्धि हुइजाय ॥
सुनतै खुशी भये चन्देले * तुरत नगड़ची लियो बुलाय ॥
कड़ा सोबरन का डरवायो * अबहीं डंका देउ बजाय ॥
बाजो डंका तब फौजन में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले तोपैं सबैं सजाईं * औ धरनी में धरी निकार ॥
बड़ि २ तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर दई धराय ॥
गोला भराय दिये छकड़नमें * औ आगे को दियो जोताय ॥
हाथी सजाये सकल फौज के * शोभा कछू कही ना जाय ॥
जरकस वाली झूलैं डारी * औ अंबारी दई धराय ॥
कलश सोबरन के धरवायो * शोभा कछू कही ना जाय ॥
साजे घोड़ा हैं सबरंगी * तंग दुरंगा खिंचे बनाय ॥
ऊँट सजाये बहुत भाँतिके * सुन्दर गजरथ लिये सजाय॥
जितना गहना रजपूती का * ज्वानन पहिरिलीन्ह हरषाय॥
सजी फौज देखी मुन्शी ने * कूदि के घोड़ा भयो सवार ॥
जायके पहुँचो परिमालै ढिग * राजै खबरि सुनाई जाय ॥
सुनी हकीकति परिमालै ने * औ यह हुक्म दियो फरमाय॥
जितने क्षत्री हैं बँगला में * सो सब चलैं हमारे साथ ॥
गज भरि छाती चन्देले की * अरु नैनन में बरै मसाल ॥
रूप अनोखो है राजा को * जिनके तेज बिराजत भाल ॥
पैंधि पजामा मिसुरू वाला * जामा पैंधि दुदामी क्यार ॥

अगल बगल पर दुइ पिस्तौलैं * बायें सिंहनि मूठि कटार ॥
पाग बैजनी शिर पर सोहै * कलँगी लगी मोतियनक्यार ॥
बीरभद्र हाथी सजवायो * जो सब हाथिन को सरदार ॥
डारके गद्दा मखमल वालो * सोनेको हौदा दियो कसाय ॥
सिढ़ी लगाई मलियागिरकी * तापर चढ़े चँदेले राय ॥
राजा सजतै सकल साजिगे * शोभा बरणा करी ना जाय ॥
चलिभौ हाथी परिमालै को * औ फौजन में पहुँचो जाय ॥
बजो नगाड़ा तब दल साजन * क्षत्री तुरत भये हुशियार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
बड़े २ तोंदन के जे क्षत्री * ते पलकिन माँ भये सवार ॥
सब्जे बाना सब्ज निशाना * सब्जै झंडो करी तयार ॥
सब्जै हाथी सब्जै घोड़ा * सब्जै फौज रजा परिमाल ॥
सब्जी सब्जी सबै दिखावै * हुइ गइ भूमि सब्जतेहिकाल ॥
नौसो झंडा खड़े सुनहरो * अगणित ध्वजा रहीं फहराय ॥
कूँचको डंका तब बजवायो * लश्कर कूँच दियो करवाय ॥
चलिभौ लश्कर चन्देले को * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
मंजिल २ धावा करिके * महुबा धुरो दबायो आय ॥
लश्कर परिगो तब धूरे पर * क्षत्रिन छोरि धरे हथियार ॥
जीन उतारि धरे घोड़न के * हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
चढ़ी रसोइयाँ उमरायन की * क्षत्री करन लगे असनान ॥
बैठे राजा निज तंबू में * मंत्री जायके लग्यो बतान ॥
राय मिलाई तब राजा ने * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
लैके कागद कल्पी वालो * हाथ लेखनी लई उठाय ॥
पहिले लिखि के सरनामाको * पीछे राम जोहार सलाम ॥

ताके पीछे लिखी हकीकति * राजा बासुदेव के नाम ॥
चंद्र बंश में मैं उपजो हौं * नगर चँदेली धाम हमार ॥
पिता हमारे कीर्तिराज हैं * मेरो नाम विदित संसार ॥
तुम्हरी बेटी मल्हना कहिये * जाको रूप विदित संसार ॥
ताको व्याहन हम आये हैं * जो परिमाल चँदेली क्यार ॥
हँसी खुशी से व्याह रचावौ * कीरति रहै जगत में छाय ॥
जो कहुँ मुखसे नाहीं करिहौ * महुबो गर्द दिहौं करवाय ॥
जो इच्छा लड़िबे की होवै * अपनो खेत बोहारौ आय ॥
इतनी बातैं लिखि चिठियामें * औ धामन कहँ दइ पकराय ॥
चलिभौ धामन तब फौजनसे * औ महुबे की पकरी राह ॥
तीनि घरी केरे अरसा में * औ फाटकपर पहुँचो आय ॥
बोलो धामन दरबानी ते * फाटक जल्द देउ खोलवाय ॥
कहाँ ते आये औ कहँ जैहौ * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोलो धामन दरबानी से * तुम सुन लीजौ कानलगाय ॥
पाती लाये चंदेले की * सो राजा को दीहौं जाय ॥
फाटक खोलो दरबानी ने * धामन चला अगारू जाय ॥
जायके पहुँचोराजभवनढिग * जहँ दरबार महोबे क्यार ॥
लगी कचहरी बासुदेव की * अजगर लागि रहा दरबार ॥
देखत शोभा राज सभा की * धामन मोहि मोहि रहिजाय ॥
सोने सिंहासन राजा बैठे * ऊपर चौर ढुरैं गजगाह ॥
सिंह की बैठक क्षत्री बैठे * एकते एक शूर सरदार ॥
छाई लालरी है नैनन में * टिहुना नगिन धरे तरवार ॥
देखत शोभा वा बंगला की * धामन सोचै औ रहिजाय ॥
सात कदमसे मुजरा करिके * पाती गद्दी दई चलाय ॥

नजर बदलि गई बासुदेव की * तुरतै पाती लई उठाय ॥
तुरत कतरनी से बँद काटे * आँकुइ आँकु नजरि करिजाय ॥
पाती बाँचत परलै हुइ गइ * नैना अग्नि ज्वाल ह्वै जाय ॥
दहिने माहिल जे बैठे थे * पूँछत हाथ जोरि शिरनाय ॥
कहाँ ते पाती यह आई है * सो सेवक ते कहो बुझाय ॥
बोले राजा तब माहिल से * बेटा सुनौ लड़ैते लाल ॥
पाती आई परिमालै को * व्याहन हेत मल्हनदे क्वाँरि ॥
देर लगैबे को दिन नाहीं * महुबे की फौज होय तैयार ॥
इतनी बात कही माहिल ते * औ फिर कागदलियोउठाय ॥
लई लेखनी कर कञ्चन की * पाती को उत्तर लिखो बनाय ॥
काहे को आयो नगर महोबे * अपनो भरम गमायो आय ॥
चुप्पै लौटि जाउ चंदेली * नाहिंतो मूड़ लिहौं कटवाय ॥
ब्याह न हुइहै गढ़ महुबे माँ * चाहे कोटि धरो अवतार ॥
इतनी बात लिखी चिठियामाँ * सो धामन का दइ पकराय ॥
चलिभो धामन तब महुबे से * औ लश्कर में पहुँचो जाय ॥
पाती दीन्ही चन्देले को * राजा पढ़न लगे तत्काल ॥
बोलि नगड़ची को बीरादश्रो * औ मंत्री से कहो हवाल ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * चत्री सबै भये हुशियार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न पर असवार ॥
नलकीपलकी अरुगजरथपर * बड़े २ चत्री भये सवार ॥
पैदल फौज चली पीछे से * तोपैं ढुरकति चलैं अगार ॥
चलिभौ लश्कर चंदेले को * डंका होत गोल में जाय ॥
हियाँ की बातैं हियँनै छाँड़ो * अब महुबे को सुनौ हवाल ॥
हुक्म पायके माहिल भूपति * लश्कर पहुँचिगये ततकाल ॥

तुरत नगड़ची को बुलवाओ * मारू डंका देउ बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब महुबे में * क्षत्री उठे भरहरा खाय ॥
चढ़ि २ तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
जितने हाथी हैं महुवे माँ * सो सब जल्दी लेउ सजाय ॥
एक २ हाथी के हौदा में * बैठे चारि चारि असवार ॥
सजिके हाथी सब ठढ़े भये * शोभा कछु कही ना जाय ॥
जितने घोड़ा थे महुबे के * सो सब जल्द लिये सजवाय ॥
जीन सुनहरे धरि घोड़न पर * रेशम तंग दिये खिचवाय ॥
तुरतै चलिभे माहिल ठाकुर * औ क्षत्रिन ढिग पहुँचे जाय ॥
हाथ उठाये माहिल बोलैं * ज्वानौ खबरदार हुइ जाउ ॥
जितने क्षत्री हैं लश्कर माँ * साजैं एक साथ चितचाउ ॥
हुक्म पाय के सगरे क्षत्री * साजन लगे शूर सरदार ॥
घरी एक केरे अरसा में * सारी फौज भई तैयार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगये * बाँके घोड़न के असवार ॥
कोई रथ पर कोई ऊँट पर * कोई गजरथ भये सवार ॥
सूर सजीले चढ़े ऊँट पर * कम्मर दुइ बाँधे तरवार ॥
पैदल पल्टन और रिसाला * सब सजिगये महुबियाज्वान ॥
धौंसा बाजै तब लश्कर में * घूमन लागे लाल निशान ॥
डंका बाजै तब फौजन में * बारह कोस जाय धधकार ॥
सगरी फौजैं कूँच कराई * डंका होत गोल में जाय ॥
पाँच लाखसे माहिल चलिभै * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
इततै फौजैं हैं माहिल की * उततै फौज चँदेले क्यार ॥
बारह जोड़ी बजै नगाड़ा * बोतै दोउ दल हाहाकार ॥
दोऊ सेना दल बादल लौं * पहुँची समर भूमि में आय ॥

असली बड़ा आल्हखण्ड



भार्गव भूषण प्रेस, काशी।

कहँ लगिवरणौंमैं फौजनको * कायर देखि २ भय खायँ ॥
दोनों फौजन के सन्मुख में * रहिगो आध कोस मैदान ॥
हाथी बढ़ायो तब माहिल ने * और यह बोले त्योरी तानि ॥
कौन सूरमा चढ़ि आयो है * केहि रजपूत लियो अवतार ॥
कौन सो क्षत्री है तरवरिहा * जिन यह धुरो दबाओ आय॥
इतनो सुनिके चंदेले ने * अपनो हाथी दयो बढ़ाय ॥
बोले राजा तब माहिल से * सुनिये बासुदेव के लाल ॥
देश हमारो चंदेली है * हमरो नाम रजा परिमाल ॥
बहिनतुम्हारी मल्हना कहिये * जो महुबे की राजकुमारि ॥
ताको व्याह देउ जल्दी से * तौ मिटजाय सकल यहरारि ॥
बिना बियाहे हम ना जैहैं * चाहे प्राण रहै की जाय ॥
सुनिके बातैं ये राजा की * नैना अग्निज्वाल हुइजायँ ॥
कबसे ठाकुर भये तरवरिहा * कबसे बाँधि लिये हथियार ॥
धोखेनरहिओ केहु कायरके * मुँहसे बोलौ बात सँभार ॥
ऐसी बातैं सुनि माहिल की * तब हँसि कहैं चँदेले राय ॥
जेहि की बेटी नीकी देखैं * तेहिकी भाँवरि लेयँ डराय ॥
डंड बाँधिके वा क्षत्री की * कन्या दान लेइँ करवाय ॥
सुनिके बातैं ये राजा की * माहिल अग्निज्वाल हुइजाय॥
ऐसी बातैं ना तुम बोलो * तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
माहिल हाथी को लौटायो * अपने लश्कर पहुँचे आय ॥
तोप दरोगा को बोलवायो * औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
दै देउ बत्ती मेरी तोपन माँ * इन पाजिन का देहु उड़ाय ॥
दगे मोरचा तब तोपन के * कछु तारीफ करी ना जाय ॥
धुआँ उड़ानो आसमान लौं * सूरज रहे धुंधि में छाय ॥

दोउ ओर से दगी सलामी * अब कुछ रहा ठिकाना नायँ ॥
अररर अररर गोला छूटैं * कहकहकरैं अगिनियाँ बान ॥
सन २ सन २ गोली छूटै * चारों ओर होय घमसान ॥
गोला लागै जेहि हाथी के * मानों चोर सेंध दै जाय ॥
गोला लागै जौन ऊँट के * रणमें गिरै चकत्ता खाय ॥
जेहि घोड़ा के गोला लागै * सो असवार सहितगिरिजाय ॥
एक पहर भरि गोला बरसो * तोपैं लाल बरन हुइ जायँ ॥
चढ़ी कमनियाँ पानी हुइगइँ * ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ॥
दोनौं फौजैं संगम हुइ गइँ * घूमिके चलन लगी तरवार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै * बोलै छपक छपक तलवार ॥
पैदल के संग पैदल भिरिगै * औ असवारन से असवार ॥
हौदा के संग हौदा भिरिगै * हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
तेगा चमकै बर्दवान के * कटि २ गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
सात कोस लौं चलैं सिरोही * चारो ओर होय घमसान ॥
पैग पैग पर पैदल गिरिगै * उनके दुदुइ पैग असवार ॥
कोई रोवत है लड़िकन को * कोई पुरखिन को चिल्लाय ॥
कोई रोवत है तिरियन का * घरमाँ लाये गौनमाँ चार ॥
भेड़हा आये चंदेले के * जिनके बलकीमिलै न थाह ॥
भेड़ बकरियन की गिनतीना * जो मनइन को करैं अहार ॥
छाँड़ि नौकरी हम माहिलकी * बनकी बेंचि लकड़ियाँ खायँ ॥
पाँच लाख से माहिल आये * रहिगये तीन लाख असवार ॥
सुचँन सुचँन माहिल घूमैं * सबसे कहैं पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ * तुम सब भैया लगौ हमार ॥
भागि न जैयो कोइ मोहरा ते * राखियो धर्म महोबे क्यार ॥

बढ़े सिपाही महुबे वारे * अपने खैंचि लिये हथियार ॥
झुके सिपाही चंदेले के * रणमें कठिन करैं तरवार ॥
भजे सिपाही तब माहिल के * अपने डारि डारि हथियार ॥
भजत सिपाही माहिल देखे * मनमें सोचैं राजकुमार ॥
सोचि समुझिकेमन अपनेमाँ * तुरतै हाथी दियो बढ़ाय ॥
जहँ पर हाथी चंदेले को * माहिल तहाँ पहूँचे जाय ॥
बोले माहिल तब राजा से * तुम सुनि लेउ चँदेले राय ॥
दस दस रुपिया के नौकर हैं * नाहक डरिहौ मूड़ कटाय ॥
हम तुम खेलैं समर भूमिमें * दुइ में एक आँकु रहि जाय ॥
यह मन भाय गई राजा के * तुरतै हाथी दियो बढ़ाय ॥
बोले राजा तब माहिल ते * सुनिये बासुदेव के लाल ॥
चोट आपनी पहिली करिलेउ * मन के मेटि लेउ अरमान ॥
खैंचि सिरोही लै माहिल ने * लैके कृष्णाचन्द्र को नाम ॥
करो झड़ाका परिमालै पर * मनमेंसुमिरिबहुरि घनश्याम ॥
ढाल उठाई चंदेले ने * राजा लैगे चोट बचाय ॥
तीनि सिरोही हनिहनि मारी * खाली मूठ हाथ रहि जाय ॥
माहिल सोचैं अपने मनमाँ * है यह बीर चँदेलो राय ॥
गुर्ज उठायो फिर माहिल ने * सो राजा पर दियो चलाय ॥
बायेंसे हाथी दहिने हुइगयो * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
लईकमनियाँ फिर माहिलने * गुस्सा गई बदन में छाय ॥
खैंचि कमनियाँभुजदंडन भरि * तीवा मरमर होय कमान ॥
हियरा डाटो परिमालै का * मारो ताकि हृदय में बान ॥
हाथी हटिगो फिरि बायें को * उनका राखिलियो भगवान ॥
साँगि उठाई तब माहिल ने * अपने चित्त बहुत हरषान ॥

करो धमाका चंदेले पर * मनमें सुमिरि कालिकामाय ॥
हाथी हटायो फीलवान ने * नीचे साँगि गिरो अरराय ॥
तब ललकारो परिमालै ने * माहिल खबरदार हुइ जाउ ॥
चारि उचौनी तुमने कीन्ही * अब यह लीजो गाजहमारि ॥
दोनों हाथी यकमिल हुइगे * हौदा से हौदा भिड़ि जाय ॥
लई सिरोही चंदेले ने * गज मस्तक पर दई चलाय ॥
चेहरा मारो तब हाथी को * औ माहिलकाँ लियो बँधाय ॥
माहिल बँधते परलै हुइ गइ * भूपति गये सनाका खाय ॥
हाथी बढ़ायो तब भूपति ने * औ सन्मुख हुइ कही सुनाय ॥
कौने बाँधो है माहिल को * सो सन्मुख हुइ देइ जवाब ॥
हाथी वढ़ायो चंदेले ने * औ सन्मुख हुइ कही सुनाय ॥
हमने बाँधो है माहिल को * हमरो नाम रजा परिमाल ॥
बहिनतुम्हारीमल्हना कहिये * ताको ब्याह देउ करवाय ॥
इतनी सुनकेभूपति जरिगये * नैनन रहो लालरी छाय ॥
सम्हरो ठाकुर तुम हौदा पर * तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
सुमिरन करिकै नारायण को * लै बजरंगबली को नाम ॥
खैंचि सिरोही लइ भूपति ने * मन मेंसुमिरिबहुरिघनश्याम ॥
करो झड़ाका चन्देले पर * बायें उठी गैंड़ की ढाल ॥
तीनि सिरोही हनिहनि मारी * खाली मूठ हाथ रहि जाय ॥
टूटि सिरोही गइ भूपति की * तुरतै लीन्हों गुर्ज उठाय ॥
वायेंसे हाथी दहिने हुइगो * नीचे गिरो गुर्ज अरराय ॥
दोनों चोटैं खाली परिगइँ * भोपति सोचि २ रहि जाय ॥
हाथी वढ़ायो चन्देले ने * हौदा से हौदा भिड़ि जाय ॥
ढाल कि औझड़ राज मारी * औ हौदा से दियो गिराय ॥

डंड बाँधि लइ तब भूपति की * औ हौदा माँ दियो कसाय ॥
जितनी लश्कर थी महुबे की * सो सब रेन बेन हुइ जाय ॥
तुरत साँड़िया को बुलवायो * औ यह लिखी चन्देले राय ॥
माहिल भूपति तुम्हरे बेटा * दोनों हमने लियो बँधाय ॥
अबहूँ ब्याहौ मल्हना बेटो * नाहित किलालिहौंछिनवाय ॥
लिखिके पाती परिमाले ने * सो धामन काँ दइ पकराय ॥
चिट्ठी लैंके धामन चलिभो * औ महुबे में पहुँचो जाय ॥
लगी कचहरी बासुदेव की * धामन पहुँचि गयो हरषाय ॥
सात कदम ते करी बन्दगी * पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके पाती राजा बाँची * आँकुइआँकुनजरि करिजायँ ॥
पाती बाँचत परलै हुइ गइ * मनमाँ सोचि सोचि रहिजायँ ॥
लौटि जवाब लिखो पाती को * पढ़ियो याहि चन्देले राय ॥
धोखे न रहियोकेहु गढ़ियाके * महुबे ब्याह होन को नायँ ॥
अबहूँ मानो कही हमारी * तुरतै लौटि चन्देले जाउ ॥
जो इच्छा लड़िबे की होवे * तौ तुम खबरदार हुइ जाउ ॥
लिखिके पाती बासुदेव ने * सो धामन का दइ पकराय ॥
लैके पाती धामन चलिभो * औ लश्कर माँ पहुँचो आय ॥
दै दइ पाती परिमालै को * बाँचन लगे चन्देले राय ॥
पढ़िके पाती चन्देले ने * औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
डंका बाजै मेरे लश्कर माँ * सगरी फौज होय तैयार ॥
डंका बाजो तब दल गंजन * साजन लगे शूर सरदार ॥
हियाँ की बातैं हियनैं छोड़ो * अब महुबे को सुनौ हवाल ॥
बोलि नगड़ची को बीरा दो * तुरतै बासुदेव नर पाल ॥
कूच कराय दियो तुरतै तब * चलिभये तीनलाख असवार ॥

बजै नगाड़ा मेरे लश्कर में * क्षत्री सबै होयँ तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * सिगरी फौज भई तैयार ॥
हाथी समर भयंकर साजो * तेहि पर चढ़ा वीर परिहार ॥
इतते फौजैं बासुदेव की * उतते फौज चन्देले राय ॥
दोनौं फौजन के अंतर माँ * रहिगौ आठ खेत मैदान ॥
हाथी बढ़ायो बासुदेव ने * समरभूमि में जाय तुलान ॥
फिरि ललकारो बासुदेव ने * औ सन्मुख हुइ कही सुनाय ॥
कौने सूरमाँ चन्देले हैं * जिन यह धुरा दबाओ आय ॥
कौने बाँधो मेरे लरिकन काँ * सो समुहैं हुइ देइ जवाब ॥
इतनी सुनिके चन्देले ने * तुरतै हाथी दियो बढ़ाय ॥
हमने बाँधो है लरिकन काँ * हमरो नाम चन्देले राय ॥
ब्याहन आये हैं मल्हना काँ * जल्दी ब्याह देउ करवाय ॥
बोले राजा चन्देले से * तम सुनिलेउ रजा परिमाल ॥
कौवा मारे हौ बागन के * बगुला मारेउ सागर ताल ॥
जङ्गल चरते हिरना मारेउ * ना शेरन के करेउ शिकार ॥
सुनिके बातैं बासुदेव की * बोले तुरत चन्देले राय ॥
जेहिकी बेटी नीकी देखैं * उजरो रूप राशि करतार ॥
जोरावरि सों ब्याह रचावैं * हमरे कुला यही ब्यौहार ॥
सुनिके बातैं चन्देले की * औ हुइ गई करेजे पार ॥
जैसे तोप निशाना लागै * गोली निकर जाय वा पार ॥
तैसे बात लगी राजा के * नैनन रही लालरी छाय ॥
हुक्म दै दियो बासुदेव ने * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
मारो २ इन पाजिन को * सबकी कटा देउ करवाय ॥
दैदइ बत्ती तब तोपन माँ * धुअँना रहो स्वर्ग मँड़राय ॥

अंधकार लश्कर में छायो * सूरज रहे धुंधि माँ छाय ॥
गोला ओला के सम छूटैं * गोली मघाबूँद झरलाय ॥
चारिघरी भरि गोला बरसो * चुटकिन के गये मास उड़ाय ॥
तोपैं धैं धैं लाल बरन भईं * ज्वानन हाथ धरो ना जाय ॥
मारु बंद भइ तब तोपन को * औ बंदूकैं लईं उठाय ॥
सन सन सन सन गोलीछूटैं * मानो मघा बूँद झरिलाय ॥
दोनों दल में यह गति बीतै * बूते हाल कहो ना जाय ॥
मारु बंद भइ बंदूकन की * यारौ सुनिये कान लगाय ॥
दोनों फौजैं यकमिलि हुइगइँ * घूमिके चलन लगी तलवार ॥
पैदल के संग पैदल अभिरे * औ असवारन से असवार ॥
कल्ला कटिगे हैं घोड़न के * औ चुचुआति फिरैं असवार॥
ऐसो समर भयो महुबे माँ * तहँ बहि चली रक्तकी धार ॥
दोनों फौजैं संगम हुइ गइँ * चारिउ ओर चलैं तरवार ॥
अपन पराओ ना पहिचानै * छत्रिन मारु २ रट लाग ॥
झुके सिपाही चन्देले के * दोनों हाथ करैं तरवार ॥
भजे सिपाही महुबे वाले * अपने डारि डारि हथियार ॥
भजत सिपाही राजा देखे * सबसे कहैं पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हो * तुम सब भैया लगत हमार ॥
सदा तोरैया ना बन फूलै * यारो सदा न सावन होय ॥
स्वर्ग मड़ैया सब काहू की * यारो सदा न जीवै कोय ॥
खटिया परि के जो मरिजैहो * कोई न लेहैं जग में नाम ॥
जो मरिजैहो रण खेतनमाँ * सीधो मिलै तुम्हैं सुरधाम ॥
युद्ध जीति के महुबे चलिहो * दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
दओ बढ़ावा बासुदेव ने * औ आगे को दओ बढ़ाय ॥

झुके सिपाही दोनों दलके * फिरिके चलन लगी तरवार ॥
बढ़े सिपाही चन्देले के * अंधा धुन्ध करैं तलवार ॥
जैसे पान तमोली कतरै * जैसे खेती लुनै किसान ॥
जैसे तोता फलको कतरै * त्यों रण काटि रहे सब ज्वान ॥
मारा मारु मची रन भीतर * नाहीं सूझै अपन बिरान ॥
फौजैं भाजि गईं महुबे की * रहि गये बासुदेव मैदान ॥
राजा सोचैं अपने मन माँ * हा यह कहा करी भगवान ॥
हाथो वढ़ायो बासुदेव ने * औ राजा से कही सुनाय ॥
हम तुम खेलैं समर भूमिमें * दुइमाँ एकु आँकु रहि जाय ॥
दुइ दुइ रुपिया के नौकर हैं * काहे डरिहौ मूड़ कटाय ॥
यह मन भाय गई राजा के * तब हँसि कही चन्देले राय ॥
बात तुम्हारी हमने मानी * सुनिये धीर बीर परिहार ॥
बोले वासुदेव राजा से * सुनिये चन्द्र बंश सरदार ॥
चोट आपनी पहिले करिलेउ * मन के मेटि लेउ अरमान ॥
कहैं चँदेले तब राजा से * सुनिये बासुदेव बलवान ॥
रीतैं बाँधो चन्द्र वंश ने * हमरे कुला यही व्यवहार ॥
गऊ ब्राह्मण को ना मारैं * ना भागे के परैं पिछार ॥
हाथ मेहरियन पर ना डारैं * हमरो क्षत्री धर्म नसाय ॥
पहिलो उचौनी हम ना करिहैं * चाहे प्राण रहै की जाय ॥
सुनिके बातैं चन्देले की * मनमें बिहँसि पड़ा परिहार ॥
सुमिरन करिकै जगदम्बा को * करसे खैंचि लई तलवार ॥
करो झड़ाका बासुदेव ने * बायें उठी गैंड़ की ढाल ॥
टूटि शिरोही गइ राजा की * औ बचि गए रजा परिमाल ॥
सोचैं राजा अपने मन माँ * है यह बीर चन्देला राय ॥

साँगि उठाई बासुदेव ने * औ राजा पर दई चलाय ॥
हठिगा हाथी चन्देले का * बचिगा फेरि चन्देला राय ॥
गुर्ज उठायो बासुदेव ने * गुस्सा गई बदन में छाय ॥
सम्हरो ठाकुर तुम हौदा में * तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
बायें से हाथो दहिने हुइगो * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
बचिगे राजा हैं हौदा में * दहिने भई शारदा माय ॥
बड़ो सूरमाँ यहु लड़िका है * सोचैं बासुदेव नर राय ॥
कन्या दीन्हीं है ईश्वर ने * हमरो दोन्हों गर्व नशाय ॥
जो ना बेटी हमरे होती * क्यों यह लौतो फौज चढ़ाय॥
ऐसे सोचैं बासुदेव नृप * फिरि राजा ते कही सुनाय ॥
संग हमारे जो तुम चलिहौ * कन्या दान दिहौं करवाय ॥
डंड छाड़िदेउ मेरे लरिकनकी * राजा गङ्गा लई उठाय ॥
डंड छोड़ि दइ चन्देले ने * औ सँग चले बहुत हरषाय ॥
जायके पहुँचे सब महुबे माँ * राजा बासुदेव के धाम ॥
मनमाँ सोचै घटिहा राजा * अब धोखे माँ बनिहै काम ॥
दहक खोदायो बासुदेव ने * तापर पलँग दिया बिछवाय ॥
करो इशारा परिमालै को * बैठो आय चन्देले राय ॥
जबहीं राजा बैठन लागे * सन्मुख रही पद्मिनी नार ॥
दियो इसारा पति अपने को * बैठो नहीं भूप सरदार ॥
कुरसी पड़ी रहै बँगला में * तापर बैठि गयो हरषाय ॥
सन्मुख देखो जब मल्हनाको * मनमें बहुत खुशी हुइजाय ॥
मनमाँ सोचै रजाचन्देले * केहि विधि वरौं पद्मिनीनार ॥
परम सुन्दरी यह नारी है * मोहित भयो चन्द्र सरदार ॥
धीरज धरके चन्देले ने * बासुदेव से कही सुनाय ॥

हमरी मानौ बात भूप अब * मनकी संका देहु गँवाय ॥
हँसो खुशी से व्याह रचावो * जाते सबै काम बनिजाय ॥
सुनिके बातैं ये राजा की * बोले बासुदेव परिहार ॥
तुम्हरी बातैं मानी हमने * औ हमरे मन गई समाय ॥
धीरज राखौ निज जियरा माँ * अबहीं व्याह दिहौं करवाय ॥
तुरत बुलायो फिरि पंडित को * शोधो लग्न महूरत बार ॥
जितनी सखियाँ हैं महुबे की * सो सब करैं मंगला चार ॥
आये चन्देले अपने दल माँ * सकल बराती होंय तयार ॥
सजी बरायत चन्देले की * शोभा बरन करी ना जाय ॥
चली सवारी चन्देले की * मानहुँ इन्द्र अखाड़े जाय ॥
पहुँची बरायत जब महुबे माँ * देखत नगर खुशी हुइ जाय ॥
सखियाँ बैठो हैं अंटन पर * छज्जन रही लालरी छाय ॥
झुकि २ देखैं परिमालै को * औ सब मोहि २ रहि जाँय ॥
रूपको आगर यहु लड़िकाहै * धनि २ चन्द्र बंश सरदार ॥
यहि विधि देखत नगर महोबा * मोहित करत चन्द्र सरदार ॥
जाइके पहुँचे दरवाजे पर * तुरतै भयो दुआरा चार ॥
भीतर सखियाँ मंगल गावैं * शोभा बरणि करी ना जाय ॥
जबहीं राजा भीतर पहुँचे * चन्दन चौकी दई डराय ॥
पंडित वेद उचारन लागे * सबके हर्ष न हिये समाय ॥
चिंतामणि पंडित राजा के * गहने को डब्बा दियो गहाय ॥
तुरत लै आवौ अब बेटी को * भाँवरि समय पहूँचो आय ॥
भयो बोलौआ तब नाउनिको * बेटी के उटबन दयो कराय ॥
सजिकै मल्हना गइ बेदी पर * मानौं इन्द्र अप्सरा आय ॥
चन्दन चौकी पर बैठारे * औ सब नेग दये करवाय ॥

करि गँठिबंधन फिरि पंडित ने * भौंरी को त्यारी दई कराय ॥
फेरनके हित जब मड़ये तर * उठिके चले चन्द्र सरदार ॥
पंडित बेद उचारन लागे * सखियाँ गावैं मंगल चार ॥
पहिली भाँवरिके परतै खन * माहिल खैंचि लई तरवार ॥
करो भड़ाका जब समुहें पर * मुंशी जौन चन्द्र सरदार ॥
ढाल अड़ाय दई समुहें पर * औ बचि गये चन्देले राय ॥
दुसरी भाँवरि के परतै खन * भूपति गही तेग खिसिआय ॥
करो भड़ाका परिमालै पर * चितामणि दइ ढाल अड़ाय ॥
सातौ भाँवरियहिविधिपरिगई * बहुतै खुशी चन्देले राय ॥
अनँद बधैया महुबे बाजे * घर २ खुशी रही है छाय ॥
फिरि चन्देले बोलन लागे * सुनिये बासुदेव नरराय ॥
करौ तयारी तुम बेटी को * अबहीं बिदा देउ करवाय ॥
खबरैं हुइ गईं रंगमहल में * बिदा को त्यारी दइ करवाय ॥
डोलाखंदायदियो मल्हना को * लश्कर कूँच दियो करवाय ॥
मंजिल २ के चलिबे माँ * अपनो धुरा दबायो आय ॥
यक हरिकारा दौरति आवै * चन्देलो में पहुँचो जाय ॥
खबर हुइगई रंग महल माँ * सखियाँ करैं मंगला चार ॥
डोला आयो जब द्वारे पर * परछन होन लगी तेहिबार ॥
दगी सलामी चन्देलो में * नौसै तोप दईं दगवाय ॥
ऐसे ब्याह भयो मल्हना को * सो हम लिखिके दओसुनाय ॥
आगे हाल लिखौं महुबे को * जेहिविधि लियो चँदेलेराय ॥
यकदिनमल्हना बोलन लागी * स्वामी सुनो हमारी बात ॥
नगर महोबे की सरिबरि को * जग में नगर न मोहिं दिखात ॥
यातो बसौ चलौ महुबे माँ * नातरु हमैं देउ पहुँचाय ॥

बोले राजा तब रानी से * रानी सुनौ हमारी बात ॥
बहुत राज है मेरे बाप को * अरु है पारस मणि विख्यात ॥
ऐसो पत्थर मेरे घर है * लोहा छुवत सोन हुइजाय ॥
कौन बात की याँ कमती है * जासों तेरो चित घबराय ॥
बोली मल्हना तब राजा से * स्वामी सुनौ हमारो बात ॥
राजपाट धन मोहि न चाहिये * याको हमैं नहीं परवाह ॥
मैं तो वास करौं महुबे माँ * नातरु मरौं कनी विष खाय ॥
बोले राजा तब रानो से * प्यारी धीर धरौ मन माहि ॥
करौ चढ़ाई मैं महुबे पर * जीति के लेहौं तुरत छिनाय ॥
धीरज दैके रनि मल्हना को * आये सभा चँदेले राय ॥
लैके सम्मति निज मत्री की * औ यह हुक्म दियो करवाय ॥
बजै नगाड़ा मेरे लश्कर में * सगरी फौज होय तैयार ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * सोने के कड़ा दये डरवाय ॥
पहिले नगाड़ा भइ जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लीन्ह हथियार ॥
बजो नगाड़ा चन्देली में * चत्री उठे भरहरा खाय ॥
तिसरे नगाड़ा के बाजत खन * चत्री फाँदि भये असवार ॥
चौथे नगाड़ा के बाजत खन * सबने कूँच दियो करवाय ॥
देश २ के नृप संग लैके * औ चलि भये चन्देले राय ॥
मंजिल २ के चलिबे माँ * महुबो धुरो दबायो आय ॥
तीनिकोस जब महुबो रहिगो * तबहीं डेरा दियो गड़ाय ॥
फेटैं छुटि गइँ रजपूतन की * घोड़न जीन दिये उतराय ॥
हौदा उतरि गये हाथिन के * औ परिगये चन्देले राय ॥
लैके कागद कल्पी वालो * अपनो कलमदान लै हाथ ॥
लिखो हकीकत चन्देले की * पढ़िओ वासुदेव नरराय ॥

अर्द्ध महोबो हमका दैदेउ * आधो राज्य देहु बटवाव ॥
जो तुम मुखते नाहीं करिहौ * महुबो गर्द दिहौं करवाय ॥
किला गिराय दिहौं महुबे को * सारो नगर लिहौं लुटवाय ॥
लिखिकै पाती यह राजा ने * हरिकारा को दई गहाय ॥
लैके पाती धामन चलिभो * औ महुबे माँ पहुँचो जाय ॥
सोने सिंहासन राजा बैठे * ऊपर चँवर ढुरै गजगाह ॥
सात कदम ते कुन्नस करिकै * पाती गद्दी दई चलाय ॥
नजरिबदलिगइ बासुदेव की * तुरतै पाती लई उठाय ॥
खोलि के पाती राजा बाँची * आँकुइआँकु नजरि करिजाय॥
पाती बाँचत परलै हुइ गइ * जियरा गयो सनाका खाय ॥
नाम पढ़त ही परिमालै को * मुँहको थूक बंद हुइ जाय ॥
छाय मुर्दनो गइ चेहरा पर * ओठन लाली गई सुखाय ॥
पूछैं माहिल तब राजा से * दुदुआ हाल देउ बतलाय ॥
कहाँ से पाती यह आई है * काहे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
बोले राजा तब माहिल ते * बेटा हाल कहो ना जाय ॥
पाती आई चन्देले की * माँगत अर्द्ध महोबो ग्राम ॥
आधो राज देउ महुबे को * नातर जाइ करो संग्राम ॥
इतना सुनतै माहिल जरिगा * अपने लश्कर पहुँचो जाय ॥
हुक्म दैदियो तब माहिल ने * सगरी फौज होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब महुबे माँ * क्षत्री सजन लगे हथियार ॥
धामन धायो तब महुबे से * लश्कर खबरि जनाई आय ॥
सजैं सिपाही परिमालै को * सगरी फौज भई तैयार ॥
इतते फौजैं हैं महुबे को * उतते फौज चँदेले क्यार ॥
दोनों पहुँची समर भूमि में * तोपैं चलन लगीं ततकाल ॥

चारि घरी भरि तोपैं बरसीं * अंधाधुन्ध मचो तेहि काल ॥
दोनौं फौजैं संगम हुइ गईं * भूमिके चलन लगी तरवार ॥
चारि घरी भरि चली सिरोही * औ वहि चली रक्तकी धार ॥
वड़े लड़ैया चन्देली के * जिनकी मार सही ना जाय ॥
भजे सिपाही महुबे वारे * अब कुछ रहा ठिकाना नायँ ॥
जीवितपकड़लियो माहिलको * अरु भोपतिको लियो बँधाय ॥
यक हरिकारा भाजत आवै * औ महुबे माँ पहुँचो आय ॥
खबरि सुनाई बासुदेव को * राजा बहुत गयो घबराय ॥
सोचिसमुझिके मन अपनेमाँ * चलिभे बासुदेव नृप राय ॥
करी अधीनी बासुदेव ने * जानो मोहिं आपनो दास ॥
डंबखोलि देउ दोउ बेटन की * औ महुबे माँ करौ निवास ॥
सुनिके बातैं ये राजा की * महुबे बसे रजापरिमाल ॥
राजा बासुदेव उरई माँ * बसिगे कुटुम सहित ततकाल ॥
दुसरी बेटी बासुदेव की * जाको नाम कमल सुकुमारि ॥
वौरीगढ़ के बीरशाह को * व्याही बासुदेव परिहार ॥
अगमा व्याही पृथीराज को * जो हैं दिल्ली के चौहान ॥
तिलका दिवला दुइ बाकी हैं * तिनका आगे सुनौ हवाल ॥
कछु दिन बीते बासुदेव नृप * अपनीमृत्यु निकटजियजानि ॥
तुरत बोलायो परिमालै को * औ यह उनसे कही बखान ॥
वड़े सूरमा सब लायक हौ * हे महराज चन्देले राय ॥
लड़िका मेरे ये दोनौं हैं * तिनको करिऔ सदासहाय ॥
इतना कहिके बासुदेव ने * दीन्हें प्राण त्यागि ततकाल ॥
उरई राज्य किया माहिल ने * सम्पति दई रजा परिमाल ॥
छोटो भैया जो माहिल को * भूपति नाम जासु को भाय ॥

नाम दूसरो जगनिक कहिये * जगनेरी माँ दओ बसाय ॥
चंद्राकर भाई राजा को * राज चन्देली दिया बसाय ॥
अपनी रानी को बोलवायो * महुबे रहन लगे सुखपाय ॥
बोरह ब्याह किये राजा ने * एकते एक रूप की खानि ॥
नगर महोबे माँ सुन्दर विधि * भोगैं राज रजा परिमाल ॥

बनाफरों का हाल

जितने राजा थे भारत में * सब वश किये चन्देले राय ॥
अपनो दुमगिहा ना कोइराखो * बावन गदिया डारी हिलाय ॥
रहा मुकाबिल ना कोइ योधा * खाँड़ा सागर घर्‌यो पखार ॥
कसम खाइ लइ अमर गुरुकी * अब ना गहौं हाथ हथियार ॥
एक दिवस राजा चंदेले * बन माँ खेलन गये शिकार ॥
एक तमाशा तहँ पर देखो * जासों अचरज भयो अपार ॥
डगर सँकोच रही बन भीतर * तहँ पर गये चँदेले राय ॥
मस्त जंगली भैंसा तहँ दुइ * लड़ते काल रूप दिखराय ॥
तीनि पहर दोनों को हुइगये * एकौ हटे युद्ध से नायँ ॥
देखि हकीकत यह राजा ने * औ ज्वानन से कही सुनाय ॥
जल्द हटावौ इन भैंसन का * रस्ता साफ देउ करवाय ॥
सुनिके आज्ञा यह राजा की * योधा सोचैं औ रहिजायँ ॥
परै न हिम्मत काहु शूर की * जो भैंसन का देइ हटाय ॥
थोड़ी देर केरे अरसा में * तहँ दुइ बाल पहूँचे आय ॥
देखि तमाशा उन भैंसन को * दोऊ पास गये नगिचाय ॥
एक २ को सींग पकरि के * दोउ भैंसन का दियो हटाय ॥

खूनी भैंसा दोउ ठाढ़े थे * नैना रक्त बरण दिखलाय ॥
बल करि २ दोउ भैंसा हारे * लड़िकन दोउ दये बिलगाय ॥
देखि तमाशा नृपति चँदेले * दाँतन अँगुरी रहे दबाय ॥
सकल शूरमा लज्जित हुइगे * नीचे मूँड़ लये लटकाय ॥
मन अपने माँ राजा सोचैं * इन लरिकन का जाउँ लिवाय ॥
सोचि समझिके मन अपनेमाँ * दोउ लरिकनका लियोबुलाय ॥
राजा पूछैं फिरि लड़कन ते * तुम्हरे कहाँ पिता अरुमात ॥
कहा नाम तुम्हरो कहितहैं * सो सब हमैं कहहु तुमतात ॥
सुनिके लड़िका बोलन लागे * जानैं नहीं पिता अरु मात ॥
हम दोउ बासी हैं जङ्गल के * भोजन करैं फूल फल पात ॥
साधू एक मिले जङ्गल में * जिन यह कही हमहिं महराज ॥
नाम तुम्हारो या दुनियाँ में * हुइ हैं दस्सराज बच्छराज ॥
रजा चन्देले यहँ पर ऐहैं * बनमें खेलन हेत शिकार ॥
सो तुम दोनों को लै जैहैं * जो हैं महुबे के सर्दार ॥
पुत्र समान पालना करिहैं * यह हम साँची दई बताय ॥
सुनिके बातैं उन दोउन की * हर्षित भये चन्देले राय ॥
बाँहपकरिके दोउलरिकनकी * औ हाथी पै लियो बिठाय ॥
हाथी फेरि दओ पीछे को * घोड़न बाग दई मुड़वाय ॥
लौटो लश्कर चंदेले को * औ महुबे माँ पहुँचो जाय ॥
दोनों पुत्रन को सँग लैके * महलन चले चँदेले राय ॥
सूनो खबरियो जब मल्हनाने * महलनपलँगादियो बिछवाय ॥
आवत देखो जब स्वामी का * तुरतै उठो हृदय हरषाय ॥
नजर बदलगइ रनिमल्हनाकी * औ लरकिन घइँ रही निहारि ॥
बोली रानी हाथ जोरि के * बालम पैयाँ परौं तुम्हार ॥

केहि के बालक ये हरिलाये * स्वामी कियो न काम विचार ॥
जैसे जल बिन मछली तड़पै * ज्यों बछरा बिन तड़पै गाय ॥
तैसे माता इनकी तड़पै * मनमें रोय २ रहि जाय ॥
सुनिकै बातैं ये रानी की * तब हँसि कहो चँदेले राय ॥
नाहीं बालक हम हरिलाये * ना काहू के लाये छिनाय ॥
हमको बालक दिये साधु ने * इनको पालौ नेह लगाय ॥
नगर महोबे के मालिक हैं * यह दोउ वीर बनाफर राय ॥
हाथ जोरिके मल्हना बोली * स्वामी सुनिये कान लगाय ॥
बहिनी छोटी दुइ मोरी हैं * तिनसों दोजौ ब्याह कराय ॥
ब्याह होन पर इनदोउन का * आधौ दोजौ राज बँटाय ॥
यह मन भाइ गई राजा के * औ हिरदै माँ गई समाय ॥
प्रीति समेत दोऊ लरिकनको * पालन कियो मल्हनदे रानि ॥
दोनौं लरिका स्याने हुइ गे * औसिखिलईसकल कुलकान ॥
दोनों कसन लगे शस्त्रन को * अरुनित खेलन लगे शिकार ॥
समय २ पर दोनों बालक * नित प्रति जान लगे दरबार ॥
समय पाय के मल्हना रानी * यकदिन कहन लगीशिरनाय ॥
हाथ जोरिके रानी बोलै * स्वामी सुनौ चँदेले राय ॥
दोनौं लरिका समरथ हुइगे * मन अपने माँ करौ बिचार ॥
ब्याह रचावौ इन दोउन को * जासों बढ़ै कुटुम परिवार ॥
यह मन भाय गई राजा के * औ पंडितका लियो बोलाय ॥
खोलि के पत्रा पंडित देखो * लग्नैं शोधी बारम्बार ॥
शोधि महूरत चिंतामणि ने * सुन्दर दिवस दियो बतलाय ॥
ब्याह रचावौ दोउ पुत्रन को * तुम्हरे काम सिद्धि हुइजायँ ॥
लिखि के पाती परिमालै ने * औ उरई का दई पठाय ॥

छोटी बहिनी दुइ मल्हना की * तिनको ब्याह देउ करवाय ॥
बजै बधाई गढ़ महुबे माँ * सखियाँ करैं मंगला चार ॥
एकै मँड़ये माँ दोउ लरिका * ब्याहे जाय चन्द्र सरदार ॥
दिवला ब्याही दस्सराज को * तिलका बच्छराज को भाय ॥
मर्जी माहिल की नाहीं थी * तिनको कैदि लियो करवाय ॥
बिदा कराइ लई उरई से * माहिलको दइ कैदि छुड़ाय ॥
मनमाँमाहिलयह प्रण कीन्हों * जान से इनका देहौं मराय॥
यहै वैर माहिल सों परिगो * मित्रो सुनियो कान लगाय ॥
आई बरायत चन्देले की * नगर महोवे पहुँची आय ॥
जितनी रानी चन्देले की * परछन हेत चलीं सब धाय ॥
परछन करिके दरवाजे पर * बहुअन भीतर गईं लिवाय॥
हार नौलखा मल्हना लीन्हों * औ देवैका दओ पहिराय ॥
दूसरो हार लियो रानी ने * सो तिलका का दओगहाय ॥
औरो रानी चन्देले की * तिनहूँ हार दिये पहिनाय ॥
अनन्द बधैया घर २ बाजैं * महुबे के नेगी गये अघाय ॥
यकदिनमल्हना सोचन लागी * मन अपने माँ कियो विचार ॥
औ फिर कहन लगी राजासे * सुनिये चन्द्र वंश सरदार ॥
स्यानी बहुयें स्याने लड़िका * बालम सुनौ चन्देले राय ॥
नहीं गुजारा इन महलन मां * न्यारे महल देउ बनवाय ॥
यह मन भाय गई राजा के * मनमें सोचि चन्देले राय ॥
महुबे केरे आध कोस पर * दशहर पुरवा दियो बसाय।
तहाँ बसायो दोउ भैयन को * जो हैं वीर बनाफर राय ॥
सिरसा दीन्हो बच्छराज को * सुन्दर दियो किला बनवाय ॥
न्यारे २ महल बनाये * न्यारो फौज दई करवाय ॥

महा मित्रता दोउ भैयन में * ताते रहत संग हरषाय ॥
नित प्रति आवैं नगर महोबे * जहँ दरबार चन्देले राय ॥
आज्ञा मानैं दोउ राजा की * जासों क्षत्री धर्म न जाय ॥
दोनों लड़िका समरथ हुइगे * लागे करन राजको काज ॥
काहू बातकी ना कमती है * भोगैं अटल राज परिवार ॥
एक साल को अरसा गुजरो * दिवला दस्सराज को रानि ॥
धर्मराज पाण्डव कुल राजा * आल्हा हुइ जन्मे जगजानि ॥
बच्छराज की तिलका रानी * तहँ मलिखानलिया अवतार ॥
पाण्डव कुलका पूर्ण ज्योतिषी * था सहदेव वीर मलिखान ॥
धाँधू जन्मा रनि दिवला से * जो दुश्शासन को अवतार ॥
खोटे ग्रह थे यहि लरिका के * देखत होय पिता कर छार ॥
तासों दै दीन्हों दासी को * पालन लगी ताहि हरषाय ॥
घाट बिठूर गंग तट जानो * कार्तिक पर्व पड़ा जब आय ॥
तहँ ते राजा पृथीराज ने * बालक चोरी लियो कराय ॥
ऐसे पहुँचो यहु दिल्ली में * सो मैं हाल कह्यो समुझाय ॥
रानी मल्हना को कुंखा से * ब्रह्मा जन्म लियो तेहिवार ॥
वीर शिरोमणि पाण्डवकुलका * अर्जुन पांडव को अवतार ॥
बजी बधाई गढ महुबे माँ * उपजा चन्द्रबंश सरदार ॥
अनँद बधैया है महुबे माँ * घर २ होय मंगलाचार ॥
चिंतामणि पंडित राजा के * तिन गृह पुत्रलिया अवतार ॥
बड़ा ज्योतिषी चन्द्रवंश का * ढेबा नाम प्रकट संसार ॥
लाखनि जन्मे गढ कनवजमें * जहँ जयचन्द केर दरबार ॥
बड़ा शूरमा पाण्डव कुलका * नकुल पण्डा को अवतार ॥
देवै रानी रहीं गर्भ से * ऊदनि रहा गर्भ में आय ॥

भीमसेन पांडव कुल योधा * सोई प्रकट होयगा आय ॥
बच्छराज की रानि तिलका के * आयो गर्भ वीर सुलिखान ॥
घर घर सखियाँ मङ्गल गावैं * महुबे बीच होय घमसान ॥
ताला सैय्यद बनरस वाले * जो हैं मित्र चन्देले राय ॥
तिनहिं बुलायो परिमालैं ने * औ यह तिनहिं कहीसमुझाय॥
तुमका सौंपतिहौं लरिकन का * हौ तुम मित्र धर्म के भाय ॥
दस्सराज औ बच्छराज की * दीन्हीं तिनहि बाँहिं पकराय॥
बोले सैय्यद तब राजा से * सुनिये मित्र चन्द्र सरदार ॥
गिरै पसोना जहँ लरिकनको * तहँ दै देउँ रक्त की धार ॥
गङ्गा कीन्हीं चन्देले ने * सैय्यद लै लइ हाथ कुरान ॥
दोनौं मित्रन शपथ खाइ लइ * साखो कीन्ह शंभु भगवान ॥
दस्सराज अरु बच्छराज सङ्ग * सैयद किये मित्र बर्ताव ॥
सारो गद्दी के मालिक ह्वै * सब सूबन पर भये नवाब॥
यहिविधिमहुबेश्वर प्रकट भये * आल्हा ऊदनिऔ मलिखान ॥
नितनव मङ्गल होत नगरमें * पावत विप्र आदि बहु दान ॥

उड़न बछेड़ा का हाल

पाँच बछेरा इन्द्रराशि के * जैसे भये महोबे ग्राम ॥
तैसो हाल लिखौं आल्हा में * मनमें सुमिर राम घनश्याम ॥
रानी मल्हना चन्देले की * जोहै अगम रूपकी खानि ॥
एक दिवस ठाढी अंटा पर * नारी सुघर रूप की खानि ॥
गगन पन्थमें सुरपति जावैं * औचक दृष्टि परी महरानि ॥
रूप देखिके रानि मल्हना को * सुरपति सोचि २ रहिजाय ॥

या नारी सम सुघर सलोनी * कोई देव लोक में नाँय ॥
प्रीति करौं काहू विधि यासों * जासों मिटै हिये को ताप ॥
सोचिसमुझके मन अपनेमाँ * आये इन्द्र महोबे आप ॥
आवत देखो जब सुरपति को * उठिके मिले रजा परिमाल ॥
अर्द्ध सिंहासन पर बैठायो * औ सब पूछो हाल हवाल ॥
देखि संपदा गढ़ महुबे को * सुरपति गयो सनाका खाय ॥
श्यामकरण घोड़ा इन्दरको * सो शाला में दियो बँधाय ॥
चितरंजी घोड़ी राजा की * जो अनमोल रूपकी खानि ॥
जोड़ा खाय गई घोड़ा से * यह संयोग लिखा भगवान ॥
पाँच वर्ष लौं रही मित्रता * पै नहिं सुरपति भयो सनाथ ॥
आवा गमन रहा इन्दरका * पै नहिं लगा समय कोइ हाथ ॥
पाँच वर्ष भे पाँच बछेड़ा * चितरंजा से उपजे आय ॥
पाँचो घोड़ा इन्द्र राशि के * जिनके बदन पंख अकुराय ॥
हंसामनि वा घोड़ा करिलिया * प्रथम बछेरा भयो तयार ॥
दुसरी उपजी घोड़ी कबुतरी * जाको जानत सब ससार ॥
हरनागर अरु घोड़ा मनुरथा * उपजे सकल रूपके धाम ॥
पंचम घोड़ा बेंदुला कहिये * रण में दलगंजन जेहिनाम
घोड़ीहिरौंजिनिछोटीराशिको * सोऊ प्रकट भई पुनि आय ॥
पंच बछेरा अरु दुइ घोड़ी * यहिबिधि नगर महोबे आय॥
घोड़ा पपीहा जो सुरपति को * सोऊ इन्दर दियो गहाय ॥
पीत पिछोरी बीजुल खांडा * सुरपाते दियो चन्देले राय ॥
यक पत्रशब्दा हाथी दीन्हा * ताको कहँलग करौं बखान ॥
सांकर फेरै जब लश्कर में * बारह कोश करै खरिहान ॥
पांच बरस यहि विधि ते बीते * पायो समय नहीं सुरराय ॥

यकदिनअर्द्धनिशाकोसुरपति * धार्यो भेष चन्देले राय ॥
काहू विधि सो इन्द्र देव जो * पहुँचे मल्हना के ढिगजाय ॥
पै पहिचानि लियो मल्हनाने * सुरपति बहुतगये खिसियाय ॥
धर्म पतिव्रत की पालनकरि * औ इन्दर से कही सुनाय ॥
मम समान दासी बहुतेरी * देव लोक में हैं सुरराय ॥
तेहिते तुमका समझावति हौं * मानौ कही मोरि सुरराय ॥
इच्छा त्यागौ मन अपने को * नहिं राजा को लिहौं बुलाय ॥
यहना जानिऔ मनअपनेमाँ * त्यागे अन्न चँदेले राय ॥
खेदिके मरिहैं देव लोक लौं * ढूँढे राह न परै दिखाय ॥
सुनिके बातैं ये मल्हना की * सुरपति लज्जित भये बनाय ॥
जायके पहुँचे इन्द्रलोक में * कबहूँ सुरतिकरी फिरिनायँ ॥
पाँच बछेरा इन्द्रराशि के * मल्हनामहलन डारे छिपाय ॥
पचशब्दा हाथी को लैके * दस्सराज को दियो गहाय ॥
घोड़ा पपीहा बच्छराज को * दीन्हा तुरत चन्देले राय ॥
यहकहिदीन्हीं दोउलरिकनसे * भोगौ राज चित्त हर्षाय ॥
राजनीतिबरतौअबनिशिदिन * करियो काम धर्म के साथ ॥
रीति बाँधि दइ चन्देले ने * जो हैं चन्द्रवंश सरदार ॥
आगे युद्ध लिखौं कनवजको * जेहि विधि भयो घोर संग्राम ॥
भयो स्वयंवर संयोगिनि को * जहँ है अजयपालको धाम ॥
पृथीराज जयचन्द के मन में * जैसे बिछो फूट को जाल ॥
भारत गारत जेहिविधिहुइगा * बरणतहाल शिवचरणलाल ॥

॥ परिमल का विवाह समाप्त ॥

* श्रीगणेशाय नमः *

अथ संयोगिनिका स्वयंवर

जैचंद व पृथीराजकी लड़ाई

* आल्हा छन्द *

(सुमिरण)

सुमिरण करिके नारायण को * लै बजरंगबली को नाम ॥
युद्ध बखानौं मैं कनवज को * जयचन्द पृथीराज संग्राम ॥
भारत दुर्दिनको जड़ पड़ गई * याते अधिक कहादुख धाम ॥
नैमिष क्षेत्र अवध मंडल में * ताके दक्षिण दिशा सोहाय ॥
गङ्ग नदी तट गढ़ कनवजहै * ऊँचो कोट परै दिखराय ॥
ऊँचो कोट बनो राजा को * नीचे देव नदी हहराय ॥
अजयपाल तहँ के राजा थे * जो राठौर वंश सरनाम ॥
तिनके लड़का बड़े प्रतापी * जिनको बेनि चक्कवेनाम ॥
तिनके भये पुत्र दुइ सुन्दर * जयचन्द रतीभान महराज ॥
लगी कचहरी जहँ जयचन्दकी * बैठे बड़े २ शिरताज ॥
सोने सिहासन राजा बैठे * ऊपर चंवर ढुरै गज गाह ॥
छत्रपति नरपति गढ़पति बैठे * बैठे बड़े २ नरनाह ॥
बारह जोड़ी तबला बाजै * औ मुरचंग बजै दुइ चार ॥
नचै कंचनी वा बंगला में * कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन * तेहि पर तपैं कनौजी राय ॥
ओहि समइया ओहि औसर में * जैचन्द सोचि २ रहिजाय ॥
बर संयोग भई संयोगिनि * ताको अब कछु करहु उपाय ॥

सोचि समुझिके मनअपनेमाँ * निज मंत्री से कहै बुझाय ॥
वर संयोग भई संयोगिनि * हमका मन्त्र देउ बतलाय ॥
हाथ जोरि के मन्त्री बोले * औ महराज कनौजी राय ॥
पत्री लिखिके देश २ के * सब राजन को देउ पठाय ॥
रचौ स्वयंवर या कन्या को * जाते सबै काम बनिजाय ॥
यह मन भाय गई जैचन्द के * तुरतै पाती लिखी बनाय ॥
देश २ के सब राजन का * पाती तुरतै दई पठाय ॥
पाती पाई जेहि राजा ने * सो कनवजको भयो तयार ॥
रचो स्वयंवर गढ कनवज में * नृप जैचन्द केर दरबार॥
देश देश के राजा आये * बागन डेरा दियो लगाय ॥
कनवज केरे चौतरफन में * तंबुइ तंबू परैं दिखाय ॥
सुनी खबरिया जब जैचन्द ने * आये देश देश के राव ॥
करन तयारी जैचन्द लागे * सुन्दर कीन्हो नगर बनाव ॥
बड़े प्रेम से सब राजन को * आसन दिये कनौजी राय ॥
देश देश के राजा बैठे * अपने २ साज सजाय ॥
एक न आयो दिल्ली वालो * जाको नाम पिथौरा राय ॥
ताको मूरति एक बनवाई * सो द्वारे पर दई धराय ॥
खबरैं करि दइ रङ्गमहल में * शोभा अंग अंग सरसाय ॥
सजी संयोगिनि रङ्गमहलमें * कन्या आवै साज . जाय ॥
सजे अभूषण नखसे सिखलौं * कैसे बरणि सकै कविराय ॥
पूर्णचन्द्र सम आनन राजै * सारो चमकि २ रहिजाय ॥
हंस गमनि सम डोलत आवै * कर जयमाल रहो दरशाय ॥
जेहि राजा की ओर निहारै * वाके काम बाण लगिजाय ॥
डोलति घूमै सब राजन में * ढूँढत घूमै प्राण अधार ॥

कहूँ न देखा दिल्ली वाला * मनमें बिकल भई सुकुमार ॥
ढूँढ़त ढूँढ़त गइ द्वारे पर * मुरति लखी पिथौरा क्यार ॥
बहुत खुशी भइ मन अपनेमाँ * माला दई गले में डार ॥
देखि हकीकत संयोगिनिकी * राजा सबै गये शरमाय ॥
अपने २ डेरन आये * सबने कूँच दियो करवाय ॥
खबर पाइके राजा जयचन्द * मनमें सोचि सोचि रहिजाय ॥
तुरत बोलायो चन्दभाट को * औ सब हाल कहो समुझाय ॥
कैसे राजा पृथ्वीराज हैं * सो तुम हमैं देउ बतलाय ॥
बोले चन्द्रभाट राजा ते * तुम सुनि लेउ कनौजी राय ॥
हैं बरदानी शिव शंकर को * हैं वह शब्द बेधि चौहान ॥
बाण न खाली वाको जावै * जीतत सदा शत्रु मैदान ॥
बाण दियो अश्वत्थामा ने * अरु यह दियो उन्हे बरदान ॥
सुनिके बातैं राजा जैचन्द * चन्द्रभाट से लगे बतान ॥
देखा चाहौं मैं पिरथी को * कैसे शब्द बेधि चौहान ॥
सुनिके बचन नृपतिजैंचन्द के * कविवर दिल्ली कियो पयान ॥
चंद्रभाट दिल्ली में पहुँचे * जहँ दरबार पिथौरा राय ॥
आवत देखो चन्द्रभाट को * ऊँची चौकी दई डराय ॥
करी बंदगी पृथीराज को * दोनों हाथ जोरि शिरनाय ॥
आवो बैठो चन्द्र कवीश्वर * बोले तुरत पिथौरा राय ॥
कैसे आये हो दिल्ली को * नीके बसैं कनौजी राय ॥
कहा काम तुम्हरो अँटको है * सो सब जल्द कहौ समुझाय ॥
बोले कविवर तब राजा से * सुनिये बीर पिथौरा राय ॥
जेहिकारज हित मैं आयो हैं * सो सब तुमहिं कहौं समुझाय ॥
रचो स्वयम्बर गढ़ कनवजमें * जहँ दरबार कनौजी क्यार ॥

चित्र तुम्हारो दरवाजे पर * डारी माल पद्मिनी नार ॥
यह प्रण कीन्हों नारि पद्मिनी * मैं पिरथी सँग करौं बिवाह ॥
ना तरु क्वाँरी रहौं जन्मभरि * तुम्हरो नाम रटै मन माहि ॥
हमहिं पठायो है तुम्हरे ढिग * जल्दी चलौ संग महराज ॥
बहुत खुशी भये पृथीराज तब * सब विधि बनो हमारो काज ॥
बोले राजा पृथीराज तब * राखो धीर हिये कविराय ॥
अबहीं चलिहौं साथ तुम्हारे * जामें सबै काम बनिजाय ॥
इतनी कहिके पृथीराज ने * अपने शूर लिये बोलवाय ॥
हिरसिंह बिरसिंह देवि मरहठा * हरीसिंह को लिया बुलाय ॥
हुक्म दै दियो पृथीराज ने * सगरे शूर होहिं तैयार ॥
हुक्म पाय के सजे सूरमाँ * जिनको सजत न लागीबार ॥
कूँच करायो गढ़ कनवजको * चाचा कान्हदेव लै साथ ॥
बोले पिरथी तब चाचा से * चाचा सुनो हमारी बात ॥
हमतो आगे चलत काज हित * पाछे आवौ फौज सजाय ॥
इतनी कहिके कान्हदेव से * आगे बढ़े पिथौरा राय ॥
हिरसिंह बिरसिंह हरीसिंहको * अरु कविवरको साथ लिवाय ॥
मंजिल मंजिल के चलिबेमाँ * कनवज बीच पहूँचे आय ॥
बाना बदला पृथीराज ने * चन्द्रभाट को संग लिवाय ॥
आयके पहुँचे बीच कचहरी * जहँ दरबार कनौजी राय ॥
आगे २ चन्द्रभाट हैं * पीछे गये पिथौरा राय ॥
करी बन्दगी चन्द्रभाट ने * नृप जैचन्द को शीश नवाय ॥
आवत देखो चन्द्रभाट को * जैचन्द चौकी दई डराय ॥
चन्द्रभाट चौकी पर बैठे * पीछे खड़े पिथौरा राय ॥
मनमाँ सोचैं राजा जैचन्द * क्या हैं यहै धनी चौहान ॥

कोइ २ छत्री मनमाँ सोचैं * कोइ आपुस माँ लगे बतान ॥
यहै पिथौरा दिल्ली वाला * यहतो चाकर परै लखाय ॥
कैसे जाँच होय राजा को * जैचन्द सोचि २ रहिजाय ॥
मूँछ सँभारी जब जैचन्दने * तब यह कहो तुरत कविराय ॥
हाथ न धरियो तुम मूछनपर * यहि अनुहारि पिथौरा राय ॥
जियरा हुलसो पृथीराजको * नैनन रही लालरी छाय ॥
सूरत देखैं राजा जैचन्द * मनमें सोचि २ रहि जाँय ॥
सोचिसमुझिकेराजा जैचन्द * सुखिया बाँदी लियो बुलाय ॥
जौनसी बांदी पृथीराज की * करिहै लाज पिथौरा राय ॥
भयो बुलौआ तब सुखियाको * सो बीरा लै पहुँची जाय ॥
ठाढो देखो पृथीराज को * बाँदी सोचि २ रहिजाय ॥
जो मैं लाज करौं पिरथीको * तौ बँधि जायँ पिथौरा राय ॥
मींजतिआँखीसुखियाचलिभइ * राजै पान दओ पकराय ॥
शिरखुजलावतिबाँदी निकलो * सीधो रंग महल को जाय ॥
ना पहिचाने राजा जैचन्द * आये सभा पिथौरा राय ॥
मन में सोचैं राजा जैचन्द * जियरा उछरि हूर रहिजाय ॥
बिना बिचारे जो कछु करिहौं * तौ सब जावै काम नशाय ॥
सेनापति से जैचन्द बोले * औ यह कही कनौजी राय ।
साथ आपने इनहि ले आवो * औ बागन माँ देहु टिकाय ॥
तीनो चलिभे तबहुँ अनासे * दरवाजे पर पहुँचे जाय ॥
मूरति देखी पृथीराज ने * तब जरि मरे पिथौरा राय ॥
स्याह पुतरियाँ लालो हुइगइ * देहा अग्निज्वाल हुइ जाय ।
जाइके पहुँचे हैं बागन में * अपने डेरा दिये लगाय ॥
खबरि भेजि दइ राजा जैचन्द * आये तहां घना साहान ॥

सुनी खबरिया संयोगिनि ने * अपने चित्त माहि हरषाय ॥
पाँच पान को बिरा बनाओ * सोने के थार लओ धरवाय॥
संग सहेलिन का लै लीन्हों * अरु बागन में पहुँची जाय ॥
गई पद्मिनी ओहि तंबू में * जहँ पर बैठ पिथौरा राय ॥
लई बिजनियाँ कर फूलनकी * निज प्रीतम पर करो बयार॥
बोली संयोगिनि पृथीराज से * सुनिये महाराज नरनाथ ॥
मैं प्रण कीन्हों मन अपने माँ * करिहौं ब्याह आपके साथ॥
ना तरु क्वाँरी रहौं जन्मभरि * चाहे प्राण रहैं की जाय ॥
सुनिके बातैं संयोगिनिकी * तब हँसि कही पिथौरा राय ॥
जो कुछ मर्जी है ईश्वर की * तासें एक पेश ना जाय ॥
धीरज राखो मन अपने माँ * डोला तुम्हरो लिहौं फँदाय ॥
इतनी सुनिके संयोगिनि ने * अपनो कूँच दियो करवाय ॥
जायके पहुँची रंगमहल में * मनमें बहुत खुशी हुइ जाय ॥
आये पृथीराज बागन में * पाई खबरि कनौजी राय ॥
करन तयारी जयचन्द लागे * औ यह हुक्म दियो फरमाय॥
दुइ सै घोड़ा तुरत सजाओ * हाथी तीस लेउ सजवाय ॥
सब सामान साजि जैचन्दने * सब शूरन को सङ्ग लिवाय ॥
भेंट देन हित पृथीराज को * फुलबगिया में पहुंचे जाय ॥
आवत देखो चन्द्रभाट ने * पृथीराज से कही बुझाय ॥
खड़े होउ अब तुम जल्दीसे * बीरा लेउ कनौजी राय ॥
बीरा लैके पृथीराज ने * सो जैचन्द को दयो गहाय ॥
हाथ दाबि गयो पृथीराजने * खूनको धार चली चुचुआय॥
लोहू देखत परलै हुइ गइ * औ जरि मरे कनौजी राय ॥
चन्द्रभाट को यहु चाकर ना * याको नाम पिथौरा राय ॥

भेंट जो लाये राजा जैचन्द * चन्द्रभाट का दई गहाय ॥
उलटे पाँयन जैचन्द लौटे * औ शूरन का लियो बुलाय ॥
यह कहि दीन्हीं है शूरनसे * अपनो डंका देउ बजाय ॥
जान न पावैं दिल्ली वाले * सबके मूँड़ लेहु कटवाय ॥
सुनी खबरि जब पृथोराजने * डेरा कूँच दिये करवाय ॥
तीनि कोस कनवज के उत्तर * अपने डेरा दिये लगाय ॥
कागज लैके कलपीवारो * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
पत्रो लिखिके पृथीराज ने * कान्हदेव काँ दई पठाय ॥
जल्दी आवो तुम दिल्ली से * हुइ है यहाँ युद्ध घमसान ॥
पाती लैके धामन चलिभो * औ दिल्ली का कियो पयान ॥
कछुक दूरि जब दिल्ली रहिगइ * बीच में कान्हदेव मिलिजायँ ॥
चिठिया दै दइ है धामन ने * बांची तुरत बघेले राय ॥
पाती पढ़तै कान्हदेव ने * लश्कर हुक्म दिये फरमाय ॥
धावा करि देउ सब जल्दी से * औ कनवज का लेहु दबाय ॥
तीनि रोजको धावा करिके * पहुँचे कनवज बीच मझार ॥
पाँच लाख लश्कर दिल्लीको * एकते एक शूर सरदार ॥
पृथ्वीराज बोले चाचा से * अब डोला का लेउ फँदाय ॥
रारि मचाओ अब कनवजमाँ * गढ़िया गर्द देहु करवाय ॥
डोला लै लेउ संयोगिनि को * तब छाती को डाहु बुताय ॥
इतनी कहिके पृथ्वीराज ने * सेनापतिको लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो पृथ्वीराज ने * लश्कर जल्द होय तैयार ॥
चारि घरी केरे अरसा माँ * सबदल सजो पिथौरा राय ॥
हियाँ कि बातैं हियनैं छाड़ो * अब कनवजको सुनौ हवाल ॥
राजा जैचन्द ने बुलवायो * राय लंगरी को ततकाल ॥

हुक्म दै दियो सेना पति को * औ यह कही कनौजी राय ॥
जान न पावैं दिल्ली वाले * सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥
खेदिके मारौ गढ़दिल्ली लौं * कोई शूर भागि ना जाय ॥
इतनी सुनि के राय लंगरी * लश्कर तुरत पहूँचो जाय ॥
हुक्म दै दिया सब लश्करमें * मारू डंका देउ बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब दलगंजन * सिगरी फौज भई तैयार ॥
कूच को डंका बाजन लागो * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
चारि घरी केरे अरसा में * पहुँचे समर भूमि में जाय ॥
इतते लश्कर है कनवज को * उतते फौज पिथौरा राय ॥
दोनौं फौजन के अंतर माँ * रहिगा आध कोस मैदान ॥
हुक्म दै दिया पृथीराज ने * हरीसिंह से कही सुनाय ॥
जान न पावैं कनवज वाले * सबको कटा देहु करवाय ॥
इतनी सुन के हरीसिंह ने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
राय लंगरी को ललकारो * सेनापति से कही सुनाय ॥
डोला मँगावो संयोगिनिको * बिच खेतन माँ देहु धराय ॥
हम तुम खेलैं समर भूमिमाँ * जो जीतै सो लेय उठाय ॥
सुनिके बातैं हरीसिंह की * तब जरि मरे लंगरी राय ॥
फिरि ललकारो हरीसिंहको * औ यह उनसे कही सुनाय ॥
नाहकरारि कियो कनवज माँ * डोला येहु मिलन को नायँ ॥
चुप्पै लौटि जाउ दिल्ली को * नाहक दैहौ प्राण गँवाय ॥
डोला मिलिबे को नाही है * चाहै कोटि धरौ औतार ॥
बातन बातन बतबढ़ हुइगौ * औ बातन माँ बाढ़ी रार ॥
हल्ला करि दो है ज्वानननें * खट२ चलन लगी तरवार ॥
पैदल के संग पैदल अभिरे * औ असवारन से असवार ॥

चारि घरी भरि चली सिरोही * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
भजे सिपाही कनवज वारे * अपने डारि डारि हथियार ॥
भजत सिपाही लखे लंगरी * अपनो हाथी दयो बढ़ाय ॥
दियो बढ़ावा रजपूतन को * यारो सुनियो कान लगाय ॥
खटिया परिके जो मरि जैहौ * मिलिहै अन्त नरकको ठाम ॥
जो मरिजैहौ रण खेतन माँ * सीधे चले जाउ सुरधाम ॥
दैके पानी रजपूतन काँ * फिरि आगेको दियो बढ़ाय ॥
धीरजसिह बढ़े आगे को * हरीसिंह के सन्मुख आय ॥
तब ललकारो हरीसिंह को * ठाकुर खबरदार हुइ जाउ ॥
भजे न बचिहौ तुम दिल्ली लौं * सबके मूड़ लिहौं कटवाय ॥
इतनी सुनिके हरीसिंह ने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
खैंचि सिरोही लइ धीरज ने * भिरिगे समर भूमि में जाय ॥
करो भड़ाका हरीसिंह पर * वाने दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
तीनि सिरोही धीरज मारी * हरीसिंह गये चोट बचाय ॥
चौथी सिरोही धीरज मारी * उनकी टूट गई तरवार ॥
तब घबराने धीरज ठाकुर * अबना बचिहै प्राण हमार ॥
तब ललकारो हरीसिंह ने * सुन धीरजसिंह राजकुमार ॥
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्ही * अब यह झेलौ गाज हमार ॥
करो भड़ाक हरीसिंह ने * धीरज दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ा वाली * गद्दी कटि मखमलकी जाय ॥
छूटि जनेवा गयो धीरजको * औ गिरिपरे धरनि भहराय ॥
शीश काटि लयो हरीसिंहने * अब कुछ रहा ठिकाना नाय ॥
चारि पहर भरि चली सिरोही * झंझाकाल पहूँचो आय ॥
मारु बन्द भइ दोनों दल में * डेरन गये शूर हरषाय ॥

धीरज मारे गये खेत माँ * पाई खबरि कनौजी राय ॥
शंका मानी मन अपने माँ * जियमें रहा शोच अतिछाय ॥
जैसे तैसे राति बिताई * भोरहि उठे कनौजी राय ॥
सेनापति को तुरत बुलायो * औ यह कही बहुत समुझाय ॥
डोला सजावौ संयोगिन को * समरभूमि बिच देहु धराय ॥
डोला उठावन पीरथि आवै * तबहीं मूड़ लेहु कटवाय ॥
हमाँ जमाँ जैचन्द बुलाये * जो सावंत कनौजी क्यार ॥
तिनहि चितायो राजा जैचन्द * भैया बहुत रह्यो हुशियार ॥
जो कहुँ डोला दिल्ली जैहै * तो रजपूती जाय नसाय ॥
तेहि ते तुमका समुझावतिहौं * रखिहो लाज हमारी जाय ॥
खबरि भेजि दइ रंगमहल को * डोला सजै पद्मिनी क्यार ॥
मची खलबली रंगमहल में * डोला होन लगो तैयार ॥
सजिगौ डोला संयोगिन को * जेहिका सजत न लागीबार ॥
चलि भो डोला रंगमहलते * संग में फौज कनौजी क्यार ॥
यक हरिकारा भाजति आवै * पृथीराज तर पहुँचो आय ॥
डोला आवति है खेतन माँ * सुनिये बीर पिथौरा राय ॥
सुनी खबरि जब पृथीराजने * अपनी फौज लिये सजवाय ॥
धावा करि दओ दिल्ली वाले * पहुँचे समरभूमि में जाय ॥
डोला घेरि लओ पद्मिनि को * हरीसिंह ने कही सुनाय ॥
डोला धरि देउ समरभूमिमें * क्षत्रिउ खेलौ युद्ध अघाय ॥
जो कोइ जीतै रण खेतन माँ * सो डोला को लेइ उठाय ॥
राय लंगरी बोलन लागे * तड़पे हमाँ जमाँ तेहि काल ॥
जितने क्षत्री हैं दिल्ली माँ * डोलैं समुझि आपनो काल ॥
पास जो जैयो कोइ डोलाके * तौ मैं मूड़ लिहौं कटवाय ॥

बातन बातन बतबद हुइगौ * औ बातन माँ बाढ़ी रारि ॥
खैंचि सिरोही लइ शूरन ने * घूमिके चलन लगी तरवारि ॥
दियो बढ़ावा हमाँ जमाँ ने * क्षत्री वीर रूप हुइ जायँ ॥
भाजि न जावै कोइ दिल्लीका * सबकी कटा देहु करवाय ॥
जुझे सिपाही दोउ ओर के * रण में कठिन चलै तरवार ॥
तीनिघरी भरि बजी शिरोही * तहँ बह चली रक्तकी धार ॥
गोविन्द राजा ने ललकारो * जो सावन्त पिथौरा क्यार ॥
घोड़ा बढ़ाओ हमाँ जमाँ ने * करमें खैंचि लई तरवार ॥
तीनों शूरमाँ झुरमुट हुइगे * आँवा झोर चलो तलवार ॥
छूटि जनेवा गओ गोविंदको * हमाँ जमाँ ने दियो गिराय ॥
गोविन्द गिरतै परलै हुइगौ * सारे शूर गये रिसिआय ॥
जागो रुण्ड तहाँ गोविन्द को * करमें लीन्हीं कठिन कृपान ॥
बहुतक क्षत्रिनको हनि डारो * लश्कर काटि करो खरिहान ॥
लीलको झंडा तब फिरिवायो * धरणी रुण्ड गिरो अरराय ॥
क्यागति बरनौं तेहि समयाकी * बूते हाल कहो ना जाय ॥
हरीसिंह ने हमाँ जमाँ पर * अपनी दई चलाय कृपान ॥
छूटि जनेवा गओ दोनोंको * दोनों जूझि गये मैदान ॥
देखि दशा यह हरीसिंह को * राय लंगरी उठो रिसाय ॥
सन्मुख हुइके फिरि ललकारो * हरीसिंह से कही सुनाय ॥
सम्हरौ ठाकुर तुम घोड़ा पर * तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
चोट आपनी पहिले करिलेउ * नहिं अफसोस हाथ रहिजाय ॥
खैंचि सिरोही हरीसिंह ने * सेनापति पर दई चलाय ॥
चोट बचाई राय लंगरी * सन्मुख दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
तीनि सिरोही हनि २ मारी * वाके अंग न आयो घाउ ॥

तब ललकारो राय लंगरी * ठाकुर खबरदार हुइ जाउ ॥
करो भड़ाका हरीसिंह पर * औ घोड़ा ते दओ गिराय ॥
देखि दशा यह हरीसिंह की * राजा कुञ्जर पहुँचो आय ॥
राय लंगरी के सन्मुख पर * भारी जाय दई ललकार ॥
सम्हरो २ तुम घोड़ा पर * तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
इतनी सुनके राय लंगरी * अपनो तेगा लियो उठाय ॥
करो भड़ाका नृप कुञ्जर पर * तेगा टूक २ हुइ जाय ॥
करो भड़ाका कुंजर राजा * राय लङ्गरिहि दियो गिराय ॥
डोला लैके संयोगिन का * पृथीराज ढिग राखो जाय ॥
तीनि शूर दिल्ली के झूझे * जूझे चार कनौजी क्यार ॥
भजे सिपाही कनवज वाले * अपने डारि डारि हथियार ॥
रंग विरंगी डोला हुइगो * क्षत्री रक्त बरन हुइ जायँ ॥
कठिन लड़ाई भइ डोला पर * बूते हाल कह्यो ना जाय ॥
सुनी खबरिया राजा जैचन्द * पिरथी डोला लयो छिनाय ॥
राय लंगरी गिरो धरणि में * जैचन्द सोचि सोचि रहिजाय ॥
सोचि समुझिके राजा जैचन्द * अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
बजे नगाड़ा तब लश्कर में * सगरी फौज होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
डोल. घरी केरे अरसा में * सेना तीनिलाख सजिजाय ॥
डोला घारर दियो जैचन्द ने * पहुँचो समर भूमि में आय ॥
जो कोइ जीतै रपृथीराज ने * आये साजि कनौजी राय ॥
राय लंगरी बोलन बलागे * तब्रो यह कही पिथौरा राय ॥
जितने क्षत्री हैं दिल्ली में * डोलचा सुनो बात मन लाय ॥
पास जो जैयो कोइ डोलाके * तो री शूर कनौजी राय ॥

इतनी सुनके कान्हदेव ने * पृथीराज से कही सुनाय ॥
धीरज राखो जिय अपने माँ * लश्कर कूँच दियो करवाय ॥
इतते फौजैं कान्हदेव की * उतते फौज कनौजी राय ॥
बजो नगाड़ा दोनों दल में * क्षत्रिन खैंचि लई तरवार ॥
बढ़े सिपाही दोउ ओर के * घूमि के चलन लगी तरवार ॥
शूर पंजुनी यक कनवज को * रण में कठिन करै तरवार ॥
पृथ्वीराज कुञ्जर को टेरो * औ यह बात कही समुझाय ॥
कठिन मोरचा है जैचन्द को * सो तुम करो सामना जाय ॥
इतनी सुनिकै कुञ्जर राजा * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
थोड़ी दूर जब डोला रहिगो * जहँ पंजूनि करैं तरवारि ॥
सन्मुख पहुँचो नृपकुञ्जर ने * भारी जाय दई ललकार ॥
खबरदार रहियो घोड़ा पर * तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
इतनी कहिके नृप कुञ्जर ने * अपनो कैवर लियो उठाय ॥
मारो कैवर पंजूनी के * वह गिरपरो धरणि अकुलाय ॥
भारी शूर गिरो कनवज को * कुञ्जर डोला लियो उठाय ॥
पहुँचो डोला पृथ्वीराज ढिग * पिरथी हुक्म दियो फरमाय ॥
देर लगैबे को दिन नाहीं * डोला दिल्ली देउ फँदाय ॥
डोला चढ़िगै तब आगे को * जीति को डंका दियो बजाय ॥
डंका सुनतै परलै हुइ गइ * जैचन्द गये सनाका खाय ॥
डोला पिरथी लिये जात हैं * अब कुछ बनत बनावा नाय ॥
आगे आगे डोला जावै * पीछे पृथीराज चौहान ॥
आठ कोस जब डोला पहुँचो * जयचन्द जाय भिरे मैदान ॥
बहुत लड़ाई भइ डोला पर * बूते हाल कहो ना जाय ॥
कबहुँक डोला जैचन्द छीनै * कबहुँक पिरथी लेयँ छिनाय ॥
लड़त भिड़त दोनों दल आवै * सोरों क्षेत्र पहूँचे जाय ॥

तब ललकारो पृथीराज को * औ यह कही कनौजी राय ॥
चोरा चोरी लिये जात हो * नाहीं करत साह को काम ॥
डोला धरि देउ समर भूमि में * काहे नाम होय बदनाम ॥
हम तुम खेलैं समरभूमि में * जो जीतै सो लेय उठाय ॥
इतनी सुनिके पृथ्वीराज ने * सोरौं डोला दियो धराय ॥
हल्ला हुइगौ दोनौं दल में * फिरिके चलन लगी तलवार ॥
चलैं जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
हाथ उठाये जैचन्द बोलैं * रण में कहैं पुकारि पुकारि ॥
भाजि न जैयो कोइ मोहरा ते * मानुष जन्म न बारम्बार ॥
तेहिते तुमका समुझावति हौं * रखियो धर्म कनौजी क्यार ॥
बढ़े सिपाही पृथीराज के * रण में विषम करैं तरवारि ॥
झुके सिपाही पृथीराज के * जो दिल्लीके लड़ैया ज्वान ॥
दोनौं ओर से बजैं सिरोही * रण में बीति रहा घमसान ॥
चारि घरी भरि चली सिरोही * तहँ बह चली रक्तकी धार ॥
ऊँचे खाले कायर भाजे * जे रण दुलहा चले बराय ॥
एक लाख कनवज के जूझे * पिरथी डोला लियो फँदाय ॥
यक हरिकारा भाजति आवै * गढ कनवजमें पहुँचो आय ॥
हाल सुनायो रतीभान को * पिरथी डोला लियो फँदाय ॥
सुनी खबरि जब रतीभान ने * देही अग्नि ज्वाल हुइ जाय ॥
हुक्म दैदियो मेरे लश्कर में * मारू डंका देहु वजाय ॥

अथ रतीभान की लड़ाई

बजो नगाड़ा तब कनवज में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥

कूच कराय दियो कनवज से * औ चलिभये गणेश मनाय ॥
रात दिना को धावा करके * औ डोला को घेरो आय ॥
बोले रतीभान चत्रिन से * बीरो सावधान हुइ जाउ ॥
डोला दिल्ली जान न पावै * अब कछु ऐसो करहु उपाय ॥
सुनिके बातैं रतीभान की * चत्री बीर रूप हुइ जायँ ॥
हाथी बढ़ाओ रतीभान ने * औ डोला को घेरो जाय ॥
मकुन्द ठाकुर के समुहैं पर * भारी जाय दई ललकार ॥
डोला जैहैं ना दिल्ली को * चाहे कोटि करौ उपचार ॥
कहैं मकुन्दी रतीभान से * तुम सुनि लेउ कनौजी राय ॥
डोला लौटन को नाहीं है * चाहे कोटिन करौ उपाय ॥
बोले रतीभान ठाकुर से * ठाकुर सुनौ बचन मनलाय ॥
डोला धरि देउ रणखेतन माँ * हम तुम खेलैं युद्ध अघाय ॥
जो कोइ जीते समर भूमिमें * सो डोला को लेइ उठाय ॥
यह मन भाई है मुकुन्द के * डोला खेतन दियो धराय ॥
हल्ला करि दओ दोनों दलमाँ * चत्रिन खैंचि लई तरवार ॥
दोनों सेना यक मिलि हुइगइ * घूमिके चलन लगी तरवार ॥
रतीभान बोले मुकुन्द से * ठाकुर सावधान हुइ जाउ ॥
चोट आपनी पहिले करिलेउ * नाही स्वर्ग बैठि पछिताउ ॥
भाला लैके निज मुकुन्द से * रतीभान पर दियो चलाय ॥
हाथी हटायो पीलवान ने * औ बचिगये कनौजी राय ॥
खैंचि सिरोही लइ मुकुन्द ने * मारी रतीभान के भाल ॥
चोट बचाई रतीभान ने * बायें उठी गैंड़ की ढाल ॥
टूटि शिरोही गइ मुकुन्द की * खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
तब घबरानो मुकुन्द ठाकुर * हमरो काल रहो नियराय ॥
जौन शिरोही से गज काटे * औ घोड़न के चारौ पायँ ॥

तीन सिरोही धोखा दइ गइ * अब शिरकाल पहूँचो आय ॥
हाथी बढ़ायो रतीभान ने * सन्मुख जाय दई ललकार ॥
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्हीं * अब यह झेलौ गाज हमार ॥
खैंचिशिरोहीरती भान ने * औ मुकुन्द पर राखी जाय ॥
चोट बचावन हित मुकुन्दने * अपनी दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ावाली * गद्दो कटि मखमल की जाय ॥
कड़ियाँ कटिगईं हैं बख्तरकी * औ गिरिपरे धरणि महराय ॥
मुकुन्द गिरितै परलै हुइ गइ * पिरथी बहुत गये घबराय ॥
बड़ो शूरमाँ यहु मारोगो * पिरथी सोचि २ रहि जायँ ॥
जितने शूर बचे पिरथी सँग * तिनसे कहैं पिथौरा राय ॥
जो कहुँ डोला कनवज जैहैं * तौ सब बनो काम नशिजाय॥
दाग़ु लागिजाय रजपूती में * सबको जियत मरन हुइ जाय ॥
डोला छीनि लेहु जल्दी से * अबना राखौ देर लगाय ॥
झुके सिपाही दिल्लीवाले * आँवा झोर चलै तरवार ॥
पैदल के संग पैदल अभिरे * औ असवारनसे असवार ॥
छुटैं पिचिक्का तहँ लोहुनके * औ बुबकारिन बोलैं घाव ॥
रतीभान केरे मुहरा पर * कोई शूर न आड़े पाँव ॥
आठ कोस जब दिल्ली रहिगइ * तहँ पर खूब चली तरवार ॥
कीन्हें जौहर रतीभान ने * मारे बड़े २ सरदार ॥
चलै सिरोहा जहँ मुठ भेरो * लोथिन ऊपर लोथि दिखाय ॥
क्यागतिबरनौं समरभूमिकी * हा दैया गति कही न जाय ॥
ठाढ़े सोच करैं तेहि अवसर * औ महराज धनी चौहान ॥
क्यों नाराज करैं नृप जैचन्द * है यह बड़ो शूर रतिभान ॥
सोचत देखो पृथीराज को * कान्हदेवने कही सुनाय ॥

काहे शोच करो मन अपने * तुमका कौन पड़ी पर्वाय ॥
जब तक प्राण रहै देही माँ * तबलौं निर्भय रहौ बनाय ॥
इतनी कहिके कान्हदेवने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
रतीभान ने चुन २ मारे * सार शूर पिथौरा क्यार ॥
गुस्सा हुइ के कान्ह देव ने * भारी जाय दई ललकार ॥
खबरदार रहियो हौदा में * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
डोला धरि देउ धुरखेतनमाँ * जो जीतै सो लेइ उठाय ॥
दुइ २ रुपया के नौकर हैं * नाहक डरिहौ मूड़ कटाय ॥
हम तुम खेलैं समरभूमि माँ * दुइ माँ एकु आँक रहिजाय ॥
यह मन भाई रतीभान के * डोला खेतन दियो धराय ॥
फिरि ललकारो कान्हदेवका * रहियो खबरदार नरराय ॥
गुर्ज उठायो रतीभान ने * कान्हदेव पर दियो चलाय ॥
हाथी हटायो पीलवान ने * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
खैंचि सिरोही रतीभान ने * सो मस्तक पर दई चलाय ॥
कान्हदेवने वार बचायो * ऊपर दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ावाली * गद्दी कटि मखमलकी जाय ॥
घाव आइगो कान्हदेव के * मस्तक दुइ अंगुल कटिजाय ॥
तब ललकारो कान्हदेव ने * आ पिरथी से कही सुनाय ॥
जो यहु डोला कनवज जैहैं * सब चौहानी जाय नशाय ॥
घरी एकको मम जीवन है * मस्तक टाँके देउ लगाय ॥
मारि गिरावौं मैं बैरी को * डोला दिल्ली देउँ पठाय ॥
लई कमनियाँ पृथीराज को * ताखी गाँसी धरी बनाय ॥
खैंचि कमनियाँ भुजडण्डन भरि * तुरतै गाँसी दई चलाय ॥
दै दये टाँके कान्ह देवके * जासों घाव फैलि ना जाय ॥
तुरतै लौटे कान्हदेव तब * रतीभान पै पहुँचे आय ॥

फिरि ललकारो रतीभान को * कान्हदेव ने कही सुनाय ॥
सम्हरो ठाकुर तुम हौदा में * तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
इतनी कहि के लई सिरोही * रतीभान पर दई चलाय ॥
करो झड़ाका है मस्तक पर * उनको छुटि जनेवा जाय ॥
रतीभान जूझे डोला पर * उनहूँ दीन्हें प्राण गँवाय ॥
लैके डोला पिरथी चलिभे * दिल्लीके फाटक पहुँचे जाय ॥
धावा करि दओ है जैचन्द ने * डोला फेरि गरेरौ आय ॥
चन्द्रभाट अरु पिरथी रहिगे * सगरे जूझि गये सरदार ॥
मन माँ सोचैं राय पिथौरा * अबधौं कहा करैं करतार ॥
सोचि समुझिके पृथीराज ने * लाल कमनियाँ लई उठाय ॥
हाथ जोरि संयोगिनि बोली * स्वामी सुनौ अरज मनलाय ॥
तुमै सुनासिब यह नाहीं है * जो दादा पर गहो कमान ॥
लाल कमान धरा पिरथी ने * जैचन्द लई सिरोही तानि ॥
बोली संयोगिनि हाथ जोरिके * दादा बचन करौ परमान ॥
तुमहि सुनासिब यह नाहीं है * जो राजा पर डारो हाथ ॥
सुनिके विनती संयोगिनिकी * मनमें सोचि रहे नरनाथ ॥
चन्द्रभाट तब आगे बढ़ि के * औ जैचन्द से कही सुनाय ॥
तुमरो दुसरिहा कोइ नाहीं है * हे महराज कनौजी राय ॥
अब तुम छोड़ो पृथीराज को * कीरति चलौ अगारू जाय ॥
इतनी सुनिके नृप जैचन्द ने * अपनो कूच दियो करवाय ॥
गई संयोगिनि रङ्गमहलको * मनमें बहुत खुशी हुइ जाय ॥
पृथीराज जैचन्द को साखो * सो हम लिखिके दियो सुनाय ॥
सुमिरण करिके गुरु अपनेको * उर में धारि चरण सियराम ॥
आगे हाल लिखौं करिया को * महुबे कियो चोर को काम ॥

* इति संयोगिनी स्वयम्वर समाप्त *

* श्रीः *

अथ महोबे की दूसरी लड़ाई

* अर्थात् *

दस्सराज, बच्छराज बध व करिया विजय।

* दोहा *

प्रथम सुमिरि गुरु देव पद, सन्तन पद सिर नाय।
बीर पँवारो लिखत हौं, करिये मात सहाय ॥ १ ॥

* आल्हा सुमिरनी *

ब्रह्म सनातन को सुमिरौं मैं * सुमिरौं पुनि अनंत भगवान ॥
जग उपजायो जिन ब्रह्मा है * रच्छा करत विष्णु है जान ॥
जग संहार करत शंकर है * अरु भक्तन को करत सहाय ॥
जब २ भीर परत भक्तन पर * तब अवतार लेत जग आय ॥
बिपति अबेरा सब काहू को * आवै विपति सकल संसार ॥
बिपति परी थी रामचन्द्र पै * रावण हरी आय बन नारि ॥
बिपति परी थो राजानल पै * खूँटी लीलो नौलखा हार ॥
यकदिन परिगौ शिवशंकर पै * जो भस्मासुर परो पिछार ॥
यक दिन परिगौ है महुबे माँ * बहु दुख भयो रजा परिमाल ॥
चढ़ो करिंगा माँड़ौ वाला * सो सब बरणौं हाल हवाल ॥
जेठ दशहरा की बुड़की परि * गंगा जाजमऊ के घाट ॥
देश देशके राजा चलि भये * रैयत चली हाट अरु बाट ॥
करिया बोला नृप जंबैसे * जो माड़ौ का राजकुमार ॥
आज्ञा दै देउ हँसी खुशी से * जासों करि आऊँ अस्नान ॥

बोले जम्बै तब करिया से * मेरे पुत्र प्राण आधार ॥
काम तुम्हारो ना जैबे को * इतने मानौ बचन हमार ॥
वहाँ ठकुरई है जैचन्द की * गंगा जाजमऊ के ठाम ॥
बारह वर्ष को पैसा अटको * कनवज दई न एक छदाम ॥
जो सुनि पैहैं राजा जैचन्द * तुम्हरी कैद लिहैं करवाय ॥
काम तुम्हारो ना जैवे को * चुप्पै बैठि रहो घर जाय ॥
दोउ कर जोरे करिया बोलै * दादा मेरे बघेले राय ॥
जो मैं जैहों जाजमऊ को * पावें खबरि कनौजी राय ॥
होय सामना जो जैचन्द से * ददुवा मेरे बघेले राय ॥
पुत्र तुम्हारो तब कहलाऊँ * पैसा माफ लेहुँ करवाय ॥
सुनिके बातैं ये करिया की * जम्बै हुक्म दियो फरमाय ॥
हुक्म पाय के चलो करिंगा * अपनी फौज सजाई जाय ॥
आयोकरिंगाफिरिमहलनको * बिजमा पास पहूँचो आय ॥
बोलो करिया तब बहिनी से * बिजमा सुनो वचनमनलाय ॥
हमतो जावैं जाजमऊ को * बुड़की हेत गंग की धार ॥
बोली बिजैसिन तब करियासे * भैया मेरे प्राण आधार ॥
जो तुम जैयो जाजमऊ को * लैयो मोहि नौलखा हार ॥
चलिभो करियातब हुँ अनासे * गयो माता के भवन मँझार ॥
चरननलागो निज माता के * करिया माथे लियो लगाय ॥
बोली माता तब करिया से * बेटा हाल देउ बतलाय ॥
कहाँ की त्यारी तुमने कीनी * मेरे जीवन प्रान अधार ॥
बोलो करिया तब माता से * जननी लागौं चरण तुम्हार ॥
आज्ञा माँगो हम दादा से * बुड़की लेउँ गंग की धार ॥
रोरी अच्छत लै माता ने * करिया मस्तक दियो लगाय ॥

गयो करिंगा तब फौजन में * कूच को डङ्का दयो बजाय ॥
मंजिल करिके आठ रोज को * पहुँचो जाजमऊ में जाय ॥
फेंटैं छुटिगइँ हैं ज्वानन की * रेती में डेरा दिये लगाय ॥
करि अस्नान दान बहु दीन्हें * विप्रन भोजन दिये कराय ॥
यादि आइ गइ तब बहिनी की * करिया मनमें करो विचार ॥
हार नौलखा बिजमाँ माँगो * ताको खोजा हाट बजार ॥
सगरो मेला करिया ढूँढो * कहूँ ना मिलौ नौलखा हार ॥
तौ लौं भेंट भई मालिन से * जो परिहार गुटैया टार ॥
माहिल पूछैं तब करिया से * ओ जंबै के राजकुमार ॥
कौन चीजको तुम ढूँढतहौ * सो सब हाल कहो सरदार ॥
हाल बतायो तब करिया ने * यह सुनि माहिल कह्योपुकार ॥
बात हमारो जो तुम मानो * हम बतलावें नौलखा हार ॥
नगर महोबा यक बस्तो है * जहँपर बसैं चन्देले राय ॥
हार नौलखा है जिनके घर * चलि के लूट लेहु करवाय ॥
यह मन भाय गई करिया के * महुबे को कूच दीन्ह करवाय ॥
यहाँ की बातैं हियनै छोड़ो * अब आगे को सुनो हवाल ॥
बड़े लड़ैया तरवरिहा थे * टोंडर ओ रहिमल भुपाल ॥
दोउ रहवैया थे बक्सर के * थे यह बीर बनाफर जाति ॥
ताल्हन सैय्यद बनरस वाले * जिन नौ पूत अठारह नाति ॥
जानबेग सुलतानबेग जो * कल्लन खान और कलियान ॥
अली अलामत औ दरिया खाँ * मियाँ निसारत कल्लू खान ॥
कारो बाना कारो निसाना * काले घोड़न के असवार ॥
शिर पै पगड़ो है मुगलानो * जो सरदार बनारस क्यार ॥
जहाँ ठकुरई नृप जैचन्द की * तहँ कछु भयो बखेड़ा आय ॥

करन हेत फरियाद कनौजे * चलि भये सहितबनाफरराय ॥
गई रास्ता है महुबे की * कनवंज बीच पहूँची जाय ॥
चारो आये हैं फाटक पर * महुबो नगर परो दिखराय ॥
दोऊ बनाफर पूछन लागे * यक हरिकारा पास बोलाय ॥
हमतो जैहैं गढ़कनवज को * रस्ता हमैं देउ बतलाय ॥
बड़े मित्र हैं नृप जैचन्द के * मानत जिन्हैं कनौजी राय ॥
जो लिखिदेहैं नृपति चन्देले * मनिहैं वहै कनौजी राय ॥
आजु मिलौ तुम चन्देले से * तुम्हरो काज सिद्ध हुइजाय ॥
बात हमारी जो ना मनिहौ * ठाकुर सुनिये कान लगाय ॥
पड़े रहौगे तुम बरसन लौं * जल्दी काम होन को नायँ ॥
बात मान लइ हरिकारा की * महुबे उतरि परे हरखाय ॥
सिदरा खाली थी फाटक पर * तहँ टिकि रहे बनाफर राय ॥
यक ओर दोऊ बीर बनाफर * यक ओर बनरसके सरदार ॥
तौलौं करिया दाखिल हुइगो * जो जम्बै को राजकुमार ॥
जहाँ पै फाटक थो महुबे को * करिया तहाँ पहूँचो आय ॥
ताल्हन सय्यद सहित बिराजैं * जहँ पर बीर बनाफर राय ॥
बोला करिया तब फाटक पर * बन्नाफर से कहै सुनाय ॥
जाय कहौ तुम चन्देले से * औ मल्हना से देउ बताय ॥
हार नौलखा लै जल्दी से * मेरो नजरि गुजारौ आय ॥
बोले सैय्यद बनरस वाले * औ यह कही बनाफर राय ॥
चारि रोज से हम महुबे माँ * परे परौने अपने काज ॥
हाल हमारो ना कछु जानो * हम परदेश रहत महराज ॥
सुनिके बातैं करिया जरिगो * अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
बज्र कुल्हाड़ी या फाटक पर * याको धरती देउ गिराय ॥

लूट कराय लेउ महलन की * सारो महुबो लेउ लुटाय ॥
हुक्म पायके तब करिया को * फाटक बजन कुल्हाड़ा लाग ॥
होय धमाका यहु फाटक पर * बज्र किवारे टूटन लाग ॥
ठाढ़े देखैं सबियाँ सैय्यद * दोऊ बीर बनाफर राय ॥
मतो बिचारो मिलिआपुस में * अपनो लीन्हों धर्म दृढ़ाय ॥
नमक चन्देले को खायो है * सो हाड़न माँ गयो समाय ॥
होनी हुई है परिमालै की * हमरो क्षत्री धर्म नसाय ॥
एका करिके सब बीरन ने * अपनो खैंचि लई तलवार ॥
एक ओर अब सैय्यद हुइगे * इक ओर झुके बनाफर राय ॥
सबही सैयद और बनाफर * अपने डटे मोरचन जाय ॥
जैसे भादों में घन गरजै * दामिन चमकि २ रहिजाय ॥
ऐसे गरजैं बीर बहादुर * शोभा तासु कही ना जाय ॥
हल्ला सुनतै मीरा दौड़े * आये दस्सराज बछराज ॥
यह गति देखो जब फाटक पर * तुरतै हल्ला दियो मचाय ॥
झुके सिपाही दोउ ओर के * कछु तारीफ करी ना जाय ॥
भगहरि पड़िगइ गढ़ महुबेमाँ * बिपदा कछू कही ना जाय ॥
सबमिलिझपटेतेहिकरियापर * सैयद बीर बनाफर राय ॥
मारि सिरोहिनचहलाउठिगो * सब दल रेन बेन हुइ जाय ॥
जौन ओर काँ सैयद पैठैं * सब दल काटि करैं खरिहान ॥
ऐसो फौज कटी करिया की * जैसे खेती लुनै किसान ॥
बड़े लड़ैया बनरस वाले * रण में बीति रहा घमसान ॥
होश बन्द भये तब करिया के * अपने चित्त बहुत घबरान ॥
मुड़नके तहँ मुड़ चौड़ा भै * औ लोथिन के लगे पगार ॥
भजो करिंगा माड़ों वारो * छाँड़ो आश नौलखा हार ॥

सुनी खबरि यह चन्देले ने * महलन मल्हना सुनो हवाल॥
परे परौने जो द्वारे पर * तिनने कीन्हों आजु कमाल॥
मीरा सैयद दस्सराज औ * बच्छराज ने राखी लाज॥
भई लड़ाई बहु द्वारे पर * करिया भागि गयो तजिकाज॥
आये चँदेले तब द्वारे पर * औ बीरन से लगे बतान॥
लाज राखिलइ आजु द्वारपर * तुम सब धन्य वीर बलवान॥
संग में लैके सब बीरन काँ * बँगला गये चँदेले राय॥
बड़े बीर ये सब सैयद हैं * होवें ओहदेदार हमार॥
जैसे मालिक हमरे सैयद * तैसइ मालिक फौज मँझार॥
रहिमल टोंडर की खातिरकरि * इज्जत करी चँदेले राय॥
करी मित्रता तिन दोनों से * भेजे मान सहित नरराय॥
यहाँ की बातैं अब यहँ छाँड़ौ * औ आगे की सुनो हवाल॥
मीरा सैयद को बुलवायो * औ यह कही रजा परिमाल॥
जितने जोधा थे भारत में * हम सब जीति लिये इहिबार॥
गढ़ी गढ़ी के राजा जीते * जीते बड़े २ सरदार॥
मारु न खाई केहु राजा की * सिगरौ कोपि गयो संसार॥
रहा दुसरिहा ना कोइ जोधा * खाँड़ा सागर धरो पखार॥
कसम खाइ लइ समर गुरुकी * अब ना गहौं हाथ हथियार॥
बीतो बहुत काल महुबे माँ * हम ना गही हाथ तलवार॥
टेक गुसैयाँ को परबल है * जिन प्रभु राखो धर्म हमार॥
बोले सैयद चन्देले से * मालिक सुनौ महोबे क्यार॥
जहाँ पसीना गिरै आपको * तहँ दै देउँ रक्त की धार॥
सुनो बात जब यह सैयद की * भये प्रसन्न चन्देले राय॥

कछुक काज हित मीरा सैयद * नाती पुत्रन संग लिवाय ॥
गये बनारस को महुबे से * पाई खबरि महिल परिहार ॥
जाय पहूँचे गढ़ माड़ौ में * राजा जंबै के दरबार ॥
सूरति देखी जब माहिल की * ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवौ बैठो उरई वाले * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
माहिल बोले नृप जम्बै ते * राजा सुनौ हमारी बात ॥
मीरा ताल्हन गये बनारस * खाली महुबो पड़ो दिखाय ॥
धीर बँधैया तहँ कोउ नाहीं * चलिके लूट लेउ करवाय ॥
मनै आय गइ तब करियाके * तुरतै डङ्का दियो बजाय ॥
माहिल चलिभै तब माड़ौ ते * औ उरई में पहुँचे जाय ॥
राजा जम्बै ने तब हटको * करिया मानौ बात हमार ॥
काम तुम्हारो ना महुबे में * ना जइबे को होउ तयार ॥
तुमहिं लूटिबो ना सोहत है * तुम राजन के राजकुमार ॥
कही हमारी जो ना मनिहौ * तुमकाँ हँसै सकल संसार ॥
कहो न मानो नृप जम्बे की * करिया कूँच दियो करवाय ॥
आठ दिनाको धावा करिके * गढ़ महुबे में पहुँचो जाय ॥
आधी रात केरे अमला में * दशहर पुरवा दियो फुँकाय ॥
सोवत बाँधो दोउ भैयन को * उनकी कैदि लई करवाय ॥
लूटि कराय लई महलन की * सिगरो जेवर लौ छिनवाय ॥
हार नौलखा देवै पहिरे * सोऊ तुरतै लौ छिनवाय ॥
माल खजाना चन्द्रवंश को * सो करिया ने लियो भराय ॥
हथि पचशब्दा दससराज को * सोऊ तुरतै लियो खुलाय ॥
लाखा पातुर घोड़ा पपीहा * सब करिया ने लियो खुलाय ॥
जौन चीज देखी करिया ने * सो सब लूटि लई करवाय ॥

करी बहादुरी क्या करियाने * चोरी करी महोबे क्यार ॥
लानति ऐसी रजपूती को * तेगा बाँधन को धिरकार ॥
चीज पराई जो कोइ ताके * ताको जन्म व्यर्थ संसार ॥
जो काहू को धोखा देवै * ताको बार बार धिक्कार ॥
पर उपकार करै जो कोई * वाको धन्य जन्म संसार ॥
करिया चलिभयोगढ़माड़ौ को * जीतिको डंका दियो बजाय ॥
दस्सराज और बच्छराज को * पत्थर कोल्हू दौ पिरवाय ॥
शीश काटिके दोउ भाइन को * सो बरगद में दै टँगवाय ॥
हार नौलखा जो देवै को * ताको पहिरै बिजैसिनिरानि ॥
नित प्रति नाचै लाखापातुर * राजा जम्बै के दरबार ॥
हथि पचसावद घोड़ा पपीहा * तापर चढ़ै करिंगा राय ॥
हियाँ की बातैं हियई छोड़ो * अब महुबे को सुनौ हवाल ॥
ब्रह्मा देवै रोवन लागीं * हा ईश्वरगति कही न जाय ॥
सुनी खबरिया परिमालै ने * धरणी गिरे भरहरा खाय ॥
मल्हना रानी के रोइबे माँ * पक्के महल दरारा खायँ ॥
बिपता पड़ी नगर महुबे में * बूते कछू कही ना जाय ॥
कछु दिन बीते ताल्हन सैयद * नगर महोबे पहुँचे आय ॥
सुनोहाल जब सब महुबे को * सैयद गिरे धरणि भहराय ॥
हाय हाय करि रोवन लागे * अब कहँ मिलैं धर्मके भाय ॥
कहा बिगारि कियो करिया को * जो बिन खता लियो बँधवाय ॥
धोखा दीन्हों है करिया ने * करिया तेरो बुरो हुइजाय ॥
करौं चढ़ाई जो माड़ौ पर * तो कछुकाज सरनको नाहिं ॥
कठिन लड़ाई गढ़ माड़ौ की * कोई शूर बचन को नाहिं ॥
बारह कोस को बबुरी बन है * औ लोहा गढ़ कठिन दिखाय ॥

कही हकीकत बन्दूकन को * तोपको गोला ना अनिआय ॥
देवै बोली तब सैयद से * सैयद सुनो हमारी बात ॥
अब तुमपालो इनलड़िकनको * औ सब दुःख देउ बिसराय ॥
जब कहुँ लड़िका लायकहुइहैं * तब लइ लिहैं बापको दाउँ ॥
हमरी चुरियाँ तबहि उतरिहैं * तब छाती को मिटिहै घाउ ॥
सुनि के शिक्षा रनि देवै की * सैयद सबर कीन्ह मन माहिं ॥
माया ईश्वर की परबल है * बीतत दिवस लगतकछुनाहिं ॥
तीन महीना के बीते पर * ऊदनि जन्म लीन्ह तहँ आय ॥
दिन कछु बीते रनि ब्रह्मा के * सुलिखेजन्म लीन्ह तहँ आय॥
बोली देवै तब बाँदी से * बाँदिय सुनो हमारी बात ॥
मैना देखौं यहि लड़िका को * याको जियतै देउ फिकाय ॥
रँडिया हुइके बेटा जन्मा * हँसिहैं सकल नगर नरनारि ॥
बोली बाँदी तब देवै से * रानी अकिल गई तुम्हार ॥
राज पाट अरु माल खजाना * यह सब मिलहिं बारहींबार ॥
पुत्र बड़ो फल है दुनियाँ माँ * यह नहिं मिलत बारहीं बार ॥
बहुत तरह बाँदी समुझायो * देवै के मन नाहिं समाय ॥
कर्महीन बालक यहु जन्मा * याने डारी बाप मराय ॥
लैजा लैजा मेरे आगे से * मेरे नयन ओट करि देउ ॥
बोली बाँदी तब देवै ते * रानी बार २ बलि जाउँ ॥
बड़े लाड़ से याको सेवौ * माँड़ौ लिहै बाप को दाँव ॥
मनै हमारे यह आवत है * हुइहैं मन के पूरण काम ॥
फेकन लायक नहिं लड़िकाहै * सोतुमसमुझिलेहु जियमाहिं ॥
बात न मानी तब देवै ने * औ बाँदी से कहो सुनाय ॥
हुकुम हमारो जो नहिं मानहो * तौ तेरो पेट दिहौं फरवाय ॥

जल्दी लैजा इस लड़िका को * मेरे आगे से देउ हटाय ॥
लड़िका लेके बाँदी चलि भइ * औ महलन में पहुँची जाय ॥
हाथ जोरि के बाँदी बोली * रानी बार २ बलि जाउँ ॥
बालक पैदा भौ देवै के * सोते हाल कहो ना जाय ॥
जंगल फेंकन बालक कहतीं * ताको करिये कौन उपाय ॥
इतनी बात सुनी मलहना ने * तुरतै राजै लियो बुलाय ॥
हाल बतायो सब राजा को * सुन परिमाल गए घबराय ॥
क्या मति काटी केहु देवै की * या मति मार दई भगवान ॥
छाती चौड़ी यहि लड़िका की * नैना हिरना की अनुहार ॥
माथो ऊँचो यहि लड़िका को * सुन्दर लच्छण परै दिखाय ॥
सूर वीर हुइहै यह बालक * तुमको साँची दई बताय ॥
बहुत लाड़ से पोसो पालौ * मनमें करौ न सोच विचार ॥
इतनी बात सुनी मलहना ने * मनमें खुशी बहुत हुइ जाय ॥
लैके लड़िका मलहना रानी * पालन करन लगी हर्षाय ॥
एक दूध को ब्रह्मा पीवै * दूजो पियै उदय सिंह राय ॥
कुछ दिन बीते चन्द्र वंशमें * उपजा पुत्र आय रण जीत ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ब्रह्मा * ढेवा रणजित औ सुलिखान ॥
यहिविधि प्रकटे सातौ लड़िका * शोभा कहँ लग करौं बखान ॥
खेलत डोलैं सब आँगन में * मलहना करै लाड़ अरु प्यार ॥
आल्हा बोले तब मलहना से * मैं तरवरिया पूत तुम्हार ॥
बोली मलहना तब आल्हासे * सब तरवरिया पूत हमार ॥
नितप्रति लाड़ करै लड़िका को * मलहना बहुत रही हर्षाय ॥
सुन्दर २ कपड़ा लैके * सब लड़िकनको दये पहिराय ॥
कड़ा सोवरन चीरा कलँगी * सो लड़िकन को दइ पहिराय ॥

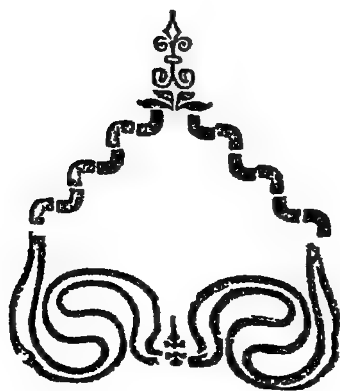
लै तरवारी छोटी छोटी * सो लड़िकनको दई गहाय ॥
इन्द्रा बारी को बलवायो * औ मल्हना ने कही सुनाय ॥
साथ में जावो इन लड़िकनके * जहँ दरबार चन्द्र सरदार ॥
साथलै लियो सब लड़िकनको * इन्द्रा गयो राज दरबार ॥
पहुँचे लड़िका जब बंगला माँ * तुरतै उठे चन्द्र सरदार ॥
चूमि चामिके सब लड़िकनको * अपनी छाती लियो लगाय ॥
बड़े प्रेम से दई मिठाई * फिर महलन को दियो पठाय ॥
उठी कचहरी परिमालै की * महलन गये चँदेले राय ॥
बहुत रिसाने तब मल्हना को * रानी अक्किल गई हेराय ॥
बंश नशैबे को लागी हौ * लड़िकन बँगला दियो पठाय ॥
हाथ जोरिके मल्हना बोली * स्वामी सुनौ चन्देले राय ॥
अबहिं तो लड़िकागये कचहरी * भोरहिं खेलत फिरैं शिकार ॥
ये सब लड़िका समरथ होइहैं * यक दिन प्रगट होयँ संसार ॥
सुनि के बातैं ये मल्हनाको * मनमें खुशी भये महराज ॥
अमर गुरू आए महुबे में * पाई खबरि चन्देले राय ॥
भई खबरिया रङ्गमहल में * मल्हना दिवला सुनो हवाल ॥
जितनी रानी चन्देले की * सो सब आय गईं ततकाल ॥
करि परिकरमा अमर गुरूकी * सातौ लरिका करे अगार ॥
पायन डारो सब लरिकनको * हाथ जोरिके कही सुनाय ॥
शरण आपुकी ये लड़िका हैं * इनको जानि आपनो दास ॥
करौ कृपा प्रभु तुम महुबे पर * जासो पूर्ण होय सब आस ॥
करिके दाया इन पुत्रन पर * अपनो हाथ धरौ महराज ॥
बैरी चारौ ओर बसत हैं * कैसे बनैं हमारे काज ॥
बोले अमर गुरू मल्हना से * रानी सुनौ महोबे क्यार ॥

शोचत्यागि देउ तुम जियरासे * सब विधि भला करैं करतार ॥
ये सब लड़िका समरथ हुइ हैं * जीति हैं बड़े २ संग्राम ॥
साखो चलि है बावन गढ़ में * हुइहै जुगन जुगनलौं नाम ॥
पीठी ठोंकी फिर आल्हा की * औ यह कही गुरु महराज ॥
साखो चलि है जग में तेरो * बनिहै सकल तुम्हारे काज ॥
हाथ फिरायो फिरि ऊदनपर * बज्र के देही भई तुम्हार ॥
आशिष दीन्हीं अमर गुरूने * तेरे गड़ै नाहिं हथियार ॥
हाथ फिरायो नर मलिखे पर * काया सबै बज्र हुइजाय ॥
हाथ बढ़ावन लगे पाँव पर * तब रानी ने कही सुनाय ॥
पाँव न छुइयो तुम चेला के * नहिं घटि जैहैं धर्म हमार ॥
यह सुनि बोले अमरनाथ जी * रानो सुनो महोबे क्यार ॥
सिगरो काया भई बज्र को * याके तलुअन में है काज ॥
शस्त्र लागिहैं जब तलुअन में * तबना बचै तुम्हारो लाल ॥
फिरि कर परसा ब्रह्मानन्दपर * देहीं सबै बज्र हुइ जाय ॥
तुम्हरी बरनी को ताहर है * नहिं दूजे की पार बसाय ॥
हाथ फिरायो फिर सुलिखेपर * माया बज्र रूप हुइजाय ॥
तुम्हरी बरनी को धाँधू है * बेटा खेलौ युद्ध अघाय ॥
हाथ फेरि दओ फिरि ढेबापर * औ रंजित पर दओ फिराय ॥
बज्रकि देही करि लड़िकन की * अपनी मढ़ी पहूँचे आय ॥
धनि २ माया परमेश्वर की * जिनकी लीला कही न जाय ॥
सातों लड़िका समरथ हुइगै * खेलैं राजभवन के माहिं ॥
मीरा सैय्यद बनरस वाले * सबकों शस्त्र सिखावन लाग ॥
युक्ति बताई सब लड़िबे की * महुबे भाग उठे फिर जाग ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ब्रह्मा * चारो समरथ राजकुमार ॥

इन चारौ के सन्मुख रण में * बिरले शूर गहैं तलवार ॥
यक दिन सोची मल्हनारानी * सातौ लड़िका लिये बुलाय ॥
सात बछेड़ा इन्द्र राशि के * सोऊ महलन लिये मँगाय ॥
घोड़ा करेलिया लै मल्हनाने * सो आल्हा को दियो गहाय ॥
घोड़ा हरनागर बड़ी राशिको * मल्हना ब्रह्मै दश्रो पकराय ॥
घोड़ी कबुतरी मलिखे लीन्हीं * बेंदुल ऊदनि दियो गहाय ॥
घोड़ा मनुरथा लै मल्हना ने * सो ढेबा को दौ पकराय ॥
घोड़ीहिरौंजिनिदइसुलिखेको * दुसरी रञ्जित को मिलिजाय ॥
फिरिहँसिमल्हनाबोलनलागी * सब लड़िकनसे कही सुनाय ॥
भोर होत सब झावर जैयो * बनमाँ खेलो जाय शिकार ॥
हिरना लावै जो जङ्गल ते * सो तरवरिहा पूत हमार ॥
भोर होत खन सातौ लड़िका * अपने घोड़न भये सवार ॥
जायके पहुँचे सब झावर पर * बनमें खेलन लगे शिकार ॥
तीनि पहर बन भटकत हुइगै * ना काहूको मिलो शिकार ॥
तब सब लौटि परे महुबे को * ठाढ़ो ऊदनि करै बिचार ॥
केहि बिधि जैहौं गदमहुबेको * बनमें मिलो न एक शिकार ॥
तौ लौं हिरना एक झाड़ीसे * रसबेंदुल के भजो अगार ॥
भाजत हिरना ऊदनि देखो * घोड़ा बेंदुला दियो बढ़ाय ॥
हिरना भागो सो ऊरई को * औ बगिया माँ गयो समाय ॥
ऊदनि ढूँढ़े वा हिरना को * बगिया गर्द बर्द हुइ जाय ॥
तौ लौं माली जो बगियाको * सो ऊदनि ढिग पहुँचो आय ॥
ठाढ़ो पूँछै सो ऊदनि ते * ठाकुर हाल देउ बतलाय ॥
कौन देश ते तुम आये हौ * बगिया गर्द दई करवाय ॥
जो सुनि पैहैं माहिल ठाकुर * तुम्हरो घोड़ा लिहैं छिनाय ॥

इतनी सुनिके ऊदनि तड़पे * औ माली से कही सुनाय ॥
देश हमारो नगर महोबो * जहँ पर बसत चन्देले राय ॥
ऊदनि नाम हमारो कहिये * हम आल्हा के छोटे भाय ॥
कौन सो क्षत्री है गढ़ियामें * जो मेरो घोड़ा लेय छिनाय ॥
इतनी कहिके ऊदनि चलिभे * औ महुबे माँ पहुँचे आय ॥
यहिबिधिनितउठिवेसबलड़िका * बनमें खेलन जायँ शिकार ॥
हिरना मारैं जो जङ्गल माँ * सो मल्हना के धरैं अगार ॥
देखि २ करतब लरिकन के * बहुतै खुशी होयँ परिमाल ॥
जो इच्छा राजा की होवै * सो सबपूर्ण होय ततकाल ॥
रैयति राजी सब महुबे की * सिगरो नगर बनो सुरधाम ॥
जहँ पर विचरैं आल्हाऊदनि * मलिखे आदि शूर सरनाम ॥
सुमिरणकरिके श्री गणेशको * गुरुपद कमलहिये महँ ध्याय ॥
आगे युद्ध लिखौं माड़ो को * यारो सुनियो कान लगाय ॥

* इति महोबे की दूसरी लड़ाई सम्पूर्ण *



* श्रीः *

आल्ह खण्ड

* माड़ौ की लड़ाई *

* दोहा *

श्रीगणपति पद सुमिरि उर, गुरु पद शीश नवाय।
माड़वार संग्राम पुनि, कहौं सबन हित गाय॥

* आल्हा छन्द *

सुमिरण करिके नारायण को * गुरुगनपति के चरण मनाय॥
मात सरस्वती तुमका गैये * हमरे हृदय बिराजो आय॥
देउतन गावौं गणनायक को * देविन बीच शारदा माय॥
तीर्थन गावौं श्री गंगा जी * कलिमल हरणमातुसुखदाय॥
धाम बखानौं जगन्नाथ जी * क्षेत्रन कुरुक्षेत्र हरिद्वार॥
पुरिन मध्य काशीजी सुमिरौं * जहँ श्री विश्वनाथ दरबार॥
छोड़ि सुमिरनी अब आगे को * आल्हालिखतशिवचरणलाल॥
जैसे युद्ध भयो माड़ौ को * सो सब कहौं यथा मति हाल॥
एक दिवस फिरिके ऊदनि ने * देहीं सबै सजे हथियार॥
घोड़ा बेंदुला पर चढ़ि बैठे * ऊदनि खेलन हेत शिकार॥
एँड़ लगाई रस बेंदुल के * घोड़ा उड़ो पवन के साथ॥
जायके पहुँचो सो झावर में * ऊदन गहे बाण धनु हाथ॥
खेलत २ दुपहर हुइ गइ * ना ऊदनि को मिलो शिकार॥
ठाढो सोचै ऊदनि बाँकुड़ा * मन अपने माँ करै बिचार॥
कैसे जैहैं नगर महोबे * का माता से कहिहौं जाय॥

तौ लौं हिरना एक झाड़ी से * निकसत लखो उदैसिंहराय ॥
घोड़ा बेंदुला को धरि दाबो * औ हिरना के परो पिछार ॥
दावे बेंदुला ऊदनि आवैं * उरई बीच पहूँचे आय ॥
जहाँ पै बगियाथी माहिल की * हिरना तहाँ गयो समियाय ॥
ऊदनि बेंदुला दाबे आवैं * बगिया बीच पहूँचे आय ॥
चलिभये ऊदनि तब बगिया से * औ पनिघट पर पहुँचे आय ॥
खूँट २ बगिया को ढूँढ़ो * औ सब गर्द दई करवाय ॥
बोले ऊदनि पनिहारिन से * घोड़ै पानी देउ पियाय ॥
बोली बाँदी तब ऊदनि से * ठाकुर सुनौ हमारी बात ॥
कौन देशके तुम बासो हौ * अपनौ कहौ तात अरु भ्रात ॥
बोले ऊदनि तब बाँदी से * सुनु पनिहारिन बात हमार ॥
नगर महोबा यक बस्ती है * जहँ पर बसैं चन्देले राय ॥
छोटे भैया हम आल्हा के * औ ऊदनि है नाम हमार ॥
बोली बाँदी तब ऊदनि से * ओ परदेशी राजकुमार ॥
पानी पियैहौं ना घोड़ा को * रानै खबरि सुनैहौं जाय ॥
जो सुनि पैहैं माहिल ठाकुर * तुम्हरो घोड़ा लिहैं छिनाय ॥
सुनिके बातैं ये बाँदी की * ऊदनि अग्निज्वाल हुइजाय ॥
गुल्ला काढ़े हैं जेबन ते * औ गुलेलको लियो उठाय ॥
तकि २ गुल्ला ऊदनि मारे * गगरी फोरि दई ततकाल ॥
राह पकरि लइ गढ़ महुबे की * अब आगे को सुनौ हवाल ॥
रोवति बाँदी गइ महलन को * औ माहिल ते कही सुनाय ॥
ऊदनि आये गढ़ महुबे ते * पनघट इज्जति लई हमारि ॥
सुनिके बातें ये बाँदिन की * माहिल अग्निज्वाल हुइजाय ॥
लैके कागद कलपी वारो * अपनी कलमदान मँगवाय ॥

पहिले लिखिके शिरनामा को * पाछे माहिल लिखी जुहार ॥
ता पाछे से लिखी हकीकति * पढ़ियो याहि चन्द्र सरदार ॥
तुम्हरे घरके रहुआ सहुआ * नित उठि रारिमचावत आय ॥
ऊदनि लड़िका जो तुम्हरे घर * सो ऊरई में पहुँचो आय ॥
जितनी गागरिथी पनिघटपर * गुलुन ऊदनि दई गिराय ॥
गर्द वर्द बगिया करवाई * सो तुम देउ वाहि समुझाय ॥
कबसे ऊदनि भये तरवरिहा * कबसे बाँधि लीन्ह हथियार ॥
खुपड़ी टाँगी दस्सराज की * माड़ौ पेड़ बरगदा डार ॥
ऐसे ऊदनि जो तरवरिहा * क्यों ना लेयँ बापको दायँ ॥
ऐसो पत्र लिखो माहिल ने * औ धामनको दियो गहाय ॥
लैके पाती धामन चलि भौ * औ महुबे माँ पहुँचो आय ॥
उतरि साँड़नी से भुँइ आयो * बीच कचेहरी पहुँचो जाय ॥
सात कदम ते कुन्नस करिके * पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके चिठिया राजा बाँची * आँकुइआँकुनजरि करिजायँ ॥
लई लेखनी कर कंचन की * उत्तर लिखो चँदेले राय ॥
पत्री भेजत हौं उत्तर में * पढ़ियो याहि महिलपरिहार ॥
जैसे लड़का ये हमरे हैं * तैसेइ लड़िका लगैं तुम्हार ॥
बुरो न मानौ इन लरिकन को * इनकी खता माफ हुइ जाय ॥
गागरि फोरी है माटी की * मैं सोने की देउँ गढ़ाय ॥
बात चलैयो ना माड़ौ की * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
जो सुनि पैहैं उदनि बाँकुड़ा * तुरतै त्यारी दिहैं कराय ॥
छोटी उम्मिरि के लरिका हैं * रहि २ मेरो प्राण घबराय ॥
ऐसी पाती लिखि राजा ने * सो धामन कौं दई गहाय ॥
लैके पाती धामन चलिभौ * औ उरई में पहुँचो जाय ॥

पाती लैके चंदेले की * सो माहिल कों दई गहाय ॥
खोलिके पाती माहिल बाँची * आँकुइआँकुलजरि करिजाय ॥
बात न आई कछु माहिलको * चुप्पै बैठि रहे हरषाय ॥
तीनि महीना के बीते पर * सब रजपूती साज सजाय ॥
घोड़ा बेंदुला पर चढ़ि बैठे * ऊदनि उरई पहुँचे आय ॥
जहँफुलबगियाथी माहिलकी * ऊदनि तहाँ पहूँचे आय ॥
जोड़ी मारी करसायल की * बगिया गर्द दई करवाय ॥
चलिभो माली बगिया वारो * औ अभई तिर पहुँचो जाय ॥
हाल बतायो सब बगिया को * दोनों हाथ जोरि शिरनाय ॥
ऊदनि आये हैं महुबे से * सो अतिउधम मचायोआय ॥
जोड़ी मारी करसायल की * बगिया गर्द बर्द हुइ जाय ॥
चलि भे अभई तब हुअनासे * पहुँचे ऊदनि के ढिगजाय ॥
धरि ललकारी है अभई ने * ऊदनि सुनो हमारी बात ॥
क्यों तुम आये हो उरई को * काहे रारि मचाई आय ॥
दाख छोहारे को बगिया थी * तुमने गर्द दई करवाय ॥
जोड़ी मारी करसायल की * तमने करी न शोच बिचार ॥
चुप्पहिं चले जाउ महुबे को * क्यों कमबख्ती लगी तुम्हार ॥
जो ना जैहौ तुम हिअनासे * अबहीं घोड़ा लिहौं छिनाय ॥
इतनी सुनिके ऊदनि जरिगै * नैना अगिन ज्वाल हुइजाय ॥
उतरि बेंदुला से भुँइ आयो * औ अभई ढिग पहुँचो आय ॥
डंड चढाय लई अभई की * उनका धरती दियो गिराय ॥
बाँह पकरिके झटका दीन्हो * औ घोड़ा पर भयो सवार ॥
बाँह उतरि गइ है अभई की * ऊदन कूँच गयो करवाय ॥
जोड़ी लैके करसायल की * औ महुबे माँ पहुँचो जाय ॥

यह हरिकारा दौरत आवै * सोमाहिलढिग पहुँचो आय ॥
सात कदम से करी बन्दगी * दोनौं हाथ बाँधि शिरनाय ॥
कही हकीकत सब बगियाकी * सारो हाल दियो समुझाय ॥
ऊदनि आये थे महुबे से * बगिया डारो सकल उजार ॥
बाँह उखारी है अभई की * दोउ करसायल करे शिकार ॥
घोड़ा भगाय गये महुबे को * ऐसो जुलुम गुजारो आय ॥
वातैं सुनि के हरिकारा की * माहिल अग्नि ज्वालहुइजायँ ॥
तुरतै चलिभे माहिल ठाकुर * फुलबगियामें पहुँचो आय ॥
देखि हकीकति तहँ अभईकी * माहिल गये क्रोध में छाय ॥
जाइ उठाय लियो अभई को * औ महलन को दियो पठाय ॥
तुरत मँगाई लिल्लो घोड़ो * महुबे कूँच दियो करवाय ॥
कछुक देर केरे अरसा में * माहिल महुबे पहुँचे आय ॥
उतरि बछेरी ते भुइँ आये * बीच कचेहरी पहुँचे आय ॥
लगी कचेहरी परिमालै को * बैठे बड़े २ उमराव ॥
आवत देखा जब माहिलको * ऊँची चौकी दई डराय ॥
करो बन्दगो माहिल ठाकुर * तब हँसि कही चन्देले राय ॥
हाल बतावो तुम जियरा को * काहे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
माहिल बोले तब राजा से * तुम सुनिलेउ रजापरिमाल ॥
तुम्हरे घरके रहुआ सहुआ * तिनने कीन्हो बुरो हवाल ॥
ऊदनि पहुँचो फिरि उरई में * बगिया गर्द दई करवाय ॥
बाँह उखारि दई अभई को * दाख छुहारे दिये नशाय ॥
कबसे ऊदनि भये तरवरिहा * कबसे बाँधि लीन्ह हथियार ॥
चढ़ो करिंगा माड़वार से * जो जम्बै को राजकुमार ॥
दस्सराज औ बच्छराज को * लीन्हीं तुरतै मुश्क बँधाय ॥

गज पचशावद लाखा पातुर * घोड़ा पपीहा संग लिवाय ॥
महल लूटलओ चन्द्रबंश को * हार नौलखा लियो छिनाय ॥
माल खजाना लै महुबे को * माड़ौ कूँच गयो करवाय ॥
दस्सराज औ बच्छराज को * पत्थर कोल्हू दियो पेराय ॥
खुपड़ी टाँगि दई बरगद में * क्यों ना लेयँ बाप के दायँ ॥
कबसे ऊदन भये जोरावर * कबसे कसन लगे हथियार ॥
पड़ै सुचेटा जब करिया से * सारी भूल जाय तलवार ॥
इतनी सुन के कही चन्देले * तुम सुनिलेउ महिलपरिहार ॥
जो नुकसान कियो ऊदन ने * हरजा दूनों दिहौं तुम्हार ॥
चर्चा करियो ना माड़ो की * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
जो सुन पैहैं उदनि बाँकुड़ा * तुरत तयारी दिहैं कराय ॥
फिरि समझाये ना मानैगो * कलहा पूत दिवलदे क्यार ॥
तेहिते तुमकाँ समुझावतिहौं * मानौ बात महिल परिहार ॥
कान अवाज परी ऊदनि के * बोले हाथ जोरि शिरनाय ॥
कौने मारो है दादा को * हमकाँ साँची देउ बताय ॥
कौन करिगा है माड़ौ को * दद्दुआ साँची देउ बताय ॥
टँगी खोपड़िया कहँ दादाकी * कौने कोल्हू दिये पेराय ॥
सुनि के बातैं ये ऊदन की * राजा गये सनाका खाय ॥
करो बहाना है ऊदन से * औ यह कही चँदेले राय ॥
कठिन लड़ाई भइ पैरागढ़ * जाको सिलहट कहत पुकार ॥
भई लड़ाई रघुनन्दन से * तहँ हैं जूझे बाप तुम्हार ॥
इतनी सुनिके ऊदनि बाँकुड़ा * तब माहिल से कही सुनाय ॥
चर्चा कीन्ही जो माड़ौ की * तौ सब हाल देउ बतलाय ॥
बोले माहिल तब ऊदनि से * सुनले बीर उदयसिंह राय ॥

हाल हमारो ना जानो है * तुम देवै से पूछौ जाय ॥
सुनिके बहाना ये माहिलकी * औ जल मरा उदयसिंहराय ॥
स्याह पुतरियाँ लालीहुइगईं * गुस्सा गई बदन में छाय ॥
तब ललकार दई माहिलको * मामा तेरो बुरो हुइ जाय ॥
चर्चा करि के गढ़ माड़ौ की * फिरि कछुहाल बताओ नायँ ॥
बदला लैलेउँ मैं ददुआ को * तब छाती को डाहु बुझाय ॥
शीश काटिलेउँ नृप जम्बैको * महुबे बीच दिहौं टँगवाय ॥
मूड़ काटि कै वा करिया को * माड़ो गर्द दिहौं करवाय ॥
आगि लगाय देउँ महलन माँ * माल खजाना लिहौं लुटाय ॥
इतनी कहिके ऊदनि चलिभै * मुख पर रही लालरी छाय ॥
कपड़ा भीजे सब ऊदनि के * नस २ गुस्सा रहो समाय ॥
जायके पहुँचो रंगमहल में * जहँ पर बैठि दिवलदे माय ॥
हाथ जोरि के ऊदनि ठाढ़े * देवै चकित भई लखि हाल ॥
बोली माता तब ऊदनि से * बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
हाल बताओ तुम जियरा को * बेटा मेरे उदयसिंह राय ॥
छुटो पसीना क्यों देहो से * क्यों मुख रहो लालरी छाय ॥
क्या काहू ने बोली मारी * या कछु कियो बखेड़ाजाय ॥
कौन सोच जियरा में छायो * बेटा हाल कहो समुझाय ॥
दोउ कर जोरे ऊदनि बोले * माता बार २ बलि जाउँ ॥
हाल बताय देउ मोहि साँचो * नाहीं पेट मारि मरिजाउँ ॥
कौन सो राजा माड़वार को * को जम्बै को राजकुमार ॥
कौन करिंगा है माता जी * कैसे मारे पिता हमार ॥
टँगी खुपड़िया कहँ दादा की * साँची हाल कहो समुझाय ॥
सुनि के बातैं ये ऊदनि की * देवै गई सनाका खाय ॥

मनमें सोचैं देवै रानी * माहिल तेरो बुरो हुइजाय ॥
वंश नशैबे को लागे हो * क्यों यह चर्चा दई चलाय ॥
बोली माता तब ऊदनि से * बेटा मेरे प्राण आधार ॥
कर्म लिखो फलसब भोगतिहै * जोकछु बिधना लिखालिलार॥
सो हम भोगिरहीं दुनियाँ में * याको दोष काहुको नाहिं ॥
फिरि के ऊदनि बोलनलागे * माता हम मनिबे को नायँ ॥
काढि कटरिया लइ ऊदनि ने * सो छाती से लई लगाय ॥
हाल बतैहो न जो माता * तो मैं देहौं प्राण गमाय ॥
देखि हकीकति यह ऊदनिकी * देवै बहुत गई घबराय ॥
रोय २ देवै हाल बतावै * बिपदा कछु कही ना जाय ॥
चढो करिंगा गढ़ माड़ौ को * सो महुबे माँ पहुँचो आय ॥
फाटक बंद हते महुवे के * द्वारे पड़े बनाफर राय ॥
हार नौलखा करिया माँगो * तब सैयद ने कही सुनाय ॥
हाल हमारो ना जानो है * हम परदेश रहत महराज ॥
इतनी सुनिके करिया जरिगे * फाटक तुरत तोड़ावन लाग ॥
तबसलाह सैय्यद ने कीन्ही * सब मिलि खैंचि लेहु तरवार॥
यह मन भाई सब काहू के * तुरतै चलन लगी तरवार ॥
चार घरी भरि चली सिरोही * द्वारे बही रक्त की धार ॥
करिया भाग गया माड़ौ को * नाहीं मिलो नौलखा हार ॥
कछुक दिवस बीते सुख संयुत * फिरि कै चढे करिंगा राय ॥
निशा अँधेरी अर्धराति को * दशहर पुरवा दियो फुँकाय ॥
सोवति बाँधे पिता तुम्हारे * औ चाचा को लियो बँधाय ॥
लूटि कराय लई मल्हना की * माल खजाना लियो लुटाय ॥
हार नौलखा हमसे छीनो * लाखा पातुर संग लिवाय ॥

गज पचशावद घोड़ा पपीहा * सो लै गयो करिंगा राय ॥
बाँधि लैगयो तेरे दद्दुआको * पत्थर कोल्हू दियो पेराय ॥
खोपड़ी टाँगि दई बरगद में * विपदा कछु कही ना जाय ॥
चुरी उतारी एक न हमने * बारह बरसैं गईं बिताय ॥
आशा लागि रही जियरा माँ * समरथ पुत्र कबहु हुइ जाय ॥
बदलो लेहैं जब माड़ौ माँ * तब छाती कर डाहु बुताय ॥
चुरी सिरैहों तब सागर पर * बेटा मेरे उदयसिंह राय ॥
सुनिके बातैं ऊदनि जरिगये * गुस्सा गई बदन में छाय ॥
तड़पे ऊदनि रंगमहल में * औ माता से कही सुनाय ॥
बदलो लेहौं मैं दद्दुआ को * तब छाती को डाहु बुताय ॥
शीश काटि लेउँ मैं करियाको * जंबै मूड़ लिहौं कटवाय ॥
पत्थर कोल्हू माँ पेरवैहों * खोपड़ो महुबे दिहौं टँगाय ॥
वंश नशैहौं मैं जंबै को * रखिहौं पानि देवैया नाय ॥
माड़ौ खोदि के धान बुवैहों * तब छाती को घाउ सेराय ॥
इतनी सुनिके देवै बोली * बेटा मेरे लड़ैतो लाल ॥
उमिरि तुम्हारी यह छोटी है * ऐसी न कहौ परेउना लाल ॥
कठिन मवासी गढ माड़ो है * जहँ पर रहैं करिंगा राय ॥
कोट कराल बनो लोहगढ * चहुँ दिशि बबुरीबन लहराय ॥
जहँगतिनाहीं है देवतनिकी * मानुष तककी कहा बसाय ॥
कछुदिनधीरधरौ मन ऊदनि * फिरि लैलियो बाप के दायँ ॥
बोले ऊदनि महतारी से * माता लागौं चरण तुम्हार ॥
नेह छोड़ि देउ तुम जियरा ते * औ सबत्यागौ सोच विचार ॥
छोटी उमिरि के रामचन्द्र ने * रण मे दीन्हें जुलुम गुजारि ॥
छोटी उमिरियाके लवकुशने * डारी सकल फौज संहारि ॥

छोटे न जनियो छत्री के बालक * छोटे करैं गजब के काम ॥
हँसी खुशी से आज्ञा दै देउ * जासों पूर्ण होयँ सब काम ॥
मन माँ सोचै देवै रानी * मनिहैं नाहिं उदयसिंह राय ॥
लै लियो सङ्ग में तब ऊदनिकाँ * पहुँची मल्हना के ढिग जाय ॥
हाल बतायो सब देवै ने * औ मल्हना से कही सुनाय ॥
अब तुम रोकौ इन ऊदनिकाँ * हमरी बात मानता नायँ ॥
तब समुझावै मल्हना रानी * बेटा मेरे उदसिंह राय ॥
समरथ हुइहौ जब कछु दिनि माँ * माड़ो लियो बाप के दायँ ॥
प्राण पियारे हो तुम सबके * नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
उमिरि तुम्हारी अति थोरी है * रहि २ मेरो प्राण घबराय ॥
कोट कराल बनो लोहा गढ़ * जामें टूटि जाय हथियार ॥
बड़ो लड़ैया माड़ौ वाला * जो जम्बै को राजकुमार ॥
तेहि ते तुमकाँ समझावति हौं * बेटा बैठि रहो अरगाय ॥
सुनिके बातैं ये मल्हना की * ऊदनि बोलो शीश नवाय ॥
हँसी खुशीसे आज्ञा दै देउ * जासों काम सिद्ध हुइ जाय ॥
उमिरि हमारो ना तुम देखो * आज्ञा तुरत देउ फरमाय ॥
कही तुम्हारी ना हम मनिहैं * चाहे कोटि करौ उपचार ॥
जेहिको बैरी सुखमाँ सोवै * तेहि के जीवन को धिक्कार ॥
मनमाँ सोचै मल्हना रानी * है यहु हठी उदयसिंह राय ॥
कही हमारी ना अब मनिहै * ताते हुक्म देउँ फरमाय ॥
बोली मल्हना तब ऊदनि से * जुग २ जियो लड़ैते लाल ॥
जङ्ग जीति हौ गढ़ माड़ो में * है यह आशिरबाद हमार ॥
सवालाख को कङ्कन लैके * सो ऊदनिको दियो बँधाय ॥
पीठी ठोंकी फिरि मल्हना ने * माड़ौ लेउ बाप के दाँय ॥

असली बड़ा आल्हखण्ड



भार्गव भूषण प्रेस, काशी ।

देवै चलि भइ है हुँ अनासे * औ ऊदनि का सङ्ग लिवाय ॥
जहाँ पै बैठे ताल्हन सैय्यद * देवै तहाँ पहूँची आय ॥
बोली देवै तब सैय्यद से * दादा सुनहु बात मनलाय ॥
जेठ हमारे तुम लागति हो * ताते कहौं कथा समुझाय ॥
ऊदनि बिचले हैं माड़ौ को * हमरो एक मानता नायँ ॥
संगै जावौ तुम ऊदनि के * माड़ौ युद्ध खेलावौ जाय ॥
उम्मिरिथोरी बयस किशोरी * रहि २ मेरो प्राण घबराय ॥
गोद तुम्हारी मैं सौंपति हौं * मेरो पूत मिलैयो आय ॥
ऊदनि बोले सुनिआल्हा से * दादा मंडरीक औतार ॥
बदलो लेहौं मैं ददुआ को * गढ माड़ौ काँ होउ तयार ॥
बोले आल्हा तब ऊदनि से * भैया अक्किल गई हेराय ॥
कठिन मवासी गढ माडौ है * बदलो सहज मिलनको नायँ ॥
जैसे खुपड़ी टँगी पिता को * तैसेइ खुपड़ी टँगै तुम्हार ॥
तड़पे ऊदनि तब बँगला में * भैया बोलौ बात बिचार ॥
जिनकेलड़िकासमरथहुइजायँ * क्यों ना लेयँ बापके दायँ ॥
काल आइजायजेहिसमयापर * बचिहौ सात कोठरिन नायँ ॥
समर देखिके जो डर लागै * महुबे बैठि रहौ अरगाय ॥
थोड़ी फौज देउ जल्दी से * माँड़ौ कूँच जाउँ करवाय ॥
तुम सब घरमाँ सुखसे सोवौ * अकिला जाय करौं तरवार ॥
जेहि को बैरा सुखमाँ सोवै * तेहिके जीवन को धिक्कार ॥
बोले मलिखे तब ऊदनि से * भैय्या धीर धरौ मनमाँय ॥
संगै चलिहौं मैं माड़ौ को * ददुआको बदलो लिहौं चुकाय ॥
शीश काटिके मैं करियाको * महुबे बीच दिहौं टँगवाय ॥
मूड़ काटिके मैं करियाको * पत्थर कोल्हू दिहौं पेराय ॥

सोच करौना कछुजियरा माँ * राखौ धीर लहुरवा भाय ॥
मलिखे ऊदनि दोनौं बिचले * माड़ौ लेन बापके दायँ ॥
ऊदनि बोले तब सैय्यद से * चाचा सुनौ तलंसी राय ॥
बाप बरोबरि तुम लागतिहौ * हमकाँ मंत्र देउ बतलाय ॥
कैसे दाँव मिलै ददुआ को * सो सब हाल कहौ समुझाय॥
बोले सैयद तब ऊदनि से * बेटा मेरे उदयसिंह राय ॥
जब लग जीवै बनरस वाला * तुमका कौन पड़ी पर्वाय ॥
कठिन मोरचा जहँपर देखौ * तहँ सैय्यद को देउ बताय ॥
पिता वचन पर पुत्र तुम्हारो * अपनो जीवन दियो बिसार ॥
जहाँ पसीना गिरै लालको * मैं दै देउँ रक्त की धार ॥
बातैं सुनिके ये सैय्यद की * ऊदनि बहुत गये हरषाय ॥
मलिखे पूछैं तब ढेबा से * भैय्या सगुन देउ बतलाय ॥
पोथी लैके समर सार की * ढेबा कीन्हो शकुन बिचार ॥
कन्यावृश्चिकतुलामकरअरु * शोधो मीन लग्न बहुबार ॥
बोले ढेबा नर मलिखे से * भैय्या सुनहु बात मनलाय ॥
शकुन हमारो यह बोलति है * माड़ौ काम सिद्ध ह्वइ जाय ॥
रूप बनावो तुम जोगिन के * सुन्दर गुदरी लेउ सिलाय ॥
अलख जगावोगढ़ माड़ौ माँ * औ सब भेद लेउ पँजियाय ॥
सुनिके बातैं ये ढेबा की * मलिखे थान लिये मँगवाय ॥
सो रँगवाय दियो गेरू माँ * अरु मुल्तानी रंग मिलाय ॥
बाइस पर्तन की गुदरी है * जिनमाँ छिपैं सबै हथियार ॥
बिच २ हीरालाल जड़ाये * झालरि लगी मोतियनक्यार ॥
कानन कुण्डलहाथसुमिरनी * सबने डारे मूड़ मुड़ाय ॥
रामानंदी तिलक लगाये * शोभा बरन करी ना जाय ॥

आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा * सैय्यद बनरस के सरदार ॥
पहिरि गुदरिया लइ पाँचौने * औ माड़ौ काँ भये तयार ॥
मलिखे बोले तब आल्हा से * दादा मंडरीक औतार ॥
अलख जगावौ गढ़ महुबेमाँ * माँगौ महल मल्हनदे क्यार ॥
महल चेतावौ फिरि माताको * ना पहिचानै दिवलदे माय ॥
तब हम जानैं मन अपने माँ * माड़ौ लिहैं बापके दायँ ॥
यह मन भाय गई सबही के * सबने बाजा लिये उठाय ॥
लई सरंगी कर सैय्यद ने * आल्हा डमरू लई उठाय ॥
लौ इकतारा नर मलिखे ने * ढेबा खँजरी चले बजाय ॥
बजी बँसुरिया बघऊदनि की * शोभा कछू कही ना जाय ॥
राग रागनी गावन लागे * जिनमाँ उठै बीर बैताल ॥
पाँचौ जोगी डगरत चलिभये * रंगमहल को कियो पयान ॥
अलख जगाई दरवाजे पर * सिगरे मोहि २ रहि जायँ ॥
देखि तमाशा इन जोगिनको * बाँदी झपटि महलको जाय ॥
बोली बाँदी रानि मल्हना से * दोनौं हाथ जोरि शिरनाय ॥
पाँच जोगिया ऐसे आये * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
तुरतै चलि भइ मल्हना रानी * दरवाजे पर पहुँची आय ॥
रूप देखिके इन जोगिन को * रानी बहुत खुशी हुइ जाय ॥
पूछै रानी तिन जोगिन से * योगियौ कहाँ तुम्हारो ठाम ॥
बयस तुम्हारी अति थोरी है * तुम्हरे कहा गुरू को नाम ॥
हँसिके ज्वाब दियो ऊदनि ने * माता मेरी मल्हनदे रानि ॥
धोखे न रहियोतुमजोगिनके * हमरो नाम उदयसिंह राय ॥
बदलो लेहौं मैं दादा को * तासों डारो मूँड़ मुड़ाय ॥
सुनिके बातैं ये जोगिन की * मल्हना बहुत खुशी हुइजाय ॥

आशिरवाद दियो रानो ने * जग २ जियौ लड़ैते लाल ॥
अब हम जानी अपने मनमाँ * माड़ौ लिहौ बाप को दाउँ ॥
चलिभे योगी तब हुअना से * आये महल दिलवदे क्यार ॥
अलख जगाई दरवाजे पर * देवै कान परी झनकार ॥
तौ लौं बाँदी दाखिल हुइगइ * औ देवै से कही सुनाय ॥
पाँच जोगिया ऐसे आये * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
चलि भइ देवै तब महलन ते * औ देवै से कही सुनाय ॥
रूप देखिके उन जोगिन को * देवै बहुत खुशी हुइ जाय ॥
देवै पूछै उन जोगिन ते * बाबा हाल देउ बतलाय ॥
कौन देशते तुम आये हौ * आगे कौन देशको जाउ ॥
ऊदनि बोले तब माता से * जननी बार २ बलि जाउँ ॥
पुत्र तुम्हारे हम लागति हैं * हमरो नाम उदयसिंह राय ॥
ना पहिचानो तुमने माता * हम सब लई विभूति रमाय ॥
अलख जगै हैं गढ माड़ौ माँ * तनि२ भेद लिहैं पँजियाय ॥
हँसिके बोली देवै रानी * बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
आजु प्रतीति भई मन मेरे * माड़ौ लिहौ बापके दाँय ॥
सुजवल पूजे सब लड़िकन के * माथमें रोचना दियो लगाय ॥
पीठी ठोंकी सब लड़िकन की * आशिष दई दिवलदे माय ॥
जैसे गङ्गा में जल बाढ़ै * तुम्हरी रण बाढ़ै तरवार ॥
युद्ध देखिहौं गढ माड़ौ को * हमहूँ चलिहैं साथ तुम्हार ॥
इतनी सुनिके पाँचोचलि भये * औ लश्कर माँ पहुँचे जाय ॥
बाना बदलो रजपूती को * तुरत नगड़ची लियो बुलाय ॥
बीरा दैके सैय्यद बोले * लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बरनी हुइ गइ गढ माड़ौ की * अब ना राखौ देर लगाय ॥

बजै नगाड़ा तब दलगञ्जन * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
जितनी तोपैं गढ़ महुबे की * सो सब जल्दी दईं सजाय ॥
हनुहुँकारनि गर्भगिरावनि * किल्ला तोरनि लई सजाय ॥
बड़ि २ तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर दईं सजाय ॥
जितने हाथी हैं महुबे के * सो सब तुरत सजावन लाग ॥
बड़े २ हाथी साजन लागे * पर्बत सदृश रूप दिखराय ॥
कजरीवन के हाथी साजे * मुड़िया हौदा दिये धराय ॥
डारि के गद्दा मखमल वाले * रेशम रस्सा दिये खिंचवाय ॥
यक यक हाथी के हौदा में * बैठे चारि २ असवार ॥
जितने घोड़ा हैं महुबे माँ * सो सब जल्दी देउ सजाय ॥
ताजी तुर्की कच्छी मच्छी * पचकल्यानी लिये सजाय ॥
लक्खा गर्रा हरियल सब्जा * सुर्खा ताजी दिये सजाय ॥
धरि दइ काठी सब घोड़नपर * मखमल जीन दिये धरवाय ॥
लगे वकसुआ हैं सोने के * रेशम तङ्ग दिये खिंचवाय ॥
एक पहर केरे अरसा माँ * लश्कर सबै भयो तैयार ॥
क्यागति बरनौं मैं क्षत्रिनकी * दुइ २ हाथ गहे तरवार ॥
तौ लौं मलिखे ऊदनि बोलैं * ज्वानों सुनियो कान लगाय ॥
नौकर चाकर कोइ नाहीं हौ * तुम सब भय्या लगौ हमार ॥
काज हमारो अब अटको है * कसिके हाथ गहौ हथियार ॥
कठिन मवासी गढ़ माड़ौ है * जहँ पर राज करिंगा क्यार ॥
जिनको प्यारी होयँ मेहरिया * ते सब छोरि धरो हथियार ॥
जिनहिं पियारी परमभगौती * ते सब चलौ हमारे साथ ॥
जंग जीतिहौं जो माड़ौ माँ * दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
इतनी सुनिलइजब ज्वानननने * तब ऊदनि से कही सुनाय ॥

नमक चन्देले को खायो है * सो हाड़न माँ गयो समाय ॥
कटि२ मुगड गिरैं धरनी माँ * उठि २ रुगड करैं तरवार ॥
पाँव पिछारू ना हम धरिहैं * चाहे तन धजी २ उड़िजाय ॥
सुनिके बातैं ये चत्रिन की * ऊदनि बहुत खुशी हुइ जाँय ॥
सजिगे चत्री महुबे वारे * शोभा बरन करी ना जाय ॥
सैयद ब्रह्मा ढेबा साजिगे * सजिगे बीर बनाफर राय ॥
सजिके चलिभये सब जल्दीसे * देविकि मठिया पहुँचे जाय ॥
धूप दीप दै करी आरती * चरणनशीश झुकाय झुकाय॥
पूजन करिके महादेव को * औ मनियाँ के चरण मनाय॥
विनती कीन्हीं फूलमती की * होउ सहाय कालिका माय ॥
चलिभै चत्री सब हुँअना से * पहुँचे बीच कचेहरी जाय ॥
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन * जेहिपर तपैं चन्देले राय ॥
करी बन्दगी सब काहू ने * ऊदनि हाथ बाँधि रहिजाय ॥
आज्ञा दै देउ मुख अपने से * माड़ौ लेयँ बाप के दायँ ॥
पीठी ठोंकी चन्देले ने * तुम्हरे काम सिद्धि ह्वै जायँ ॥
बोले चन्देले तबलड़िकन से * बेटा सुनौ मर्म की बात ॥
धर्म नीतिसे जो कोइ लड़िहै * ताको होय नहीं आघात ॥
बालक बूढ़े को ना मरिऔ * ना भागे के परेउ पिछार ॥
हाथ मेहरियनपर ना डरियो * ना निर्बल पर कियउ प्रहार ॥
पहिलीचोट न अपनी करियो * यह हम तुम्हैं दियो बतलाय॥
शरणागत की रक्षा करियो * जासे सबै काम बनिजाय ॥
बिना अस्त्रको शूर न मरियो * बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
इतनी बातैं जो तुम मनिहो * तुम्हरो जीति होय सबकाल ॥
सुनि के बातैं ये राजा की * बोले तुरत उदयसिंह राय ॥

हुक्म आपको चाचा मनिहौं * चाहे तन धजी२ उड़िजाय ॥
बिदा माँगिके सब राजा से * पहुँचे मल्हना के ढिगजाय ॥
चरण लागिके रनिमल्हनाके * सबने माथे लिये लगाय ॥
आशिर्वाद पाय चल दीन्हे * अपनी फौज पहूँचे आय ॥
बोलि नगड़ची को बुलवाओ * कूच को डंका दयो बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * चत्री उठे भरहरा खाय ॥
पहिले नगाड़ा भइ जिनबंदी * दुसरेमाँ बाँधि लीन्ह हथियार ॥
तिसरे नगाड़ा के बाजत खन * लश्कर चला महोबे क्यार ॥
घोड़ाकरिलिया पर आल्हा हैं * घोड़ी कबुतरी पर मलिखान ॥
घोड़ा हरनागर पर ब्रह्मा हैं * बेंदुला पर ऊदनि बलवान ॥
घोड़ी सिंहनी पर सैय्यद हैं * दाढ़ी रही तोंद पर छाय ॥
घोड़ा मनुरथा पर ढेबा हैं * शोभा कछु कही ना जाय ॥
संग पालकी रनि देवै की * सब चलि भये गणेश मनाय ॥
धावा बोलो राति दिना के * चत्री गिनैं धूप ना छाँह ॥
दिवस अठारहकी मंजिलकरि * तब धूरे पर पहुँचे जाय ॥
डेरा डारि दिये बबुरीबन * अपने तम्बू दिये लगाय ॥
हुक्म दै दिया ऊदनि ठाकुर * जङ्गल साफ देहु करवाय ॥
बजे कुल्हाड़ा तब जङ्गल में * धरती पेड़ गिरे अरराय ॥
जगह साफ भइ तम्बू तानगे * चत्रिन छोरि धरे हथियार ॥
तंग बछेड़न के छोड़वाये * हाथिन हौदा लिये उतारि ॥
तम्बू लागे सब राजन [illegible] ऊपर धर्म ध्वजा फहराय ॥
सुर्खी देखि परैं तम्बुअ[illegible] * झंडन रही लालरी छाय ॥
पन्द्रह कोसी बबुरी बन में * झंडा गड़ो बनाफर क्यार ॥
कहुँ २ चत्री करैं रसोईं * गोटा उड़ै अफीमन क्यार ॥

कहुँ २ चत्री मुद्गर फेरैं * कहुँ २ बाना रहे फेराय ॥
कहुँ २ पण्डित पोथी बाचैं * कहु २ नाच अप्सरन क्यार ॥
दशदिन बोतिगये याहीविधि * चत्री रहे अनन्द मनाय ॥
तब ललकारो है ऊदनि ने * औ आल्हा से कही सुनाय ॥
जौन हेतु आयो महुबे से * ताको अब कछु करहु उपाय ॥
इतनी सुनिके मण्डरीक ने * औ ढेबा से कही सुनाय ॥
शकुन बताय देउ जल्दी से * जामें काम सिद्ध हुइ जाय ॥
लैके पोथी समर सार की * ढेबा जोतिष कियो बिचार ॥
हँसिके ढेबा बोलन लागे * दादा मंडरीक औतार ॥
बाना बदलो तुम जोगिनको * औ जल्दी से होउ तयार ॥
शकुन हमारो यहु भाषत है * तुम्हरो काम सिद्ध हुइ जाय ॥
इतनी सुनिलइ जबआल्हाने * तुरत गुदरिया लई मँगाय ॥
पहिनिगुदरिया लइ पाँचौ ने * अपने बाजा लिये उठाय ॥
रामानन्दी तिलक लगायो * तनमाँ लई भभूति रमाय ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा * औ सैय्यद को संग लिवाय ॥
ब्रह्मानन्द लश्कर माँ छोड़े * पाँचो चले गणेश मनाय ॥
अपने २ साज सजावें * ऊदनि गावैं राग मलार ॥
क्यागतिबरनौंउनजोगिनकी * देखत देयँ मोहनी डार ॥
यहि विधि लाँघिगयेबबुरीबन * औ फाटक पर पहुँचे जाय ॥
बोले योगी दरबानी से * फाटक जल्द देउ खुलवाय ॥
तब दरबानी बोलन लागे * जारू लीजै दण्ड प्रणाम ॥
कौन देश ते तुम आये हो * केहा कहा तुम्हारो धाम ॥
बोले आल्हा दरबानी से * है गोरखपुर कुटी हमार ॥
चार धाम करो पिरथी पर * अब हम हिङ्गलाज को जायँ ॥

* असली बड़ा आल्हखण्ड *



भार्गव भूषण प्रेस, काशी।

खर्च नहीं है कछु कम्मर में * सो हम भिक्षा मँगिहैं जाय ॥
तब हरकारा ने समुझायो * बाबा धीर धरो मन मायँ ॥
आज्ञा लैके नृप अपने की * फाटक जल्द दिहैं खुलवाय ॥
चलो हरिकारा तब फाटक ते * औ ड्योढ़ीमें पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी सहिजादे को * दोनों हाथ जोर शिरनाय ॥
बोलो हरकारा अनुपी से * मेरी खता माफ हुइ जाय ॥
जोगी पाँच खड़े फाटक पर * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
आज्ञा होवै महराजा की * तौ मैं फाटक देउँ खोलाय ॥
सुनिकै बातैं हरकारा की * अनुपी दीन्हों हुक्म सुनाय ॥
गओ हरिकारा तबद्वारे पर * फाटक तुरत दियो खोलवाय ॥
चलि भये जोगी तब फाटकसे * औ ड्योढीढिग पहुँचे आय ॥
बायें कर से करी बन्दगी * बैठे देखि अनूपी राय ॥
जरिगै अनुपीलखिजोगिनको * गुस्सा हुइ के कहो सुनाय ॥
जल्द निकारौ इन जोगिनको * हैं बे अकल जोगिया राय ॥
बायें करसे करत बन्दगी * इनकी अकिल गई हेराय ॥
इतनी सुनि के ऊदनि तड़पे * औ अनुपी से कही सुनाय ॥
ध्यान तुम्हारोकहँ राजन है * अपने मनमाँ करो बिचार ॥
जौन हाथसों जपैं सुमिरिनी * नित प्रति लेयँ रामको नाम ॥
हुक्म नहीं है गुरू राज को * जो दहिने कर करैं सलाम ॥
करैं बन्दगी जो दहिने कर * हमरो जोग भंग हुइ जाय ॥
बोले टोडरमल अनुपी से * भैया सुनो हमारो बात ॥
मुँहना लागो इन जोगिनके * यामें होय गजब की बात ॥
तेज बिराजति है चेहरन पर * जोगी हुनरमन्द दिखरायँ ॥
कर्तब देखिलेउ जोगिन के * इनको भिक्षा देउ मँगाय ॥

बोले अनुपी तब जोगिने से * बाबा बार २ बलि जाउँ ॥
करो तमासा तुम हियना पर * अपने कर्तब देउ दिखाय ॥
इतनी सुनिके सब जोगिन ने * अपने बाजा लिये निकाल ॥
नाचैं ऊदनि त्यहि समया पर * अनुपी मोहि २ रहिजाय ॥
डारि मोहनी दइ बँगला में * तब अनुपी ने कही सुनाय ॥
कुटी बनावौ तुम माड़ौ माँ * बाबा यहाँ करौ विश्राम ॥
ऊदनि बोले तब अनुपी से * बाबा सुनौ हमारी बात ॥
आजुरमानी तेरि नगरी है * हमका भोर रमानो वाट ॥
भिक्षा माँगैं तेरी नगरी माँ * आगे हिंगलाज को जायँ ॥
सुनिकै बातें ये योगिन की * अनुपी मोहरैं दईं मँगाय ॥
सो लै लीन्हों सब जोगिनने * औ चलि भये गणेश मनाय ॥
जायके पहुँचे गढ़ माड़ौ में * जहँ पर सुन्दर लगो बजार ॥
करो तमाशा तहँ जोगिन ने * ताको कहँ लग करौं बखान ॥
डारि मोहिनी दइ हटिया माँ * सगरे मोहि गये नर नारि ॥
रूप देखिके उन योगिन को * तिरिया मोहिमोहि रहिजायँ ॥
चलिभयेजोगी तब बजार से * औ पनिघटपर कियो मुकाम॥
करो तमासा तिन पनिघटपर * सिगरी मोहि मोहि रहिजायँ॥
यादि भूलगइ घर अपने की * तिनकीसुधि बुधि गई हेराय ॥
ऊदनि नाचि रहे पनिघट पर * जोगी गावैं राग मलार ॥
रूपा बाँदी रनि कुसला की * सो पनिघट पर पहुँची आय ॥
देखि तमाशा उन जोगिन को * बाँदी मोहि २ रहि जाय ॥
डेढ़ पहर पनिघट पर हुइगौ * प्यासन मरो सकल रनिवास॥
बाँदी सोचै मन अपने माँ * नाहीं आजु बचनकी आस ॥
सोचत समुझत बाँदी चलिभइ * रंग महल में पहुँची जाय ॥

देखत रानी ने धरि डाटो * भारी बड़ी दई ललकार ॥
कै काहू से आँखि लगाई * कै कहुँ तूने किया सतार ॥
डेढ़ पहर कुँ अटा पर बीतो * जल्दी हाल कहो समुझाय ॥
दोउ कर जोरे बाँदी बोलै * रानी खता माफ हुइ जाय ॥
पाँच जोगिया ऐसे आये * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
दर्शन करिलेउ उनजोगिनके * रानी मानो बचन हमार ॥
सुरति साँवरी मुख नरियारो * नयना हिरन बरन अनुहार ॥
छोटो जोगी ऐसो नाचै * जैसे वन माँ नचैं पुछार ॥
कुशला रानी बोलन लागी * बाँदी अकिल गई हेराय ॥
जैसी सूरति मेरी बेटी की * ऐसी तीनिलोक माँ नायँ ॥
फिरिकै बाँदी बोलन लागी * रानी मानो बचन हमार ॥
कै वह उतरे स्वर्ग लोक ते * कै वह निकरे फोरि पहार ॥
हुक्म तुम्हारो जो मैं पावौं * तो जोगिनको लाउँ बुलाय ॥
सुनिकै बातैं ये रूपा की * रानी हुक्म दियो फरमाय ॥
जल्द बुलाला उन जोगिनको * अब ना राखो देर लगाय ॥
दोरी बांदी रंगमहल ते * औ कुँ अटापर पहुँची आय ॥
हाथ जोरिके बाँदी बोलै * बाबा सुनो बचन मनलाय ॥
तुमहि बुलायो महरानी ने * बाबा चलो हमारे साथ ॥
जो कछु इच्छा थी ऊदनि को * सोइ बाँदी ने कहो सुनाय ॥
तुरतै चलि भये पाँचो जोगी * औ ड्याढी पर पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरि के बाँदी बोली * औ जोगिन से कही सुनाय ॥
तनिकबेलमिजाउ तुमद्वारेपर * भीतर खबरि देउँ पहुँचाय ॥
इतनी कहिके बाँदी चलिभइ * पहुँची रानी के ढिग जाय ॥
घोड़ा पपीहा गज पचशावद * सो आल्हाकि नजरि परिजाय ॥

सोचु आइगौ तब जियरामाँ * आल्हा आँसू रहे बहाय ॥
रोवति देखौ जब आल्हा कौं * तब ऊदनि ने कही सुनाय ॥
कौन शोच जियरामाँ छायो * दादा हाल देउ बतलाय ॥
बोले आल्हा तब ऊदनि से * भैया सुनौ उदयसिंहराय ॥
गजपचशावद घोड़ा पपीहा * करिया लायोइनहिं चुराय ॥
थी असवारी मेरे बाप की * तेहिते शोच रह्यो जियछाय ॥
बोले ऊदनि तब आल्हा से * दादा हुक्कम देउ फरमाय ॥
आज्ञा दै देउ मुख अपने से * मैं घोड़ा कौं लेउँ खोलाय ॥
चारि घरी केरे अरसा माँ * लश्कर तुरत देउँ पहुँचाय ॥
डाँट बताई नर मलिखे ने * औ ऊदन से कही सुनाय ॥
चोरी करिहौ जो घोड़ा की * तमरो क्षत्री धर्म नशाय ॥
तौ लौं बाँदो दाखिल हुइ गइ * औ जोगिनकौं संगलिवाय ॥
झगरत चलिभइ रङ्गमहलकौं * दुसरे फाटक पहुँची जाय ॥
पेड़ बरगदा को जहँ ठाढ़ो * पत्थर कोल्हू गड़ो दिखाय ॥
टँगी खोपड़िया दस्सराज की * आभा बोलि २ रहिजाय ॥
हाय गोसइयाँ यह कैसी भइ * योगी हुइगे पुत्र हमार ॥
अपने मनमाँ हम जानी थी * समरथ पुत्र होहिं संसार ॥
बदला लेहैं माड़वार माँ * हमरी गया दिहैं करवाय ॥
आशा टूटि गई लरिकनकी * हरिकी इच्छा कही न जाय ॥
सुनि के बातैं ये आभा की * आल्हा छाँड़ि दई डिडकार ॥
ऊदनि स्यामरे देखन लागे * औ आल्हा तन रहे निहार ॥
कौन शोच जियरामें छायो * दद्दुआ सत्य कहो समुझाय ॥
आल्हा बोले तब ऊदनि से * भैया मेरे ऊदयसिंह राय ॥
टँगी खोपड़िया यह दादाकी * बरगद मध्य लहुरवा भाय ॥

आभा बोलति है ददुआ की * हमरी गया देहु करवाय ॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की * ऊदनि तुरत गयो नगिचाय ॥
झपटिखोपड़िया लइ बरगदते * औ हिरदे माँ लई लगाय ॥
फिरिकै बोले ऊदन बाँकुरे * ददुआकिगया दिहौं करवाय ॥
बदलो लैलेउँ मैं चाचा को * तब छाती को दाहु बुताय ॥
आभा बोली दस्सराज की * धनि २ मेरो लहुरवा बाल ॥
काम तुम्हारो पूरन हुइ है * धीरज धरो लड़ैते लाल ॥
लौटिकै बाँदी देखन लागी * औ जोगिन से कहो सुनाय ॥
क्यों तुमरोये बरगदिया ढिग * सो तुम हमैं देउ बतलाय ॥
जोगी नाहीं तुम भोगी हो * केहु राजा के राजकुमार ॥
जाय सुनैहौं नृप जम्बै को * तुमका दिहैं जान से मार ॥
तब ललकार दई मलिखे ने * औ बाँदी से कही सुनाय ॥
भूत चुरैलैं हैं कोल्हुन माँ * आभा बोलि २ रहिजाय ॥
छोटो जोगी यहु डरपति है * हम ना धरैं अगारू पायँ ॥
भूत चुरैलैं तेरे महलन माँ * सो जोगी को जायँ समाय ॥
रूपा बाँदी बोलन लागी * मैं जोगिन को लेयँ बलाय ॥
भूत चुरैलैं ये नाहीं हैं * नाहक भरम गयो तुम खाय ॥
चढ़ो करिंगा माड़वार से * गढ़ महुबे माँ पहुँचो जाय ॥
कैदि कराई दस्सराज को * बच्छराज को लियो बँधाय ॥
लूट कराय लई महलन की * अपनो कूँच दियो करवाय ॥
पत्थर कोल्हू माँ पेरवायो * खोपड़ो बरगद दई टँगाय ॥
तिनकी आभा नित बोलति है * करि २ याद महोबे क्यार ॥
आल्हाऊदनि मलिखेसुलिखे * तिनको नाम लेति हरबार ॥
बोले मलिखे तब बाँदी से * बाँदी तेरो बुरो हुइ जाय ॥

हमना जैहैं रङ्गमहल को * चाहै कोटिन करौ उपाय ॥
जो सुनि पैहैं राजा जम्बै * पत्थर कोल्हू दिहैं पेराय ॥
भली आपनी जो तुम चाहो * चुप्पहिं रंगमहल कौं जाउ ॥
जो हठ करिहौ तुम फाटकपर * देहौं श्राप भस्म हुइ जाउ ॥
बोली बाँदी हाथ जोरि के * बाबा बार बार बलि जाउँ ॥
जो कछु हुइहै तुम्हरे जियको * तौ मैं पेट मारि मरिजाउँ ॥
दियो दिलासा तब बाँदी ने * औ महलन काँ गई लिवाय ॥
करी खबरिया तब बाँदी ने * जोगी आये पँवरि दुआर ॥
पर्दा करिके कुशला बैठी * औ जोगिन घइँ रही निहार ॥
भारी डाँट दई कुशला ने * बाँदी अक्किलि गई हेराय ॥
करिया बेटा को बुलवइहौं * तेरो पेट दिहौं फरवाय ॥
ये तो बेटा केहु राजा के * ये ना योगी परैं दिखाय ॥
तब जवाब ऊदनि ने दीन्हीं * रानी सुनहु बिसेने क्यार ॥
देश हमारे सूखा परिगो * बारे मरि गये पिता हमार ॥
व्याकुल मातुनेह तजिसुतको * बेंचो हमैं जोगियन हाथ ॥
कहाँ छिपावैं हम सूरति को * दीन्हों रूप जगत के नाथ ॥
सुनिकै बातैं ये मलिखे की * रानी मानि गई सतिभाय ॥
करि प्रतीत तब कुशला रानी * फिरि जोगिनसेकही सुनाय ॥
करौ तमाशा तम जल्दी से * अब ना राखौ देर लगाय ॥
सुनिकै आज्ञा रनिकुशलाकी * आल्हा डमरू लई उठाय ॥
बेन बजाई नर मलिखे ने * ढेबा खजरी दई बजाय ॥
बजी सरङ्गी तहँ सैय्यद की * दाढ़ी रही तोंद पर छाय ॥
बजी बँसुरिया बघऊदनि की * महलन इन्द्र धाम दिखराय ॥
ठुमरी दादर औ तिल्लाना * महलन दई मोहनी डार ॥

चारि घरी भरी ऊदनि नाचे * सखियाँ मोहि२ रहि जायँ ॥
कुशला रानी बोलन लागी * बाबा सुनौ हमारी बात ॥
चारि महीना चातुर्मासा * जोगी यहैं करौ विश्राम ॥
करिया बेटा जो मेरो है * ठाढ़ो खिदमति करै तुम्हारि ॥
विजमा बेटी जो मेरी है * ठाढ़ो तुम पर करै बयारि ॥
जेहि दिन जैहो गढ़ माड़ौसे * छकड़न माया दिहौं भराय ॥
राज पाट की इच्छा होवै * तौ मैं राज देउँ दिलवाय ॥
व्याह करनकी इच्छा होवै * तुम्हरे ब्याह देउँ करवाय ॥
मलिखे बोले तब गुस्सा हुइ * औ रानी से कही सुनाय ॥
हमहैं जोगी बंगाले के * नाहीं हमैं ब्याह से काम ॥
पाप कि बातैं रानी बोलौ * नाहीं हमैं चही धन धाम ॥
रमता जोगी बहता पानी * इनकी कौन मेड़ मर्याद ॥
आजु रमानी तेरि नगरी है * भोरहिं हमैं रमानी बाट ॥
गुस्सा हुइके जोगी चलिभये * तब रानी ने कही सुनाय ॥
दोउ कर जोरे कुशला बोलै * बाबा चूक माफ हुइ जाय ॥
तनिक देर ठहरो द्वारे पर * अबहीं भीख देउँ मँगवाय ॥
कनक थार भरिसुन्दर मोती * सो रानी ने लिये मँगाय ॥
सो दै दीन्हें बैरागिन को * बाबा तीन जन्म लौं खाय ॥
एक मुठी भरि मोती लैके * ऊदनि सूँघै औ रहि जाय ॥
कौन वृक्ष के ये फल माता * सो तनि हमैं देउ बतलाय ॥
मोती सूँघै ऊदनि बाँकुड़ा * भोरे बने लहुरवा भाय ॥
देखिहकीकतियह जोगिनकी * रानी सोचि २ रहि जाय ॥
बारे २ जोगी हुइगै * अपने डारे मूड़ मुड़ाय ॥
इच्छा ईश्वर की परबल है * यामें कछु न पार बसाय ॥

कहु बृक्षके ये फल नाहीं * मोती कहत इन्है संसार ॥
इतनी सुनिके ऊदनि बाँकुड़ा * मोती सबै दिये फैलाय ॥
काँकर पाथर हमैं न चहिये * इनका लगैं चोर बटमार ॥
रानी तिलका गढ़कनउजकी * उनने दियो नौलखा हार ॥
देउ निसानी तैसी हमकाँ * तुम्हरो नाम लेय संसार ॥
कुशला रानी सोचन लागी * यामें लगो न मेरो दाम ॥
लूटि में आयो यहु महुबे ते * सो जोगिनको देउँ इनाम ॥
रानी बोलै बैरागिन ते * बाबा सुनौ हमारी बात ॥
तनिकठहरिजातुममहलनमाँ * मैं बेटी को लेउँ बोलाय ॥
करौतमाशा फिरि महलनमाँ * बेटी देखि तमाशा लेय ॥
जो खुश हुइहै बेटी बिजमाँ * हम नौलखाहार दै देयँ ॥
इतनी कहिके कुशला रानी * औ बाँदी को लियो बुलाय ॥
जल्द बुलायला तू बेटी को * अब ना राखै देर लगाय ॥
रूपा बाँदी बदलति आवै * सतखंडा पर पहुँची आय ॥
बिजमा सोवै सतखंडा पर * तुरतै बाँदी दियो जगाय ॥
हाथ जोरिकै बाँदी बोलै * मेरी खता माफ हुइ जाय ॥
तुमहिं बोलायो है माता ने * जल्दी चलो हमारे साथ ॥
पाँच जोगिया ऐसे आये * जिनको रूप न बरनो जाय ॥
करो तमशा उन महलनमाँ * तुमहू देखि तमाशा लेउ ॥
बिजमा चलि भइ सतखंडाते * पान को डब्बा लियो उठाय ॥
सिढ़ियनसिढ़ियन बेटी उतरी * औ माता ढिग पहुँची जाय ॥
पाँच पान को बीरा लैके * सो जोगिन्हकाँ दियो गहाय ॥
बीरा चाबि लियो ऊदन ने * यारौ सुनियो कान लगाय ॥
रूप देखिकै बघ ऊदनि को * बिजमाँ मोहि गई तत्काल ॥

अपनी तिरछीनजरि मिलाई * तेहि समयाको सुनौ हवाल ॥
काम बाण ऊदनि के लागो * भुइँ माँ गिरो मूर्छा खाय ॥
मूर्छा आइ गई बिजमा को * सोऊ गिरो धरणि मुरझाय ॥
देखि हकीकति यहदोउन की * रानी अग्नि ज्वाल हुइ जाय ॥
रूपदेखि के मेरि बेटी को * जोगी गिरो मूर्छा खाय ॥
जोगी नाहीं ये भोगी हैं * ये राजन के राजकुमार ॥
ये हैं छलिया काहू देश के * इन छल करो हमारे साथ ॥
जल्दी बाँदो जा ड्योढी पर * औ करिया को लाउ बुलाय ॥
पेट फरैहौं भुस भरवैहौं * इनके मूड़ लिहौं कटवाय ॥
जोगी नाहीं ये छलिया हैं * पत्थर कोल्हू दिहौं पेराय ॥
क्रोधित हुइके नरमलिखे ने * तब रानी से कही सुनाय ॥
जो मरिजैहै छोटो जोगी * महलन आगी दिहौं लगाय ॥
शाप दै दिहौं मैं महलन माँ * सारो राज भंग हुइजाय ॥
धोखे न रहियो बैरागिनके * हम जोगी हैं बुरी बलाय ॥
सुनिकै काँपी कुशला रानी * औ जोगिन से कहो सुनाय ॥
काहे जोगी गिरो धरणिमें * साँचो हाल कहो समुझाय ॥
बात बनाई तब ढेबा ने * औ कुशला से कही बुझाय ॥
परी तमाखू थी बीरा में * सो बेटी ने दियो खवाय ॥
पीक लागि गइ है जोगीको * तासे गिरो धरनि मुर्झाय ॥
कुशला पूँछै फिरि बिजमांसे * बेटी हाल देउ बतलाय ॥
काहे मुर्छित गिरी धरणि में * मोसे सत्य कहो समुझाय ॥
बिजमाँ बोली तब माता से * देखो रूप जोगियन क्यार ॥
सोच छाय गो मेरे जियरामें * हा यह कहा करी करतार ॥
बारि उमरिके सब लरिका हैं * तिनका जोगी दियो बनाय ॥

पाँवरपटिगयो ममसिढियनसे * हम गिरि परी धरणि महराय ॥
बातैं सुनिके ये बिजमाँ की * फिरि कुशलाने कही सुनाय ॥
करौ तमाशा अब बाबा जी * बेटीको नाच देउ दिखलाय ॥
इतनी सुनिकेफिरिजोगिनने * अपने बाजा दिये बजाय ॥
राग रागिनी गावन लागे * कछु तारीफ करी ना जाय ॥
तान मरोरा ऊदनि गावैं * अँगुरिन भाव बताय बताय ॥
जितनी तिरियाँ थीं महलनमें * सिगरी मोहि २ रहि जायँ ॥
मोहित हुइगै कुशला रानी * गरको दियो नौलखा हार ॥
चलिभे जोगी तब महलनसे * जिनका चलत न लागीबार ॥
चलिभइबिजमाफिरिहुअँनासे * औ खिरकी पर पहुँची जाय॥
जोगी आये जब महलन से * खिरकी निकट पहूँचे आय ॥
बिजमाँ बाहँपकरि ऊदनि की * सतखंडा पर गई लिवाय ॥
रतन जड़ाऊ पलँग बिछो है * तापर ऊदनि दये बिठाय ॥
बोली बिजमाँ तब ऊदनि से * ओ महुबे के राजकुमार ॥
हाल तुम्हारो मैं जानति हौं * तुम छल कीन्हीं महलमझार ॥
नाम तुम्हारो उदयसिंह है * तुम आल्हा के छोटे भाय ॥
अबहिं बुलैहौं मैं करियाको * तुम्हरो मूड़ लिहैं कटवाय ॥
तड़पि के ऊदनि बोलन लागे * सुनु जम्बे को राजकुमारि ॥
कितनेउ बीर सुरति ऊदनिके * कितनेउ सूरति होयँ हमारि ॥
धोखा खायो है सूरति की * मन अपने माँ करौ बिचार ॥
कहाँ पै देखो तुम ऊदनि को * सो सब कहिये ब्योरेवार ॥
बोली बिजैसिन तब ऊदनिसे * सुनिये सत्य बचन नरनाह ॥
अभई बेटा जो माहिल को * ताको सिरउँज भयो बिवाह ॥
पाग बैजनी शिर पर बाँधे * तुम बरात में गये सिधाय ॥

न्योते गई तहाँ हमहूँ रहुँ * देखो तुमहिं उदयसिंह राय ॥
मड़ये भीतर हम ठाढ़ी थीं * तुमहूँ गये तहाँ नगिचाय ॥
कोहनी मारी तुम छाती में * चोली टूक २ हुइ जाय ॥
रूप देखि के तुम्हरो मैंने * मन अपने माँ कियो बिचार ॥
यातो व्याह करौं तुम्हरे सँग * नाहित रहौं जन्मभरि क्वाँरि ॥
सुरति साँवरी यह स्वामी की * हमरे नैनन गई समाय ॥
बहुतक बरतकिये तुम्हरे हित * वहु दिन आज पहूँचो आय ॥
पूर्ण तपस्या मेरो हुइ गइ * स्वामो सुनौ वचन मनलाय ॥
वस्तु आपनी ना पहिचानौ * कैसे सूरति जाय भुलाय ॥
हँसिके ऊदनि बोलन लागे * रानी वचन करौ परमान ॥
अब हम जानी अपने मनमाँ * तुमने हमें लियो पहिचान ॥
तुम्हरे कारण मूँड़ मुड़ायो * माड़ौ अलख जगाई आय ॥
बोली बिजमाँ तब ऊदनि से * अबहीं भाँवरि लेउ डराय ॥
ऊदनि बोले तव बिजमाँ से * रानी सुनो हमारी बात ॥
चोरी चोरा व्याह न करिहैं * नाहीं चोर धरैहैं नाम ॥
इच्छा होवै तुम्हें ब्याह को * साँचो हाल देउ वतलाय ॥
बदला लै लेउँ मैं दादा को * तबहीं व्याह लेहुँ करवाय ॥
बोली बिजमाँ तब ऊदनि से * स्वामी गंगा लेउ उठाय ॥
तब प्रतीति मेरे मन आवै * साँचो हाल देउँ वतलाय ॥
खैंचि सिरोही लइ कम्मर से * खाई कसम उदैसिंह राय ॥
बिना बियाहे जो तोहिं लौटों * तौ मोहि लौटि भगौतोखायँ ॥
सुनिके बातैं ये ऊदनि की * बिजमाँ बहुत खुशी हुइजाय ॥
हाल बतायो सब माड़ौ को * औ ऊदनि से कहै बुझाय ॥
किला कठिन है लोहागढ़को * जहँ पर तपैं बघेले राय ॥

सुरङ्ग खोदावो तुम नीचे से * औ बारूद देउ भरवाय ॥
बिना सुरंग के सो नहि टूटै * चाहे कोटिन करौ उपाय ॥
किला दूसरो है झाँसी गढ़ * जहँ पर रहै करिंगा राय ॥
बारहदरी कठिन बैठक है * जहँ पर सूरज भाइ हमार ॥
हाल बतायो मैं सब साँचो * सुनिये प्राणनाथ भरतार ॥
तोप लगावो तुम बबुरी बन * जासों सबै काम बन जाय ॥
ऊदनि बोले तब बिजमाँ से * रानी हुक्म देउ फरमाय ॥
बहुत देर महलनमाँ हुइ गइ * द्वारे खड़े बनाफर राय ॥
सुनिके बातैं ये ऊदनि की * तब बिजमाँ ने कही सुनाय ॥
करौं रसोई सत खंडा पर * स्वामी जेयँ लेउ ज्यौनार ॥
शयनकरौतुम रतन पलंगपर * औ मैं दाबों चरण तुम्हार ॥
बोले ऊदनि तब बिजमाँ से * रानी यह हुइबे को नायँ ॥
क्वाँरे भोजन हम ना जेवैं * क्वाँरी सेज न धारैं पायँ ॥
हाथ नडारैं हम तिरियापर * हमरो क्षत्री धर्म नशाय ॥
बदलो लैलेउँ जब दादा को * तब छाती को दाहु बुताय ॥
इतनी कहिकेऊदनि चलिभये * औ द्वारे पर पहुँचे आय ॥
आल्हा बोले नर मलिखे से * भैया करिहौ कौन उपाय ॥
महलन चोरी भई हमारी * यहँ वहि गये लहुरवा भाय ॥
कैसे जैहैं हम महुबे को * का मल्हना से कहिहौं जाय ॥
तौलौं ऊदनि दाखिल हुइगे * आल्हा बहुत खुशी हुइ जाय ॥
फिरिकै आल्हा पूछन लागे * भैया हाल देउ बतलाय ॥
कैसे देर लगी अंटा पर * जल्दी हाल देउ बतलाय ॥
बोले ऊदनि तब आल्हा से * भैया शारद भई सहाय ॥
बिजमा बेटी जो जम्बै की * सारो भेद दियो बतलाय ॥

वह पहिचानि गई थी हमकों * हमसे गङ्गा लई कराय ॥
ब्याह करनको हम कहिआये * वाने भेद दियो बतलाय ॥
सुनिके बातैं ये ऊदनि की * तुरतै आल्हा उठे रिसाय ॥
ब्याह न हुइहै यहँ बैरी घर * चाहै कोटि करो उपचार ॥
जब सुधि करिहै भाइ बापकी * सोवत तुमहिं डारि है मार ॥
मलिखे बोले तब आल्हा से * काहे बृथा बकत महराज ॥
बदलो लीहैं केहु यतन ते * नाहीं हमहिं ब्याहते काज ॥
जोगीचलिभये करतबतकही * लोहागढ में पहुँचे जाय ॥
फौज कटोली भारो तोपैं * देखो सबै बनाफर राय ॥
पनियाँ सोते के खंदक हैं * तोपैं चढ़ी रहैं दिन रात ॥
ऊँचो फाटक बनो सोहावन * देखत पाग भूमि गिरिजात ॥
आल्हा सोचैं अपने मनमाँ * भारो किला बनो दिखलाय ॥
कैसे दावँ मिलै दादा को * रहिरहि मेरो प्राण घबराय ॥
तब समुझावैं ऊदनि बाँकुड़ा * दादा धीर धरौ मन माहिं ॥
राम बनावै तो बनि जावै * बिगरी बनत बनत बनिजाय ॥
मरजी होइहैं जो ईश्वर की * तौ लै लिहैं बाप के दायँ ॥
धीरज राखो तनि जियरा में * जासे सबै काम बनि जायँ ॥
जोगी पहुँचि गये फाटक पर * दरबानी से कही सुनाय ॥
भिच्छा मगिहैं हम राजा से * जल्दी फाटक देउ खुलाय ॥
तब दरबानी पूँछन लागो * बाबा हाल देउ बतलाय ॥
कहाँ ते आये औ कहँ जैहौ * साँचो भेद कहौ समुझाय ॥
हम हैं जोगी बंगाले के * आगे हरद्वार को जायँ ॥
हालु जानि के दरमानी ने * तुरतै फाटक दियो खुलाय ॥
जोगी चलिभये तबफाटक ते * औ बंगला ढिग पहुँचे जाय ॥

अलखअलखकहि जोगी टेरैं * बँगला बीच गई आवाज ॥
कान भनक जम्बैके परिगइ * बोले तुरत गरीब नेवाज ॥
हुक्म दै दियो महराजा ने * इन जोगिनको लाउ बुलाय ॥
यक हरिकारा गौ जल्दी से * औ जोगिनसे कही सुनाय ॥
तुमहि बुलायो महराजा ने * जल्दी चलै चलौ महराज ॥
नाच दिखाय देउ राजा को * तुम्हरे सिद्धि होहिं सबकाज ॥
इतनी सुनतै जोगी चलिभे * औ बँगला ढिग पहुँचे आय॥
जाय सामुहें नृप जम्बै के * बायें करसे करी सलाम ॥
क्रोधित हुइ के नृप जम्बै ने * हरिकारा से कहो सुनाय ॥
जल्द निकारो इन जोगिनको * हैं बेअदब जोगिया राय ॥
बायें करसे करी बन्दगी * इनका जल्दी देउ हटाय ॥
तबहीं ऊदनि बोलन लागे * राजा मनमें करौ विचार ॥
दहिने हाथ से माला फेरैं * नित उठि लेयँ रामको नाम ॥
दहिने कर से करैं बन्दगी * हमरो जोग भंग हुइ जाय ॥
इतनी सुनिके राजा बोले * साँची कहत जोगिया राय ॥
सच्चे गुरुके तुम चेला हौ * जोगिउ साँचौ ज्ञान तुम्हार ॥
कौन देशके तुम जोगी हौ * तुम्हरे कहा गुरू को नाम ॥
बोले ऊदनि फिरि राजा से * है गोरखपुर कुटी हमार ॥
हमहैं जोगी बंगाले के * श्रीगोरखजी गुरू हमार ॥
बुड़की लैहैं हरद्वारकी * आगे हिंगलाज को जायँ ॥
दर्शन करिहैं जगदम्बे के * साँची तुमहिं दई बतलाय ॥
फिरिके जम्बै पूछन लागे * औ जोगिन से कही सुनाय ॥
जड़े जवाहिर हैं गुदरिन माँ * हाथन कड़ा सोबरन क्यार ॥
सो कहँ पाये हैं तुम जोगिउ * साँचो हाल कहौ समुझाय ॥

बोले मलिखे तब राजा से * तुम सुनि लेउ बघेले राय ॥
एक समय कनवज हम पहुँचे * नृप जैचन्द केर दरबार ॥
करो तमाशा हम बँगला में * मोहित भये सकल सरदार ॥
बहुत खुशी भये राजा जैचन्द * हाथन कड़ा दिये डरवाय ॥
पाँचो गुदरी उन बनवाई * हीरालाल दिये जड़वाय ॥
फिरिके जंबै पूछन लागो * एकु अँदेशा देउ मिटाय ॥
पाग बैजनी जो माथन पर * सबके हमैं चिन्ह दिखलाय ॥
ऊदनि बोले तब जम्बै से * राजा बचन सुनौ मनलाय ॥
कूच कराया हम कनवज से * देखा नगर महोबा जाय ॥
क्याछवि बरनौं तेहिनगरीकी * मुनि मन मोहि २ रहिजाय ॥
इन्द्र धाम सम महुबे दीखै * जहँ पर बसैं चन्देले राय ॥
पारस पत्थर जिनके घरमाँ * लोहा छुवत सोन हुइ जाय ॥
करो तमासा हम बँगला माँ * मोहित भये चन्देले राय ॥
सोने कि बंसी यह उन दीन्हीं * मानहु बचन बघेले राय ॥
आल्हा ऊदन दुइ भैया हैं * जिनकी बेड़ि बहै तरवारि ॥
मरन जियनको संशय नाहीं * वोइ दिन राति गहैं हथियार॥
देखि तमासा मोहित हुइगै * चीरा कलँगी दई मढ़ाय ॥
सागर डेरा तिन गड़वाये * चातुर मास करो बिसराम ॥
पाग बैजनी शिर पर बाँधो * सोई चिन्ह बनो अभिराम ॥
सुनिके बातैं ये जोगिन की * मानो सत्य बघेले राय ॥
नाच दिखाय देउ जल्दी से * अब ना राखो देर लगाय ॥
सुनिके बातैं ये राजा की * आल्हा डमरू लई उठाय ॥
बजी सारंगी तब सैयद की * ढेबा खँजरी चले बजाय ॥
बजो इकतारा नर मलिखे को * ऊदनि बँसुरी दई बजाय ॥

राग रागिनी गावन लागे * कछु तारीफ करी ना जाय ॥
नचै बेंदुला को चदवैया * जैसे बनमें नचै पुछारि ॥
तान मरोरा ऊदनि गाई * बँगला दई मोहिनी डारि ॥
जितने च्चत्री थे बँगला में * सो सब मोहि २ रहिजायँ ॥
जम्बै मोहे करिया मोहे * बंगला सून सान हुइ जाय ॥
चन्दन चौकी नृपति मँगाई * सो जोगिन काँ दई डराय ॥
बैठो जोगिउ तुम चौकी पर * अपनो हाल कहो समुझाय ॥
जो कछु इच्छा तुम्हरी होवै * सोऊ हमहि देउ बतलाय ॥
बास करो कछु दिन माड़ौमाँ * तुम्हरो कुटी देउँ बनवाय ॥
जो कछु इच्छा तुम्हरी होवै * सो सब पूरन करौं बनाय ॥
बोले ऊदनि तब जम्बै से * सुनिये नृपति बघेले राय ॥
आजु रमानी तेरि नगरी है * भोरहि हमहिं रमानी बाट ॥
रमता जोगी बहता पानी * इनके मन आवै तहँ जायँ ॥
इच्छा एक हमारी राजन * ताको पूरी देहु कराय ॥
लाखा पातुर जो तुम्हरी है * ताको नाच देहु दिखराय ॥
सुनी खबरिया हम काशी में * तब यह नगर मझायोआय ॥
बात मानिके नृप जम्बै ने * तुरतै पातर लई बुलाय ॥
सजिके पातुर तहँ ठाढ़ी भइ * मानहु इन्द्र अप्सरा नारि ॥
बजी सरंगी वा बँगला में * औ गति लगी मंजीरनक्यार ॥
राग रागिनी पातुर गावै * सुन्दर बचन सुनाय सुनाय ॥
ठुमुकि २ बंगला में नाचै * अँगुरिन भाव बताय बताय ॥
क्यागति बरनौंयहि समयाकी * जोगी बहुत खुशी हुइजाय ॥
नाचति २ पातुर आई * औ जोगिनतिरपहुँचीआय ॥
हार नौलखा ऊदन चाँकुड़ा * तुरतै करमें दिया गहाय ॥

तीनि घरी केरे अरसा में * औ जोगिन को दई पुकार ॥
तुमहि बुलायो है राजा ने * जल्दी लौटि चलौ महराज ॥
बोले मलिखे तब करिया से * मेरे बचन सुनौ नरराज ॥
हुकुम नहीं है गुरु देव को * जो हम धरें पिछारू पाँव ॥
आज्ञा टालैं जो गुरुवर की * हमरो जोग भंग हुइ जाय ॥
सुनिके बातें ये जोगिन की * करिया अग्नि ज्वाल हुइ जाय ॥
तड़पिके करिया बोलन लागे * आगे धरौ न पाँव बढ़ाय ॥
चुप्पे चले चलौ बँगला को * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
कही हमारी जो ना मनिहौ * मारौं शीश भूमि गिरि जाय ॥
सुनिके बातें ये करिया की * मलिखे खैंचि लई तरवार ॥
मलिखे खैंचति ऊदनि खैंची * ढेबा खैंचि लई तरवार ॥
सैयद खैंची आल्हा खैंची * औ करिया को घेरो जाय ॥
धोखे न रहियो बैरागिन के * मारो राज भंग हुइ जाय ॥
देखि हकीकति यह पाँचौ की * करिया मनमें करै बिचार ॥
ये तौ लरिका हैं क्षत्रिन के * हैं महुवे के राजकुमार ॥
मारि चढ़ैहौं जो यहि बेरा * मेरो आधा वचन को नायँ ॥
उनहैं पायन करिया लौटो * औ बँगला में पहुँचो आय ॥
दोउ कर जोरे करिया बोले * दादा खता माफ हुइ जाय ॥
क्यागति बरनौं उन जोगि [illegible] * मोते हाल कहो ना जाय ॥
धोखे न रहियो बैरा[illegible] के * वे महुवे के, राजकुमार ॥
क्रोधित हुइके उन [illegible] * हम पर खैंचि लई तरवार ॥
सुनि के [illegible] ये [illegible] * सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
जल्दी जावो तुम [illegible] * मारो फौज लेउ सजवाय ॥
आये महोबिया हैं [illegible] * सबकी कटा देउ करवाय ॥

सुनिके आज्ञा नृप जम्बै की * सूरज चलिभये माथ नवाय ॥
जायके पहुँचे हैं फौजन माँ * अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
हियाँ कि बातैं हियनै छोड़ो * अब आगे को सुनौ हवाल ॥
पाँचौ जोगी डगरति आये * लश्कर पहुँचि गये ततकाल ॥
आवत देखो जब जोगिनको * देवै बहुत खुशी हुइ जाय ॥
थार सोवरन को मँगवायो * चौमुख दियना लियो बराय ॥
करी आरती तब देवै ने * सब जोगिन पर धरी उतारि ॥
औ फिरि देवै पूछन लागी * बेटा मेरे प्राण अधार ॥
हाल बतावो तुम माड़ो को * मेरो चित्त बहुत अकुलाय ॥
ऊदनि बोले तब माता से * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
घर घर माड़ो माँ हम घूमे * पहुँचे रङ्गमहल माँ जाय ॥
हार नौलखा कुशला दीन्हों * हम लाखा को दओ गहाय ॥
लोहा गढ़ झाँसी गढ़ घूमे * जहँ पर फौज बघेले क्यार ॥
भेद लै आये हम माड़ो की * माता मानौ बचन हमार ॥
एक तकरार भई करिया से * सो सम्मुख ते गयो बराय ॥
खबरिपहुँचिगइ नृप जम्बैको * आये यहाँ बनाफर राय ॥
सुनिके देवै बहुत खुशी भइ * तीवा फेरो पीठि पर हाथ ॥
ऊदनि बोले फिरि ढेबा से * भैय्या चलौ हमारे साथ ॥
पाँजि देखि आवौ नद्दी की * जासे सबै काम बनि जाय ॥
ऊदनि ढेबा दोनौं चलि भये * रनि देवै को शीश नवाय ॥
नदी नर्मदा की घाटिन पर * पहुँचे जाय उदैसिह राय ॥
ऊदनि पूछैं फिरि धोबिन से * भैया पाँजि देउ बतलाय ॥
बोले धोबी तब ऊदनि से * बाबा सुनो हमारी बात ॥
सात खेत पूरब दिशि ह्वटिकै * चुप्पै उतर जाउ महराज ॥

हार देखिके लाखापातुर * मनमें गई सनाका खाय ॥
सूरति देखी जब सैयद की * धक्का लगे करेजे जाय ॥
हाल जानि गइ लाखा पातुर * ये महुबे के राजकुमार ॥
बदलो लैहैं दस्सराज को * धारो भेष जोगियन क्यार ॥
करो इशारा तब लाखा ने * जल्दी कूँच जाउ करवाय ॥
जानि जो पैहैं राजा जंबै * सबको कैदि लिहैं करवाय ॥
समुझि इशारा गै सब जोगी * ऊदनि लाखै कही सुनाय ॥
बदलो लै लेउँ मैं दादा को * तब छाती को डाहु बुताय ॥
बारह बरस रहो माड़ौ माँ * अब महुबे काँ होउ तयार ॥
इतनी कहिके जोगी चलिभये * फाटक निकरि गये वा पार ॥
नाचै पातुर वा बँगला में * सुन्दर भाव बताय बताय ॥
लागत पवन उड़ो जब अंचल * गरे माँ हरवा परो दिखाय ॥
हार निगाह परी जम्बै की * तब पातुर से कही सुनाय ॥
कहाँ से लाई यह हरवा हो * साँची हमैं देउ बतलाय ॥
बोली पातुर तब जम्बै से * तुम सुनिलेउ बघेले राय ॥
बारह बरसैं भईं माड़ौ माँ * कबहुँ न मिली हमैं बकसीस ॥
जोगी आये राह चलन्तू * सो दै गये नौलखा हार ॥
सुनिके बातैं ये पातुर की * जंबै गये सनाका खाय ॥
जम्बै बोले तब करिया से * बेटा मेरे प्राण अधार ॥
जल्दी जावो तुम महलन का * औ लै आवौ नौलखा हार ॥
चलिभो करिया तब बँगला से * औ महलन में पहुँचे जाय ॥
बैठी रानी जहँ माड़ौ की * पहुँचो तहाँ करिगा राय ॥
आवत देखो जब करिया को * कुशला उठी भरहरा खाय ॥
लई बिजनियाँ कर फूलनकी * औ करिया पर करै बयारि ॥

धीरे २ कुशला पूछै * बेटा मेरे प्राण अधार ॥
कौन काज हित तुम आये हौ * बेटा हाल कहौ समुझाय ॥
हाथ जोरिके करिया बोलो * माता अरज सुनौ चितलाय ॥
हमहिं पठाओ है दादा ने * लावौ जाय नौलखा हार ॥
सो मँगवाय देउ जल्दी से * गुजरै घरी २ पर वार ॥
करो बहाना तब करिया से * औ कुशला ने कही सुनाय ॥
टूटो हार परो पटवा घर * बेटा हार मिलन को नाय ॥
बोलो करिया फिरि कुशला से * टूटो हार देउ मँगवाय ॥
तब घबरानी कुशला रानी * मनमें सोचि २ रहि जाय ॥
हाल बतायो सब करिया को * बेटा हाल कहो ना जाय ॥
पाँच जोगिया ऐसे आये * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
करो तमाशा उन महलन माँ * कुछ तारीफ करो ना जाय ॥
हार नौलखा जोगिन माँगो * सो हम उनका दिहों गहाय ॥
यह अनहोनी हमसे हुइगइ * समभति काटि दई भगवान ॥
कछु उपाय तेहिको अबनाहीं * बेटा वचन करौ परमान ॥
सुनिकै बातैं ये कुशला की * करिया गये सनाका खाय ॥
जल्दी चलिभौ रंग महल ते * औ जंबै तिर पहुँचो आय ॥
हाल बतायो सब महलन को * जेहि विधि गया नौलखाहार ॥
बोले जंबै तब करिया से * बेटा मेरे प्राण अधार ॥
बाँधि लै आवो तुम जोगिनका * अबहीं तुरत होउ तैयार ॥
जोगी नाहीं वे भोगी हैं * केहु राजन के राजकुमार ॥
घर घर झाड़ो उन पुजवाई * सारी लश्कर लियो मँभाय ॥
छापा मारो रङ्गमहल लों * सारो भेद लियो उन आय ॥
चलिभयो करिया तब बँगला से * अलँगा परी ढाल तलवार ॥

भाला सोहै नागदौनि को * बायें सिहिनि मूठि कटार ॥
छप्पन छुरियाँ कम्मर सोहैं * कलहा दुइ बाँधो तरवारि ॥
घोड़ा सुर्खा को सजवायो * अनुपी फाँदि भयो असवार ॥
दहिनी सजिगे हैं टोडरमल * घोड़ा सब्जा पर असवार ॥
लश्कर चलि भयो है माड़ो ते * डंका होत गोल में जाय ॥
एक पहर को अरसा गुजरो * समर भूमि में पहुँचे आय ॥
राम बनावैं तो बनि जावे * बिगरो बनत २ बनिजाय ॥
हियाँ की बातें हियनै छोड़ो * अब आगे की कहौं सुनाय ॥
सुनी खबरिया वघऊदनि ने * आई फौज बघेले क्यार ॥
घोड़ा बेंदुला को मँगवायो * ऊदनि फाँदि भयो असवार ॥
घोड़ा मनुरथा त्यार खड़ो थो * ढेबा तुरत भयो असवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * फौजैं चलीं बनाफर क्यार ॥
चारि घरी को अरसा गुजरी * सब नद्दो पर पहुँचे आय ॥
एक घरी केरे अरसा में * लश्कर नदी पार हुइ जाय ॥
इतते फौजैं हैं ऊदनि को * उतते फौज बघेले क्यार ॥
दोनों फौजन के अन्तर माँ * रहि गयो बीस खेत मैदान ॥
घोड़ा बेंदुला को धरि दाबै * रानी देव कुँवरि को लाल ॥
जायके पहुँचो है अनुपी ढिग * जो जम्बै को लड़ैतो लाल ॥
सन्मुख देखो जब ऊदनि को * तब अनुपी से कहो सुनाय ॥
कौन देशते तुम चढ़िआये * काहे धुरो दबाओ आय ॥
काहे बबुरी बन कटवायो * साँची हमैं देउ बतलाय ॥
बोले ऊदनि तब अनुपी से * ठाकुर सुनियो कान लगाय ॥
नगर महोबा यक बस्तो है * जहँ पर बसैं चन्देले राय ॥
ऊदनि नाम हमारो कहिये * हम आल्हा के छोटे भाय ॥
हम कटवायो है बबुरी बन * हमने धुरो दबायो आय ॥

माड़ौं दाँव लिहैं दादा को * साँची तुमहिं दई बतलाय ॥
सुनिके बातैं ये ऊदनि की * अनुपी अग्निज्वाल हुइजाय ॥
चुप्पै लौटि जाउ महुबे को * काहे काल रह्यो नित्राय ॥
बोले ऊदनि तब अनुपी से * ठाकुर सुनौ हमारी बात ॥
घोड़ा पपीहा लाखा पातुर * गजपचशावद देउ मँगाय ॥
हार नौलखा देवै वारो * लावौ शीश करिङ्गा क्यार ॥
डंड बाँधि देव नृप जम्बैकी * डोला देउ बिजैसिन क्यार ॥
तौ हम लौटि जायँ महुबे को * नातरु हम लौटन को नायँ ॥
सुनि के बातैं ये ऊदनि की * अनुपी अग्निज्वाल हुइ जाय ॥
हुक्म दै दियो टोंडरमल ने * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
मारि भगावो इन पाजिनको * सबकी कटा देउ करवाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर * थैली हाथ बरूदन क्यार ॥
दगी सलामी दोनौं दल में * कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
छाय अँधेरिया गइ दोनौं दल * नाहीं सूझै अपन बिरान ॥
अररर अररर गोला छूटै * सर सर छुटैं धनुष से बान ॥
सनसन सनसन गोली छूटै * कह २ करैं अगिनियाँबान ॥
दोनौं फौजन के अन्तर माँ * भारी युद्ध होय घमसान ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ॥
मास उड़ाय गये चुटकिन के * तोपैं लाल बरन हुइ जायँ ॥
बंद लड़ाई भइ तोपन की * रहि गयो चारि कदम मैदान ॥
भाला छूटै नाग दौनि के * धमकै साँगि दनाक दनाक ॥
छूटैं पिचिक्का जहँ लोहुनके * औ बुबुकारिन बोलै घाव ॥
खैंचि सिरोही लइ क्षत्रिन ने * घूमिके चलन लगी तरवारि ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥

दोनौं चलि भये तब पूरब को * पहुँचे मात खेत पर जाय ॥
नदी मझाई तहँ दोउन ने * सो कम्मर से परी दिखाय ॥
लग्गी गाड़ि दई पारिन पर * अपना चीन्हा दओ बनाय ॥
ध्वजा बाँधिके उन बाँसनमाँ * दोनौं लौटि परे हरखाय ॥
चारि घरी केरे अरसा में * अपने लशकर पहुँचे आय ॥
जहाँ पै तंबू थो आल्हा को * ऊदनि तहाँ पहूँचो जाय ॥
हाथ जोरिके ऊदनि बोले * दादा मंडरीक अवतार ॥
नदी नर्मदा जहँ थोरी है * तहँ पर लेहैं फौज उतारि ॥
पाँजि देखि के हम नदी की * अपनो चिन्हा दओ बनाय ॥
राह न सूझति है जङ्गल में * ताको अब कछु करहु उपाय ॥
बारह कोसन लौं बबुरी बन * चहुँ दिशि रही अँधेरिया छाय ॥
पैठ पियादे की नाहीं है * तहँ असवार कौन विधि जायँ ॥
इतनी बात सुनी आल्हा ने * तुरतै हुक्म दियो फरमाय ॥
चन्दन बढ़ई को बुलवावो * सब बबुरी बन देहु कटाय ॥
इतनी सुनिके बघऊदनि ने * चन्दन बढ़ई लियो बोलाय ॥
हुक्म दै दियो है ऊदनि ने * सब बबुरी बन देहु कटाय ॥
इतनीसुनिकेचन्दनचलिभयो * नौसै बढ़ई सङ्ग लिवाय ॥
बजै कुल्हाड़ा बबुरी बन पर * धरती पेड़ गिरैं अरराय ॥
सैय्यद बोले तब ऊदनि से * बढ़ई देहैं देर लगाय ॥
जल्दी पहुँचौ सब जङ्गल माँ * चारि घरीमाँ देउ गिराय ॥
सुनिके बातैं ये सैय्यद की * सब उठि परे महुबिया ज्वान ॥
कोई गड़ासी कोई तेगा * कोई लीन्हे हाथ कृपान ॥
काटन लागे बबरी बनको * लै बजरङ्गबली को नाम ॥
कहुँ २ छाँड़े रूख हरियरे * घैहा करिहैं जहँ बिसराम ॥

डेढ़ पहर केरे अरसा माँ * सब बनकाटि करो खरियान ॥
खबरि सुनाई तुनिआल्हाको * जङ्गल काटि करौ मैदान ॥
बिच २ छाँड़े रूख हरियरे * घैहा जहाँ करैं बिसराम ॥

अथ अनुपी व टोंडरमल की लड़ाई

आगे युद्ध लिखौं अनुपीको * मनमें सुमिरि लषणसियराम ॥
सुमिरन करिकेशिवशंकरको * औ पुनि सुमिरि संकठामाय ॥
युद्ध लिखौंअनुपी टोंडर को * यारो सुनियो कान लगाय ॥
यह हरिकारा दौरति आयो * बारहदरी पहूँचो आय ॥
लगी कचेहरीजहँ अनुपीकी * शोभा कछू कही ना जाय ॥
पाँच कदम ते करी बन्दगी * धामन हाथ जोरि शिरनाय ॥
कही हकीकत बबुरी बनकी * बँगला सुन्नसान हुइ जाय ॥
आये महोबिया महुबे वाले * सब बबुरी बन दियो कटाय॥
इतनी सुनिकेअनुपी जरिगये * नैनन रही लालरी छाय ॥
तुरत नगड़चीको बोलवायो * औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
बजै नगाड़ा मेरे लश्कर में * सगरी फौज होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर माँ * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले नगाड़ा भइ जिनबन्दी * दूसर में बाँधि लीन्ह हथियार॥
तिसरे नगाड़ा के बाजतखन * क्षत्री चले गनेश मनाय ॥
कोइ घोड़न परकोइहाथिनपर * कोइ २ चढ़े पालकिनजाय ॥
जितनी तोपैं टोंडरपुर की * सो फौजन के चलीं अगार ॥
तोप के पीछे पायँ पियादे * ताके पाछे हैं असवार ॥
राजा अनुपी साजन लागो * जो जंबै को राजकुमार ॥

धर्म नहीं है ये क्षत्रिन के * रण चढ़ि धरैं पिछारू पाँव ॥
चोट आपनी तिसरिउ करिलेउ * नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ ॥
क्रोधित हुइके तब अनुपो ने * अपनी खींचि लई तलवार ॥
करो झड़ाका उदैसिह पर * बायें उठी गैंड़ की ढाल ॥
तीनि सिरोही हनि २ मारी * खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
तड़पिके ऊदन बोलन लागे * सम्हरौ पूत बघेले क्यार ॥
खैंचि सिरोही लइ ऊदनि ने * मनमें सुमिरि अंजनी लाल ॥
करो झड़ाका जब अनुपीपर * बायें उठो गैंड़ की ढाल ॥
ढाल फाटिगइ गद्दी कटि गइ * अनुपी गिरे भूमि भहराय ॥
देखि हकीकति टोडरमल ने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
सन्मुख पहुँचे बघऊदनि के * तब टोंडर ने कही सुनाय ॥
सम्हरौ ठाकुर तुम घोड़ा पर * तुम्हरो प्राण बचन को नायँ ॥
गुर्ज चलायो टोंडरमल ने * ऊदनि घोड़ा गये बढ़ाय ॥
खाली वार गयो टोंडर को * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
गुस्सा हुइके टोंडर मल ने * अपनी खैंचि लई तरवार ॥
वार कियो जबहीं ऊदनि पर * ऊदनि लीन्हों चोट बचाय ॥
तीनि सिरोही टोंडर मारी * ऊदनि के नहिं आयो घाव ॥
टूटि सिरोही गइ टोंडर की * खालो हाथ मूठि रहिजाय ॥
ढाल कि ओझड़ ऊदनि मारी * टोंडर गिरे भूमि भहराय ॥
डंड बाँधि के तब टोंडर को * सो लश्कर माँ दियो पठाय ॥
बँधुआ लैके ढेबा चलिभये * सो बबुरी बन पहुँचे जाय ॥
ऊदनि बारहदरी पहूँचे * अपनो मुर्चा दियो लगाय ॥

अथ सूरजमल की लड़ाई

आदिसरस्वतिको सुमिरणकरि * सुमिरौं बहुरि कालिकामाय ॥

लिखौं लड़ाई सूरजमल की * जो जम्बै को राजकुमार ॥
लगी कचेहरी बारहदारि में * भारी लागि रहा दरबार ॥
यक हरिकारा दौरति आवै * सो बँगला में पहुँचो आय ॥
हाल बतायो सब लश्कर को * जेहि विधि लड़ा अनूपीराय ॥
ऊदनि बाँधि लियो टोंडर को * सो लश्कर को दियो पठाय ॥
सुनिके बातैं हरिकारा की * सूरज अग्नि ज्वाल हुइजाय ॥
हुक्म दै दियो सूरजमल ने * सारी फौज होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर माँ * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
हाथि चढ़ैया हाथिन चढ़िगये * बाँके घोड़न के असवार ॥
पैदल क्षत्री जितने रहि गये * तिनहूँ बाँधि लिये हथियार ॥
बड़ि २ तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
सो जोतवाय दई आगे को * पीछे दीन्हीं फौज चढ़ाय ॥
कोईनालकिन कोई पालकिन * कोई गजरथ पर असवार ॥
खर खर खर खर जे रथ दौरैं * रब्बा चलैं पवन की चाल ॥
पहिया ढुरकै उन तोपन के * कड़कति जायँ सँदुरिया बान ॥
हरियल घोड़ा त्यार खड़ो थो * तापर फाँदि भयो असवार ॥
बोले सूरज तब ज्वानन से * क्षत्रिउ सुनियो कान लगाय ॥
निमक बघेलेको खायो है * सो हाड़न माँ गयो समाय ॥
पाँव पिछारूको ना धरियो * चाहे प्राण रहै की जाय ॥
बोले क्षत्री तब सूरज से * ठाकुर सुनियो कान लगाय ॥
निमक तुम्हारो हम खायो है * सो हाड़न माँ गयो समाय ॥
पाँव पिछारू को ना धरिहैं * चाहे तनधजी धजीउड़िजाय ॥
कूच को डंका बाजन लागो * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
चारि घरी केरे अरसा में * पहुँचे समर भूमिमें आय ॥

तेगा चटकै बर्दवान के * कटि२ गिरैं सुघछ्ना ज्वान ॥
पैदल के संग पैदल भिरिगे * श्रौ असवारन से असवार ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला * ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ * तुम सब भैया लगौ हमार ॥
जीतिकेचलिहौ जब महुबे को * दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
दैके पानी रजपूतन को * ऊदनि आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * दोनौं हाथ जोरि शिरनाय ॥
तीनि लाख से अनुपी आये * रहि गये एकलाख असवार ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * जिनकी मार सहो ना जाय ॥
भगे सिपाही माड़ौं वाले * अपनी पीठि दिखाय दिखाय ॥
गोल फूट गयो भर्रा परिगौ * लश्कर तिड़ी बीड़ी हुइ जाय॥
कोई रोवति है लरिकन को * कोई पुरिखन काँ चिल्लाय ॥
कोई रोवति है तिरियन काँ * अबहीं लाये गौनमाँ चार ॥
छाँड़ि नौकरी हमअनुपी की * बनमें बेंचि लकड़ियाँ खाहिं॥
भिड़हा आये हैं महुबे के * सो मनइन को करैं अहार ॥
झुके सिपाहो महुबे वाले * रण में कठिन करैं तरवार ॥
भजे सिपाही माड़वार के * अपने डारि २ हथियार ॥
भजत सिपाही अनुपी देखे * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जहाँ बेंदुला बघऊदनि को * अनुपी तहाँ पहूँचे जाय ॥
बोले अनुपी बघऊदनि से * नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
अबहितुम्हारोनाकछु बिगरो * अबहूँ लौटि महोबेइ जाउ ॥
बदलो मिलिबे को नाहीं है * ऊदनि मानो कही हमार ॥
जैसे खोपड़ी टँगी बाप की * तैसेइ खुपड़ी टँगै तुम्हार ॥
इतनी सुनिके ऊदनि बोले * ठाकुर अक्किल गई हेराय ॥

धर्म क्षत्रियन के नाहीं हैं * जो रण चढ़िके जायँ पराय ॥
ऊदनि लौटि के नाहीं जै हैं * चाहे प्राण रहै की जाय ॥
बदलो लै लेउँ मैं दादा को * तब छाती को डाह बुताय ॥
सुनिके बातैं अनुपी बोले * नैनन रही लालरी छाय ॥
दस दस रुपया के नौकर हैं * नाहक डरिहौ मूड़ कटाय ॥
हम तुम खेलैं समर भूमि में * दुइ में एक आँकु रहिजाय ॥
यह मान भाय गई ऊदनि के * तब अनुपी ते कही सुनाय ॥
चोट आपनी पहिले करिलेउ * मानौ कही बनाफर राय ॥
प्राण छूटि जैहैं देही से * तौ तुम स्वर्ग बैठि पछिताव ॥
बोले ऊदनि तब अनुपी से * बेटा सुनौ बघेले क्यार ॥
रीतैं बाँधी चन्द्रबंश ने * हमरे कुला यही व्यवहार ॥
पहिली चोट न अपनी करिहैं * ना भागे के परैं पिछार ॥
हाथ न डारैं हमतिरियन पर * नहि गौ ब्राह्मण करैं सँहार ॥
इतनी सुनि लइ जब अनुपीने * अपनो लियो धनुष शरतानि ॥
फोंक जमावे भुज दंडन भरि * तीबा मर २ होय कमान ॥
हियरा डाटो उदयसिंह को * सन्मुख छोड़ि कैवरी दीन्ह ॥
वार बचायो उदयसिंह ने * सन्मुख ढाल गैंड़की कीन्ह ॥
साँगि धमक्की फिरि अनुपीने * ऊदनि लैगै चोट बचाय ॥
घोड़ा बेंदुला दहिने हुइगो * नीचे साँगि गिरी अरराय ॥
देखि हकीकति यहऊदनिकी * फिरि अनुपीनेकही सुनाय ॥
अबहूँ लौटि जाउ महुबे को * मानौ कही उदैसिह राय ॥
अबहितुम्हारो ना कछु बिगरो * मानहु कही बनाफर राय ॥
आसलकड़ियाहौ रंडियनकी * नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
सुनिके बातैं ये अनुपी की * तब ऊदनि ने दियो जवाब ॥

झुके सिपाही महुबे वारे * दोनों हाथ करैं तरवारि ॥
दावे बेंदुला ऊदनि आवैं * करमें नग्न लिये तलवारि ॥
जैसे भेड़हा भेड़िन पैठै * जैसे सिंह बिडारै गाय ॥
तैसे झपटे उदनि बाँकुड़ा * सब दल रेन बेन हुइ जाय ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * रण में कठिन करैं तरवारि ॥
भगे सिपाही माड़ो वारे * अपनो डारि २ हथियार ॥
भगत सिपाही सूरज देखे * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जायके पहुँचे वघऊदनि ढिग * तब सूरज ने कही सुनाय ॥
दस २ रुपया के नौकर हैं * नाहक डरिहो मूड़ कटाय ॥
हम तुम खेलैं समर भूमि में * दुइ में एक आँकु रहिजाय ॥
यह मन भाई बघ ऊदनि के * तब सूरज ने कही बुझाय ॥
चोट आपनी पहिले करिलेउ * ऊदनि मेटि लेउ अरमान ॥
ऊदनि बोले तब सूरज से * बेटा सुनो बघेले क्यार ॥
पहिली चोट न अपनी करिहैं * ना भागे के पड़ैं पिछार ॥
सुनि के बातैं ये ऊदनि की * सूरज चित्त वहुत हरषाय ॥
लई कमनियाँ तब सूरज ने * गाँसी सेर भरे की खाय ॥
हियरा डाटै रण बौरे को * सन्मुख छाँड़ि कोबरी दीन्ह ॥
घोड़ा बेंदुला दहिने हटिगो * ऊदनि राखि सामने लीन्ह ॥
साँगि उठाई तब सूरज ने * सो ऊदनि पर दई चलाय ॥
घोड़ा उड़िगो आसमान को * नीचे साँगि गिरी अरराय ॥
सूरज बोले फिरि ऊदनि से * ऊदनि मानो कही हमारि ॥
अबहिं तुम्हारोना कछुबिगरो * अबहूँ लौटि महोबे जाउ ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनि ने * सूरज सुनो बात मनलाय ॥
धर्म क्षत्रियन के नाहीं हैं * रण चढ़ि धरैं पिछारू पाँव ॥

बदला लीहैं हम ददुआ को * तब छाती को दाह बुताय ॥
इतनी सुनतै सूरज जरिगे * नैना अग्नि ज्वाल हुइजाय ॥
खैंचि सिरोही लइ सूरज ने * सो ऊदनि पर राखी जाय ॥
ढाल अड़ाइ दई ऊदनि ने * उनकी टूटि सिरोही जाय ॥
होश बन्द भये तब सूरज के * मनमें गयो सनाका खाय ॥
दाबे बेंदुला ऊदन आवैं * भारी बड़ी दई ललकार ॥
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्हीं * अब यह झेलो गाज हमार ॥
खैंचि सिरोही लइ ऊदनि ने * मनमेंसुमिरि अञ्जनीलाल ॥
करो झड़ाका जब समुहें पर * बायें उठी गैंड़ की ढाल ॥
सूरज गिरिगे रण खेतन माँ * पाई विजय उदैसिंह राय ॥
दुसरी लड़ाई यह माड़ों की * पूरण भई लिखी हरखाय ॥
आगे युद्ध लिखौं करियाको * यारो सुनियो कान लगाय ॥

अथ करिया की लड़ाई

इतनी बिग्याँ केहिका गावों * शारद केहि के लै ल नाम ॥
अलखनिरंजन औ परमेश्वर * ले परभात राम को नाम ॥
लगी कचहरी है करिया को * जो जम्बै को लड़ैतो लाल ॥
यक हरिकारा दौरति आवै * सो बँगला में पहुँचो आय ॥
करी बन्दगी तब धामन ने * दोनों हाथ जोरि शिरनाय ॥
अर्ज गुजारो तब धामन ने * सब लश्कर को कह्यो हवाल ॥
सुनिक बातैं ये धामन की * करिया गयो सनाका खाय ॥
थर थर थर थर जियरा काँपै * सुन्दर बदन गयो मुर्झाय ॥
धीरज धरिकै मन अपने माँ * तुरतै उठो करिंगा राय ॥

लाशपड़ी थी जहँ अनुपी की * सूरज तहाँ पहूँचे जाय ॥
लाश उठाइ लई अनुपी की * सो पलकी माँ दई धराय ॥
सो पहुँचाय दई माड़ौ को * अब आगे को सुनो हवाल ॥
दावे बछेरा सूरज आवैं * औ मुर्चन पर पहुँचे आय ॥
आध कोस जब मुर्चा रहिगौ * सूरज घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
गर्जे सूरज तब घोड़ा पर * गुस्सा अङ्ग २ लहराय ॥
कौन सूरमाँ है महुवे को * जेहि बबुरी बन दियो कटाय ॥
कौने बाँधो है टोंडर को * औ अनुपी का दियो गिराय ॥
केहिको कागद भयो बरोबरि * जो तकरार बढ़ाई आय ॥
कान अवाजपरी ऊदनि के * तुरत बेंदुला दियो बढ़ाय ॥
सन्मुख पहुँचि गये सूरज के * औ ऊदनि ने कही सुनाय ॥
हमने मारो है अनुपी को * औ टोंडर को लियो बँधाय ॥
हमहि सूरमाँ हैं महुवे के * हम बबुरीबन दियो कटाय ॥
छोटे भैया हम आल्हा के * हमरो नाम उदयसिंह राय ॥
बदलो लेहौं मैं दादा को * माड़ौ गर्द दिहौं करवाय ॥
बोले सूरज तब ऊदनि से * ठाकुर बोलौ बात सँभारि ॥
धुँआ न देखेउ बारूदन के * ना कहुँ चलत दीख तरवारि ॥
चुप्पै लौटि जाउ महुबे को * नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
सुनि के बातैं ये सूरज की * तब ऊदनि ने दियो जवाब ॥
धर्म नहीं है ये क्षत्रिन के * रण चढ़ि धरैं पिछारू पाँव ॥
बदला लीहैं हम दादा को * तब छाती को दाह बुताय ॥
सुनिके बातैं सूरज जरिगै * गुस्सा गई बदन में छाय ॥
सूरज बोले खल्लासी से * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
जान न पावैं महुबे वाले * सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥

झुके खलासी तब तोपन पर * लै बारूद दई डरवाय ॥
बत्ती दै दइ है तोपन में * धुँअना रहो सर्ग मँड़राय ॥
दगी सलामी दोनौं दल में * रण में रहो अँधेरिया छाय ॥
गोला पहुँचै तीनि कोसलौं * गोली आध कोस लौं जाय ॥
चढ़ी कमनियाँ जहर बुझाई * गाँसी लगत काल हुइजाय ॥
तोपैं धैं धैं लाली हुइ गईं * ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ॥
मारु बन्द भइ तब तोपन की * फिरि बन्दूकैं लई उठाय ॥
रिमझिम २ गोली बरसैं * मानौं मघा बुन्द झरिलाय ॥
लागै गोला जेहि क्षत्री के * पंछी प्राण तुरत उड़िजाय ॥
तीनि घरी बन्दूकैं बाजीं * भारी युद्ध भयो घमसान ॥
झुके सिपाही दोनौं दल के * रहिगो डेढ़ कदम मैदान ॥
हल्ला हुइगो दोनौं दल में * ज्वानन खैंचि लई तरवार ॥
खट २ खट २ तेगा बाजै * बोलै छपकि २ तलवार ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै विलायत क्यार ॥
तेगा चटकै बर्दवान के * कटि२ गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
पाँच कोस लौं चलै सिरोही * रण में बीति रहा घमसान ॥
घेहा डारे रण के भीतर * जिनके प्यास २ रट लाग ॥
हलुके घायन के साहिजादे * उठि २ फेरि करैं तरवार ॥
चारि लाख से सूरज आये * रहिगे दुई लाख असवार ॥
सुर्चन २ नचै बेंदुला * ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ * तुम सब भैया लगो हमार ॥
भागि न जैयो कोइ मोहराते * राखियो धर्म चन्देले क्यार ॥
बदलो मिलिहैं जो दादा को * दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
दैके पानी रजपूतन काँ * फिरि आगे को दियो बढ़ाय ॥

करियाचलिभौतब लश्करमाँ * सारी सभा उठी महराय ॥
जायके पहुँचा है लश्कर माँ * तुरत नगड़ची लिया बुलाय ॥
हुक्म दैदिया तब करिया ने * मारू डंका देउ बजाय ॥
बजे नगारा तब लश्कर में * चत्री कसन लगे हथियार ॥
हाथी साजे सब माड़ौ के * जिनका सजत न लागी बार ॥
काठी धरि दइ सब ऊँटन पर * अर्बी ऊँट भये तैयार ॥
घोड़ा साजे सब माड़ौ के * जिनका सजत न लागोबार ॥
जितना गहना रजपूती का * चत्रिन पहिरि लीन्ह हरषाय ॥
बारह जोड़ी बजैं नगाड़ा * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
रज्जा बज्जा दुइ भैया हैं * शाहाबादी शूर पठान ॥
तिनहिंबुलायलियोकरिया ने * औ फिरि तिनसे लगो बतान ॥
आये लरिकवा हैं महुबे के * तिनकी कटा देउ करवाय ॥
जुलुम गुजारे उन माड़ौ माँ * उनको लश्कर लेउ लुटाय ॥
पारस पूजा है महुबे माँ * लोहा छुअत सोन है जाय ॥
सोऊ लूटि लेउ जल्दी चलि * तुम्हरी लूटि माफ हुइ जाय ॥
इतनी सुनिके दोनों भैया * चलि भे तुरत हिये हरषाय ॥
कूदि सवार भये घोड़न पर * मनको मोद न बरनो जाय ॥
हुक्मदै दियो फिरि करियाने * गज पचशावद करौ तयार ॥
घोड़ा पपीहा महुबे वालो * सोऊ कोतल चलै पिछार ॥
कछुक देर केरे अरसा माँ * दोनौं वाहन भये तयार ॥
सुमिरन करि बजरङ्गबली के * करिया पहिरै बस्त्र बनाय ॥
अगल बगल पर दुइ पिस्तौलैं * बायें सिंहिनि मूठि कटार ॥
भाला सोहै नाक दौनि के * लागत अनी काल हुइजाय ॥
जोड़ी बाँधी कड़ाबीन की * छप्पन छुरियाँ जहर बुझाय ॥

सजिके करिया जब ठाढो भौ * सो छबि वरन करी ना जाय ॥
गज पचशावद घोड़ा पपीहा * सोऊ तुरत पहूँचो आय ॥
सिढी लगाई मलयागिरकी * करिया चढ़ि हौदा पर जाय ॥
पहिलो पाँव धरो हौदा में * सन्मुख छींक भई ततकाल ॥
बोले पंडित तब करिया से * बेटा सुनौ बघेले क्यार ॥
साइति नीकी यह नाहीं है * ताते छोरि धरौ हथियार ॥
तब ललकारो है करिया ने * पंडित अकिल गई तुम्हार ॥
सगुन बिचारै रैयति रेजा * जो घरि मौर बियाहन जाय ॥
कहा बिचारै क्षत्रीको बालक * जो रण चढ़ि नितलोहचबाय ॥
हाथी बढाय दियो करियाने * कूच को डंका दियो बजाय ॥
लश्कर चलिभौ तब करियाको * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
दबति अँधरिया दलसाँ आवै * डंका होत गोल में जाय ॥
धूरि उड़ानी आसमान लौं * सूरज रहे धुन्धि में छाय ॥
भारी लश्कर माड़वार को * जहँ पैदल को नाहिं शुमार ॥
इतते फौजैं हैं करिया की * उतते फौज महोबे क्यार ॥
कछुक बेर केरे अरसा में * पहुँची समर भूमि में जाय ॥
दोनों फौजैं सन्मुख ठाढीं * मुर्चा डटो बरोबरि जाय ॥
जहाँ पै लाश परी सूरजकी * करिया तहाँ पहूँचो जाय ॥
तुरतै उतरि परे हाथी ते * औ सूरज काँ लियो उठाय ॥
लाश धराय दई पलकी माँ * सो माड़ौ को दई पठाय ॥
करिया गर्जो फिरि हौदा माँ * ज्योंघनगरजिगरजिरहिजाय ॥
कौन सो क्षत्री है धरती पर * केहिके जमैं करेजे बार ॥
केहिकी माता नाहर जाये * केहि रजपूत लये औतार ॥
कौने अनुपी सूरज मारे * औ टोंडर को लियो बचाय ॥

कौन शूरमा है महुबे को * सो सन्मुख हुइ देइ जवाब ॥
घोड़ा बढ़ायो बघऊदनि ने * श्रौ करिया को दियो जवाब ॥
हमरी माता नाहर जाये * हमरे जमे करेजे बार ॥
हमने मारो है अनुपी को * श्रौ टोडर को लियो बँधाय ॥
लानत तुम्हरी रजपूती पर * तेगा बाँधन को धिरकार ॥
सोवत बाँधेउ तुम दादा को * महुबे कि लूटि लई करवाय ॥
करौ मर्दुमी अब समुहें पर * मनकि मेटि लेउ अरमान ॥
बदला लेहौं मैं दादा को * माड़ौ गर्द देहुँ करवाय ॥
सुनिके बातैं ये ऊदन की * करिया अग्निज्वालहुइजाय ॥
तुरत खलासी को बोलवायो * श्रौ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
बत्ती दै देउ मेरि तोपन माँ * इन पाजिन काँ देउ उड़ाय ॥
झुके खलासी दोनौं दल के * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
अररर अररर गोला छूटै * कह २ करै अगिनियाँ बान ॥
सननन सननन गोली छूटै * सर सर तीरन की घमसान ॥
गोला लागै जेहि हाथी के * दल में बठिया सो गिरजाय ॥
जौन ऊँट के गोला लागै * सो गिरि परै धरणि भहराय ॥
एक पहर भरि गोला बरसो * तोपैं लाल बरन हुइ जायँ ॥
मारु बंद भइ तब तोपन को * ज्वानन साँगैं लईं उठाय ॥
साँगैं चलन लगीं दोनौं दल * छुटैं पिचिका लोहुन क्यार ॥
चारि घरी भरि बजो साँगड़ा * भारी बही रक्त की धार ॥
शेर बचा पिस्तौल तमंचा * कहुँ २ कड़ाबीन दिखलाय ॥
कठिन लड़ाई भइ तेहि बेरियाँ * दल में रही लालरी छाय ॥
सुर्चन २ नचै बेंदुला * ऊदन कहैं पुकारि पुकारि ॥
भाजि न जैयो कोइ गोहराते * रखियो धर्म बनाफर क्यार ॥

नौकर चाकर तुम नाहीं हौ * तुम सब भैया लगौ हमार ॥
पाँव पिछारू को जो धारौ * तुम्हरे जीवन को धिक्कार ॥
दै दै पानी रजपूतन को * ऊदनि आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * जे मरिवे को नाहिं डेरायँ ॥
हल्ला हुइगौ दोनौं दल में * घूमि के चलन लगी तरवार ॥
खट २ खट २ तेगा बाजै * बोलै छपकि छपकि तरवार ॥
हौदा मिलिगे हैं हौदा से * हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
पैदल अभिरे हैं पैदल से * औ असवारन से असवार ॥
चलै सिरोही दोनों दल में * कटि २ गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
अपन पराओ ना पहिचानैं * भारी युद्ध होय घमसान ॥
चेहरा कटिगे हैं क्षत्रिन के * कल्ला घोड़न के कटि जायँ ॥
बहुतक हाथी दलके भीतर * बिन सूँड़न के परैं दिखाय ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * रण में विषम करैं तरवार ॥
चारि घरी भरि बजी सिरोही * तहँ बहि चली रक्तको धार ॥
ऊँचे खाले कायर भाजे * जे रण दुलहा चले बराय ॥
लम्बी धोतिन के पहिरैया * तिनहूँ लई भभूति रमाय ॥
भजत सिपाही करिया देखे * गज पचशावद दियो बढ़ाय ॥
साँकर खोलि दई हाथिन को * औ करिया ने कही सुनाय ॥
नमक हमारो तुम खायो है * सो हाड़न माँ गयो समाय ॥
सन्मुख वैरी रण में ठाढो * याको लेउ जँजीर बँधाय ॥
रङ्गा बङ्गा शूर छबीले * तिनते करिया लगो बतान ॥
बारी उमरिया को ऊदनि है * यहि करि दई वंशकी हानि ॥
जान न पावैं महुबे वाले * सबकी कटा देउ करवाय ॥
इतनी सुनि के रंगा वंगा * अपने घोड़ा दिये बढ़ाय ॥

करिया बाढ़िगौ दलके भीतर * गजको साँकर दई चलाय ॥
साँकर फेरै गजपचशावद * चत्री गिरैं भूमि भहराय ॥
साँकर मारै जेहि घोड़ा के * सो असवार सहित गिरिजाय ॥
साँकर लागै जेहि घोड़ा के * सोऊ तुरत धरणि गिरिजाय ॥
हाथी विचलो रण के भीतर * लश्कर तिड़ी बिड़ो हुइ जाय ॥
हटे सिपाही महुबे वाले * सारी फौज गई थर्राय ॥
करिया बोला तब ऊदनि से * सुनु महुबे के राजकुमार ॥
अबहूँ लौटि जाउ महुबे को * इतनी मानो कही हमार ॥
इतनी सुनि के ऊदनि बोले * तुम सुनि लेउ करिगाराय ॥
घोड़ा पपीहा गजपचशावद * लाखा पातुर देउ मँगाय ॥
हार नौलखा महुबे वारो * सोऊ हमैं देउ मँगवाय ॥
शीश काटि के नृप जंबै को * हमरी नजरि गुजारौ आय ॥
डोला दैदेउ तुम बिजमाँको * इतनी डाँड़ देउ भरवाय ॥
तौ हम लौटि जायँ महुबेको * नातरु हमरी जाय बलाय ॥
सुनिके बातैं ये ऊदनि की * औ जरि मरो करिंगा राय ॥
सम्हरौ ऊदनि तुम घोड़ा पर * तुम्हरो काल रहो निअराय ॥
पहिलीउचौनीऊदनि करिलेउ * नाहित जैहैं छूटि परान ॥
ऊदनि बोले तब करिया से * सुन जम्बै के राजकुमार ॥
बालक बूढ़े को ना मारैं * ना हम पहिलो खेलैं दावँ ॥
रीतैं बाँधी चन्द्रवंश ने * हमरे कुला यही व्यवहार ॥
चोट आपनी करिया करिलेउ * यह ऊदनि ने कहो सुनाय ॥
हँसो करिंगा तब हौदा में * अपनो लीन्हीं साँगि उठाय ॥
सो धरिधमकी बघऊदनि पर * घोड़ा पाँच कदम हटिजाय ॥
बचिगा बेटा देवै वाला * करिया गयो चित्त खिसियाय ॥

गुर्ज उठायो तब हौदा से * सो ऊदनि पर दिया चलाय ॥
घोड़ा बेंदुला ऊपर चढ़िगा * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
ऊदनि दाबो रास बेंदुल की * सो हौदा पर पहुँचो जाय ॥
करो भड़ाका बघऊदनि ने * छतरी टूक २ हुइ जाय ॥
देखि हकीकति तबऊदनि की * करिया बहुत गयो शरमाय ॥
करिया बोलै पचशावद ते * मैं हाथी को लेउँ बलाय ॥
जल्दी बाँधि लेउ बैरी को * राखौ धर्म बघेले क्यार ॥
दाबे बेंदुला ऊदनि आये * भारी बड़ी दई ललकार ॥
चोटतुम्हारी हम सहि लीन्ही * अब सहि लीजो गाज हमार ॥
साँगि धमकी बघऊदनि ने * औ करिया पर कीन्हों वार ॥
पहिले मारो पीलवान को * दूजे हनो कुलफबरदार ॥
तीजो चोट करी करिया पर * मुर्छित भयो बीर सरदार ॥
होश रहा नहिं कछु करिया को * हौदा गिरो मुर्छा खाय ॥
गुस्सा आई पचशावद को * तुरतै साँकर दई घुमाय ॥
साँकरि लागत ऊदनि गिरिगै * ना देही की रही सँभार ॥
घोड़ा बेंदुला थर थर काँपै * देखत हाल उदैसिंह क्यार ॥
आध घड़ी में मुर्छा जागी * तुरतै उठे लहुरवा भाय ॥
घोड़ा बेंदुला पर चढ़ि बैठे * हाथी साँकल दई घुमाय ॥
साँकर लागी बघऊदनि को * फिरिगिर परो धरणि महराय॥
हाथी बाँधि लियो ऊदनि को * बेंदुल भाजि खेत ते जाय ॥
ऊदनि बँधतै परलै हुइ गइ * अब कोइ धीर धरैया नाय ॥
फौजैं भागी गढ़ महुवे की * हाथी खड़ा खेत रहि जाय ॥
रुपना भाजो रण खेतन ते * सो बबुरी बन पहुँचो जाय ॥
जहाँ पै तम्बू तुनि आल्हा को * रुपना तहाँ पहूँचो आय ॥

करी बन्दगी नुनि आल्हाको * रूपन हाथ बाँधि शिरनाय ॥
आल्हा पूछैं तब रुपना ते * रणको हाल देउ बतलाय ॥
हाथ जोरिके रुपना बोलो * दादा सुनौ बनाफर राय ॥
साँकर फेरो पचशावद ने * लै गयो बाँधि लहुरवा भाय ॥
हाथी बिचलो महुबे वारो * सिगरी फौज गई बिललाय ॥
तुमहि मुनासिब यह नाहींथी * अकिले ऊदनि दये पठाय ॥
आल्हा बोले तब सैयद से * चाचा जल्द होउ तैयार ॥
मलिखे भैया जल्दी साजौ * गुजरै घरी २ पर वार ॥
ऊदनि बँधिगै रण खेतन में * चलिके जल्दी लेहु छुड़ाय ॥
बोलि नगड़ची को बोरा दौ * सोने कड़ा दिये डरवाय ॥
बजै नगाड़ा मेरी लश्कर में * सारी फौज होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब दल गंजन * क्षत्री तुरत भये तैयार ॥
रुपना आयो तब देवै ढिग * सारी लश्कर दियो भगाय ॥
ऊदनि बाँधो पचशावद ने * सारे हाल कह्यो समुझाय ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहींथी * अकिले ऊदनि दिये पठाय ॥
देवै सोचै मन अपने माँ * यह बल नाहिं करिंगाक्यार ॥
नमक हरामी पचशावद को * ताने बाँधो पुत्र हमार ॥
तौ लौं मलिखे दाखिल हुइगे * लागे चरण दिवलदे क्यार
हाल बतायो सब लश्कर को * जेहि बिधि बँधो उदै सरदार ॥
हथि पचशावद जुलुम गुजारे * ताने बाँधों लहुरवा भाय ॥
घोड़ा बेंदुला रण से भागो * अब हाथो से कहा बसाय ॥
पंजो धरि देउ मेरि पीठी पर * चाची भेंटि लेहु अब आय ॥
लश्करखपिजाय सब माड़ोमें * दर्शन होयँ सरग में आय ॥
देवै बोली तब मलिखे से * बेटा धीर धरो मनमाय ॥

गज पचशावद है महुबे को * हमने सेवा करी बनाय ॥
दोहरे रातिब हमने दीन्हें * देखत तुरत लिहै पहिचानि ॥
हाल सुनैहौं जब मैं पिछलो * साँकर फेरि घुमै है नाहिं ॥
इतनो कहिके रनि देवै ने * अपनी पलकी लई मँगाय ॥
थार सोबरन को मँगवायो * तामें आरति लई सजाय ॥
बैठी देवै तब पलकी में * माड़ौ तुरत गई समुहाय ॥
घोड़ी कबुतरी को मँगवायो * तासे मलिखे कहीं सुनाय ॥
घोड़ा करेलिहा पर आल्हा हैं * सैय्यद सिंहिनि पर असवार ॥
घोड़ा हरनागर पर ब्रह्मा हैं * ढेबा मनुरथा पर असवार ॥
सुमिरन करि बजरङ्ग बली को * मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार ॥
घोड़ी बढ़ाई नर मलिखे ने * सो लश्कर के चली अगार ॥
देवै पहुँची पचशावद ढिग * तुरतै पलकी दई धराय ॥
उतरि पालकी ते भुइँ आई * औ हाथी तिर पहुँची जाय ॥
पूजन करिके गज मस्तकको * रोचना माथे दियो लगाय ॥
बोली देवै फिर हाथी से * मैं हाथी की लेउँ बलाय ॥
क्या तू भूला चन्देली को * महुबेके रातिब गया भुलाय ॥
क्या तू भूल गया देवै को * तेरी खातिर करी बनाय ॥
सोने कटोरन दूध पिलाओ * तुम गाढ़े माँ ऐहौ काम ॥
ऊदनि बेटा मो रँड़िया को * तूने बाँधो नमक हराम ॥
नमक हमारो तुमने खाओ * सो हाड़न माँ गओ समाय ॥
भये सहायक तुम दुश्मन के * सीधे पड़ौ नर्क में जाय ॥
धोखा दैके करिया चढ़िगा * दशहरि पुर्वा लिया लुटाय ॥
तुमहि साथ लीन्हो करियाने * नृप को शीश लियो कटवाय ॥
बदला लेने लड़िका आयो * तुमने लियो जँजीरन बाँधि ॥

बंश नशैबे को लागे हो * तुमका भारी लगै सराप ॥
यही दिना को हम पालोथो * तुम दुश्मनकी करौ सहाय ॥
नमक हरामी तुमने कीन्हीं * हाथी मिलै नरक में बास ॥
तेहिते तुमका समुझावति हौं * तुम लरिकनकी करौ सहाय ॥
जीतिके चलिहौजब महुबेको * दुने रातिब दिहौं बढाय ॥
सुनि के बातैं रनि देवै की * हाथी बहुत गयो शरमाय ॥
डारि जञ्जीर दई धरती माँ * हाथी रहिगौ माथ नवाय ॥
सुंडि उठाई पचशावद ने * रानी गई जानि सबु हाल ॥
यहाँ कि बातैं हियनै छाँड़ो * अब करियाकी सुनौ हवाल ॥
जागी मुर्छा जब करिया की * हौदा उठो भरहरा खाय ॥
बँधो देखिके बघऊदनि को * मन में बहुत गयो हरषाय ॥
मुर्छा जागी जब ऊदनि की * मन में शोच गयो बहु छाय ॥
बँधो देखिके तन अपने को * ऊदनि बहुत गयो घबराय ॥
तौ लौं पहुँचों दल महुबे को * मलिखे घोड़ी दई बढ़ाय ॥
जहाँ पैहाथी है करिया को * मलिखे तहाँ पहूँचो जाय ॥
धरि ललकारो तब मलिखेने * भारी बड़ी दई ललकार ॥
केहिकी माता नाहर जाये * केहि रजपूत लये औतार ॥
कौने बाँधो है ऊदनि को * सो सन्मुख हुइ देइ जवाब ॥
कान भनक करियाकेपरिगइ * तब सन्मुख हुइ दियो जवाब ॥
हमरो माता नाहर जाये * हम रजपूत लये अवतार ॥
हमने बाँधो है ऊदनि को * बेटा सुनौ बनाफर राय ॥
जो गतिकीन्हीं दच्छराजकी * सो गति करौं उदैसिंह क्यार ॥
तेहिते तुमका समुझावति हौं * अपनो कूँच जाउ करवाय ॥
मारे जैहौ रण खेतन माँ * भागे प्राण बचैगो नायँ ॥

सुनिकै बातैं ये करिया की * मलिखे अग्निज्वाल ह्वइजाय ॥
बोले मलिखे तब करिया से * तुम सुनि लेउ बघेले राय ॥
घोड़ा पपीहा गज पचशावद * हार नौलखा देउ मँगाय ॥
लाखा पातुर मेरे बाप को * सोऊ जल्द देउ मँगवाय ॥
डोला दैदेउ तुम बिजमाँ को * जंबै शीश देउ मँगवाय ॥
इतनो डाँड़ हमारो दै देउ * सब तकरार अभी मिटजाय ॥
नातरु त्यागौ आस जियनकी * सबके मूड़ लिहौं कटवाय ॥
सुनिकै बातैं नरमलिखे की * करिया गरजि २ रहिजाय ॥
चोट आपनी मलिखेकरिलेउ * नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ ॥
बोले मलिखे तब करिया से * सुनु जंबै के राजकुमार ॥
पहली चोट न अपनी करिहैं * बाँधी रीति चन्द सर्दार ॥
पहिली चोट आपनी करलेउ * करिया मेटि लेउ अरमान ॥
इतनी सुनिकै तब करिया ने * अपनी लीन्हीं साँगि उठाय ॥
सो धरि धमकी रनबौरे पर * मलिखे लैगे चोट बचाय ॥
घोड़ी कबुतरी दाहिने ह्वइगइ * नीचे साँग गिरी अरराय ॥
तेग निकारी तब करिया ने * सो मलिखे पर दई झुकाय ॥
जौहर कीन्हे नर मलिखे ने * तुरतै दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
बचिगा बेटा बच्छराज का * तब करिया से कही सुनाय ॥
सम्हरि के बैठो अब हौदा में * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
एँड़ लगाई तब घोड़ी के * घोड़ी आसमान उड़िजाय ॥
झपटिके पहुँचोफिरिहौदापर * मानो गिरी सरग ते गाज ॥
करो झड़ाका नर मलिखे ने * जो है बीरन को शिरताज ॥
डंडा कटिगौ तब हौदा को * सोने कलश गिरे झहनाय ॥
छतरी टूटि गई हौदा की * चाँदो फूल गिरे भहराय ॥

दगदग दगदग करै महावत * हाथी बैठि खेत में जाय ॥
सूँड़ लपेटि लई दाँतन से * हाथी पड़ा २ चिल्लाय ॥
बजै कुल्हाड़ा पचशावद पर * हाथी चीखै औ रहिजाय ॥
मलिखे पहुँचे बघऊदनि ढिग * औ ऊदनि काँ लियो छुड़ाय ॥
घोड़ा बेंदुला रुपना लायो * ऊदनि फाँदि भये तैयार ॥
मलिखे चढ़िगै निज घोड़ीपर * दोनों वीर भये तैयार ॥
देखि हकीकत पचशावद की * करिया बहुत गयो घबराय ॥
धोखा दीन्हों पचशावद ने * याते चलत न एक उपाय ॥
घोड़ा पपीहा जो कोतल है * तुरतै करिया लियो मँगाय ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठो * अपने इष्टदेव को ध्याय ॥
देवै पहुँची पचशावद ढिग * मस्तक रोचना दियो लगाय ॥
लई आरती रानि देवै ने * सो हाथी पर धरी उतारि ॥
फिरि समुझायो रानि देवैने * हाथो सुनौ महोबे क्यार ॥
तुमका सौंपतिहौं लरिकनकाँ * रखियो धर्म बनाफर क्यार ॥
बोली देवै फिरि आल्हा से * बेटा मंडरीक औतार ॥
बाप तुम्हारे को हाथी है * या पर बैठि जाउ हरषाय ॥
सुनिके बातैं ये माता की * आल्हा तुरत पहूँचे जाय ॥
सुमिरण करिके महाबीर को * महतारी के चरण मनाय ॥
आल्हा चढ़िगै पचशावद पर * औ हौदा में बैठे जाय ॥
बीर रूप हुइ चत्री गरजे * करमें लिये नागिन तरवारि ॥
दोनों फौजैं यक मिल हुइ गइँ * खट २ चलन लगी तलवार ॥
चलैं सिरोही माना शाही * औ बूँदी की असल कटार ॥
चलैं जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चलैं बिलायत क्यार ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * दोनों हाथ करैं तरवार ॥

चलै सिरोही अन्धा धुन्धी * कटि २ गिरैं सुघर सरदार ॥
चारिघरी भरि बजी सिरोही * तहँ बहि चली रक्तकी धार ॥
भजे सिपाही माड़ौ वारे * अपने डारि २ हथियार ॥
सुर्चन सुर्चन नचै बेंदुला * ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ॥
भागि न जैयो कोइ मोहराते * रखिलेव धर्म महोवे क्यार ॥
बढ़े सिपाही महुबे वारे * रण में कठिन करैं तरवार ॥
दाबे बेंदुला ऊदनि आये * सो करिया ढिग पहुँचे आय ॥
बोले ऊदनि तब करिया ते * हम तुम खेलैं युद्ध अघाय ॥
चोट आपनी पहिले करिलेउ * मन के मेटि लेउ अरमान ॥
सुनी बात जब यह करियाने * तब रङ्गा से लगो बतान ॥
मारी उमिरिया को ऊदनि है * याने दीन्हें जुलुम गुजारि ॥
जान न पावै यह महुबे काँ * याको देउ जान से मारि ॥
घोड़ा बढ़ायो तब रङ्गा ने * औ ऊदनि से कही सुनाय ॥
हम तुम खेलैं समरभूमि माँ * दुइमाँ एक आँकु रहि जाय ॥
यह मन भाई रन वाँरे के * फिरि रङ्गाते लगो बतान ॥
चोट आपनी रङ्गा करिलेउ * मन के मेटि लेउ अरमान ॥
खैंचि सिरोही लइ रङ्गा ने * सो ऊदनि पर दई चलाय ॥
चेहरा मारो उदयसिंह को * ऊदनि दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
तीनि सिरोही रङ्गा मारी * वाकी टूटि गई तरवारि ॥
रङ्गा सोचै अपने मन माँ * हा यह कहा करो करतार ॥
तब ललकारो बघऊदनि ने * रङ्गा सावधान हुइ जाय ॥
सम्हरि के बैठो तुम घोड़ा पर * हमरी देखि लेउ तरवारि ॥
चेहरा मारो तब रङ्गा को * औ धरती माँ दियो गिराय ॥
देखि हकीकत यह रङ्गा की * बंगा घोड़ा दियो बढ़ाय ॥

बोले बङ्गा तब ऊदनि से * ठाकुर खबरदार हुइ जाउ ॥
तौ लौं ढेबा दखिल हुइगो * औ बंगा से कही सुनाय ॥
हम तुम खेलैं रण खेतन माँ * दुइमाँ एक आँकु रहि जाय ॥
यह मन भाय गई बंगा के * तुरतै खैंचि लई तरवारि ॥
करो भड़ाका तब ढेबा पर * ढेबा दीन्हीं ढाल पसारि ॥
तीनि सिरोही बंगा मारी * खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
टूटि सिरोही गइ बंगा की * बंगा गयो सनाका खाय ॥
तब ललकार दई ढेबा ने * बंगा खबरदार हुइ जाय ॥
तेग चलाई तब ढेबा ने * बंगा दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ा वाली * गद्दी कटि मखमल की जाय ॥
बख्तर फाटि गयो बङ्गा को * धरतो गिरो भरहरा खाय ॥
बङ्गा जूझति परलै हुइ गइ * अब कोइ धीर धरैया नायँ ॥
घोड़ा बढ़ायो तब करिया ने * औ ढेबा तिर पहुँचो आय ॥
गुर्ज धमक्को तब करिया ने * ढेबा लैगो चोट बचाय ॥
खाय चपेटा घोड़ा हटिगो * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
देखि दशा यह बघऊदनि ने * तुरत बेंदुला दिया बढ़ाय ॥
खैंचि सिरोही ऊदनि मारी * करिया लैगो चोट बचाय ॥
गुर्ज चलायो तब करिया ने * ऊदनि घोड़ा गये नचाय ॥
लगो चपेटा रास बेंदुल के * घोड़ा पाँच कदम हटिजाय ॥
बोले ऊदनि तब मलिखे से * दादा मेरे बीर मलिखान ॥
तुम्हरी बरनी को करिया है * अब ना राखौ देर लगाय ॥
मारि गिरावौ रन खेतन माँ * सारो शोकु मोहु मिटिजाय ॥
सुनिके बातैं ये ऊदनि की * मलिखे घोड़ी दई बढ़ाय ॥
धरि ललकारो तब करियाने * सुनु महुबे के राजकुमार ॥

हमरी तुम्हरी अब बरनी है * देखैं कहा करैं करतार ॥
लई कमनियाँ तब करियाने * गाँसी सेर भरे की खाय ॥
हियरा डाटो नर मलिखे की * मारो तीर श्रवण लगितान ॥
घोड़ी हटिगइ नर मलिखे की * उनका राखि लियो करतार ॥
बचिगा बेटा बच्छराज का * करियालीन्हीं साँगि निकार ॥
सो धरि धमकीनर मलिखेपर * घोड़ो आसमान उड़िजाय ॥
लई सिरोही तब करिया ने * सो मलिखे पर दई झुकाय ॥
बदलि पैंतरा मलिखे हटिगे * करिया सोचि २ रहिजाय ॥
बोले मलिखे तब करिया से * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
अस्त्र तुम्हारे सब झूठे हैं * नाहक खेत मेंभायो आय ॥
तब ललकारो है करिया ने * काहे वृथा करौ अभिमान ॥
अबकी बार बचैगो नाहीं * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
हँसिके ज्वाब दियो मलिखे ने * तुम सुनि लेउ बघेले राय ॥
और देवताका क्या गिनतो * शंका करों कालको नायँ ॥
चोट आपनी पहिले करिलेउ * मनके मेटि लेउ अरमान ॥
कागद तुम्हरो भयो बरोबरि * रुक्का गयो जमन के हाथ ॥
करिया जरिगानरमलिखे पर * तुरतै कड़ाबीन लै हाथ ॥
हियरा डाटो नरमलिखे को * सन्मुख गोली दई चलाय ॥
बज्रकि देही नरमलिखे की * गोली लगत चीप है जाय ॥
गोली लागी नर मलिखेको * तुरतै टूक २ है जाय ॥
तब ललकारो नर मलिखे ने * सम्हरौ वीर करिंगा राय ॥
खैंचि सिरोही लै मलिखे ने * लैके रामचन्द्र को नाम ॥
चेहरा मारो तब करिया को * औ धरतीमाँ दियो गिराय ॥
ऊदनि उतरे रस बेंदुल ते * तुरतै चेहरा लियो उठाय ॥

जाय देखायातुनि आल्हाको * दादा देखौ नैन पसार ॥
बैरी मारि दिया खेतन माँ * देखौ शीश करिंगा क्यार ॥
जब हम कूच कियो महुबे से * तब मल्हना ने कही सुनाय ॥
अब के बिछुरे फिरि कब ऐहो * बेटा अवधि देउ बतलाय ॥
करो आवादा आठ मास को * ताकु बीति गये नौ मास ॥
धीरज धरन हेतु मल्हना के * दादा शीश देउ पहुँचाय ॥
सुनिके बातैं ये ऊदनि की * आल्हा रुपनै लियो बुलाय ॥
शीश लैजावो तुम करियाको * मल्हनै खबरि सुनावो जाय ॥
हाल सुनैयो सब माड़ौ की * राजै खूब दिओ समुझाय ॥
जल्दी ऐयो तुम महुबे से * करियो देर न पलछिन वार ॥
रुपना चलिभो तब महुबे काँ * तुरतै कूच दियो करवाय ॥
हियाँ कि बातैं हियनै छाँड़ो * तनि महुबे को सुनो हवाल ॥
अवधि बीतिगइजब आवनकी * मल्हना दुखी रहै सबकाल ॥
मल्हना तिलका दोनों सोचैं * हेरैं बाट लहुरवा क्यार ॥
राति राति भरि करैं अँदेसा * दिन भरि ठाढ़ देइँ गुजार ॥
एकदिन ठादो मल्हना रानी * हेरै बाट लरिकवन क्यार ॥
तौलौं माहिल दाखिल हुइगै * देखो दुखी सकल परिवार ॥
पूछैं माहिल तब मल्हना से * बहिनी हाल देउ बतलाय ॥
कौन अँदेशा माँ जियरा है * काहे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
मल्हना बोली तब माहिल से * बीरन कछू कहो ना जाय ॥
गये लरिकवा हैं माड़ौ को * तिनकोखबरिमिली कछुनायँ ॥
माहिल बोले तब मल्हना से * बहिनी कछू कहो ना जाय ॥
बूदी उड़ानी है लरिकन को * सब खपि गये बनाफर राय ॥
यक हरिकारा गद माड़ौ को * सो उरई माँ पहुँचो आय ॥

कहोहकीकतितिहिंलरिकन्की * सब खपिगये बनाफर राय ॥
मारे जैहैं सब महुबे माँ * पगिया बन्द बचैगो नायँ ॥
सुनी खबरि जब यह मलहनाने * धरणी गिरी मूर्छा खाय ॥
मल्हना तिलका दोनों रोवैं * हा दैया गति कही न जाय ॥
मलहना तिलका के रोइवे माँ * पक्के महल दरारा खायँ ॥
सुनी खबरिया परिमालै ने * भुइँ माँ गिरे भरहरा खाय ॥
घर २ महुबो सूनो डारो * बैरी करैं चढाई आय ॥
हाय गोसैंयाँ यह का कीन्हीं * कोई पेट बँधैया नायँ ॥
माहिल बोले तब मल्हना से * बहिनी धीर धरो मन मायँ ॥
लिखी विधाता की को मेटै * याते चलत न एक उपाय ॥
धीरज धारो मन अपनेमाँ * लरिकन देउ तिलांजुलि जाय ॥
रोये तुमरे वे ना मिलिहैं * चाहे कोटिन करो उपाय ॥
इतनी कहिके माहिल चलिभे * उरई कूच गये करवाय ॥
तौलौं रुपना दाखिल हुइगो * जहँ दरबार रजा परिमाल ॥
धरी पालकी है फाटक पर * रूपना झुकिके करी सलाम ॥
राजा देखो जब रुपना को * जियरा बहुत गयो घबराय ॥
खून भरी जब पलकी देखी * तब रुपना से कही सुनाय ॥
कौनसे लरिका को शिरलाये * रूपन हमैं देउ बतलाय ॥
हाथ जोरिके रुपना बोलो * ऐसि न कहौ चँदेले राय ॥
कायम लरिका सब तुम्हरे हैं * माडो लिये बाप के दायँ ॥
शीशकाटिके उन करियाको * ऊदनि महुबे दियो पठाय ॥
सुनिके बातैं ये रुपना की * तुरतै उठे चन्देले राय ॥
शीश देखिके नृप करिया को * मनमें बहुत खुशी हुइ जायँ ॥
बोले राजा तब रुपना से * पलकी महलन देउ पठाय ॥

असली बड़ा आल्हखण्ड।



भार्गव भूषण प्रेस, काशी।

देर जो करिहौ तुमहियनापर * रानी पेट फारि मरि जाय ॥
रुपना चलिभौ तब मलहनकों * तुरत पालकी सङ्ग लिवाय ॥
पलकी पहुँची जब फाटकपर * मल्हना बहुत गई घबराय ॥
खून भरी जब पलकी देखी * धरतो गिरी मुर्च्छा खाय ॥
दोउ कर जोरे रुपना बोलै * माता देखौ नैन उघारि ॥
बैरी मारौ रनखेतन माँ * लाये शीश करिंगा क्यार ॥
कायम लरिका तुम्हरे चारौ * काहे सोच करौ महरानि ॥
कान अवाज परी मल्हनाके * तुरतै उठी मल्हन दे रानि ॥
पर्दा खोलि दओ पलकीको * देखो शीश करिंगा क्यार ॥
बहुत खुशी भइ मल्हनारानी * औ पलकी घइँ रही निहारि ॥
माहिल भैया तुम मरिजावौ * झूठो खबर सुनाई आय ॥
बैरी मारि दियो लरिकनने * माड़ौ लिये बापके दायँ ॥
मल्हना बोली फिरि रुपनासे * बेटा जेंय लेउ ज्योंनार ॥
तनिकबेलमिजाउतुममहलनमाँ * अबहीं करौं रसोई त्यार ॥
हाथ जोरिकै रुपना बोलो * माता हुक्म देउ फरमाय ॥
जबलौं जैहौं ना लश्करको * तौ लौं उदैसिंह घबराय ॥
तेहिते भोजन हमना करिहैं * माता पल २ होति अबार ॥
आज्ञा दै देउ अब जल्दी से * गुजरै घरी २ पर वार ॥
इतनी कहिके रूपन चलिभै * औ माड़ौ की पकरी राह ॥
हियाँ कि बातैं हियनैं छोड़ो * अब माड़ौ को सुनो हवाल ॥
सुनी खबरिया नृप जम्बै ने * करिया जूझि गया मैदान ॥
मुर्छा आई नृप जम्बै को * धरती गिरे भरहरा खाय ॥
क्या गतिबरनौं राजसभाकी * विपदा कछु कही ना जाय ॥
मुर्छा जागी जब राजा की * मनमें सोचैं बारम्बार ॥

खाँई खोदै जो काहू को * ताके लिये कुआँ तैयार ॥
जैसी करनी पार उतरनी * यामें चलत न एक उपाय ॥
ऐसे सोचत राजा जम्बै * पहुँचे रङ्गमहल में जाय ॥
आवत देखो जब राजा को * रानी उठी भरहरा खाय ॥
लई बिजनियाँ करफूलनकी * सो राजा पर ढोरै ब्यार ॥
धीरे धीरे रानी पूछै * स्वामी हाल देउ बतलाय ॥
कौन अँदेसा माँ जियरा है * काहे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
बोले राजा तब रानी से * नैनन बहै नीर की धार ॥
बड़ी आपदा हमपर परिगइ * रानी कछू कही ना जाय ॥
चारो बेटा रण में जूझे * बंटाढार भयो परिवार ॥
फौजें मारी गढ़ माड़ौ की * गज पचशावद लियोछिनाय ॥
बड़े लड़ैया महुवे वाले * जिनते चलत न एक उपाय ॥
उड़न बछेड़ा हैं सबहिन पर * सो पंछी जस जायँ उड़ाय ॥
मानुष होवैं तो लड़ि मरिये * उन पंछिन ते कहा बसाय ॥
बोली रानी तब जम्बै से * स्वामी दोष कर्म को आय ॥
नाहक मारो दस्सराज को * सोवत नाग जगायो जाय ॥
भारी विपता है माड़ौ में * अब कोइ फूट बँधैया नायँ ॥
छाती पीटै सर दै मारै * रानी रोवै जार बेजार ॥
हाय विधाता यह कैसी भइ * अब कहँ मिलिहैं पुत्र हमार ॥
रोवत देखो मात पिता को * बिजमाँ तुरत पहूँची आय ॥
धीरज धारो जिय अपने माँ * बारम्बार रही समभाय ॥
भारी खटका है ऊदनि को * सो हम खटका दिहैं मिटाय ॥
बन्दी करिहौं मैं ऊदनि को * हे पितु धीर धरौ मनमाँय ॥
पुरिया लैके जादू वाली * पहुँची बछुरी बन में जाय ॥

मर्दकि सूरति बिजमा बदलो * गुटका मुखमें लियो दबाय ॥
डारि मसानी दइ लश्कर में * सबका सूझि परै अँधियार ॥
पुरिया मारी यक जादू को * मेढ़ा बने उदैसिंह राय ॥
मेढा लैके बिजमाँ चलि भइ * झारखण्ड में राखो जाय ॥
गुरू झिलिमिलाको मठिया में * मेढा तुरतै दियो बँधाय ॥
बिजमा बोली फिरि बाबा से * मैं लाई हौं चोर चुराय ॥
चोर महोबे को भारी है * बाबा बहुत रह्यो हुशियार ॥
बिजमा पहुँची रंगमहल में * गुरुके लागि चरण बहुबार ॥
बिजमा पहुँची रङ्गमहल को * फौजन जादू लियो हटाय ॥
जब कछु चेत भयो आल्हाको * तब मलिखे से कही सुनाय ॥
काहे भैया यह कैसी भइ * ना कहुँ ऊदनि परत दिखाय ॥
मलिखे पूछैं तब ढेबा से * भैया हाल कहो समुझाय ॥
खोलि पत्तरा ढेबा देखो * फिरि मलिखेसे कही सुनाय ॥
बिजमा बेटी नृप जम्बै की * हरि लै गई लहुरवा भाय ॥
मेढा करिलौ है जादू से * राखो झारखण्ड माँ जाय ॥
आल्हा पूछैं फिरि ढेबा से * भैया जतन देउ बतलाय ॥
कौन भाँति से कारज बनिहै * कैसे मिलैं लहुरवा भाय ॥
ढेबा बोले तब आल्हा से * दादा गुदरी लेउ मँगाय ॥
भेष बनाइ लेहु जोगिन को * तुम्हरे काम सिद्धि हुइ जायँ ॥
इतनी सुनतै नर मलिखे के * तुरतै गुदरी लई मँगाय ॥
ढेबा मलिखे बाना बदलो * अंग विभूती लई लगाय ॥
राग रागनी गावन लागे * मोहित भये बीर बैताल ॥
राह पकरिलइ झारखण्ड की * पहुँचे चारि घरी में जाय ॥
गुरू झिलमिलाकी मठियामें * जोगिन अलख जगाई आय ॥

राग रागिनी जोगी गावैं * सुनतै मोहि जायँ नर नार ॥
सुनी रागिनी गुरु झिलमिला * तब जोगिन से कही पुकारि ॥
कौन देश ते तुम आये हो * आगे कौन देश काँ जाउ ॥
कौन देश में कुटी तुम्हारी * औ है कहा गरू को नाम ॥
तबहें मलिखे बोलन लागे * बाबा सुनौ हमारी बात ॥
देश हमारो बंगाला है * है गोरखपुर कुटी हमार ॥
गुरू हमारे हैं गोरख जी * अब हम हरद्वार को जाँय ॥
रस्ता भूलि गये जंगल में * सो तुम रस्ता देउ बताय ॥
गुरू झिल मिलाबोलन लागो * जोगिउ सुनौ हमारी बात ॥
करौ तमाशा तुम मठिया में * फिरि हम रस्ता दिहैं बताय ॥
इतना सुनतै दोउ जोगिन ने * अपने बाजा दिये बजाय ॥
राग रागिनो गावन लागे * मोहित होहिं बीर बैताल ॥
मलिखे नाचै वा मठिया में * कछु तारीफ करी ना जाय ॥
गुरू झिलमिला मोहित हुइगा * तब जोगिन से कही सुनाय ॥
जो कछु इच्छा तुम्हरी हावे * सो तुम माँगि लेउ हरषाय ॥
मलिखे माँगो तब मेढ़ा को * बाबा सुनत गयो घबराय ॥
यहतौ मेढा है बिजमा को * याको हम दीबे को नायँ ॥
तब धिरकारो नर मलिखे ने * बाबा झूठो ज्ञान तुम्हार ॥
कहिके बाबा तुम बदलति हो * तुम्हरे जीवन को धिरकार ॥
झूँठी बोलौ जोगी हुइके * तुम्हरो जोग भंग हुइजाय ॥
आइ काइली गइ बाबा को * खोलिके मेढ़ा दश्रो गहाय ॥
मलिखे बोले फिरि बाबा ते * बाबा अरज सुनो चितलाय ॥
चेला करिहैं हम मेढ़ा को * याते मानुष देउ बनाय ॥
झोरी लैके गुरू झिलमिला * तुरतै जादू दई चलाय ॥

जादू लागी जब मेढ़ा के * मानुष बने उदैसिंह राय ॥
तीनौं चलिभे तब मठिया से * बाबा राह दई बतलाय ॥
थोरि दूरि जब जोगी पहुँचे * तब ऊदनि ने कहो बुझाय ॥
जो सुनि पैहै रानी बिजमा * मानुष भये लहुरवा भाय ॥
जादू करिकै फिरि हरि लैहै * याका करिहौ कौन उपाय ॥
तेहिते तुमको समुझावतिहौं * दादा मानो बात हमार ॥
विषकी पुरिया यहु बाबा है * याको देउ जान से मारि ॥
लौटि मलिखे तब रस्ता से * औ मठिया माँ पहुँचे आय ॥
गुरु भिजमिला पूछन लागो * अब क्यों मदी मँझाई आय ॥
मलिखे बोले तब बाबा से * हमका पानी देउ पिलाय ॥
लैकै लोटा बाबा चलि भे * सो कुँआटा पर पहुँचे आय ॥
पानी भरन लगे जब बाबा * मलिखे दीन्ही तेग चलाय ॥
शीशकाटिकै गुरु भिजमिल को * औ कुँवना माँ दयो गिराय ॥
झोरी लै लइ सब जादू की * तीनौं चलि दीन्हें हरषाय ॥
कछुक देर केरे अरसा माँ * तीनों लश्कर पहुँचे आय ॥
आल्हा देखो जब ऊदनि को * तुरतै छाती लियो लगाय ॥
कही हकीकति नर मलिखेने * जेहि विधि मिले लहुरवाभाय ॥
बोले ऊदनि फिरि आल्हा से * दादा मंडरीक औतार ॥
तोप लगावो लोहागढ में * फाटक धरती देउ गिराय ॥
आल्हा बोले फिरि ऊदनिसे * राखौ धीर लहुरवा भाय ॥
यक हरिकारा का बोलवावौ * सो माड़ौ काँ देउ पठाय ॥
बिना लड़ाई जो कारज हो * तो क्यों रारि बढ़ाई जाय ॥
बैर हमारो थो करिया से * ताको खेतन दियो गिराय ॥
हार नौलखा लाखा पातुर * औ खोपरिन काँ देइ पठाय ॥

तौ हम लौटि जायँ महुबे को * नाहक रारि बढ़ाई जाय ।।
सुनिके बातैं ये आल्हा की * तब सैयद ने कही सुनाय ।।
धामन भेजि देउ जल्दी से * अब ना रावो देर लगाय ।।
तिसरी लड़ाई यह पूरन भइ * करिया खेतन दिया गिराय ।।
चौथि लड़ाई नृप जम्बै की * आगे लिखिहौं युद्ध बनाय ।।

अथ जम्बै की लड़ाई

सुमिरन करिके नारायण को * शंकर पारबती पद ध्याय ।।
लिखौं लड़ाई नृप जंबै की * यारौ सुनियो कान लगाय ।
लैके कागद कल्पी वालो * आल्हा लिखैं हाल समुझाय ।।
पत्री भेजत मैं तुमका हौं * पढ़ियो याहि बघेले राय ।।
इच्छा होवै जो लड़िवे की * अपनो खेत बुहारौ आय ।।
रारि मिटावन की इच्छा हो * तौ तुम मानौ बात हमारि ।।
हार नौलखा लाखा पातुर * रिजमाँ को डोला देउ पठाय ।।
बामन बचुका पश्मीना के * हमरी नजरि गुजारौ आय ।।
खुपरी लैके मेरे बाप की * हमका मिलौ आगरू आय ।।
दूजी करिहौ जो हमरे संग * माड़ौ गर्द दिहौं करवाय ।।
चारौ लरिका तुम्हरे जूझै * तुम्हरो मुँड़ लिहौं कटवाय ।।
पत्थर कोल्हू माँ पिरवैहौं * महुबे खोपड़ी दिहौं टँगाय ।।
बंद लिफाफा करिचिठियाको * सो धामन काँ दई गहाय ।।
धामन चलिभौ बबुरी बनसे * सो लोहागढ़ पहुँचो आय ।।
लगी कचहरी नृप जम्बै की * भारी लागि रहा दर्बार ।।
पहुँचो धामन महुवे वालो * जा जम्बै को करी जोहार ।।
पाँच पैग से कुन्नस करिके * पाती गद्दी दई चलाय ।।

खोलि के पाती जंबै बाँची * आँकुइ आँकु नजरि करिजाय ॥
पाती बाँचत परलै हुइ गइ * नैनन रही लालरी छाय ॥
अपने पंडित का बुलवावो * औ यह कही बघेले राय ॥
नीको साइत हमैं बताओ * जाते काम सिद्धि हुइ जाय ॥
खोलि पत्तरा पण्डित देखो * सबलगनन को कियो बिचार ॥
बोले पण्डित फिर राजा ते * राजा मानो बचन हमार ॥
साढ़े साती परो शनीचर * अठयें परो बृहस्पति आय ॥
दृष्टि चंद्रमा को पीछे है * समुहें काल विराजो आय ॥
जो जो माँगैं महुवे वाले * सो तुम उन्हैं देउ पहुँचाय ॥
बोले राजा तब पंडित से * पंडित कटिगो ज्ञान तुम्हार ॥
कोइ न अम्मर है दुनियाँ माँ * ना अमरौती आयो लिखाय ॥
डोला माँगति हैं बेटी को * सबके मूँड़ लेउँ कटवाय ॥
जाति बनाफर की ओछी है * कोइ न पियैं घड़ा को पानि ॥
दागु लागि है रजपूती में * सारी बिगड़ जायगी शान ॥
लौटि जवाब लिखो चिट्ठीको * पढ़ियो याहि बनाफर राय ॥
मनके बढ़िया तुम लरिका हो * बनमें खेलौ जाय शिकार ॥
जीवत डोला यहु ना मिलि है * नाहक डरिहो मूड़ कटाय ॥
जोगति कीन्हीं दस्सराज की * सोई करौं तुम्हारी आय ॥
नाहिंत लौटि जाउ महुबेको * क्यों तकरार बढ़ाई आय ॥
बन्द लिफाफा करि जम्बै ने * सो धामन कौं दियो गहाय ॥
धामन चलिभो गढ माड़ो ते * सो बबुरी बन पहुँचो आय ॥
जहाँपै तम्बू नुनि आल्हा को * धामन तहाँ पहूँचो आय ॥
करी बन्दगी नुनिआल्हा को * पाती गही दई चलाय ॥
खोलिके पाता आल्हा बाँची * आँकुइ आँकु नजरि करिजाय ॥

पाती बाँचति परलै हुइ गइ * गुस्सा गई बदन में छाय ॥
तुरत नगड़चो को बुलवायो * सोने कड़ा दिये डरवाय ॥
बजै नगाड़ा मेरे लश्कर माँ * सारी फौज होय तैयार ॥
पहिले नगाड़ा भइ जिनबन्दी * दुसरेमाँ बाँधि लीन्ह हथियार ॥
तिसरे नगाड़ा के बाजति खन * चत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै * बाँके घोडन के असवार ॥
चौंथे नगाड़ा के बाजति खन * लश्कर चला महोबे क्यार ॥
हाथी पचशावद त्यार करायो * तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ी सिहिनी पर सैयद हैं * ऊदनि बेंदुल पर असवार ॥
घोड़ी कबुतरी पर मलिखे हैं * ढेबा मनुरथा पर असवार ॥
कूच करायो बबुरी बन से * लोहा गढ़की पकरी राह ॥
चारि घरी को अरसा गुजरी * लोहा गढ़ में पहुँचे आय ॥
हुक्म दै दियो तब आल्हाने * जल्दी तोपैं देउ लगाय ॥
बत्ती दै देउ सब तोपन में * लोहा गढ़ काँ देउ उड़ाय ॥
यक हरिकारा दौरति आवै * सो जम्बै तिर पहुँचो आय ॥
काहे गाफिल तुम बैठे हौ * तुम पर चढ़े बनाफर राय ॥
फाटक घेरो लोहा गढ़ को * अपनी तोपैं दई लगाय ॥
सुनिके बातैं हरिकारा की * जम्बै उठे भरहरा खाय ॥
जायके पहुँचे मेगजीन में * खलासिन से कही सुनाय ॥
जितनी तोपैं हैं माड़ो की * सो बुर्जन पर देउ चढ़ाय ॥
बत्ती दै देउ मेरि तोपन माँ * महुबे वालेन देउ उड़ाय ॥
हुक्म पायके चले खलासी * सगरी तोपैं दई चढ़ाय ॥
आग लगाय दई तोपन में * धुँअना रह्यो सरग मँड़राय ॥
दगी सलामी दोनौं दल में * चहुँदिशि रही अँधेरिया छाय ॥

गोला छुटैं जो बुर्जन से * मानो लश्कर देइँ जलाय ॥
तकि तकि गोला मलिखे मारे * लोहा गढ़माँ ना अनियाय ॥
खलभल परिगो महुबे दलमें * चत्री गिरे भूमि भहराय ॥
तीनि पहर भरि गोला बरसो * गोलन्दाज गये घबराय ॥
कील न हाली लोहागढ़की * तोपैं सकल भईं बेकाम ॥
मास उड़ाय गये चुटकिन के * तोप दरोगन दिये जवाब ॥
मेरे भरोसे अब ना रहियो * यहँ तोपन को नाहिं बसाय ॥
सुनि के बातैं दारोगन की * आल्हा बहुत गये घबराय ॥
ऊदन बोले तब आल्हा से * भैया सुनो हमारी बात ॥
जितनी फौजें हैं महुबे की * सो सब जल्दी लेउ हटाय ॥
फौजैं भेजि सफर मैना को * नीचे सुरंग देउ खोदवाय ॥
भरि बारूदैं तिन सुरङ्ग माँ * ऊपर झाँखर देहु डराय ॥
आगि लगाय देहु झँखरनमाँ * सब लोहा गढ़ देहु गिराय ॥
यह मन भाय गई आल्हा के * तुरतै दीन्हो हुक्म लगाय ॥
सुरँगैं खुदन लगीं लोहा गढ * तिनमाँ दई बारूद भराय ॥
झाँखर लाये बबुरी बनते * सोऊ खन्दक दिये भराय ॥
बत्ती दै दई है झखरन माँ * औ भट्टीसी दई जलाय ॥
लपटैं बाढ़ीं बारूदन की * सीसा पिघिल २ रहिजाय ॥
उड़ी दिवालैं लोहा गढ़ की * छर्रा आसमान लौं जाय ॥
फाटक टूटो लोहा गढ़ को * सोऊ गिरो धरनि अर्राय ॥
धावा करिदओ नर मलिखेने * त्रत्रिन खैंचि लई तलवार ॥
जितनी लश्कर थो फाटक पर * सो सब दियो जानसे मार ॥
खलभल परिगो गढमाड़ो माँ * अब कोउ घोर घरैया नायँ ॥
बढ़े सिपाही महुबे वाले * फाटक निकरि गये वा पार ॥

आगे आगे पैदल पल्टन * ताके बाद चले असवार ॥
जितनी तोपैं थीं महुबे की * सो सब आगे दई जुताय ॥
यक हरिकारा दौरति आवै * सो जम्बै तिर पहुँचो आय ॥
भरी कचेहरी राजा बैठे * तब हरिकारा कही सुनाय ॥
कौनसि निदियामाँसोवतिहौ * ओ महराज बघेले राय ॥
फौजैं आई हैं आल्हा की * तिन लोहा गढ़ दियो गिराय ॥
सुनिकै बातैं हरिकारा की * जम्बै बहुत गये घबराय ॥
तुरतै जम्बै उठि ठाढ़े भये * सारी सभा उठी भर्राय ॥
खलभल परिगौसबक्षत्रिनमाँ * क्षत्री कानन माँ बतरायँ ॥
हुक्म दै दियो नृप जम्बै ने * सारी फौज होय तैयार ॥
लश्कर साजै चारि घरी माँ * जेहि का सजत न लागै वार ॥
बजो नगाड़ा गढ़ माड़ौ माँ * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले नगाड़ा भइ जिनबन्दी * दूसरेमाँबाँधि लीन्ह हथियार ॥
तिसरे नगाड़ा के बाजतिखन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
करी तयारी नृप जंबै ने * घट गंगा जल लियो मँगाय ॥
असनान ध्यान राजाने * चन्दन चौकी बैठे जाय ॥
करिके गणनायक को * अपने इष्ट देव को ध्याय ॥
जितना गहना रजपूती का * जम्बै पहिरि लीन्ह हरषाय ॥
भौंरानन्द हाथी सजवायो * मलियागिरकी सिढ़ी लगाय ॥
सिढ़ियन २ जम्बै चढ़िगे * औ हौदा माँ बैठे जाय ॥
कूचको डंका तब बजवायो * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
कछुक देर केरे अरसा माँ * मुर्चा डटो बरोबरि आय ॥
क्यागति बरनौं त्यहिबेराकी * बूते हाल कहो ना जाय ॥

झुके सिपाही दोनौं दलके * खटखट चलन लगी तरवार ॥
चलै दुधारा कोता खानी * औ बूँदी की असल कटार ॥
सनसनसनसन छुटैंकमनियाँ * गोली मघा बूँद झरिलाय ॥
झुके महोबिया रणके भीतर * दोनौं हाथ करैं तरवार ॥
भजे सिपाही माड़ौ वारे * अपने डारि २ हथियार ॥
भजत सिपाही जम्बै देखे * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
कौन सूरमा है महुबे को * जिन यहु धुरो दबाओ आय ॥
कान भनक ऊदनिकेपरिगइ * तरतै घोड़ा दिओ बढाय ॥
एँड़ लगाई रस बेंदुल के * दुइ मस्तीक अड़ाये पायँ ॥
ढालकिओझड़ऊदनि मारी * सोने कलशा दिये गिराय ॥
रिसहा हुइके नृप जम्बै ने * अपनो दीन्हों गुर्ज चलाय ॥
चोट बचाई बघऊदनि ने * घोड़ा पाँच कदम हटि जाय ॥
लगी चपेटा रस बेंदुल के * घोड़ा खड़ा खड़ा थर्राय ॥
देखि हकीकति यह जम्बैकी * ढेबा दीन्हीं तेग चलाय ॥
चोट बचाई नृप जम्बै ने * अपनो धमकौ गुर्ज उठाय ॥
जखमी हुइके घोड़ा मनुरथा * सो समुहें ते गयो बराय ॥
राजा जम्बै की डपटनि में * सबदल रैनबेन हुइ जाय ॥
राजा जम्बै के समुहें ते * भागन लगे महोबिया ज्वान॥
जौन ओर के दलमाँ पैठे * सबदल काटि करै खरिहान ॥
बहुतक क्षत्री भागन लागे * औ मुर्चाते चले पराय ॥
ऊँचे खाले कायर भाजे * जे रन दुलहा चले बराय ॥
प्राण पियारेजिन क्षत्रिनको * काँधे लई बकुचिया डारि ॥
हमैं न मरियो हमैं न मरियो * हम ढालन के बेचन हार ॥
कोऊ रोवति है लरिकनकाँ * कोऊ पुरखिन काँ चिल्लाय ॥

कोऊ रोवति है तिरिया कों * अबहीं लाये गमन कराय ॥
देखि दशा यह नृप जम्बै की * मलिखे घोड़ी दई बढ़ाय ॥
जायके पहुँचे वे आल्हा ढिग * औ यह मलिखे कहो सुनाय ॥
जुलुम गुजारे नृप जम्बै को * सारो फौज गई बिल्लाय ॥
हमरी बरोबरि को नाहीं है * नाहित लेतो कैदि कराय ॥
बरनी तुम्हारी को जम्बै है * अबना राखौ देर लगाय ॥
सुनिके बातैं ये मलिखे की * आल्हा हाथी दियो बढ़ाय ॥
लइ जँजीर तुरतै आल्हा ने * पचशावद को दइ पकराय ॥
सोकर फेरी पचशावद ने * लश्कर तिड़ी बिड़ी हुइजाय ॥
फौजैं भाजीं गढ़ माड़ो की * कोई शूर न आड़े पायँ ॥
देखि हकीकति यह जम्बै ने * तुरतै हाथी दियो बढ़ाय ॥
जम्बै बोले सुनि आल्हा ते * तुम सुनि लेहु बनाफर राय ॥
हम तुम खेलैं समर भूमि में * दुइमें एक आँकु रहि जाय ॥
दस २ रुपिया के नोकर हैं * नाहक डरिहौ मूँड़ कटाय ॥
यह मन भाय गई आल्हा के * फिरि जम्बै ने कहो सुनाय ॥
चोट आपनी आल्हा करिलेउ * नाहित सरग बैठि पछिताउ ॥
प्राण तुम्हारे अब ना बचिहैं * रुका परो जमन के हाथ ॥
हँसिके आल्हा बोलन लागे * सुनिये बीर बघेले राय ॥
बंश हमारे यह रीती है * बाँधी रीति चँदेले राय ॥
पहली चोटैं हमना खेलैं * ना गौ ब्राह्मण करैं सँहार ॥
पहली चोटैं अपनी करि लेउ * मनके मेटि लेउ अरमान ॥
सुनि के बातैं मंडरीक की * जम्बै लीन्ही काढ़ि कमान ॥
हियरा डाटो सुनि आल्हा को * सन्मुख दीन्हो बाण चलाय ॥
आल्हा लेटि गये हौदा में * कैबर निकरि गयो सन्नाय ॥

साँगि चलाई तब जंबै ने * गज पचशावद गयो बराय ॥
बचिगा बेटा देवकुँवरि को * नीचे साँगि गिरी अरराय ॥
रिसहा हुइके तब जंबै ने * अपनी खैंचि लई तरवारि ॥
करी झड़ाका मंडरीक पर * बायें उठी गैंड़ की ढाल ॥
तीनि सिरोही हनि हनि मारी * खाली मूठि हाथ रहि जाय ॥
जंबै सोचे अपने मन माँ * हमरौ काल पहूँचो आय ॥
आजु सिरोही धोखा दै गइ * हम पर ब्रह्मा गये रिसाय ॥
धरि ललकारो नुनिआल्हाने * ठाकुर खबरदार हुइ जाय ॥
ढालकि औझड़ आल्हा मारी * धरती गिरो महावत आय ॥
देखि हकीकति यह जंबै ने * अपनी लई कटरिया हाथ ॥
हौदा के सँग हौदा मिलिगौ * हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
चारि घरी भरि चली कटरिया * कोई शूर न मानै हार ॥
आल्हा बोले पचशावद से * हाथी सुनौ महोबे क्यार ॥
सन्मुख वैरी रण में ठाढो * याको लेउ जँजीरन बाँधि ॥
रिसहा हुइ के पचशावद ने * तुरतै साँकर दई फिराय ॥
हौदा गिरिगै नृप जंबै तब * आल्हा लियो जँजीरनबाँधि ॥
जम्बै बँधतै परलै हुइगइ * भाजी फौज बघेले क्यार ॥
बहुत खुशी हुइ महुबे वालेन * जीति को डंका दियोबजाय ॥
जितने शूर हते महुबे के * सब माड़ौ माँ पहुँचे जाय ॥
रहो खजाना जो जम्बै को * सो आल्हा ने लियो लुटाय ॥
हाथी घोड़ा औ रथ तोपैं * सब की लूटि लई करवाय ॥
सो पठवाय दियो बबुरी बन * पहुँचे रंगमहल में आय ॥
आल्हा बोले तब धामन ते * जल्दी मातै लाउ लिवाय ॥
चलि भौ धामन तब माड़ौ ते * बबुरी बन में पहुँचो आय ॥

जहाँ पै तम्बू रनि देवै की * धामन तहाँ गयो नगिचाय ॥
हाथ जोरि के धामन बोलो * माता सुनौ हमारी बात ॥
तुमहिं बुलायो है आल्हा ने * जल्दी चलौ हमारे साथ ॥
तुरत पालकी तब मँगवाई * देवै तापर भई सवार ॥
चली पालकी रनि देवै की * जेहिका चलत न लागो बार ॥
चारि घरी को अरसा गुजरो * पलकी द्वारे पहुँची आय ॥
आल्हा उतरे पचशावद से * सो देवै ढिग पहुँचे आय ॥
चरण लागि के महतारी के * आल्हा माथे लिये लगाय ॥
ऊदनि उतरे रस बेंदुल से * चरणन गिरे लहुरवा भाय ॥
आशिष दीन्ही रनि देवै ने * जुग २ जियो लड़ैते लाल ॥
बोले ऊदनि तब देवै से * माता कुशलै लेउ बुलाय ॥
बाँदी भेजी तब देवै ने * औ कुशलाकाँ पठौ बुलाय ॥
बाँदी पहुँची रङ्गमहल में * औ कुशला ते कहौ सुनाय ॥
तुमहि बुलायो रनि देवै ने * जल्दी चलौ हमारे साथ ॥
सुनिके बातैं ये बाँदी की * कुशला गई सनाका खाय ॥
रानी चलि भइ रङ्ग महलते * सो द्वारे पर पहुँची आय ॥
हाथ जोरि के कुशला बोली * सुनियो बीर उदैसिंहराय ॥
हाथ न डरियोतुमतिरियनपर * इतनी मानौ कही हमार ॥
ऊदनि बोले तब कुशला ते * रानी सुनौ बघेले क्यार ॥
बैर हमार रहे करिया ते * ताको दियो जान से मार ॥
दोष हमारो यामें नाहीं * मनसे देखौ सोचि बिचार ॥
चीरा कलँगी हार नौलखा * लाखा पातुर देउ मँगाय ॥
बावन कंचुका पश्मीना को * बिजमा को डोला देउसजाय ॥
इतनो डंड हमारो चहिये * सो सब जल्दी देउ मँगाय ॥

जो २ माँगो बघऊदनि ने * सो सब रानी दियो मँगाय ॥
कूच करायो दरवाजे ते * औ कोल्हू ढिग पहुँचे जाय ॥
संगे डोला दोउ रानिन के * कुशला और दिवलदे माय ॥
पेड़ बरगदा को जहँ ठादो * ऊदनि तहाँ पहूँचे जाय ॥
झपटि खोपड़िया लइ ऊदनिने * औ छाती माँ लई लगाय ॥
थार सोबरन को मँगवायो * तामें आरति लई सजाय ॥
आरतिकरिकेउन खोपरिनकी * औ थारी माँ दई धराय ॥
आल्हा मलिखे कोल्हू मचिगे * ऊदनि काँतर दई धराय ॥
राजा जम्बै को ढेबा ने * तुरतै कोल्हू दियो दबाय ॥
ठाढ़ो पेरि दओ जम्बै को * पीछे मूड़ लियो कटवाय ॥
सो धरवाय दियो थारी में * कुशला गिरी मूर्छा खाय ॥
तब समुझायो बघऊदनि ने * माता धीर धरौ मन मायँ ॥
जैसी करनी तैसो भरनी * यामें दोष हमारा नायँ ॥
गढ़हा खोदै जो काहू को * ताके लिये कुआँ तैयार ॥
धर्म की माता हमरी लागौ * बैठी राज करौ गढ़ मायँ ॥
जो कोउ बैरी तुम्हैं सतावै * हमका खबरि दिहौ पहुँचाय ॥
धीरज दैके रनि कुशला को * ऊदनि बहुत दियो समुझाय ॥
हँसी खुपरिया दस्सराज की * खोपड़ी देखि बघेले क्यार ॥
धनि २ बेटा हमरे कहिये * धनि २ लहुरो पुत्र हमार ॥
बैरी मार दियो खेतन में * जुग २ जियो लड़ैते लाल ॥
डाह बुझाय गयो छाती को * धनि २ देवकुँवरि के लाल ॥
गया हमारी अब तुम करिके * खोपड़ी गङ्गा दियो सिराय ॥
आभा बोली नृप जम्बै की * सुनियो दस्सराज के लाल ॥
बंश नशाय दियो तुम हमरो * रहिगो पानि दिवंया नायँ ॥
खोपड़ी हमरी दाया करिके * तुम गङ्गा माँ दियउ सेराय ॥

डोला लैके रनि बिजमा को * राखो महल दूसरे आय ॥
हाथ जोरि कै ऊदनि बोले * दादा सुनौ वनाफर राय ॥
कौल हारिगे हम बिजमा ते * हमने गंगा लई उठाय ॥
खम्भ गड़ावो मलयागिर को * महलन भाँवरि देउ डराय ॥
रिसहा हुइ के आल्हा बोले * ऊदनि यह हुइबे की नायँ ॥
घटिहा राजा की बेटी है * ऊदनि मानौ कही हमारि ॥
जब सुधि करिहै भाइ बापकी * तुमका सोवत डरिहै मार ॥
तेहिते तुमका समुझावतिहौं * याको देउ जान ते मारि ॥
हाथ जोरि के ऊदनि बोले * सुनिये मगडरोक औतार ॥
हाथ न डरिहैं हम तिरिया पर * रण में झूठि परै तरवार ॥
आल्हा बोले तब मलिखे से * तुम बिजमा को डारौ मार ॥
इतनी बात सुनी आल्हा की * मलिखे खैंचि लई तरवारि ॥
करो झड़ाका नर मलिखे ने * घायल भई बिजैसिन नार ॥
घायल हुइकै बिजमाँ बोली * बालम सुनौ उदयसिंह राज ॥
आशा दैके कियो निराशा * ऐसी तुम्हैं मुनासिब नायँ ॥
जो तुम मरतेउ अपने करसे * हमरी तुरत मुक्ति हुइ जात ॥
जेठ हमारे मलिखे लागैं * जिनका चही न ऐसो बात ॥
शाप हमारो दादा लीजै * मन अपने माँ करि निरधार ॥
मारे जैहौ तुम धोखे माँ * जहँ ना मिलिहैं भाइ तुम्हार ॥
सुनिके बातैं ये बिजमाँ की * मोह में फँसे उदैसिंह राय ॥
गोदी लैकै बघऊदनि ने * फिरि बिजमाँते कही सुनाय ॥
अबकीबिछुरीफिरिकबमिलिहौ * रानी साँचु देउ बतलाय ॥
बिजमा बोली फिरि ऊदन ते * स्वामी सुनौ बात मन लाय ॥
नरवरगढ़ में नृप नरपतिकै * फुलवा हुइ जन्मौंगी जाय ॥
घोड़ा खरीदन काबुल जैहौ * तहवैं भेट होयगी आय ॥

इतनी कहतै रनि बिजमाँ ने * अपने दीन्हे प्राण गमाय ॥
लास उठाय लई ऊदनि ने * सो नद्दी माँ दई बहाय ॥
आल्हा चढ़िगे पचशावद पर * अपनो कूच दियो करवाय ॥
चलिभो लश्कर सब महुबे को * औ बबुरी बन पहुँचो जाय ॥
फूँट छुटि गइँ रजपूतन की * अपने डेरन पहुँचे जाय ॥
जितने शूर रहे महुबे के * सबको आल्हा लियो बोलाय ॥
काहुक दीन्हों शाल दुशाला * काहुक मोहरैं दई गहाय ॥
चीरा कलँगी दइ काहू को * काहु की तलब दई बढ़वाय ॥
करि सलाह मलिखे ऊदनिने * फिरि देवै ते कही सुनाय ॥
करिहैं गया जाय दादा की * माता हुक्म देउ फरमाय ॥
हुक्म दै दियो रनि देवै ने * ऊदनि कूच दियो करवाय ॥
राह पकरिलइ प्रागराज की * दोनौं गया करन को जायँ ॥
चलिभालश्करतुनिआल्हाको * सो महुबे की पकरी राह ॥
कछुक दिनाकीमंजिल करिकै * महुबो धुरो दबाओ जाय ॥
कछुक दूरि जब महुबो राहिगा * आल्हा रुपनै लियो बुलाय ॥
खबरि सुनावो गढ़ महुबे माँ * आये जीति बनाफर राय ॥
रुपना चलिभो तब लश्कर से * अपनी घोड़ी पर असवार ॥
जायके पहुँचो गढ़ महुबे में * जहँ दरबार चँदेले क्यार ॥
करी बन्दगी परिमालै को * दोनौं हाथ जोरि शिरनाय ॥
कही खबरि सब गढ़ माड़ौ की * जैसे लिये बाप के दायँ ॥
मल्हना ठाढ़ी सतखण्डा पर * हेरै बाट लरिकवन क्यार ॥
कोस दुइकते झगड़ा देखे * मल्हना मनमें करै विचार ॥
कौन से राजा को लश्कर है * जाकी गर्द लोपिगे भान ॥
तौ लौं ब्रह्मा को पहिचानो * गजपचशावद औ सुलिखान ॥
मल्हना उतरी सतखण्डा ते * सब सखियनको लियो बुलाय ॥
मंगलचार होय महलनमाँ * आरति सजन लगी हरषाय ॥

तौ लौं फौजैं दाखिल हुइगइँ * गढ़में दगन सलामी लाग ॥
जोति को डंकाबाजन लागो * आये जीति बनाफर राय ॥
आल्हा ब्रह्मा सुलिखे उतरे * दरवाजे पर पहुँचे जाय ॥
चरण लागिके रनि मल्हनाके * सो माथे माँ लिये लगाय ॥
आरति करिके रनि मल्हनाने * मस्तक टीका दियो लगाय ॥
कुशल क्षेम पूछी मल्हनाने * तब आल्हा ने कही सुनाय ॥
चरण प्रताप आपको माता * माड़ौ लिये बाप के दायँ ॥
चारौ बेटा नृप जम्बै को * सो खेतन माँ दिये गिराय ॥
कोल्हू पेरि दियो जम्बै को * मल्हना सुनत गई हरषाय ॥
हाथ फिराय दियो पीठी पर * आशिरबाद दियो सुख पाय ॥
जुगजुग जीवौ लाल लड़ैते * तुम्हरो बार न बाँको जाय ॥
आशिरबाद पाइ माता ते * तब चलि भये बनाफर राय ॥
आल्हा ब्रह्मा सुलिखे ढेबा * सैय्यद आदि शूर सरदार ॥
जायके पहुँचे सब बँगला में * जहँ दरबार चँदेले क्यार ॥
करी बन्दगी परिमालै को * दोनौंहाथ बाँधि शिरनाय ॥
सूरति देखी जब लरिकनकी * राजा छाती लियो लगाय ॥
हाल बतायो तब आल्हा ने * सुनतै खुशी भये परिमाल ॥
अँनद बधैया महुबे बाजै * घर घर होय मङ्गलाचार ॥
ऊदनि मलिखे गया ते लौटे * तिलका दिवला भई तयार ॥
दिवस पूँछिके शुभपण्डितते * सागर चुरियाँ दईं उतार ॥
इतनो युद्ध भयो माड़ों में * सो हम लिखिकै दियो सुनाय ॥
आगे युद्ध लिखौं सिरसाको * यारो सुनियो कान लगाय ॥
धरि हिय नारायण पद अंबुज * दोउकर जोरिशिवचरणलाल ॥
बार २ बिनवौं रघुनायक * अपनी भक्ति देहु सब काल ॥

* इति माड़ौ की लड़ाई सम्पूर्ण *

* श्रीगणेशायनमः *

* अथ आल्ह खण्ड *

सिरसा की पहिली लड़ाई।

* मलिखान विजय *

चैत्र शुक्ल नवमी तिथि सुन्दर * शुभ दिन समय जानमध्यान ॥
अवधपुरी दशरथ नृप गृहमें * प्रगटे रामचन्द्र भगवान् ॥
लक्ष्मण भरत शत्रुहन तीनौं * प्रगटे अमित दया के धाम ॥
सीता प्रकटीं जनकराज गृह * सब कहँ शिरधरकरौं प्रणाम ॥
चौदह वर्ष विपिनबसिरघुपति * देवन बिनय हृदय महँधारि॥
चुनि२ निशिचर सब हनिडारे * निर्भय किये देवमुनि झारि ॥
करि प्रणाम श्रद्धायुत सबकहँ * हिय धरिचरण शिवचरणालाल॥
छाड़ि सुमिरनी अब हियनाते * मैं महुबे को लिखौं हवाल ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ब्रह्मा * ढेबा आदि सूर भय काल ॥
जबसे उपजे गद महुबे माँ * जगि गये भाग रजा परिमाल॥
जबसे प्रगटे ऊदनि मलिखे * पकड़ी मौज रूप तलवार ॥
शाका बढ़न लगो महुबे की * काँपन लगे शूर सरदार ॥
लगी कचहरीतुनिआल्हा की * शोभा कछु कही ना जाय ॥
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन * तेहि पर तपैं बनाफर राय ॥
एक ओर बैठे ताला सैय्यद * यक ओर बैठे वीर मलिखान॥
नचैं कंचनी वा बङ्गला में * अँगुरिन भाव बताय बताय ॥
ओही समैया के औसर माँ * मलिखे चित्त उठा हरषाय ॥
उतरे मलिखे सिंहासन से * बोले हाथ जोरि शिरनाय ॥

एक बात तुमसों कहियतु हैं * दादा सुनौ बनाफर राय ॥
बहुत दिनाते बन बेलिन में * हम नहि खेलन गये शिकार ॥
आज्ञा तुम्हरी जो मैं पावौं * तौ घोड़ी पर होउँ सवार ॥
रिसहा ह्वैके आल्हा बोले * मलिखे सुनौ हमारी बात ॥
तुम्हरे जातै गढ़ महुबे ते * भैया कुशल न मोहिलखात ॥
जालिम भैया तू मलिखे है * तेरो कोइ न पावै पार ॥
सब तो मारति हैं शेरन को * तू वीरन को करै शिकार ॥
जो तू जावै बन बेलिन को * केहु राजा से अटकै जाय ॥
राति दिना भर चलै सिरोही * सारी फौज तहाँ खपिजाय ॥
मलिखे बोले तब आल्हा से * दादा मंडरीक औतार ॥
पहिली गारी पर ना बोलूँ * ना दूजी पर करूँ बिगार ॥
तिसरी गारी पर ना छोडूँ * मुख में ठाँसि देउँ तरवार ॥
हुक्म दै दिया तब आल्हा ने * मलिखे फाँदि भयो असवार ॥
एड़ लगाई तब घोड़ी के * घोड़ी उड़ी पवन के साथ ॥
सिरसा गढ़ केरे जंगल माँ * घोड़ी उतरि परी तेहि काल ॥
जहाँ शिकार करत बनडोलै * पारथ नाम पिथौरा लाल ॥
हिरना एक लखो पारथ ने * सो मलिखे ने दिया गिराय ॥
लौटि गर्दना नाहर कैसा * तब पारथ ने कही सुनाय ॥
कौन देश के तुम रहवैया * औ है कहा तुम्हारो नाम ॥
हमरी सीमा के अन्दर माँ * तुम्हरो यहाँ कौनसो काम ॥
बड़ी दूरि से घेरिके लाये * तुमने हमरी हनी शिकार ॥
भलो आपनो जो तुम चाहौ * जङ्गल निकरि जाउ वा पार ॥
गरजो मलिखे तब जङ्गल माँ * औ पारथ से कही सुनाय ॥
यह है सीमा गढ़ महुबे की * तू है कौन देश का राय ॥
बारह कोसों चौगिर्दा में * सीमा गढ़ महुबे को जाय ॥

कौन काज हित तुम आये हौ * सो सब साँची कहौ बुझाय ॥
पारथ बोला नर मलिखे से * सुनु राजन के राजकुमार ॥
यह है सीमा गढ दिल्ली की * सुनु ले सच्चे बचन हमार ॥
यहाँका राजा बच्छराज था * जो महुबे का राजकुमार ॥
जा दिन मरिगा बच्छराज नृप * सिरसा भयो बिना सरदार ॥
तबहीं सिरसा पृथ्वीराज ने * गढ दिल्ली में दिया मिलाय ॥
सिरसा गढ़का यह जङ्गल है * सिरसा तीनि कोस रहिजाय ॥
नाम हमारो पारथ कहिये * हमहैं पृथ्वीराज के लाल ॥
जल्दी समुहैं ते टरिजावो * क्यों शिर नाचिरहा है काल ॥
सुनिके बातैं ये पारथ की * बोले बिहँसि बीर मलिखान ॥
भली बात तुम हमहिं जनाई * धनि २ पुत्र धनी चौहान ॥
पिता हमारे बच्छराज थे * है मलिखान हमारो नाम ॥
जहाँ साहिबी मेरे बाप की * तहँ तुम कियो आपनो धाम ॥
भलो आपनो जो तुम चाहौ * पारथ मानौ बात हमार ॥
जल्दी सिरसा खालो करदेउ * नहिं दिन रात चलै तलवार ॥
बोले पारथ तब मलिखे से * ठाकुर सुनहु बात मनलाय ॥
होय पराक्रम जो देही में * तौ तुम खाली देउ कराय ॥
गुस्सा हुइके मलिखे बोले * तुमक्यों सिरसा लिया दबाय ॥
आठ रोज में खाली करिदेउ * नहिंगढ दिल्ली लिहौं लुटाय ॥
तख्त लूटि के बादशाह को * दिल्ली गर्द दिहौं करवाय ॥
गुस्सा हुइके पारथ बोले * औ मलिखे से कही सुनाय ॥
हिरनाधरदेउ तुम हियना पर * औ समुहें ते जाउ बराय ॥
बात बढ़ैहौ जो हियना पर * तो जमलोक दिहौं पहुँचाय ॥
बातन बातन बत बढ़ हुइगा * औ बातन माँ बाढ़ी रार ॥

गुस्सा हुइके तब पारथ ने * अपनी खैंचि लई तरवार ॥
करो भड़ाका नर मलिखे पर * मलिखे दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
तीनि सिरोही हनि २ मारी * मलिखे तीनौं गये बराय ॥
खैंचि सिरोही लइ मलिखेने * औ पारथ से कही सुनाय ॥
चोट तुम्हारी हमने झेली * हमरी लीजो गाज बचाय ॥
करो भड़ाका नर मलिखे ने * पारथ दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ा वाली * गद्दी कटि मखमल की जाय ॥
लगौ चपेटा जब घोड़ा को * घोड़ा खेत छोड़ि भगिजाय ॥
घोड़ा भागि चला पारथ का * ना रोके से रुकी लगाम ॥
पारथ भागिगया सिरसा को * मलिखे गया आपने धाम ॥
पारथ लेटा गढ़ सिरसा में * औ पलंग पर करै विचार ॥
नींद न आवै करवट बदलै * बोली तासु सुन्दरी नार ॥
स्वामी निधरक तुम सोवत थे * जैसे विपिन माहि मृगराज ॥
कौन आपदा तुमपर परिगइ * जो निशिनींद न आई आज ॥
पारथ बोला मृगनैनी से * प्यारी सुनौ हमारी बात ॥
आज दिवस जंगल महँ प्यारी * हम बन खेलन गये शिकार ॥
तहाँ मिलाप भयो बैरी से * नैनन निंदिया गई हेराय ॥
मलिखे बेटा बच्छराज का * वाने हमरी हनी शिकार ॥
बातन बातन बतबढ़ हुइगा * औ बातन मा बाढ़ी रार ॥
सिरसा माँगै अपने बाप का * मलिखे कठिन करै तरवार ॥
आठ दिनाकी मुहलति दैगा * बोली भई करेजे पार ॥
कछु तकरार भई जंगल माँ * हमरो घोड़ा दिया भगाय ॥
बड़ो लड़ैया बच्छराज का * रहि २ मेरो प्राण घबराय ॥
सुनि के बातैं ये पारथ की * रानी बहुत गई मुरझाय ॥

जैसे तिरिया पोच पुरुषकी * अपने मनहीं मन पछिताय ॥
बैठे कचहरी में जहँ आल्हा * तहँ पर गया बीर मलिखान ॥
दोउ कर जोरे मलिखे बोले * दादा सुनो बनाफर राय ॥
न्यारो किला हमैं बतलाओ * न्यारो फौज देउ करवाय ॥
अब आल्हा समुझावन लागे * भैय्या सुनौ बीर मलिखान ॥
हमतो ताबे चन्देले के * वो सरदार वीर मलिखान ॥
ताते जावो तुम महुबे को * जहँ दरबार चन्देले क्यार ॥
जो कोइ गढ़िया तुम्हैं बतावै * तामें रहौ बीर मलिखान ॥
सुनिके बातैं ये आल्हा की * मलिखे सोचि २ रहि जाय ॥
सोचि समुझिके मलिखे बोले * औ सैयद से कही सुनाय ॥
जादिन मरिगे पिता हमारे * तुम्हरी गोद गए बैठाय ॥
छोटीगढ़ियाहमकोमिलिजाय * ऐसी जतन देहु बतलाय ॥
बोले सैय्यद तब मलिखे से * बेटा सुनौ बीर मलिखान ॥
सिरसागढ़ था तुम्हरे बापका * कबजो कियो धनी चौहान ॥
अपनी सिरसागढ़ तुम लेलो * चाहै रार मारि बढ़ि जाय ॥
अब तुम चले जाउ महुबेको * औ राजा से कहौ बुझाय ॥
यह मन भाय गई मलिखे के * तुरतै चला गणेश मनाय ॥
जायके पहुँचि गया बँगलामें * जहँ पर बैठ चन्देले राय ॥
बैठे देखो जब राजा को * मलिखे तुरतै करी सलाम ॥
राजा देखो जब मलिखे को * तुरतै गोद लिया बैठाय ॥
राजा पूछैं नर मलिखे से * बेटा हाल देउ बतलाय ॥
कौनसी चिंता तुमकहँब्यापी * सुन्दर बदन गयो कुम्हिलाय॥
हे मम बेटा प्राण पियारे * कहँ लगतुमयशकरौं बखान ॥
ममहित लागि प्राणप्रण हारे * बहुतक बीर हने मैदान ॥

राज बढ़ायो तैं महुबे को * सम्पति भरी भवन में आय ॥
कंचन धाम रचे महुबे को * यशकी ध्वजा स्वर्ग लहराय ॥
शंका व्यापत कहत बदन ते * चुपके रहत चित्त घबराय ॥
संकट परो चित्त के ऊपर * चाचा खता माफ हुइजाय ॥
इन्हीं सुजन से दल संहारे * जीते महाबलिन के राज ॥
पिता हमारे को सिरसा गढ़ * सो चौहानन लिया दबाय ॥
आज्ञा होवे जो चाचा की * अपनो सिरसा लेउँछिनाय ॥
मारि भगावों मैं पारथ को * अपनो किला लेउँअपनाय ॥
आज्ञा दै देउ हँसो खुशी से * चाचा मेरे चन्देले राय ॥
किला बाँधि धूरे पर बैठे * महुबे की सीमा देउँ बढ़ाय ॥
दबे बायसो चौहानन की * पहिले कटा देउँ करवाय ॥
रक्षा होवे गढ़ महुबे की * चाचा बचन करौ परमान ॥
जब दलसिन्धुझुकै दिल्ली से * पहिले लहरि लेय मलिखान ॥
सुनिके बातैं ये मलिखे की * काँपैं भूप चन्देले राय ॥
अब क्याहुक्म देउँमलिखे को * तौहू काज बनत कछु नायँ ॥
होय लड़ाई पृथ्वीराज ते * सारी फौज तहाँ खपिजाय ॥
सोचि समुझि के राजा बोले * मैं मलिखे की लेयँ बलाय ॥
तुम जनिअटको चौहानन ते * सदा २ को रारि बढ़ाय ॥
जीवतझगड़ा यहु ना मिटिहैं * बेटा सभी बंश नशिजाय ॥
तेहिते मानो कही हमारो * सिरसा सुरति देहु बिसराय ॥
हाथ जोरिके मलिखे बोले * चाचा करौ न शोच विचार ॥
हँसी खुशी से आज्ञा दै देउ * जासों सकल काज बनिजाय ॥
सिरसा जीति लेउँ पारथ से * औ महुबे माँ लेउ मिलाय ॥
चौकी हुइ जाय गढ़ महुबे माँ * जल्दी हुक्म देउ फरमाय ॥

सुनि २ बातैं ये मलिखे की * राजा सुन्न भये तेहि काल ॥
कही हमारी यह ना मनिहै * कलहा बच्छराज को लाल ॥
तौ लौं ऊदनि बोलन लागे * औ मलिखे से कही सुनाय ॥
भूमि काटि लेउ चौहानन की * धुर पर किला लेउ बनवाय ॥
अपनो तिलक आपकरिबैठो * क्या करि सकैं पिथौराराय ॥
निर्भय राज करौ सुखसोवौ * धारौ छत्रलाल जड़वाय ॥
तोपैं साजि देहु बुर्जिन पर * झंडा लहर लहर लहराय ॥
पृथीराज दिल्ली से देखैं * सुन्दर राज ध्वजा दर्शाय ॥
पै दुइचार दूत दामिन सम * हाजिर बने रहैं दर्बार ॥
हेरत दिशा रहैं दिल्ली को * परखत रहैं गगन गुब्बार ॥
जब वे निरखैं गढ़ दिल्लीसे * आवत चढ़े घनो चौहान ॥
दामिनि रूप दूत तब गवनैं * ना मग मध्य करैं जलपान ॥
जल्दी खबरि करैं महुबे में * पहुचैं सकल सूर सर्दार ॥
मारि भगावैं चौहानन को * अंधा धुन्ध चलै तरवार ॥
पै यक अर्ज करौं दादासे * मेरी खता माफ हुइ जाय ॥
करिअभिमानचुप्पजनिरहियो * नातरु सफलकाम नशिजाय ॥
सुनिके बातैं बघऊदनि की * मलिखे कहन लगे रिसिआय ॥
क्रोधअग्नितनमें उठिभभकी * नैनन रही लालरी छाय ॥
कायर घबरि करत संकटमें * सायर सिंह तकै नहिं आस ॥
रे मनहीन समरलखि काँपत * रणमें शूर करहि क्या त्रास ॥
कौन सो चिन्ता है मलिखेको * जो दल साजि चढ़ै चौहान ॥
पृथोराज क्या कालहु आवै * नाहीं त्रास करत मलिखान ॥
क्रोधित देखो नरमलिखे को * बोले नृपति चँदेले राय ॥
बार २ सुत मैं बरजति हौं * तजिहठ समुझि लेउ मनमायँ ॥

कठिन लड़ाई पृथीराज की * है दल अगम धनी चौहान ॥
तू मति छेड़करै सुन मलिखे * तजि हठ धारु सीखपर कान ॥
सुनिके बातैं ये राजा की * तब मलिखेने कही सुनाय ॥
हुक्म देत चाचा सकुचति हो * कारणसमुझिलियोमनमायँ ॥
चित्त आपके यह भासति है * चाचा खता माफ हुइ जाय ॥
मलिखे जूझैं समर भूमि में * हमरो नाश दिहैं करवाय ॥
शंशय छोड़ि देउ जियरा ते * मैं नहिं देउँ आपको त्रास ॥
विपतिपरेनहिं तुमहिं सतावों * यह प्रणनाथयही जियआस ॥
शब्द बेधि क्या शंकर आवैं * निजदल साजिचढ़ैं हनुमान ॥
यकलो युद्ध करै नर मलिखे * चाचा बचन करौ परमान ॥
नमितवदनमुखमलिननृपतिको * सोचैं शीश डारि परिमाल ॥
सीखदेत मलिखे दुख मानत * क्या कर्तव्य कृष्ण गोपाल ॥
हाथ पकरि राजा समुझावैं * तजु हठ पुत्र वीरमलिखान ॥
तू प्रिय अधिक मोहिं ब्रह्माते * जानत घात विश्व भगवान ॥
एक विसे तोकों दुख ब्यापै * हमको बीस विसे प्रियलाल ॥
हाथ जोरि तब मलिखे बोले * चाचा बचन करौ परमान ॥
यह मतिसमझो मन अपने माँ * आज्ञा भंग करत मलिखान ॥
जो कछु मर्जी परमेश्वर की * ताते पेश एक नहिं जाय ॥
यही बात हिरदे में व्यापति * जोकछु लिखाजगतसिरताज ॥
आज्ञा भंग करत जो सेवक * मरजी गिनौ विश्व भगवान ॥
विधिगतिसमुझिहुक्मदैडालो * अपने काज लगै मलिखान ॥
बोले चँदेले फिरि मलिखे से * तू खुद पुत्र करै विषपान ॥
कालकर्मऔ जगदीश्वरको * मिथ्यादोष देत मलिखान ॥
ताते कही मानु हठ तजि दे * आज्ञा देत पुत्र सकुचाउँ ॥
गहिरी स्वाँस लई मलिखेने * बोले हाथ जोरि शिरनाय ॥

सुन नर देवसकल यह भावै * सन्मुख आजु प्रकट दर्शाय ॥
करनी कठिन होत दुनियाँ में * कहनी सहज जगत में बात ॥
आज्ञादेत आप सकुचत हौ * कब दै सकत राज धन धाम ॥
सुनि के बातैं नर मलिखे की * राजा हृदय लगे जिमिबान ॥
लाभ न जानि परो बर्जन में * मरजी लखी विश्वभगवान ॥
बात बनाई तब राजा ने * औ मलिखे से कही सुनाय ॥
सहज बात सोंजोगदमिलजाय * क्यों तकरार बढ़ाई जाय ॥
भारी राजा कनवज वारे * भारी भूप पिथौरा राय ॥
तिन दोनों कों मैं बुलवैहौं * तुम्हरो न्याव दिहौं करवाय ॥
इतनी कहिके चन्देले ने * तुरतै चिट्ठी लिखी बनाय ॥
पृथीराज अरुनृप जैचन्द को * तुरतै महुबे लियो बुलाय ॥
भारी सभा राजन की बैठी * बैठे बड़े २ भूपाल ॥
आज्ञा लैके सब राजनकी * तव उठि अर्ज करी परिमाल ॥
भारी राजा तुम दोऊ हौ * जैचन्द और पिथौरा राय ॥
लड़िका बिचले हैं महुबे के * उनको न्याव देउ करवाय ॥
जो आपस में होय बखेड़ा * मुखड़ा मोर स्याह हुइजाय ॥
यहिकारजहिततुमहिं बुलायो * इनको बाँट देउ करवाय ॥
मलिखे माँगैंयक गदिया को * हमको हाथ गहे की लाज ॥
सुनिके बातैं ये राजा की * बोले पृथीराज महराज ॥
आधो महुबो या कालिंजर * तुम मलिखे को देउ बँटाय ॥
कानभनक मलिखेके परिगइ * बोला हाथ जोरि शिरनाय ॥
बिन आज्ञा मैं करौं ढिठाई * मेरी खता माफ हुइ जाय ॥
सीम दबाई तुम महुबे की * हमरो सिरसा लियो दबाय ॥
हमरो सिरसा हमका दैदेउ * मानो कही पिथौरा जाय ॥

अपना सिरसा मैं ना छोड़ूँ * चाहे तन धजी २ उड़िजाय ॥
सुनिके बातैं ये मलिखे की * पिरथी गये सनाका खाय ॥
भला फैसला हमने कीन्हा * यह शिर पड़ी हमारे आय ॥
बोले पृथीराज मलिखे से * का मति काटि दई भगवान ॥
सिरसा चौकी है पारथ की * जो है शूर बीर बलवान ॥
कठिन लड़ाई है सिरसा की * मलिखे कहो मानता नायँ ॥
जादिन बिगड़ैगी सिरसापर * मुँहका थूक बंद हुइ जाय ॥
कबसे मलिखे भये तरवरिहा * कब से बाँधि लई तलवार ॥
होय सामना जब पारथ से * मलिखे छोड़ि भगौ हथियार ॥
सुनिके बातैं पृथीराज की * तब मलिखे ने कही सुनाय ॥
ऐसी बातें फिरि ना कहियो * हमरे जोमें नाहिं समाय ॥
कडुआ पानी है महुबे को * हमसे बात सही ना जाय ॥
फिरि के ऐसी बाणी कहिहौ * नाहक जान तुम्हारो जाय ॥
बोले पृथीराज मलिखे से * सुनिले बच्छराज के लाल ॥
नाहक तुम तकरार बढ़ावत * नाहक सभा बजावत गाल ॥
तुम्हरी पारथ की बरणी है * करनी समुझि परैं रणमाहिं ॥
तेगा डारि भगौ महुबे को * पीछे फेरि देखिहौ नाहिं ॥
जैसे पान मे चूना लागै * डारत खैर लाल करिजाय ॥
ऐसी बात लगी मलिखे के * गुस्सा गई बदन में छाय ॥
खैंचि सिरोही लइ मलिखे ने * औ पिरथी से कही सुनाय ॥
छींकत घरसे तुम आये हौ * नाहक जान तुम्हारो जाय ॥
या गति देखी पृथीराज ने * चन्देले से कही सुनाय ॥
डाटौ डाटौ या लरिका को * नहिं नौलाख डटैंगे आय ॥
हाथ जोरि के कही चन्देले * तम सुनि लेउ पिथौरा राय ॥

या बालक ने करी ढिठाई * याकी खता माफ हुइ जाय ॥
बालक बूढ़े और बावले * इन तीनों का एक सुभाय ॥
ताते माफ करौ लड़िका को * है अज्ञान बाल नर राय ॥
डाटि चन्देले दौ मलिखे को * तुम्हरी लड़क बुद्धि ना जाय ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं है * इनकी करौ सामना आय ॥
तुरत पिथौरा उठि ठाढ़े भे * संगहि उठे सकल सरदार ॥
चले पिथौरा जब दिल्ली को * तब फिरिकही बीरमलिखान ॥
इतनी कहिओ वा पारथ से * सिरसा खाली देय कराय ॥
कही हमारी जो ना मानिहौ * तो मैं गर्द दिहौं करवाय ॥
पृथीराज मलिखे से बोले * पारथ तुम से कमती नायँ ॥
समर भूमिमें रण करि लै लेउ * जाको देय शारदा माय ॥
पिरथी चले गये दिल्ली को * जैचन्द कनवजकोचलिजायँ ॥
चर्चा सुनियो अब महुबे की * ब्यौरेवार कहूँ समझाय ॥
बहुतक बरजा चन्देले ने * मलिखे एक मानता नाय ॥
बिवश भये तब आज्ञा दैदइ * लड़िके लेउ सिरसवाँ जाय ॥
आज्ञा सुनतै नर मलिखे तब * तुरतै उठो चित्त हर्षाय ॥
चरण पकड़ि राजाके मलिखे * बोले बहुविधि बिनयसुनाय ॥
आज मनोरथ पूरण हुइगा * आज्ञा दई नाथ हरषाय ॥
बाँह पकरि तब नरमलिखेकी * बोले भूप शीश धरि हाथ ॥
निजधनुबाणसौंपि मलिखेको * करिकछुहृदयमध्यनिजध्यान ॥
सन्मुख चन्द्रलग्न सुखकारी * करिजाआजुगमनमलिखान ॥
जौन वस्तु की इच्छा होवै * कहि दे आजु राज दरबार ॥
सुनिपदपरसि कही मलिखेने * जब से दया करी महराज ॥
सर्व मनोरथ पूरण हुइगे * बनिगे सकल दासके काज ॥

दयासिन्धु कछु मोहिं न चहिये * यह धनु वाण रहो दरकार ॥
सो प्रभु सौंपि चुके सेवक को * अब क्या अर्ज करौं सरकार ॥
करि प्रणाम पुनि२ राजाको * मलिखे चले हृदय हरषाय ॥
भेंट भाँटि के सब भ्रातनको * रङ्ग महल में पहुँचे जाय ॥
तुरतै चरण छुये मल्हना के * औ माथे माँ लिये लगाय ॥
कही हकीकतिसबमलिखे ने * सुन खुश भई मल्हनदेमाय ॥
हँसिकै आज्ञा मल्हना दीन्ही * तहँते चला भँवर मलिखान ॥
जायकैपहुँचिगयोतिलकाढिग * दोउ कर जोरे करै प्रणाम ॥
हालु बतायो सब माता को * तिलका सोचि २ रहिजाय ॥
सोच समुझि के आज्ञा दैदइ * भुजबल पूजि दिये हर्षाय ॥
सुमिरण करिके जगदम्बे को * मनियाँ पूजि महोबे क्यार ॥
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठा * इकला चला शूर सर्दार ॥
सखा सनेही नर मलिखे के * जुरि मिलिसकलएकसौसात ॥
अस्त्रशस्त्रकसिचढ़िनिजघोड़न * पहुँचे सकल जहाँ मलिखान ॥
तिनहठकीन्हों संगचलिबेको * तब हँसिकहो वीरमलिखान ॥
तुम सब लौटिजाउ महुवे को * क्यों मम सङ्ग तजोगे प्राण ॥
हाथ जोरि सबने शिरनायो * बोले सजल नयनदुख पाय ॥
ऐसी बात कहौ जनि मुख से * हमको लाज लगत है भाय ॥
सुखमें सदा रहे तुमरे सङ्ग * दुख में छोड़ि भगौं मैं साथ ॥
बहुतभाँति मलिखे समुझायो * काहू एक न मानी बात ॥
काहुनसाथतजो मलिखे को * कीन्हों गवन खैंचि धनुहाथ ॥
इहिविधिचलिभावच्छराजका * अब महुवे को सुनो हवाल ॥
सकल शूर बैठे बंगला में * तब उठि कहो रजा परिमाल ॥
सिरसा युद्धकरन नरमलिखे * यकला कूच गयो करवाय ॥

जो कहुँ बर्दा होय खेतन में * हमरो जियन मरन हुइजाय ॥
फौज सजाय लेउ जल्दी से * अबना राखौ देर लगाय ॥
शिरपर ढाल बनौं मलिखेके * चाहे तन धजी २ उड़िजाय ॥
सुनिके बातैं चन्देले की * अति खुश भये उदैसिंह राय ॥
बोले सैय्यद तब राजा से * धीरज धरौ चन्देले राय ॥
जबतक जीवैं ताला सैयद * तुमका कौन पड़ी पर्वाय ॥
मारि भगावौं मैं पारथ को * सिरसा किला लिहौंअपनाय ॥
बोलि नगड़ची को बीग दौ * लश्कर डङ्का देउ बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब दल गर्ञ्जन * चत्री उठे भरहरा खाय ॥
ऊदनि चलिभै तब बँगला ते * फौजन बीच पहूँचे आय ॥
जितनी तोपैं गढ़ महुबे की * सो सब तुरत दई जुतवाय ॥
हाथी सजवाये कजरी बनके * सिंहल द्वीपी करे तयार ॥
कच्छी मच्छी ताजी तुर्की * हरियल घोड़ा दिये सजाय ॥
नये बछेड़ा जे काबुल के * सो सब तुरतैं दिये सजाय ॥
फौजैं साजी गढ़ महुबे की * यारो सुनियो कान लगाय ॥
दुसरे डङ्का के बाजति खन * चत्री फाँदि भये असवार ॥
हथि पचशावद पर आल्हा हैं * सैयद सिंहिनि पर असवार ॥
घोड़ी हिरौंजिनिपर सुलिखे हैं * ढेबा मनुरथा पर असवार ॥
घोड़ा बेंदुला त्यार खड़ा था * तापर चढ़े उदैसिंह राय ॥
कूच नगाड़ा के बाजत खन * चत्रिन कूच दियो करवाय ॥
लश्कर चलिभो गढ़महुबेको * डङ्का होति गोलमें जाय ॥
दबति अँधेरिया दल माँ आवै * हाहा कारी शब्द सुनाय ॥
गर्द उड़ानो आसमान लौं * सूरज रहे धुन्धि माँ छाय ॥
भण्डा लहर लहर लहरावैं * लश्कर टीडी सम दर्शाय ॥

बोले सैयद तब राजा से * धीरज धरौ चन्देले राय ॥
राह पकरि लइ गढसिरसाकी * घोड़ा चलै हिरन की चाल ॥
छमछम छमछम बजै पैजनी * दमकै अष्ट धातु की नाल ॥
हियाँकि बातैं हियनै छोड़ौ * अब मलिखे को सुनौ हवाल॥
वीर केहरी गढ़ महुबे को * बाँका बच्छराज का लाल ॥
जायके पहुँचे तब बाहनपुर * तहँधुर लगा सिरसवाँ जान ॥
सब भट उतरि परे घोड़न ते * सीमा पूजि करी जलपान ॥
करि विश्राम चले सब योद्धा * घोड़ा पवन वेग हंकार ॥
मुदित बतात जात आपस में * पहुँचे चिल्ह नदी के पार ॥
तीनि कोस जब सिरसा रहिगौ * मलिखे डेरा दिये लगाय ॥
सब भट उतरि परे घोड़न ते * रेशम तङ्ग दिये उतराय ॥
राति बसेरो करि डाँड़े पर * भोरहिं उठे वीर मलिखान ॥
करि अस्नान अश्व सब धोये * पुनि २ करी इष्टको ध्यान ॥
लैके कागद कलपी वालो * अपनी कलम दवात निकाल॥
पहिले लिखिके सरनामा को * फिरिपारथको लिखो हवाल ॥
इच्छा होवै जो लड़िबे को * अपनो खेत बुहारो आय ॥
बिना युद्धजो रारि मिटावो * सिरसा खाली देउ कराय ॥
किला हमारो हमकाँ दैदेउ * नातरु होय युद्ध घमसान ॥
भजे न बचिहो गढ़ दिल्लीलौं * तुम पर चढ़े वीर मलिखान ॥
यहिविधिचिट्ठीलिखिमलिखेने * ऊपर दीन्हीं मुहर लगाय ॥
बन्द लिफाफा में करि दीन्हीं * औ धामन का दई गहाय ॥
चलिभौ धामन गढ़सिरसाको * पहुँचो बीच बजारन जाय ॥
लगी कचहरी नृप पारथ की * जो है पृथीराज का लाल ॥
नचै कञ्चनी तेहि बँगला में * अँगुरिन भाव बताय बताय ॥
तौलौं धामन नर मलिखे को * सन्मुख पहुँचि गयो हरषाय ॥

पाती बाँची जब पारथ ने * देही अग्नि ज्वाल हुइ जाय ॥
तुरतै ज्वाब लिखा पारथ ने * मलिखे सावधान हुइ जाउ ॥
कठिन लड़ाई है सिरसा की * सीधे किला मिलनको नायँ ॥
भलो आपनो जो तुम चाहौ * चुप्पै लौटि महोबे जाउ ॥
निशिदिनयुद्धहोयसिरसापर * जोतै सोइ लेय अपनाय ॥
ऐसी चिठ्ठी लिखि पारथ ने * सो धामन का दई गहाय ॥
चलिभोधामन गढ़ सिरसासे * अपनी साँड़िनी पर असवार ॥
तौं लौं लश्कर गढ महुबेका * पहुँचो आय चिल्ह के पार ॥
लश्कर देखो नर मलिखे ने * मन में सोचैं बारंबार ॥
कौन देश को यहु लश्कर है * को चढि आये धनी चौहान ॥
झंडा देखि परो महुबे को * मनमें खुशी भयो मलिखान ॥
जहाँ पै तम्बू नर मलिखे को * लश्कर तहाँ पहूँचो आय ॥
तनिगे तम्बू र जंगल माँ * झराडन रही लालरी छाय ॥
लगी कचहरी तुनि आल्हाकी * भारी लागि रहा दर्बार ॥
तौ लौं धामनदाखिल हुइगा * पाती गही दई चलाय ॥
पाती बाँची तुनि अल्हा ने * औ मलिखे काँ दई सुनाय ॥
पाती सुनतै नर मलिखे के * गुस्सा गई बदन में छाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * लश्कर डंका देहु बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * चत्री उठे भरहरा खाय ॥
पहिले नगाड़ा भइ जिनबन्दी * दुसरेमाँबाँधि लीन्ह हाथयार ॥
तिसरे नगाड़ाके बाजतिखन * चत्री फाँदि भये असवार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
लगो मोरचा गढ. सिरसा पर * बूते हाल कहो ना जाय ॥
हियाँ कि बातैं हियना छोड़ो * अब सिरसा की सुनो हवाल ॥

बोला चत्रिन ते तेहि अवसर * पारथ नाम पिथौरा लाल ॥

अथ पारथ की लड़ाई

आये महोबिया हैं महुबे ते * सबकी कटा देहु करवाय ॥
जितनी तोपैं गढ़ सिरसा में * सब चरखिन पर देहु चढ़ाय ॥
जितने हय गज हैं लश्कर में * सो सब जल्द होयँ तैयार ॥
मारि भगावो इन पाजिनको * खेतन विषम चलै तरवार ॥
सुनिके बातैं ये पारथ की * चत्रिन होश बन्द हुइ जाय ॥
जो कोइ नाम सुनै मलिखेको * मुँहको थूक बन्द हुइ जाय ॥
नामसुनतखन अघ ऊदनको * करकीतेग धरनि गिरि जाय ॥
सुनसान बँगला में हुइगइ * चत्री सबै भये हुशियार ॥
बजो नगाड़ा गढ़ सिरसा में * चत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले नगाड़ामइ जिनबन्दी * दुसरे माँबाँधि लीन्ह हथियार ॥
तिसरे नगाड़ा के बाजत खन * चत्री फाँदि भये असवार ॥
सुमिरन करिकै इष्टदेव को * पारथ हौदा पहुँचे जाय ॥
कूचको डंका तब बजवायो * लश्कर कूच दिया करवाय ॥
चारि घरी केर अरसा में * पहुँचो समरभूमि में आय ॥
लगो मोरचा दोउ ओर से * तोपैं डटीं बरोबरि जाय ॥
सन्मुख फौज देखिमलिखेको * पारथ हुक्म दिया फर्माय ॥
दै देउ बत्ती मेरि तोपन माँ * इन पाजिन काँ देउ उड़ाय ॥
इतनी सुनिके उठे खलासी * औ तोपन पर पहुँचे जाय ॥
बत्ती दैदइ तिन तोपन में * धुँआ रहो स्वर्ग मड़राय ॥
दोऊ ओर से दगी सलामी * रणमें रही अँधेरिया छाय ॥
अररर अररर गोला छूटैं * गोलो मघा बूँद झरिलाय ॥

सररर छूटैं बान अगिनियाँ * कछु तारीफ करो ना जाय ॥
एक पहर भरि गोला बरसो * तोपैं लाल बरन हुइ जायँ ॥
चढ़ी कमनियाँ पानी हुइगइँ * चुटकिन के गये मास उड़ाय ॥
मारु बन्द भइ तब तोपन को * ज्वानन घोड़ा दिये बढ़ाय ॥
पाँच कदमको अन्तर रहिगो * साँगैं खैंचि लई हरषाय ॥
साँगै घूमैं दोनौं दल में * ऊपर बरछिन की भइ मार ॥
छुटे पिचिका तहँ लोहू के * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
दोनों फौजन के अन्तर माँ * रहिगो डेढ़ कदम मैदान ॥
खैंचि सिरोही लइ क्षत्रिनने * भारी युद्ध होय घमसान ॥
पैदल के संग पैदल भिरिगो * औ असवारन से असवार ॥
हौदा के संग हौदा भिरिगौ * ऊपर भई तेगकी मार ॥
चारिघरी भरि चली सिरोही * रणमें बही खून की धार ॥
हौदा गिरिगै रे लोहू ते * औ चुचुआति फिरैं असवार ॥
मुर्चन मुर्चन मलिखे घूमैं * सब से कहैं पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हो * तुम सब भैया लगौ हमार ॥
भागिजो जैयो कोइ मोहराते * तो रजपूती जाय नशाय ॥
सिरसा जीति लिहों पारथते * दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
दियो बढ़ावा जब मलिखे ने * क्षत्री बीर रूप हुइ जायँ ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * अपनो मया मोह बिसराय ॥
जैसे भेड़हा भेड़िन पैठे * जैसे सिंह बिडारै गाय ॥
तैसेइ युद्ध कियो ज्वानन ने * सब दल काटि दियो बिलाय ॥
भगे सिपाही सिरसा वाले * अपना मया मोह बिसराय ॥
पाँव उखरिगै चौहानन के * रणमें मानि गये सब हार ॥
फौज भागिगइ सब पारथ की * पारथ सोचि २ रहिजाय ॥

तोप मोरचा मलिखे छीना * हा दैया गति कही न जाय ॥
सूरज अस्त भये तेहि अवसर * पारथ सिरसाको चलि जाय ॥
इत सब क्षत्री महुबे वाले * अपनें डेरन को चलि जायँ ॥
पारथ लौटा गढ़ सिरसा में * नैनन निदिया गई हेराय ॥
ज्यों त्यों करिके राति बिताई * भोरहिं उठा चित्त अकुलाय ॥
सोचि समुझिके मन अपनेमाँ * फिरि यक पत्री लिखी बनाय ॥
करत प्रणाम दास कर जोरे * दादा सुनौ पिथौरा राय ॥
मलिखे बेटा दच्छराज को * सिरसा चढा बहुत रिसियाय ॥
बहुतक युद्ध भयो धूरे पर * तेहिसब लश्कर दियो भगाय ॥
जल्दी मदद भेजि दिल्ली से * गढ़ सिरसा को लेउ बचाय ॥
नातरु सिरसा छीनि लेइगो * दादा बनत न एक उपाय ॥
इहि विधि पत्र लिखोपारथने * हरकारा को दओ गहाय ॥
चलिभोधामन तब सिरसा ते * दिल्ली बीच पहूँचो जाय ॥
जहाँ कचेहरी पृथ्वीराज की * धामन तहाँ पहूँचो जाय ॥
सात कदमते करी बन्दगी * पाती गद्दी दई चलाय ॥
पत्री बाँची बादशाह ने * मनमें बहुत गये खिसियाय ॥
चन्दन चौंड़ा औ धाँधू को * तुरतै लीन्हों निकट बुलाय ॥
हुक्म दै दिया पृथ्वीराज ने * जल्दी फौज लेहु सजवाय ॥
करौ चढाई तुम सिरसा को * अबना राखो देर लगाय ॥
जल्द बचाय लेहु सिरसा को * महुबो गर्द देहु करवाय ॥
इतनी सुनिके तब चौंड़ा ने * तुरत नगड़ची लिया बुलाय ॥
हुक्म दै दिया तब चौंड़ा ने * जल्दी डङ्का देहु बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब दिल्ली में * क्षत्री उठे हृदय हरषाय ॥
पहले नगाड़ा भइ जिनबन्दी * दुसरे माँ बाँधि लिये हथियार ॥

तिसरे नगाड़ा के बाजतखन * चत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी एकदन्ता सजवायो * तापर चढ़ा चौंड़िया राय ॥
गज भौंरानन्द त्यार करायो * धाँधू चढ़ा गनेश मनाय ॥
चन्दन सज्जा पर चढ़ि बैठे * कूचको का दियो बजाय ॥
सात लाख लश्कर संग लैके * तुरतै कूच दियो करवाय ॥
फिरिकछु सोचैपृथ्वीराज मन * औ एक धामनलिया बलाय ॥
तुरतै चिट्ठी लिखि राजा ने * औ सबहाल लिखो समुझाय ॥
चढ़े महोबियागढ़ सिरसापर * पारथ हारि गया मैदान ॥
पत्री लिख तेहि हमहिं पठाई * सुनिये धीरसिंह बलवान ॥
कुमक भेजि दइ हम दिल्लीसे * लश्कर सात लाख चढ़वाय ॥
तुमहूँ चले जाउ सिरसा को * अपनी लश्कर सङ्ग लिवाय ॥
मारि भगावो इन पाजिन का * महुबे सकल लेहु लुटवाय ॥
ऐसी पत्री लिखि धीरज को * औ धामन को दई गहाय ॥
धामन चलिभा गढ़ दिल्ली से * धीरसिंह तिर पहुँचा जाय ॥
पत्री देदइ धीरसिंह को * बाँचन लगो हृदय हरषाय ॥
पत्री पढ़ि के धीरसिंह ने * तुरतै लश्कर लिया सजाय ॥
जायके पहुँचा गढ़ सिरसामें * पाई खबरि बनाफर राय ॥
सुनी खबरि जबयह पारथने * मन में बहुत खुशी हुइजाय ॥
आल्हा सोचैं अपने मन माँ * धीरसिंहतर पहुँचा आय ॥
बड़ो शूरमा यह सुनियत हैं * याते कछू पेश ना जाय ॥
ताते याको बल अजमावों * आल्हा फाँदि भये असवार ॥
घोड़ा पपीहा त्यार करायो * आल्हा फाँदि भये असवार ॥
छोड़ि लगाम दई घोड़ा को * विषधर चलै पवन हुंकार ॥
उत ते आवत धीरसिंह थे * अपने हाथी पर असवार ॥

इतते आल्हा चले जात थे * घोड़ा पपीहा पर असवार ॥
आल्हा पहुँचे जब समुहें पर * तब धीरज ने कही सुनाय ॥
घोड़ा हटाय लेहु पाँजर को * रस्ता खाली देहु कराय ॥
आल्हा बोले तब धीरज से * ठाकुर सुनौ बात मनलाय ॥
कद्दर घोड़ा यहु ना हटि है * अपनो हाथो जाउ बचाय ॥
सुनिकै बातैं ये आल्हा की * धीरज बहुत गये रिसियाय ॥
साँगि अड़ाय लई हौदा से * जो आल्हा पर दई चलाय ॥
घोड़ा पपीहा दहिने हुइगो * नीचे साँगि गिरी अरराय ॥
दुसरी साँगि लई धीरज ने * सो आल्हा पर दई झुकाय ॥
साँगिपकरलइ तुनिआल्हाने * सो ना धीरज सके छुड़ाय ॥
हौदा गिरन लगो हाथी को * धीरज छोड़ि दई शरमाय ॥
धीरज उतरि परे हाथी से * औ आल्हा तिर पहुँचे जाय ॥
बोले धीरज तब आल्हा से * ठाकुर नाम देहु बतलाय ॥
कौन देशकै तुम रहवैया * साँची हमहि कहौ समुझाय ॥
बोले आल्हा तब धीरज से * ठाकुर सुनहु बात मनलाय ॥
बस्ती कहिये नगर महोबा * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ॥
तिन के घरमें हम पैदा भये * हम हैं दस्सराज के लाल ॥
आल्हा नाम हमारो कहिये * आये तुमहिं मिलन नरराय ॥
मग में भेंट आपुसे है गइ * हमरो चित्त गयो हरषाय ॥
मन प्रसन्न हुइ धीरज बोले * धनि २ दस्सराज भूपाल ॥
ऐसे लरिका जिनके घर में * क्यों ना राज्ञ करैं परिमाल ॥
करो मित्रता धीरसिंह ने * दोनौं मित्र मिले हरषाय ॥
बोले आल्हा फिरि धीरज से * सुनिये मित्र बात मनलाय ॥
सिरसागढ़ है मेरे चाचा का * बादशाह ने लिया दबाय ॥

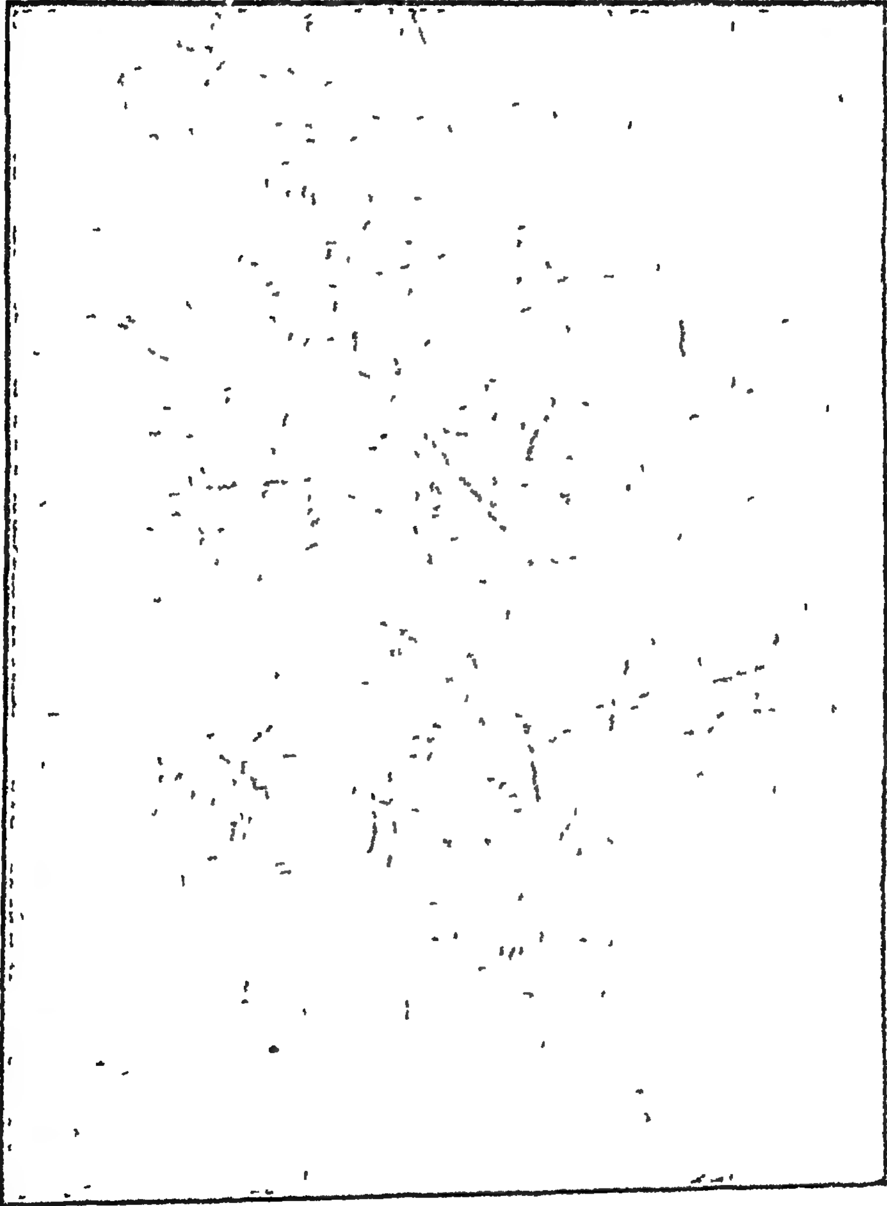
करी अदावत पृथीराज ने * सिरसा दिल्ली लियो मिलाय ॥
सिरसा माँगौ जब हम उनसे * तब उन साफ करी इन्कार ॥
कुमक भेजि दइ गढ दिल्लीसे * अनुचित उचित न करो विचार॥
आपु बुझाय कहौ पारथ से * सिरसा खाली देइँ कराय ॥
दस २ रुपया के चाकर हैं * नाहक डरि हैं मूड़ कटाय ॥
धीरज बोले तब आल्हा से * सुनिये मित्र बनाफर राय ॥
मनके बाढ़िया दिल्ली वाले * वे हटके से मनिहैं नायँ ॥
आज्ञा मानि आपकी प्रियवर * हम पारथ से कहिहैं जाय ॥
पैनहि आश चित्त महँ आवत * मानहिं पुत्र पिथौरा राय ॥
युद्ध जीतिके सिरसा लैलेउ * अपनो कब्जा लेहु कराय ॥
इतनी कहिके धीरज चलिभये * अपने लश्कर पहुँचे जाय ॥
आल्हा पहुँचे निज डेरनमें * धीरज पारथ लियो बुलाय ॥
ऊँचनीच सबकहि समुझायो * पारथ एक मानता नायँ ॥
पारथ चलिभो तब हुअँनासे * अपनो लश्कर लियो सजाय ॥
बजो नगाड़ा गढ सिरसा में * क्षत्री उठे भरहरा खाय ॥
पहले नगाड़ा भइ जिनबन्दी * दुसरे माँ साजि लियेहथियार ॥
तिसरे नगाड़ा के बाजतखिन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
कूचको डङ्का बाजन लागो * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
लश्कर चलिभो गढ सिरसाते * रण खेतन में पहुँचो आय ॥
खबरिपाय के बघ ऊदनि ने * अपनी फौज करी तैयार ॥
मारू डङ्का बाजन लागो * क्षत्रिन गही ढाल तरवार ॥
चारि घरी केर अरसा में * पहुँचे समरभूमि में आय ॥
तब जवाब पारथ ने दीन्हा * सुनिये बीर बनाफर राय ॥
धर्म युद्ध खेतन में करिलेउ * अभिरो एक एक से जाय ॥

जो कोइ जीतिजाय खेतनमाँ * बैठै जाय किला अपनाय ॥
यह मनभाई मंडरीक के * तब पारथ से कही बुझाय ॥
यही बात मेरे मन भाई * अभिरौ एक एक से आय ॥
पारथ मलिखे की बरनी है * चन्दन उदैसिंह जुटिजाय ॥
धीरसिंह ताल्हन को मुर्चा * आल्हा और चौंड़िया राय ॥
धाँधू ढेबा की बरनी है * ऐसे जुटे समर मैदान ॥
अपने अपने शस्त्र चलावैं * ताकैं दाँव घात बलवान ॥

अथ चौंड़ा धाँधू व चन्दन को लड़ाई

बहु छलबलिया महुबे वारे * बाल खेजारी पट्टेबाज ॥
जिनको काया अष्टधातु की * नहिं हथियार गड़ै महराज ॥
एक पहर भरि भई लड़ाई * बूते हाल कहो ना जाय ॥
हार जीति काहू ना मानी * शोभा बरन करी ना जाय ॥
मल्ल युद्ध की बरनी हुइगइ * रणमें उतरि परे बलवान ॥
पारथ हारि गया मलिखे से * जीता युद्ध वीर मलिखान ॥
चन्दन हारिगया ऊदन से * जीता युद्ध उदैसिंह राय ॥
निज २ बरनी के योधा हैं * बूते हाल कहो ना जाय ॥
धीरज हारि गया ताल्हन से * ऐसा पड़ा हारि का दाँव ॥
चौंड़ा हारि गया आल्हा से * धाँधू ढेबा से तेहि ठाँव ॥
गरजा मलिखे रण खेतन में * मानहुँ सिंह विपिन के मायँ ॥
फौज बढाय देउ आगे को * अब ना राखहु देर लगाय ॥
सुनिके बातैं ये मलिखे की * ऊदनि दीन्हीं फौज बढाय ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * अपनो मया मोह बिसराय ॥
सारी पल्टन और रिसाले * सबको मारा मार सोहाय ॥

असली बड़ा आल्हखण्ड



भार्गव भूषण प्रेस, काशी।

क्या गति बरनौंतेहिसमयाकी * कोई रँधे भात ना खाय ॥
रिमझिमरिमझिमगोलोबरसै * अगनी बान रहे सन्नाय ॥
चलै उनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
चलै कटरिया बूँदी वाली * औ तरवारि सिहानी क्यार ॥
उतते बढ़िगे दिल्ली वाले * इतते बढ़े महोबिया ज्वान ॥
दोनौं फौजैं यक मिल हुइगईं * रण में होय युद्ध घमसान ॥
मलिखे ऊदनि के मोहरा पर * बिरलै शूर गहैं हथियार ॥
हाथी बिगरो आल्हा वारो * रण में साँकर रहो घुमाय ॥
भाजीं फौजैं चौहानन की * कोई धीर धरैया नायँ ॥
हल्ला पड़िगो दोनौं दल में * सारे भाजि गये चौहान ॥
झुकै सिपाही महुबे वाले * फाटक घेरि लियो मलिखान ॥
हाथी हूल दिया आल्हा ने * फाटक गिरा धरणि अरराय ॥
घुसे सिपाही महुबे वाले * सिरसा लूटि दई मचियाय ॥
रैयति रोवै सब सिरसा की * बनिया रोवैं जार बेजार ॥
हाथ जोरि के रैयति बोली * ओ महराज बनाफर राय ॥
धर्म नहीं है ये राजन के * जो निज रैयति देइ उजारि ॥
पहले रैयति थे पारथ की * अब हम रैयति भये तुम्हार ॥
सुनिके बातैं ये रैयति की * मलिखे हुक्म दियो फरमाय ॥
लूटि बंद सिरसा में हुइ गइ * अपनो अहद लियो बैठाय ॥
पारथ पहुँचो गढ़ दिल्ली में * जहँ पर पृथोराज दरबार ॥
दोउ कर जोरे पारथ बोले * दादा जल्द होउ तैयार ॥
फौज सजाय लेहु जल्दी से * सिरसा होय युद्ध घमसान ॥
हमरो सिरसा हमहिं दिलादो * यह सुनि कही धनी चौहान ॥
धीर धरौ कछु दिन जियरामाँ * बेटा अभी समय है नायँ ॥

दाँव लगैगा केहु समया पर * लेहौं जङ्ग जीति अपनाय ॥
पारथ बैठि रहा दिल्ली में * अब सिरसाको सुनौ हवाल ॥
मलिखे पहुँचा बीचकचेहरी * बाँका बच्छराज के लाल ॥
करी सजावट गढ़ सिरसाकी * कछु तारीफ करी ना जाय ॥
अपनो तिलक आपु करि बैठे * मानहु इन्द्र रहो दर्शाय ॥
बैठे सिंहासन पर नर मलिखे * भेटैं देन लगे धनवान ॥
अपनो कृपा करी नारायण * सिरसा बसे बीर मलिखान ॥
बोले सैय्यद नर मलिखे से * बेटा सुनौ बात मन लाय ॥
अब तुम राज करौ सिरसामें * पालौ प्रजा पुत्र सम तात ॥
जितनी लश्कर बेटा चाहौ * तितनी लेहु चित्त हर्षाय ॥
बोले मलिखे तब सैयद से * चाचा मेरे तलन्सी राय ॥
बारह पल्टन बीस रिसाले * कछु तुपखाने देउ छुड़ाय ॥
कल्लू मुंशी शोभा सुनरो * चिंतामणि लुहार रणराय ॥
जो जो माँगो नर मलिखेने * सो सो दिया तलन्सी राय ॥
त्यारी करिदइ गढ़ महुवे की * जीति को डङ्कादियो बजाय ॥
आल्हा ऊदन ढेवा सैयद * महुवे पहुँचि गये ततकाल ॥
सुनी खबरि जब चन्देले ने * बहुतै खुशी भये परिमाल ॥
यहिविधिछीनिलियोसिरसागढ़ * बैठो छत्र धारि बलवान ॥
करो सजावट गढ़सिरसा की * कंचन कोट दिये बनवाय ॥
किलाअगमफिरिनरमलिखेने * नये सिरे से दिया बनाय ॥
चारिहु ओर कङ्गूरा सोहैं * कंचन कलश धरे सजवाय ॥
दुइ दुइ लाल जड़े तिन ऊपर * रवि शशिकिरन रही शरमाय ॥
खाई अगम बनी सिरसा की * डूबो जाय लजि्ज पाताल ॥
तीनि द्वारहैं गढ़ सिरसा के * जिन महँ लागे बज्र कपाट ॥

रच्छा हेत बली भट बिचरैं * जिन बलदेहिं मेरुगिरि काटि ॥
पुर के रच्छक जहँ तहँ डोलैं * धारे अस्त्र शस्त्र बहु भाँति ॥
इहिविधि गढ़सिरसाकीशोभा * वर्णन करत चित्त सकुचाति ॥
बड़ बड़ वीर सुभट नर केहरि * जिनकी रही जगत में धाक ॥
तिनभजिशरणगहीमलिखेकी * प्रणतजिडारिसुजस पर खाक ॥
एक दिवस मलिखे मन सोचे * लिख यक पत्र करो तैयार ॥
बिनय पत्र महुबे को भेजो * इहि बिधि लिखी प्रेमव्योहार ॥
जुग जुग जिओ इन्द्रपदभोगो * जब लग सूर्य चन्द दरशाय ॥
प्रभु पद पद्म परसि महुबे से * जो मैं बिदा भयो महराज ॥
केवल नाथ प्रताप आपके * बनिगे सकल दास के काज ॥
अबयहविनयनाथमलिखेकी * अंगीकार करो हुइ द्याल ॥
माता अरु मम मित्र सनेही * सिरसै भेजि देहु ततकाल ॥
पत्र बाँचि राजा सुख पायो * आये राजमहल में धाय ॥
सब रनिवासबोलि महलन में * पुनि पुनि पत्र पढ़ो हरषाय ॥
फिरि शुभ समय देखि राजाने * रथ गज बाजि करे तैयार ॥
तिलका और सब मित्र सनेही * सिरसहि भेजत करी न बार ॥
कुशलसहितसबसिरसापहुँचे * माता उतरि परी हरषाय ॥
कंचन कोटि देखि सतखंडा * रानी बहुत खुशी हुइ जाय ॥
धनि धनि पुत्र हमारे कहिये * धनि मलिखान लड़ैते लाल ॥
सब नर नारि सुखी सिरसाके * मिटिगे सकल दुःख भ्रमजाल ॥



अथ बलिपुरगढ़ विजय

* हाँकसिंह वदनसिंह से मलिखान की लड़ाई *

हाँक सिंह राजा बलिपुर के * थे अति शूर वीर बलवान ॥
सामा लागैं चौहानन के * कछु मन उपजि गयो मद मान ॥
सुनि २ यश मलिखेकोपजरैं * मनमें दुखी होयँ महराज ॥
मौका निरखि रहे लड़िबे को * तोपैं धरैं किला पर साज ॥
आस पास के दलगढ़ जीते * मारे शूर वीर बलवान ॥
राजबढायलियो बलिपुरको * दिल्ली होन लगो सन्मान ॥
नितउठिनजरि करैं पूरबको * सिरसा लखत हृदय दहलाय ॥
जा दिनगर्दकरों सिरसा को * ता दिन होय चैन जियमायँ ॥
यकदिनखबरिसुनोनर मलिखे * बाढ़ हाँक सिंह सरदार ॥
समय निहारि रहे सिरसपर * राखैं सदा कटक तैयार ॥
तुरत बुलाय लियो सेनापति * जल्दी फौज लेहु सजवाय ॥
बिजयकरनहितगढबलिपुरके * जल्दी फौज लेहु सजवाय ॥
हुक्म पायके सेनापति ने * सुन्दर कटक करो तैयार ॥
घोड़ी कबुतरी को सजवायो * मलिखे फाँदि भये असवार ॥
कूच कराय दियो सिरसासे * बलिपुर निकट गये निअराय ॥
तब सुधि पाई हाँकसिंह ने * तुरतहिं फौज लई सजवाय ॥
नैनझारपै दोउ दल मिलिगै * इत उत नग्न भई तरवार ॥
हाँकसिंह दल से छँटि निकसे * वाले घारि मूँछ पर ताव ॥
कौन सो क्षत्री है सिरसा में * सो समुहे हुइ देइ जवाब ॥
सुनि यह बात वीर नरकेहरि * दलसे निकरि गयो वहिपार ॥
दृष्टि परतही हाँकसिंह ने * मारो बाण धनुष पर धारि ॥

रक्तबहत लखि नरमलिखेके * तड़पे सकल शूर सरदार ॥
लै कर नग्न बढ़े आगे को * तब मलिखे ने कही पुकारि ॥
हाँकसिंह क्या पर्वत जानो * जो सब दौरि परे यक बार ॥
रक्तदेखि शंका मत मानो * कारज करो धैर्यहिय धारि ॥
जाके प्राण हनत इत आये * कछु तो मेटि लेहिं अरमान ॥
अपने हृदय बूझि प्रिय देखो * बिनअपराध हनौं किमिप्रान ॥
अब अपराध भयो बैरी से * अब जनि करै प्राणकी आस ॥
कर में तेग लई नर मलिखे * गुस्सा गई बदन में छाय ॥
बदनसिंह तौ लौं बढ़िआयो * मारी शक्ति बीर ढिग आय ॥
कड़िया कड़की नरमलिखेकी * लागी सिंह हृदयमें आगि ॥
सिंह समान बीर भट गर्जो * मानहु परो काल भटजागि ॥
तेगा मारो नर मलिखे ने * गिरिगौ शीश भूमि भहराय ॥
लाशि निहारी प्राण पुत्रकी * बौरे भये हाँक दुःख भाय ॥
महा शोक हिरदै महँ ब्यापो * दौरे हाँकसिंह खिसियाय ॥
आशा त्यागि दई जीवनको * नर से भिरे महा दुखपाय ॥
मल्लयुद्ध दोनौं भट अभिरे * दाबै हाँकसिंह हुंकारि ॥
पै नहिं जोर चलै मलिखे से * अतिशयशिथिलहोयमनमारि॥
अवसर देखो हाँकसिंह ने * मारी तेग बीर मलिखान ॥
चोट बचाई रण बौरे ने * हाँकसिंह को दियो गिराय ॥
हाँकसिंह उठि शर लै सजगे * मारी तेग बीर मलिखान ॥
पिंजरा परो रहो धरती पर * उड़िगै स्वर्ग पखेरू प्रान ॥
योधा भाजि गये बलिपुर के * गढ़ में खबरि सुनाई जाय ॥
बदनसिंह सुरपुर को रमिगये * मरिगये हाँकसिंह दुखपाय ॥
घर २ रुदन करहिं पुरवासी * पटकहि शीश पद्मिनी नार ॥

बलिपुर बीच मचो कोलाहल * पाई खबरि प्राण आधार ॥
बल्लभ भ्रात पिता सुधि पाई * रण के हेतु चलो हुंकार ॥
हटकत रहे बीर बलिपुर के * गढ़से निकसि भगो वहिपार ॥
आवत देखो सुत बल्लभ को * मलिखे डारि दियो हथियार ॥
धीरे धीरे गमनन लागे * सहमि न जाय राजसुकुमार ॥
बल्लभ पहुँचे जबमलिखेढिग * मलिखे लीन्हो हृदय लगाय ॥
हाथ फेरि हित से मुखचूमो * बहुविधि धीर दई समुझाय ॥
गद्दी बैठि न्याय निरवारो * भोगो पुत्र अटल यह राज ॥
तात भ्रात अरु बाल सनेही * हैं यह सकल स्वप्नके साज ॥
चिंता तजहुपुत्रनिजजियसन * देखौ कौन पवन लहराय ॥
बलिपुर अमलभयोमलिखेको * देखहु राज ध्वजा फहराय ॥
तलब करतसिरसा को आवो * भेजत रहो चौथि हरसाल ॥
जब तुम छेड़ करो सिरसासे * जैहौ तुरत काल के गाल ॥
बल्लभ बैठे सिंहासन पर * मलिखे तिलककियोनिजहाथ॥
ऐसेविजयकियो गढ़बलिपुर * को अब अधिक बढ़ावै गाथ॥
मलिखे मगनकियोसिरसाको * रण में बिजय दई करतार ॥
आगेबिजयलिखौंपड़ियल गढ़ * गुरुवर चरण हृदय महँ धार ॥



पड़ियलगढ़ विजय

* भालसिंह व मलिखान संग्राम *

भालसिंह पड़ियल के राजा * जैचन्द केर हितू सरनाम ॥
सम्पति अधिक भरी राजाके * कबहुँ न कनवज देहि छदाम ॥
जब से किला बनो सिरसाको * लखि २ भालसिंह अकुलाय ॥
यही बिचार रहे जियरा में * सिरसा गर्द देहुँ करवाय ॥
जब कर तलब करैं नृप जैचन्द * तुरतै भाल करैं तकरार ॥
जैचन्द तरह देहिं औसरको * पै नित होयँ क्रोध में ख्वार ॥
जब सुधि पाई नर मलिखे ने * पड़ियल चढ़े धनुष संधान ॥
आँखि मीचिगे कनवज वारे * खोटो हितू अधर्मी जानि ॥
लै दल बीर चलो सिरसा से * पड़ियल पहुँचि गये हर्षाय ॥
फौजैं आई भालसिंह की * दोउ दिशिभयो सामनाजाय ॥
बरसन बाण लगे दोनों दिशि * खट २ चलन लगी तरवारि ॥
सुरपुर रमन लगे भट योद्धा * लहरन लगी बिपतिकीब्यार ॥
खट २ खट २ चलै शिरोही * चहुँदिशि अन्धकार दर्शाय ॥
अपने पराओ ना पहिचानै * ज्वानन मारा मार सोहाय ॥
भालसिंह के बीर बहादुर * पीछे हटन लगे भय खाय ॥
भजत सिपाही अपने देखे * आगे बढ़े भाल सरदार ॥
बीर बली भट सिरसा वाले * दोनौं हाथ करैं तरवार ॥
यह गति देखी भालसिंह ने * आवत जँचो शीशपर गाज ॥
करि बिचार मनमन्त्र हदाया * छलसों करौं बीर को नाश ॥

वर्दी पहिरि भेष निज बदलो * त्यागी वीरजियन की आश ॥
बनिअसवारग्वालनगतिगमनो * कोई बीर न सको पिछान ॥
चोट खातमलिखेढिगपहुँचो * मारो बाण श्रवण लगि तान ॥
घूमिके मलिखे देखन लागे * दलमें भाल गये समियाय ॥
कोई न दृष्टिपरो मलिखे के * आगे बढो वीर खिसियाय ॥
समय पायके भालसिंह ने * मारी शक्ति हृदय रिसियाय ॥
आपु छिपायरह्योलाशिनमें * मुर्दा रूप रहो दर्शाय ॥
मलिखे धनुषबाणकर लीन्हें * बीरन स्वर्ग रहो पहुँचाय ॥
लेटे लेटे भालसिंह ने * मारो बाण क्रोध दर्शाय ॥
इत उत तकै बीर नर केहरि * पै कोइ बीर न परै लखाय ॥
देखत जबहिं लखै मलिखेको * सकुचै भालसिंह भयखाय ॥
गरजै मलिखे रण खेतन में * सब दल काटि करै संहार ॥
मौका पायो भालसिंह ने * पीछे लगो वीर के आनि ॥
औचकदृष्टि परी मलिखे की * मारी तेग शीश में तानि ॥
पिंजरा परो रहो धरणी पर * उड़िगै स्वर्ग वीर के प्रान ॥
शिरकटिगिरोकिलाके भीतर * रानी तुरत लियो पहिचान ॥
हाय २ करि रोवन लागी * सिरधुनि रुदनकरै सुकुमारि ॥
खलभलपरिगोगढ़पड़ियलमें * व्याकुल भये सकल नरनारि ॥
मलिखे बधत रहे लश्कर को * यह मन अपने करैं बिचार ॥
भाल सिंह सन्मुख नहि आवै * केहि विधि करौंदुष्ट को च्चार ॥
तौ लौं ध्वजासिंह ढिग आये * बोले हाथ जोरि शिरनाय ॥
मालिकविनाकटकक्योंनाशत * देदइ विजय तुम्हें जदुराय ॥
भाल सिंह सुर पुरको रमिगये * गढ़ से भाजि गये बलवान ॥
खालीकिला परो पड़ियलको * केवल नारि तजै यक प्रान ॥

मालिखेनजरि करी रिउनी पर * देखी बन्द तोपकी मार ॥
लश्करभगतलखौपड़ियलको * सिंहहिं देखिभजतजिमिस्यार ॥
बन्दन करिके इष्टदेव को * नाये शीश चरण बहुबार ॥
पुनिहँसिगमनकियोपड़ियलकै * लै भट सङ्ग शूर सरदार ॥
फाटक खुलेदेखि पड़ियल के * घुसिगे सकल वीर हर्षाय ॥
रंग रंग सामान निरखि सब * पहुँचे कोष द्वार पर जाय ॥
पहरा खड़े किए मलिखे ने * चुनि २ शूर बीर सरदार ॥
मलिखे पहुँचे मान बुर्जपर * बाँधो राज ध्वजा हर्षाय ॥
पड़ियलश्रहदभयो मलिखेको * निरखत राज ध्वजा दर्शाय ॥
निकट पधारो जब महलनके * रोवत सुनो पद्मिनी नार ॥
निर्भय महल घुमो नरमलिखे * सन्मुख खड़ाभयो शिरडारि ॥
रानी देखो जब मलिखे को * क्रोधित हाथ लई तरवार ॥
क्रोधज्वालहिय में उठिधधको * बोली सिंह रूप हुंकारि ॥
रे अज्ञानी मुझ अबला को * आयो आज हरन इत धाय ॥
रे शठ अबहिनाश करि डारौं * निर्भय घुसो भवन में आय ॥
हाथजोरि मलिखे शिरनायो * बोले लाज सहित भय खाय ॥
पुत्र रूप चरणन में ठाढ़ो * माता सुनौ बचन मनलाय ॥
जीवनमरणऔर यशअपयश * माता सकल ईश को हाथ ॥
दोष न देहु मात मलिखे को * चिन्ता तजहु धीर मन लाय ॥
आज्ञा देहु मात निजमुखसे * मैं घर जाउँ काज सम्हराय ॥
शीश हाथ लै प्राणप्रिया को * बोली आह खैंचि सुकुमार ॥
जो तू बीर चित्त को पूछै * पति बिनु आजलगे सबखार ॥
जो तू धर्म पुत्र बनि पूछै * जल्दी लाशि देहु मँगवाय ॥
अग्नि बुझाऊँ निजजीवनकी * भेंटौं पियै स्वर्ग में जाय ॥

मलिखे बात सुनी रानी की * कछु नहिं कहो धर्मभयखाय ॥
लाश न जानि परो वर्जन में * मलिखे लाशि दई मँगवाय ॥
चन्दन अगर भार मँगवायो * रानी चिता लई रचवाय ॥
लै पति लाशि चिता परपौढ़ी * सुखसे जरन लगी हर्षाय ॥
वेद रीति सुत आगराज को * मलिखे छार दई भेजवाय ॥
दुइ सै गज सुन्दर मतवारे * रथ अरुबाजिआदिकछुलाल ॥
भेंट हेत श्री परिमालै के * महुबे भेज दिये ततकाल ॥
बाकी माल खजाना आदिक * सो सब सिरसै दियो पठाय ॥
पुत्र नहीं था कोइ राजा के * पड़ियलसिरसा लियोमिलाय ॥
यहिविधिबिजयकियोगढ़पड़ियल*मलिखे बीर भयो सरनाम ॥
आगे युद्ध लिखौं विषगढ़को * जेहि बिधि भयो घोर संग्राम ॥

विषगढ़ विजय (मदनसिंह वो मलिखानयुद्ध)

सुमिरण करिके रामचन्द्र को * लै बजरंग बली को नाम ॥
विजय बखानौं मैं विषगढ़को * मलिखे और मदन संग्राम ॥
मदनसिंह विषगढ़ के राजा * राखैं बीस सहस असवार ॥
बिपिनमध्यनिजगढ़ रचवायो * बनमें राज करैं निर्धार ॥
शिर नहिं नावैं शब्द वेधिको * ना जैचन्दहि करैं जुहार ॥
मेल न राखैं चन्देले से * बनि रहे आपु राज मुख्तार ॥
रामसिंह गढ़पति के राजा * मारे अवध राउ रणराय ॥
भूपति बिवश कियो भूपाली * बाढ़े मदन चित्त सुखपाय ॥
समय विचारैं राजा जैचन्द * निरखैं पवन धनी चौहान ॥
इत उत शिथिलदेखिराजनको * उपजा मदनसिंह के मान ॥
नृपति चन्देले महुबे वाले * मो अति तुच्छ जचैं भूपाल ॥
ताल बजावैं लखि सिरसाको * हैं ये अभी कालिह के बाल ॥

यह सुधि पाई नर मलिखेने * बाढ़े मदनसिंह पम्मार ॥
तोपैं चढ़ी रहैं रिउनी पै * सिरसा करैं अचानक वार ॥
भुज बल फड़के नर मलिखेके * गति लखि अज करैं सर्दार ॥
पत्र भेजि देउ मदनसिंह को * आवहिं जल्द राज दरबार ॥
तजि अभिमानमिलौंसिरसाको * बिनती करैं आय शिरनाय ॥
तो क्यों रक्त जगत में लहरै * रणमें कौन लाभ दिखलाय ॥
सोचि समुझिके अपने मनमाँ * पत्री लिखी होत परभात ॥
पत्री लिखि धामन को दीन्हीं * औ यह कही ताहि समुझाय॥
उत्तर लावौ तुम बिषगढ़ से * अब ना राखो देर लगाय ॥
धामन चलिभौ तब सिरसासे * जेहिका चलत न लागै वार ॥
सभा पहुँचिके मदन सिंहकी * चिट्ठी दई राज दरबार ॥
पत्री पढ़तै मदनसिंह के * गुस्सा गई बदन में छाय ॥
लौटिजवाब लिखी चिठियाका * यारो सुनियो कान लगाय ॥
प्राण पियारे रनि तिलकाके * हे रणधीर बीर मलिखान ॥
करी डकैती पृथीराज की * तबसे भयो तुमहिं अभिमान ॥
चोरी कीन्हीं पृथीराज को * सिरसा किला लियो बनवाय ॥
वे नहिंसमय निरखि कछु बोले * तुम मलिखान चले इतराय ॥
तुम यह जानो अपने मनमाँ * है कोइ बीर भूमि पर नायँ ॥
अबलौं दास रहे महुबे में * निशि दिन किये बिरानेकाज ॥
पिछलेदिन अबतुमहिंभुलाने * रे खल नाहि लगत नहिं लाज ॥
अति आश्चर्य लगे मनमेरे * कैसे रङ्क भया महराज ॥
जो भइ स्यार लखो आँखिनसे * ता [illegible] भया मृगराज ॥
बिना युद्ध तू कर नहिं पावै * चाहै [illegible] उपाय ॥
लै दल आनि चढ़ो बिषगढ़पै * मारौं [illegible] जाय ॥

चिट्ठी दै दइ मदनसिंह ने * चलिभौ दूत तुरत शिरनाय ॥
सुभट बुलाये मदनसिंह ने * तिनते वीर कही समुझाय ॥
तोपैं चढी रहैं रिठनी पर * दल लै डटो खेत में जाय ॥
मुर्चा बन्दी करि बिषगढ़ की * बहिरो आवैं न भितरो जायँ ॥
धामन पहुँचो गढ़ सिरसा में * पाती पढ़ी बीर मलिखान ॥
क्रोध अग्नि तन में उठि भभकी * इत उत लखैं बीर मलिखान ॥
दानसिंह तौलों उठि बोले * स्वामी अर्ज सुनो मनलाय ॥
यह रण नाथ दासको सौंपो * बिषगढ़ गर्द देहुँ करवाय ॥
दंड बाँध के मदनसिंह को * प्रभु चरणन पर देहुँ गिराय ॥
सकल बीर हाँ हाँ करि बोले * मलिखे हुक्म दियो फरमाय ॥
अस्त्र शस्त्र गजबाजि पियादे * मलिखे सकल करैं तैयार ॥
एक हजार बीर सङ्ग लैके * गमने दानसिंह सरदार ॥
चारि कोसजबबिषगढ़ रहिगो * बीरन छोरि धरे सब साज ॥
आधि राति केरे अमला माँ * बिषगढ़गिरा अचानक गाज ॥
योधा सजग खड़े विषगढ़के * घूमिके चलन लगी तरवारि ॥
बड़े २ बीर बली भट योधा * दोनौं हाथ करैं तरवारि ॥
बड़े २ शूर बीर भट सायर * बिहँसत चले जाहिं तजिप्रान ॥
हाय २ करि कायर रोवैं * कायर त्यागि भगहिं मैदान ॥
ऐसे युद्ध भयो विषगढ़ में * बूते हाल कहो ना जाय ॥
शालसिंह विषगढ़ को योधा * छूटि के लड़त भये रिसियाय ॥
दालसिंह निज बाजि बढ़ायो * पहुँचे शालसिंह ढिग जाय ॥
भीषण युद्ध भयो दोनों में * एक ते एक बली भट जाय ॥
बाण चढ़ायो शालसिंह ने * दानसिंह को दियो गिराय ॥
शरके साथ प्राण तनु छूटे * लैगे लाशि बाल उठवाय ॥

मदन विहारी भट सिरसाका * पहुँचो शालसिंह ढिग जाय ॥
तिरछो वीर वाजि लै झपटो * मनमें बहुत गयो रिसियाय ॥
जब लग शाल बाण संधानै * तब लगि मदन दई तरवारि ॥
धरती शीश गिरो योधा को * जगसे बिदा भयो करझारि ॥
शालसिंह खेतन में जूझे * विषगढ बीर भजे भयखाय ॥
यह गति देखो मदनसिंह ने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
खैंचि धनुष निज शरसंधाने * मारो तीर अधिक रिसियाय ॥
मुर्छित मदन गिरे धरतीपर * सिरसा तकन लगे बिलखाय ॥
प्राण पखेरू गये स्वर्ग में * चोला रहो धरणि बिकलाय ॥
अफसर मरण लखो वोरनने * सिरसा बीर गये घबराय ॥
जितने बीर रहे सिरसा के * सबने मरण लिया अनुमानि ॥
तोनि कोस विषगढ़ते हटिके * तम्बू दिये विपिन में तानि ॥
मदनसिंहनिजमनअनुमानो * रक्षा करो विश्व भगवान ॥
भगवतसुमिरिकिलाको लौटे * लै निज संग शूर बलवान ॥
दुइ सवार छूटे लश्कर से * सिरसा खबरि सुनाई जाय ॥
दानसिंह अरु मदन बिहोरी * सुर पुर गये प्राण बिसराय ॥
बाकी फौज पड़ी जंगल में * रटि रहि नामवोर मलिखान॥
कारज नशे जात विषगढमें * स्वामी बेगि गहौ धनुबान ॥
सुनिके बातैं ये बोरन की * मलिखे अग्निज्वालहुइजाय ॥
भगवतसुमिरितुरतउठिगवनो * मनमें सुमिरि राम रघुराय ॥
बीर बली भटगढ़ सिरसा के * जहँ पर परे विपिन के मायँ ॥
आगारूप मलिखे भट पहुँचे * ज्शानन कमर कसो हर्षाय ॥
जब सुधि पाई मदन सिंहने * पहुंचो आय वोर मलिखान॥

तालै डारि दिये फाटक में * करिदिये सजगसुभटबलवान॥
नीर भराय दियो खाई में * गढ़ पर तोपैं दई सजाय ॥
गज छोड़वाय दियो द्वारे पर * इत उत तकनलगी भयखाय ॥
फौज आइ गई मलिखे की * बाँका बच्छराज का लाल ॥
योधा सजग भये विषगढ़के * मारैं अस्त्र समुझि निजकाल॥
मलिखेपहुँचोगज खूनिन्द पै * तिनका काटि कियो खरिहान ॥
वीर केहरी नर सिरसा का * निर्भय बढ़ो वीर बलवान ॥
तेगा खोंसि देइ पेटन माँ * आँतिहि निकसिगिरैं मैदान॥
शृंगमेरुसमगिरहिं धरणिपर * अति चिक्कार परी तेहि काल ॥
बोला परी रहै धरनी पर * प्राणी जायँ स्वर्ग ततकाल ॥
हाथी तड़पि रहे धरणी पर * कछुबिनसूँड़िचरणबिलखायँ ॥
शोच आइ गयो मदनसिंहके * धक्का लगो करेजे जाय ॥
मदनसिंह रिउनी पर ठाढ़े * मलिखे लड़ो समर मैदान ॥
गोला बरसि रहे रिउनी से * सरसर छुटैं अगिनियाँ बान ॥
लाखन लाश परी खाई में * लहरैं उफनि २ गज चाल ॥
चारौंवियरियनकामसकापरो * चहुँदिशिसमुझिपरैभयकाल ॥
बोले मदनसिंह मलिखे से * सुनु अज्ञान मन्द मलिखान ॥
अबहूँ लौटि जाउ सिरसाको * नाहक समर गमावौ प्रान ॥
बड़े बड़े वीरझुके विषगढ़पै * हरिलिये मदनसिंह ने प्रान ॥
खोपड़ी चुनी देखु बुर्जिनपर * तेरेहु प्राण जायँ मलिखान ॥
सुनिके बातैं मदनसिंह की * तब मलिखे ने कही सुनाय ॥
हारि मीचु खल तू क्या जानै * जानै विपति हरण यदुराय ॥
लाखन वीर मरे धरनी पै * क्या परवाह जायँ यह प्रान ॥

घोड़ी डाटो नर मलिखे ने * ऊपर उड़ी पंख फैलाय ॥
मदनसिंह ऊपर शर मारो * घोड़ो गिरी गाजसी आय ॥
तेगा मारो नरमलिखे ने * गिरिगौ मुकुटधरणिमहराय ॥
गुस्सा आई मदनसिंह को * कर में तेगा लइ खिसियाय ॥
जबलगिशरमलिखेधनुजोर्‌यो * कीन्हों मदन अचानक वार ॥
कछुक चपट लगी घोड़ी के * मलिखे बीर भयो हुशियार ॥
शर संधानी नरमलिखे ने * अतिरिसकोपिश्रवणलगितान ॥
वार बचायो मदनसिंह ने * अभिरो बहुरि तेग लै हाथ ॥
करो झड़ाका नरमलिखे पर * बख्तर तौर गई समियाय ॥
पै नहिं तेग बहुरि करआई * खाली मूठ हाथ रहिजाय ॥
मदनसिंह तब मन अनुमानी * हमरो काल पहूँचो आय ॥
तब लगि तेग दई मलिखेने * धरणी गिरे मदन महराय ॥
शीश काटिलौ नरमलिखेने * अब कोइ धीर धरैया नाय ॥
मदन मरत खन परलै हुइगइ * सेना भजन लगी भयखाय ॥
फाटकखोलि दिये मलिखे ने * गढ़में घुसे सिरसवाँ ज्वान ॥
चौकी करि दइ ठौर ठौर पर * जहँ तहँ खड़ो किये बलवान ॥
लूटि कराय लई विषगढ की * सो महुबे का दई पठाय ॥
राज्यमिलाय लियोसिरसामें * जीति को डङ्का दियाबजाय ॥
समाचार ऊदन को भेजो * विषगढ़विजयकियोमलिखान ॥
जबते बलिपुरपड़ियलविषगढ़ * जीतिकेमलिखेलियो मिलाय ॥
पूरण राज्य भयो सिरसाको * गढ़पति मिलनलगे भय खाय ॥
जितनोइसुयशबढ़ै मलिखेको * उतनोइ सुयश बढ़ै परिमाल ॥

ज्यों ज्यों राज्यबढ़े सिरसाको * गरुई होय महोबे डाल ॥
जितने राजा थे अभिमानी * रण में डारि भजे धनुबान ॥
औरनकी गिनती क्या करिये * खटका करन लगे चौहान ॥
पहिलि लड़ाई यह सिरसाकी * पूरण भई सुनहु मनलाय ॥
भूल चूक जो यामें होवै * सज्जन क्षमहि दया उरलाय ॥
हिय धरि चरणकमलगुरुवरके * सुमिरौं विपतिहरणयदुराय ॥
आगे ब्याह लिखौं आल्हाको * यारौ सुनियो कान लगाय ॥

॥ इति सिरसा की पहली लड़ाई समाप्त ॥



* श्रीगणेशायनमः *

* अथ आल्ह खण्ड *

* नैनागढ़ की लड़ाई *

* आल्हा *

नंद यशोमति के पद बंदौं * बंदौं कृष्ण चन्द भगवान ॥
पुनि पद बंदौं सब गोपिनके * जिनके मध्य कीन्ह हरिगान ॥
दीन दयालु प्रणत हितकारी * चाहत भक्ति भाव महराज ॥
कोटि काम शोभा गुण सागर * प्रगटे गोप मध्य ब्रजराज ॥
छोड़ि सुमिरनी अब आगेमैं * बरणौं मंडरीक को ब्याह ॥
जेहि बिधि ब्याह भयो नैनागढ़ * सो सब कहिहौं सहित उछाह ॥
नृप नैपाली नैनागढ़ को * राजा इन्द्र दियो बरदान ॥
अमर ढोल तेहिके घर कहिये * मुर्दन मध्य परहिं फिरिप्रान ॥
सुनमाँ बेटी नैपाली की * तेहि सब जादू पढ़े बनाय ॥
रूप की आगरी राजकुमारी * खेलत सखिन संगनितजाय ॥
एक सहेली बोलन लागी * बेटी सुनो हमारी बात ॥
कौने कारण क्वाँरी रहिगइँ * अबतौ युवा बैस दिखलाय ॥
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे * या धनहीन भये भूपाल ॥
या केहु टीका नाहिं चढायो * बेटी सत्य कहौ सब हाल ॥
सुनिके बातैं ये सखियन की * सुनमाँ रंग महल को जाय ॥
देखि अनमनी निज बेटी की * माता लीन्हो कण्ठ लगाय ॥
माता पूछैं फिरि बेटी से * काहे बदन रहो मुर्झाय ॥
बोली सुनमाँ तब माता से * औ सब साँची कही बुझाय ॥
हमरे संग की सखी सहेली * हमसे करैं हँसौआ आय ॥

कौने कारण रही कुँआरी * साँचा हमहिं देहु बतलाय ॥
सुनिके बातैं ये सुनवाँ की * रानी सोचि २ रहि जाय ॥
धीरज दैके निज बेटी को * फिरि बाँदी से कही सुनाय ॥
जल्द बुलाला तू राजा को * गुजरै घरी घरी पर वार ॥
बाँदी चलि भइ रंग महलते * पहुँची जाय बीच दरबार ॥
कहो सन्देसो नैपाली से * राजा रंग महल को जाय ॥
आवत देखा जब राजा को * रानी उठी भरहरा खाय ॥
रतन जड़ाऊ चौकी डारी * तापर बैठ पहाड़ी राय ॥
हाथ जोरि के रानी बोलै * स्वामी अर्ज सुनौ चितलाय॥
स्यानी बेटी घरमाँ हुइ गइ * अब कहुँ टीका देउ पठाय ॥
जल्दी व्याह रचौ बेटो को * अब ना राखौ देर लगाय ॥
इतनी सुनिके राजा चलिभै * पहुँचे बीच कचेहरी जाय ॥
कागद लैके कल्पी वाला * राजा पाती लिखी बनाय ॥
अमर ढोल हमरे घर कहियत * मुर्दन सुनत जीव परिजायँ ॥
जोगा भोगा दुइ बेटा हैं * जो मरिबेको नाहिं डेरायँ ॥
ऐसी पाती लिखि राजा ने * सो नेगिन को दई गहाय ॥
तीनि लाख को टीका लैके * सोऊ तिन्हैं दियो सौंपाय ॥
नाऊ बारी भाँट पुरोहित * बिजया बेटा संग पठाय ॥
टीका भेजो नैपाली ने * औ यह सबसे कही सुनाय ॥
महुबे नाहिं टीका लै जैयो * जहँ पर बसै बनाफर राय ॥
टीका लैके नेगी चलिभै * बिजया बेटा संग पठाय ॥
देश २ नेगी फिरि आये * टीका कोई कबूलै नायँ ॥
जैचन्द पृथ्वीराज से राजा * तिनने टीका दियो फेराय ॥
व्याहु न करिहैं नैपाली घर * ना हम फौज कटै हैं जाय ॥

तब लचार हुइ नेगी लौटे * नैना गढ़ में पहुँचे आय ॥
हाथ जोरि के नेगी बोलैं * ओ महराज पहाड़ी राय ॥
देश देश में हम फिरि आये * टीका कोई कबूलो नायँ ॥
इतनी बात सुनी नेगिन की * राजा बहुत गए खिसिआय ॥
सोचि समुझिकै नृप नैपाली * धूरे डङ्का दियो धराय ॥
रचो स्वयंबर रनि सुनमाँ को * सगरे राजा लियो बुलाय ॥
देश देश के राजा आये * धूरे तंबू दिये गड़ाय ॥
इतनी सुनिके भूप पहाड़ी * अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
ब्याह रचाइ देहु बेटी को * पहले डङ्का देइ बजाय ॥
जितने राजा तहँ आये थे * सबने अर्ज करी यह आय ॥
तुम्हरी बरोबरि के नाहीं हैं * हे महराज पहाड़ी राय ॥
कुमक तुम्हारी हम आये हैं * सबने नजर दई शिर नाय ॥
यहाँ कि बातैं हियनें छोड़ो * अब सुनमाँ को सुनो हवाल ॥
यह प्रण कीन्हों सुकुमारी ने * मैं आल्हा सँग करौं बिवाह ॥
कागद लीन्हो कलपी वारो * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
हीरा मणि तोता मँगवायो * पिंजरा पास लियो धरवाय ॥
सिद्धि श्रीनारायण लिखिके * ता पीछे से लिखो हवाल ॥
लिखी बन्दगीफिरिऊदनिको * देवर मेरे उदयसिंह राय ॥
देश देश टीका फिरि आयो * काहू ब्याह कबूलो नायँ ॥
मैं प्रण कीन्हों है अपने मन * की आल्हा संगकरौं बिवाह ॥
नातरु क्वाँरी रहौं जन्म भरि * देवर सुनियो कान लगाय ॥
बाना राखे रजपूती को * हमरी भाँवरि लेउ डराय ॥
ऐसी बातैं लिखि चिठिया माँ * सुआके गरे दई बँधवाय ॥
यह कहि दीन्हीं रनिसुनमाने * सुअना नगर महोबे जाउ ॥

पाती दीजो जा ऊदनि को * मनमें तनिक करेउ जनिवार ॥
सुआ उड़ानो नैनागढ़ से * ना मग मध्य करे विसराम ॥
तीनि दिवस मारग में बीते * पहुँचो नगर महोबे आय ॥
महुबे केरी फुलबगिया में * सुअना उतरि परो हर्षाय ॥
तौलौं ऊदनि बदलति आये * फुलबगिया में पहुँचे आय ॥
पाती गरे देखि सुअना के * तब ऊदनिने कही सुनाय ॥
कहाँ से पाती सुअना लाये * जैहौ कौन देश का धाय ॥
सुअना बोले तब ऊदनि से * ठाकुर सुनौ बात मनलाय ॥
पाती लाये नैनागढ़ से * रनि सुनमाँ ने दई पठाय ॥
महल बताय देहु आल्हा को * कहँपर मिलैं उदयसिंह राय ॥
ऊदनि बोले तब सुअना से * हमरो नाम उदयसिंह राय ॥
छोटे भैया हम आल्हा के * सुअना पाती दई गहाय ॥
पाती बाँची ऊदन बाँकुड़ा * मनमें बहुत खुशी हुइ जाय ॥
ऊदनिचलिभे फुलबगिया से * औ तोता को संग लिवाय ॥
जाय कचहरी दाखिल हुइगा * जहँ पर बैठ चन्देले राय ॥
करी बन्दगी परिमाल को * करमें पाती दई गहाय ॥
पाती बाँची चन्देले ने * औ गद्दी तर लई दबाय ॥
मलिखे बैठ थे दहिने पर * तब राजा से कही सुनाय ॥
कैसी पाती चाचा आई * जो गद्दी तर लई दबाय ॥
हाल बताय देउ पाती को * तब राजाने कही सुनाय ॥
पाती आई नैनागढ से * जहँ पर तपै पहाड़ी राय ॥
तेहिकी कन्या सुनमा कहिये * तेहि यह पाती दई पठाय ॥
देश देश टीका फिरि आयो * कोऊ ब्याह कबूलो नाय ॥
बड़े लड़ैया दोउ बेटा हैं * तेहि घर अमर ढोल घहराय ॥

पाती भेजी है सुनमाँ ने * ताते तुमहिं सुनाई नायँ ॥
कठिन लड़ाई नैनागढ़ की * मुर्दा बीर लड़ैं उठि धाय ॥
तेहिते मानौ कही हमारी * बेटा टीका देहु फिराय ॥
हाथ जोरिके मलिखे बोले * चाचा खता माफ हुइ जाय ॥
देश देश में नाम तुम्हारो * तुमका जानत सकल जहान॥
घरको आयो टीका फेरौ * तुमको हँसै सकल संसार ॥
टीका आयो अबना फिरिहै * चाहे आसमान टरि जाय ॥
व्याह रचैहौं मैं नैनागढ * चाहे प्राण रहे की जाय ॥
मलिखे बोले फिरि ऊदनि से * लशकर हुक्म देहु करवाय ॥
करो तयारी नैनागढ़ की * अबना राखो देर लगाय ॥
सुनिके बातैं ये मलिखे की * राजा रङ्ग महल को जाय ॥
मल्हना बोली हाथ जोरिके * काहे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
कौन आपदा तुमपर परगइ * साँची मोहि कहो समुझाय ॥
बोले राजा तब मल्हना से * रानी कछु कही ना जाय ॥
कठिन लड़ाई नैनागढ का * जहँ पर तपैं पहाड़ी राय ॥
तेहिकी बेटी सुनमाँ क्वाँरी * ताने टीका दियो पठाय ॥
बहुतक बरजो हम मलिखेको * मलिखे एक मानता नायँ ॥
तुम समुझाय देउ मलिखेको * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनिके रनिमल्हना ने * मलिखे ऊदनि लिये बुलाय ॥
मल्हना बोली तब मलिखेसे * बेटा साँची देहु बताय ॥
कहाँकि त्यारी तुमने कीन्हीं * साँचो हाल कहो समुझाय ॥
बोले मलिखे रनिमल्हना से * माता सुनो हमारी बात ॥
टीका आयो नैनागढ से * व्याहन हेत सुनमदे रानि ॥
तहाँकि त्यारी हमने कीन्ही * साँची तुमहिं दई बतलाय ॥

पञ्जा धरि देउ मेरी पीठीपर * जाते काम सिद्धि हुइजाय ॥
मल्हना बोली तब मलिखेसे * बेटा मेरे लड़ते लाल ॥
टीका फेरि देउ महुबे ते * इतनी मानौं बात हमार ॥
कठिन मवासी नैनागढ़ है * जहँ पर नैपाली को राज ॥
लड़ न जितिहौ तुम नैनागढ * ताते टीका देहु फेराय ॥
मलिखे ऊदनि दोनों बोले * माता धीर धरो मन मायँ ॥
आल्हा व्याहन को ना रहिहैं * यहु दिन कहिबेको रहिजाय ॥
घर को आओ टीका फेरैं * हमका हँसै सकल संसार ॥
ओछी बात परै राजन में * माता अकिल कहाँ तुम्हार ॥
व्याह रचैहैं हम दादा को * चाहे प्राण रहै की जाय ॥
आज्ञा दे देउ हँसी खुशी ते * जाते काम सिद्धि हुइ जाय ॥
सुनिके बातैं ये मलिखे की * मल्हना सोचि २ रहिजाय ॥
कही न मनिहैं ऊदनि मलिखे * ताते हुक्म देउ फरमाय ॥
रानी मल्हना बोलन लागी * तुम्हरो काम सिद्धि हुइ जाय ॥
दिवला तिलका औसबसखियां * मल्हना महलन लई बुलाय ॥
मंगल गान करन सबलागीं * मल्हना पंडित लियो बोलाय ॥
खोलि पत्तरा पंडित देखो * लग्नै सोधो चित्त लगाय ॥
पंडित बोले तब मल्हना ते * सब समान लेहु मँगवाय ॥
साइति नीकी या बिरिया है * अबहीं तेल देउ चढ़वाय ॥
ऊदनि बोले तब देवा से * भैया सगुन देहु बतलाय ॥
पोथी लैके समर सारकी * देवा देखो सगुन बिचारि ॥
सगुन देखिके देवा बोले * भैया सुनो उदयसिंह राय ॥
काम तुम्हारो पूरन हुइ हैं * अपनी फौज लेहु सजवाय ॥
मल्हना रानी नेग करावै * पंडित वेदी दई रचाय ॥

सखियाँ मंगल गावन लागीं * आल्हा बैठि चौक पर जाय ॥
पंडित मंत्र पढ़न पुनि लागे * गौरि गणेश हिये पुजवाय ॥
नेगिन नेग दियो मुँह माँगे * तुरत पालकी लई मँगाय ॥
जामा कङ्गन आल्हा पहिरो * दूल्हा बने बनाफर राय ॥
चली पालकी तब मंडप ते * औ कुँअटा पर पहुँची जाय ॥
मल्हना बैठि गई कुँअटापर * दोऊ पाँव दिये लटकाय ॥
पहिली भाँवरि के परतै खन * आल्हा मल्हनै लियो उठाय ॥
प्राण दान माता हम दीनों * अतिसुख भई मल्हनदे माय ॥
आशिर्बाद दियो रानी ने * जुग २ जीवो प्राण अधार ॥
चरण लागिके रनिमल्हनाके * आल्हा माथे लिये लगाय ॥
चरण छुये दिवला तिलकाके * सब मातन को माथ नवाय ॥
आल्हा बैठि गये पलकी में * रानिन मोती दियो लुटाय ॥
पलकीचलिभइतब आल्हाको * औ लश्कर में पहुँची आय ॥
तोप सलामी को दगवायो * मलिखे डंका दियो बजाय ॥
लई लेखनी कर कंचन की * ऊदनि पाती लिखी बनाय ॥
लिखी बंदगी रनि सुनम को * राखै कुशल शारदा माय ॥
ब्याह करनहित आल्हा आवत * सुन्दर सजी बरात बनाय ॥
धीरज राखो तुम जियरा माँ * आवत सजे बनाफर राय ॥
ऐसे पत्र लिखो ऊदनि ने * सुअना गरे दियो बँधवाय ॥
सुआ उड़ानो गढ़ महुबे ते * नैनागढ़ की सुरत लगाय ॥
ऊदनि पहुँचे फिरि लश्करमें * तुरत दरोगा लिये बुलाय ॥
तोप दरोगा को बोलवायो * औ यह कही उदैसिंह राय ॥
जितनी तोपैं गढ़ महुबे की * सो सब जल्द देहु जोतवाय ॥
जितनी तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर देहु चढ़ाय ॥

बोलि दरोगा घोड़न वालो * तेहिते ऊदनि कही सुनाय ॥
जितने घोड़ा हैं महुबे के * सो सब एक संग सजिजायँ ॥
बोल दरोगा हाथिन वालो * ऊदनि कहन लगे समुझाय ॥
जितने हाथी बड़ी राशी के * सो सब जल्द देहु मजवाय ॥
हुक्म पायके चले दरोगा * निज २ काज लगे सबजाय ॥
हाथी सजि गये रे महुबे के * शोभा बरन करी ना जाय ॥
घोड़ा साजे गढ़ म बे के * कछु तारीफ करी ना जाय ॥
घुँघुरू बाजे जब घोड़न के * सुनि मन मोहि २ रहिजाय ॥
क्या गति बरनौं मैं बरातकी * छुटि २ सजेसुघर असवार ॥
चार घरी केरे अरसा माँ * सब दल साजि भये तैयार ॥
ऊदनि मलिखे ढेबा बहादुर * औ सय्यद का सङ्ग लिवाय ॥
जाय कचहरी दाखिल हुइगे * जहँ पर बैठ चन्देले राय ॥
हाथ जोरि के करी बन्दगी * फिरिऊदनि ने कही सुनाय ॥
आज्ञा दै देउ अपने मुख से * जासे काम सिद्ध हुइजाय ॥
हाथ फेरि दओ तब पीठीपर * बोले परमानन्द सुखपाय ॥
काम तुम्हारो पूरण हुइहै * हे नरनाह उदैसिंह राय ॥
आज्ञा सुनिके चारो चलिभे * अपने लश्कर पहुँचे आय ॥
त्यारी करि दइ तिन बरातकी * निज २ बाहन लिये मँगाय ॥
निज २ घोड़न पर चढ़ि बैठे * लै बजरङ्ग बली को नाम ॥
कूच को डंका बाजन लागे * सबने कूच दिया करवाय ॥
राह पकरि लइ नैनागढ़ की * सब चलि भये गणेश मनाय ॥
सात रोज की मंजिल करिके * नैनागढ़ में पहुँचे जाय ॥
डेरा डारि दिये धूरे पर * तम्बुअन रही लालरी छाय ॥
फेटैं छुटि गईं रजपूतन की * हाथिन होदा धरे उतारि ॥

चढ़ी रसोइयाँ उमरावन की * कोइ २ करन लगे असनान ॥
ऊदनि मलिखे दोनों चलिभै * औ बागन में पहुँचे जाय ॥
धूरे डंका नैपाली को * सो ऊदनि ने दियो बजाय ॥
चोप नगारा के बाजत खन * धामन कूच दिया करवाय ॥
करी बन्दगी नैपाली को * राजै खबरि सुनाई जाय ॥
आई बरायत केहु राजा की * धूरे डंका दियो बजाय ॥
लश्कर डारो पाँच कोस लौं * तंबुअन रही लालरी छाय ॥
इतनी सुनि के नैपाली ने * तीनौं बेटा लियो बुलाय ॥
समाचार धूरे के लावो * अब ना राखो देर लगाय ॥
कौन शूरमाँ चढ़ि आयो है * कौने डंका दियो बजाय ॥
इतनी सुनतै लड़िका चलिभै * औ धूरे पर पहुँचे आय ॥
ऊँचे चढ़ि के देखन लागे * भारी लश्कर परो दिखाय ॥
लौटे लड़िका नैपाली के * राजै खबरि सुनाई जाय ॥
आई बरायत केहु राजा की * कोसन झंडा परे दिखाय ॥
पाँच कोस लौं फौजैं डारी * ना लश्कर को मिलै शुमार ॥
हियाँ कि बातैं हियनैं छाँड़ो * तनि बरात को सुनौ हवाल ॥
ऊदनि बोले नर मलिखे से * दादा मेरे बीर मलिखान ॥
चारि दिवस धूरे पर बीते * अब भौरिन को करहु उपाय ॥
साइति नीकी यहि बेरा है * ऐपनवारी देहु पठाय ॥
भयो बोलौआ तब रूपनको * बारी जौन महोबे क्यार ॥
मलिखे बोले तब रुपना से * नैनागढ़ को होउ तयार ॥
ऐपनवारी यह लै जावो * नैपाली कौं देहु गहाय ॥
रुपना बोलो तब मलिखे से * हमना मूँड़ कटैहैं जाय ॥
कठिन मारु है नैपाली की * हमसे मारु सही ना जाय ॥

हमरे भरोसे तुम ना रहियो * भैया हम जैबे को नायँ ॥
ऊदनि बोले तब रूपन ते * भैया अकिल कहाँ तुम्हार ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं है * मुख ते होनी कहौ पुकार ॥
आल्हा ब्याहन को ना रहिहैं * यहुदिन कहिबेको रहि जाय ॥
आइ कायली गइ रूपना को * तब ऊदनि ते कही सुनाय ॥
घोड़ा करलिहा हमकाँ देदेउ * औ आल्हाकी ढाल तरवार ॥
ऐपनवारी हम लै जावैं * आगे सिद्ध करैं करतार ॥
जो जो माँगे रूपन बारी * ऊदन सबै दियो मँगवाय ॥
ऐपनवारी लै रूपन ने * औ घोड़ा पर बैठो आय ॥
पाग बैजनी शिर पर सोहै * बारी कूच दियो करवाय ॥
जायके पहुँचो नैनागढ़ में * दर्बानी ते कही सुनाय ॥
कहाँ ते आए औ कहँ जैहौ * अपनो हाल देहु बतलाय ॥
तबहीं रूपन बोलन लागो * दर्बानी ते कही सुनाय ॥
नगर महोबा यक बस्ती है * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ॥
तहाँ ते ब्याहन आल्हा आये * जो हैं दस्सराज के लाल ॥
तिनके नेगी हमका जानो * रूपन बारी नाम हमार ॥
खबरि कराय देउ राजा को * नेगी ठाढो पँवरि दुआर ॥
ऐपनवारी हम लै आये * हमरो नेग देहु बतलाय ॥
कहा नेग तुम्हरो चहियत है * सो तनि हमें देहु बतलाय ॥
तबहें रूपन बोलन लागे * चाकर सुनहु पहाड़ी क्यार ॥
चारि घरी भरि चलै शिरोही * द्वारे बहै रक्त की धार ॥
चलौ पौरिया तब फाटक ते * बीच कचेहरी पहुँचो जाय ॥
हाथ जोरि के करी वन्दगी * औ राजा ते कही सुनाय ॥
रूपन वारी गद महुबे को * ऐपनवारी लिये कर ठाढ़ ॥

नेग आपनो वह माँगति है * द्वारे बहै रक्त की धार ॥
सुनिके बातैं दर्वानी को * राजा अग्नि ज्वाल हुइ जाय ॥
जोगा भोगा को बुलवायो * औ यह भूप कही समुझाय ॥
जल्दी जावौ तुम फाटक पर * बारी कि डंड लेहु बँधवाय ॥
तौलौं रूपन दाखिल हुइगो * औ गद्दी ढिग पहुँचो आय ॥
करो बन्दगी नैपाली को * ऐपन वारी दई चलाय ॥
तब नैपाली पूछन लागे * अपना हाल देहु बतलाय ॥
कहाँ ते आये औ कहँ जैहौ * आगे कहा तुम्हारा कार ॥
हम तो आये हैं महुबे ते * रूपन बारी नाम हमार ॥
आल्हा आये हैं ब्याहन को * ऐपनवारो दई पठाय ॥
नेग हमारो जल्दी दै देउ * अब ना राखो देर लगाय ॥
इतनो सुनतै नैपाली के * नैनन रही ललरी छाय ॥
हुक्म दै दिया सब क्षत्रिनको * याको मूड़ लेहु कटवाय ॥
जितने क्षत्री बंगला बैठे * सबने खैंचि लई तरवारि ॥
अकिले रूपन के जियरा पर * चमके एक सहस हथियार ॥
सुमिरण करिके नारायणको * मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार ॥
छोड़ि आसराजिन्दगानी का * रूपन कठिन करी तरवारि ॥
बहुतक क्षत्री रण में जूझे * बहु सन्मुख ते गये पराय ॥
सन्मुख पहुँचा जब गद्दी के * ऐपनवारी लई उठाय ॥
खट २ खट २ तेगा बाजो * द्वारे बही रक्त की धार ॥
एँड़ लगाई हरनागर के * रूपन निकरि गयो वा पार ॥
देखि हकीकति यह रूपन की * राजा अँगुरी रहे दबाय ॥
जिनके नेगी ऐसे जालिम * तिन क्षत्रिन ते काह बसाय ॥
यह सुनि जोगा भोगा बोले * दादा धीर धरौ मनमायँ ॥

जितने आये हैं महुबे ते * सबके मूँड़ लिहौं कटवाय ॥
इतनी कहिके दोनौं चलिभे * अपने लश्कर पहुँचे आय ॥
बोलि दरोगा तोपन वाले * घोड़न वाले लियो बुलाय ॥
हाथी वाले को बोलवायो * औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
जितनी तोपैं मेरे लश्करमाँ * सो सब जल्द देहु सजवाय ॥
बड़ि २ तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर देहु चढाय ॥
पर्वत ढावनि किला खसावनि * सोऊ जल्द देहु जोतवाय ॥
जितने हाथी हैं लश्कर में * सो सब जल्द होयँ तैयार ॥
ताजी तुर्की अबलक घोड़े * रश्की मुश्की हों तैयार ॥
बजो नगाड़ा नैनागढ़ में * सब दल साजि भयो तैयार ॥
चारि घरी केरे अरसा में * सब दल साजि भयो तैयार ॥
पहले नगाड़ा भइ जिनबन्दी * दुसरेमाँ बाँधिलीन्ह हथियार ॥
तिसरे नगाड़ाके बाजतिखन * क्षत्री चले सुमिरि करतार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
कोइनालकिन कोइपालकिन * कोइ गजरथ पर भये सवार ॥
कूचकराय दियो लश्कर को * झंडन रही लालरी छाय ॥
लश्कर पहुँच गयो धूरे पर * मुर्चाबन्दी दई कराय ॥
यहाँ कि बातैं हियनै छोड़ौ * अब बरात को सुनो हवाल ॥
रंग बिरंगी रुपने देखो * बोले बच्छराज के लाल ॥
कैसी गुजरी नैनागढ़ में * साँचो हाल देहु बतलाय ॥
रुपना बोलो नर मलिखे ते * भैया कछू कही ना जाय ॥
बड़े लड़ैया वीर पहाड़ी * रणमें कठिन करैं तरवार ॥
चारि घरी भर चली सिरोही * द्वारे बही रक्त की धार ॥
नाहर सुनतखन गढ महुबेकी * फाटक बन्दी दई कराय ॥

जितने क्षत्री थे बँगला में * सब ने तेग लई खिसियाय ॥
काम तुम्हारो हम करि आये * दहिने भई शारदा माय ॥
अब क्यों गाफिल तुम बैठे हो * शिर पर फौज पहूँची आय ॥
ऊदनि बोले तब मलिखे से * दादा जल्द होहु तैयार ॥
फौजैं आय गई शिर ऊपर * देखैं कहा करै करतार ॥
बोलि नगड़ची को बीरा दो * लश्कर डंका देहु बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री उठे सकल हर्षाय ॥
पहिले नगाड़ा भइ जिनबंदी * दुसरे में बाँधिलीन्ह हथियार॥
तिसरे नगाड़ा के बाजतखन * क्षत्री चढ़े सुमिरि करतार ॥
चौथे नगाड़ा के बाजत खन * लश्कर कूच दिया करवाय ॥
कछुक देर केरे अरसा में * धुरखेतन में पहुँचे जाय ॥
आधकोस केरे अन्तर पर * ऊदनि मुर्चा दिया लगाय ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो आगे को * औ जोगा ढिग पहुँचे आय ॥
जोगा पूछैं बघऊदनि ते * ठाकुर हाल कहौ समुझाय ॥
कहा नाम अरु काम तुम्हारो * हौ तुम कौन देश के राय ॥
सुनिके बातैं ये जोगा की * बोले दस्सराज के लाल ॥
नगर महोबा यक बस्ती है * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ॥
तिनके घरमें हम पैदा भये * हमरो नाम उदैसिंह राय ॥
ब्याहन हित आये आल्हा को * जल्दो भाँवरि देहु डराय ॥
इतनी सुनिकै जोगा जरिगै * नैनन रही ललाई छाय ॥
ऊदनि लौटि जाउ महुबे को * नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
ब्याहु न हुइहै नैनागढ़ में * ओछी जाति बनाफर राय ॥
रहेउ रहतुआ परिमालै के * अब सिर चढ़न लगे इतराय ॥
भाग्य नीच ऊँची रुचि राखो * ब्याहौ राज कन्यकन धाय ॥

हाँ भइ मरण समय चिउँटीके * जामत पंख तौन गति आय ॥
नाहिं गाइ के गढ माड़ो में * अपनो कारज लियो बनाय ॥
धोखे न रहियो तुम माड़ोके * यहँ पर प्राण बचैगो नायँ ॥
जितने आये हौ रहुवे ते * सबके शीश लिहौं कटवाय ॥
कुशल आपनी ऊदनि चाहौ * चुप्पै कूच जाउ करवाय ॥
तब हँसि बोले ऊदनि साँवरे * ठाकुर बोलो बात विचारि ॥
बढ़िके बातैं तुम बोलत हौ * औ बिन काज बढ़ावत रारि ॥
तेहिते मानौ कही हमारी * सातौ भाँवरि देउ डराय ॥
जो ना मनिहौ कही हमारी * सबको कैदि लिहौं करवाय ॥
डंड बाँधि के नैपाली की * सातौ भाँवरि लिहौं डराय ॥
बिना बियाहे हम ना लौटैं * चाहै तन धजी २ उड़िजाय ॥
इतनी सुनिके जोगा जरिगे * तुरतै हुक्म दियो फरमाय ॥
आगी दै देउ मोरि तोपन माँ * इन पाजिन काँ देहु उड़ाय ॥
हुक्म पायके छुटे खलासी * औ तोपन पर पहुँचे जाय ॥
आगि लगाय दई तोपन में * धुँअना आसमान मँड़राय ॥
ऊदनि लौटि परे लश्करको * तोपन बत्ती दई धराय ॥
छुटी सलामी दोनों दल में * चहुँदिशि रही अँधेरिया छाय ॥
अररर अररर गोला छूटो * गोली मघाबूँद झरिलाय ॥
बान अगिनियाँ छूटन लागे * सर सर तीर रहे सन्नाय ॥
गोला लागै जेहि हाथी के * मानौं चोर सेंधि दै जाय ॥
गोला लागै जौन ऊँट के * सो गिरिपरै धरणि भहराय ॥
गोला लागै जेहि घोड़ा के * चारौ सुम्म गर्द हुइ जाय ॥
गोला लागै जेहि क्षत्री के * सो भुइँ खसे स्वर्ग में जाय ॥
गोलाजँजिरहा जेहिके लागै * तेहि के हाड़ माँस छुटिजायँ ॥

बान को डंडा जिनके लागै * तिनके दुइ खराडा हुइ जायँ ॥
छोटी गोली जिनके लागैं * तिनके होय करेजे पार ॥
चारि घरीभरि गोला बरसो * अंधा धुन्ध तोप की मार ॥
तोपैं धैं धैं लाल बरन भइँ * ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ॥
चढ़ी कमनियाँ पानी हुइगइ * चुटकिनके गये मास उड़ाय ॥
तोप लड़ाई पीछे परिगइ * ज्वानन सांगैं लई उठाय ॥
पाँच कदम केरे अन्तर से * रहिगे मारा मार मचाय ॥
भाला बर्छी कर में लीन्हें * चत्री वीर रूप दर्शायँ ॥
तकिके भाला देइँ तोंद पर * लोहूबुजाकि बुजाकि रहिजाय ॥
लगै सांगड़ा जेहि चत्री के * आँतैं निकसि ढेर हुइ जायँ ॥
बूड़ि जुलफियाँ गइँ लोहू ते * चर्बी अङ्ग गई लपिटाय ॥
चारि घरीभरि बजो साँगड़ा * बूते हाल कही ना जाय ॥
भाला टूटि के दोना हुइगे * लडुआ कटि बर्छिन के जायँ ॥
दोनौं फौजन के अन्तर में * रहिगो डेढ़ कदम मैदान ॥
वीर रूप हुइ चत्री गर्जे * करमें लीन्हें नग्न कृपान ॥
झुके सिपाही दोनों दल के * अपनी खैंचि खैंचि तरवार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै * बोलै छपकि छपकि तरवार ॥
चलै उनब्बी औ गुजराती * औ तरवारि पिहानी क्यार ॥
तेगा चटकै बर्दवान के * कटि२ गिरैं सुघर असवार ॥
ना पुरवैया न पछिऔआ * नाहीं चलै बबूरा ब्यारि ॥
आठ कोस के चौगिर्दा में * चारों ओर चलै तलवारि ॥
पैग पैग पर पैदल गिरिगो * उनके दुदुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसे पर हाथी डारे * छोटे पर्वत की अनुहार ॥
कल्ला कटिगे रे घोड़न के * चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ॥

कटे शुशुण्डा रे हाथिन के * कहुँ बिन मुन्डफिरैं असवार ॥
घेहा डारे रण में लोटैं * जिनके प्यास २ रट लाग ॥
सुहर कटोरा पानी ह्वइगो * ढूँढ़े ना कहुँ परै दिखाय ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * दोनों हाथ करैं तरवारि ॥
सुर्वन सुर्वन नचै बेंदुला * ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ * तुम सब भैया लगौ हमार ॥
भागि न जैयो कोइ मोहराते * रखियो धर्म चन्देले क्यार ॥
व्याहिके चलिहौ नैना गढ़ते * दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
दै दै पानी रजपूतन को * ऊदनि आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * करमें नग्न लिये तरवारि ॥
भजे सिपाही नैपाली के * अपने डारि डारि हथियार ॥
कोई रोवति है लरिकन को * कोई पुरखिनकों चिल्लाय ॥
कोइ कोइ भाजे समर भूमिते * देहीं लई भभूति रमाय ॥
हमैं न मरिहौ भइ रजपूतौ * हमतो हरिद्वार को जायँ ॥
कोइ२ कायर भाजन लागे * छत्री कानन माँ बतरायँ ॥
अबकी उचौनी जो बचिजैहौं * बनमें बेंचि लकड़िया खायँ ॥
भेड़हा आये रे महुबे के * ते मनइन को जायँ चबाय ॥
मानुष होवै तो लड़ मरिये * उन पंछिन ते कहा बसाय ॥
तीनि लाख ते जोगा आये * रहिगे डेढ़ लाख असवार ॥
तब समुझाय कहो जोगाने * भोगा जल्दी होउ तयार ॥
खबरि सुनावो तुम राजा को * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
डेढ़ लाख क्षत्री रण जूझे * याको करिहौ कौन उपाय ॥
इतनी सुनतै भोगा चलिभे * पहुँचे नैपाली ढिग जाय ॥
खबरि सुनाई सब राजा को * ब्योरेवार कही समुझाय ॥

बड़े लड़ैया महुबे वारे * रण में कठिन करैं तरवार ॥
डेढ लाख चत्री उन मारे * उनके जूझे आठ हजार ॥
सुनमाँ बहिनि: के कारण ते * सिगरी फौज गई बिल्लाय ॥
ब्याहु जो हुइहैं कहुँ आल्हा सङ्ग * तो सब जैहैं काम नशाय ॥
तब जवाब राजा ने दीन्हों * भैया धीर धरौ मन मायँ ॥
जितने आये हैं महुबे ते * सबके शीश लिहौं कटवाय ॥
नैपाली महलन को धाये * लाये अम्मर ढोल उठाय ॥
यह कहि देदइ नृप भोगाको * रणमें याहि बजावो जाय ॥
मुर्छा जगिहैं सब बीरन की * तुम्हरो काम सिद्ध हुइजाय ॥
भोगा पहुँचे समर भूमि में * तुरतै ढोल दई बजवाय ॥
कान अवाज परी चत्रिन के * चत्री उठे भरहरा खाय ॥
यह गति देखी जब जोगाने * तुरतै हल्ला दओ मचाय ॥
बढ़े सिपाही दोनों दिशि के * घूमके चलन लगी तलवार ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही * तहँ बह चली रक्तकी धार ॥
संध्या काल निरखि बीरनने * निज २ म्यान करी तरवार ॥
पुनि भटगवनेनिज डेरन को * मनमहँ सुमिरिविश्वकरतार ॥
ऊदनि बोले तब मलिखे से * दादा सुनिओ कान लगाय ॥
एक बात अनहोनी हुइ गइ * ताको करिहौ कौन उपाय ॥
मुर्दावीर लड़त पुनि रण महँ * हमसँग युद्धकरत अधिकाय ॥
भेद न समुझिपरतकछुयाको * ताते मुर्चा देहु हटाय ॥
बात मानलइ नर मलिखे ने * तुरतै मुर्चा दओ हटाय ॥
लश्कर लौटि परो महुबे को * औ डेरन पर पहुँचे जाय ॥
कछुक बिचारकियो ऊदनिने * तुरतै घोड़ा लियो मँगाय ॥
कूदि बछेड़ा पर चढ़ि बैठे * औ नैनागढ़ पहुँचे जाय ॥

जहाँ महल है रनि सुनमाँको * ऊदन तहाँ गयो नगिचाय ॥
सुनमाँ ठाढी सतखंडा पर * सो ऊदन पर दृष्टि लगाय ॥
सुरति साँवरी मुख नरियारो * नैना हिरन बरन अनुहार ॥
पाग बैजनी सिर पर सोहै * घोड़ा बेंदुला पर असवार ॥
युद्धको कंकन करमें चमकै * सुनवाँ तुरत गई पहिचान ॥
सुनवाँ उतरी सतखंडा ते * औ खिरकीपर पहुँचीआनि ॥
सुनवाँ पूछै बघऊदन ते * देवर हाल कहो समुझाय ॥
ऊदन बोले तब सुनवाँ ते * भौजी कछू कहो ना जाय ॥
लिखिके पाती तुमने भेजो * जल्दी चलो उदयसिंह राय ॥
बंस नशैबे को लागी हौ * फौजन कटा दई करवाय ॥
कारण कौन जल्द बतलावौ * मुर्दा वीर लड़त उठि धाय ॥
भेद बताइ देहु जल्दी से * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
सुनवाँ बोली तब ऊदनि से * मैं देवर की लेहुँ बलाय ॥
धोखे न रहियो तुम माड़ोंके * यहँपर सकलफौजखपिजाय ॥
कठिन भूमि है नैनागढ की * यहँपर अमर ढोल घहराय ॥
यह वरदान दियो इन्दर ने * तो एक जतन देहु बतलाय ॥
कही हमारी देवर मानौ * साँची तुमहिं दई बतलाय ॥
भोर होत ही देवी पूजन * एहौं ढोलक साथ लिवाय ॥
माली हुइकै देवर अइयो * अम्मर ढोल लिऔ उठवाय ॥
इतनी सुनतै ऊदन लौटे * औ लश्कर में पहुँचे आय ॥
हाल बतायो सब मलिखेको * दहिने भई शारदा माय ॥
सुनवाँ भौजी दहिने हुइ गइ * तेहि सब हाल दियो बतलाय॥
भोर होत खन पौके फाटत * माली बने उदयसिंह राय ॥
लैके डलिया कर फूलनकी * मन्दिर बैठि रहे हरषाय ॥

घोड़ा बेंदुला मठके पीछे * सो ऊदनि ने दियो बँधाय ॥
हियाँ कि बातैं हियनै छोड़ो * नैनागढ़ को सुनो हवाल ॥
सुनवाँ उतरी सतखण्डा ते * पहुँची माता के ढिग जाय ॥
आवत देखो जब बेटी को * रानी कण्ठ लियो लपटाय ॥
हाथ जोरि कै सुनवाँ बोली * तब माता ने कही सुनाय ॥
देवी पूजन को मैं जैहौं * अम्मर ढोल देहु मँगवाय ॥
सुनिके बातैं ये सुनमाकी * तब माता ने कही सुनाय ॥
ढोल न देहैं बाप तुम्हारे * बेटो यह हुइबे को नाँय ॥
रोय के सुनवाँ बोलन लागी * औ माता से कही सुनाय ॥
ढोलक देहौ ना जो माता * तौ मै देहौं प्राण गँवाय ॥
संकट धर्म परो रानी पर * पहुँची राजा के ढिग आय ॥
दोउ कर जोरे रानी बोलै * स्वामी अर्ज सुनो चितलाय ॥
देवी पूजन बेटी जैहै * अम्मर ढोल देहु मँगवाय ॥
साफ ज्वाब दियो राजा ने * अम्मर ढोल मिलनको नायँ ॥
तब समुझायो फिर रानी ने * स्वामी मानो कही हमार ॥
अम्मरढोल जो तुम ना दीहौ * बेटी देहै प्राण बिसार ॥
चारि घरी पूजा में लगिहैं * नाहक रारि बढावत नाथ ॥
ढाल मँगाय देहु जल्दी ते * रहिजाय दोउ धर्म यकसाथ ॥
सोचि समुझिके तब राजाने * अम्मर ढोल दई मँगवाय ॥
ढोलक लैके रानी आई * औ सुनवाँ को दई गहाय ॥
सखी बुलाई तब सुनवाँ ने * गावत गीत चली हर्षाय ॥
कछुक देर केरे अरसा में * औ मठिया में पहुँची आय ॥
ढोलक धरि दइ चंदन चौकमें * सुनवाँ मंदिर को चलिजाय ॥
पूजा करन लगी मंदिर में * ऊदनि ढोलक लई उठाय ॥

कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे * औ लश्कर में पहुँचे आय ॥
असर ढोल मलिखेको दीन्हीं * औ यह कहो उदैसिह राय ॥
फौज सजाय लेहु जल्दी से * अब ना राखो देर लगाय ॥
सुनिके बातैं यह ऊदनि की * तुरत नगड़ची लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो नर मलिखेने * लश्कर डंका देहु बजाय ॥
बजो नगाड़ा भइ लश्कर में * क्षत्री उठे भरहरा खाय ॥
पहिले नगाड़ा भइ जिनबन्दी * दुसरेमाँ बाँधिलीन्ह हथियार ॥
तिसरे नगाड़ाके बाजति खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
कूच को डंका बाजन लागो * लश्कर कूच दिया करवाय ॥
जायके पहुँचे रण खेतन में * मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
एक हरिकारा दौरति आवै * नैनागढ़ में पहुँचो आय ॥
खबरि सुनाई नैपाली को * लश्कर डटो खेत में आय ॥
सुनी खबरि जब नैपाली ने * तुरतै बेटा लिये बुलाय ॥
पूरन राजा पटना वाले * तिनते राजा कही बुझाय ॥
फौज सजाय लेहु जल्दी ते * अब ना राखो देर लगाय ॥
जितने आये हैं महुबे ते * सबके शोश लेउ कटवाय ॥
जोगा भोगा बिजया बेटा * पूरन राजा सङ्ग लिवाय ॥
जायके पहुँचे सब लश्कर माँ * तुरतै डंका दियो बजाय ॥
पहले नगाड़ा के बाजतिखन * दुसरे माँ बाँधिलीन्ह हथियार ॥
तिसरे नगाड़ाके बाजतिखन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
चौथे डंका के बाजति खन * क्षत्री चले गणेश मनाय ॥
कछुक देर केरे अरसा में * लश्कर खेत पहूँचो आय ॥
दोनों फौजैं डटीं बरोबरि * मुर्चा डटो बरोबरि आय ॥
जोगा बेटा नैपाली को * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥

कौने सूरमाँ चढ़ि आओ है * कौने सीम दबाई आय ॥
इतनी सुनिके बघऊदनि ने * तुरत बेंदुला दिया बढ़ाय ॥
फिर जवाब जोगाको दीन्हों * बेटा सुनो पहाड़ी क्यार ॥
हमी सूरमाँ चढ़ि आये हैं * औ ऊदनि हैं नाम हमार ॥
ब्याहन आये हैं भैया को * जल्दो भाँवरि देहु डराय ॥
रारि बढ़ैहौ जो बिन कारण * तौ गढ़ गर्द दिहौं करवाय ॥
सुनिके बातैं ये ऊदनि की * जोगा अग्नि ज्वाल हुइजाय॥
धोखे न रहिओ तुम माड़ौके * यहँ पर प्राण बचैगा नायँ ॥
तेहिते मानो कही हमारी * ऊदनि कूच जाउ करवाय ॥
आस लकड़िया हौ रंड़िया के * नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
ऊदनि बोले तब जोगा ते * ठाकुर सुनौ बात मन लाय ॥
बिना बियाहे हम ना लौटैं * चाहे तन धजी धजीउड़िजाय ॥
बातन बातन बतबढ़ हुइगौ * औ बातन में बाढ़ी रारि ॥
हुक्म दै दियो तब जोगा ने * तोपन बत्ती देहु धराय ॥
मारि भगावौ इन पाजिनको * सबकी कटा देहु करवाय ॥
इतनी सुनिके उठे खलासी * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनौं दल में * धुअना रहो सर्ग मँड़राय ॥
दोउ ओरसे गोला बरसो * दलमें रही अँधेरिया छाय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * तोपैं लाल बरन हुइ जायँ ॥
तोपैं छाँड़ि दईं क्षत्रिन ने * उन पर हाथ धरो ना जाय ॥
संगम हुइगौ दोनौं दल में * घूमिके चलन लगी तरवारि॥
पैदल के संग पैदल अभिरे * औ असवारन से असवार ॥
हौदा के संग हौदा मिलिगौ * हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
कोता खानी चलै कटरिया * कहुँ असवार फिरैं चुचुआत॥

पैग २ पर पैदल डारे * दुइ दुइ पैग पर असवार ॥
बिसे बिसे पर हाथी डारे * छोटे पर्वत की अनुहार ॥
सुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला * ऊदन कहैं पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ * तुम सब भैया लगौ हमार ॥
कठिन लड़ाई नैपाली की * रखियो धर्म महोबे क्यार ॥
मन्ना गूजर रूपन बारी * रण में कठिन करैं तरवार ॥
ढेबा पहुँचि गयो उत्तर को * सैयद दक्खिन को दबिजाय ॥
जगनिक घेर लियो पच्छिमसे * मन्ना पूरब को बढ़िजाय ॥
अपने पराओ ना पहिचानै * अन्धा धुन्ध चलै तरवार ॥
खट २ खट २ तेगा बाजै * बोलै छपकि छपकि तरवार ॥
मलिखे ठाकुर के डपटिन में * सब दल रैन बेन हुइ जाय ॥
जौन गोल से ऊदनि निकसै * सबदल काईसो कटि जाय ॥
क्यागति बरनौंतेहिसमयाकी * शोभा कछू कही ना जाय ॥
बाइस हौदा खाली करिके * सन्मुख गये उदैसिंह राय ॥
तब जवाब जोगा ने दीन्हों * ठाकुर सुनो उदैसिंह राय ॥
दस २ रुपिया के नौकर हैं * नाहक डरिहौ मूड़ कटाय ॥
हम तुम खेलैं समर भूमि में * दुइमें एक आँकु रहिजाय ॥
यह मन भाय गई ऊदनिके * फिरिजोगाने कही बुझाय ॥
चोट आपनी ऊदनिकरि लेउ * नाहित सर्ग बैठि पछिताउ ॥
तब जवाब ऊदनिने दीन्हों * जोगा ठाकुर बात बनाउ ॥
पहिली चोट न अपनी करिहैं * ना भागे के परैं पिछार ॥
रीतैं बाँधी चन्द्रबंश ने * हमरे कुला यही ब्यौहार ॥
चोट आपनी जोगा करिलेउ * मन के मेटि लेउ अरमान ॥
फूलिके जोगा गरगज हुइगा * करमें लीन्हीं लाल कमान ॥

खैंचिकमनियाँ भुजदंडनभरि * सन्मुख करो झड़ाका वार ॥
घोड़ा बेंदुला दहिने हुइगो * कैंवर निकरि गयो वा पार ॥
यह गति देखी जब जोगाने * तुरतै लीन्ही साँगि उठाय ॥
सो धरि धमकी बघऊदनि पर * ऊदनि लैगे चोट बचाय ॥
देखि पैतरा बघऊदनि के * जोगा अँगुरी रहे दबाय ॥
फिरि जवाब जोगा ने दीन्हों * औ ऊदनि से कही सुनाय ॥
कै तो देवै ने वर परछो * कै परिमाल रहे एतबार ॥
अबहूँ लौटि जाउ महुबे को * इतनी मानौ कही हमार ॥
ऊदनि बोले तब जोगा से * तुम सुनलेउ पहाड़ो राय ॥
चोट आपनी तिसरी करिलेउ * अबना राखौ देर लगाय ॥
खैंचि सिरोही लइ जोगा ने * औ ऊदनि पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई ऊदनि ने * लीन्हें तीनों वार बचाय ॥
कावा दैके बघऊदनि ने * अपनो भाला दियो चलाय ॥
लगो चपेटा जब घोड़ा के * घोड़ा पाँच कदम हटिजाय ॥
यह गति देखी जब जोगा की * भोगा घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
यक ललकार दई ऊदनि को * सम्हरो बीर उदैसिंह राय ॥
तौलौं मलिखे दाखिल हुइगे * औ भोगा ते कही सुनाय ॥
सम्हरि कै बैठो तुम घोड़ा पर * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
सुनिके बातैं ये मलिखे की * भोगा अग्नि ज्वाल हुइजाय ॥
खैंचि सिरोही लइ कम्मर ते * औ मलिखे पर दई झुकाय ॥
ढाल अड़ाय दई मलिखे ने * बचिगा बच्छराजका लाल ॥
गजभरिछाती नरमलिखे को * औ नैनन में बरै मसाल ॥
गुर्ज उठायो नर बौरे ने * सो भोगा पर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा जब घोड़ा के * घोड़ा बीस कदम हटिजाय ॥

तौ लौं ऊदनि बोलन लागे * औ मलिखे ते कही सुनाय ॥
हाथ चलैयो ना भोगा पर * नहिं सब जैहैं काम नसाय ॥
नेग करैहैं को मड़ये तर * को धन बबा करैंहैं आय ॥
इतनी सुनिके नर मलिखेने * अपनी घोड़ी दई बढ़ाय ॥
मलिखे ऊदन दोनौं बिचले * रण में कठिन करैं तरवार ॥
भजे सिपाही नैनागढ़ के * अपने डारि २ हथियार ॥
तीनि लाख ते जोगा आये * रहिगौ एक लाख असवार ॥
कठिन लड़ाई भइ धूरे पर * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
ऊँचे खाले कायर भाजे * जे रण दुलहा चले बराय ॥
लंबी धोतिन के पहिरैया * जेऊ भाजे जान बचाय ॥
जोगा भोगा दोनौं भाजे * नैपाली ढिग पहुँचे जाय ॥
हाल बतायो तब राजा को * राजा बहुत गये घबराय ॥
लश्कर भाजो रण खेतन ते * ताको करिहौ कौन उपाय ॥
राजा चलिभे तब बंगला ते * पहुँचे आमखास में जाय ॥
खोलि कोठरी राजा देखै * अम्मर ढोल न परी लखाय ॥
मन खिसियाने तब नैपाली * देवी की मढ़ी पहूँचे जाय ॥
पूजन करिके जगदम्बे को * राजा शीश चढ़ावन लाग ॥
आभा बोली महरानी को * राजा धीर धरौ मन माय ॥
अब हम जैहैं इन्द्रलोक को * तुमकाँ ढोलक दिहैं मँगाय ॥
राजा लौटि परे बँगला को * देवी इन्दर लोक को जाय ॥
ढोलक माँगी जब इन्दर ते * तब इन्दर ने कही सुनाय ॥
देव झपटि के मृत्युलोक ते * अबहीं ढोलक लावौ जाय ॥
देव तुरत गये मृत्युलोक को * लाये अम्मर ढोल उठाय ॥
फिरि समुझायो इन्द्र देव ने * देवो बात सुनहु मनलाय ॥

आल्हा अमर भये दुनियाँ में * यह बर दियो शारदा माय ॥
जो कहुँ ढोलक फिरि लैजैहो * तो सब जैहैं काम नशाय ॥
हुक्म दे दियो इन्द्र देव ने * ढोलक जल्द देहु फोरवाय ॥
देवी आई इन्द्र लोक ते * औ मठिया में पहुंची आय ॥
सपना दीन्हों नैपाली को * इन्दर ढोलक दई फोराय ॥
करौ लड़ाई अब काहू विधि * अपनौ कारज लेहु बनाय ॥
सुनिके सपना यहु देवी ते * राजा बहुत गयो चकराय ॥
भोर होत खन नैपाली ने * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
लैके कागद कलपी वालो * फिरि यक पाती लिखी बनाय ॥
सुन्दर बनके नृप अरिनन्दन * अब संकट में होउ सहाय ॥
नगर महोबा यक बस्ती है * जहँ पर बसे चन्देले राय ॥
तिनके घरमें रहुआ सहुआ * आल्हा ऊदन नाम कहाय ॥
ब्याहन आये हैं नैनागढ़ * ओछी जाति बनाफर राय ॥
जोकहुँब्याह होय आल्हासंग * तो रजपूती जाय नशाय ॥
जल्दी आवौ लश्करि सजिके * सबकी कटा देहु करवाय ॥
कट्टर फौजैं हैं महुबे की * जिनते हारि गई तरवारि ॥
देर लगैबे को दिन नाहीं * जल्दी चलौ सूर सरदार ॥
ऐसी पाती लिख नैपाली * औ धामन को दई गहाय ॥
चलो साँड़िया नैनागढ ते * सुन्दर बन में पहुँचो जाय ॥
पाती दीन्ही अरिनन्दन को * बाँची तुरत बघेले राय ॥
हालु जानिके अरिनन्दन ने * तुरतै हुक्म दियो फरमाय ॥
बजै नगाड़ा मेरे लश्कर में * क्षत्री सबै होयँ तैयार ॥
बजो नगाड़ा सुन्दर बनमें * छत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले नगाड़ा भइ जिन बन्दी * दुसरे माँ बाँधिलीन्ह हथियार ॥

तिसरे नगाड़ा के बाजत खन * चत्री फाँदि भये असवार ॥
कूचको डङ्का बाजन लागो * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
करी तयारी अरिनन्दन ने * पूजे गणपति गौरि मनाय ॥
सजिके हाथी पर चढ़ि बैठे * अपनो कूच दियो करवाय ॥
तीनि दिवस मारग में बीते * सब नैनागढ पहुँचे आय ॥
लश्कर उतरि परो नद्दी पर * अपने तंबू दिये तनाय ॥
नावैं डारि दईं नद्दी में * तिन पर नाच दियो करवाय ॥
नचैंकञ्चनी तिन नावन पर * शोभा बरन करो ना जाय ॥
करन हेत असनान नद्दी पर * आल्हा तबहीं पहुँचे आय ॥
राग मनोहर सुन रंडिन के * आल्हा निकट पहूँचो जाय ॥
तब अरिनन्दन पूछन लागे * ठाकुर हाल कहो समुझाय ॥
कहा नाम तुम्हरो कहियत हैं * हौ तुम कौन देशके राय ॥
तबहीं आल्हा बोलन लागे * ठाकुर सुनिये सकल हवाल ॥
नगर महोबा यक बस्ती है * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ॥
तिनके घर में हम पैदा भये * आल्हा नाम प्रकट संसार ॥
तब अरिनन्दन बोलन लागे * धनि धनि भाग चन्द्रसरदार ॥
पारस पूजा है महुबे में * लोहा छुअत सोन हुइजाय ॥
बड़े प्रतापी चन्देले हैं * हौ विख्यात बनाफर राय ॥
अपनी नैया पर चढ़ि आवौ * देखौ नाच पाझिनिन क्यार ॥
सूधे जिय के आल्हा ठाकुर * तुरतै भये नाव असवार ॥
आल्हा वैठि गये नावन पर * राजा कुर्सी दई डराय ॥
दुचितो देखी जब आल्हा को * राजा नाव दई खोलवाय ॥
धक्का मारो मल्लाहन ने * लागी नाव नदी के पार ॥
कैदि कराय लई आल्हा को * हाथन दई हथकड़ी डार ॥

कूचकराय दियो अरिनन्दन * सुन्दर बनमें पहुँचे जाय ॥
बहुत देर आल्हा को हुइगइ * ऊदनि चित्त उठो घबराय ॥
तौ लौं रुपना लश्कर पहुँचो * तेहिते ऊदनि कहो सुनाय ॥
आल्हा दादा को कहँ छाँड़ो * रूपन जल्दी कहो बुझाय ॥
हाथ जोरि के रुपना बोलो * भैया बिपति कही ना जाय ॥
नृप अरिनन्दन सुन्दर बनके * छल से दादै लिया बुलाय ॥
नावैं छोड़ि दईं नदी में * तिन पर नाच दियो करवाय ॥
दुचितो देखो जब दादा को * तुरतै नाव दई खुलवाय ॥
पार उतरि के अरिनन्दन ने * तुरतै कैदि लई करवाय ॥
कूच कराय दिया लश्करको * सुन्दर बन में राखो जाय ॥
मलिखे बोले तब ऊदन ते * अबहीं फौज लेहु सजवाय ॥
मारि भगावो अरिनन्दन को * गढ़िया गर्द देहु करवाय ॥
तबहें ऊदन बोलन लागे * दादा धीर धरो मन मायँ ॥
तुरत बुलाय लियो ढेबा को * तिनते हाल कह्यो समुझाय ॥
खोलि पत्तरा ढेबा देखे * औ जोतिष को करै बिचार ॥
ढेबा बोले फिरि ऊदन से * भैया सगुन कहै यहिबार ॥
रूप बनावो सौदागर को * सुन्दर घोड़ा लेउ सजाय ॥
जायके पहुँचो सुन्दर बनमें * तुम्हरो काम सिद्ध हुइजाय ॥
सुनिके बातैं ये ढेबा की * ऊदनि घोड़ा लियो मँगाय ॥
घोड़ा करेलिहा और बेंदुला * ऊदनि तुरत लियो सजवाय ॥
जीन सुनहरी धरि घोड़नपर * रेशम तंग लिये खिंचवाय ॥
झूलैं डारि दईं मखमल की * माथे हीरा दिये धराय ॥
कलँगी धारी मोती चूरकी * हीरा लौंकि २ रहिजाय ॥
रूप बनायो सौदागर को * औ चलि भये लहुरवा भाय ॥

चारि दिवस मारग में बीते * तब सुन्दर बन पहुँचे जाय ॥
ऊदनि बोले दर्वानी ते * राजै खबरि सुनावौ जाय ॥
यक सौदागर है काबुल को * अर्बी घोड़ा साथ लिवाय ॥
देश देश में घोड़ा बेंचे * आयो नाम सुनत यहँ धाय ॥
होय जरूरति जो घोड़नकी * लेवैं महाराज बँधवाय ॥
इतनी सुनिके दर्वानी ने * राजै खबरि सुनाई जाय ॥
हुक्म दै दियो अरिनन्दनने * जल्दी वाको देउ पठाय ॥
सुनतै लौटा तब दर्वानी * औ ऊदनि ते कही सुनाय ॥
ओ सौदागर काबुल वाले * पहुँचो जल्द कचेहरी जाय ॥
इतनी सुनतै ऊदनि चलि भे * औ घोड़न को साथ लिवाय ॥
घोड़ा देखे अरिनन्दन ने * मनमें मोहि २ रहि जाय ॥
बोले राजा सौदागर ते * साँचो मोल देहु बतलाय ॥
तबहें ऊदनि बोलन लागे * औ राजा ते कही सुनाय ॥
बड़े मोलके ये घोड़ा हैं * अबहीं मोल बतैहैं नायँ ॥
पहिले घोड़ा तुम फेरवावो * इनकी चाल लेउ परखाय ॥
नीके परखिलेउ घोड़न को * तब हम दाम दिहैं बतलाय ॥
इतनी सुनतै अरिनन्दन ने * बहुतक चत्री लिये बुलाय ॥
घोड़ा फेरौ तुम हियना पर * इनकी चाल देहु दिखराय ॥
चंचल गति लखिउनघोड़नकी * चत्री मन में गये डेराय ॥
साफ़ जवाब दियो चत्रिनने * हमसे ये फ़िरवे को नायँ ॥
ऊदनि बोले अरिनन्दन से * राजा मानौ वचन हमार ॥
घोड़ा लाये हम काबुल ते * बेंचे पाँच महोबे मायँ ॥
दुइ घोड़ा झुन्नागढ बेंचे * ये उड़ि जायँ पवनके साथ ॥
होय ज्वान कोउ झुन्नागढ़को * या कोउहोयमहोबिया ज्वान ॥

सो बुलवावौ यहि समया पर * तुरतै घोड़ा दिहैं फेराय ॥
इतनी सुनतै अरिनन्दन ने * तुरतै आल्हा लिये बुलाय ॥
हुक्म दै दिया अरिनन्दन ने * जल्दी घोड़ा देहु फेराय ॥
कैदि माफ तुम्हरी हुई जैहैं * जो तुम चाल देहु दिखलाय ॥
आल्हा सोचैं अपने मन में * भई सहाय शारदा माय ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे * सुमिरे बिपति हरन यदुराय ॥
करो इशारा बघऊदनि ने * बाँको बेंदुल पर असवार ॥
एँड़ लगाय दई घोड़न के * फाटक निकरि गये वापार ॥
राति दिनाकीमंजिलि करिके * औ लश्कर में पहुँचे आय ॥
करी बन्दगी बघऊदनि ने * मलिखे छाती लियो लगाय ॥
ऊदनि बोले नर मलिखे ते * दादा त्यारी देहु कराय ॥
देर लगैबे को दिन नाहीं * जल्दी भाँवरि लेहु डराय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री उठे भरहरा खाय ॥
पहिले नगाड़ा भइजिनबन्दी * सुमिरे इष्ट देव मनलाय ॥
दुसरे नगाड़ा के बाजत खन * क्षत्रिन बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे नगाड़ाके बाजतिखन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढिगै * बाँके घोड़न के असवार ॥
घोड़ी कबुतरी पर मलिखे हैं * ऊदनि बेंदुल पर असवार ॥
घोड़ा हरनागरपर जगनिकहैं * ढेबा मनुरथा पर असवार ॥
मन्ना गूजर रूपन बारी * सोऊ साजि भये तैयार ॥
कूच नगाड़ा के बाजत खन * लश्कर चला महोबे क्यार ॥
लश्कर पहुँचो समर भूमिमें * ऊदनि मुर्चा दियो लगाय ॥
उत ते फौजैं नैपाली की * सोऊ डटो बरोबरि आय ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो जोगा ने * औ ऊदनि से कहो सुनाय ॥

अबहिंतुम्हारो ना कछुबिगरो * महुबे कूँच जाउ करवाय ॥
आस लकड़िया हौ रण्डियाकी * नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
ब्याहु न हुइहैं नैनागढ़ में * चाहै कोटिन करौ उपाय ॥
ऊदनि बोले तब जोगा ते * सातौ भाँवरि देहु डराय ॥
शरि बढ़ैहौ जो बिन कारण * मारौं राज भंग हुइ जाय ॥
इतनी सुनि के जोगा जरिगे * औ ऊदनि ते कही सुनाय ॥
जाति बनाफर की ओछी है * तेहि ते कूच जाउ करवाय ॥
तड़पि के ऊदनि बोलन लागे * औ जोगा ते कही सुनाय ॥
ब्याहि के जैहौ नैनागढ़ ते * तौ मेरो नाम उदैसिंह राय ॥
बातन बातन बत बढ़ हुइगै * गुस्सा गई बदन में छाय ॥
हुक्म दै दियो तब जोगाने * तोपन बत्ती देहु लगाय ॥
मारि भगावौ इन पाजिनको * सबकी कटा देहु करवाय ॥
झुके सिपाही दोनौं दल के * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनौं दल में * धुँअना रहो सर्ग मँड़राय ॥
अररर अररर गोला छूटै * गोली भन्न भन्न भन्नाय ॥
अपनो पराओ ना पहिचानै * अंधाधुन्ध होय घमसान ॥
क्यागतिबरनौं तेहिसमयाकी * कह कह करै अगिनियाँबान ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * तोपैं लाल बरन हुइ जायँ ॥
माऊ बंद तोपन की हुइ गइ * ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ॥
दोनौं फौजैं संगम हुइ गइँ * घूमिके चलन लगी तरवार ॥
चलैं उनब्बी औ गुजराती * ऊना चलैं बिलायत क्यार ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * दोनौं हाथ करैं तरवारि ॥
भजे सिपाही नैनागढ़ के * अपने डारि डारि हथियार ॥
भजत सिपाही जोगा देखे * तब ऊदनि ते कही सुनाय ॥

हम तुम खेलैं रण खेतन में * देखैं केहि पर राम रिसाय ॥
यह मन भाई रण बौर के * तुरत बेंदुला दियो बढ़ाय ॥
चोट चलाई तब जोगा ने * ऊदनि लैगे वार बचाय ॥
लाल कमान लई जोगा ने * सन्मुख छाँड़ि दई हर्षाय ॥
बायें से घोड़ा दहिने हुइगो * बचिगौ वोर उदैसिंह राय ॥
मन खिसियाने जोगा ठाकुर * कमर ते खैंचि लई तरवारि ॥
ढाल अड़ाई बघऊदनि ने * तापर तीनि बचाए वार ॥
टूटि सिरोही गइ जोगा की * खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
जोगा सोचे अपने मन माँ * हमरो काल रहो नियराय ॥
जौन सिरोहिन से गज काटे * औ घोड़न के चारो पायँ ॥
सोइ सिरोही धोखा दै गइ * अब सिरकाल बिराजो आय ॥
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी * जोगा गिरे धरणि अकुलाय ॥
डंड बाँधि के बघ ऊदनिने * औ लश्कर को दियो पठाय ॥
देखि हकीकति यह जोगाकी * भोगा घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
दाबे कबुतरी मलिखे आये * तिन भोगा ते कही सुनाय ॥
सम्हरि के बैठो तुम घोड़ा पर * बेटा सुनो पहाड़ी क्यार ॥
इतनी सुनतै भोगा ठाकुर * अपनी खैंचि लई तरवार ॥
तीनि सिरोही हनि हनिमारी * मलिखे लैगे चोट बचाय ॥
टूटि सिरोही गइ भोगा की * खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
ढाल कि औझड़ मलिखेमारी * भोगा गिरे भरहरा खाय ॥
डंड बाँधि के नर मलिखे ने * तुरतै कैदि दई करवाय ॥
देवा बाँधि लियो विजयाको * पूरन हाथी दियो बढाय ॥
घोड़ा बढायदियो विजया को * औ पूरन ते कही सुनाय ॥
सम्हरौ ठाकुर तुम हाथी पर * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥

एँड़ लगाई हरनागर के * घोड़ा आसमान उड़िजाय ॥
फिरिके गिरो आय हौदा पर * दुइ मस्तीक अड़ाये पाँय ॥
करो झड़ाका जगनायक ने * धरती पीलवान गिरिजाय ॥
देखि तमाशा पूरन राजा * अपनो दीन्हो गुर्ज चलाय ॥
घोड़ा उड़िगो आसमान को * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
करो झड़ाका जगनायक ने * हाथी हौदा दियो गिराय ॥
गाफिल ह्वैगे पूरन राजा * जगनिक कैदि लई करवाय ॥
चारो शूर बँधे खेतन में * लश्कर तिड़ी बिड़ी ह्वैजाय ॥
लश्कर लौटो सुनिआल्हा को * औ डेरन पर पहुँचो आय ॥
जीति देखिके सुनि आल्हाकी * मन जरिमरे माहिल परिहार ॥
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठे * पहुँचे नैपाली दरबार ॥
उतरि बछेरी ते भुइँ आये * नैपाली ढिग पहुँचे जाय ॥
करो बन्दगी माहिल ठाकुर * राजा चौकी दई डराय ॥
आवौ बैठो उरई वाले * अपनो हाल देहु बतलाय ॥
तबहें माहिल बोलन लागे * औ महराज पहाड़ी राय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * सन्मुख कोउ जितैया नाय ॥
पूरन सहित पुत्र सब तुम्हरे * तिनकी कैदि लई करवाय ॥
लड़े न जितिहौ तुम आल्हाते * हम यक जतन देहिं बतलाय ॥
करौ अधीनी तुम आल्हाते * लावो सकल घरौआ जाय ॥
शूर कोठरियनमाँ बैठारो * फाटक बन्द देहु करवाय ॥
जबहें आवैं महुबे वाले * सबके शीश लेहु कटवाय ॥
यह मन भाई नैपाली के * तुरतै नेगी लिये बुलाय ॥
चलिभे राजा नैनागढ़ ते * आये जहाँ बनाफर राय ॥
राजा पूछै तब क्षत्रिन ते * आल्हा को तम्बू देहु बताय ॥

रूपन बारी बोलन लागो * ऊँचो तंबू परत लखाय ॥
चोपदार द्वारे पर ठाढ़े * झंडा लाल बरन फहराय ॥
भारी कचेहरी आल्हा बैठे * दहिने बैठे उदयसिंह राय ॥
बड़े २ क्षत्री बीर बहादुर * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
तौ लौं राजा दाखिल हुइगे * औ आल्हाको करो जोहार ॥
आवति देखो नैपालो को * आल्हा चौकी दई डराय ॥
करी अधीनी नैपाली ने * धनि २ बीर बनाफर राय ॥
धन्य भाग महुबे के कहिये * जहँ पर शूर लेहिं औतार ॥
धन्य भाग है चन्देले के * जिन घर तुम समान सरदार ॥
डंडछोड़िदेउमेरे लरिकन की * अबहीं भाँवरि देहुँ डराय ॥
दुसरी करिहौं ना तुम्हरे संग * राजा गङ्गा लेउ उठाय ॥
देवी लग्न अबहिं अति नीकी * चलिके भाँवरि लई डराय ॥
होयँ घरौआ जो महुबे के * सोऊ साथ लेहु सजवाय ॥
गङ्गा कीन्ही जब राजा ने * आल्हा त्यारी दई कराय ॥
मलिखे सुलिखे ऊदनि ढेबा * मन्ना गूजर संग लिवाय ॥
रूपन बारी ताल्हन सैयद * सोऊ सजिके भये तयार ॥
चारौ नेगी संग लिवाये * आल्हा पलकी भये सवार ॥
कैदि छोड़िदइ सबलड़िकनकी * औ पूरनको दियो छुड़ाय ॥
जायके पहुँचे नैनागढ़ में * तब राजा ने कही सुनाय ॥
चारौ नेगिन को बुलवावौ * औ सब सखियाँलेहुबोलाय ॥
मंगलचार होय महलन में * पंडित बेदी दई रचाय ॥
दुइ हजार क्षत्री बोलवाये * सो कोठरिनमाँदियो छिपाय ॥
भयो बुलौआ तुनिआल्हाको * फाटक बंद दियो करवाय ॥
जितने घरौआ थे महुबे के * सब मड़ये तर पहुँचे आय ॥

पंडितजी बेद उचारन लागे * गौरि गणेश दिये पुजवाय ॥
पहिली भाँवरि के परतै खन * जोगा करो झड़ाका आय ॥
ढाल अड़ाय दई मलिखे ने * औ आल्हाको लियो बचाय ॥
दुसरो भाँवरि के परतै खन * भोगा खैंचि लई तरवारि ॥
करो झड़ाका जब आल्हा पर * ऊदनि तुरत बचायो वार ॥
तिसरी भाँवरि के परतै खन * विजया करो झड़ाका आय ॥
चोट न आई नुनिआल्हा को * ढेबा लीन्हो वार बचाय ॥
चौथी भाँवरि के परतै खन * राजा जादू दई चलाय ॥
गाफिल हुइगे सब जादू में * अब कछु रहा ठिकाना नाय ॥
बीर महम्दा वारी पुरिया * जो सुनवाँ ने दई चलाय ॥
भई लड़ाई तब जादू को * भाँवर फिरी बनाफर राय ॥
करो इशारा रनि सुनवाँ ने * देवर बिदा लेहु करवाय ॥
ऊदनि भेजो तब रुपना को * द्वारते पलकी लाउ लिवाय ॥
चलिभो रुपना दरवाजे पर * तुरतै पलकी गयो लिवाय ॥
सुनवाँ बैठि गई पलको में * राजा हल्ला दियो मचाय ॥
क्षत्री निकरि परे कुठरिन ते * करमें लिये नगिन तरवार ॥
भई लड़ाई अँगनाई में * तहँ बहि चली रक्तकी धार ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * बहुतक क्षत्री किये हलाल ॥
जोगा भोगा औ बिजया की * मुश्कैं बाँधि लई ततकाल ॥
चली पालकी रनि सुनवाँ की * आठो संग सूर सरदार ॥
हल्ला करिदो नैपाली ने * घूमिके चलन लगो तलवार ॥
जितने शूर रहे महुबे के * सबने दीन्हें जुलुम गुजार ॥
होश बंद राजा के हुइगे * क्षत्री भजे डारि हथियार ॥
सबके पीछे आल्हा रहिगे * राजा जादू दई चलाय ॥

कैदिकराय लियो आल्हा को * चुंगल दहक दियो डरवाय ॥
हियाँकि बातैं हियनै छोड़ो * अब लश्कर को सुनो हवाल ॥
ऊदनि बोले नर मलिखे ते * भैया करिहौ कौन उपाय ॥
पता नहीं है कछु दादा को * ताको अब कछु करहु उपाय ॥
भयो बुलौआ तब ढेबा को * भैया सगुन देहु बतलाय ॥
खोलि पत्तरा ढेबा देखो * औ ऊदन से कही सुनाय ॥
आल्हे कैदि कियो नैपाली * दीन्हो चुंगल दहक डराय ॥
रूप बनावो सौदागर को * संगहि घोड़ा लेहु सजाय ॥
शकुन हमारो यह बोलति है * तुम्हरो काम सिद्धि हुइजाय ॥
सुनमा बोली तब ऊदनि ते * देवर सुनो बात मनलाय ॥
संग तुम्हारे हमहूँ चलि हैं * बालम खोज लगै हैं जाय ॥
घोड़ा करेलिहा औ रसबेंदुल * ऊदनि तुरत लियो सजवाय ॥
जीन सुनहरो धरि घोड़न पर * रेशम तंग दिये खिंचवाय ॥
परो हुमेलैं हैं चाँदी की * हीरा चमकि चमकि रहिजाय ॥
ऊदनि सुनमाँ दोनों चलिभे * पहुँचे मालिन के घरजाय ॥
सुनमाँ बोली तब पोहपाते * मालिनि राजद्वार लौं जाउ ॥
कौन उभे माँ मोर बालम हैं * साँची खबरि सुनावो आइ ॥
मालिनि बोली तब सुनमाते * बेटी बार बार बलि जाउँ ॥
शीश महल में कन्त तुम्हारे * पहुँचो गूजरि रूप बनाय ॥
सुनिके बातैं ये मालिन की * सुनमाँ लीन्हो रूप बनाय ॥
दही दहेड़िया धरि माथे पर * पहुँची शीश महल में जाय ॥
रूप देखिके वा गूजरि को * तब आल्हा ने कही सुनाय ॥
बहुत पियारी हमका लागो * दही को मोल देहु बतलाय ॥
नृप मोहन चित्तौर निवासी * ताकी पुत्रि कहत जगआय ॥

तब समुझाओ रनिसुनमाँने * सुनिये बीर बनाफर राय ॥
कैदि तुम्हारी मैं छोड़वैहौं * कछुक निशानी देहु मँगाय ॥
काढ़ि अँगूठी तुनिआल्हा ने * सो सुनवाँ को दई गहाय ॥
मुँदरी लैके सुनमाँ चलिभइ * औ मालिनि घर पहुँची आय ॥
फिरि समुझावाबघऊदनिको * देवर सुनौ बात मनलाय ॥
शीश महलमें जल्दी पहुँचो * दोनौं घोड़ा साथ लिवाय ॥
कूच कराय दियो ऊदनिने * पहुँचे शीश महल ढिग जाय ॥
तब दर्वानी पूछन लागे * भैया हाल देहु बतलाय ॥
कहाँ ते आये औ कहँ जैहौ * साँचो हाल कहौ समुझाय ॥
तब जवाब ऊदनि ने दीन्हा * भैया काबुल देश हमार ॥
हैं सौदागर हम घोड़न के * राजै खबरि देहु करवाय ॥
उनहें पायन गो दर्वानी * पहुँचो राजा के ढिग जाय ॥
करी बंदगी नैपाली को * औ सब हाल कहौ समुझाय ॥
राजा आये दर्वाजे पर * ऊदनि करो वन्दगी जाय ॥
रूप देखिके उन घोड़न को * राजा मोहि २ रहि जाय ॥
राजा बोले सौदागर ते * इनको मोल देहु बतलाय ॥
तब जवाब ऊदन ने दीन्हों * राजा सुनौ बात मनलाय ॥
चाल देखिलेउ इनघोड़न की * कोइ असवार लेहु बोलवाय ॥
जो मन भावै महाराज के * पीछे मोल दिहौं बतलाय ॥
यह मन भाई नैपाली के * बहुतक क्षत्री लिये बोलाय ॥
चंचलचतुर अश्वलखि क्षत्री * रहिगै नीचे शीश लचाय ॥
ऊदनि बोले नैपाली ते * राजा मानहु बचन हमार ॥
बड़ लड़ैया महुबे वाले * औ दिल्ली के राजकुमार ॥
हो जो क्षत्री कोई इनमें * तो यह घोड़ा दिहैं फेराय ॥

इतनी सुनिके नैपाली ने * तुरतै आल्हा लिये बोलाय ॥
घोड़ा फेरौ तुम हियना पर * तुमरी कैद्दि माफ हुइ जाय ॥
देखि इशारा बघऊदनि को * आल्हा बहुत खुशी हुइ जायँ ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे * आल्हा और लहुरवा भाय ॥
एँड़ लगाय दई घोड़न के * लश्कर बीच पहूँचे आय ॥
खबरि सुनी जब रनिसुनवाँने * लश्कर गये बनाफर राय ॥
तुरतै चलिभइ मालिन घर से * औ लश्कर में पहुँची जाय ॥
जोगा भोगा औ बिजया की * तुरतै मुश्क दई खोलवाय ॥
धीरज दैके उन तीनौं को * आल्हा कूच दियो करवाय ॥
सात रोजकी मंजिल करिके * महुबो धुरो दबाओ जाय ॥
रोज आठयें मदन ताल पर * सबने डेरा दियो लगाय ॥
रुपना बारी को बोलवायो * ऊदनि महुबे दियो पठाय ॥
खबरि सुनावौ रङ्गमहल में * आये ब्याहि बनाफर राय ॥
रुपना चलिभौ मदनताल ते * सो महुबे में पहुँचो आय ॥
खबरि सुनाई रनि मल्हनाको * आये ब्याह बनाफर राय ॥
कठिन लड़ाई भइ नैनागढ़ * सातौ भाँवरि लई डराय ॥
बिदा कराइ लियो सुनवाँको * संगै डोला लियो फँदाय ॥
परी बरायत मदनताल पर * महलन करौ मंगलाचार ॥
कारज बनिगौ नैनागढ़ में * माता सब परताप तुम्हार ॥
सखी बुलाई रनि मल्हना ने * महलन होय मंगलाचार ॥
सजी आरती रनि मल्हनाने * तामें चौमुख दियना बार ॥
चूड़ामणि पंडित बुलवाये * नीकी साइति देहु वताय ॥
खोलि पत्तरा पंडित देखो * सुन्दरि साइति दई वताय ॥
भई तयारी बर परछन की * डोला साथ सुनमदे क्यार ॥

करि गठिबंधन बरदुलहिन को * परछन होन लगी तेहिबार ॥
परछन करिके बरदुलहिन को * राखो रङ्गमहल में जाय ॥
आल्हा चरण छुये मल्हना के * औ माथे माँ लिये लगाय ॥
देवै ब्रह्मा के पग परसे * औ परिमाल कचेहरी जाय ॥
आल्हा चरण छुये राजा के * राजा बहुत खुशी हुइ जाय ॥
बजी बधाई गढ़ महुबे में * घर २ भयो मंगला चार ॥
सुनवाँ चरण छुये मल्हना के * मल्हना दियो नौलखा हार ॥
रैयति सगरे गढ़ महुबे की * मल्हना सबको दियो इनाम ॥
ऊदनि पहुँचि गये फौजनमें * दीन्हों खिलति बाँटि तमाम ॥
दगी सलामी गढ़ महुबे में * आये ब्याहि बनाफर राय ॥
आदर करि २ सब राजनको * ऊदन बिदा दई करवाय ॥
ऐसे ब्याह भयो आल्हा को * राजा नैपाली घर जाय ॥
आगे ब्याह लिखौंमलिखेको * यारो सुनिये कान लगाय ॥
कबि न होहुँ नहिंचतुरकहावों * आज्ञा पालन करी बनाय ॥
भूल चूक जो यामे होवै * सज्जन क्षमहिं दया उरलाय ॥

* इति आल्हा का ब्याह नैनागढ़ की लड़ाई सम्पूर्ण *



* श्रीः *

आल्ह खण्ड

मलिखान का ब्याह

* पथरीगढ़-कसौंदी की लड़ाई *

* दोहा *

बंदि प्रथम गुरुदेव पद, बहुरि शारदा माय ।
ब्याह बीर मलिखान को, कहौं यथामति गाय ॥ १ ॥

* सवैया *

हौ बरदानि अनुग्रह खानि सुनी यह बानि भवानि तिहारी ।
द्वै कर तीर गदा धरि ज्यों करती सब दासन की रखवारी ॥
त्यों करिये हमरी रखवारि दया उर धारि सुनो करतारी ।
केवल है अवलम्ब तुहीं जगदम्ब बिलम्ब कहा ममवारी ॥२॥

* सुमिरनी *

मैं पद बन्दौं शिव शङ्करको * जेहि शिरगंग भंग आधार ॥
अंग अंग में भस्म रमाये * नाँदी बृषभनाथ असवार ॥

मस्तक द्वैजचन्द्र अति सोहै * धारे कंठ मुण्ड की माल ॥
बीछी साँपन को आभूषण * अंबुज सदृश नयन त्रयलाल ॥
जटा जूट अंग भस्म बिराजै * आधे अंग अम्बिका माय ॥
भूत पिचास प्रेत सँग डोलैं * नाना रूप रहे दर्शाय ॥
कर त्रिशूल अरुडमरु बिराजै * शोभा जासु बर्णि नहिं जाय ॥
हैं अविनाशि सब देवन में * महिमा रटैं देव समुदाय ॥
सुखरासी कैलाश निवासी * हैं अविनाशी शम्भु सुजान ॥
हैं सब लायक जन सुखदायक * पुरवहु आश दास हितजान ॥
छोड़ सुमिरनी अब आगे मैं * बरणौं ब्याह बीर मलिखान ॥
तुम्हरी आशा पर गावत हौं * पुरवहु आश बीर हनुमान ॥
कोट कसौंदी औ पथरी गढ़ * तिसरे बिसहिन नाम बखान ॥
तीनि नाम है एक नगर के * ब्याहे जहाँ बीर मलिखान ॥
नृप गजराजा तहँ को कहिये * जिन घर जादूको अधिकार ॥
सेसा भगतिन तिनके घरमें * जादू जानहि बे शुम्मार ॥
घोड़ा अगिनियाँ गजराजाघर * फौजन आग देहि बरसाय ॥
बिन मारे क्षत्री मर जावैं * सारी फौज जाय झिल्लाय ॥
गजमोतिन तिनकी यक बेटी * शोभा जासु न बरनी जाय ॥
आनन पूर्णचन्द सम राजै * मृग सम नयन रहे दर्शाय ॥
युवा वयस को बेटी पहुँची * शोभा अंग अंग रहि छाय ॥
खेलनसखिन संग नित जावै * बोली एक सखी मुसुकाय ॥
क्या कुल हीने बाप तुम्हारे * या धन हीन बिसेने राय ॥
युवा वयस तुम्हरी अबआई * क्यों ना दीन्हों ब्याह रचाय ॥
तुम्हरे सँगकी जितनीसखियाँ * सो सब गौने रौने जायँ ॥
कारण कौन ब्याहनहिंकीन्हा * साँची कहो सखी समुझाय ॥

सुनिके बातैं ये सखियन की * बेटी बहुत गई शर्माय ॥
तुरतै चलिभइ फुलबगिया ते * औ माता ढिग पहुँची आय ॥
देखि अनमनी चम्पा रानी * तब बेटी से कही सुनाय ॥
कौनसि चिंता तन महँ ब्यापी * बेटी रही उदासी छाय ॥
तब गजमोतिन बोलन लागी * औ माता से कही सुनाय ॥
हमरे संग की सखी सहेली * हमसे करैं हँसौआ आय ॥
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे * या धनहीन बिसेने राय ॥
कौने कारण ब्याह न कीन्हो * साँची हमहिं देहु बतलाय ॥
सुनिके बातैं गजमोतिन की * रानी सोचि २ रहिजाय ॥
धीरज दैके गजमोतिन को * औ बाँदी ते कही सुनाय ॥
तनिक चलीजा तू बँगला लौं * औ राजा को लाउ बुलाय ॥
उनहें पाँयन बाँदी चलि भइ * औ राजा को लाइ बुलाय ॥
करिप्रणाम शुभ आसन दीन्हों * रानी बोली पद शिरनाय ॥
स्यानी बेटी घरमें हुइ गइ * जल्दी टीका देहु पठाय ॥
यह मन भाई गजराजा के * उठि दरबार पहूँचे आय ॥
सूरज बेटा को बुलवायो * चारो नेगी लिये बुलाय ॥
पाँच लाल को टीका लैके * सो नेगिन काँ दो सौंपाय ॥
यह कहि दीन्हीं गजराजाने * केहु राजा के आवो चढ़ाय ॥
नगर महोबे तुम ना जैयो * जहँ पर बसैं बनाफर राय ॥
जाति बनाफर की ओछी है * ताते दीजो नगर बराय ॥
टीका लैके नेगी चलिभे * औ सूरज का संग लिवाय ॥
रात दिना को धावा करिकै * औ दिल्ली माँ पहुँचे आय ॥
लगी कचेहरी शब्द भेदि की * भारी लागि रहा दरबार ॥
तौ लौं सूरज दाखिल हुइगे * चारो नेगी संग लिवाय ॥

करी बन्दगी बादशाह को * पाती गही दई चलाय ॥
पाती बाँची पृथीराज ने * पढ़तै तुरत दई लौटाय ॥
ब्याहु न करिहैं हम बिसहिनमें * ना हम मूड़ कटैहैं जाय ॥
सूरज चलिभै तब दिल्ली से * औ कनवज में पहुँचे जाय ॥
भरी कचेहरी जैचन्द बैठे * शोभा बरन करी ना जाय ॥
करी बन्दगी सूरजमल ने * कर में पाती दई गहाय ॥
पाती बाँची नृप जैचन्द ने * पढ़तै तुरत दई लौटाय ॥
कठिन लड़ाई पथरी गढ़ की * जहँ पर तपैं बिसेने राय ॥
ना कुपियारो पुत्र हमारो * ना हम फौज कटैहैं जाय ॥
ब्याहु न करिहैं हम बिसहिनमें * टीका अनत चढ़ावौ जाय ॥
इतनी सुनिके सूरज चलिभै * औ उरई की सुरति लगाय ॥
राह चलन्ते ऊदनि मिलिगे * बन में खेलन गये शिकार ॥
हँसिके ऊदनि पूछन लागे * पहिले करि के राम जोहार ॥
कौन काम को तुम आये हौ * साँचो हाल कहो समुझाय ॥
करो बहाना तब सूरज ने * बोले तुरतै बात बनाय ॥
गङ्गा नहैबे को आये थे * नाहीं और हमैं कोइ काम ॥
तबहें ऊदनि बोलन लागे * नेगी संग लिये केहि काम ॥
बात बताय देहु सब साँची * नाहक करत बहाना तात ॥
हाल बतायो तब सूरज ने * टीका लिये बहिनको जात ॥
बहुतै राजन के फिरि आये * सबने टीका दओ लौटाय ॥
अब हम जैहैं गढ़ ऊरई को * जहँ पर बसैं महिल परिहार ॥
तब समुझायो बघऊदन ने * औ सूरज से कही सुनाय ॥
लरिका तुमका हम बतलावैं * तहँ तुम टीका देहु चढ़ाय ॥
बीर केहरी गढ़ सिरसा में * बाँका बच्छराज का लाल ॥

टीका चढ़ाय देहु महुबे में * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ॥
तब जवाब सूरज ने दीन्हों * ऊदनि अकिलि गई तुम्हार ॥
हुक्म नहीं है गजराजा को * महुबे टीका देहि चढाय ॥
जाति बनाफर की ओछी है * हटको हमहिं बिसेने राय ॥
इतनी सुनिके बघऊदनि के * नैनन रही लालरी छाय ॥
गुस्सा हुइके ऊदनि बोले * क्या कुलहीन चँदेले राय ॥
देश देश में नाम हमारो * हमका जानत सब संसार ॥
अब ना हीनी मुखते कहियो * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
सूरज सोचैं अपने मन में * क्या कर्तव्य बिश्व भगवान ॥
कही न मानौं जो ऊदनि की * तौहू भंग होय गो मान ॥
बिना चढ़ैये टीका लौटौं * तौहू बात बनैगी नाय ॥
ब्याहतो करनो है काहू घर * महुबे टीका देहिं चढाय ॥
सोचिसमुझिके सूरज चलिभे * पहुँचे नगर महोबे जाय ॥
लगी कचहरी चंदेले की * भारी लागि रहा दर्बार ॥
ऊदनि सूरज दोनों पहुँचे * राजै करी बन्दगी जाय ॥
पाती लैके टीका वाली * सूरज गद्दी दई चलाय ॥
खोलि के पाती राजा बाँची * आँकुइआँकु नजरि परिजाय ॥
पढ़िके पाती चंदेले ने * औ गद्दी तर दई चलाय ॥
तबहें आल्हा पूछन लागे * औ राजा ते कही सुनाय ॥
कहाँ ते पाती चाचा आई * साँची हमहिं देहु बतलाय ॥
तब समुझायो चंदेले ने * बेटा मेरे लड़ेते लाल ॥
पाती आई है बिसहिन को * यामें लिखो ब्याह को हाल ॥
नृप गजराजागढबिसहिनको * वाने टीका दियो पठाय ॥
ना कुपियारो पुत्र हमारे * ना हम फौज कटै हैं जाय ॥

श्यामा भगतिनतिनके घरमें * जो जादू में बुरी बलाय ॥
घोड़ा अगिनियाँ पूँछ घुमावै * सारो लश्कर देहि जराय ॥
ताते मानहु कही हमारी * टीका अबहिं देहु लौटाय ॥
तबहें ऊदनि बोलन लागे * चाचा मानहु बात हमार ॥
तुमहि हँसौवाको डर नाहीं * तुमकाँ हँसै सकल संसार ॥
देश देश में नाम तुम्हारो * महुबे बसैं चन्देले राय ॥
घरको आओ टीका फेरो * तौ रजपूती जाय नशाय ॥
टीका लौटन को नाहीं है * चाहे कोटि करो उपचार ॥
तब चन्देले सोचन लागे * कलहा दस्सराज के लाल ॥
कही हमारी ये ना मनिहैं * ताते टीका लेहु चढ़ाय ॥
सोचि समुझि के चन्देले ने * औ ढेबा ते कही सुनाय ॥
शकुन बताय देहु जल्दी से * जामें सबै काम बनि जाय ॥
लैके पोथी समर सार को * ढेबा देखैं सगुन बिचार ॥
ढेबा बोले चन्देले ते * अबहीं टीका लेहु चढ़ाय ॥
शकुन हमारो यह बोलति है * तुम्हरो काम सिद्धि हुइजाय ॥
आज्ञा दै दइ चन्देले ने * महलन खबरि दई पहुँचाय ॥
बजै बधाई रङ्गमहल में * मल्हना फूली नाहिं समाय ॥
सखी बोलाई सब महुबे की * महलन होय मंगलाचार ॥
चौकी डराय दई चन्दनकी * कंचन कलश धरो सजवाय ॥
बेद मन्त्र पण्डित उच्चारैं * बैठे चौक बीर मलिखान ॥
सूरज आए रङ्ग महल में * शोभा देखि थकित भए प्रान ॥
मङ्गल होन लगे महलन में * गौरि गणेश दिये पुजवाय ॥
पग परछा ले तब सूरज ने * माथे रोचना दिये लगाय ॥
बीराखवाय दियो मलिखे को * सब सामान दियो सम्हराय ॥

दई निछावर सब नेगिनको * शोभा बरन करी ना जाय ॥
उदनि पहुँचो रङ्गमहल में * गहने को डब्बा लाये उठाय ॥
चारों नेगी जो सूरज के * तिनको गहना दियो गहाय ॥
ऐसी दशा देखि महलन में * सूरज खुशी भये अधिकाय ॥
बोले सूरज तब पण्डित से * ब्याह की साइत देहु बताय ॥
खोलि पत्तरा चूड़ामणि ने * लग्न सोधि कही सुखपाय ॥
शुक्ल पक्ष तेरसि तिथि सुन्दर * माघ महीना दियो बताय ॥
हँसी खुशी ते सूरज चलि भे * चारो नेगी साथ लिवाय ॥
टीका चढ़िगो नर मलिखेको * माहिल सुनी खबरिया आय ॥
तुरतै लिल्ली पर चढ़ि बैठो * औ बिसहिनकीसुरतिलगाय ॥
सूरजमल पीछे ते पहुँचे * माहिल पहुँचि अगारू जाय ॥
जहाँ कचहरी गजराजा की * पहुँचे तहाँ चुगल परिहार ॥
आवति देखो जब माहिलको * राजा चौकी दई डराय ॥
आवो बैठो उरई वाले * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
करी बन्दगी माहिल ठाकुर * औ चौकी पर पहुँचे जाय ॥
माहिल बोले गजराजा ते * बाढ़ै छत्र बिसेने राय ॥
कुशल कुशलिया है उरई में * बैठे राज करौ महराज ॥
एक बात अनहोनी हुइगइ * सो मैं कहौं गरीब नेवाज ॥
टीका लैके गये सूरजमल * सो महुबे माँ दई चढ़ाय ॥
जाति बनाफर की ओछी है * ताको करिहौ कौन उपाय ॥
तौ लौं सूरज दाखिल हुइगे * चारो नेगी संग लिवाय ॥
तब गजराजा पूछन लागे * बेटा हाल देहु बतलाय ॥
कहाँ चढ़ाये तुम टीका को * सो सब साँची कहौ बुझाय ॥
तब जवाब सूरज ने दीन्हो * दोनों हाथ जोर शिरनाय ॥

नगर महोबो एक बस्ती है * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ॥
तिनके घर में लड़िकाक्वाँरो * राजा बच्छराज को लाल ॥
टीका चढ़ाओ हम मलिखे को * साँची तुमहिं दई बतलाय ॥
तब गजराजा बोलन लागे * जल्दी टीका लेहु फेराय ॥
जाति बनाफर की ओछी है * ताते ब्याह होन को नायँ ॥
कही हमारी तुम ना मानी * महुबे टीका दियो चढ़ाय ॥
तबही सूरज बोलन लागे * दादा खता माफ हुइ जाय ॥
देश २ में हम फिरि आये * टीका काहु कबूली नाय ॥
चारि कोस को फेरुखाय के * हम उरई को कियो पयान ॥
लरिका पूछों मैं माहिल ते * सोची यहै चित्त दर्म्यान ॥
राह चलंते ऊदन मिलिगे * पूछन लागे हाल हवाल ॥
करो बहाना हम बहुतेरा * ऊदन जानि गये सब हाल ॥
जोरावरी करी ऊदनि ने * महुबे टीका लियो चढ़ाय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वारे * टीका अब फिरिबे को नायँ ॥
ताते मानौ कही हमारी * दादा धीर धरौ मन मायँ ॥
जब बरात लै वे चढ़ि आवैं * सबके सीस लियो कटवाय ॥
माहिलचलिभैतब सिहनिते * औ उरई में पहुँचे आय ॥
आजु भोर में समय बीतिगो * लागो माघ महीना आय ॥
माघ महीनाके लागति खन * महुबे होन तयारी लाग ॥
सखियाँ फूली फिरैं भवन में * महुबो नगर बनो सुरधाम ॥
ऊदनि बोले तब आल्हा से * दादा सुनो बनाफर राय ॥
न्योतो भेजो सब राजन को * अबना राखहु देर लगाय ॥
इतनी सुनिके सुनि आल्हा ने * तुरतै चिट्ठी लिखी बनाय ॥
न्योतो भेजो सब राजन को * औ सब हाल लिखीसमुझाय ॥

न्योतो भेजो जिन राजनको * सजिसजि पहुँचि महोबे जायँ॥
महुवे केरे चौगिर्दा में * तम्बुइ तम्बू परैं लखाय॥
झंडा गड़िगै सब राजन के * सुन्दर लहर २ लहरायँ॥
बीर बेंदुला को चढ़वैया * सब राजन को मिलै अगार॥
कुशल क्षेम सबहिन सों पूछे * करिके विविध भाँति सत्कार॥
समाचार राजा ते कहि के * ऊदन लश्कर पहुँचे जाय॥
बोलि नगड़ची को बीरादयो * सोने कड़ा दियो डरवाय॥
बजै नगाड़ा गढ़ महुबे में * सारी फौज होय तैयार॥
डंका बाजो गढ़ महुबे माँ * क्षत्री सबै भये तैयार॥
ऊदनि बोले सब क्षत्रिन ते * सुनियो शूर बीर सर्दार॥
जिन्हहिंपियारीहों घरतिरिया * अपनी तलब लेहु घर जाउ॥
जिन्हहिं पियारी परमभगौती * सो बरात हित धारहु पाउँ॥
कठिन मोरचा है तिसहिनको * बिरलै शूर अड़ैहैं पायँ॥
है गुजरात देश तरवरिहा * तहँ दिन रात चलै तरवार॥
जितने कायर थे लश्कर में * सो सब घर को भये तयार॥
जितने क्षत्री थे तरवरिया * हँसि २ सजन लगे हथियार॥
चारि घरी केरे अरसा में * सबदल साजि भयो तैयार॥
ऊदनि पहुँचे रंगमहल में * अरु माता से कही सुनाय॥
नेग योग जल्दी करवावो * अब ना राखौ देर लगाय॥
इतनी सुनिके रानि मल्हनाने * तुरतै सखियाँ लई बुलाय॥
हरेहरे गोबर अँगन लिपायो * मोतिन चौक दई पुरवाय॥
चन्दन चौकी तब डरवाई * पुनिमलिखेको लियोबुलाय॥
चूड़ामणि पंडित तब आये * गौरि गणेश दिये पुजवाय॥
सातसोहागिनमिलिमलिखेको * मड़ये तेल दियो चढ़वाय॥

उबटन करि के तब नाऊने * गंगा जलसो दयो अन्हवाय ॥
नेग जोग मल्हना ने कीन्हे * नेगी बहुत खुशी हुइ जायँ ॥
मुँह माँगो इनाम मल्हना ने * सब नेगिनको दयो मँगाय ॥
नामी जामा मलिखे पहिरो * ऊपर सुन्दर मौर सोहाय ॥
कुआँ बियाहनचली पालकी * दूलह बने बनाफर राय ॥
पलकी पहुँची जबकुँअटापर * तिलका पाँव रही लटकाय ॥
पहिली भाँवरि के परतै खन * तब गहि बहियाँ लयो उठाय ॥
प्राणदान माता हम दीन्हों * नित उठि सेवा करौं बनाय ॥
बहुत खुशी भइ तिलकारानी * आशीर्वाद दियो सुख पाय ॥
चरण लागिके सब मातनके * मलिखे माथे लिये लगाय ॥
आशिष दीन्हौं रनिमल्हनाने * जुगजुग जियो लड़ैते लाल ॥
पलकी चलिभइतब लश्करको * मल्हना रंगमहलको जाय ॥
मलिखेपहुँचि गये लश्कर में * ऊदनि डंका दियो बजाय ॥
आल्हा चढ़िगे पचशावद पर * ऊदल बेंदुला पर असवार ॥
घोड़ी कबुतरी नर मलिखेकी * सोऊ कोतल चली अगार ॥
जितने मित्र सखा मलिखेके * सब बरात को भये तयार ॥
कूच कराय दियो महुबे ते * पथरीगढ़ की सुरति लगाय ॥
हर्षित भूप बराती सिगरो * बिहँसत चले जायँ सुखपाय ॥
आठ रोजकी मंजिल करिके * बिसहिन धुरो दबायो जाय ॥
आठ कोस केरे अन्तर पर * तंबू ठाढ़े दिये कराय ॥
आठ कोस केरे अन्दर में * तंबुइ तम्बू परै लखाय ॥
रङ्ग रङ्ग के झण्डा लहरैं * सुन्दर राजध्वजा फहराय ॥
फेटैं छुटि गईं रजपूतन की * घोड़न जीन धरे उतराय ॥
कोइ कोइ चत्री करैं रसोई * कोइ असनान करनको जायँ ॥

नचै कंचनी केहु तंबुश्रा में * तबला दमकिदमकि रहिजाय ॥
ऊदनि बोले तब आल्हा से * दादा परिडत लेहु बुलाय ॥
देर लगैबे को दिन नाहीं * ऐपनवारी देहु पठाय ॥
चूड़ामणि परिडत तब आये * तुरतै साइति दई बताय ॥
साइति नीकी या बेरा है * ऐपनवारी देहु पठाय ॥
भयो बुलौश्रा तब रूपन को * रूपन तुरत पहूँचो आय ॥
ऊदनि बोले तब रूपन ते * ऐपनवारी देहु पठाय ॥
तब जवाब रूपनने दीन्हो * भैया सुनो उदयसिंह राय ॥
कठिन मोरचा है बिसहिन को * हम ना मूड़ कटै हैं जाय ॥
तब समुझायो बघऊदन ने * भैया अकिल कहाँ तुम्हार ॥
तुमका नेगी हमना समझैं * तुमतो भैया लगौ हमार ॥
मलिखे व्याहन को ना रहिहैं * यहु दिन कहिबे काँ रहिजाय ॥
थाइ काइलो गइ रूपन को * तब ऊदन से कही सुनाय ॥
तेगा हाथ देहु मलिखे को * घोड़ी कबुतरी देहु मँगाय ॥
अबहीं जैहौं मैं बिसहिन को * ऐपनवारी दिहौं पठाय ॥
कूदि बछेड़ा पर चढ़ि बैठो * ऐपनवारी लई उठाय ॥
एँड़ लगाय दई घोड़ी के * घोड़ी आसमान उड़िजाय ॥
कछुक देर केरे अरसा में * सा फाटक पर पहुँचो जाय ॥
रुपना बोलो दर्वानी ते * जल्दी फाटक देहु खोलाय ॥
तब दर्वानो पूछन लागो * अपनो हाल देहु बतलाय ॥
कहाँ ते आये औ कहँ जैहौ * आगे कहाँ तुम्हारो काम ॥
कौन काज को तम आये हौ * आगे कहा तुम्हारो नाम ॥
आई बरायत गढ़ महुबे ते * व्याहन हेत बीर मलिखान ॥
ऐपनवारी हम लाये हैं * हमरे बचन करौ परमान ॥

ऐपनवारी बारी लायो * राजै खबरि सुनावौ जाय ॥
नेग हमारो जल्दी भेजौ * द्वारे कठिन चलै तरवार ॥
गो दर्बानी तब फाटक ते * राजै खबरि सुनाई जाय ॥
नेगी आयो गढ़ महुबे ते * रूपन बारी नाम बताय ॥
ऐपनवारी वह लायो है * माँगति नेग खड़ा सरकार ॥
चारि घरी भरि चलै सिरोही * द्वारे बहै रक्त की धार ॥
इतनी सुनिके राजा जरिगे * सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
मूँड़ काटिके वा बारी को * हमरी नजरि गुजारो आय ॥
सूरज चलिभा दरवाजे को * रूपन घोड़ी आओ फँदाय ॥
करी बंदगी गजराजा को * ऐपनवारी दई चलाय ॥
नेग हमारो जल्दी भेजौ * यह रूपन ने कही सुनाय ॥
गुस्सा हुइकै गजराजा ने * तुरतै हुक्म दियो फरमाय ॥
मूड़ काटि लेउ या बारी को * गढ़ते निकरि भागि ना जाय ॥
बहुतक क्षत्री उठि ठाढ़े भये * सबने हल्ला दियो मचाय ॥
गुर्ज चलायो मानसिंह ने * घोड़ी दहिने को हटिजाय ॥
बार न बाँका भयो रुपना को * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
भाला मारो तब रुपना को * लागो घाव शीश में जाय ॥
मानसिंह धरनी में गिरिगे * राजा गये सनाका खाय ॥
नोक बेधि के तब भाला की * ऐपनवारी लई उठाय ॥
एँड़ लगाय दई घोड़ी के * गलियारेन में पहुँचो जाय ॥
क्षत्रिन घेरि लियो रुपना को * घूमिके चलन लगी तरवार ॥
तीनि घरी भरि चली सिरोही * रुपना कठिन करी तरवारि ॥
बहुतक क्षत्री रुपना मारे * औ धरती में दियो गिराय ॥
एँड़ लगाय दई घोड़ी के * औ बरात में पहुँचो जाय ॥

आवत देखो जब रुपना को * रंग विरंगे परो लखाय ॥
हँसिकै ऊदनि पूछन लागे * भैया हाल देहु बतलाय ॥
कैसी गुजरी दर्वाजे पर * सो सब हाल कहो समुझाय ॥
तवहें रुपना बोलन लागो * भैया कछु कही ना जाय ॥
गरुई फौजैं हैं बिसहिन की * चत्रिन कठिन करी तरवार ॥
हमैं भगौती दहिने हुइ गई * हम करि आये काम तुम्हार ॥
देखि हकीकतिमाहिल ठाकुर * तुरत बछेरी भये सवार ॥
जायके पहुँचे गढ़ बिसहिनमें * जहँ दर्बार बिसेने क्यार ॥
करी बन्दगी गजराजा को * माहिल रहिगौ माथ नवाय ॥
सूरत देखी जब माहिल को * राजा चौकी दई डराय ॥
आवो वैठो उरई वाले * अपनो हाल देहु बतलाय ॥
तब माहिल समुझावन लागे * राजा सुनिये कान लगाय ॥
ब्याहुनकरियोतुममलिखेसँग * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
कही हमारी जो तुम मानौ * तौ यक जतन देहिं बतलाय ॥
देउ जनवासो पथरीगढ़ में * जहँ पर मेख नाहिं अनियाय ॥
जहर घोराय देउ शरबत में * पियतै तुरत काल हुइजाय ॥
विना बियारी जुना टूटै * तुम्हरे काम सिद्ध हुइ जायँ ॥
सुनिके बातैं ये माहिल की * राजा बहुत खुशी हुइ जायँ ॥
तुरतबुलायलियो सूरज को * औ सब हाल कहो समुझाय ॥
तुरत घोराय दियो शरबतको * तामें जहर दियो मिलवाय ॥
कूच कराय दियो बिसहिनते * चारौ नेगी संग लिवाय ॥
जायके पहुँचे वे बरात में * बैठे जहाँ बनाफर राय ॥
करी बंदगी तुनिआल्हा को * बोले सूरज माथ नवाय ॥
है जनवासो पथरीगढ़ में * तहँ पर तंबू देहु लगाय ॥

इतनी सुनतै बघ ऊदनि ने * लोहे कि मेखैं लई मँगाय ॥
घनलै लीन्हों नर मलिखे ने * मेखैं लई उदैसिंह राय ॥
मेखैं गाड़ो पथरी गढ़ में * तंबू सबै दिये तनवाय ॥
दाँत अँगुरिया सूरज दाबी * फिरि आल्हाते कही सुनाय ॥
शरबत लाये हैं गगरन माँ * सो कुँवरन का देहु बँटाय ॥
इतनी सुनिके सुनि आल्हा ने * सोने कटोरा लियो मँगाय ॥
जबहें शरबत आल्हा लीन्हों * समुहें छींक भई ठहनाय ॥
भयो बुलौआ तब ढेबा को * भैया शकुन देहु बतलाय ॥
खोलि के पोथी ढेबा देखी * औ आल्हा ते कही सुनाय ॥
जहर मिलाओ यह शर्बत है * ताते सबै देहु फेंकवाय ॥
एक कटोरा शर्बत लैके * ऊदनि कुत्तै दियो पिलाय ॥
पियतै शर्बत कुत्ता मरिगौ * तब जरि मरो उदैयसिंह राय ॥
लैके कोड़ा ऊदनि दौरे * औ नेगिनको दियो गिराय ॥
तड़पि के बोले फिरि सूरज ते * घटिहा वंश बिसेने क्यार ॥
सूरज लौटे झुन्नागढ़ को * औ राजा ढिग पहुँचे आय ॥
कही हकीकति जनवासे की * दादा कछु कहो ना जाय ॥
बड़े सगुनियाँ महुबे वाले * तिनसे एक पेश ना जाय ॥
बात बात पर सगुन बिचारैं * शर्बत सबै दियो फेंकवाय ॥
मेख गाड़ि के पथरी गढ़ में * अपने तंबू दिये तनाय ॥
सूरज बात करन ना पाये * तौ लौं माहिल पहुँचे आय ॥
तबहें राजा पूछन लागे * माहिल जतन देहु बतलाय ॥
बोले माहिल तब राजा ते * तुम सुनि लेहु बिसेने राय ॥
लड़े न जितिहौ तुम आल्हाते * ताते करौ अधीनी जाय ॥
बिनती करिकै लरिकै लावो * औ खंदक माँ देहु डराय ॥

मानि सलाह लई माहिल की * राजा तोड़ा लिये मँगाय ॥
मुहरन तोड़ा औ नौ हीरा * लै बरात में पहुँचे जाय ॥
करी अधीनी गजराजा ने * दीन्हो नजरि सामुहें जाय ॥
तुम्हरी बरोबरि के नाहीं हैं * हमरी खता माफ हुइ जाय ॥
देश हमारे यह रीती है * आगे कुला कुला ब्योहार ॥
अकिलो लरिका तुम पठवावौ * सातो भाँवरि देहु डराय ॥
तब जवाब मलिखे ने दीन्हों * औ आल्हा ते कही सुनाय ॥
घटिहा राजा है बिसहिनको * दादा कछु छल परै लखाय ॥
तड़पि के ऊदनि बोलन लागे * जो छल करै हमारे साथ ॥
मारि सिरोहिनके मुँह तोरौं * बिसहिन गर्द देहुँ करवाय ॥
लई शिरोही तब मलिखे ने * औ चलिबेको भये तयार ॥
तब जवाब राजा ने दीन्हों * दुबिधा छोड़ि देहु महराज ॥
लोहे के नाते सुई न जै हैं * हमरे कुला यही ब्यवहार ॥
तबहें आल्हा बोलन लागे * सुनिये बिसहिन के सर्दार ॥
जहर मिलाओ शर्बत भेजो * ताते नाहिं रहो एतबार ॥
गंगाकरिलेउ तुम हियना पर * तौ हम मानि लेहिं एतबार ॥
गंग उठाई गजराजा ने * औ आल्हासे कही सुनाय ॥
जो कोउ दूजी करै आपु संग * ताको लौटि भगौती खाय ॥
आल्हा पलकी तब मँगवाई * मलिखे बैठि गये अरगाय ॥
चली पालकी जनवासे ते * औ बिसहिन में पहुँची आय ॥
गई पालकी जब भीतर को * राजा हुक्म दियो फरमाय ॥
फाटक बन्द करो बिसहिनकै * अहनी ताले देहु डराय ॥
हुक्म पाय के दर्बानी ने * फाटक बन्द दियो करवाय ॥
गई पालकी चन्दन चौकको * तब राजा ने कही सुनाय ॥

मूड़ काटि लेउ या चत्री को * भाजि न जाय मीरमलिखान ॥
लै लै तेगा बढ़े सब चत्री * हरि लेउ आज दुष्टके प्राण ॥
मलिखे सोचैं अपने मनमाँ * घटिहा बंश बिसेने क्यार ॥
गंगा करि के जे ले आये * संग न लेन दिये हथियार ॥
मलिखे सोचैं अपने मन में * अबधौं कहा करैं घनश्याम ॥
बाँस निकारि लियो पलकीको * लै बजरंग बलीको नाम ॥
मारिके बाँसन मलिखे फोरो * चत्री भाजे प्राण बचाय ॥
अकिले मलिखे की डपटनिमें * चत्री फेंक भगे हथियार ॥
देखि दशा यह गजराजा ने * तुरतै करी अधीनी जाय ॥
अब हम जानी अपने मनमाँ * हौ समरत्थ बनाफर राय ॥
बंश हमारे यहै रीति है * द्वारे कठिन चलै तरवार ॥
डण्ड बाँधिके ब्याहु होति है * हमरे कुला यही ब्यवहार ॥
गाफिल करिके नरमलिखेको * राजा लिये डण्ड बँधवाय ॥
सिंह पौरि पर चन्दन खम्भा * तामें मलिखे दिये बँधाय ॥
ऊपर मारु दई बाँसन को * जामा टूक टूक हुइ जाय ॥
गाँठी बैठि गई पीठी में * छर छर खून रहो बल्लाय ॥
बाँदी देखी गजमोतिन की * तेहि बेटी ते कही सुनाय ॥
बाप तुह्मारे बैरी हुइगै * छलिके लरिका लाये लिवाय ॥
धोखेसे बाँधो चन्दन खम्भमें * बाँसन मारु दई करवाय ॥
इतनी सुनिके गइ गजमोतिन * बाँधो जहाँ बनाफर राय ॥
तब गजमोतिन बोलनलागी * गजराजा ते कही सुनाय ॥
कौन देश को बँधुआ लाये * काहे मारु दई करवाय ॥
तब समुझाओ गजराजा ने * बेटी बँधुआ ऋणी हमार ॥
सात वर्ष को पैसा अटको * जाने दई न एक छदाम ॥

ब्याहको कंकन करमें देखा * तब गज मोतिन कही सुनाय ॥
वे तो स्वामी हमरे लागैं * जल्दी मुश्क देहु खोलवाय ॥
सुनिके बातैं गजमोतिन की * मलिखे बहुत गये शर्माय ॥
गुस्सा आइ गई देही में * भुजबलमसकिमसकिरहिजाय॥
कड़ियाँ टूटि गईं साँकर की * मलिखे खम्भा लिये उपारि ॥
खम्भा लैके मलिखे पहुँचे * क्षत्रिन खैंचि लई तरवार ॥
चारि घरी भरि बजी सिरोही * महलन बही रक्त की धार ॥
क्षत्री भजन लगे बिसहिन के * अपने डारि डारि हथियार ॥
मलिखे खम्भा जेहि के मारैं * सुरपुर चलो जात मुसुकात ॥
क्षत्री भागि गये समुहें ते * अकिलो खड़ो बीर रिसखात ॥
हाथ जोरि के राजा बोले * तुम सुनि लेउ बनाफर राय ॥
अबना दूजी तुम संग करिहैं * अबहीं भाँवरि दिहैं डराय ॥
खम्भा डारि दियो मलिखे ने * औ पलकी में बैठो जाय ॥
धोखा दैके गजराजा ने * फिरिके मुश्क लई बँधवाय ॥
तिलिया दहक रहे द्वारे पर * तामें मलिखै दियो डराय ॥
बजुर पिहनियाँफिरिसकिलाइ * ऊपर पहरा दियो पठाय ॥
बँदियापहुँचीगजमोतिनढिग * औ सबहाल कहो समुझाय ॥
पिता तुम्हारे ने घट कीन्हो * बालम खंदक दियो डराय ॥
कौनसे खंदक माँ बालम हैं * बाँदी हमैं देहु बतलाय ॥
तिलिया नाम महलके पीछे * बालम खन्दक दियो डराय ॥
दिवस बीतगो ज्यों त्यों करके * सन्ध्याकाल पहूँचो आय ॥
आधिरात केरे अमला में * रानी पहुँचि दहक पर जाय ॥
कञ्चन थार सजे सब भोजन * अरु गंगाजल लियो धराय ॥
रेशम रस्सा लै रानी ने * सो दाहक माँ दओ लटकाय ॥



हाथ जोरि के रानी बोली * स्वामी पैयाँ परौं तुम्हार ॥
जल्दी निकरौ तुम दाहक ते * स्वामी जेंय लेउ ज्योनार ॥
पिता हमारे ने छल कीन्हों * धोखेसे खंदक दियो डराय ॥
तब जवाब मलिखेने दीन्हों * घटिहा बंश विसेने क्यार ॥
घटिहा राजा की बेटी हौ * क्यों मोहिं रूप दिखायो आय ॥
तब गजमोतिन बोलन लागी * सुनिये सौम्य रूप भरतार ॥
मैंब्रतकठिन कियो तुम्हरेहित * औ यह हृदय लियो निरधार ॥
याती दासी बनौं आपको * नातरु रहौं जन्म भर क्वाँरि ॥
आगे मर्ज़ी नारायण की * फिरिनिजजीवन देहुँ बिसारि ॥
तब जवाब मलिखे ने दीन्हो * रानी सुनियो कान लगाय ॥
तुम्हरे निकारे जो हम निकरैं * तौ रजपूती जाय नशाय ॥
धर्म नहीं है ये क्षत्रिन के * जो ऊमे माँ भोजन खायँ ॥
जो अस्नेह होय मेरे संग * आल्है खबरि देहु पहुँचाय ॥
चलि भइ रानी तब दाहक से * बजुर पिहनियाँ दइ सकिलाय ॥
आइके पहुँची सतखंडा पर * तुरतै चिट्ठी लिखी बनाय ॥
पहिले लिखिके सरनामा को * फिरिऊदन को लिखी जोहार ॥
सुखकी निंदियातुमसबसोवौ * बालम खंदक परे हमार ॥
जल्द निकारौ तुम भैया को * नहिं सब बने काम नशिजायँ ॥
लिखिके चिट्ठी गजमोतिनने * फिरिमालिनसे कही सुनाय ॥
आजु विपत्ती हम पर परिगइ * मालिन कारज करौ हमार ॥
तब ?.लै जाउ काहू विधिसे * सो आल्हा काँ देहु गहाय ॥
कौन देश मालिनने दीन्हों * बेटा हमैं उजुर कछु नायँ ॥
तब समुझाओ बिसहिन में * बहिरौ आवैं न भितरो जायँ ॥
सात वर्ष को ?ी लै जावौं * बेटी जतन देहु बतलाय ॥



तबगजमोतिन ने समुझाओो * मालिन करौ बहाना जाय ॥
हमहिं पठाओो गजमोतिनने * बगिया फूल लेन को जाँय ॥
चिट्ठी लैके मालिन चलि भई * सो जूरा माँ लई छिपाय ॥
जायके पहुँची जब फाटक पर * तब सूरज ने कही सुनाय ॥
यहै खबरुआ है बरात को * याकी लूटि लेहु करवाय ॥
सुनतै क्षत्री लूटन लागे * मालिन बहुत गई घबराय ॥
रोयके मालिनि बोलन लागी * औ सूरज ते कही सुनाय ॥
हमहि पठाओो थो बेटी ने * बगिया फूल लेनकोजायँ ॥
जायके कहिहौं मैं बेटी ते * सूरज लूटि लई करवाय ॥
सुनिके बातैं ये मालिन की * सूरज बहुत गये घबराय ॥
जो सुनि पैहैं गजमा बहिनी * तुरतै दैहैं कठिन सराप ॥
फाटक खोलि दिये द्वारे के * गहनोसकल दियो फेरवाय ॥
फिरिसमुझायदियोमालिनको * मालिन बार बार बलिजाउँ ॥
यह ना तुम कहियो बहिनी ते * सूरज लूटि लई करवाय ॥
मालिनिचलिभईगढबिसहिनिते * औ पथरीगढ़ पहुँची आय ॥
जौ रे तम्बू थो माहिल को * मालिनि तहाँ गई नगिचाय ॥
कौन काज हित तुम आई हौ * कौने तुमको दियो पठाय ॥
मालिनि बोली तब माहिल से * ठाकुर जल्दी देहु बताय ॥
कौन सा तंबू है आल्हा को * कहँ पर मिलैं उदयसिंहराय ॥
माहिल बोले तब मालिनसे * मेरे बचन करौ परमान ॥
यहो राउटो है आल्हा को * हमहीं आल्हा हैं सरनाम ॥
खोलिके पाती तब जूरा से * सो मालिन ने दई गहाय ॥
खोलिके पाती माहिल बाँची * मनमें खुशी भये सुखपाय ॥
मारि पाटिके माहिल ठाकुर * तुरतै मालिनि दई भगाय ॥

जल्दीभागिजाउविसहिन को * नाहित डरिहौं पेट फराय ॥
रोवत रोवत मालिनि चलिभई * तौ लौं मिले उदयसिंहराय ॥
ऊदनि बोले तब मालिनि से * अपनो हाल देहु बतलाय ॥
कौन विपत्ती तुम पर परिगई * जो तुम रोय रही दुखपाय ॥
तब जवाब मालिन ने दीन्हों * हम पर बिपति कहीना जाय॥
आये बराती महुबे वारे * ब्याहन हेत बनाफर राय ॥
छलिके राजा लड़िका लाये * वाकी डंड लई बँधवाय ॥
मारु कराय दई बाँसन से * फिरि ऊभेमाँ दियो डराय ॥
रोयरोय पातीलिखिगजमोतिन* लिखिके हमैं दई पकराय ॥
सो छिनवाय लई आल्हा ने * हमरो मारु दई करवाय ॥
सुनिके बातैं ये मालिनि की * औ जरि मरा उदयसिंह राय ॥
कौन सो तंबू है आल्हा को * सो तनि हमैं देहु बतलाय ॥
उनहें पायन मालिनि लौटी * औ माहिल के तंबू जाय ॥
तुरत बताय दियो माहिल को * इनहीं पाती लई छिनाय ॥
राहुट हुइ के ऊदनि बोले * मामा अक्किलि गई तुम्हारि ॥
जन्म के बैरी तुम हमरे हो * तुमने दीन्हें जुलुम गुजारि ॥
काहे मारो तुम मालिनि का * काहे पाती लई छिनाय ॥
डरिके माहिल बात बनाई * औ ऊदन से कही सुनाय ॥
मालिनि टरति यह आवति थी* मलिखे ऊभे दिये डराय ॥
जोसुनिपौतोकोइविसहिनको * पाती लेतो तुरत छिनाय ॥
खबरि पहुँचती ना आल्हापर * तौहू जातो काम नशाय ॥
तेहिते डाटो हम मालिन को * औ पाती का लियो छिनाय ॥
पाती लैके माहिल ठाकुर * सो ऊदन का दई गहाय ॥
लावौ पाती माहिल मामा * हम सब लै हैं काम बनाय ॥

जन्म के बैरी हमरे लागौ * हमने जाने कर्म तुम्हार ॥
पाती लैके बघऊदनि ने * सो मालिन को दई गहाय ॥
चलिभेऊदन तब मालिन सङ्ग * श्रौ श्राल्हा ढिग पहुँचे जाय ॥
करो इशारा जब ऊदन ने * मालिनि पाती दई गहाय ॥
पाती बाँचत परलै हुइ गइ * श्राल्हा बहुत गये घबराय ॥
ऊदनि पूँछै तब श्राल्हा से * दादा हाल देहु बतलाय ॥
कैसी पाती यह श्राई है * काहे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
तब जवाब श्राल्हा ने दीन्हों * भैया कछू कही ना जाय ॥
घटिहा राजा है बिसहिन का * झूठी गंगा लई उठाय ॥
डराड बाँधिके नर केहरिकी * श्रौ ऊभे माँ दियो डराय ॥
रोयकेपातीलिखि गजमोतिन * रहि रहि मेरो प्राण घबराय ॥
सोनेको गहनो ऊदनिलीन्हों * सो मालिन काँ दश्रो गहाय ॥
फिरिसमुझायदियोमालिनको * कहिबो गजमोतिन से जाय ॥
मारि सिरोहिनचहला करिहौं * सातौ भाँवरि लिहौं डराय ॥
मालिनि चलिभइ झुन्नागदको * मन में बहुत खुशी हुइ जाय ॥
हुक्म देदियो तुनि श्राल्हाने * लश्कर जल्दी लेहु सजाय ॥
इतनी सुनिके बघऊदन ने * लश्कर डंका दश्रो बजवाय ॥
तोप नगाड़ा के बाजति खन * क्षत्री उठे भरहरा खाय ॥
पहिले नगाड़ा भइ जिन बन्दी * दुसरे माँ बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे नगारा के बाजत खन * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
कूच नगारा के बाजत खन * क्षत्री चले गणेश मनाय ॥
दबति श्रँधेरिया दलमाँ श्रावै * हाहा कारी शब्द सुनाय ॥
यकहरिकारा गोबिसहिनिको * तेहि राजा ते कही सुनाय ॥
फौजैं श्राई गढ़ महुबे की * सारो शहर लियो घिरवाय ॥

सुनिके बातैं हरिकारा की * राजा उठे भरहरा खाय ॥
मानसिंह सूरज बोलवाये * कातामल को लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो गजराजा ने * जल्दी लश्कर लेहु सजाय ॥
जितने आये हैं महुबे ते * सबके मूड़ लेहु कटवाय ॥
हुक्म पायके तीनौं चलिभये * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
बोलि नगड़ची को बोरादओ * लश्कर डंका देहु बजाय ॥
बजो नगाड़ा गढ बिसहिनमें * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
एक घरी केरे अरसा माँ * सब दल सजो बिसेने क्यार ॥
चलिभयोलश्करगढ़बिसहिनको * रणमें होत जाय घमसान ॥
दोनौं फौजन के अन्तर माँ * रहिगौ आठ खेत मैदान ॥
मुर्चा बन्दी तब करवाई * सूरज घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
यक ललकार दई सूरज ने * कौने धुरो दबाओ आय ॥
सुनिके बातैं ये सूरज की * ऊदनि घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
हम चढि आये हैं महुबे से * हमरो नाम उदयसिंह राय ॥
घटिहा राजा के लरिका हौ * घाँटहा बंश बिसेने क्यार ॥
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं थी * जो घटि करो हमारे साथ ॥
छलिके लै गये नरमलिखे को * उनकी डण्ड लई बँधवाय ॥
भलो आपनो जो तुम चाहौ * सातौं भाँवरि देहु डराय ॥
जो ना मनिहौ कही हमारी * बिसहिन गर्द दिहौं करवाय ॥
बातन बातन बत ब. ढुइगौ * औ बातन माँ बाढ़ो रार ॥
गुस्सा हुइ के सूरज बोले * मानसिंह ते कही पुकारि ॥
जानि न पावैं महुबे वारे * इनको देहु जानते मारि ॥
हल्ला करि दओ मानसिंह ने * क्षत्रिन खैंचि लई तरवारि ॥
झुके सिपाही दोनौं दल के * झूमिके चलन लगी तरवारि ॥

कोता खानी चलै कटरिया * ऊपर पेश कब्ज की मारु ॥
चारिघरी भरि चली सिरोही * तहँ बहि चली रक्तकी धार ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * दोनौं हाथ करैं तरवार ॥
अपनो पराओ ना पहिचाने * क्षत्रिन मारा मार सोहाय ॥
पैग पैग पर पैदल गिरिगे * उनके दुदुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसे पर हाथी डारे * छोटे पर्वत की अनुहार ॥
कल्ला कटिगे हैं घोड़न के * चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ॥
लाल खेलारी महुबे वारे * जनु फागुन माँ खेलैं फाग ॥
फौजैं भाजीं गढ़बिसहिनकी * मुर्चा हटो बिसेने क्यार ॥
सूरज भाजे रण खेतनते * गजराजा ते कही सुनाय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वारे * जिनते एक पेस ना जाय ॥
अकिलेऊदनि की डपटनिमाँ * सब दल रैन बैन हुइ जाय ॥
सुनि के बातैं ये सूरज की * राजा उठे भरहरा खाय ॥
फौजैं आईं गढ़बिसहिन की * तिनते सूरज कही सुनाय ॥
निमक हमरो तुम खाओ है * सो हाड़न माँ गयो समाय ॥
मारि भगावो इन पाजिन को * सबकी लूटि लेहु करवाय ॥
जान न पावैं महुबे वाले * सबके शीश लेहु कटवाय ॥
जंग जीतिहौ जो तुम इनते * दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
दैके पानो रजपूतन को * सूरज आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके खलासी गढ़बिसहिन के * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
धुआँ उड़ानो आसमान लों * सूरज रहे धुन्ध में छाय ॥
दगी सलामी दोउ ओर से * दलमें रही अँधेरिया छाय ॥
गोला ओला के सम छूटैं * गोली मघा बूँद झरलाय ॥
एक पहर भरि गोला बरसो * ज्वानन हाथ धरो ना जाय ॥

झुरमुट हुइगौ दोनौं दल को * ज्वानन खैंचि लई तरवार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै * बोलै छपकि छपकि तरवार ॥
चलै उनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
चलै कटरिया माना साही * औ तरवारि पिहानी क्यार ॥
तेगा चटकैं बर्दवान के * कटिकटि गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
ऐसी फौज कटी विसहिन की * गिरि गए डेढ़ लाख मैदान ॥
भारी समर भयो झुन्नागढ़ * भाजी फौज विसेने क्यार ॥
भजत सिपाही सूरज देखे * अपनी खैंचि लई तरवार ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो आगे को * पहुँचे उदयसिंह पर जाय ॥
हाथ उठाये सूरज बोले * तुम सुनि लेहु उदयसिंहराय ॥
दस दस रुपया के नौकर हैं * नाहक डरिहौ मूड़ कटाय ॥
हम तुम खेलैं समरभूमि में * दुइ में एक आँकु रहिजाय ॥
यह मन भाई बघऊदनि के * तब सूरज ते कही सुनाय ॥
चोट आपनी पहिले करिलेउ * नहिं भइ स्वर्ग रहो पछिताय ॥
इतनी सुनतै सूरज ठाकुर * अपनो तेगा दओ चलाय ॥
करो झड़ाका जब खोपड़ी पर * ऊदनि दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
बचिगा लरिका दस्सराज को * वाके अँग न आओ घाउ ॥
तब ललकार दई ऊदनि ने * ठाकुर खबरदार हुइ जाउ ॥
गुर्ज उठाओ बघऊदनि ने * सो सूरज पर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा जब घोड़ा के * सूरज घोड़ा दिये भगाय ॥
देखि दशा यह सूरजमल की * काँता घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
खैंचि सिरोही लइ कम्मर ते * सो ऊदन पर राखी जाय ॥
वार बचाओ कांतामल को * ऊदनि दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
भाला लैके नागदीनि को * कांतामल पर दियो चलाय ॥

लगो चपेटा जब घोड़ा के * घोड़ा खेत छोड़ि भगिजाय ॥
यह गति देखो जब ढेबा ने * अपने घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
सन्मुख आयो मानसिंह के * ढेबा दीन्हीं साँगि चलाय ॥
घाउ आइ गयो मानसिंह के * हौदा गिरे भरहरा खाय ॥
मानके गिरतै परलै हुइ गइ * अब कोइ फेंट बन्धैयानाहिं ॥
मुर्चा हटिगो गजराजा को * हाथ जोरि के कही सुनाय ॥
सूरज पहुँचे गजराजा तिर * हाथ जोरि के कही सुनाय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * जिनते चलत न एक उपाय ॥
सुनि के बातैं सूरजमल की * राजा गये सनाका खाय ॥
श्यामा भगितनका बुलवायो * रणको हाल कह्यो समुझाय ॥
इतनो सुनिके श्यामा चलिभइ * सूरज मलको संग लिवाय ॥
जायके पहुँची रणखेतन माँ * अपनो जादू दियो चलाय ॥
सन्मुख लश्कर लखि महुबेको * भगतिनि जादू दियो उठाय ॥
डारि मसानी दइ लश्कर में * सबके होश बन्द हुइ जाय ॥
जो जहँ ठाढ़ो सो तहँ रहिगो * नाहीं मसा तलक भन्नाय ॥
ढेबा बचिगो तेहि जादू ते * सो आल्हाढिग पहुँचोआय ॥
हाल बतायो रण खेतन को * भगतिनि जादू दियो चलाय ॥
पत्थर फौज करी भगतिनिने * भैया चलत न एक उपाय ॥
आल्हा बोले तब ढेबा ते * भैया तुम महुबे लौं जाय ॥
हाल बतैयो सब लश्कर को * सुनमा लावौ संग लिवाय ॥
इतनी सुनिके ढेबा चलिभौ * अपनो घोड़ा दओ बढ़ाय ॥
रात दिनाकी मंजिल करिके * गढ़ महुबे माँ पहुँचो आय ॥
देवै ठाढ़ी दरवाजे पर * हेरै बाट लहुरवा क्यार ॥
तौ लौं ढेबा दाखिल हुइगो * औ देवै को करी जोहार ॥

देवै पूछैं नर ढेवा ते * भैया हाल कहो समुझाय ॥
लाल बरात कहाँ तुम छोड़ी * औ कहँ छोड़े उदयसिंह राय ॥
ढेवा बोलो तब देवै ते * माता कछु कही ना जाय ॥
श्यामा भगतिनि जादू कीन्हों * लश्कर पत्थर दिया बनाय ॥
कान अवाज परी सुनमा के * पहुँची ढेवा के ढिग जाय ॥
सुनमाँ पूछे नरढेवा ते * देवर हाल कहौ समुझाय ॥
हाल बताओ सब ढेवा ने * भगतिनि जादू करी बनाय ॥
छलिके राजा मलिखेइ लैगये * सो ऊभे माँ दियो डराय ॥
जितनो लश्कर थो महुवेको * भगतिनि पत्थर दियो बनाय ॥
अकिले तम्बू माँ आल्हा हैं * बोलो तुमहिं बनाफर राय ॥
देर लगैबे को दिन नाहीं * जल्दी चलौ हमारे साथ ॥
इतनी सुनते सुनमाँ चलिभइ * लीन्ही खड्ग तुरत निजहाथ ॥
जायके पहुँची जब मठियामाँ * पूजी तुरत अम्बिका माय ॥
शीश चढ़ावन रानी लागी * तब देवी ने कही सुनाय ॥
काम तुहारो पूरन हुइ है * अमृत दियो अम्बिका माय ॥
अमृतछिरिकि दियो लश्करमाँ * तुरतै सकल फौज जी जाय ॥
अमृत लैके सुनमाँ चलिभइ * जगदम्बे को शीश नवाय ॥
हाल बतायो सब देवै को * घोड़ा पपीहा लियो मँगाय ॥
भेष बदलि के सुनमा रानी * औ घोड़ा पर बैठो जाय ॥
कूच कराय दियो महुबे ते * नरढेवा को संग लिवाय ॥
रात दिनाकी मंजिल करिके * भुन्नागढ़ में पहुँची आय ॥
जहाँ पै तम्बू तुनिआल्हाको * सुनमा उतरि परी अरगाय ॥
करी वन्दगी तुनि आल्हाको * स्वामी धीर धरौ मनमाय ॥
काम तुहारो पूरन हुइ हैं * दहिने भई शारदा माय ॥

अमृत लैके सुनमाँ चलिभइ * औ लश्कर में पहुँची जाय ॥
जहाँपै लश्कर थो महुबे को * सुनमा अमृतदओ छिरकाय ॥
अमृत छिरकत क्षत्री जागे * जागे तुरत उदयसिंह राय ॥
सन्मुख देखो रनि सुनमाँको * ऊदनि चरण छुये मनलाय ॥
लश्कर जागो बनाफर को * ज्ञानन मारु मारु रटलागि ॥
धावाकरिदओगढ़विसहिनको * चहु दिशिघेरलियोभय त्यागि ॥
यक हरिकारा गो बिसहिनको * राजै खबरि सुनाई जाय ॥
फौजैं आईं सुनिआल्हा की * चहु दिशि घेरो नगर बनाय ॥
इतनी सुनतै गजराजा ने * अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
फौजैं साजैं पथरीगढ़ में * लश्कर डंका देहु बजाय ॥
बजो नगारा झुन्नागढ़ में * क्षत्री सबै भये तैयार ॥
मानसिंह सूरज अरु कांता * तिनहूँ बाँधि लिये हथियार ॥
कूच नगाड़ाके बाजति खन * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
जायके पहुँचे रण खेतन माँ * मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
भओ सामना जब लश्करको * सूरज हुक्म दियो फरमाय ॥
बत्ती दैदेउ मेरि तोपन माँ * इन पाजिन का देउ उड़ाय ॥
इतनी सुनिके बढ़े खलासी * औ तोपन पर पहुँचे जाय ॥
आगि लगाय दई तोपन में * धुँआ रहो स्वर्ग मँड़राय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * अब कछु रहा ठिकाना नाय ॥
चारौ ओर में गोला बरसै * दलमें रही अँधेरिया छाय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसै * अन्धा धुन्ध भई घमसान ॥
तोपैं धैं धैं लाली हुइगई * ज्वानन लीन्हीं खैंचि कृपान ॥
झुके सिपाही दोनों दल के * खट खट चलन लगी तलवारि ॥
चलै उनब्बी औ गुजराती * ऊना असिल बिलायत क्यार ॥

चलै कटरिया माना साही * औ तरवारि पिहानी क्यार ॥
भारी युद्ध भयो धूरे पर * तहँ बहि चली रक्तकी धार ॥
पैग पैग पर पैदल डारे * दुइ दुइ पैग परे असवार ॥
बिसे बिसे पर हाथी डारे * छोटे पर्वत की अनुहार ॥
सुर्चन सुर्चन नचै बेंदुला * ऊदन कहैं पुकारि पुकारि ॥
भाजि न जैयो कोइ मोहराते * रखियो धर्म महोबे क्यार ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * दोनौं हाथ करैं तरवार ॥
भजे सिपाही पथरीगढ़ के * अपने डारि डारि हथियार ॥
भजत सिपाही सूरज देखे * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
सन्मुख पहुँचे बघऊदनि के * तिनते सूरज कही सुनाय ॥
दस दस रुपया के नौकर हैं * नाहक डरिहौ मूँड़ कटाय ॥
हम तुम खेलैं समर भूमिमें * दुइ में एक आँकु रहिजाय ॥
यह मन भाय गई ऊदनिके * तुरतै घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
खैंचि शिरोही लइ सूरजने * सो ऊदनि पर दई चलाय ॥
तीनि सिरोही सूरज मारी * नाहर लैगा चोट बचाय ॥
टूटि सिरोही गइ सूरज की * सूरज सोचैं औ रहिजायँ ॥
कावा दीन्हीं रस बेंदुल को * ऊदनि दहिने पहुँचे जाय ॥
ढाल कि औझड़ ऊदनि मारी * सूरज गिरे भूमि भहराय ॥
डंड बाँधि लइ बघऊदनिने * औ लश्कर को दओ बढ़ाय ॥
देखि दशा यह सूरजमल की * कांता घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
चोट चलाई बघऊदनि पर * जिनने दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
तीनि सिरोही कांता मारी * तीनौं ऊदनि लई बचाय ॥
टूटि सिरोही गइ कांता की * खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
गाफिल देखो जब कांताको * ऊदनि डंड लई बँधवाय ॥

दोनों बेटा गजराजा के * सो ऊदनि ने लिये बँधाय ॥
सुनी खबरिया जब भूपतिने * मनमें बहुत गये घबराय ॥
तुरतबुलायलियोभगतिनिको * रणको हाल कहो समुझाय ॥
सुनि के बातैं गजराजा की * भगतिनि जादू लियो उठाय ॥
कूँच कराय दियो बिसहिनते * अरु लश्करमें पहुँची आय ॥
हुक्म दै दियो गजराजा ने * औ सबलश्कर लियो सजाय ॥
घोड़ाअगिनियाँकोसजवायो * तापर भूपति भये सवार ॥
जायके पहुँचे रण खेतन में * भारी जाय दई ललकार ॥
कौन सूरमा चढ़ि आयो है * कोने बाँधे पुत्र हमार ॥
कौनसो क्षत्री है दुनियाँ माँ * केहिके जमें करेजे बार ॥
तब जबाब ऊदनि ने दीन्हों * हमने बाँधे पुत्र तुम्हार ॥
हमहीं क्षत्री हैं दुनियाँ में * हमरे जमें करेजे बार ॥
नाम हमारो उदयसिंह है * सुनिये बिसहिन के सर्दार ॥
लरिका खंदक ते निकरावो * सातौं भाँवरि देहु डराय ॥
जो ना मनिहो कही हमारी * मारों क्षत्र भङ्ग हुइ जाय ॥
सुनिके बातैं बघऊदनि की * गुस्सा भये बिसेने राय ॥
कारी पुतरिया सुर्खी हुइ गइ * नैनन रही लालरी छाय ॥
काहे ऊदनि बढ़ि २ बोलौ * क्या शिर आइ बिराजे काल ॥
चुप्पहि लौटि जाउ महुबे को * नहिं लखि परै धरणिमें भाल ॥
तब जवाब ऊदनि ने दीन्हों * सुनियो भूप बिसेने राय ॥
यहाँ कुहड़ बतिया कोउनाहीं * जो तर्जनी देखि मरिजाय ॥
हँसी खुशी से निज बेटी को * अबहीं ब्याह देहु रचवाय ॥
नाम तुम्हारो सबजग जाहिर * हो बुधिमान बिसेने राय ॥
अकिली कन्याके जियरापर * नाहक देहो फौज कटाय ॥

सुनिके बातैं बघऊदनि की * रिसहा भये बिसेने राय ॥
बरत अनल महँ जनु घृत डारहु * दूनी लपट देहि दिखलाय ॥
हुक्म दै दिया गजराजा ने * तोपन बत्ती देहु लगाय ॥
मारि भगावौ इन पाजिनका * सबको कटा देहु करवाय ॥
झुके सिपाही बिसहिन वाले * तोपन आगी दई लगाय ॥
धुआँ उड़ानो उन तोपन से * सूरज रहे धुंधि में छाय ॥
अररर अररर गोला छूटै * गोली मघा बूँद झरलाय ॥
बान अगिनियाँ छूटन लागे * मानहुँ नाग रहे मन्नाय ॥
क्यागति बरनोतेहिसमयाको * लश्कर तिड़ी बिड़ी हुइजाय ॥
दोऊ ओर से गोला बरसो * क्षत्री गिरैं धरणि भहराय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * तोपैं लालबरन हुइ जायँ ॥
मारु बन्द भइ तब तोपन को * क्षत्रिन हाथ धरे ना जायँ ॥
खैंचि सिरोही लइ क्षत्रिन ने * घूमिके चलन लगी तरवारि ॥
चलैं उनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला * ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ * तुम सब भैया लगौ हमारि ॥
भागि न जैयो कोइ मोहराते * रखियो धर्म महोबे क्यार ॥
दियो बढ़ावा रजपूतन को * ऊदनि आगे दियो बढ़ाय ॥
बढ़े सिपाही महुबे वारे * अपनो मया मोह बिसराय ॥
क्या गति बरनौं वाहि बेराको * बूते हाल कहो ना जाय ॥
सर सर सर सर छुटे बछेरा * ज्यों बन में से छुटै बिजार ॥
ऐसे छूटैं महुबे वाले * दोनौं हाथ करैं तरवारि ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै * बोलै छपकि छपकि तरवारि ॥
कटि २ मुण्ड गिरैं धरणीमें * उठि २ रुण्ड करैं तरवारि ॥

मूँड़नके तहँ मुड़चौरा भये * औ लोथिन के लगे पहार ॥
ऐसी मारु भई बिसहिनि में * धूरे बही रक्त की धार ॥
बीरबली भट गढ़ बिसहिनिके * पीछे हटन लगे भय खाय ॥
भजत सिपाही लखे बिसेने * तब भगतिनसे कही सुनाय ॥
जौहर अपने अब दिखलावौ * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
आगकिपुरियाभगतिनिलीन्ही * तुरतै आग दई बरसाय ॥
लश्कर जरन लगो आल्हाको * हा दैया गति कही न जाय ॥
इत उत क्षत्री भाजन लागे * ढूँढ़े राह न परै दिखाय ॥
बोले ऊदनि तब सुनमाँ ते * भगतिनि आगि दई बरसाय ॥
पानिकि पुड़िया सुनमाँ लैके * सो लश्कर पर दइ बरसाय ॥
अग्नी शान्त भई लश्कर की * क्षत्री जुटे समर में आय ॥
देखिहकीकतिश्यामा भगतिन * मनमें गई सनाका खाय ॥
तकि तकि जादू भगतिनि मारै * सो सब सुनमाँ देइ उड़ाय ॥
चिल्हरि रूप धरो भगतिनिने * सुनमाँ बाज रूप बनिजाय ॥
दोनौं उड़ि गईं आसमानको * फिरिलड़िगिरींधरजिमेंआय ॥
सुनमाँ बोली तब ऊदनि से * तुम भगतिनिकाँ डारोमारि ॥
तब जबाब ऊदनि ने दीन्हों * भौजी यह हुइबे की नाहिं ॥
हाथ जो डारैं हम तिरियापर * तौ क्षत्री पन जाय नशाय ॥
लैके छुरिया ऊदनि बाँकुरे * औ श्यामा ढिग पहुँचे जाय ॥
जूरा काटिलियो भगतिन को * जादू सबै झूठ परिजाय ॥
यह गति देखा जब श्यामाकी * राजा गये सनाका खाय ॥
घोड़ा अगिनियां पर चढ़िबैठे * औ लश्कर माँ दियो बढ़ाय ॥
पूँछ घुमाई जब घोड़ा ने * तुरतै आगि दई बरसाय ॥
तब समुझायो फिरि सुनमां ने * देवर मेरे उदयसिंह राय ॥

पूँछ काटि लेउ या घोड़ाकी * सवरै वारु दूरि हुइ जाय ॥
कावा दैके गजराजा को * ऊदनि लीन्हीं पूछ उड़ाय ॥
पूँछ के कटतै परलै हुइ गइ * अब कुछ रहा ठिकाना नाय ॥
राजा सोचैं अपने मनमाँ * ये लरिका हैं बुरी बलाय ॥
घोड़ाअगिनियाँश्यामाभगतिनि* दोनोंको बल दियो हटाय ॥
गुस्सा हुइके तब गजराजा * औ आल्हा ढिग पहुँचे जाय ॥
लई कमनियाँ मुलतानी की * गाँसी सेर भरे की खाय ॥
हियरा ढाटो तुनिआल्हाको * सन्मुख छाँड़ि कँवरो दीन ॥
हथि पचशावद दहिनेहुइगो * कैवरि निकरि गयो वा पार ॥
लई शिरोही गजराजा ने * सो आल्हा पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई आल्हा ने * नृप की टूटि सिरोही जाय ॥
तौ लौं आये ऊदनि सौंवर * तिन आल्हा ते कही सुनाय ॥
तुम्हरी बरनो को राजा है * याको डराड लेहु बँधवाय ॥
साँकर लैके तुनिआल्हा ने * पचशावद को दई गहाय ॥
साँकर फेरी पचशावद ने * औ राजा का दियो गिराय ॥
डराड बांधि लइ मंडरीक ने * औ हौदा माँ लियो कसाय ॥
जायके पहुँचे गढ़ विसहिन में * जीतिको डंका दियो बजाय ॥
आल्हा पूछैं गजराजा से * तुम मलिखे का देहु बताय ॥
करो अधीनी तब भूपति ने * अबहीं चलिके दिहैं बताय ॥
संग लै लियो गजराजा को * औ ऊभे पर पहुँचे जाय ॥
पत्थर टारि दियो ऊदनि ने * रेशम रस्सा दो लटकाय ॥
ऊदनि बोले तब मलिखे से * दादा मेरे बनाफर राय ॥
जल्दी निकरो तुम ऊभे ते * अबना राखहु देर लगाय ॥
तब जबाब मलिखे ने दीन्हीं * तुम सुनिलेहु लहुरवा भाय ॥

भारी घाय लगे देही में * लोह जँजीरन कसे बनाय ॥
बाँयें कटरिया यहु सालति है * दहिने लगे सेल के घाय ॥
कैसे निकरों ऊदनि भैया * सो तुम हमैं देउ बतलाय ॥
तबहें ऊदनि बोलन लागे * दादा मेरे बीर मलिखान ॥
सौ सौ कुंजर के बल राखे * सिगरे हारि गये चौहान ॥
मुख ते हीनी अब क्यों बोलो * दादा मेरे बीर मलिखान ॥
इतनी सुनिके भुजबल मसके * साँकर तोरि दई मलिखान ॥
तड़पि के मलिखे ऊपर आये * औ आल्हा को करी प्रणाम ॥
बिनती कीन्ही गजराजा ने * दोनों हाथ जोरि शिरनाय ॥
केदिछोड़िदेउमेरे लरिकनकी * अबहीं भाँवरि दिहौं डराय ॥
गङ्गा कराई सुनि आल्हा ने * सबकी मुश्क दई खोलवाय ॥
तुरत बुलाय लियो पंडितको * भौंरि की साइति देहु बताय ॥
खोलि पत्तरा तब पण्डित ने * तुरतै साइति दई बताय ॥
आल्हा पहुँचे पथरी गढ़ में * माहिल बिसहिन पहुँचे आय ॥
करत तयारी माहिल देखी * तब राजा से कही सुनाय ॥
ब्याहु न करियो तुम महुबेमाँ * नहिं रजपूती जाय नशाय ॥
कही हमारी जो तुम मानो * तौ हम जतन देहिं बतलाय ॥
जितने घरौआ हैं महुबे के * सबका लावो साथ लिवाय ॥
शूर कोठरियन माँ बैठारो * सबके शीश लेहु कटवाय ॥
यह मन भाई गजराजा के * तुरतै मड़औ दऔ छवाय ॥
शूर कोठरियन माँ बैठारे * फिरि सूरजका लियो बुलाय ॥
जल्दी जाओ तुम बरातको * आल्है खबरि सुनावौ जाय ॥
जितने घरौआ हैं महुबे के * सबका संगै लावौ लिवाय ॥
सूरज पहुँचे पथरीगढ़ में * औ आल्हा से कही सुनाय ॥

जितने घरौआ हैं महुबे के * सो सब चलौ हमारे साथ ॥
इतनी सुनिके आल्हा ऊदनि * सुलिखे ढेबा भये तयार ॥
लाखनि ब्रह्मा जोगा भोगा * मलिखे बाँधि लिये हथियार ॥
मोहन जगनिक ताल्हनसैयद * सोऊ साजि भये तैयार ॥
मलिखे बैठि गये पलकी में * छत्री घोड़न पर असवार ॥
जाय के पहुँचे दरवाजे पर * बारह शूर महोबे क्यार ॥
पलको धरि दइ चन्दनचौक में * उतरे सकल शूर सर्दार ॥
भयो बुलौवा तब मड़ये को * सब मड़ये में पहुँचे जाय ॥
पंडित बेद उचारन लागे * सब समान लियो मँगवाय ॥
भयो बुलौआ गजमोतिनको * सो मड़ये में पहुँची आय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं * पंडित गाँठ दई जुरवाय ॥
होम कराय दियो नीकीविधि * औ भौरिन का भये तयार ॥
पहिली भाँवरि के परतै खन * सूरज खैंचि लई तरवार ॥
करो झड़ाका नर मलिखेपर * ऊदनि लीन्ही चोट बचाय ॥
दूसरि भाँवरि के परतै खन * काँता दीन्हीं तेग चलाय ॥
चोट बचाई तब सुलिखे ने * नाहर बच्छ राज को क्वाँर ॥
तिसरी भाँवरि के परतै खन * छत्रिन खैंचि लई तरवार ॥
चली सिरोही वा मड़ये में * खम्भा टूक टूक हुइ जाय ॥
भजे सिपाही बिसहिन वाले * लोथिन ऊपर लोथि दिखाय ॥
तब जवाब ऊदनि ने दीन्ही * फिरिके खंभा लेहु उठाय ॥
जो कछु भाँवरि बाकीरहिगइ * सोऊ अबहीं लेहु उठाय ॥
मड़वो गाड़ो तब साँगिन को * औ ढालन से दओ छवाय ॥
चार भाँवरैं जो बाकी थीं * सोऊ फिरे बनाफर राय ॥
चली शिरोही फिरि मड़ये में * चर्बी अङ्ग गई लपिटाय ॥

चुनरीभीजी गजमोतिन की * मलिखे रक्त बरन दिखराय ॥
कांतामल औ सूरजमल की * ऊदनि डन्ड लई बँधवाय ॥
मुश्क बाँधिके गजराजा की * कन्यादान लियो करवाय ॥
ऊदनि बोले फिरि राजा ते * तुम सुनि लेहु बिसेने राय ॥
बहुअर लेहैं मलिखे भैया * देजो आल्हा लिहैं भराय ॥
भातकेगरजी हम सब क्षत्री * जल्दी भोजन होय तैयार ॥
इतनी कहिकेऊदनि चलिभये * बारहु संग शूर सर्दार ॥
जायके पहुँचे जनवासे में * जान्यो हाल माहिल परिहार ॥
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठे * औ बिसहिन को भयो तयार ॥
जायकेपहुँचे गढ़ बिसहिनमें * गजराजा को करी जोहार ॥
ऊँची चौकी तिन डरवाई * बैठो उरई के सर्दार ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * जिनते हारि गई तरवारि ॥
मारि सिरोहिन चहला कीन्हों * मड़ये बही रक्त की धार ॥
कैदि कराय लई लरिकन को * हमरी डंड लई बँधवाय ॥
सातौ भाँवरि उन डरवाई * कन्यादान लियो परसाय ॥
भात खानको वे सब कहिगे * अबकछु जतन देउ बतलाय ॥
तबहें माहिल बोलन लागे * तुम सुनि लेहु बिसेने राय ॥
जो वे कहिगये भातखानको * तौ विधि ब्रह्मा दई बनाय ॥
करिके बिनती तुम आल्हा ते * लावौ साथ घरौवा जाय ॥
बिन हथियार साथ लै आवौ * पतरिन भात देहु कटवाय ॥
जबहीं जेवैं महुबे वारे * सबके मूड़ लेहु कटवाय ॥
सुनिकै बातें ये माहिल की * राजा के मन गई समाय ॥
तुरतै भात त्यार करवायो * महलन शूर दिये बैठाय ॥
राजा चलिभये जनवासे को * चारौ नेगी सङ्ग लिवाय ॥

जहाँ पै तम्बू नुनिआल्हा को * राजा तहाँ पहुँचे जाय ॥
पाँच हाँथ ऊँचा सिंहासन * तेहि पर तपैं बनाफर राय ॥
ओहे समैया के औसर में * पहुँचे तहाँ बिसेने राय ॥
करी बन्दगी नुनिआल्हाको * तुरतै चौकी दई डराय ॥
राजा बैठि गये चौकी पर * तब आल्हाने कहो सुनाय ॥
कौन काम को तुम आये हो * जल्दी हमहिं कहौ समुझाय ॥
तब जवाब राजा ने दीन्हीं * सुनिये महुबे के सर्दार ॥
त्यार रसोईं है महलन में * चलिके जेयँ लेहु ज्योनार ॥
जितने शूर गये भौंरिन में * उतने भात खान को जायँ ॥
देश हमारे यहै रीति है * सो हम तुम्हें दई बतलाय ॥
इतनी सुनिके नुनिआल्हा ने * सब शूरन ते कही सुनाय ॥
जल्दी त्यारहोहु बिसहिन को * अब न राखहु देर लगाय ॥
इतनी सुनिके सब त्रत्रिन ने * अपने बाँधि लिये हथियार ॥
बारहु त्त्री उठि ठाढ़े भये * जिनका सजत न लागी बार ॥
तब गजराजा बोलन लागे * सुनियो सकल शूर सर्दार ॥
लोहेके नाते सूई न जैहैं * हमरे बन्श यहा ब्योहार ॥
दूजो करिहैं ना तुम्हरे सँग * हमरे बचन करौ परमान ॥
बात मानिके गजराजा को * पलकी बैठे बीर मलिखान ॥
बारह त्त्री महुबे वाले * सोऊ साथ भये तयार ॥
जायके पहुँचे दरवाजे पर * तुरत पालकी धरी उतारि ॥
गडुआ लैके गंगाजल को * त्त्री मड़ये पहुँचे जाय ॥
पाटा डारि दये मड़ये में * तिनपर सबै दिये बैठाय ॥
डारि पत्तलैं गजराजा ने * तिनपर भात दियो परसाय ॥
फाटक बन्द भए बिसहिन के * भारी ताले दिये डराय ॥

नेगमँगाय दियो मलिखेको * सोने कंगन रतन जड़ाय ॥
कौर उठायो जब क्षत्रिन ने * राजा हल्ला दियो मचाय ॥
क्षत्री निकरि परे कोठरिनते * कर में लिये नगिन तरवार ॥
देखि दशा यह ऊदनि बोले * घटिहा बन्श बिसेने क्यार ॥
सुमिरण करिके जगदम्बेका * लै अञ्जनी सुवन को नाम ॥
सकल सुरमा उठि ठाढ़े भये * करमें गडुआ लिये लगाय ॥
गडुअन मारैं महुबे वाले * क्षत्री गिरैं धरणि भहराय ॥
चारि घरीभरिगडुआ बरसा * क्षत्री पाटा लिये उठाय ॥
पाटा मारैं जेहि क्षत्री के * सो गिर परैं भूमि परजाय ॥
बाल खेलारी महुबे वारे * जिनते एक पेश ना जाय ॥
क्षत्री भागे गढ़ बिसहिन के * मड़ये बही रक्त की धार ॥
तब फिरि ऊदन बोलनलागे * भैया मानहु बात हमार ॥
भातनछोड़ियोकोइपतरिनपर * यहु दिनकहिबे का रहिजाय ॥
इतनी सुनिके बारहु क्षत्री * लोथिन ऊपर बैठे जाय ॥
भातु खान लागे पतरिन पर * शोभा बरन करी ना जाय ॥
दशा देखि यह गजमोतिन ने * निज माता से कही सुनाय ॥
लड़े न जितिहैं दादा इनसे * माता जल्द देहु समुझाय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वारे * जिनते हारि गई तरवारि ॥
इतनी सुनिके तब रानी ने * गजराजा को लियो बुलाय ॥
हाथ जोरि के रानी बोलै * स्वामी खता माफ होइ जाय ॥
लड़े न जितिहौतुमलरिकनते * अब सब सोच देहु बिसराय ॥
कही हमारी अब तुम मानो * बेटी कि बिदा देहु करवाय ॥
इतनी सुनिके गजराजा ने * तब आल्हा ते कही सुनाय ॥

हौ सब लायक देवै वाले * हमरी चूक माफ हुइ जाय ॥
करौ तयारी तुम बरात की * अबही पलकी देहु पठाय ॥
देर लगैबे को दिन नाहीं * बेटी की बिदा देहु करवाय ॥
सकल सूरमा उठि ठाढ़े भये * ऊदनि फाटक दिये खोलाय ॥
राह पकरि लइ पथरी गढ़की * औ बरात में पहुँचे आय ॥
डब्बा लैके गहने वालो * ऊदनि पलकी लई सजाय ॥
जायके पहुँचे गढ़बिसहिन में * शोभा कछु कहो ना जाय ॥
जितने गहने हैं तिरियन के * सब गजमोतिन सजे बनाय ॥
पहिले भेंटी निज माता को * भेंटी बहुरि सहेली जाय ॥
शीश नायके गजराजा को * औ पलकी में बैठी जाय ॥
चली पालकी गजमोतिनकी * सखियाँ रोय रोय रहिजायँ ॥
कूच करायो तब बिसहिन ते * ऊदनि मोहरैं दई लुटाय ॥
आइ पालकी जनवासे में * आल्हा हुक्म दियो फरमाय ॥
जल्दी त्यार होहु महुबे को * तम्बुअन मेख देहु उखराय ॥
आये भिखारी गढ़बिसहिनके * ऊदनि मोहरैं दई लुटाय ॥
कूच कराय दियो महुबे को * जीतिको डंका दियो बजाय ॥
आठ रोज को धावा करिके * महुबो धुरो दबाओ आय ॥
रुपना बारी को बोलवायो * तासों ऊदनि कही सुनाय ॥
खबरि सुनावौ रनिमल्हनाको * आये व्याहि बीर मलिखान ॥
चलि भौ रुपना तब बरात ते * अरु महुबे को कियो पयान ॥
चारि घरी केरे अरसा में * सो महलन में पहुँचो जाय ॥
मल्हना ठाढी सतखण्डा पर * हेरै बाट लहुरवा क्यार ॥
रुपनै आवत मल्हना देखी * सतखण्डा ते उतरी धाय ॥

मल्हना पूछै तब रुपना ते * बेटा हाल देहु बतलाय ॥
तब जवाब रुपना ने दीन्हो * माता सब परताप तुम्हार ॥
सखी बोलावौ सब महुबे की * महलन होयँ मंगलाचार ॥
पुन्य तुम्हारो भयो सहायक * आये ब्याहि बीर मलिखान ॥
करौ तयारी वर परछनि की * अब ना राखहु देर लगाय ॥
सुनिके बातैं ये रुपना को * मल्हना बहुत खुशीहुइजाय ॥
सखी बुलाई सब महुबे की * परछनि साज सजहिं हर्षाय ॥
थार सोबरन को मँगवायो * चौमुख दियना लियो बराय ॥
फिरि बुलवायकही रुपना ते * तुम ऊदनि ते कहियो जाय ॥
जल्द पालकी को पठवावैं * अब ना राखैं देर लगाय ॥
चलिभयो रुपना तब महलन ते * औ बरात में पहुँचो आय ॥
हुक्म सुनायो रानि मल्हनाको * महलन पलकी देहु पठाय ॥
इतनी सुनिके बघऊदनि ने * तुरत पालकी दई सजाय ॥
पलकी पहुँची दरवाजे पर * रानी सकल उठीं हर्षाय ॥
परछन करके दरवाजे पर * मल्हना बहुअर लई उतारि ॥
तिलका माता बहुत खुशी भइ * पानी पियैं उतारि उतारि ॥
भीतर महल गईं सब रानी * पूजे इष्ट देव मनलाय ॥
मलिखे चरण छुये मल्हनाके * औ माथे माँ लिये लगाय ॥
देवै ब्रह्मा के पग छुइ के * सब के चरण छुये मनलाय ॥
बजै बधाई गढ महुबे में * घर घर होय मंगलाचार ॥
बड़े बराती सब महुबे में * झंडन रही लालरी छाय ॥
सब राजनको ऊदनि मिलिके * नेगिन गहनों दओ बटाय ॥
दगी सलामी गढ महुबे में * आये ब्याह बीर मलिखान ॥

जितने बराती राजा आये * निजनिज पुरकों कियोपयान ॥
ऐसो व्याह भयो मलिखे को * यारो विसहिनि के दर्म्यान ॥
जेठ पूर्णिमा इक्यासी में * पूरो व्याह बीर मलिखान ॥
आगे चौथी चन्द्रावलिको * लिखिहौंधारि कृष्णपदध्याय ॥
कविनहोउँ नहिचतुर कहावों * श्रीशिवचरण विष्णुपदध्याय ॥
आज्ञा पूरण करी दास ने * सज्जन क्षमहि दोष मनलाय ॥

इति मलिखान का विवाह और पथरीगढ़ की लड़ाई सम्पूर्ण ।



* श्रीः *

आल्हखण्ड

* चन्द्रावलि की चौथी *

(बौरीगढ़ अर्थात् बाँदौ की लड़ाई)

* दोहा *

बन्दि प्रथम हरिहर चरण, गुरुपद अंबुज ध्याय ।
चन्द्रावलि चौथी लिखहुँ, सुनहु सुजन मन लाय ॥१॥

* सुमिरनी *

एतनी बेरा केहि का गैये * शारद केहि के लीजे नाम ॥
अलख निरंजन औ परमेश्वर * लै परभात राम को नाम ॥
भोला गावौं मैं गोला के * जिनको पाँच कोस देउ थान ॥
आस पास कोरौं को जंगल * बीचमें कुटी दिगम्बर क्यार ॥
क्षेत्र गोकरण सन्मुख राजै * पूरब भूतनाथ दरबार ॥
फागुन चैत और सावन में * जहँ पर मेला होय अपार ॥
दर्शन हेत सकल नरनारी * आवत देश देशते धाय ॥
मज्जन करैं गोकरण क्षेत्र में * जिनकेसकल पाप नशिजाय॥
छोड़ि सुमिरनी मैं हियना ते * बीर पमारों लिखौं बनाय ॥
लगा महीना रे सावन का * घर घर परो हिंडोला आय ॥
घर घर बिटिया झूला झूलैं * लै लै अपने बिरनके नाम ॥
घर घर तीज मनावैं सखियाँ * मंगल कलश सजैं निजधाम ॥
मल्हना रानी चन्देले को * सतखंडा पर करै विचार ॥

सबकी बिटिया भूला भूलैं * सुधिनमिलीचन्द्रावलिक्यार ॥
यह बिचारि मनमल्हना रोवै * धुनिधुनिशीश रहो पछिताय ॥
नाम उचारै चन्द्रावलि को * ऊदनि कान भनक परिजाय ॥
ऊदनि पहुँचे सतखंडा पर * औ मल्हना ते कही सुनाय ॥
कौन बात को माता रोवौ * सो तुम हमैं देहु बतलाय ॥
कौन आपदा तुमपर परिगई * को चन्द्रावलि कहो बुझाय ॥
बात बनाई तब मल्हना ने * औ ऊदनि से कही सुनाय ॥
घरघर बिटिया तिजिया पूजैं * सुन्दर राग सुनाय सुनाय ॥
हमरे कुलमाँ कोउन उपजो * जो त्योहार मनोती आय ॥
यह सुनि ऊदन बोलनलागे * माता साँचु देहु बतलाय ॥
करो बहाना जो तुम हमसे * तो मैं देहौं प्राण गवाय ॥
काढि कटरिया लइ ऊदनि ने * औ हियरा से लई लगाय ॥
केहि की बेटी है चन्द्रावलि * माता हमैं कहो समुझाय ॥
तब समुझायो रनि मल्हनाने * बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
बहिन तुम्हारी है चन्द्रावलि * बौरी ब्याह भये बहुकाल ॥
जबते ब्याह गई बौरी को * तबते मिली खबरिया नायँ ॥
कोउ न उपजो गढ महुबे मे * जो बेटी को लौतो जाय ॥
ऊदनि बोले रनि मल्हना से * तुमने हमहिं बताओ नाय ॥
चौथो लौं तो मैं बहिनीको * बेटो तुम्हैं मिलौतो आय ॥
तब समुझाओ रनिमल्हनाने * बेटा मेरे उदैसिंह राय ॥
उमरि तुम्हारी अति बारी थी * ताते तुमहिं बताओ नायँ ॥
ऊदनि बोले महतारी से * माता खर्च देहु मँगवाय ॥
हुक्म दिवाय देहु राजा से * मैं बहिनी को लावौं जाय ॥
बिदा न करिहैं जो बहिनीको * तो मैं बौरी दिहौं फुकाय ॥

असली बड़ा आल्हखण्ड



भार्गव भूषण प्रेस, काशी।

इतनीकहिके ऊदनि चलिभये * पहुँचे बीच कचेहरी जाय ॥
करी बन्दगी परिमालै को * दोनौं हाथ बाँधि रहिजायँ ॥
हाथ पकरि के चन्देले ने * औ छाती से लिया लगाय ॥
कौन काज को तुम आयेहौ * बेटा हमहिं देहु बतलाय ॥
तबहैं ऊदन बोलन लागे * चाचा मेरे चन्देले राय ॥
अबहीं जैहौं मैं बौरी को * बहिनिकोबिदालाउँ करवाय ॥
खर्च मँगाय देहु जल्दी से * अपनो हुक्म देहु फरमाय ॥
तब समुझाओ चन्देले ने * बेटा मेरे उदयसिंह राय ॥
तुम ना जैयो गढ़ बौरी को * इतनी मानौ कही हमारि ॥
इच्छा नाहीं मोहिं बेटी की * बेढबराज जादवाँ क्यार ॥
तबहैं ऊदन बोलन लागे * चाचा हम मनिबे के नायँ ॥
खर्च मँगाय देहु जल्दी से * अपनो हुक्म देहु फरमाय ॥
बिदा करैहौं मैं बहिनी की * तुरतै चौथी लैहौं जाय ॥
इतनी सुनिके राजाचलिभये * औ महलन में पहुँचे जाय ॥
आवत देखो जब राजा को * मल्हना उठी भरहरा खाय ॥
गुस्सा ह्वइके कहैं चन्देले * रानी अक्किलि गई तुम्हार ॥
हाल बताओ क्यों बौरी को * ऊदनि जाय करै तकरार ॥
तब समुझायोरनिमल्हना ने * स्वामी अर्ज सुनौ मनलाय ॥
धनदौलति की दुनियाँ भूखी * स्वामी दौलति बुरी बलाय ॥
दौलति पठै देहु बौरी को * तुरतै बिदा दिहैं करवाय ॥
बातमानिके रानी मल्हना की * आज्ञा दई चन्देले राय ॥
राजा चलिभये रँग महल ते * पहुँचे बीच कचेहरी जाय ॥
साठि पालकी नब्बे गजरथ * एकलख तुरङ्गलिये मँगवाय ॥
शालदुशाला मोहन माला * मुहरन तोड़ा दिये मँगाय ॥

सवालाख की चीरा कलँगी * सोउ मँगवाई चन्देले राय ॥
सब सौंपाइ दिये ऊदनि को * औ यह कही चन्देले राय ॥
दिल्ली ह्वइके बेटा जइयो * पृथीराज से मिलियो जाय ॥
हाल बतैहो पृथीराज को * बेटा मेरे उदयसिंह राय ॥
जैसो हुक्म होय राजा को * तैसोइ कियो लड़ैते लाल ॥
सोनेकोगहनो मल्हनालीन्हों * सो डब्बनमाँ दियो भराय ॥
चारो नेगी संग पठाये * औ सब हालदियो समुझाय ॥
कूँच कराय दियौ महुबे से * गढ़ दिल्लीकी सुरति लगाय ॥
ओही समैया के औसर में * माहिल महुबे पहुँचे आय ॥
सूरति देखी ना ऊदनि की * माहिल खोजि रहे मनलाय ॥
हाल बतायो ना काहू ने * माहिल सोचिसोचि रहिजाय ॥
तौ लौं मिलिगो अहिरकोबेटा * वाने हाल कहो समुझाय ॥
जो रहवैया है उरई को * महुबे बीच वियाहो आय ॥
तुरतै चलिभये माहिल ठाकुर * गढ़ दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
सात कदम ते करो बन्दगी * दोनों हाथ जोरि शिरनाय ॥
तब जवाब पिरथी ने दीन्हों * आवो उरई के परिहार ॥
कुशल बतावो तुम उरई की * औ राजन को कहौ हवाल ॥
तबहीं माहिल बोलन लागे * औ महराज धनी चौहान ॥
कुशल कुशलिया है उरई में * दिल्ली कुशल करैं भगवान ॥
करि सलाह यह नृप चन्देले * दिल्ली शहर लेहु लुटवाय ॥
आगे भेजि दियो ऊदनि को * घर घर शहर लेहु पँजियाय ॥
करो बहाना है चोरी को * बगिया परे उदयसिंह राय ॥
पीछे साजि के मलिखे ऐहैं * सारो नगर लिहैं लुटवाय ॥
जानते मारि देउ ऊदनिको * मानो कही पिथौरा राय ॥
तब जवाब पिरथी ने दीन्हों * ऐसी न कहौ महिल परिहार ॥

कहा बिगारो हमने उनको * जो वे ऐसो करत विचार ॥
ऊदन जै हैं बौरीगढ़ को * तुम मति झूठो कहो बनाय ॥
जब तुम आवतिहो दिल्लीका * तब तुम ऐसेय कहत बनाय ॥
कायल ह्वइके माहिल चलिभै * नौरङ्ग रंगे धनी चौहान ॥
तुरत बुलायो सुरजमल को * तिनते पिरथी कही बखान ॥
तनितुम चलेजाउ बगियाको * औ ऊदनि का लावौ जाय ॥
इतनी सुनिके सूरज चलिभये * औ बगिया में पहुँचे आय ॥
करी बन्दगी तब दोउन ने * सूरज हाल कहो समुझाय ॥
तुमहिं बुलाओ बादशाह ने * संगे चलौ बनाफर राय ॥
इतनी सुनतै ऊदनि चलिभये * घोड़ा बेंदुला पर असवार ॥
जायके पहुँचे गढ़ दिल्ली में * जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥
सात कदम ते करी बन्दगी * दोनौं हाथ जोरि शिर नाय ॥
हाथ पकरि के उदैसिंह को * राजा छाती लियो लगाय ॥
कहाँ कि त्यारी बेटा कीन्ही * जल्दी हमहिं देहु बतलाय ॥
तब जवाब ऊदनि ने दीन्हीं * सुनिये बादशाह महराज ॥
चौथी लेने को बहिनी की * हम बौरी को कियो पयान ॥
तब समुझायो पृथीराज ने * सुनिये महुबे के सर्दार ॥
बड़े लड़ैया बौरी वाले * जिनको बेड़ि बहै तरवारि ॥
कही हमारी ऊदनि मानौ * चुप्पै लौटि महोबे जाउ ॥
बिदो न ह्वइहैं गढ़ बौरी में * नाहक दैहौ प्राण गमाय ॥
इतनी सुनिके ऊदनि बोले * तुम सुनि लेउ पिथौरा राय ॥
बिदा करावैं हम बहिनी को * तौ तौ लौटि महोबे जायँ ॥
जौ नहिं बिदा करैं बहिनी को * मारौं चत्र भंग ह्वइ ॥
पिरथी सोचैं अपने मन माँ * कलहा देव कुँवरिको लाल ॥

कही हमारी ये ना मनि है * ताते कहि के हाल हवाल ॥
चीरा कलँगी सवालाख को * सो मँगवाइ पिथौरा राय ॥
यह नजराना पृथीराज को * दीजौ जाय बनाफर राय ॥
बिदा कराय देइँ बेटी की * तुम्हरे काम सिद्ध हुइ जायँ ॥
महलमें खबरिसुनी अगमाने * दिल्ली आये उदयसिंह राय ॥
धामन भेजो तब रानी ने * सो उदनि का गयो लिवाय ॥
ऊदनि चरण छुए अगमा के * औ माँथे माँ लिये लगाय ॥
तबहें अगमा बोलन लागी * बेटा मेरे उदयसिंह राय ॥
तुम मतिजावो गढ़बौरी को * जालिम बसत जादवाँ राय ॥
हाथ जोरिके ऊदन बोले * माता खता माफ हुइ जाय ॥
बिना बिदा के हम ना लौटैं * चाहे प्राण रहैं या जायँ ॥
बिदा न करिहैं जो जादौपति * मारौं छत्र भंग हुइ जाय ॥
मनमाँ सोचै अगमा रानी * कलहा देव कुँवरिको लाल ॥
ये ना मनिहै कही हमारी * लहर पटोरो लियो मँगाय ॥
सो पकराय दियो ऊदनिको * औ यह बात कही समुझाय ॥
सासु होय जो चन्द्रावलि को * ताहि पटोरा दीजौ जाय ॥
भेंट हमारो आगे धरियो * तुरतै बिदा दिहैं करवाय ॥
इतनी सुनिके ऊदन चलिभये * अगमा चरण छुये मनलाय ॥
मंजिल मंजिलके चलिबे माँ * बौरी धुरो दबाओ जाय ॥
डेरा डारि दियो बागन में * बौरी एक कोस रहिजाय ॥
राति बसेरी करि धूरे पर * भोरहिं उठे लहुरवा भाय ॥
कागद लैके कलपी वालो * अपनो कमलदान मँगवाय ॥
चिट्ठी लिखिके बीरशाह को * सो धामन को धई गहाय ॥
चलिभो धामन तब धूरे से * पहुँचो गढ़ बौरी में आय ॥

जहाँ कचेहरी बीरशाह की * धामन तहाँ गयो नगिचाय ॥
पाँच कदम ते करी बन्दगी * पाती गद्दी दई उठाय ॥
नजरि बदलिगई बीरशाहकी * तुरतै पाती लई चलाय ॥
खोलिके पाती राजा बाँची * आँकुइआँकु नजरि करिजाय ॥
पाती बाँची जब ऊदन की * राजा खुशी भये अधिकाय ॥
बेटा जोरावर को बुलवायो * तिनकाँ पाती दई सुनाय ॥
बहुतक दिवसव्याहको हुइगो * अबलों मिली खबरिकछुनाय ॥
ऊदनि आये हैं महुबे से * तिनका जल्दी लावहु जाय ॥
हेत प्रीति सन्मान रीति में * बेटा कमी होय कछु नाय ॥
गरुये नाते का लरिका है * देखहुकाज बिगरिनहिं जाय ॥
चलिभये जोरावर बङ्गला ते * औ धूरे पर पहुँचे आय ॥
इत जादव पति करी तयारी * तुरतहि बँगलालियोसजाय ॥
एकै बाना एक निशाना * एकै रंग रँगे सब ज्वान ॥
नृप मंत्री अरु मित्र सनेही * सबको एक रङ्ग पोशाक ॥
समुझि न परै कौन नृप आये * देखत बुद्धि जाय चकराय ॥
हेत परीक्षा बघऊदनि के * कीन्हों काज जादवाँ राय ॥
देखैं भेंट देइ यह काको * सारी बात तुरत जँचिजाय ॥
यहाँ कि बातैं हियने रहिगइ * अब धूरे की कहौं बुझाय ॥
पहुँचे जोरावर जब डेरन में * यक हरिकारा कही सुनाय ॥
बेटा आयो बीरशाहि को * भेंटो जल्द लहुरवा भाय ॥
सुनिके उदनि उठि ठाढ़े भये * तुरतै कही बदंगी जाय ॥
सन्मुख देखा जब उदनि को * जोरावर ने करी सुनाय ॥
धन्य बेंदुला के चढ़वैया * रानी देवकुँवरि के लाल ॥
तुमहि बुलाओ है राजा ने * जल्दी चलौ हमारे साथ ॥

इतनी सुनिके बघउदनि ने * तुरत बेंदुला लियो सजाय ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठो * औ चलिभये लहुरवा भाय ॥
जाइके पहुँचे गढ़ बौरी में * जहँ दरबार जादवाँ क्यार ॥
देखिके हालत वा बङ्गलाकी * ऊदनि मनमें करै विचार ॥
एकै बाना सब क्षत्रिन के * हैं धौं कौन जादवाँ राय ॥
देखिके सूरत बघऊदनि की * क्षत्री मोहि मोहि रहिजायँ ॥
जौन शूर तन ऊदनि देखैं * सो नहिं आँखी सकैंमिलाय॥
रोब देखिके बीरशाह को * लीन्होंचीन्हि उदयसिंह राय ॥
करी बन्दगी बीरशाह को * पाती दई चन्देले क्यार ॥
लै नजराना कलँगी चीरा * सो राजा के धरी अगार ॥
दौलति देखी बीरशाहि ने * मनमें बहुत खुशी हुइजायँ ॥
चिठिया बाँची चन्देले को * फूले अंगन नाहिं समायँ ॥
हिये लगाय लियो ऊदनिको * औ हँसि कही जादवाँ राय ॥
रस्ता छोड़ो तुम बौरी को * कबहूँ न देश मँझायो आय ॥
आजु अनन्द भयो जियरामें * अब हम चौथी दिहैं चलाय ॥
ऊदनि बोलो बीरशाहि से * हो महराज जादवाँ राय ॥
लाये मड़का हम चौथी के * सो महलन को देहु पठाय ॥
इतनी सुनिके बीरशाहि ने * जोरावर से कही सुनाय ॥
खबरि करायदेहु महलन में * महुबे से आये उदयसिंहराय ॥
इतनी सुनिके चले जोरावर * औ महलन में पहुँचे आय ॥
खबरि कराय दई महलन में * सखियाँ करैं मङ्गला चार ॥
ठौर ठौर पर बन्दन बारी * मङ्गल कलश सजे प्रतिद्वार ॥
हुक्म दे दियो नृप धामन को * तू ऊदनिका लाउ बुलाय ॥
उन हे पायन गौ हरिकारा * औ बँगला में पहुँचा जाय ॥

करी बन्दगी बघऊदनि को * दोउकर जोरि कही शिरनाय ॥
जल्दी नाथ चलौ महलनको * बोलत तुमहिं जादवाँ राय ॥
तुरतहिं ऊदनि उठि ठाढ़े भये * औ महलन का भये तयार ॥
शोभा देखी गलियारेन की * चहुँ दिशि बिछेगलीचाभ्कारि॥
मघा बूँद सम कलियाँ बरसैं * औ अतरन के छुटे फुहार ॥
बिज्जु छटासी भामिनि दमकैं * चहुँदिशिसोरह कियेसिगार ॥
सिगरी बस्ती ऊदनि देखी * अति खुश भये लहुरवाभाय॥
बसी उजागर यह बस्ती है * जहँ पर बसत जादवाँ राय ॥
यहै बिचारत निजमन ऊदनि * पहुँचे रङ्गपँवरि पर जाय ॥
दगी सलामी तब गढ़िया में * शोभा एक न बरनी जाय ॥
आरति लीन्हीं तब रानी ने * सो ऊदनि पर धरी उतार ॥
लहर पटोरो अगमा वालो * सो ऊदन ने लियो निकारि ॥
भ्कपटिके चरण छुये रानी के * औ सब भेंट दई हरषाय ॥
मढ़का चौथी के मङ्गवाये * सो रानी ढिग दिये धराय ॥
खबरैं हुइ गइ चन्द्रावलि को * आये ऊदनि बिरन तुम्हार ॥
उतरि अटरिया से चन्द्रावलि * अगनाई में पहुँची आय ॥
मोह आइगयो चन्द्रवलि को * ऊदनि अंग गई लपिटाय ॥
ओहे समैया ओहि अवसरमें * कारन जोगलागिगयोआय ॥
ग्रसन हेत जिमि पूर्णचन्द्र को * आयो राहु अचानक धाय ॥
लगी कचहरी बीरशाह की * भारी लागि रहा दरबार ॥
ओहे समैया के औसर में * पहुँचे तहाँ चुगुल परिहार ॥
सात कदम से करो बन्दगी * दोनों हाथ जोरि शिरनाय ॥
ठाढ़े देखो जब माहिल को * राजा चौकी दई डराय ॥
माहिल बैठि गये चौकी पर * तब राजा ने कही सुनाय ॥

कुशल बतावौ तुम उरई की * औ सब हाल कहौ समुझाय॥
माहिल बोले तब राजा से * है सब कुशल जादवाँ राय॥
बैठ राज करौं उरई में * हैं सब मैयन को परताप॥
पै यक बात भई महुबे में * सो मैं तुमसे कहौं बुझाय॥
आल्हा ऊदनि को महुबे से * दीन्ही खेदि चन्देले राय॥
मन खिसियाने द्वेवै वारे * तिननिजमनमें मन्त्र दृढ़ाय॥
तुरत पयान कियो बौरी को * आये यहाँ उदयसिंह राय॥
बिदा करैं हैं चन्द्रावलि को * अपनी दासी लिहैं बनाय॥
दाग लगैहैं चन्द्र बंस में * होउ बदनाम जादवाँ राय॥
मित्र जानिके मैं समुझावौं * इतनी मानौ कही हमार॥
बिदा न करियोतुमऊदनि सङ्ग * नहिं बदनामी होय तुम्हार॥
तुम मरवाय देहु ऊदनि का * जिन छल करो यहाँपर आय॥
इतनी कहिके माहिलचलिभये * लागो ग्रहण चन्द्र में धाय॥
सुनिके बातैं ये माहिल की * गुस्सा भये जादवाँ राय॥
सातौ बेटन का बोलवायो * तिनते राजा कहो सुनाय॥
जियत न ऊदन महुबे जावैं * इनको देहु जान ते मार॥
खबरि कराय देहु महलन में * जल्दी भोजन होय तयार॥
बिषमिलवाय देहु भोजन में * खातै तुरत काल हुइ जाय॥
बिन मारे ऊदनि मरिजावैं * सबरै बारु दूरि हुइ जाय॥
आज्ञा पाई जब लरिकन ने * महलन खबरि जनाई जाय॥
जैसी आज्ञा राजा दीन्ही * ता विधि करी रसोई जाय॥
कुँवरजोरावरगयेऊदनिढिग * तिन यह बात कहो समुझाय॥
त्यार रसोई है महलन में * जेंवै चलो उदयसिंह राय॥
इतनी सुनिकेऊदनि चलिभये * अपने बाँधि लिये हथियार॥

तब समुझायो इन्द्रसेन ने * ऊदनि छोरि धरौ हथियार ॥
कछु डर नाहीं है महलन माँ * काहे सजे सकल हथियार ॥
तब जवाब ऊदनि ने दीन्हों * तुम सुनि लेहु बीर सरदार ॥
बंश हमारे यहै रीति है * बिन हथियार न भोजन खायँ ॥
इतनी सुनिके इन्द्रसेन ने * तुरतै गंगा लई उठाय ॥
दुबधा छाँड़ि देहु जियरा से * ऊदनि मानो बचन हमार ॥
गड्डुआलैलश्रो तब ऊदनिने * अपनो छोरि धरे हथियार ॥
संगै चलि भये तब बघऊदनि * महलन बीच पहूँचे आय ॥
चरण धोयके तब बघऊदनि * औ चौका में बैठे जाय ॥
बैठी चन्द्रावलि खिरकी में * सो ऊदन तन रही निहार ॥
सैनन सैनन करै इशारा * बीरन मानो बचन हमार ॥
भोजन करियो ना महलनमें * खातै तुरत काल ह्वइ जाय ॥
जहर मिलाओ यहु भोजन है * मानौ कही लहुरवा भाय ॥
समुझि इशारा तब ऊदनिने * तुरतै मनमें कियो विचार ॥
थार आपनी मैं ना जेवौं * बहनोई को बदलौं थार ॥
सोचि समुझिके इन्द्रसेन को * ऊदनि थार दियो सकिलाय ॥
इन्द्रसेन तब बोलन लागे * तुम सुनि लेहु उदयसिंहराय ॥
थार हमारो तुम क्यों बदलो * साँची हमहि देहु बतलाय ॥
तब जवाब ऊदनि ने दीन्हों * तुम सुनि लेहु जादवाँ राय ॥
देश हमारे यहै रीति है * जो कोइ चौथी लेनको जाय ॥
थार बदलि लेइ बहनोईको * ताके पीछे भोजन खाय ॥
इतनी सुनतै बघऊदनि की * गुस्सा भये जादवाँ राय ॥
सातौ बेटा उठि ठाढ़े भये * अपनी लीन्हीं तेग निकार ॥
तब तो ऊदनि उठि ठाढ़े भये * आपन गड्डुआ रहे चलाय ॥

गड़बड़ मचिगश्रो तब चौकामें * ऊदनि गडुश्रा रहे चलाय ॥
घैहा हुइगे सातौ लड़िका * ऊदनि सबका दियो गिराय ॥
हल्लाकरिदश्रो सब क्षत्रिनने * बीच में भिरे लहुरवा भाय ॥
गडुश्रन मारै ऊदनि बाँकुड़ा * क्षत्री गिरैं तमारो खाय ॥
बज्रकि देही बघऊदनि की * जामें तेग नहीं श्रनियाय ॥
बाल खेलारी महुबे वारो * गनिगनिक्षत्री रहो गिराय ॥
गडुश्रा डारि दियो ऊदनिने * तुरतै पाटा दियो उठाय ॥
मारे पाटन चहला करि दश्रो * क्षत्री लै लै भजे पगान ॥
क्या गति बरनौं श्रोहि बेराकी * राखी लाज शिव भगवान ॥
देखि तमाशा चन्द्रावलि ने * श्रो यक तेगा लिया उठाय ॥
सो दै दीन्हीं बघऊदनि को * सोचैं चित्त लहुरवा भाय ॥
जो मैं मारौं इहि तेगा से * तौ क्षत्रीपन जाय नशाय ॥
तेगा डारि दश्रो धरती में * यहमन सोचिउदयसिंहराय ॥
धोखा दैके सब क्षत्रिन ने * श्रौ ऊदनिका लियो बँधाय ॥
महल पिछारू के दाहक में * तिनऊदन को दियो डराय ॥
बन्द कराय दियो ऊदन को * बजुरपेहनियाँ दइसकिलाय ॥
ठाढ़ी देखै पोहपा मालिनि * सतखण्डा पर पहुँची जाय ॥
रोय रोय मालिनि हालु बतावै * बहुश्ररसुनो जादवाँ क्यार ॥
महल पिछारू के दाहक माँ * डारे ऊदनि बिरन तुह्मार ॥
सुनिके बेटी रोवन लागी * लै लै नाम लहुरवा क्यार ॥
रोवतिरोवति दिवसबीतिगयो * संध्या काल पहूँचो श्राय ॥
थार मँगायो एक चन्द्रावलि * तामें भोजन लिये सजाय ॥
जल भरवायो गंगाजल को * रेशम रसा लियो मँगाय ॥
श्राधि राति केरे श्रमला में * बेटी पहुँचि दहकपर जाय ॥

बजुर पेहनियाँ को सकिलावे * रेशम रस्सा दइ लटकाय ॥
धीरे धीरे चन्द्रावलि बोलै * निकरो मेरे लहुरवा भाय ॥
जल्दी निकरौ तुम ऊभे ते * औ महुबे को जाउ बराय ॥
तब जवाब ऊदनि ने दीन्हो * बहिनी सोच देहु बिसराय ॥
तुम्हरे निकारे जो हम निकरैं * तो क्षत्रीपन जाय नशाय ॥
हमहिं जो चाहौ चन्द्रा बहिनी * आल्हे खबरि देहु पहुँचाय ॥
सजिके आवैं आल्हा मलिखे * ऊभे से हमैं निकारैं आय ॥
बहुत निरास भई चन्द्रावलि * ऊदनि एक मानता नायँ ॥
बजुरपिहनियाँफिरिसकिलाई * सत खंडा पर पहुँची आय ॥
रोवै चन्द्रा सतखंडा पर * लै लै नाम लहुरवा क्यार ॥
कौन उपाय करौं यहि बेरा * जासों बचिजाय बिरन हमार ॥
देखि दशा यह चन्द्रावलिकी * हीरामनि मन कियो विचार ॥
बोलो तोता तब पिंजरा से * बहुअर सुनो जादवाँ क्यार ॥
कौन विपत्ती तुम पर परिगइ * जासों रोय रहिउ दुखपाय ॥
हाल बताय देहु जियराको * अब ना राखहु देर लगाय ॥
तब चन्द्रावलि बोलन लागी * सुअना कछु कही ना जाय ॥
चौथी लेनको वीरन आये * तिनका दहक दियो डरवाय ॥
कौन उपाय करौं यहि बेरा * जो बीरन को लेहुँ बचाय ॥
कोउ न हितू जँचै यहि बेरा * महुबे खबरि देहि पहुँचाय ॥
तब जवाब हीरामनि दीन्हों * बहुअर सुनो जादवाँ क्यार ॥
कागद लैके कलपी वारो * लिखिके पाती करो तैयार ॥
गरे बँधाय देहु तुम मेरे * महुबे खबरि देहुँ पहुँचाय ॥
सुनिके बातैं हीरामनि को * चन्द्रा हृदय जोव परि जाय ॥
कागद लीन्हों कल्पी वालो * अपनो कलमदान लै हाथ ॥

रोय रोय पाती चन्द्रा लेखै * सब ऊदनिको लिखो हवाल॥
चिठियालिखिके चन्द्रावलिने * सुअना कंठ दई लटकाय॥
जल्दी जैयो तुम महुबे को * माता पाती दीजौ जाय॥
खिरकी खोलि दई पिंजरा की * सुअना आसमान उड़िजाय॥
पाती लैके पंछी चलि भयो * औ महुबे की सुरति लगाय॥
तीन दिवस केरे अरसा में * नरवर गढ़ में पहुँचो जाय॥
भूख प्यास से ब्याकुल ह्वैके * फुल बगिया में बैठो जाय॥
माहिल राजा उरई वाले * जिनको चुगलिनकोब्यौहार॥
तेऊ जात हते उरई को * बगिया करन दुपहरी लाग॥
नजरिबदलिगइचुगुलनृपतिकी * देखो सुआ हृदय धरिध्यान॥
पाती देखी जब गरदन में * माहिल तुरत गये पहिचान॥
माहिलचलिभयेफुलबगियाते * पहुँचे नरपति के दर्बार॥
करी बन्दगी तब माहिल ने * जोहैं उरई के परिहार॥
नजरिबदलिगइतबनरपतिकी * ऊँची चौकी दई डराय॥
आवो बैठो उरई वाले * अपनो हाल देहु बतलाय॥
माहिल बैठि गये चौकी पर * फिर राजा ते कही सुनाय॥
कुशल कुशलिया है उरई में * दाया करैं कृष्ण यदुराय॥
चीज अनोखी तुमहिं बतावैं * राजा मानहु बचन हमार॥
हीरामन तोता यक आयो * जाकी शोभा अजब अपार॥
सो वह बैठो फुलबगिया में * जल्दी ताहि लेहु पकराय॥
ऐसो सुग्गा फेरि ना मिलिहैं * जल्दी ताहि लेहु पकराय॥
सुनि के बातैं ये माहिल की * नरपति मकरन्द लिये बुलाय॥
हाल बताय दियो सुअनाको * मकरन्द कूच दियो करवाय॥
संग बहेलिया को लै लीन्हों * फुल बगिया में पहुँचे जाय॥

जाल लगाय दियो बधिका ने * तुरतै सुगना लियो फँसाय ॥
सुअनालैके मकरंद चलिभये * औ महलन में पहुँचे आय ॥
पाती खोलि दई रानी को * सुअना खूँटी दियो टँगाय ॥
मकरंद पहुँचे बीच कचहरी * माहिल नरवर से रमिजाय ॥
तौ लौं रानी नरपति वाली * सो सुअना ढिग पहुँचीआय ॥
सुअना देखो जब रानी को * तुरतै बात कही समुझाय ॥
नृपहिंसुनासिब यह नाहीं थी * हमरी कैदि लई करवाय ॥
चौथी लेन गये बघऊदनि * बौरी बीर साहि दरबार ॥
कैदि कराय लई राजा ने * चुंगल दहक दियो डरवाय ॥
हमहिं कैदि राजा करवायो * हमरी पाती लई छिनाय ॥
हमहि पठाओ है चन्द्रावलि * मल्हनै पत्र देन के काज ॥
ऊदनि दाहक माँ मरिजैहैं * बेटी पेट मारि मरिजाय ॥
यहउ सराप परै राजा पर * हमरी कैदि लई करवाय ॥
सुनिके बातैं ये सुअना की * रानी बहुत गई घबराय ॥
पाती मँगाई चन्द्रावलि की * सुअना गरे दई लटकाय ॥
खिरकीखोल दई पिंजराकी * औ तोता को दियो उड़ाय ॥
चलिभयोसुअनानरवरगढ़से * पहुँचो गढ़ महुबे में आय ॥
मल्हना रानी सतखराडा पर * अपने मन में करै बिचार ॥
बहुत दिना ऊदनि को हुइगा * हेरै बाट लड़ैते क्यार ॥
तौलौं सुअना सतखराडा पर * पहुँचो मल्हनाके ढिगजाय ॥
पाती देखी कंठ सुआ के * तब मल्हनाने कही सुनाय ॥
केहि की पाती सुअना लाये * साँची हमहिं देहु बतलाय ॥
तब जवाब सुअना ने दीन्हों * रानी सुनहु चँदेले क्यार ॥
पाती लाये हम बौरी से * चन्द्रावलि ने दई पठाय ॥

यह सुनि मल्हना कंठ सुआते * खोलि के पाती पढ़ी हवाल ॥
पढ़िके बोली त्यहि सुअनासे * चन्द्रावलिहि कहौ तुम जाय ॥
आवत लश्कर है महुबे से * तुम्हरी बिदा लिहैं करवाय ॥
यहकहि पातोलिखिमल्हनाने * बाँधी सुआ केर गल माहि ॥
तुरतै उड़ो सुआ महुबे से * गढ़ बौरी में पहुँचो जाय ॥
रुपनै बोलि कही मल्हनाने * लावौ जाय बीर मलिखान ॥
चलिभौ रुपना तब महुबे से * औ सिरसा में पहुँचो जाय ॥
करि सलाम बोले मलिखे से * मल्हना रानी रहीं बुलाय ॥
चलहु साथ हमरे अबहीं तुम * मलिखे घोड़ी लई सजाय ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे * औ महुबे में पहुँचे जाय ॥
मल्हना रानी जहँ बैठी थी * तहँ चलिगये बीर मलिखान ॥
करि प्रणाम बोले मल्हनाते * माता काहे पठवो बुलाय ॥
पाती दै दइ तब मल्हना ने * बाँची तुरत बीर मलिखान ॥
पाती पढ़ि बोले मल्हना से * माता धीर धरौ मन माहिं ॥
हम चढ़ि जैहैं गढ़ बौरीको * बहिनी बिदा लिहैं करवाय ॥
यहकहिमलिखे गे आल्हाते * बोले हाथ जोरि शिर नाय ॥
त्यार होउ दादा बौरी को * पातीको हाल दियो बतलाय ॥
सुनि घबड़ाने तुनिआल्हा तब * फिर मलिखे से कही सुनाय ॥
जितना लश्कर है महबे में * भैया तुरत लेहु सजवाय ॥
मलिखे पहुँचे तब लश्कर में * डंका तुरत दआो बजवाय ॥
चोब नगाड़ा के बाजत खन * क्षत्री होन लगे तैयार ॥
पहले नगाड़ा में जिन बन्दी * दूजेमें बाँधि लीन्ह हथियार ॥
तिसरे नगाड़ा के बाजत ही * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
आल्हा ढेबा ब्रह्मा मलिखे * सजिसजि बाहन भये तयार ॥

तोपैं जुतवाईं आगे को * मारू डंका दौ बजवाय ॥
कूँच कराय दियो लश्कर को * दिल्ली पाँच कोस रहिजाय ॥
क्षत्री उतरि परे बागन में * अपने डेरा दये डराय ॥
मलिखे पहुँचे पृथीराज पै * बोले हाथ जोरि शिरनाय ॥
बौरी गढ़ में बिदा करावन * ऊदन गये रहे महराज ॥
घाटि जादवाँ तहँ कीन्ही है * ऊदनि ऊभे दये डराय ॥
आज्ञा दै देउ महराजा तुम * बौरी गर्द देउँ करवाय ॥
कुम्मक दै देउ कछु अपनो तुम * अबहीं कूच जाउँ करवाय ॥
इतनी सुनि लइ पृथीराज जब * तब चौंड़ा को लियो बुलाय ॥
सूरज बेटा को बुलवायो * औ यह कही बीर चौहान ॥
यह कहि दीजौ बीरशाह से * जलदी बिदा देयँ करवाय ॥
यह सुनिचलिभौ चौंड़ाब्राह्मण * इकदन्ता पर भयो सवार ॥
सबजा घोड़ा पर सूरज चढ़ि * लश्कर तुरत लओ सजवाय ॥
संगै चलिभए नर मलिखे के * औ बागन में पहुँचे आय ॥
कूच कराय दओ बागन से * दोनौं फौज चली इक संग ॥
राह पकरि लइ गढ़बौरी की * पहुँचे सात रोज में जाय ॥
रहि गइ बौरी चारिकोस जब * डेरा तुरत दए डरवाय ॥
छुटि गइ फेटैं रजपूतन की * तुरतै तम्बू दए तनाय ॥
जीन उतारि दए घोड़न की * हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
चढ़ी रसोइयाँ उमरायन की * सबने करी रात बिश्राम ॥
भोर होत चिड़िया चुचुहानी * तब जागि उठे बीर मलिखान ॥
मलिखे जाय कही आल्हा से * दादा जल्द होउ तैयार ॥
जोगिन गुदरी है मँगवाई * चारो बाजा लये मँगाय ॥
पहिरि गुदड़िया बङ्गाले को * चारो बाजा लिये उठाय ॥

राग रागिनीको सुमिरनकरि * सबने बाजा दये बजाय ॥
डगरत चलिभये चारहु जोगी * औ बजार में पहुँचे जाय ॥
मोही रैयति गढ़ बौरा की * देखो रूप जोगियन क्यार ॥
गावत गावत जोगी चारौ * पहुँचे राज द्वार पर जाय ॥
केसर बाँदी राज महल से * जोगिन पास पहूँची जाय ॥
जोगिन रूप देखि मोही तब * रानिहि खबरि सुनाई जाय ॥
चारि जोगिया यहँ आये हैं * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
सखिन संग लै रानी चलिभइ * पहुँची राज द्वार पर जाय ॥
रूप देखिके उन जोगिन को * रानी मोहि मोहि रहिजाय ॥
बोली रानी तब जोगिन से * जोगिउ डेरा देव डराय ॥
नित उठि सेवा तुम्हरी करिहौं * बाबा पुजिहैं चरण तुम्हार ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे * रानी कहाँ तुम्हारो ज्ञान ॥
बहता पानी रमता जोगी * इनकौं कौन सकत बिलमाय ॥
दीजै भिक्षा म्वहिं माता तुम * अपनो कूच जायँ करवाय ॥
देखि रूप जोगिन चन्द्रावलि * अपनी बाँदी दई पठाय ॥
यह कहि दीजौ मेरिसासुलसे * जोगिन इहाँ देयँ पठवाय ॥
कबहुँ न देखे अस जोगी हम * हमहूँ देखि तमाशा लेयँ ॥
बाँदी पहुँची तब रानी ढिग * तुरतै खबरि सुनाई जाय ॥
बोली रानी तब जोगिन से * बहुअर देखि तमाशा लेय ॥
रङ्ग महल में अब तुम जावौ * जोगी तुरत पहूँचे जाय ॥
चन्द्रावलि देखत जोगिन से * पूछन लागि सुनौ महराज ॥
जड़े जवाहर हैं गुदड़िन में * हाथन कड़ा सोबरन क्यार ॥
रूप तुम्हारो ना जोगिन को * साँचो हाल देउ बतलाय ॥
बोले मलिखे चन्द्रावलि से * दीन्हों हमहिं रूप करतार ॥

भजन करत हम नारायणको * भिक्षा माँगि करत आहार ॥
ड्योढ़ी माँगा हम कनवज में * जैचन्द मोहिगये ततकाल ॥
तब उन गुदड़ी बनवाई यह * जिनमें जड़े जवाहर लाल ॥
तहँते चलिके गे महुबे हम * जहँ पर बसत रजापरिमाल ॥
बहुत खुशी हुइ रनि मल्हनाने * हाथन कड़ा दिये डरवाय ॥
इतनी सुनते चन्द्रावलि ने * उन योगिनसे कही सुनाय ॥
माता हमरी रनिमल्हना है * ब्रह्मा बीरन लगत हमार ॥
नगर महोबे में जैयो तुम * माता खबरि सुनैश्रो जाय ॥
आये ऊदन थे चौथी को * सो ऊभे में दए डराय ॥
जल्दी आवै ब्रह्मा भैया * आल्हा और बीरमलिखान ॥
आय छुड़ाय लेयँ ऊदन को * यहसुनि कहा बीरमलिखान ॥
समुहें तुम्हरे ब्रह्मानँद हैं * हमरो नाम बीर मलिखान ॥
आल्हा ढेबा यह ठाड़े हैं * खंदक हमैं देउ दिखलाय ॥
कौनसी खंदक में ऊदन हैं * तब चन्द्रावलि दियो जवाब ॥
महल पिछारू जो खंदक है * तामें पड़े लहुरवा भाय ॥
यहसुनि बिदा माँगि बहिनीसे * फाटक निकरि गयो वा पार ॥
देखिके खंदक जोगी चलिभये * अपने लश्कर पहुँचे जाय ॥
पलटन लई सफर मैना की * तुरतै सुरङ्ग खुदावन लाग ॥
तीन पहर में सुरंग त्यार भइ * तब ऊदन तै पहुँचे जाय ॥
बन्दि छुड़ाई बघ ऊदन की * मलिखे लैगे साथ लिवाय ॥
ऊदनि पहुँचे जब लश्कर में * सबको मिले जाय शिरनाय ॥
खुशी छाय गइ सबलश्कर में * तुरतै दगन सलामी लाग ॥
बोले मलिखे सुनिआल्हा से * दादा अबहीं होहु तयार ॥
इतनी सुनिके सुनिआल्हा ने * अपनो हुकम दियो फरमाय ॥

बजै नगाड़ा हमरे दलमें * जल्दी फौज होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * छत्री सबै भए हुशियार ॥
पहले नगाड़ा भइ जिन बन्दी * दूजे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत ही * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
कूच नगाड़ा के बाजत खन * लश्कर कूच दयो करवाय ॥
आल्हा मलिखे ब्रह्मा ढेबा * अपने बाहन भये सवार ॥
सूरज चौंड़ा दिल्ली वारे * सोऊ चले फौज के साथ ॥
हाथीचलिगोसुनिआल्हा को * डंका होत गोल में जाय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्ट धातु की * सो आगे को दई जुताय ॥
घरी तीनि केरे अरसा में * बौरी गढ़हि घेरिलो जाय ॥
देखो लश्कर हरकारा ने * पहुँचो जाय राज दरबार ॥
करौ बन्दगी बीरशाह को * दोनौं हाथ जोरि रहि जाय ॥
गाफिल बैठे हौ राजा क्या * तुमपर फौज पहूँची आय ॥
खबरि सुनत खन बीरशाह ने * अपने बेटा लिये बुलाय ॥
लश्कर आओ केहि राजा को * अबहीं खबरि सुनावो आय ॥
सूरजमल औ कुँवर जोरावर * अपनो लिये ढाल तलवार ॥
दोनौं लिये साथ क्षत्रिन को * औ फाटक पर पहुँचे जाय ॥
दबत अँधेरिया दलमें आवै * हा हाकारी शब्द सुनाय ॥
देखि फौज तब जोरावर ने * लश्कर डंका दो बजवाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न भए सवार ॥
पैदल पलटन के क्षत्री जो * उनहूँ बाँधि लिये हथियार ॥
सूरजमल जोरावर बेटा * दोनौं घोड़न भए सवार ॥
आगे तोपैं जुतवाईं सब * लश्कर कूच दओ करवाय ॥

घरी चारि केरे अरसा में * सब मुर्चन पर पहुँचे जाय ॥
जायके दोनौं आगे बढ़ि के * भारी जाय दई ललकार ॥
कहाँ से क्षत्री चढ़ि आये हैं * जिन यह धुरो दबायो आय ॥
आगे बढ़िके मलिखे बोले * औ सन्मुख हुइ दओ जवाब ॥
नगर महोबे से आये हम * औ मलिखे है नाम हमार ॥
ऊदन आये थे चौथी को * सो ऊभे में दए डराय ॥
बहनोई हमरे लागत हौ * क्यों घटि करी हमारे साथ ॥
सुनत खबरि हम चढ़िआए हैं * तुम ऊदन को देउ छुड़ाय ॥
करिदेउबिदा अबहींबहिनीको * तो हम कूच जायँ करवाय ॥
बोले सूरज तब मलिखे से * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
करिहैं बिदा नाहिं तुम्हरे संग * काहे भरम गमाओ आय ॥
इतनी सुनतै नर मलिखे ने * सूरजमल को दओ जवाब ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं * तुम बहनोई लगत हमार ॥
बिदा न करिहौंजो बहिनीको * तौ हम बौरी दिहैं फुकाय ॥
लूटि करैंहैं बौरी गढ़ में * जानत हमहिं सकल संसार ॥
सुनतै गुस्सा हुइ सूरज ने * लश्कर हुक्म दओ करवाय ॥
आगि लगाय देउ तोपन में * इन पाजिन को देउ उड़ाय ॥
हुक्म सुनत ही झुके खलासी * तोपन आगी दई लगाय ॥
दगी सलामी तब लश्करमें * लश्कर रहो अँधेरिया छाय ॥
धुआँ उड़ानो आसमान लौं * सूरज रहे धुंधि में छाय ॥
अररर अररर छूटै गोला * होवै शब्द दनाक दनाक ॥
सररर २ कैवर छूटै * कह २ करै अगनियाँबान ॥
सननन सननन गोली छूटै * मानो मघा बूँद झरलाय ॥
चारि घरी भरि भई लड़ाई * क्षत्रिन खैंचि लई तरवार ॥

खट खट तेगा बाजन लागो * बोलै छपक छपक तलवार ॥
दोनौं लश्कर यकमिल हुइगे * कोताखानी चलै कटार ॥
भारी मारु होय दोनौं दल * कटि २ गिरैं सुघरु ज्वान ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही * औ बहि चली खूनकी धार ॥
जौन गोल हुइ मलिखे निकरैं * सोदल काटि करैं खरिहान ॥
भजे सिपाही बौरो गढ़ के * अपने डारि २ हथियार ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * मुर्चा हटो यादवन क्यार ॥
भजत सिपाही सूरज देखे * आगे घोड़ा दओ बढ़ाय ॥
बोले सूरज नर मलिखे से * मलिखे लौटि महोबे जाउ ॥
प्राण गमैहौ यहँ काहे तुम * तापर मलिखे दओ जवाब ॥
बिदा कराय देउ बहिनी की * तो हम कूच जायँ करवाय ॥
बिदा कराये बिन जैहैं ना * चाहे प्राण रहै को जाय ॥
इतनी सुनतै सूरजमल ने * अपनो घोड़ा दओ बढ़ाय ॥
साँगि उठाई मन पक्के की * सो मलिखे पर दई चलाय ॥
चोट बचाई नर मलिखे ने * सूरज खैंचि लई तरवार ॥
करो झड़ाका नर मलिखे पर * मलिखे दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
गाफिल देखिके सूरजमलको * मलिखे लीन्हीं तुरत बँधाय ॥
बेटा जोरावर आगे बढ़िके * मलिखे तीर पहूँचो आय ॥
खैंचि सिरोही लइ जलदी से * औ मलिखे पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई मलिखे ने * तुरतै लीन्हीं चोट बचाय ॥
ढालकि औझड़ मलिखेमारी * जोरावर को लओ बँधाय ॥
धावन आओ तब लश्कर से * औ राजा से कही सुनाय ॥
दोनों बेटा तुम्हरे बँधिगये * लश्कर तिड़ी बिड़ी हुइजाय ॥
बीरसाह ने तब ललकारो * इन्द्रसेन से कही सुनाय ॥

बाँधिके लावौतुम आल्हा को * हमरी नजरि गुजारौ आय ॥
यह सुनि पाँचौ बेटा चलिभये * लीन्हें हाथ ढाल तलवार ॥
पहुँचे लरिका तब लश्कर में * डंका तुरत दश्रो बजवाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * फौज कटीली भई तयार ॥
कूच कराश्रो इन्द्रसेन ने * डंका होत गोल में जाय ॥
घरी तीनि केरे अरसा में * रण खेतन में पहुँचे जाय ॥
घोड़ा बढ़ाश्रो इन्द्रसेन ने * समुहे जाय दई ललकार ॥
कौन सो क्षत्री चढ़िआओ है * किसने बाँधे भाइ हमार ॥
किसकी माता नाहर जाये * सो समुहें ह्वइ देइ जवाब ॥
इतनी सुनतै मलिखे बढ़िगे * औ सन्मुख होइ दई जवाब ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं * तुम बहनोई लगत हमार ॥
सबकी बिटिया नैहर जावैं * घर घर होय तीज त्योहार ॥
बिदा करावन ऊदन आये * काहे दाहक दये डराय ॥
कैदि छाँड़ि देउ तुम ऊदनको * बहिनीकि बिदा देउ करवाय ॥
कूच कराय जायँ महुबे हम * लड़िकन कैद देयँ छुड़वाय ॥
यह सुनि बोले इन्द्रसेन से * तुम सुनि लेउ बनाफर राय ॥
बिदा न करिहैं हम तुम्हरेसंग * चाहे कोटिन करौ उपाय ॥
बोले मलिखे इन्द्रसेन से * तुम सुनिलेउ यादवा राय ॥
बिदा कराये बिन जैहैं ना * हमरो नाम बीर मलिखान ॥
पाँव पिछारू ना धारैं हम * ना भागे के परत पिछार ॥
बिदा न करिहौ जो बहिनीको * बौरी गर्द दिहौं करवाय ॥
इतनी सुनतै इन्द्रसेन ने * लश्कर हुक्म दश्रो करवाय ॥
मारि भगावौ इन पाजिन को * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पै * तुरतै बत्ती दई लगाय ॥

तोपैं दगन लगीं दोनौं दल * गोलैं छुटन लाग तत्काल ॥
भगहरि परिगइ दोनौं दल में * अन्धा धुन्ध तोप की मारु ॥
खैंचि सिरोही लइ क्षत्रिन ने * सबके मारु मारु रट लाग ॥
दाबे घोड़ा ऊदनि आये * समुहे गोल गये समियाय ॥
मोहन बेटा बीरसाह को * सो ऊदन ते पहुँचो आय ॥
खैंचि शिरोही लइ मोहन ने * सो ऊदन पर दई चलाय ॥
लगत चपेटा घोड़ा भागो * ऊदन मोहन लै बँधवाय ॥
मोहन बँधतै गजमनि झपटे * ढेबा समुहें पहुँचो आय ॥
खैंचिशिरोहीलइ जगमनितब * सो ढेबा पर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई ढेबा ने * औ जगमनिकोलओ बँधाय ॥
जगमनि बाँधिलिये ढेबा जब * मोती पूरन बढ़े अगार ॥
सोऊ बाँधि लिये ऊदन ने * औ लश्कर में दिये पठाय ॥
भाई बँधिगये इन्द्रसेन के * मनमें बहुत गये घबराय ॥
तब ललकारो सब क्षत्रिन को * यारो राखहु धर्म हमार ॥
निमक हमारो तुम खाओ है * सो हाड़न माँ गयो समाय ॥
पाँव पिछारू ना धरिओ तुम * नहिं सब जै हैं काम नशाय ॥
दओ बढ़ावा रजपूतन को * लश्कर आगे दओ बढ़ाय ॥
झुके सिपाही बौरी वाले * सबके मारु मारु रट लाग ॥
दाबे घोड़ा मलिखे आये * औ चौंड़ा से कही सुनाय ॥
कैदि कराय लेउ सबही को * कोई ज्वान भाग ना जाय ॥
यह सुनि चौंड़ा साँकर लैके * यक्र दन्ता को दइ पकराय ॥
साँकर फेरी तब हाथी ने * सब दल रैन बेन हुइजाय ॥
बहुतक क्षत्री काटि गिराये * बहुतक लै लै भगे परान ॥
ऊँचे खाले कायर भागे * जे रण दुलहा चले बराय ॥

भागो लश्कर इन्द्रसेन को * घोड़ा भजे सवारन क्यार ॥
यह गति देखी इन्द्रसेन जब * मनमें गये सनाका खाय ॥
सुर्खा घोड़ा दाबे आये * औ मलिखे से कही सुनाय ॥
सम्हरो मलिखे तुम घोड़ीपर * यह कहि गुर्ज घमको आय ॥
घोड़ी हटि गइ नर मलिखेकी * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
भाला मारो तब मलिखे ने * सो घोड़ा के लागो जाय ॥
पैदल हुइ गये इन्द्रसेन तब * मलिखे लीन्हों तुरत बँधाय ॥
यहि विधि बँधिगे सातौ बेटा * महुबे वारेन लए बँधाय ॥
यक हरकारा दौरत आओ * औ राजा से कही सुनाय ॥
सातौ बेटा तुम्हरे बँधिगे * महुबे वारेन लए बँधाय ॥
सुनो खबरि यह बीरशाह ने * सुनतै बहुत गये घबराय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * सोने कड़ा दओ डरवाय ॥
बजै नगाड़ा हमरे दल में * लश्कर सबै होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * चत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले नगाड़ा में जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लीन्ह हथियार ॥
तिसरे डंका के बजतै खन * चत्री फाँदि भये असवार ॥
कूच नगाड़ा बजवाओ तब * लश्कर कूच दओ करवाय ॥
चारि घरी केरे अरसा में * तब डाँड़े पर पहुँचे जाय ॥
लश्कर रहिगौ थोरि दूर तब * बीरशाह ने कही सुनाय ॥
कौन शूरमा ने हमरे यह * सातौ बेटा लये बँधाय ॥
घोड़ी कबुतरी आगे बढ़ाई * सन्मुख जाय बीर मलिखान ॥
करी बन्दगी बीरशाह को * बोले सुनहु यादवाँ राय ॥
बिदा करावन ऊदन आये * तुमने कैदि लई करवाय ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहींथी * जो खंदक में दओ डराय ॥

अबहूँबिगरो नहिं राजा कछु * बहिनी बिदा देउ करवाय ॥
सुनतै बोले बीरशाह तब * मलिखे लौटि महोबे जाउ ॥
कैदि छोड़ि देउ तुम बेटन को * यह सुनि कही बीर मलिखान॥
बिदा कराये बिन ना जैहै * चाहै प्राण रहै के जायँ ॥
बिदा न करिहौ जो बहिनीको * मरिहौं राज भंग हुइ जाय ॥
हाथी बढ़ाओ तब चौंड़ा ने * औ राजा से कहो सुनाय ॥
पृथीराज यह कहि भेजो है * जल्दी बिदा देयँ करवाय ॥
लड़े न जितिहै वे आल्हा से * कलहा दस्सराज के लाल ॥
यह सुनि बोले बीरशाह तब * ब्राह्मण सुनौ चौंड़िया राय ॥
बिदा न हुइहै यह आल्हा संग * चाहै कोटिन करौ उपाय ॥
तापर ज्वाब दओ चौंड़ा ने * है यह हुक्म बीर चौहान ॥
कही न मानैं बीरशाह जो * बोरी गर्द दियो करवाय ॥
इतनी सुनतै बीरशाह के * गुस्सा गई देह में छाय ॥
हुक्म दै दओ तब जल्दी से * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी तव तोपन पर * तोपन आगी दई लगाय ॥
छाय अँधेरिया गइ लश्करमें * धुअना रहो सरग मँड़राय ॥
अररर गोला छूटन लागे * कह२ करैं अगिनियाँ बान ॥
परे दनाका हैं तोपन के * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
चारि घरी भरी गोला बरसो * तोपैं लाल बरन हुइ जायँ ॥
तोपैं छोड़ि दईं क्षत्रिन ने * आगे बढ़े खैंचि तलवार ॥
खट खट तेगा बाजन लागे * बोलै छपक छपक तलवार ॥
इक मिल हुइके दोनौं दलमें * कोताखानी चलै कटार ॥
ना पहिचानै अपन पराओ * मुख से मारु २ रट लाग ॥
ढेवा पहुँचो एक ओर को * यक लग डटे बीर मलिखान॥

इकलग हुइगौ चौंड़ाब्राह्मण * इक लग भये उदयसिंह राय ॥
चारि शूर चारौदिशि डटिगे * चारौ ओर चलै तलवार ॥
भाजौ लश्कर बीरशाह को * ऊँचे खाले चले पराय ॥
भेष जनाना धरि क्षत्री बहु * अपने लै लै भजे परान ॥
कायर भाग गये लश्कर से * उन नारेन की पकरी राह ॥
फौज भजत राजा देखी जब * अपनो हाथी दश्रो बढ़ाय ॥
जहँपर मलिखे थे लश्करमें * तहँ पर जाय यादवा राय ॥
भाला मारो नर मलिखे को * मलिखे लैगै चोट बचाय ॥
मलिखे पहुँचे तुनि आल्हाते * दादा सुनौ हमारी बात ॥
बाप बरोबरि तुम लागत हो * जेठे भाई लगो हमार ॥
तुम्हरी बरनी को राजा है * ताको लेउ जँजीरन बाँधि ॥
इतनी सुनिके तुनि आल्हाने * आगे हाथी दश्रो बढ़ाय ॥
करी बन्दगी बीरशाह को * औ आल्हा ने कही सुनाय ॥
रारि बढ़ावत हो काहे तुम * ताते बिदा देउ करवाय ॥
इतनी सुनि के बीरशाह के * गुस्सा गई देह में छाय ॥
बोले राजा तब आल्हा से * तुम सुन लेउ बनाफर राय ॥
भजे न बचिहो तुम महुवेलों * सबके मूड़ लिहौं कटवाय ॥
धोखे रहियो ना माडौ के * जहँ लौ लए बाप के दाँव ॥
परो सामना है हमते अब * सो तुम मानो कही हमार ॥
चुपै लौटि जाउ महुबे कों * लाड़िकन कैदि देउ छुड़वाय ॥
यहसुनिज्वाबदियो आल्हाने * तुम हठि छाँड़ि देउ महराज ॥
कैदि छोड़िके बघऊदनि को * बहिनिकि बिदा देउ करवाय ॥
हम नहिं हटिहैं रण समुहें से * चाहे तन धजीर उड़िजाय ॥
कही हमारी मन मानै नहिं * तौ तुम खेलौ जूझ अघाय ॥

इतनी सुनतै बीरशाह ने * अपनो दीन्हौं गुर्ज चलाय ॥
सोने कलश गिरे भुइमें तब * आल्हा अंग न आयो घाव ॥
बढ़िगो हाथी तुनिआल्हा को * हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
दोनों हौदा यक मिलि हुइगे * तुरतै चलन कटारी लाग ॥
सूँड़ घुमाई पचशावद ने * औ अम्मारी दई गिराय ॥
बाँह पकरि के बीरशाह की * आल्हालओ जँजीरन बाँधि ॥
राजा बँधतै परलै हुइ गइ * लश्कर तिड़ी बिड़ी हुइ जाय ॥
बढ़े महोबिया महुबे वारे * बौरी गढ़ में पहुँचे जाय ॥
धावन भेजि दियो डेरा पर * ब्रह्मानन्दहि लाउ बुलाय ॥
धावन पहुँचि गयो डेरा पर * ब्रह्मानन्दहि लयो बुलाय ॥
बोले आल्हा तब ब्रह्मा से * गढ में आगी देउ लगाय ॥
बीरशाह पूछी आल्हा से * को यह बालक खड़ो अगार ॥
बोले आलहा बीरशाह से * यह महुबे को राजकुमार ॥
मल्हना रानी को बेटा है * याको ब्रह्मानन्द है नाम ॥
बिदा करैबे का बहिनी की * भेजो याहि रजा परिमाल ॥
यह सुनि बोले बीरशाह तब * तुम सुनि लेउ बनाफर राय ॥
लाग हमारी कछु नाहीं है * यह सब काम माहिलपरिहार ॥
बिदाकी त्यारी हमने कीन्हीं * तौलौं माहिल पहुँचे आय ॥
आय सुनाई तिन हमकोयह * गुस्सा भए रजा परिमाल ॥
आल्है काढि दियो राजा ने * औ ऊदन को दओ निकार ॥
बिदा कराय जबहिं जैहैं घर * अपनी दासी लिहैं बनाय ॥
यह कहि माहिल उरई वालो * तुरतै गंगा लई उठाय ॥
साँची मानी तब हमने यह * माहिल तेरो बुरो हुइ जाय ॥
कैदिह्यौंहिदेउसब लड़िकनकी * अबहीं बिदा दिहैं करवाय ॥

इतनी सुनतै तुनि आल्हा ने * सबकी कैद दई छुड़वाय ॥
लश्कर चलो गयो धूरे पर * राजा लौटि परे ततकाल ॥
जायके पहुँचे रंगमहल में * औ रानो से कही सुनाय ॥
त्यारी करिदेउसब बहुअर की * अबहीं बिदा देउ करवाय ॥
भई तयारी सब महलन में * तुरतै पलकी लई मँगाय ॥
सब सिंगारकरि चन्द्रावलितब * पलकी बीच पहूची जाय ॥
करिके परछनि तब रानो ने * बहू कि बिदा दई करवाय ॥
चली पालकी चन्द्रावलि की * औ लश्कर में पहुँची जाय ॥
दगी सलामी तब लश्कर में * जीतिको डंका दश्रा बजाय ॥
बीस रोजको धावा करिके * गढ़ महुबे में पहुँचे जाय ॥
इन्द्रसेनहू गढ़ महुबे में * आये रहे बनाफर साथ ॥
खबरि पायके रानी मल्हना * दरवाजे पर पहुँचो आय ॥
बारहु रानी चन्देले को * दिवला आदि पहूँचो आय ॥
करी आरती सब रानो ने * औ गोदी में लयो उठाय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं * रङ्गमहल में गईं लिवाय ॥
चन्द्रावलि चौथो पूरी भइ * कहि शिवचरण दई समुझाय ॥
आगे ब्याह लिखौं ब्रह्माको * यारो सुनो सुमिरि रघुराय ॥

* इति चन्द्रावलि की चौथो *

* नौरीगढ़ चाँदो की लड़ाई सम्पूर्ण *



* श्री; *

अथ

आल्ह खण्ड

* ऊदल का विवाह *

* दिल्ली की लड़ाई *

* दोहा *

सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

* आल्हा *

अलखनिरञ्जन परमेश्वरको * लै परभात रामको नाम ॥
संझा तारनि तुरुको गये * घर घर दीपक बरे तमाम ॥
कलियुग माहिं दुर्योधनराजा * हुइके पृथीराज सरनाम ॥
पृथीराज घर बेला हुइ के * प्रगटी आय द्रौपदी रानि ॥
अर्जुन प्रगटे ब्रह्मानन्द हुइ * जो महुवे के राजकुमार ॥
बारह वर्ष केरि बेला भइ * इकदिन कियेसकल सिंगार ॥
बोली एक सखी बेला ते * तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे * जो अबलगनहिंकियोविवाह ॥
तुम्हरे सङ्गकिजितनीसखियाँ * ते सब गौने रौने जायँ ॥
बात सुनतही यह सखियनते * बेला बहुत गई शरमाय ॥
सङ्ग छाँड़िदो उन सखियनको * औ माता ढिग पहुँचीजाय ॥
अगमा देखो जब बेटी को * तब छाती से लियो लगाय ॥

पूछन लागी अगमा रानी * काहे बदन गयो मुरझाय ॥
बोली बेला संग सहेली * हमसे करत हँसौवा आय ॥
कुलहोने क्या बाप तुम्हारे * जो तुम्हरो नहिं कियो बिवाह॥
इतनी सुनतै अगमा रानी * बेटिहि तुरत कह्यो समुझाय ॥
धीरज राखौ अपने मनमें * जल्दी दीहैं ब्याह रचाय ॥
इतनी कहिके अगमा चलिभइ * औ राजा तिर पहुँची जाय ॥
आदर करिके राजा पूँछेउ * आई कौन हेत महरानि ॥
बोली रानी बड़े प्रेम से * स्वामी सुनौ बात मनलाय ॥
बेला हुइ गइ ब्याह योग्य अब * ताको टीका देउ पठाय ॥
बोलन लागे महराजा तब * अबहीं टीका दिहैं पठाय ॥
यह कहि तुरतै राजा चलिभे * औ दरबार पहूँचे आय ॥
ताहर बेटा को बुलवायो * औ चौंड़ाको लिया बुलाय ॥
भाट पुरोहित नाऊ बारी * चारो नेगी लिये बुलाय ॥
हाल सुनायो सब राजा ने * ताहर लीन्हें संग लिवाय ॥
पहुँचे राजा राजमहल में * थार सोबरन को मँगवाय ॥
एक नारियल तुरत मँगायो * शाल दुशाला लिये मँगाय ॥
तीन लाखकी सामग्री सब * सो नेगीको दइ सौंपाय ॥
लैके कागज कलपी वालो * अपनो कलम दान मँगवाय ॥
पहले लिखिके सिरनामा को * ता पीछे से लिखी जुहार ॥
ताहर बेटा चौंड़ा ब्राह्मण * चारो नेगी दिये पठाय ॥
तीनि लाखको सब सामा है * सो तुम जानि लेउ महराज॥
पहिली लड़ाई दरवाजे की * मड़ये चलिहैं कठिन कृपान ॥
खान कलेवा लड़िका ऐहैं * तुरतै लीहैं शीश उतार ॥
जो मंजूर होय सबही बिधि * टीका तुरत लेउ चढ़वाय ॥

ऐसी चिठिया पृथीराज ने * लिखि ताहर को दई गहाय ॥
बोले राजा तब ताहर ते * टीका चढ़ै बराबरि माहिं ॥
नगर महोबे तुम ना जैयो * जहँपर रहत बनाफर राय ॥
थोछी जात बनाफर की है * ताते तुमहिं दियो समुझाय ॥
इतनी सुनतै करि प्रणाम तब * ताहर कर्ण केर अवतार ॥
साथ लियो चौंड़ा ब्राह्मणको * औ सब नेगी संग लिवाय ॥
तुरतै चलिभे गढ़ दिल्ली ते * अस चौंड़ा से लगे बतान ॥
क्वाँरो लड़िका झुन्नागढ़ को * जहँ गजराजा कोहै राज ॥
राह पकरि लइ झुन्नागढ़ को * पहुँचे जाय राज दरबार ॥
करी बन्दगी गजराजा को * पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके पाती राजा बाँची * औ ताहरको लियो बिठाय ॥
बोले राजा तब ताहर ते * नहिं भारू मोहिं राजकुमार ॥
हमहिं चाह नाहीं ब्याहे की * क्यों हम शीश कटावैं जाय ॥
सुनतै लौटि पड़े ताहर तब * नरवर गढ़में पहुँचे आय ॥
करी बन्दगी तहँ नरपति को * तब राजा ने लियो बिठाय ॥
दीन्हीं पाती तब ताहर ने * पढ़तै राजा दई फिराय ॥
करिहैं ब्याह नाहिं दिल्लीमें * सुनतै ताहर कियो पयान ॥
राह पकरि लइ बूँदी गढ़की * पहुँचे बीच कचहरी जाय ॥
करि प्रणाम चिठिया टीका की * सो गद्दी पर लई चलाय ॥
पाती बाँचत ही गंगाधर * तुरतै पाती दई चलाय ॥
तहँ ते चलि भे ताहर चौंड़ा * चारो नेगी संग लिवाय ॥
ताहर घूमे देश देश में * टीका काहु चढ़ायो नाहि ॥
बोले ताहर तब चौंड़ा से * बेला बैरिनि भई हमार ॥
अब हम चलिहैं गढ़ ऊरईको * ठाकुर जहाँ महिल परिहार ॥

राजा माहिल जहँ बतलै हैं * टीका तहहीं दिहैं चढ़ाय ॥
यहकहि चलिभे गढ़ उरईको * औ उरई में पहुँचे जाय ॥
जाय कचहरी में माहिल के * ताहर झुकिके करी सलाम ॥
पास बिठाय लियो माहिल ने * औ सब पूछौ हाल हवाल ॥
बोले ताहर तब माहिल से * मामा कछु कह्यो ना जाय ॥
चारि महीना ते हम निकसे * टीका साथ विलमदे क्यार ॥
हम फिरि आये देश देशमें * टीका कोउ कबूलत नाहिं ॥
हमहिं बतावौ जहँ लड़िकातुम * तहँ टीका अब देयँ चढ़ाय ॥
सुनतै माहिल बोलन लागे * तुम सुनिलेउ बात धरिध्यान ॥
अजयपाल राजा कनवज के * जिनको जानत सकल जहान ॥
तिनके लड़िका रतीभान हैं * जिन घर उदय अस्तलौं राज ॥
बेटा तिनके लाखनि राना * टीका तिनहिं चढ़ावौ जाय ॥
सुनतै चलिभै ताहर चौंड़ा * औ कनवज में पहुँचे जाय ॥
जबहीं पहुँचे तहँ फाटक पर * दरवानो ने कही सुनाय ॥
कहाँ से आये हौ कहँ जैहौ * तब ताहर ने दियो जवाब ॥
हम आये हैं गढ़ दिल्ली से * राजै खबरि देउ पहुँचाय ॥
सुनतै चलिभौ दरमानी तब * राजै खबरि सुनाई जाय ॥
भओ बुलौआ तब ताहरको * ताहर तुरत पहूँचो जाय ॥
करि गुहार चिठिया दीन्हों तब * राजा चौकी दई डराय ॥
लैके पाती राजा बाँची * औ पातीको दियो डराय ॥
ऐसो ब्याह नाहिं चहिये यहँ * टीका अनत चढ़ावौ जाय ॥
यह सुनि ताहर तुरतै चलिभै * मनमें बहुत गये घबराय ॥
राह पकरि लइ गढ उरई को * उरई तीनि कोस रहिजाय ॥
कियो मुकाम तहाँ दुपहरमें * तहँई आय गये मलिखान ॥

खेलन गये रहे शिकार वन * सो ताहर से पूछन लाग ॥
कौन काज हित तुम आये इत * साँचो बात देउ बतलाय ॥
बात बनावत ताहर बोले * हम इत लौटे गङ्ग नहाय ॥
सुनतै ज्वाब दियो मलिखेने * झूँठी काहे कहत बनाय ॥
हो तुम बेटा पृथीराज के * है जो शब्द बेध चौहान ॥
साथ तुम्हारे हैं नेगी सब * ब्राह्मण चौंड़ा साथ तुम्हार ॥
हमहिं बताय देउ साँची तुम * इतनी मानो बात हमार ॥
बोले ताहर तब मलिखे से * हमरी बात करो परमान ॥
लाए टीका हम बहिनी को * कोई ताहि कबूलत नाहिं ॥
यह सुन बोले नर मलिखे तब * चिठिया हमहिं देउ दिखलाय ॥
लैके चिठिया तब ताहर ने * सो मलिखे को दई गहाय ॥
चिठिया बाँचत ही मलिखे ने * ताहरमल से कही सुनाय ॥
लरिका बतावत हैं तुमको हम * अबहीं टीका देउ चढाय ॥
भूप चन्देले हैं महुबे में * जहँ ब्रह्मानन्द राजकुमार ॥
पारस पूजा जिनके घर में * लोहा छुवत सोन हुइ जाय ॥
सुन्दर लड़िका ब्रह्मानंद हैं * ताको टीका देउ चढ़ाय ॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे * नाहीं हुक्म बीर चौहान ॥
नगर महोबा हम जै हैं नहिं * हटको हमहिं तहाँ महराज ॥
तबहीं मलिखे पूछन लागे * साँची हमहिं देउ बतलाय ॥
कौने कारन राजा हटको * क्या कुलहीन रजापरिमाल ॥
जगमें जाहिर चन्द्र बंश है * हैं नर नाह चँदेले राय ॥
अपना दुसरिहा जिन राखो ना * जीते देश देश महिपाल ॥
दीन्हो आज्ञा अमरगुरू जब * खाँड़ा सागर धरो पखारि ॥
सुनतै चौंड़ा ज्वाब दियो तब * ओछी जात बनाफर राय ॥

असली बड़ा आल्हखण्ड



भार्गव भूषण प्रेस, काशी।

संगति कीन्ही बनाफरन ते * दागी भए चँदेले राय ॥
सुनतै मलिखे ने गुस्सा हुइ * चौंड़हि तुरतै दिया जवाब ॥
मुखते होनी तुम बोलतिहौ * क्या कमबख्ती आइ तुम्हार ॥
नैनागढ़ में आल्हा ब्याहे * राजा नैपालो सरनाम ॥
हम ब्याहे हैं गजराजा घर * पथरी गढ़ में भयो बिवाह ॥
हैं परिहार बंश उरई के * माहिल मामा लगत हमार ॥
हम ओछे हैं कौन बात में * पूरौ चत्रि धर्म हम माहिं ॥
जीत्यो पारथ हम दङ्गल में * अपनोसिरसा लियोछिनाय ॥
जानत हमको महराजा हैं * ताते बोलौ बात सम्हारि ॥
सुन्दर लड़िका ब्रह्मानँद हैं * रणमें एक बीर बलवान ॥
योग्य तुम्हारे हैं सबही बिधि * ताते टीका देउ चढाय ॥
इतनी सुनि चौंड़ा ब्राह्मणसे * ताहर लागे करन सलाह ॥
ब्याह कबूलो नहिं काहू ने * ताते टीका देउ चढ़ाय ॥
मनमें भाय गई चौंड़ा के * चलिभे साथ बीर मलिखान ॥
सिरसा लै गये तिन सबही को * औ बँगला में दियो टिकाय ॥
खातिर कीन्ही भलो भाँतिसे * घोड़ी कबुतरी लई सजाय ॥
कूदके घोड़ी पर चढ़ि बैठे * औ महुबे की पकरी राह ॥
पहर एक मारग में बीतो * पहुँचे जाय भूप दरबार ॥
करी बन्दगी परिमालै को * राजा लीन्हो पास बिठाय ॥
बोले राजा बड़े प्रेम से * बेटा हाल देउ बतलाय ॥
बोले मलिखे हाथ जोरि तब * है सब चाचा दया तुम्हारि ॥
एक बात को हम आये हैं * सो तुम मानौ कही हमारि ॥
आओ टीका है ब्रह्मा को * यह कहि पाती दई गहाय ॥
पाती बाँचत परिमालै ने * नर मलिखे से कही सुनाय ॥

हमहि न चहिये ऐसी टीका * ना हम फौज खपैहैं जाय ॥
धरिदो खाँड़ा हम सागर में * सिगरे छोरि धरे हथियार ॥
मारु कठिन है चौहानन की * तब मलिखे ने दियो जवाब ॥
घरसे टीका जो फिरि जैहैं * तुमको हँसिहैं सकल जहान ॥
बोले राजा तब मलिखे से * तुम रानी से पूछौ जाय ॥
सुनतै चलिभैनर मलिखे तब * ओ मल्हना ढिग पहुँचेजाय ॥
हृदय लगायलियो मल्हनाने * ओ मलिखे से पूछन लागि ॥
कुशल बतावो गढ़ सिरसाकी * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले मलिखे तब मल्हनाते * मातासब विधि दया तुम्हारि ॥
कुशल छेमसे राज करत हैं * यह कहि पाती दई गहाय ॥
पाती बाँचत मल्हना बोली * बेटा मानौ बात हमार ॥
अबहीं फेरि देउ टीका तुम * लड़िकहि कौन देइ बलिदान ॥
बोले मलिखे हाथ जोरि तब * माता बोलौ बात सम्हारि ॥
घरते टीका जो फिरि जैहै * जगमें हुइहै हँसी तुम्हारि ॥
युद्ध जीतिके चौहानन ते * साता भाँवरि लिहौं डराय ॥
मछला रानी ने समुझायो * ओ मल्हना से लगी बतान ॥
बात मानिलेउ तुम मलिखेकी * अपनो हुक्म देउ फरमाय ॥
तौ लौं ऊदन महलन आए * ओ सबही को कियो प्रणाम ॥
पूछन लागे नर मलिखे से * दादा हाल देउ बतलाय ॥
बात कौन पूछत माता से * मलिखे हाल दियो बतलाय ॥
पाती लैके तब मल्हना से * बाचन लाग उदयसिंह राय ॥
बाँचि के पाती ऊदन बोले * टीका अबहीं लेउ चढाय ॥
बोली मल्हना तब ऊदन से * तुम यह टीका देउ फिराय ॥
इतनी सुनतै ऊदन तड़पे * माता अकिल गई तुम्हार ॥

नाहीं लौटन को टीका यह * चाहै प्राण रहै कै जाय ॥
ब्याहिलं आवौं जो ब्रह्माको * तौ मैं देवकु वरि को लाल ॥
फिरिके मछलाबोलन लागी * औ मल्हनासे कहो सुनाय ॥
ऊदन मानन को नाहीं हैं * ताते हुक्म देउ फरमाय ॥
मल्हना वोली जैसी भावै * तैसी करौ लड़ैते लाल ॥
हुक्म पाय तब नर मलिखेने * रूपन वारिहि लियो बुलाय ॥
भेजि दियो तुरतै सिरसाको * औ सब हाल दियो बतलाय॥
चलिभो रूपन तब सिरसाको * पहुँचो एक पहर में जाय ॥
सुलिखे बैठे जहँ बँगला में * रूपन नैके करी सलाम ॥
बोल्यो रूपन तब सुलिखे से * ताहरमल को देउ पठाय ॥
चढिहैं टीका ब्रह्मानन्द को * भेजो हमहिं बीर मलिखान ॥
सुनतै सुलिखे उठि ठाढे भै * और ताहर ढिग पहुँचे जाय॥
चौंड़ा ताहर चारो नेगी * सो रुपना संग दिये पठाय ॥
महुबे घर घर खबरैं हुइ गइँ * लागो होन मङ्गलाचार ॥
मल्हना बुलवायो पंडित को * सो महलन में पहुँचे आय ॥
आँगन चौकपूरि मोतिनकी * सोने कलशा दियो धराय ॥
मंगल गावन लगीं सखिनतहँ * शोभा एक न बरनी जाय ॥
ब्रह्महि बुलवायो पंडित ने * सो पाटा पर बैठे आय ॥
देवै तिलका दोनों बैठीं * बैठीं जहाँ मल्हन दे रानि ॥
बारह रानी चन्देले को * लागीं करन मंगलाचार ॥
आल्हा ऊदन ढेबा बैठे * बैठे साजि वीर मलिखान ॥
सबही मिलि बैठे आँगन में * बैठे आय रजा परिमाल ॥
रँग केसरि के छुटे पिचिका * छजुन रही लालरी छाय ॥
बन्दी सुयश बखानन लागे * पंडित वेद उचारण लाग ॥

चौंड़ा ताहर औ सब नेगी * गढ़ महुबे में पहुँचे आय ॥
आये ताहर जब गलियन में * वर्षा होन फूल की लागि ॥
रंग बिरंगे कपड़ा हुइगे * ताहर बहुत खुशी हुइ जायँ ॥
धन्य नगर यह गढ़ महुबो है * जामें बसत रजा परिमाल ॥
आये ताहर दरवाजे पर * चौंड़ा ब्राह्मण संग लिवाय ॥
चारौ नेगी संग लिये तब * पहुँचे रंगमहल में जाय ॥
ऊपर नीचे बघ ऊदन ने * दीन्हें तवा सात धरवाय ॥
पहुँचे ताहर जब आँगन में * नेगाचार होन तब लाग ॥
टीका लैके तीन लाख को * सो ताहर ने दियो धराय ॥
देखो रूप जबहिं ब्रह्मा को * ताहर खुशी भये मनमाहिं ॥
करिके पूजन श्री गणेश को * धरिके इष्टदेव को ध्यान ॥
कियो रोचना ब्रह्मानन्द के * मस्तक अच्छत दिये लगाय ॥
धरे तवा जो बघऊदन ने * तहँ ताहर की परी निगाह ॥
साँगि धमक्की तब ताहर ने * सातौ तवा तोरि धँसिजाय ॥
बोले ताहर तहँ आँगन में * हमरे बंश यही ब्यौहार ॥
साँगि उखारैं जो ब्रह्मानन्द * तौ हम बीरा देयँ खवाय ॥
हाल देखि यह राजा सोचे * मलहना बहुत गई घबराय ॥
रानी बोली तब ऊदन ते * औ मलिखे से कही सुनाय ॥
आगे हमरे तो यह गति है * पाछे कहा रचो करतार ॥
बोले ऊदन तब मलहना ते * माता धीर धरौ मनमाहिं ॥
अस कहि ऊदन ठाढ़े हुइगे * औ ताहर से कही सुनाय ॥
भैया छोटे हम ब्रह्मा के * हम यह लीहैं साँगि उखारि ॥
यह कहि ऊदन आगे बढ़िके * तुरतै लीन्हीं साँगि उखारि ॥
बोले ताहर तब चौंड़ा ते * दादा सुनौ हमारी बात ॥

जिनके घर हैं ऐसे योधा * क्यों नहिं राजकरैं परिमाल ॥
अस कहि ताहर बीरा लैके * ब्रह्मानन्द को दियो खवाय ॥
बीरा चाबत ही ब्रह्मा के * सन्मुख भई तड़ाका छींक ॥
मल्हना बोली तब मलिखे से * टीका अबहीं देउ फिराय ॥
ऐसो ब्याह नहीं करिहैं हम * क्वाँरा रहिहै पुत्र हमार ॥
तब ऊदन समुझावन लागे * माता मनमें करौ बिचार ॥
घर आयौ टीका फिरि जैहैं * जग में हुइहैं हँसी हमार ॥
टीका लौटन को नाहीं अब * चाहै असगुन होय अपार ॥
हम जब त्यार भये माड़ो को * सन्मुख भई छींक तहँ आय ॥
तबहूँ माता तुम हटको न्हहिं * हम लै आये बापको दावँ ॥
यह मन भाई नहिं मल्हना के * फिरि ऊदन से कही सुनाय ॥
असगुन हुइगो है समुहें पर * ताते टीका देउ फिराय ॥
सुनीबात यह फिरि मल्हना ते * मलिखे लीन्हीं काढ़ कटार ॥
पेट फारि लीहौं अबहीं मैं * जो यहु टीका दिहौ फिराय ॥
देखि हाल यह मल्हना बोली * बेटा मेरे बीर मलिखान ॥
मनहिं तुम्हारे जैसी आवै * तैसी करो लड़ैते लाल ॥
मल्हना बजवाई ढोलक तब * सखियन करैं मंगलाचार ॥
नेगी जितने थे दिल्ली के * सबको गहना दो पहिराय ॥
गहना जितनो बाकी रहिगो * सो सब चौंड़हि दियो गहाय ॥
होयँ जो नेगी और तुम्हारे * तिनकहँ गहनो दीजौ जाय ॥
जितने नेगी गढ़ महुबे के * ताहर गहनो दियो बँटाय ॥
दोउ ओर ते भई निछावरि * पुनि ज्यौनार भई ततकाल ॥
मय्यो बुलौआ तब पंडित को * ब्याह महूरत देउ बताय ॥
माघ कृष्णा तेरसि भाँवरिकी * दीन्ही सायति तुरत बताय ॥

ताहर बोले परिमालै ते * आयसु देहु मोहि महराज ॥
चारि महीना से घूमत हम * आज्ञा दई तुरत परिमाल ॥
चलिगये ताहर करि प्रणामतब * चौंड़हि नेगिन संग लिवाय ॥
जबहीं पहुँचे गढ़ उरई में * माहिल चौकी दई डराय ॥
पूछो हाल तुरत माहिल ने * ताहर हाल दियो बतलाय ॥
सुनो हाल जब माहिल राजा * मनमें बहुत गए खिसियाय ॥
ताहर चलिभे गढ़ उरई ते * माहिल घोड़ो लई सजाय ॥
तुरत सवार भये लिल्ली पर * औ दिल्लीको कियो पयान ॥
धावा करिके पाँच दिना की * पहुँचे पृथीराज दरबार ॥
समुहें पहुँचतही राजा के * माहिल नैके करौ जुहार ॥
सूरत देखत ही माहिल को * ऊँचो चौकी दई डराय ॥
पूछी राजा तब माहिल ते * अपनी कुशल कहो समुझाय ॥
कुशल क्षेम हैं मेरि उरई में * बैठे राज करौं महराज ॥
एक बात अनहोनी हुइगइ * सो सुनि लेउ बीर चौहान ॥
पहुँचे ताहर गढ़ महुबे में * तहँ उन टीका दियो चढाय ॥
जाति बनाफर की ओछी है * ताते टीका लेउ फिराय ॥
तौ लौं आये चौंड़ा ताहर * तिनते कही पिथौरा राय ॥
हमने हटको थो महुबे कौं * तहईं टीका आये चढ़ाय ॥
लावो फेरि अबहिं टीकातुम * तब ताहर ने कही सुनाय ॥
चारि मास मारग में बीते * घूमे देश देश हम जाय ॥
काहू टीका नाहिं कबूलो * तौ लौं आयमिले मलिखान ॥
करत शिकार रहे जंगल में * उन सब पूछो हाल हवाल ॥
करो बहाना हम गंगा को * पै उन जानि लियो सबहाल ॥
लड़िका बतलायो महुबे में * जहँ पर तपत रजापरिमाल ॥

ब्याहे आल्हा नैनागढ़ में * राजा नैपाली घर माहिं ॥
मलिखे ब्याहे गजराजा घर * पथरीगढ़ में भयो बिवाह ॥
माहिल मामा हैं उनहूँ के * हैं सरनाम चत्रियन माहिं ॥
टीका फिरिहै ना महुबे से * चाहै कोटि करौ परकार ॥
आवे बरायत जब दिल्ली में * सबको कैदि लिहौ करवाय॥
यह सुनि चलि भये माहिल राजा * औ उरई में पहुँचे जाय ॥
यहाँ कि बातैं तौ यहँ छोड़ो * अब महुबेकी सुनो हवाल ॥
माघ महीना के लागत खन * त्यारी होन लाग ततकाल ॥
न्यौतो भेजो उन राजन घर * जिनते रहे बहुत ब्यौहार ॥
आये राजा ब्यौहारी सब * अपनो अपनो फौज सजाय ॥
डेरा डारि दिये बँगले में * तंबुअन रही लालरी छाय ॥
खबरि पायके माहिल राजा * गढ़ महुबे में पहुँचे आय ॥
झूठी पाती यक माहिलने * मल्हना रानी दई गहाय ॥
बात बनाई तब माहिल ने * औ मल्हना से कही सुनाय ॥
यह कहि दीन्हो पृथीराजने * अकिलो लड़िका लावो जाय॥
सातौ भाँवरि हम डरवैहैं * सो तुम लड़िका देउ पठाय ॥
बात मानि साँची माहिलकी * मल्हना ब्रह्मै लियो बुलाय ॥
पलकी सजवाई तुरतै तब * औ ब्रह्मा को दियो बिठाय ॥
बोली मल्हना तिन माहिलसे * भैया बहुत रह्यो हुशियार ॥
लड़िका सौंपतिहौं तुमका मैं * ब्रह्मै कुशल मिलैओ आय ॥
यह सुनि चलि भये माहिल राजा * तुरत पालकी संग लिवाय ॥
खबरि सुनी जब यह ऊदनने * तब महुबे में पहुँचे जाय ॥
रानी मल्हना जहँ बैठी थी * ऊदन चरण छुये तहँ जाय ॥
बोले ऊदन आधीनी से * माता हरि गइ बुद्धि तुम्हार ॥

अगुआ करिके तुम माहिलको * अकिले ब्रह्म दियो पठाय ॥
अबना मिलिहैं पुत्र तुम्हारो * धोखा दियो महिल परिहार ॥
परी बरायत गढ़ महुबे में * सो बदनामी भई हमार ॥
कबहुँ न ऐहैं गढ़ महुबे में * अस कहि चले उदैसिंह राय ॥
चलत देर लागी नहि तिनको * देखत रही मल्हनदे रानि ॥
पूछै सुनवाँ बघऊदनि से * देवर हाल देउ बतलाय ॥
मुह कुम्हलानो है काहे को * देखत रही मल्हनदे रानि ॥
माहिल लै गये हैं ब्रह्मा को * मल्हना अकिले दिये पठाय ॥
पड़ो बरायत है महुबे में * यह बदनामी भई हमार ॥
हम ना जैहैं अब महुबे को * बोली सुनत सुमनदे रानि ॥
तुमको पालो है मल्हना ने * देवर समुझि लेहु मनमाहिं ॥
जो कहुँ ब्रह्मा मारे जैहैं * तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
हँसी तुम्हारी जग में हुइ है * ताते कूच देउ करवाय ॥
साजि बरायत जल्दी जावो * इतनो मानौ बात हमार ॥
सुनी बात जब यह सुनवाकी * ऊदन सोचिसमुझि मनमाहिं ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजै नगाड़ा गढ़ महुबे में * लश्कर तुरत होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री तुरत भये तैयार ॥
पाती लिखिके यह ऊदन ने * सो धावन को दई गहाय ॥
जल्दी जावो तुम सिरसा को * औ मलिखे को दीजो जाय ॥
अकिले ब्रह्म माहिल लै गये * छलिके झूठी बात बनाय ॥
राह घेरिके तेहि छलिया की * दादा ब्रह्म लेउ छिनाय ॥
यहि बिधि पाती धावन लैके * पहुँचो गढ़ सिरसा में जाय ॥
करी बन्दगी नर मलिखे को * पाती गही दई चलाय ॥

खोलिके पाती मलिखे बाँची * औ सुलिखेकालियो बुलाय ॥
हाल बताय दियो पाती को * औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
कैदि कराय लेउ माहिल को * औ ब्रह्मा को लेउ छिनाय ॥
इतनी सुनतै सुलिखे चलिभये * थोड़ी फौज लई सजवाय ॥
कूच कराय दई जल्दी से * घेरो जाय राह सुलिखान ॥
आवत देखो जब माहिल को * आगे बढ़िके करो सलाम ॥
सुलिखे बोले तब माहिल से * मामा सुनौ हमारी बात ॥
कौन देश की यह रीती है * अकिलोलड़िकालियोलिवाय॥
आई पालकी जब ब्रह्मा की * सुलिखे सिरसा दई पठाय ॥
दण्ड बँधाय लई माहिल की * सो द्वारे पर दियो टँगाय ॥
खबरि भेजि दइ गढ़ महुबेको * महुबे नेग होन सब लागि ॥
भई तयारी सब बरात की * कूच को डङ्का दौ बजवाय ॥
सजी सवारी चन्देले की * तापर राजा भये सवार ॥
चली बरायत गढ़ महुबे से * शोभा कछू कही ना जाय ॥
आये आल्हा जब सिरसा में * औ द्वारे पर परी निगाह ॥
बँधो देखिके उन माहिल को * आल्हा तुरत दियो खुलवाय ॥
रोवन लागे माहिल राजा * सुलिखे इज्जति लई हमार ॥
अब हम जैहैं नहिं बरातको * सुनतै कही उदयसिंह राय ॥
मामा जैहैं ना बरात जो * तो कछु काम बनैगो नाहिं ॥
देबा समुझायो माहिल को * मामा सोच देहु बिसराय ॥
तुम्हरिहि शोभा है बरात को * तासों चलिये साथ हमार ॥
जितने संगी थे माहिल के * सो ऊदन ने दिये फिराय ॥
साथ लियो अकिले माहिलको * कूच नगाड़ा दौ बजवाय ॥
चली बरायत गढ सिरसा से * संगे चले वीर मलिखान ॥

राह पकरि लइ गढ़ दिल्लीकी * पहुँचे सात दिनामें जाय ॥
चारि कोस जब दिल्ली रहिगइ * अपने तम्बू दिये तनाय ॥
डेरा डारि दिये तहँवा पर * फेटैं छुटों क्षत्रियन क्यार ॥
दिये उतारि जीन घोड़न के * हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
ठौर ठौर पर डेरा परिगो * सब राजन ने कियो मुकाम ॥
बोले ऊदनि सुनि आल्हा से * दादा होय ब्याह को काम ॥
जायके पूछो तुम राजा से * औ पंडित को लेहु बुलाय ॥
पहुँचे आल्हा परिमालै ढिग * औ राजा को करी सलाम ॥
बोले आल्हा परिमालै ते * अपने पंडित लेउ बुलाय ॥
तुरतै पंडित को बुलवायो * ब्याहकी लग्न देउ बतलाय ॥
पत्रा खोलत पंडित बोले * ऐपनवारी देउ पठाय ॥
अच्छी साइति दरवाजे की * औ घन लग्न भोरहरे क्यार ॥
सुनिके साइत नर मलिखे ने * रूपन वारी लौ बुलवाय ॥
बोले मलिखे तब रूपन से * ऐपनवारी तुम लै जाउ ॥
रूपन बारी बोलन लागो * हम नहिं मूड़ कटैहैं जाय ॥
कठिन मारु है चौहानन की * यह सुनि ऊदनि कही सुनाय ॥
रूपन अकिल तुम्हरी हरिगइ * तुमनहिं बोलत बात सम्हारि ॥
नेगीतुमका हमनहिंसमुझत * तुम तो भाई लगत हमार ॥
तुमहि मुनासिब यह नाहीं है * मुखसे हीनी कहत सुनाय ॥
यह सुनिरूपनाकायल हुइगो * औ ऊदन से लगो बतान ॥
घोड़ा दै देउ बेंदुला वालो * औ दै देउ ढाल तरवार ॥
पाग बैजनी हमको दै देउ * ऐपनवारी देउँ पठाय ॥
रूपन बारी जो कछु माँगो * सो ऊदनि ने दियो मँगाय ॥
चलिभो रूपन तब बरात ते * ऐपनवारो लीन्ह उठाय ॥

जबहीं पहुँचो मो फाटकपर * तब दरमानी कही सुनाय ॥
कहाँ से आये कहँ जैहो तुम * तब रूपन ने दियो जवाब ॥
नगर महोबा से आये हम * रूपन बारी नाम हमार ॥
ऐपनवारी हम लाये हैं * ब्याहन आये राजकुमार ॥
हाल सुनावो तुम राजा को * हमरो नेग देयँ पठवाय ॥
तब दरवानी पूछन लागो * अपनो नेग देउ बतलाय ॥
नेग हमारो यहै सुनावो * द्वारे चलै कठिन तरवार ॥
इतनी सुनतै गौ दरमानी * बैठे जहाँ बीर चौहान ॥
सम्मुहँ पहुँचो दरमानी तब * महराजा को करी सलाम ॥
हाथ जोरि बोलो दरमानी * सुनिये महाराज चौहान ॥
यह बरात आई महुबे से * रूपनबारी दियो पठाय ॥
ऐपनवारो वह लायो है * माँगत नेग कठिन तरवार ॥
सुनतै गुस्सा हुइ पिरथी ने * सूरज बेटा दियो पठाय ॥
देर सम्मुझि के रूपन बारी * पहुँचो जाय राज दरबार ॥
करी बन्दगी महराजा को * ऐपनवारो धरत अगार ॥
हाथ जोरिके रुपना बोलो * हमरो नेग देउ मँगवाय ॥
बोले पृथीराज ताहर से * याको मूड़ लेउ कटवाय ॥
हल्ला करि दौ तब ताहर ने * क्षत्रिन खैंचि लई तरवार ॥
खैंचि शिरोही लइ रुपना ने * खट खट चलनलगी तरवार ॥
चली शिरोही तिनिघरी लौं * रुपना कठिन करी तरवार ॥
रुपनै घेरो जिन क्षत्रिन ने * तिनकहँ रुपनादियो गिराय ॥
आये रूपन पृथोराज ढिग * तुरतै भाला लिओनिकारि ॥
जाय सामुहँ तुरत नोक से * ऐपन वारी लई उठाय ॥
बाकी नेग लिहौं भौरिन माँ * असकहिचलामहुनिया ज्वान॥

चत्रिन घेरो फिरि रुपना को * फिरिके खैंचि लई तरवार ॥
ज्यहि चत्री को रुपना मारै * सो गिरि परै भूमि पर जाय ॥
चली शिरोही चारि घरी भरि * गलियन बही रुधिर की धार ॥
घोड़ा हरनागर दौड़ायो * रुपना निकरि गयो वा पार ॥
आवत देखो परिमालै ने * रुपना देखि गये घवड़ाय ॥
ऊदनि पूछो तब रुपना से * भैया हाल देउ बतलाय ॥
बोले रूपन तब ऊदन से * भैया कछु कही ना जाय ॥
दुइ हजार चत्री म्वहिं घेरो * द्वारे कठिन चली तलवार ॥
मुहरा मारो हम सबही को * ऐपनवारी लाये उठाय ॥
सुनो हाल जब यह माहिलने * तब राजा से लगो बतान ॥
हम जैहैं अबहीं दिल्ली को * पृथीराज से कहिहैं जाय ॥
नेग चारि करिके सबही विधि * सातौ भाँवरि देउ डराय ॥
लिल्ली घोड़ो तुरत सजाई * माहिल तापर भये सवार ॥
राह पकरि लइ दिल्लीगढ़को * पहुँचे पृथीराज दरबार ॥
करी बन्दगी महाराज को * ऊँची चौकी दई डराय ॥
बोले माहिल पृथीराज से * हैं अति वीर महुबिया ज्वान ॥
शर्बत भेजो तुम बरात में * तामें जहर देउ घुरवाय ॥
पियतै सबही मरि जैहैं तहँ * सहजै सबहि बात रहिजाय ॥
यह सुनिबात मानिमाहिलकी * सूरजमल को लियो बुलाय ॥
जहर मँगाय घोरि शर्बत में * सोने घड़ा दियो भरवाय ॥
आये नेगी औ कहार सब * शर्बत लैके चले अगार ॥
पहुँचे सूरज अगवानी का * औ बरात में पूछो जाय ॥
तम्बू जहँ पर परिमालै को * तहँ दरबानी दियो बताय ॥
सूरज पहुँचे जब समुहें पर * परिमालै को कियो प्रणाम ॥

बोले सूरज चन्देले से * पठयो हमहिं बीर चौहान ॥
लाये शर्बत हम अपने संग * सो क्षत्रिन महँ देउ बँटाय ॥
त्यार होउ तुम दरवाजे का * अपने बाहन लेउ सजाय ॥
कियो इशारा तब मलिखे ने * ऊदनि लियो कटोरा हाथ ॥
समुहें छींक भई तुरतै तब * देबा सगुन बिचारन लाग ॥
बोले देबा तब ऊदनि ते * या शर्बत में जहर मिलाय ॥
ऊदनि बलवायो कुत्ता यक * ताको शर्बत दियो पिलाय ॥
पियतै मुरझानो कुत्ता तहँ * तब शर्बत सब दियो फेंकाय ॥
गुस्सा हुइके उदनि बाँकुड़ा * नेगिन मारु दई करवाय ॥
भागे नेगी औ सूरज मल * औ दरबार पहूँचे जाय ॥
हाल बताओ सब बरात का * शर्बत सबिया दियो फेकाय ॥
ऐहैं सब मिलि दरवाजे को * अब कछु कीजै आप उपाय ॥
बोले माहिल तब राजा से * तुम सुनि लेउ पिथौरा राय ॥
बाँस गड़ाय देउ द्वारे पर * ऊपर कलश देउ धरवाय ॥
जौंरा भौंरा दोनौं हाथी * मदमाते करि देउ छोड़ाय ॥
आवै बरायत दरवाजे पर * यहकहिदीजोतिनहिं सुनाय ॥
बंश हमारे यही रीति है * पहले हाथी देउ पछारि ॥
कलश उतारि लेउ नेजा ते * पाछे होय द्वार को चार ॥
ता पाछे ते भाँवरि परिहैं * हमरे कुल। यही व्योहार ॥
सीख मानि के पृथीराज ने * द्वार बाँस दिये गड़वाय ॥
कलश शोबरन के धरवाये * दोनौं हाथी दिये छुड़ाय ॥
बहुतै खुशी भये माहिल तब * औ बरात में पहुँचे जाय ॥
खबरि कराय दई महलन में * पहुँचे पृथीराज महराज ॥
मलयागिरि के खंभ मँगाये * सो आँगन में दिये गड़ाय ॥

सइयो छवाओ तब पानन ते * सोने कलश दिये धरवाय ॥
चौकी चन्दन की डरवाई * सखियाँ लीन्हीं सबहिं बुलाय ॥
यहाँ की बातैं यहँ छोडो तुम * अब बरात की सुनौ हवाल ॥
ऊदन बोले नर मलिखे से * अब ना राखौ देर लगाय ॥
त्यारी करि लेउ दरवाजे की * मलिखे हुक्म दियो फरमाय ॥
डंका बाजो तब बरात में * चत्री सबहिं भये तैयार ॥
लश्कर चलिभौ तब आगेको * तोपैं आगे दई जुताय ॥
चली पालकी ब्रह्मानन्द की * झंडन रही लालरी छाय ॥
दहिनेचलिभौ नरमलिखे तब * बायें बेंदुला को असवार ॥
साथ पालकी परिमालै की * सङ्गहि मंडलीक औतार ॥
सुनी खबरिया पृथीराज ने * आवत फौज बरायत साथ ॥
देवी मरहटा को बुलवायो * सातौ बेटा लिये बुलाय ॥
चौंड़ा धाँधू औ अंगद को * पूरन राजा लिये बुलाय ॥
आज्ञा दै दी इन सबही को * जलदी फौज लेउ सजवाय ॥
डंका बाजो गढ़ दिल्ली में * तुरतै फौज भई तैयार ॥
पण्डित आये दरवाजे पर * मोतिन चौक दई पुरवाय ॥
कलस सोवरन गंगाजलभरि * दरवाजे पर दियो धराय ॥
सामग्री लैके पूजन की * दिये गणेश आदि पुजवाय ॥
बेटा ताहर को बुलवायो * अगवानी को दियो पठाय ॥
ताहर पहुँचे तब बरात में * औ आल्हा को करी जुहार ॥
हम आये हैं अगवानी को * दरवाजे को होउ तयार ॥
पहुँचे सब जब दरवाजे पर * तब ताहर ने कही सुनाय ॥
वंश हमारे यही रीति है * पहले हाथी देउ पछार ॥
द्वार चार सबही हुइ है यहँ * हमरे कुल यही व्योहार ॥

फेरी साँकल दोउ हाथिन ने * झपटे तुरत बीर मलिखान ॥
पकरि दाँत पटक्यो धरतीपर * देखत बढ़े बीर मलिखान ॥
झपटे ऊदन सूँड़ि पकरिके * हाथी दूसर दियो पछार ॥
पृथीराज यह हाल देखि के * मनमें मानि गये तब हारि ॥

दरवाजे की लड़ाई ।

सुमिरन करिके रामचन्द्र को * गुरु अपने को चरन मनाय ॥
सुनहु लड़ाई अब द्वारे की * ताहर बढ़िके कही सुनाय ॥
कलश उतार लेउ लग्गी ते * तब हम द्वारो देयँ कराय ॥
इतनी सुनतै मलिखे बोले * औ जगनिक से कही सुनाय ॥
कलश उतारि लेउ अबहींतुम * यह सुनि जगनिक बढ़े अगार ॥
बोले ताहर कमलापति से * याको लेउ जँजीरन बाँधि ॥
तुमरि बराबरि को जोधा है * सुनि हाथी को दियो बढ़ाय ॥
यक ललकार दई कमलापति * जगनिक खबरदार हुइ जाउ ॥
सुनि पहुँचेजगनिकहाथीपर * औ मस्तक पर बाजो पाट ॥
तुरत महावत को मारो तब * कमलापति तब दइ ललकार ॥
मारो चेहरा जब जगनिकको * जगनिक लीन्हीं चोट बचाय ॥
खैंचि शिरोहीलइ जगनिकने * कमलापति पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाई कमलापति ने * तापर भयो जड़ाका जाय ॥
ढाल फाटि गइ गद्दी कटिगइ * सोने फूल गिरे झहनाय ॥
घायल हुइके कमलापति तब * धरती गिरे मूर्च्छा खाय ॥
जूझे कमलापति द्वारे पर * मनमें ताहर गये सकाय ॥
जिन्सीवाले रहिमत सहिमत * ताहर तिनसों लगे बतान ॥
अबहिंभगायदेउ जगनिकको * देखो हाल उदैसिंह राय ॥

मन्ना गूँजर से बोले तब * औ देबा से कही सुनाय ॥
तुमरि बरोबरि के दोनों हैं * उनमें चलन लगी तरवारि ॥
रहिमत सहिमत घायल ह्वैगे * औ द्वारे ते गये बराय ॥
दियो हुक्म तबहीं ताहर ने * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
बत्ती लागि गई तोपन में * धुँअना रहो सरग मड़राय ॥
गोला दलमें बरसन लागे * चहुँदिशि रहो अँधेरी छाय ॥
कछुक देर लों गोला बरसे * सबने खैंचि लई तरवार ॥
बेटा सातौ पृथीराज के * तिनहूँ खैंचि लीन्ह तरवारि ॥
बढ़े सिपाही दोनों दल के * खट खट चलन लगी तरवारि ॥
बहुत लड़ाई भइ द्वारे पर * सो कहँलग हम करैं बखान ॥
घरी तीनि भरि चली शिरोही * द्वारे बहो रक्त की धार ॥
ऊदनि पहुँचि गये खम्भा तर * तुरतै कलशा लीन्ह उतारि ॥
ऊदनि बोले बढ़ि ताहर से * आरो रीति देउ बतलाय ॥
मन में सोचे पृथीराज कछु * सबको लीन्हों तुरत बुलाय ॥
द्वार चार कीन्हो नोकीविधि * व्याह महूरत लौ बिचराय ॥
देखि हाल यह राजा माहिल * पृथीराज से लगे बतान ॥
व्याह जु ह्वैहै यह तुम्हरे घर * कुल के लगिहैं दाग बनाय ॥
जाति बनाफर को ओछो है * ताते सुनौ हमारी बात ॥
कहिकै पठवौ तुम बरात में * हमरे वंश रीति यह आय ॥
पहले करिहैं समधौरा हम * पाछे भाँवरि दिहैं डराय ॥
सबै घरौआ यहँ बुलवावौ * आवैं संग रजा परिमाल ॥
आयकै बैठैं जब द्वारे पर * सबके शीश लेउ उतराय ॥
सीख मानिलइ यह माहिलकी * औ ऊदनको लियो बुलाय ॥
बोले पृथीराज ऊदनि ते * ऊदनि सुनौ हमारी बात ॥

समघोरा करिहैं पहले हम * पाछे भाँवरि दिहैं डराय ॥
सुनतै आये बघऊदनि तब * बैठ जहाँ चन्देले राय ॥
कहौ हाल जब समघोरे को * तुरत पालकी लई सजाय ॥
चढ़े पालकी पर राजा तब * पहुँचे दरवाजे पर जाय ॥
छातीगज भरि पृथीराजकी * औ नैनन में बरै मसाल ॥
देखत डरिगे परिमालै तब * औ ऊदनि ते लगे बतान ॥
बयसि हमारी है बूढ़ो अब * ना हम गहत हाथ हथियार ॥
धोखा जानि परत यामें कछु * सो आल्हा से कहौ सुनाय ॥
पहुँचे ऊदनि तब आल्हाढिग * औ सब हाल दियो बतलाय ॥
तौ लौं आयगये मलिखे तहँ * ऊदन तुरतै कहो हवाल ॥
मलिखे बोले तब आल्हा से * दादा सुनौ हमारी बात ॥
जेठे भाई हौ ब्रह्मा के * सब विधिलागत पितासमान ॥
तुमही करिलेउ समघोरा यहँ * सुनतै आल्हा भये तैयार ॥
गज पचशावद त्यार कराई * आल्हो तापर भये सवार ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई * तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
घोड़ा बेंदुला को सजवायो * ऊदन तापर भये सवार ॥
चलि भे तीनों तब लश्कर से * दरवाजे पर पहुँचे जाय ॥
ठाढ़े सन्मुख पृथीराज जहँ * आल्हा तहाँ पहूँचे जाय ॥
दही लगाय दियो छाती में * तापर पात दियो चिपकाय ॥
जितने जोधा तहँ ठाढे. थे * देखन लागे दृष्टि पसार ॥
छाती मिलाई उन दोनों ने * देही चुअन पसीना लाग ॥
सोचन लागे पृथीराज मन * हैं बड़ बली महुबिया ज्वान॥
बोले पृथीराज आल्हा ते * आल्हा सुनौ हमारो बात ॥
व्याह काज होवै जल्दी ते * अबहि चढ़ावा देहु पठाय ॥

सुनतै तहँते आल्हा चलिभै * औ डेरा पर पहुँचे आय ॥
बोले आल्हा तहँ मलिखे से * गहनो को डब्बा देउ पठाय ॥
कपड़ा भेजि देहु ब्याहे के * सबै चढ़ौवा देहु पठाय ॥
सुनिके आज्ञा नर मलिखे ने * सब सामान दिओ निकराय ॥
रुपना बारी को बुलवायो * औ सब हाल कहो समुझाय ॥
सौंपि चढ़ावा दौ रुपना को * औ नेगिन को दौ सौंपाय ॥
नेगी पहुँचे रङ्ग महल में * बेला सइये पहुँची आय ॥
गहना कपड़ा नेगिन दीन्हें * सो बेला की परी निगाह ॥
सब फैलाय दियो गहनो तहँ * औ गुस्सा हुइ कही सुनाय ॥
लैके गहनो जो आये यहँ * हमरे सन्मुख लेउ बुलाय ॥
सखी बुलायो तब रुपना को * रुपना तहाँ पहूँचो आय ॥
बोली बेला तब रुपना से * बारो सुनौ चन्देले क्यार ॥
लै गहनौ यह कलियुगवालो * आये ब्याहन साजि बरात ॥
द्वापर वालो गहनो भेजौ * चूनरि चुरियाँ देउ मँगाय ॥
हुइहै ब्याह तबहिं हमरे संग * यह आल्हा से कहो सुनाय ॥
इतनी सुनतै रुपना चलिभौ * औ आल्हा ढिग पहुँचोआय ॥
हाल सुनाय दियो बेला को * बेला गहनो दियो फिराय ॥
माँगत गहनो द्वापर वालो * चुनरी चुरियाँ रही मँगाय ॥
सुनि घबड़ाने उदन बाँकुड़ा * आल्हा धीरज दई बँधाय ॥
खाँड़ाविजुलियालियोहाथ में * पहुँचे झारखण्ड में जाय ॥
विधि से होम कियो देवी को * औ निज शीश चढ़ावनलाग॥
पकरि हाथ देवी बोली तब * काहे शीश चढ़ावहु आज ॥
बोले आल्हा हाथ जोरि तब * माता बिपति कही ना जाय ॥
मह्यौ ब्याहन हम दिल्ली गे * बेला बेटी पिथौरा क्यार ॥

माँगत गहना द्वापर वालो * चुनरी चुरियाँ पठइ मँगाय ॥
बोली देवी तब आल्हा से * धीरज धरौ बनाफर राय ॥
काम तुम्हारो पूरन हुइ हैं * यह कहि चली अम्बिकामाय ॥
कछुक देर केरे अमला में * देवी प्रगट भई फिर आय ॥
आई देवी निज मन्दिर में * आल्है गहनो दौ पकराय ॥
चुनरी चुरियाँ द्वापर वालो * सो आल्हा को दई गहाय ॥
आल्हा आये तब बरात में * औ रुपना को लियो बुलाय ॥
चुरियाँ चुनरी गहनो लैके * सो रुपना को दियो गहाय ॥
चलिभो रुपना तब बरात में * औ मड़ये तर पहुँचो आय ॥
गहनो दीन्हों जब बेला को * बेला बहुत खुशी हुइ जाय ॥
गहनो पहिरो द्वापर वालो * चुनरी ओढ़ लई ततकाल ॥
चुरियाँ पहिरि कही बेला ने * पूरन हुइगो काम हमार ॥
चलिभो रुपना तब महलनते * औ बँगला में पहुँचो जाय ॥
हाल सुनाय दियो आल्हा ते * आल्हाबहुत खुशी हुइ जाय ॥
सुनीखबरि जब यह माहिलने * लिली घोड़ी भये सवार ॥
जायके पहुँचे पथीराज ते * समुहें नैके करी सलाम ॥
ऊँची चौकी डरवाई तब * माहिल बैठि कही शिरनाय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * उनसे कछू पेश ना जाय ॥
ताते मानो सीख हमारी * सबै घरौआ लेउ बुलाय ॥
चत्रिन बैठारो कुठरिन में * सबके शीश लेउ कटवाय ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब * यामें रहिहैं बात हमार ॥
कइ हजार चत्री बुलवायो * सो कुठरिनमें दिये छिपाय ॥
चन्दन बेटा को बुलवायो * तुम आल्हा ते कहो सुनाय ॥
चलो घरौआ सब मड़वे तर * भाँवरि अबहीं दिहैं डराय ॥

यह सुनि चन्दन गै बरात में * औ आल्हा को करी जुहार ॥
हमहिं पठायो है राजा ने * संगति चलो घरौआ ज्वान ॥
सुनतै ऊदन हुक्म दियो यह * लश्कर डङ्का देउ बजाय ॥
गंगा कसम खाय चन्दन ने * आधीनी से कही सुनाय ॥
हमरे कुल में यही रीति है * सो सुनिये जू उदयसिंहराय ॥
होयँ घरौआ जो बरात में * सो सब संग होयँ तैयार ॥
सुनी बात जब यह चन्दन की * आल्हा ब्रह्मै लियो बुलाय ॥
फिरि मँगवाईसाजि पालकी * ब्रह्मा तापर भये सवार ॥
सजे घरौआ महुबे वारे * आल्हा ऊदन भये तैयार ॥
दशौ घरउआ सजे तुरत तहँ * मन में सुमिरि राम रघुराय ॥
अपने अपने सब घोड़न पर * तुरतै फाँदि भये असवार ॥
उठी पालकी ब्रह्मानन्द की * चलिभै साथ घरौआ ज्वान ॥
फाटक भीतर जबहीं पहुँचे * चन्दन घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
बोले चन्दन पृथीराज ते * आये संग घरौआ ज्वान ॥
पलकी आय गई ब्रह्मा की * सुनतै खुशी भये महराज ॥
फाटक बन्दी तुरत कराई * पलकी भीतर पहुँची जाय ॥
जबहीं पहुँचे सो मड़ये तर * चावल अच्छत दिये छुड़ाय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं * अरु यश भाट बखाननलाग ॥
सबहि रीतिकरि तब मड़ये तर * पंडित बेलहि लियो बुलाय ॥
करि गठिबन्धन बरकन्याको * विधिवत हवन दीन्ह करवाय ॥

अथ मड़ये की लड़ाई ।

अलखनिरञ्जनकोसुमिरनकरि * लै परभात रामको नाम ॥
कहौं लड़ाई अब मड़ये की * करी सहाय कृष्ण घनश्याम ॥

ब्राह्मण बेद उचारन लागे * भौंरी परन लगी ततकाल ॥
पहली भाँवरि के परतै खन * चन्दन खैंचि लीन्ह तरवारि ॥
करो जड़ाका जब ब्रह्मा पर * देबा दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
चोट बचाय लई तुरतै तब * अब दुसरी को सुनो हवाल ॥
दूसर भाँवरि के परतै खन * सूरज खैंचि लीन्ह तरवार ॥
करो जड़ाका जब ब्रह्मा पर * जगनिक लीन्हीं चोट बचाय ॥
तीसरि भाँवरि के परतै खन * गोपी खैंचि लई तरवारि ॥
कियो जड़ाका जब ब्रह्मा पर * जागा लीन्हीं चोट बचाय ॥
चौथी भाँवरि के परतै खन * सरदनि खैंचि लीन्ह तरवारि ॥
चोट चलाई ब्रह्मानन्द पर * भोगा दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
पँचवी भाँवरि के परतै खन * मरदनि खैंचिलई तरवारि ॥
चोट करी जब ब्रह्मानन्द पर * मन्ना लैगो चोट बचाय ॥
छठवीं भाँवरि के परतै खन * पारथ खैंचि लीन्ह तरवारि ॥
करो जड़ाका जब ब्रह्मा पर * ऊदन दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
क्षत्री निकरि परे कुठरिन ते * सबके मारु मारु रट लाग ॥
सातौ बेटा पृथीराज के * तिनहुँ खैंचि लई तरवारि ॥
चली सिरोही तब मड़ये पर * औ बहि चली रक्त की धार ॥
जो जो क्षत्री समुहें आये * महुबे वारेन दिये गिराय ॥
बड़े लड़ाका महुबे वारे * सातौ बेटा लिये बँधाय ॥
बेला भीजि गई लोहूते * ब्रह्मा रक्त बरन हुइ जाय ॥
चली शिरोही तीनिघरीभरि * मड़वा टूकटूक हुइ जाय ॥
पाई खबरि जबहिं पिरथी ने * बहुतै मनमें गये सकाय ॥
बोले चौंड़ा तब पिरथी ते * जाको नाम उदैसिंह राय ॥

जौहर कीन्हें हैं वाही ने * मरिहौं ताहि जाय यहिकाल ॥
आओ चौंड़ा तहँ मड़ये तर * औ आल्हा से लगो बतान ॥
हौ सब लायक तुम महुबे के * सातौ भाँवरि लई डराय ॥
काम तुम्हारो पूरन हुइ गो * अब लड़िकन का देउ छुड़ाय ॥
करी अधीनी जब चौंड़ा यह * आल्हा दीन्हीं कैद छुड़ाय ॥
बोलो चौंड़ा नेग जोग जो * अबहीं सोऊ लेउ करवाय ॥
यह सुनि नेग रहे बाकी जो * सो आल्हा से लियो कराय ॥
आई नाउन जो भीतर से * तेहि आल्हा से कही सुनाय ॥
खान कलेवा ब्रह्मै भेजहु * अकिलो लड़िका देउ पठाय ॥
हुक्म यही है महराजा को * तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
जे हैं सहबोला दूलह संग * हमरे बंश माहिं यह रीति ॥
इतनी सुनिके नाउनि चलिभइ * औ दोनौं को साथ लिवाय ॥
दोनौं पहुँचे रंग महल में * औ आसन पर बैठे जाय ॥
सुनी खबरि जब यह चौंड़ाने * भेष जनानो लियो बनाय ॥
लँहगा लुगरी चुरियाँ बिछिया * गहनो पहिरि लियो तनकाल ॥
घूँघट काढ़ि लियो लंबो सो * औ सखियन में बैठो जाय ॥
ऊदन ब्रह्मा जहँ बैठे थे * तहँ पर पहुँचिगयो नियराय ॥
अगमा रानी थार परोसो * सो दोनौं के धरो अगार ॥
जबहीं ऊदन कौर उठायो * दहिने चौंड़ा हनी कटार ॥
घायल हुइके उदन बाँकुड़ा * तुरतै गिरे भूमि मुरझाय ॥
देखि दशा यह बघ ऊदन को * चौंड़ा तहँते गयो बराय ॥
रोवन लागी अगमा रानी * चौंड़ा तेरो बुरो हुइ जाय ॥
जो कछु बीतो रङ्गमहल में * अगमा बेलहिं दियो बताय ॥
अगमा रोवत तहँते चलिभइ * औ बेला ढिग पहुँची आय ॥

रोवत देखो जब माता को * बेला पूछन लगी हवाल ॥
यह सुनि बेला तुरतै चलिभइ * औ ऊदनि ढिग पहुँचो आय ॥
देखो हाल आय ऊदन को * तब यकु छुरिया लई मँगाय ॥
अँगुरी एक चीरि अपनी तब * तुरतै लोहू दियो चुवाय ॥
घाउ पूरिगो तब ऊदन को * मूर्छा जगी लहुरवा क्यार ॥
देखि सामुहैं रनि बेला को * ऊदन चरण गये लपिटाय ॥
ब्रह्मा ऊदनि दोनौं उठिके * रनि अगमाको कियो प्रणाम ॥
दोनौं चलिभे रंग महल ते * औ पलकी पर भये सवार ॥
आई पलको ब्रह्मानन्द की * तम्बू जहा रजा परिमाल ॥
दोनौं उतरि परे पलकी ते * औ राजा को करी सलाम ॥
हाल सुनायो तब ऊदन ने * अपनो घाव दियो दिखलाय ॥
सुनो हाल यह नर मलिखेने * बहुतै खुशी भये मलिखान ॥
बोले राजा परिमालै तब * हमको देवी भई सहाय ॥
तोड़ा लुटवायो मोहरन के * बहुतै खुशी करी परिमाल ॥
तुरत बुलाय लियो आल्हाको * औ यह कही रजा परिमाल ॥
अबहीं भेजि देउ रुपना को * जल्दी बिदा देयँ करवाय ॥
रुपनै बुलवावो आल्हा ने * औ सब बात दई समुझाय ॥
चलिभो रुपना तब बरात ते * पहुँचो जाय राज दरबार ॥
करा बन्दगी पृथीराज को * हाथ जोरिकै कही सुनाय ॥
भेजो हमको चन्देले ने * अबही बिदा देयँ करवाय ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब * हमरे बंश यही ब्योहार ॥
साल के भीतर गौना दीहैं * यह राजा से कहिहौ जाय ॥
इतना सुनिकै रुपना चलिभो * औ बरात में पहुँचो आय ॥
हाल सुनाय दियो आल्हा ते * आल्हा हुक्म दियो फरमाय ॥

कूँच कराय देउ लश्कर को * सिगरे तम्बू लेउ उखारि ॥
भई तयारी तब महुवे को * कूँचको डङ्का दियो बजाय ॥
राह पकरि लइ गढ़ महुबेकी * आगे रुपनै दियो पठाय ॥
पहुँचि अगारू रुपना बारी * मल्हनै खबरि सुनाई आय ॥
करी तयारी तब मल्हना ने * सिगरी सखियाँ लई बुलाय ॥
सखियाँ मङ्गल गावन लागीं * तौ लौं आई निकट बरात ॥
दगी सलामी गढ़ महुबे में * घरघर भयो मङ्गलाचार ॥
पलकी आई जब ब्रह्मा को * मल्हना आरति धरी उतारि ॥
नेगनिछावरिकरिसबहीविधि * दान दच्छिणा दीन्ह बँटाइ ॥
आये बराती जो राजा थे * सबको कियो बहुत सन्मान ॥
बिदा कीन्ह सबही राजनको * सब क्षत्रिनको दियो इनाम ॥
ब्रह्मा मलिखे आल्हा ऊदन * सबका मिले जोरि दोउ हाथ ॥
छुए चरण सब महतारी के * औ सब हालदियो बतलाय ॥
मल्हनै समुझायो ऊदनि को * जल्दी गौना लिहैं कराय ॥
इहिविधिब्याह भयो ब्रह्माको * हमने सबको दियो सुनाय ॥
आगे ब्याह लिखत ऊदनको * श्रीशिवचरणलाल समुझाय ॥

इति ब्रह्माका विवाह [दिल्ली को लड़ाई सम्पूर्ण]



* श्रीः *

२१

अथ

आल्ह खण्ड

* ऊदन का बिवाह *

* दोहा *

सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

* आल्हा *

कौने कारण को गणेश भये * काहे राम लीन्ह औतार ॥
काहे प्रगटे कृष्णचन्द्र जी * क्यों हनुमान प्रगट संसार ॥
विघ्न नशावनको गणेशजी * प्रगटे सकल जगत के काज ॥
रावणादि खल संहारन हित * प्रगटे रामचन्द्र रघुराज ॥
राजा कंस केर मारन हित * प्रगटे कृष्णचन्द्र भगवान ॥
रामकाज हित हनूमान भये * जिनको जानत सकलजहान ॥
छोड़ि सुमिरिनी अब आगेमें * वरणौं उदयसिंह को ब्याह ॥
भई लड़ाई ज्यों नरवर गढ़ * सो सब कहिहौं सहित उछाह ॥
नरवरगढ़ मौरंगगढ़ कहिये * याही गढ़के हैं दुइ नाम ॥

रहै राज जहँ श्री नरपतिको * जहँ मकरन्द रहा सरनाम ॥
सुन्दर बस्ती नगर महोबा * जहँ है धान पान अधिकार ॥
राज करत परिमाल भूप जहँ * हैं जो चन्द्र वंश सरदार ॥
पारस पूजा है जिनके घर * लोहा छुअत सोन हुइ जाय ॥
जहँ पर शूर वीर प्रगटे बहु * आल्हा आदि बली रणराय ॥
बड़े वीर राजा परिमालै * जीते बड़े बड़े भूपाल ॥
मित्र बनाय लिये राजा बहु * बहुतक जीति लिये नरपाल ॥
बावन गढ़के राजा जीते * देखा अपन दुसरिहा नाहिं ॥
आज्ञा दीन्हीं अमर गुरू ने * अब ना शस्त्र गहौ करमाहिं ॥
कसम खायतब अमरनाथकी * खाँड़ा सागर धरो पखार ॥
हाथ जोरि बोले राजा तब * अब नहिं गहौं हाथ हथियार ॥
आल्हा ऊदन मलिखे ढेबा * ब्रह्मा रंजित राजकुमार ॥
यह सब लायक महुवे प्रगटे * एकते एक शूर सरदार ॥
लगी कचहरी परिमालै की * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
बैठे माहिल उरई वाले * जो परिहार गुटैया टार ॥
बोले माहिल परिमालै ते * तुम्हरो नाम प्रगट संसार ॥
देश देश में यश छायो है * जानत चन्द्र वंश सरदार ॥
घोड़ा मँगाय लेउ काबुल ते * जो गाढ़े में ऐहैं काम ॥
कलश सोबरन को मँगवावो * सो बँगला में देउ धराय ॥
बीरा धराय देउ कलशा पर * जो लावै सो लेय चबाय ॥
यह सुनि राजा परिमालै ने * सुबरन कलशा लियो मँगवाय ॥
बीरा मँगाओ पाँच पान को * सो कलशापर दियो धराय ॥
घोड़ा लावै जो काबुल ते * सो यह बीरा लेय चबाय ॥
है कोइ क्षत्री यहि बँगला में * सो उठि बीरा लेय चबाय ॥

कोउ नहिं देखै वा बीरातन * तौलौं आये उदयसिंह राय ॥
पूछन लागे सो माहिल ते * बीरा काहे दियो धराय ॥
माहिल ज्वाब दियो ऊदनको * राजा बीरा दियो धराय ॥
घोड़ा मँगैहैं वह काबुल ते * जो गाढ़े में ऐहैं काम ॥
बीरा चाबो नहिं काहू ने * क्षत्री बहुतक गये बराय ॥
यह सुनि तड़पे ऊदन बाँकुड़ा * औ बीरा लै लियो चबाय ॥
लैहैं घोड़ा हम काबुल ते * खर्चा हमहिं देउ मँगवाय ॥
बोले राजा परिमालै तब * तुम ना जाउ उदैसिंह राय ॥
हमहिं चाह नाहीं घोड़न को * नाहीं अटको काम हमार ॥
चलत राह तुम रारि करत हौ * ताते मानो कही हमार ॥
बोले ऊदन तब राजा से * अब हम लीन्हों पान चबाय ॥
पाँव पिछारू हम ना धरिहैं * नहिं यह धर्म क्षत्रियन क्यार ॥
देउ मँगाय खर्च जल्दी अब * मनते भरम देउ बिसराय ॥
सुनतै बोले चन्देले तब * औ ढेबा से लगे बतान ॥
कही हमारो यह ना मनिहै * कलहा पूत दिवलदे क्यार ॥
संग जाउ तुमहूँ ऊदन के * बाहर बहुत रहेउ हुशियार ॥
होय बखेरा नहिं विदेश में * ना काहू से करियो रारि ॥
चौदह खच्चर मोहरैं लैके * सो ऊदन को दइ सौंपाय ॥
बोले राजा फिरि ऊदन ते * बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
सीधे जैओ तुम काबुल को * काहुसे होय बखेड़ा नाहिं ॥
ढेबा जानै होनहार सब * जोगिन गुदरी लई धराय ॥
चलिभे दोनों तब बंगला से * अपने लश्कर पहुँचे जाय ॥
तुरत नगाड़ा बजवावो तहँ * थोड़ी फौज लई सजवाय ॥
सुनो हाल सब जब मल्हना ने * तब ऊदन को लओ बलाय ॥

पूछन लागी मल्हना रानी * बेटा कहँ को भए तयार ॥
हाथ जोरि के ऊदन बोले * भेजो हमहिं चन्देले राय ॥
घोड़ा लेन जात काबुल ते * माता हुक्म देउ फरमाय ॥
देबा सथुनिया साथ हमारे * थोड़ी लश्कर संग हमार ॥
मनमें सोचिससुझि मल्हना ने * तुरतै हुक्म दियो फरमाय ॥
चरण लागिके तब मल्हना के * ऊदन घोड़ा लियो सजाय ॥
कूच करि दियो तब महुबे ते * दशपुरवा में पहुँचे आय ॥
सुनो हाल जब यह आल्हाने * तब ऊदन से कही सुनाय ॥
ऊदन मानों कही हमारी * भैया नहिं काबुल को जाव ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तब * दादा सुनौ हमारी बात ॥
बीरा चाबि चुके काबुल पर * भेजत हमहिं चन्देले राय ॥
ताते हटकौ ना दादा तुम * इतनी मानौ कही हमार ॥
सोचैं आल्हा तब अपने मन * नहिं यहु मनिहै बात हमार ॥
आज्ञा दै दइ तब आल्हा ने * ऊदन चलिभे शोश नवाय ॥
सुनमाँ देवै ने हटको तब * तिनकी एक न मानी बात ॥
सुनमाँ रानी तब समुझायो * देवर रहेउ बहुत हुशियार ॥
करि प्रणाम तब तिन दोनों को * ऊदन तहँते कियो पयान ॥
तुरतै संग लियो देबा को * अपनो कूच दियो करवाय ॥
मंजिल करिके आठ रोज की * नरवरगढ़ जब रहो दिखाय ॥
पूछन लागे ऊदन बाँकुड़ा * आगे कौन नगर दिखलात ॥
बोलो देवा तब ऊदन ते * नाहीं जानो नगर हमार ॥
सीधे चले चलो रस्ता पर * नहिं यहँ अटको काम तुम्हार ॥
ऊदन बढ़िगे तहँ आगे को * औ बागनमें पहुँचे आय ॥
रहे बरदिया गाय चरावत * ऊदन उनसे पूछन लाग ॥

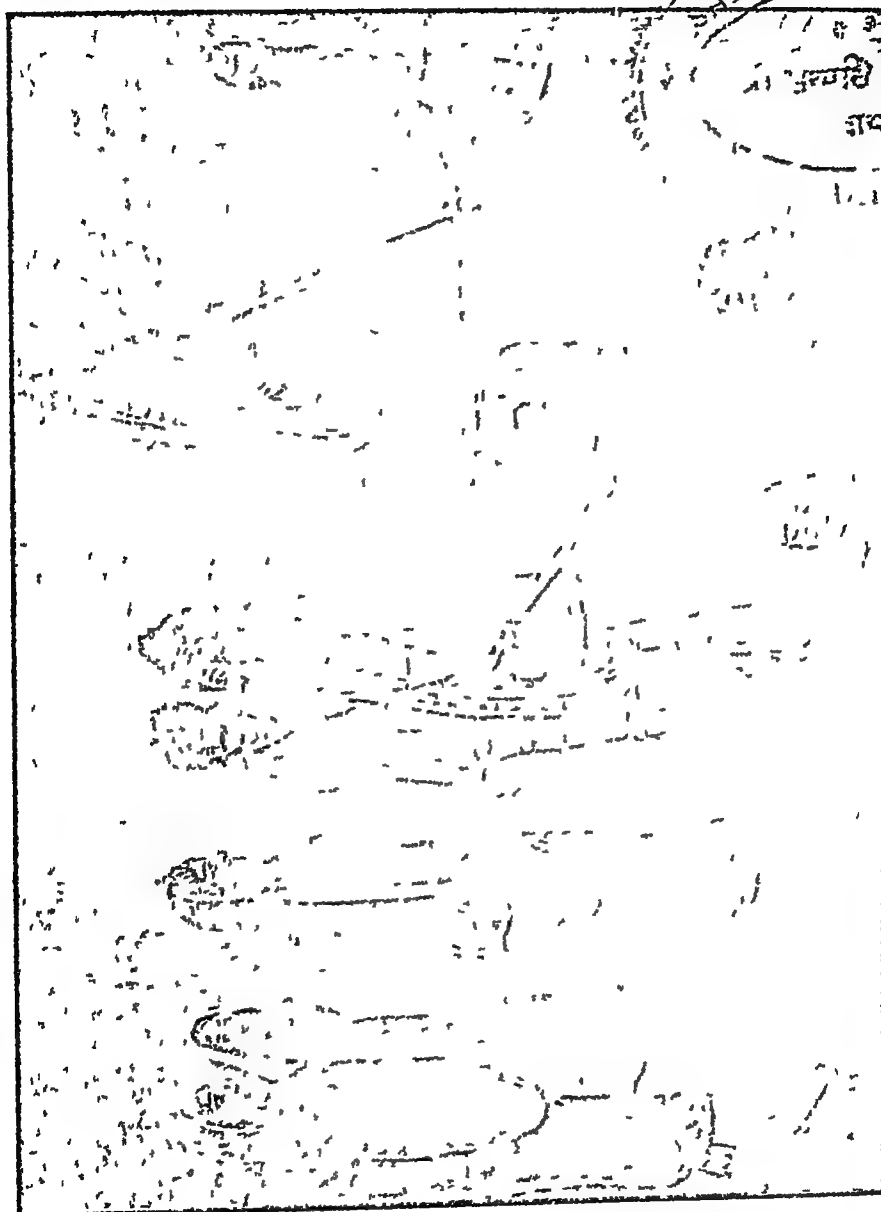
कौन नगर आगे दिखात यह * को यहँ राज करत गढ़माहिं ॥
एक बरदिया बोलन लागो * राजा नरपति को यहँ राज ॥
नरवर गढ़है नाम नगर को * अरु मौरंगगढ़ है दुइ नाम ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ऊदन ने * औ बागनमें कियो मुकाम ॥
ऊदन अकिले गे घोड़ा पर * औ पनिघट पर पहुँचे जाय ॥
पानी भरती जहँ पनिहारिन * तिनसे ऊदन कही सुनाय ॥
पानी प्याय देउ घोड़ा को * तब पनिहारिन कहो सुनाय ॥
हैं पनिहारिन हम फुलवाकी * काहे पानी देयँ पियाय ॥
कौन देश के तुम रहवैया * अपनो घोड़ा जाउ भगाय ॥
राजा नरपति जो सुनि पैहैं * घोड़ा तुम्हरो लिहैं छिनाय ॥
ऊदन बोले पनिहारिन ते * क्यों हम घोड़ा जायँ भगाय ॥
कौन बिगाड़ कियो राजाको * हमरो घोड़ा लिहैं छिनाय ॥
सुन्दर रूप देखि ऊदन को * सब आपस में लगीं बतान ॥
कैसे सुन्दर यह चत्री हैं * हैं कोउ राजकुँवर सरदार ॥
देखि लेइ फुलवा रानी जो * फुलबगिया में लेइ टिकाय ॥
सुनतै ऊदन पूछन लागे * औ पनिहारिन बात सुनाय ॥
फुलवा रानी कौन भूप की * सुनि पनिहारिन दियो जवाब ॥
फुलवा बेटी है राजा की * नित फूलन से तौलो जात ॥
रूप की अगरी वह बेटी है * जाको रूप न बरनो जाय ॥
लौटि के ऊदन देखन लागे * फुलबगिया पर परो निगाह ॥
यह फुलबगियाहै केहकी यहँ * तब पनिहारिन कही सुनाय ॥
है फुलबगिया यह फुलवाको * सुनतै ऊदन पहुँचे जाय ॥
मेख गड़ाय दई बगिया में * घोड़ा बेंदुला दियो बँधाय ॥
तौ लौं आओ ढेबा बहादुर * सो ऊदन से लगो बतान ॥

कही हमारी ऊदन मानौ * यहँ ते मेख देउ उखराय ॥
बहुतक समुझायो ढेबा ने * ऊदन बोले बात बनाय ॥
आजु मुकाम यहाँकरिके हम * भोरहिं कूच दिहैं करवाय ॥
दई मुहर एक बघऊदन ने * औ ढेबा से कही सुनाय ॥
लावो रातिब तुम घोड़नको * ढेबा तुरतै गयो बजार ॥
तौलौं माली फुलबगियाको * सो बगिया में पहुँचो आय ॥
गुस्सा हुइ के माली बोलो * औ ऊदन से कही सुनाय ॥
यह फुलबगिया है राजाकी * यहँ तुम काहे करो मुकाम ॥
जल्दी चले जाउ बगिया ते * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
लैके तोड़ा यक मुहरन को * ऊदन मालिहि दो पकराय ॥
मुहलति दै देउ राति भरेकी * भोरहिं दीहैं कूच कराय ॥
बोलो माली तब राजी हुइ * अब मन मानै करो मुकाम ॥
यहकहि माली घर पहुँचोतब * देखत मालिनि पूछन लागि ॥
आजुबहुत खुशहो मनमें तुम * क्या कछु भेंट दई महराज ॥
तोड़ा लैके तब मुहरन को * सो मालिनिको दौ पकराय ॥
उमिरि हमारीसबहि बीतिगइ * कबहूँ पायो नाहिं इनाम ॥
बगियाटिको आय क्षत्री यक * त्यहियहु तोड़ा दियो गहाय ॥
चली जाउ तुमहूँ बगिया में * कछु गुस्सा हुइ करियो बात ॥
तुमहूँ पैहो यक तोड़ा तहँ * सुनतै मालिनि पहुँची जाय ॥
सूरति देखी जब ऊदन की * मनमें बहुत खुशी हुइ जाय ॥
गुस्सा हुइकै मालिनि बोली * औ ऊदन से कही सुनाय ॥
दाख छुहारेन की बगिया यह * काहे गर्द दई करवाय ॥
भलो आपनो जो चाहत हौ * तौ तुम कूच जाउ करवाय ॥
यह सुनि ऊदन यक तोड़ाले * सो मालिनि को दौ पकराय ॥

पूछन लागी तब मालिनि तहँ * औ ऊदन से लगी बतान ॥
कहाँ से आये औ कहँ जैहौ * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
बोले ऊदन तब मालिन ते * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
नगर महोबा यक्क बस्ती है * जहँ पर राज रजा परिमाल॥
छोटे भैया हम आल्हा के * औ ऊदन है नाम हमार ॥
सुनतै मालिन ने पूछो तब * कहँ आल्हाको भयो बिवाह ॥
ब्याहे आल्हा नैनागढ़ में * सुनमाँ भौजी लगै हमार ॥
सुनतै मालिन बोलन लागी * ऊदन सुनौ हमारी बात ॥
हमहूँ पैदा भइँ नैनागढ़ * हिरिया मालिन नाम हमार ॥
गाँवके नाते से नीकी विधि * सुनमा बहिनी लगत हमार ॥
हमरो ब्याह भयो नैनागढ़ * सुनमा महुबे गई बिआहि ॥
जैसेइ सुनमा के देवर हौ * तैसेइ देवर लगो हमार ॥
कूच कराओ अब बगिया ते * हमरे घर चलि करौ मुकाम ॥
मन में भावै जो जोगी के * सोई दीन्हों बैंद बताय ॥
तौ लौं ढेबा आय गयो तहँ * ऊदन हाल दियो बतलाय ॥
ढेबा बोलो बघऊदन ते * नाहीं यहाँ टिकन को काम ॥
जौन कामको तुम आये हौ * जल्दी कूच देउ करवाय ॥
घोड़ा लेन चलौ काबुल को * तब ऊदन ने कहो सुनाय ॥
जबहीं देखि लिहैं फुलवाको * तबहीं चलिहैं सङ्ग तुम्हार ॥
असकहि ऊदनमालिन के घर * अपने डेरा दिये डराय ॥
कई महीना के बीते पर * सोचन लगे उदैसिंह राय ॥
सङ्गमें माया जो लाये थे * सो हम सब यहँ दई गँवाय ॥
तौहूँ फुलवा देखि मिली नहिं * यह मन सोचि उदयसिंहराय ॥
पूछन लागे नर ढेबा ते * दादा जतन देहु बतलाय ॥

फुलवा देखि मिलै कैसे यहँ * तब ढेवा ने कही सुनाय ॥
हिरिया गूँथत हार दुलरिया * तुम तहँ गुँथौ चौलराहार ॥
यह सुनि ऊदन गे हिरिया पै * औ हिरिया से कही सुनाय ॥
अबहीं जावौ तुम बजारको * थोड़न रातिब लावो जाय ॥
हिरिया चलि भइ जब बजारको * तब ऊदन लौ हार उठाय ॥
हार चौलरा ऊदन गूँथो * बिचबिच मोती दिये लगाय ॥
हिरिया लौटी जब बजार ते * देखत हार कही सकुचाय ॥
हार दुलरिया हम नित गूँथौं * है यह गुँथो चौलरा हार ॥
हम अब गूँथैं हार दुलरिया * तो मोहिं लागै बहुत अबार ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * यह फुलवा को देउ बताय ॥
आई बहनौतिनिथी हमरीयक * तेहि यह गूँथो हार बनाय ॥
सुनतै चलिभइहिरिया मालिन * औ फुलवा ते पहुँची जाय ॥
तौलि कै फूलन से फुलवाको * हार चौलरा दियो गहाय ॥
देखि हार फुलवा गुस्सा हुइ * तेहि मालिनिसे पूछनलागि ॥
किनने गूँथो यह हरवा है * साँची हमहिं देउ बतलाय ॥
करीं गाँठैं यामें लागीं * है यह काहु मर्द को काम ॥
बोली हिरिया आधोनी से * यक बहनौतिन आइ हमार ॥
ताने गूँथो यह हरवा है * तब फुलवा ने कही सुनाय ॥
जैसी तुम्हरी बहनौतिन है * तैसेइ वह तो भई हमार ॥
हमहिं दिखावो बहनौतिनको * आजुइ लाय दिखावो जाय ॥
सुनतैडरगइ हिरिया मालिनि * तुरतै तहँ से कियो पयान ॥
आय पहूँची जब अपने घर * तब ऊदन ने कही हवाल ॥
सुनतै ऊदन सोचन लागे * तब ढेवा ने कही सुनाय ॥
भेष जनानो अब धारण करि * देखहु जाय फुलामति रानि ॥

असली बड़ा आल्हखण्ड



भार्गव भूषण प्रेस, काशी।

यह सुनि ऊदनने हिरिया को * मुहरैं पाँच दईं पकराय ॥
त्यार कराय लेउ नथुनी तुम * चुरियाँ बिछिया लेउ खरीद ॥
चलिभइ हिरिया तब बजारको * नथुनी तुरत लई बनवाय ॥
चुरियाँ बिछिया लै अपने सङ्ग * लहँगा लुगरी लियो मँगाय ॥
लै समान सबै हिरिया ने * सो ऊदन के धरो अगार ॥
रानी फुलवा के देखन हित * ऊदन डारो नाक छिदाय ॥
भेष जनानो धरि ऊदनि ने * तुरत पालकी लई मँगाय ॥
चढ़े पालकी पर ऊदन तब * हिरिया चलिभइ संगलिवाय॥
पहुँची मालिन जब खिरकी ते * तुरत पालकी दई धराय ॥
ऊदन उतरि परे पलकी ते * हिरिया चली अगारू जाय ॥
ताके पाछे ऊदन चलिभै * सतखंडा पर गई लिवाय ॥
पूछै फुलवा तब हिरिया ने * कहँ बहनोतिनि देउ बताय ॥
बोली हिरिया तब फुलवा ते * घूँघट काढ़े खड़ो अगार ॥
घूमि के फुलवा देखन लागी * औ हिरियासे लगी बतान ॥
कौन काम है यहँ घूँघट को * तब हिरिया ने कहो सुनाय ॥
रूप शील में यह गरुई है * ताते घूँघट लियो निकारि ॥
फुलवा डारि दई चौकी तब * बहनौतिनिसे कही सुनाय ॥
हाल बताय देउ अपनो तुम * सोचन लाग उदैसिंह राय ॥
बैठी फुलवा है पलँगा पर * हम चौकी पर बैठें जाय ॥
नाहि मुनासिब यह काहू बिधि * हिरियासमुझि गईमनमाहिं ॥
हाथ जोरि बोली फुलवा ते * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
नगर महोबा यक बस्तो है * जहँ पर बसत रजापरिमाल॥
पारस पूजा है जिनके घर * लोहा छुवत सोन हुइजाय ॥
राज कुँवरि तहँ चन्द्रावलि है * ताको मालिनि बहिनिहमार ॥

संग रहति यह चन्द्रावलि के * बैठति एक पलँग पर जाय ॥
पंसा सारी सँग खेलत है * ताते पासहि लेउ बिठाय ॥
यह सुनि फुलवा उठि सिरहाने * बैठी जाय हर्ष उरलाय ॥
सोचत ठाढ़े उदयसिंह तब * बैठे यहाँ पायँ ते जाय ॥
दाग लागि हैं रजपूती में * रण में झूठ होय हथियार ॥
जायके बैठे सिरहाने तब * फुलवा मनमें कियो बिचार ॥
है कछु कारण बहनौतिन में * पूछन लागि फुलामतिरानि॥
हाल बतावो तुम महुबे को * कैसे बसत रजा परिमाल ॥
बोले ऊदन तब फुलवा से * महुबे बसत रजा परिमाल ॥
पारस पूजा है जिनके घर * रैयति सुखी रहत सब काल ॥
आल्हा ऊदन दुइ भैया हैं * दोनौं बड़े वीर बलवान ॥
पूछन लागी फुलवा रानी * कहँ दोनौं को भयो बिवाह ॥
मन मुसकाने ऊदन ठाकुर * औ फुलवाको दियो जवाब ॥
आल्हा ब्याहे नैनागढ़ में * नहिं ऊदनको भयो विवाह ॥
फिरि के फुलवा पूछन लागी * साँची हमहिं देउ बतलाय ॥
करी करी पिंडुरी तुम्हरी * मर्द के ऐसे चरण तुम्हार ॥
बोले ऊदन मीठे स्वर से * जंगल गाय चराई जाय ॥
बहुतक गौएँ हैं हमरे घर * ताते चरण गये करीय ॥
देह टटोली सब फुलवा ने * औ हिरियासे कही सुनाय ॥
आजुछोड़िजाउ बहनौतिनको * भोरहि दीहैं तुरत पठाय ॥
सुनतैहिरियामालिनिचलिभइ * अपने घरमें पहुँची आय ॥
रतन जड़ाऊ यक पलंग तब * फुलवा रानी लियो मँगाय ॥
सो बिछवाओ शतखंडा पर * फूल विजनियाँ लई मँगाय ॥
सो धरवाय दई पलँगा पर * पंसा सारी खेलन लागि ॥

आधि राति केरे अमला में * फूल बिजनियाँ लई उठाय ॥
हाँकन लागी फुलवा रानी * अँचरा उड़ो लहुरवा भाय ॥
फुलवा देखि लई तुरतै तब * कम्मर घुरसि रही तरवारि ॥
बोली फुलवा तब ऊदन ते * हौ तुम छली महोबे क्यार ॥
नाम तुम्हारो बघऊदन है * तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
देखो कहाँ हमहि तुमने तहँ * हमरो पतो देहु बतलाय ॥
फुलवा ज्वाब दियो ऊदन को * माँची सुनहु उदैसिंह राय ॥
माड़ौ गये रहो जबहीं तुम * जोगी रूप बनायो जाय ॥
भेद लियो हमसे तुमने सब * औ लै लियो बापको दाँव ॥
सिगरी बातैं याद करो तुम * हमरोइ नाम बिजैसिनिरानि ॥
करौ ब्याह अब सतखंडा पर * यह सुनि कही उदयसिंहराय ॥
ब्याह न करिहैं हम चोरी से * धीरज धरे रहो मनमाहिं ॥
अबहीं बरायत हम लैहैं यहँ * सातौ भाँवरि लिहैं फिराय ॥
फुलवा बोली बघऊदन ते * सहजै ब्याह होयगो नाहिं ॥
कठिन मवासी नरवर गढ़ है * यहँ पर नरपति को है राज ॥
शेल सनीचर बाग़ा अजीता * काठको घोड़ा है सरनाम ॥
कठिन लड़ाई है बीरन को * जिनको मकरन्दी है नाम ॥
रहियो धोखे ना माड़ौ के * जहँ लै आये बाप को दाँव ॥
बोले ऊदन तब फुलवा ते * हमरे बचन करौ परमान ॥
जीति लड़ाई मकरन्दो से * सातौ भाँवरि लिहैं डराय ॥
तुमहिं बियाहे बिन छाँड़ौंजो * तौ म्वहिं लौटि भगौतीखायँ ॥
तीनि पहर बीतै अंटा पर * फुलवा रानी कही सुनाय ॥
करैं रसोई हम अबहीं यहँ * सो तुम जेइँ लेउ ज्योनार ॥
बोले ऊदन रनि फुलवा ते * क्वाँरी उचित नाहिंज्यौनार ॥

भोर होतही मालिन आई * औ फुलवा तै पहुँची आय ॥
सूरत देखी जब हिरिया की * तब फुलवाने कहो सुनाय ॥
भली मिलाई बहनौतिनि तुम * अब बहनौतिन जाउ लिवाय ॥
चलिभइ हिरिया बहनौतिन लै * दरवाजे पर पहुँची आय ॥
चढ़े पालकी पर ऊदन तब * पलकीचली लहुरवा क्यार ॥
पूछो मकरँद तब हिरिया ते * केहिकी बेटी लई लिवाय ॥
भेजो पलकी तुम हमरे सँग * भोरहि होत दिहैं पहुँचाय ॥
बोली मालिन मकरन्दी ते * हम बहनौतिन लई लिवाय ॥
देखन हेतु कहा फुलवा ने * सो हम लाई तिनहिं दिखाय ॥
इतनीसुनतै मकरन्द चलिभये * बोले तबहिं उदयसिंह राय ॥
तुमने भूलकरी मालिनि यहँ * सब बनि जातो काम हमार ॥
मुश्क बाँधिके हम मकरन्द की * आजुइ लेते ब्याह कराय ॥
ऊदन पहुँचे जब डेरा पर * ढेबा आय मिले ततकाल ॥
बोलो ढेबा तब ऊदन ते * अब ना करिहैं सङ्ग तुम्हार ॥
कहिहैं जाय नगर महुबे में * देखन हेतु फुलामति रानि ॥
चुरियां बिछिया ऊदन पहिरे * धरिके गये जनाने भेष ॥
काढ़ि कटारी लइ ऊदन ने * अबहीं दीहौं प्राण गँवाय ॥
तुरतै ढेबा हँसि बोले तब * हम अजमूदा लियो तुम्हार ॥
हम ना कहिहैं कछु महुबे में * अपनो हाल कहौ समुझाय ॥
कौन बात भइ रानि फुलवा ते * सो तुम हमहिं देहु बतलाय ॥
देखन चहत हमहुँ फुलवाको * सो तुम जतन देहु बतलाय ॥
बोले ऊदन नर ढेबा ते * जोगिन गुदरी लेउ निकारि ॥
हम तुम दोनों जोगी बनिके * देखन चलौं फुलामति रानि ॥
यह सुनि ढेबा उठि ठाढो भौ * जोगिन गुदरी दई निकारि ॥

भस्म रमाय लई दोनौं ने * रामानन्दी तिलक लगाय ॥
कानन पहिरि लई मुद्रातिन * गुदरी पहिरि लई ततकाल ॥
माला लटकाई तुलसी की * गुदरिन छिपी ढाल तरवारि ॥
लई खञ्जरी नर ढेबा ने * ऊदन लई बाँसुरी हाथ ॥
जोगी बनिके दोनौं चलिभै * फाटक निकरिगये वा पार ॥
बीच बजार पहुँचि दोनौं ने * अपने बाजा दिये बजाय ॥
रूप के अगरे दोनौं जोगी * जो देखैं सो जायँ लुभाय ॥
राग रागिनी गावन लागे * मोहित भये सकल नरनारि ॥
गावत गावत जोगी आये * औ पनिघट पर पहुँचे आय ॥
पनिहारिनथीं जो राजा की * * देखोरूप जोगियन क्यार ॥
मोहित हुइके ठाढ़ी रहि गईं * बीतो एक पहर तेहि काल ॥
सोचन लागी चम्पा बाँदी * रानिहिं दीहों कौन जबाब ॥
चलिभइ बाँदी तब गागरिलै * औ रानी ढिग पहुँची आय ॥
रानी देखी जब बाँदी को * तब गुस्सा हुइ कही सुनाय ॥
पेट फरैहों मैं तेरो अब * क्यों पनिघट पर करी अबार ॥
बोली बाँदी आधीनी करि * मेरी खता नाहिं महरानि ॥
आये जोगी दुइ पनिघट पर * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
सुन्दर बालक वह जोगी हैं * देखत जिनहिं काम बिसरात ॥
हुक्म तुम्हारो जो पाऊँ मैं * महलन अबहीं आउँ लिवाय ॥
आज्ञा दै दइ तब रानी ने * बाँदी जोगिन लाइ लिवाय ॥
गावत आये दोनौं जोगी * जब ड्योढीमें पहुँचे आय ॥
सुन्दर गाना सुनि राजा ने * दोउ जोगिनको लिये बुलाय ॥
समुहें पहुँचे जब राजा के * तब बायें कर करी सलाम ॥
देखत गुस्सा भै राजा तब * जोगिन उलटी करी सलाम ॥

अबहिंनिकारिदेउ जोगिनको * तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
जपैं सुमिरिनीज्यहि करतेहम * त्यहि कर करैं वन्दगी नायँ ॥
जोग भङ्ग होवै हमरो सब * सो तुम समुझि लेउ नर राय ॥
सुनतै खुशी भये राजा तब * औ जोगिन से लगे बतान ॥
ज्ञान तुम्हारो सब साँचो है * अबतुम नाच देउ दिखलाय ॥
बजी बाँसुरी तब ऊदन की * ढेवा खँजरी दई बजाय ॥
नाचन लागे ऊदन बाँकुड़ा * गावन लागे राग मलार ॥
बङ्गला बैठे थे क्षत्री जो * सो सब मोहि गये ततकाल ॥
नचत कंचनी थी बंगला में * उनको नाच बन्द हुइजाय ॥
नाहीं मसा तलक मनकै तहँ * ऊदन दई मोहनी डारि ॥
राजा बोले बहु प्रसन्न हुइ * जोगिउ कछु दिन करो मुकाम ॥
नित नित ब्राह्मण करै रसोई * भोजन करो सुमिरि भगवान ॥
यहसुनि ज्वाब दियो ऊदनने * तुम सुनिलेउ बात महराज ॥
ब्राह्मण हमरी करैं रसोई * जो कहुँ लगै हाथ में ताप ॥
ब्रह्मदोष लागै हमको तब * होवै जोग भंग महराज ॥
क्वाँरी कन्या करै रसोई * तौ हम जेयँ लेइँ ज्योनार ॥
इतनी सुनतै राजा बोले * औ मकरन्दते कही सुनाय ॥
करै रसोई फुलवा बेटी * जोगी जेयँ लेइँ ज्योनार ॥
मकरन्द पहुँचे तब महलनमें * तुरतै दीन्हों हुकुम सुनाय ॥
बेटी फुलवा करो रसोई * औ योगिनको लियोबुलाय ॥
दोनौं जोगी महलन पहुँचे * औ चौका में बैठे जाय ॥
थार परोसे दुइ फुलवा ने * सो जोगिन के धरे अगार ॥
ढेवा देखो जब फुलवा को * तब ऊदन से लगो बतान ॥
इनके कारण नाक छिदाई * तुम यह कीन्हे बहुत कुकाम ॥

मनहुँ अप्सरा है इन्दर की * है यह महा सुन्दरी बाम ॥
गडुआ भरिके गंगाजल से * दोउ जोगिन के धरे अगार ॥
हाथ जोरि बोली रानी तब * जोगिन जेइँ लेउ ज्यौनार ॥
मनमें सोचे बघऊदन तब * क्वाँरे उचित नाहिं ज्यौनार ॥
करिहैं भोजन जो क्वाँरी के * तौ क्षत्री पन जाय नशाय ॥
श्वाँस साधिके बघऊदन तब * चौका गिरे भरहरा खाय ॥
दुसरी आँखिनको ऊपर करि * लोटन लाग उदैसिंह राय ॥
रानी चम्पा तब गुस्सा हुइ * नर ढेबा से कही सुनाय ॥
मोहित हुइके यह बेटी को * जोगी गिरो धरनि मुरझाय ॥
जोगी नाहीं यहु भोगी हैं * अबहीं देहौं पेट फराय ॥
सुनतै ढेबा ज्वाब दियो तब * औ रानी से कही सुनाय ॥
भरी चुरैलैं यहाँ महल में * सो जोगी को गईं लिवाय ॥
जोगी छोटो मरि जैहैं जो * तौ मैं देहौं तुमहिं सराप ॥
ओछे जोगी हम नाहीं हैं * देवैं शाप भस्म हुइ जाउ ॥
सुनतै डरि गइ चम्पा रानी * नाउत बैद लिये बुलवाय ॥
बहुत उपाय किये सबने मिलि * पै कोउ नाहीं चलो उपाय ॥
रोवन लागो तब रानी तहँ * पूछन लगी फुलामति रानि ॥
काहे माता तुम रोवति हौ * तब रानी ने कही सुनाय ॥
जैसेइ कौर लियो जोगी ने * तैसेइ गिरो धरनि मुरझाय ॥
जो मरि जैहै यहु जोगी यहँ * तौ बदनामी होय हमार ॥
यहसुनि फुलवा बोलन लागी * माता धीर धरो मन माहिं ॥
हम जगाय दिहैं जोगी को * यह कहि गई उदैसिंह पास ॥
पास कान के फुलवा बोली * काहे मक्कर किये बनाय ॥
जो सुनि पैहैं मकरन्दी यह * चुंगल दहक दिहैं डरवाय ॥

कही हमारी यह मानो तुम * अबहीं लौटि महोबे जाउ ॥
लाय बरायत सजि महुबे ते * अपनो कारज लेउ बनाय ॥
इतनी बात सुनी फुलवा की * तुरतै उठे उदयसिंह राय ॥
चलिभये जोगी तब महलन ते * औ मालिनि घर पहुँचे आय ॥
चम्पा रानी पूछन लागी * बेटी सुनौ हमारी बात ॥
कौने कारण जोगी गिरिगौ * तब फुलवा ने दियो जवाब ॥
कोइ सुहागिन झाँकन लागी * औ ऊपर से करी निगाह ॥
त्यहि परिछाहीं परी थार पर * जोगो गिरो भूमि मुरझाय ॥
लाज राखि लइ नारायण ने * नहि सब जातो काम नशाय ॥
राम बनावे सो बनि जावे * बिगड़ीबनत बनत बनि जाय ॥
यहाँ कि बातैं तौ यहँ छाड़ो * अब ऊदन को सुनौ हवाल ॥
ऊदन पूँछेउ नर ढेबा ते * दादा जतन देउ बतलाय ॥
चौदह खच्चर माया लाये * सो नरवर में गई बिलाय ॥
यह सुनि ढेबा बोलन लागे * पागल बनौ लहुरवा भाय ॥
बात बनाय लिहैं सबही हम * महुबे सबहिं दिहैं समुझाय ॥
लगी चुड़ैलैं नरवर गढ की * सो ऊदन के गईं समाय ॥
बहुत उपाय कियो हमने तहँ * सिगरी माया दई गँवाय ॥
बोले ऊदन तब ढेबा ते * दादा धन्य तुम्हारो ज्ञान ॥
जतन बताई तुम नीकी यह * हमरे मनमें गई समाय ॥
हरदी बटवाई ऊदन तब * सो देही में लई लगाय ॥
कूच कराय दियो नरवर ते * औ महुबे में पहुँचे जाय ॥
तम्बू तानि दियो बागन में * कीरति सागर के मैदान ॥
पलका बिछगो तहँ ऊदन को * तापर परे लहुरवा भाय ॥
ढेबा पहुँचो गढ महुबे में * औ राजा को करी सलाम ॥

पूछन लागे परिमालै तब * कैसे घोड़ा लाये लिवाय ॥
बोलो ढेबा तब धीरे से * तुम सुनि लेउ चन्देले राय ॥
अच्छे घोड़ा हम लाये हैं * सो सागर पर दिये बँधाय ॥
चलिके देखि लेउ राजा तुम * यह सुनि उठे रजा परिमाल ॥
तुरत पालकी तब मँगवाई * तापर बैठि चन्देले राय ॥
ऊदन रहे जहाँ तम्बू में * तहँ पर ढेबा गयो लिवाय ॥
पहुँचो राजा जब तम्बू में * तब ऊदन पर परी निगाह ॥
पूछन लागे तब ढेबा से * ढेबा हाल देउ बतलाय ॥
कैसे देह भई पीली यह * तब ढेबा ने कही सुनाय ॥
कठिन चुरैलैं नरवर गढ़ की * ऊदन देह गई समियाय ॥
बहुत उपाय कियो हमने तहँ * औ सब माया दई गँवाय ॥
नहिं आराम भई काहू विधि * तब हम घरपर लाय लिवाय ॥
सुनि घबरायगये राजा तब * सुनतै आल्हा पहुँचे आय ॥
आल्हा कहन लगे राजा ते * पठओ तुमहिं लहुरवा भाय ॥
नहिं आराम हुइहैं भैया को * तौ मैं आगी दिहौं लगाय ॥
सुनी खबरि जब रनि देवैने * माता रोय उठी ततकाल ॥
पूछन लागी रनि सुनमा तब * क्यों तुम रोवौ साथ हमार ॥
कह्यो हाल तब रनि देवै ने * सुनतै सुनमाँ दियो जवाब ॥
यहाँ बुलावो तुम ऊदन को * अबहिं चुरैलैं दिहौं उतारि ॥
इतनी सुनतै रनि देवै ने * रूपन बारी लियो बुलाय ॥
हाल सुनाओ बघऊदन को * औ सागर पर दियो पठाय ॥
रूपना पहुँचो तब सागर पर * औ राजा से कही सुनाय ॥
अबहिं बुलायो है देवै ने * ऊदन पठवौ साथ हमार ॥
धरी पालकी थी तम्बू ढिग * तामें ऊदन दै पौढ़ारि ॥

तुरत पालकी तहँसे चलिभइ * औ दशपुरवा पहुँची आय ॥
सुनमाँ रानी के द्वारे पर * जाय पालकी धरी उतारि ॥
आई सुनमाँ बघऊदन ते * कर गहि ऊपर गई लिवाय ॥
हाथ बिजनिया लै फूलनकी * मुख पर लागी करन बयारि ॥
पूछन लगी हँसि सुनमाँ तब * काहे मक्कर किये बनाय ॥
कैसे देखो तुम फुलवा को * देवर हमहिं देउ बतलाय ॥
हँसि के ऊदन बोलन लागे * हमको मिली फुलामति रानि ॥
हसते गंगा त्यहि उठवाई * सातो भाँवरि लेउ डराय ॥
इतनो सुनतै सुनमाँ बोली * को फुलवा सँग करै बिवाह ॥
कठिन मवासी नरवर गढ़ है * राजा नरपतिको जहँ राज ॥
बड़ो लड़ैया मकरन्दी है * को तहँ प्राण गँवावै जाय ॥
काठ को घोड़ा बान अजीता * शेल शनीचर है गढ़ माहिं ॥
जिनके मारे दल बिचलत हैं * कोई शूर न आड़त पावँ ॥
धोखे रहियो ना माड़ो के * जहँ लै लियो बापको दावँ ॥
कठिन मारु है मकरन्दी की * हिरिया जादू देत चलाय ॥
सुनि उदास हुइ ऊदन बोले * हमरे मनमें नाहिं समाय ॥
ब्याहु न हुइहैजो फुलवासँग * तौ हम दैहैं प्राण गँवाय ॥
इतनी सुनतै सुनमाँ बोली * देवर धीर धरो मन माहि ॥
यहकहिसुनमाँ उठि ठाढ़ी भइ * औ आल्हा ते पहुँची जाय ॥
सोवत आल्हा जहँ अंटा पर * मस्तक चन्दन दियो लगाय ॥
लिये बिजनियाँकर फूलनकी * सुनमाँ मुखपर करै बयारि ॥
नैन उघारि दियो आल्हा ने * औ सुनमाँ से कही सुनाय ॥
हमहिंजगायो केहिकारणतुम * अटको कौन तुम्हारो काम ॥
बोली सुनमाँ तब आल्हा ते * स्वामी सुनो बात धरि ध्यान ॥

नरवर गढ़ में जो नरपति हैं * फुलवा ताको राजकुमारि ॥
रूपकी अगरी वह बेटी है * तहँ ऊदन के परो निगाह ॥
ब्याह करन हित गंगा कीन्ही * यहँ पर करो बहाना आय ॥
करौ ब्याह अब तुम ऊदनको * नहिं सब जै हैं काम नशाय ॥
बोले आल्हा तब सुनमा ते * को नरवर गढ़ रचै बिवाह ॥
फौज कटावन को जावें तहँ * अपने शीश कटावैं जाय ॥
काठ को घोड़ा बान अजीता * जिन घर शेल शनीचर आय ॥
जिनके मारे लश्कर भागत * कोई शूर न आड़त पावँ ॥
कठिन मारु है मकरन्दी को * हिरिया जादू करत बनाय ॥
इतनी बात सुनी आल्हा को * तब सुनमाँ ने कही सुनाय ॥
हिम्मत बाँधौ अब स्वामी तुम * औ ऊदन को करौ बिवाह ॥
भेजहु न्यौता नैनागढ़ में * ऐहैं दोनौं भाइ हमार ॥
न्यौतो पठवो गढ़ दिल्ली को * औ झुन्नागढ़ देहु पठाय ॥
बौरीगढ़ महँ न्यौतो भेजो * सिरसा खबरि देहु करवाय ॥
जोगा भोगा भाई ऐहैं * ऐहैं तुरत बीर मलिखान ॥
कुम्मक ऐहैं सब राजन की * नरवर गर्द दिऔ करवाय ॥
डंड बाँधिके मकरन्दी को * सातौ भाँवरि लिऔ डराय ॥
बे मन हुइके आल्हा बोले * हम से यह हुइबे को नाहिं ॥
मनहिं हमारे नहिं आवत यह * बेढब जान परत यह काम ॥
गुस्सा हुइके सुनमाँ बोली * स्वामी छोरि धरो हथियार ॥
चुरियाँ बिछिया अबतुमपहिरो * औ धरि लेउ जनाना भेष ॥
जायके बैठो तुम पलँगा पर * हम देवर को लैहैं ब्याहि ॥
पान में चूना जैसे लागै * डारत खैर दाँत रचि जाय ॥
बात लागि गइ तस आल्हा के * औ सुनमाँ से लगे बतान ॥

जोई कहिहौ सोइ करिहैं हम * तब सुनमाँ ने कहो सुनाय ॥
भेजहु न्यौते सब राजन के * औ ऊदन को करौ बिआहु ॥
अबहिं बुलावो नर मलिखे को * आल्हा रूपनै लियो बुलाय ॥
कहि सँदेश भेजो सिरसाको * लावहु संग बीर मलिखान ॥
रूपना चलिभौ गढ़ महुबे ते * औ सिरसा में पहुँचो जाय ॥
करि सलाम सब कहो सँदेशा * सुनतै मलिखे भये तयार ॥
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठे * औ महुबे की पकरी राह ॥
पहुँचे मलिखे दश पुरवा में * औ आल्हा को करी सलाम ॥
काहे बुलायो है दादा तुम * हमका हाल देउ बतलाय ॥
कहा बतावैं भैया मलिखे * हमसे कछु कही ना जाय ॥
राजा भेजो थो ऊदन को * काबुल घोड़ा खरीदन हेतु ॥
ऊदन पहुँचे जब नरवर गढ़ * जहँ नरपति का राजसमाज ॥
राजकुमारी तहँ फुलवा है * ताको मिले उदयसिंह राय ॥
सो कहि आयेव्याहकरनहित * कैसे तहँ पर होय बिआहु ॥
यह सुनि मलिखेबोलन लागे * दादा धीर धरौ मन माहिं ॥
हुइहै ब्याह अवशि ऊदन को * यहु दिन कहब हेत रहिजाय ॥
ब्याहु रचैहैं हम ऊदन को * नरवर गर्द दिहैं करवाय ॥
पठवहु न्योतो सब राजन को * औ सामान करौ तैयार ॥
इतनो बात सुनत आल्हा ने * सब हरकारा लियो बुलाय ॥
यक हरकार दिल्ली गढ़ को * यक भुन्नागढ़ दियो पठाय ॥
यक हरकार बौरीगढ़ को * यक नैनागढ़ दियो पठाय ॥
जो ब्योहारी थे आल्हा के * सबको न्यौतो दियो पठाय ॥
बाम्हन एक गयो सिरसागढ़ * औ सुलिखे से कहो हवाल ॥
त्यार होन लागे सुलिखे तब * मन्ना गूजर लियो बुलाय ॥

हुक्म सुनाय दियो लश्कर में * जल्दी फौज होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा गढ़ सिरसा में * सिगरी फौज भई तैयार ॥
सबजा घोड़ा त्यार करायो * तापर मन्ना भयो सवार ॥
घोड़ी हिरौंजिन सजवाई तहँ * तापर सुलिखे भये सवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर तब * सो महुबे में पहुँचे आय ॥
तम्बू तान दिये सागर पर * जहँ तहँ डेरा दये लगाय ॥
लश्कर आयो गढ़ दिल्ली से * मदन ताल पर करो मुकाम ॥
फौज जु आई नैनागढ़ से * परि बैरागी ताल पर जाय ॥
आये सूरज भुन्नागढ से * बागन डेरा दये लगाय ॥
जितने आये व्यौहारी तहँ * सबने जहँ तहँ करो मुकाम ॥
मलिखे कहन लगे आल्हा से * दादा जल्दी करो समान ॥
भय्यो बुलाओ तब पंडित को * पंडित आय गये ततकाल ॥
खोलि पत्तरा पंडित बाले * आजुइ नेगचार हुइ जाय ॥
सुनतै आँगन लिपवायो तब * तुरतै चौक दई पुरवाय ॥
कलश धराय दियो सोने को * सुन्दर दीपक दियो धराय ॥
तुरत बुलाय लियो ऊदन को * पंडित वेद उचारन लाग ॥
बैठो पाटा पर ऊदन तब * गौरि गणेश दिये पुजवाय ॥
तेल चढ़ावन लगीं सुहागिन * सखियाँ करैं मङ्गलाचार ॥
नेगचार कीन्हे सबही तब * कंगन हाथ दिये बँधवाय ॥
जामा नीमा पहिनाओ तब * शिरपर मौर दियो धरवाय ॥
लैके सरवा चन्द्रावलि ने * राई लोन उतारो आय ॥
पलकी मँगवाई द्वारे पर * तापर चढ़े उदैसिंह राय ॥
गई पालकी तब कुँअटा पर * सुइ महँ पलकी धरी उतारि ॥
जिनहिं बिआही चन्द्रावलिथी * उनको इन्दसेन अस नाम ॥

जो बहनोई बघऊदन के * तिन गोदी में लियो उठाय ॥
जाय उतारि दियो कुँअटा पर * मल्हना पाँव दिये लटकाय ॥
ऊदनि पहुँचे रनि मल्हना पै * औ हाथन पर लिये उठाय ॥
दियो प्राण अपने माता हम * तब मल्हना ने दई असीस ॥
जुग जुग जीवो लाल हमारे * पलकी चढ़े उदयसिंह राय ॥
उठी पालकी तब ऊदन की * पहुँची तुरत फौजमें आय ॥
ढेबा आदि चले सजि के तब * औ सब सजिके चलो बरात ॥
पहुँचे मलिखे जब लश्कर में * तब क्षत्रिन से कहो सुनाय ॥
होयँ पियारी घर तिरिया जो * अपनी तलब लेय घरजायँ ॥
होय पियारी जिनहिं भगोती * सो सब चलैं हमारे साथ ॥
बोले क्षत्री नर मलिखे से * हम ना धरिहैं पाँव पछार ॥
नमक तुम्हारो हम खाओ है * सो हाड़न में गओ समाय ॥
जहाँ पसीना तुम्हरो गिरि है * तहँ दैदिहैं रक्त को धार ॥
सुनतै मलिखे अति प्रसन्न हुइ * लश्कर डंका दौ बजवाय ॥
डंका बाजो जब लश्कर में * क्षत्री सबै भए तैयार ॥
अपनी अपनी असवारिनपर * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
पचशावद हाथी सजवायो * आल्हा तापर भये सवार ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार खड़ीथी * तापर मलिखे भए सवार ॥
घोड़ी हिरौंजिनि त्यारकराई * तापर सुलिखे भए सवार ॥
घोड़ा मनुरथा को सजवाओ * तापर ढेबा भयो सवार ॥
सब्जा घोड़ा त्यार करायो * मन्ना गूजर भयो सवार ॥
घोड़ी सिहिनी पर सैयदचढ़ि * लैके खुदानबी को नाम ॥
न्यौते आये जा राजा थे * सो सब साथ भए तैयार ॥
कूच को डंका बजवायो जब * तब महुबे से चली बरात ॥

राहपकरि लइ नरवरगढ़ की * पहुँचे आठ रोज में आय ॥
सात कोश नरवर गद रहिगो * तहँ पर डेरा दये लगाय ॥
तम्बू तानि दिये घूरे पर * फेटैं छुटीं क्षत्रियन क्यार ॥
हौदा उतराये हाथिन के * घोड़न जीन धरे उतराय ॥
पन्द्रह कोशी चौगिर्दा में * परिगई फौज महोबे क्यार ॥
परी बरायत गढ़ महुवे की * शोभा एक न बरनी जाय ॥
चूड़ामणि पण्डितहि बुलायो * व्याहि की सायति देउ बताय ॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले * ऐपनवारी देउ पठाय ॥
भयो बुलौआ तब रुपना को * तुरतै रुपना पहुँचो आय ॥
बोले मलिखे तब रुपना से * रुपना सुनौ हमारी बात ॥
ऐपनवारी लै जावो तुम * कहियो तहँ बरात को हाल ॥
रूपन उजुरु करो मलिखे से * हम नहिं मूड़ कटैहैं जाय ॥
बोले मलिखे तब रुपना से * रूपन कटिगो ज्ञान तुम्हार ॥
यहु दिन रहि जैहै कहिवेको * हुइहै व्याह उदयसिंह राय ॥
काहे अपयश तुम लेहो यह * ताते मानौ कही हमार ॥
रुपना बोलो तब मलिखे से * घोड़ा वेंदुला लेउ मँगाय ॥
पाग वैजनी ऊदन वारी * औ दै देउ ढाल तलवार ॥
जो जो माँगो तहँ रुपनाने * सो सो मलिखे दओ मँगाय ॥
ऐपन बारी लै रुपना तब * सो घोड़ा पर भयो सवार ॥
डगरत चलिभौ रुपना वारी * नरवर गढ़ में पहुँचो जाय ॥
घोड़ा रोकि लियो फाटकपर * दरमानी तब कही सुनाय ॥
कहाँ से आये औ जैहौ कहँ * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
बोलो रुपना दरबानी से * रूपनबारी नाम हमार ॥
आई बरायत गढ़ महुबे से * व्याहन आये उदैसिंह राय ॥

ऐपन वारी हम लाये हैं * राजै खबरि देउ पहुँचाय ॥
नेग आपनो वह माँगत है * द्वारे कठिन चलै तरवार ॥
यह सुनि भीतर गौ दरमानी * औ राजा से कही सुनाय ॥
आवो वारी गढ़ महुबे से * ऐपन वारी लिए सवार ॥
द्वारे खड़ो नेग माँगत है * चणभर कठिन चलै तलवार ॥
बात सुनी जब यह नरपतिने * तब मकरन्दने लियो बुलाय ॥
लावौ बाँध अबहि बारी को * सुनि मकरन्द चले मुसुकाय ॥
देर देखिके दरवाजे पर * रुपना तहाँ पहूँचो आय ॥
करिसलाम राजा नरपति को * ऐपन वारी दई चलाय ॥
भरी कचहरी चत्री बैठे * बैठे चत्री सात हजार ॥
विजयसिंह राजा सिलहट को * तासे राजा कही सुनाय ॥
मारि गिरावौ तुम बारी को * सुनतै दीन्ही साँग चलाय ॥
चोट बचाई तब रुपना ने * अपनो भाला दयो चलाय ॥
भाला लागो विजयसिंह के * तहँ ते बही रुधिर की धार ॥
हल्ला करिके सब चत्रिन ने * रुपनै घेरि लियो तहँ आय ॥
खैंचि शिरोही लइ रुपना ने * चत्रिन बीचगयो समियाय ॥
रुपना मारे बहु चत्री तहँ * देहीं लाल बरन हुइजाय ॥
करी सलाम राजा नरपतिको * ऐपन वारी लई उठाय ॥
एँड़ लगाई रस बेंदुल के * फाटक निकरि गयो वा पार ॥
रुपनै देखो जब मलिखे ने * पूछन लगे वीर मलिखान ॥
कैसी गुजरी दरवाजे पर * रूपन हमहिं देउ बतलाय ॥
हाथ जोरि रुपना बोलो तब * द्वारे कठिन चली तरवार ॥
रचा कीन्ही शिव शंकर ने * हम तहँ आये काम बनाय ॥
सुनहु हाल अब नरवरगढ़ को * राजा बहुत गये घबराय ॥

ऐसे जालिम जहँ नेगी हैं * तहँ क्षत्रिनको कौन हवाल ॥
जाति बनाफर की ओछी है * ताते ब्याह मुनासिब नाहिं ॥
सुनतै बोले मकरन्दी तब * दादा धरहु धीर मनमाहिं ॥
मारि गिरैहैं हम सबही को * महुबे जियत एक ना जायँ ॥
यहकहि मकरन्दगै लश्करमें * तुरतै डंका दौ बजवाय ॥
डंका बाजो जब लश्कर में * क्षत्री होन लगे तैयार ॥
पहले नगाड़ा में जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे नगाड़ा के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भए असवार ॥
हरियल घोड़ाको सजवायो * तापर मकरन्द भये सवार ॥
कूच नगाड़ा के बाजत खन * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
चारि घरी केरे अरसा में * पहुँचे समरखेत में जाय ॥
धामन भेजि दियो आल्हा पै * अब लड़िबे को होउ तयार ॥
खबरि सुनतही आल्हा मलिखे * लश्कर डंका दौ बजवाय ॥
आये बराती जो राजा थे * सबने बाँधि लिये हथियार ॥
अपने अपने सब घोड़न पर * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथी चढ़िगे * कोऊ गजरथ भये सवार ॥
कोउ नालकिन कोउ पालकिन * कोऊ भये ऊँट असवार ॥
लश्कर पहुँचि गयो खेतनमें * मुर्चाबन्दी दई कराय ॥
जहँ पर ठाढ़े मकरन्दी थे * पहुँचे तहाँ बीर मलिखान ॥
बोले मकरन्द तब आगे बढ़ि * औ मलिखे से कही सुनाय ॥
कौन देश से तुम आये हौ * अपनो हाल कहो समुझाय ॥
यह सुनिज्वाबदियो मलिखेने * हमरो बास महोबे माहिं ॥
छोटे भैया हैं आल्हा के * औ मलिखान हमारो नाम ॥
आये ब्याहन हम ऊदन को * सो राजा से कहौ बुझाय ॥

बोले मकरन्दी गुस्सा हुइ * सीधे लौटि महोबे जाउ ॥
धोखे रहियो ना माड़ौ के * जहँ लैलियो बापके दावँ ॥
शीश काटि लैहैं सबके हम * सुनि मलिखेने कही सुनाय ॥
हाल तुम्हारो ना जानो है * ताते बोलत नाहि सम्हारि ॥
नीकी बेटी जाकी देखत * जोरावरी बिहाअत जाय ॥
करै दूसरी जो हमसे कोउ * मारैं राज भंग हुइ जाय ॥
ताते मानौ कही हमारी * सातौ भाँवरि देउ डराय ॥
सुनतै गुस्सा हुइ मकरन्दी * अपनो दीन्हों हुक्म सुनाय ॥
दै देउ बत्ती सब तोपन में * इनको अबहीं देउ उड़ाय ॥
हुक्म सुनतखन झुके खलासी * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोउ लश्करमें * सूरज रहे धुंधि में छाय ॥
तुरतै गोला छूटन लागे * चहुँदिशि रही अँधेरी छाय ॥
बरछी भाला छूटन लागे * सरसर परी तीर की मारु ॥
गोला ओला के सम बरसै * गोल्लो भन्न भन्न भन्नाय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * अन्धा धुन्ध तोप की मारु ॥
तोपैं धैं धैं लाली हुइ गइँ * ज्वानन हाथ धरे ना जायँ॥
तोपैं छाँड़ि दई ज्वानन ने * लँबे बन्द करे हथियार ॥
घोड़ी बढाई नर मलिखे ने * औ क्षत्रिन से कही सुनाय ॥
भागि न जैयो कोइ समुहें ते * यारो रखियो धर्म हमार ॥
आजु अखाड़े में बरनी है * सन्मुख लड़ौ शत्रुके साथ ॥
जान न पावैं नरवर वाले * सबके शीश लेउ कटवाय ॥
झुके सिपाही दोनौं दलके * रहिगौ तीनि पैग मैदान ॥
झुरसुट हुइगौ तब क्षत्रिन में * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
खटखट तेगा बाजन लागे * बोलैं छपक छपक तरवारि ॥

चलै उनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
चटकै तेगा बरदवान के * कटि कटि गिरैं अरेखाज्वान ॥
चलै कटारी बूँदी वारी * ना कछु सूझै अपनबिरान ॥
एक पहर भरि चली शिरोही * औ बहि चली रुधिरकीधार ॥
क्षत्री भागे नरवरगढ़ के * मकरन्द घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
मकरन्द कहन लगे मलिखेसे * काहे लश्कर दिहौ कटाय ॥
हमरो तुम्हरी अब बरनी है * समुहें खेलो जूझ अघाय ॥
यह मन भाय गई मलिखेके * घोड़ी आगे दई बढाय ॥
जाय सामुहें मलिखे बोले * मकरन्द सुनौ हमारी बात ॥
चोट आपनी पहले करि लेउ * यहसुनि मकरन्दकहीसुनाय ॥
मलिखे सम्हरि जाउ घोड़ी पर * तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
सुनतै मलिखे छाती रोपो * घुंडा खोलि दई ततकाल ॥
तीर चलाओ मकरन्दी तब * दहिने निकरि गयो वा पार ॥
खाली चोट देखि मकरन्द ने * नर मलिखे से कही सुनाय ॥
अबहूँ लौटि जाउ महुबे को * मानौ कही बीर मलिखान ॥
यह सुनिबोले हँसिमलिखेतब * मनके मेटि लेउ अरमान ॥
चोट आपनी औरो करिलेउ * मकरन्द खैंचि लई तरवार ॥
चोट चलाई तब समुहें पर * मलिखे दीन्ही ढाल उठाय ॥
तीनि शिरोही हनि हनि मारी * मलिखे अङ्गन आओ घाव ॥
बोले मलिखे मकरन्दी ते * अब तुम खबरदार हुइजाउ ॥
इतनी कहिकै नर मलिखे ने * तुरतै दीन्हीं गुर्ज चलाय ॥
लगो चपेटा यक घोड़ा के * मकरन्द घोड़ा गये भजाय ॥
उतरि के घोड़ासे मकरन्द तब * पहुँचे रंगमहल में जाय ॥
काठको घोड़ा बान अजीता * शेल शनीचर लियो उठाय ॥

यह सब लैके गये मालिनघर * औ हिरिया से लगे बतान ॥
बड़े लड़ैया हैं महुबे के * तिनते कछू पेश ना जाय ॥
निमक हमारो तुम खाओ है * चलिके राखौ लाज हमार ॥
यह सुनिहिरियागइलश्कर में * अपनो जादू दियो चलाय ॥
बान अजीता शेल शनीचर * मकरन्दी ने दियो चलाय ॥
फौज बिचल गइ तब महुबे की * क्षत्री सुन्नमान हुइ जायँ ॥
हाल देखि यह नर मलिखे ने * घोड़ी कबुतरी दई बढ़ाय ॥
काठके घोड़ा पर मकरन्द थे * तहँ मलिखान पहूँचो जाय ॥
साँग चलाई नर मलिखे ने * घोड़ा ऊपर गयो उड़ाय ॥
शेल चलायो नर मलिखे पर * सो घोड़ी के लागो जाय ॥
घोड़ी लङ्गड़ी भइ मलिखे की * तुरतै उतरि परे मलिखान ॥
जायके पहुँचे पचपेड़वा ते * मकरन्द फौज दई कटवाय ॥
कैदि कराये बारातो नृप * सो नरवर में दये पठाय ॥
सुन्नमान लश्कर सब हुइगो * तब आल्हा ने कही सुनाय ॥
यहि कारण हमने हटको थो * ऊदन सुनो न बात हमार ॥
बोले ऊदन तब आल्हा से * दादा धरहु धीर मनमाहिं ॥
शिर ते उतारि मौर धरो तब * बाँधो तुरत बैजनो पाग ॥
फेंट बाँधि कम्मर कछनीकसि * ऊदन दुइ बाँधी तरवारि ॥
तुरत सजायो घोड़ा बेंदुला * ऊदनि फाँदि भये असवार ॥
देखी आय फौज महुबे की * अपनी खैंचि लई तरवारि ॥
घुसिगे ऊदन तब लश्कर में * जैसे खेती लुनै किसान ॥
सुआ सुपारी जैसे कतरै * कतरै जैसे तमोली पान ॥
तैसेइ रणमें ऊदन बिचले * क्षत्रिन काटि करो खरिहान ॥
बहुतक हौदा खाली करिके * औ मकरन्दतै पहुँचे जाय ॥

चोट चलाई मकरन्दी पर * मकरन्द दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
मकरन्द बोले बघऊदन ते * ऊदन सावधान हुइ जाउ ॥
हाथ में गुर्ज लियो मकरन्द तब * तब मलिखे ने कही सुनाय ॥
हाथ चलैओ ना ऊदन पर * पूरन हुइहैं काम तुम्हार ॥
जादू डारि दियो ऊदन पर * घोड़ा सुन्न सान हुइ जाय ॥
चढ़िगै मकरन्द तब आगे को * औ ऊदन को कहो हवाल ॥
पहुँचो ढेबा तब आल्हा पै * औ ऊदन को कहो हवाल ॥
बोले आल्हा तब ढेबा से * अबहीं नगर महोबे जाउ ॥
खबरि सुनावो रनिसुनमाँको * यह सुनि ढेबा भयो तयार ॥
घोड़ा मनुरथा पर चढि बैठे * औ महुबे में पहुँचो आय ॥
देवै ठाढ़ी थी द्वारे पर * तो लौं ढेबा परा निगाह ॥
पूछन लागी माता देवै * तुमने छाँड़ी कहाँ बरात ॥
बोलो ढेबा तब उदास हुइ * माता बिगरि गई सब बात ॥
घोड़ी कबुतरी घायल हुइगइ * मकरन्द बाँधि उदैसिंह राय ॥
भूप बराती कैदि कराये * औ नरवर में दये पठाय ॥
जादू डारि दियो हिरियाने * सिगरो फौज भई सुनसान ॥
आल्हा रहिगे जो अकिलेतहँ * भेजी हमहिं महोबे माहिं ॥
यह सुनि देवै रोवन लागी * सुनतै सुनमा पहुँची आय ॥
सुनो हाल जब रनिसुनमाँने * तब देवै ते कहो सुनाय ॥
बेटा इन्दल अति छोटो है * मैं सब लैहौं काम बनाय ॥
धीरज राखौ तुम सायुल अब * यह कहि चली सुनमदे रानि ॥
लै सामग्री सब पूजा की * औ यकलीन्ही खड्ग उठाय ॥
जाय पहूँची तब मठिया में * देवी पूजन कियो सुधारि ॥
शीश चढ़ावनहित अपना तब * सुनमाँ हाथ लई तरवारि ॥

बोली आभा तब देवी को * अपनो काम देउ बतलाय ॥
हाल बताओ सब सुनमां ने * तब देवी ने कहो सुनाय ॥
काठको घोड़ा बान अजीता * शैल शनीचर लिहौं छिपाय ॥
जादू पुड़िया दइ देवा ने * दीन्हों अमृत अम्बिकामाय ॥
काम तुम्हारो पूरन हुइ है * यह सुनि देविहिं माथ नवाय ॥
सुनमाँ चलिभइ तब माँडियाते * औ ढेवा ते पहुँची आय ॥
दैके अमरित जादू पुड़िया * औ सुनमा ने कही सुनाय ॥
अबहीं लौटि जाउ नरवरको * तुरतै ढेवा कियो पयान ॥
सचले इन्दल साथ जानहित * सुनमा तुरत दियो समुझाय॥
देवी पहुँचि गई नरवरगढ़ * बान अजीता लियो उठाय ॥
काठको घोड़ा निर्बल करिके * शैल शनीचर दियो छिपाय ॥
ढेवा पहुँचो नरवर गढ़ तब * औ आल्हा को करी सलाम ॥
अमरित जादू दै आल्हा को * औ सब हाल दियो बतलाय ॥
आल्हा पठवो तब ढेवा को * तुममलिखेको लाओ लिवाय॥
ढेवा पहुँचो नर मलिखे पै * औ सबहाल कहो समुझाय ॥
आये मलिखे पचपेड़वा ते * औ आल्हा को करी सलाम ॥
बोले आल्हा नर मलिखे से * भई सहाय शारदा माय ॥
गजपचशाबद पर आल्हाचढ़ि * घोड़ा पपीहा पर मलिखान ॥
घोड़ा मनुरथा पर ढेवा चढ़ि * पहुँचे तुरत फौज में जाय ॥
छिड़को अमरिततहँ आल्हाने * लश्कर उठा महोबे क्यार ॥
फौज बढ़ाई तब आगे को * औ फाटक पर पहुँचे जाय ॥
सुनी खबरि जबमकरन्दी ने * आई फौज महोबे क्यार ॥
चलिके मकरन्द गै लश्करमें * औ यह हुक्म दियो फरमाय॥
लश्कर त्यार होय जल्दी से * डङ्का तुरत दियो बजवाय ॥

पहले डङ्का में जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लियो हथियार ॥
तिसरे डङ्का के बाजत ही * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
मारू डङ्का के बाजत ही * लशकर चला बिसेने क्यार ॥
चलिकेमकरंद बँगला पहुँचे * बान अजोता नाहिं दिखाय ॥
काठको घोड़ा निर्बल देखो * शेल शनीचर नाहिं दिखाय ॥
खाय सनाका गै मकरंदतब * हरियल घोड़ा लियो सजाय ॥
तुरत सवार भये घोड़ा पर * औ लशकर में पहुँचो जाय ॥
हिरियामालिनि साथै पहुँचो * मकरन्द घोड़ा दिया बढ़ाय ॥
समुहें पहुँचे नर मलिखे तब * मकरन्दी से कही सुनाय ॥
कुशल आपनी जो चाहौ तुम * तौ ऊदन को देउ छुड़ाय ॥
कलह बढ़ावौ ना आगे को * सातौ भाँवरि देउ डराय ॥
इतनी सुनतै मकरन्द जरिगै * नैना अगिन ज्वाल हुइजाय ॥
हुक्म दै दियो तब लशकर में * इन पाजिनको देउ भगाय ॥
झुके सिपाही दोनों दल के * अपनी खैंच खैंच तरवार ॥
पैदल भिरिगै तब पैदल संग * औ असवारन ते असवार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै * बोलै छपक छपक तरवारि ॥
चलै उनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं बर्दवान के * कटिकटिगिरैं सुघरुआ ज्वान॥
उठैं कबंध बीर रण खेलैं * घैहा उठैं कराहि कराहि ॥
चारिहु ब्यारिन को मसकाहैं * कौंधा चाल चलैं तरवारि ॥
डारे घैहा रण में लोटैं * जिनके प्यास २ रट लाग ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * दोनौं हाथ करैं तरवार ॥
हौदा मिलिगये हौदाके संग * हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
हाहाकारा बीतन लागी * कोऊ रँधे भात न खाय ॥

उठिगे चहला हैं चर्बिन के * औ लोथिन के लगे पगार ॥
डारो ढालैं जो लोहू में * मानौं कछुआ सी उतरायँ ॥
डारी पगिया जो लोहू में * मानहु नद्दो परी सिवार ॥
परी शिरोही है क्षत्रिन को * मानहु नागिन सी मन्नाय ॥
कोई रोवत तहँ लरिकनको * कोई पुरिखन को चिल्लाय ॥
कोई रोवत हैं माता को * कुँवरा लिये रही नौ मास ॥
कोई रोवत घर तिरियन को * अबहीं लाये गौनमाँ चार ॥
घरी चारि भरि चली सिरोही * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
ऊँचे खाले कायर भागे * औ रण दुलहा चले वराय ॥
भाँग उतरि गइ भंगेड़िन की * गाँजा वाले चले पराय ॥
झुकैं अफीमी रण के भीतर * उघरैं पलक और रहिजायँ ॥
लम्बी धोतिन के पहिरैया * तिन नारेन की पकरी राह ॥
कोइ कोइ क्षत्री करैं बहाना * रण में डारि दिये हथियार ॥
लैके माटी सब देही में * मलिके लीन्हों भस्म रमाय ॥
हमहिं न मरिऔ भाई क्षत्रिन * माँगन भीख हेत हम जात ॥
हैं वैरागी हम काशी के * आगे हिंगलाज को जायँ ॥
भिक्षा माँगन हम आये थे * तौ लौं चलन लगी तरवारि॥
कोइ कोइ क्षत्री रुजगारीबनि * ढालैं लईं पीठ पर लादि ॥
हमहिंनमरिऔहमहिंनमरिऔ * हम ढालन के बेचन हार ॥
नीचे क्षत्री ऊपर मुरदा * रणमें लोटि रहे चुप साधि॥
बिचले हाथी रण भीतर जो * जिनके उपर पाँव परिजाय ॥
बिनहीं मारे मरि जावैं वे * हा बिन मरे मौत हुइ जाय ॥
भगे सिपाही नरवर गढ़ के * अपने डारि डारि हथियार ॥
मकरन्द आये तब मलिखे पै * औ मलिखे से कही सुनाय ॥

सम्हरौ मलिखे तुम घोड़ा पर * यह कहिदीन्हौं गुर्ज चलाय ॥
चोट बचाई नर मलिखे ने * तब हिरिया से कही सुनाय ॥
देर लगाई अब काहे को * अपनो जादू देय चलाय ॥
सुनतै हिरिया जादू लैके * नर मलिखे पर दई चलाय ॥
तकि २ मालिन जादू डारै * जादू एक नाहिं अनियाय ॥
बोलन लागे नर मलिखे तब * मालिनि सुनौ हमारी बात ॥
पुष्य नक्षत्र माहिं जन्मा हूँ * बरहें पड़े बृहस्पति आय ॥
टोना जादू की गिनती क्या * शंका करहिं कालको नाहिं ॥
यह कहिपकरिगिरायभूमिपर * जूरा काटि लियो ततकाल ॥
भूठा परिगौ सब जादू तब * मकरन्द देखि गये घबराय ॥
गुस्सा हुइ तब मकरन्द ठाकुर * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जायके पहुँचे नरमलिखे ढिग * औ मलिखे से कही सुनाय ॥
सम्हरि के बैठो तुम घोड़ापर * यह कहि तेगा दओ चलाय ॥
चोट बचाई तब मलिखे ने * औ घोड़ा को दियो बढ़ाय ॥
ढाल की ओझड़मलिखेमारी * मकरन्दी को दियो गिराय ॥
तुरतै बाँधि लियो मलिखेने * औ आल्हा तें पहुँचे जाय ॥
लश्कर भागो नरवर गढ़ को * राजा नरपति सुनौ हवाल ॥
भेष गरीबी करि राजा तब * आये जहाँ बनाफर राय ॥
करी अधीनी तब आल्हा ते * अबहीं भामरि दिहौं डराय ॥
अबतुमछाँड़िदेउ मकरन्द को * तब आल्हा ने कही सुनाय ॥
तुमहूँ छाँड़ि देउ ऊदन को * औ राजन को देउ छुड़ाय ॥
इतनी सुनतै राजा नरपति * सबको कैदि दई छुड़वाय ॥
आल्हा छोड़ो मकरन्दहिं तब * राजा नरपति कही सुनाय ॥
पूछहु साइति तुम बिवाह की * आल्हा पण्डितलियो बुलाय ॥

चूड़ामणि आये तम्बू में * ढेबा लग्न दई बतलाय ॥
सुनतै चलिभये राजानरपति * औ महलन में पहुँचे जाय ॥
चौक पुराय दई मोतिन ते * आँगन मड़वो दवो छवाय ॥
कलश धराय दियो सोने के * तापर दीपक दयो धराय ॥
पंडित बेद उचारन लागे * लागे होन मङ्गलाचार ॥
तो लों आयगये माहिलतहँ * औ राजा से कही सुनाय ॥
जाति बनाफर की ओछी है * हुइहै ब्याह बनाफर साथ ॥
जलनहिं पीहैं कोइ लुटियाको * यक हम जतन देयँ बतलाय ॥
सबहिं घरौआ तुम बुलवावौ * मड़ये बीच देउ बिठलाय ॥
शूर छिपावौ तुम कोठरिनमें * सबके शीश लेउ कटवाय ॥
यह मन भाय गई नरपति के * औमकरन्दको दौ समुझाय ॥
दुइ हजार क्षत्री बुलवाये * सो कुठरिन में दये छिपाय ॥
चलिभे मकरन्द रङ्गमहल से * औ बरात में पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी तुनि आल्हाको * औ आल्हा से कही सुनाय ॥
जितने घरौआ हैं महुबे के * ते सब चलौं हमारे साथ ॥
सुनतै आल्हा उठि ठाढ़ भये * सबै घरौआ भये तयार ॥
उठी पालकी बघऊदन की * पहुँची रङ्गमहल में जाय ॥
बन्द कराय दिये फाटक तब * अहनी ताला दिये डराय ॥
ऊदन बैठारे पाटा पर * पंडित गाँठ दई जुड़वाय ॥
कन्या दान कराय होमकरि * भाँवरि परन लगी ततकाल ॥
पहली भाँवरि के परतै खन * मकरन्द खैंचि लई तलवारि ॥
करो झड़ाका जब ऊदन पर * मलिखे लीन्हीं चोट बचाय ॥
दुसरी भाँवरि के परतै खन * क्षत्रिन खैंचि लई तरवारि ॥
चली शिरोही तब मड़ये तर * मड़वा टूक टूक हुइ जाय ॥

खम्भ गिरिगयो तब धरतीपर * मड़ये बही रक्त की धार ॥
गाड़ो मड़वा तब साँगन को * औ ढालन ते दयो छवाय ॥
मुश्क बाँधिके मकरन्दी को * सातौं भाँवरि लई डराय ॥
बोले नरपति आधोनी करि * औ आल्हा से लगे बतान ॥
तुम सब लायक हो महुबेके * अब मकरन्दहि देउ छुड़ाय ॥
छोरि मुश्क दइ मकरन्दीका * औ राजा से कही सुनाय ॥
भात खवावौ तुम हमकाँ अब * तुरतै बिदा देउ करवाय ॥
भई खबरिया यह महलन में * तुरतै भात भयो तैयार ॥
बोले राजा तब आल्हा से * चलिके जेंइ लेउ ज्योनार ॥
यहसुनि चलिभयेसबै घरों आ * अपने बाँधि बाँधि हथियार ॥
गंगा उठाई तब नरपति ने * अब तुम छोरि धरौ हथियार ॥
दूजी करिहैं ना तुमते हम * मनकी भरम देउ बिसराय ॥
सीख बताई थी माहिल ने * कुठरिन शूर देउ बिठवाय ॥
भात खान आवैं जबहीं सब * तुरतै मूड़ लेउ कटवाय ॥
गंगा कीन्हें जब नरपति ने * सबने छोरि धरे हथियार ॥
गडुआ लै लै चले महुबिया * चौका बैठि गये सब जाय ॥
भात परोसिगयो सबके ढिग * जैसे कार उठे सब क्यार ॥
क्षत्री निकरि परे कुठरिन ते * तुरतै उठे महुबिया ज्वान ॥
गडुआ मारैं सब क्षत्रिन को * औ फिरि पाटा लिये उठाय ॥
बहुतक क्षत्री मारि गिराये * बहुतक क्षत्री दिये भगाय ॥
आये नरपतितबआल्हा ढिग * औ आधोनो करो बनाय ॥
भात खवायदियो सबको जब * तब आल्हा ने कहो सुनाय ॥
नेगी अपने बुलवावो सब * राजा नेगी लियो बुलाय ॥
लैके गहनो तब आल्हा ने * सब नेगिन को दयो बँटाय ॥

लगी पालकी आय द्वार पर * तुरतै बिदा होन तब लाग ॥
तोड़ा पाँच लिये ढेबा ने * सो फुलवा पर दिये लुटाय ॥
आई पालकी तब बरात में * मलिखे मेख दई उखराय ॥
सब समान लादि छकरन में * तहँते कूच दियो करवाय ॥
राह पकरि लइ गढ महुबे की * पहुँचे सात रोज में जाय ॥
डेरा डारि दिये सागर पर * आगे रुपनै दियो पठाय ॥
रुपना पहुँचो रंगमहल में * मल्हनै खबरि सुनाई जाय ॥
मल्हना बुलवाई सखियाँ तब * लागे होन मंगलाचार ॥
आई पालकी बघऊदन की * आई संग फुलामति रानि ॥
परछनि होन लगी द्वारे पर * मल्हना आरति लई उतारि ॥
बहू साथ लै रानी मल्हना * राखी रंगमहल में जाय ॥
बन्दी सुयश बखानन लागे * घर घर खुशी रही बहुछाय ॥
दान दछिणा दै मल्हना ने * सब बिप्रनको कियो निहाल ॥
अनन्द बधैया महुबे बाजी * घर घर भयो मंगलाचार ॥
आये बराती जो राजा के * सबकी बिदा दई करवाय ॥
कोई गावत है अम्मर गढ़ * कोई मोरंगगढ़ करत बखान ॥
ब्याहभयोयहि बिधि ऊदनको * हितते पढ़ौ सुमिरि भगवान ॥
इन्दल हरण लिखत आगे हम * श्रीशिवचरणलाल समुझाय ॥
सुमिरन करिके रामचन्द्र को * यारो पढ़हु याहि मनलाय ॥

* इति ऊदन का विवाह (नरवरगढ़ की लड़ाई सम्पूर्ण) *



* श्रीः *

अथ

आल्ह खण्ड

* इन्दल हरन *

* सुमिरिनी *

* कवित्त *

तीरथ के जाये चारों धाम के नहाये सर्व देवता मनाये राम राम रट लाये ते। गीता को गाये और भागवत सुनाये उत्तम व्रत के कराये और आसन लगाये ते॥ नेम के कराये ध्यान धारणा बनाये एते संयम के कराये प्राणायाम के चढ़ाये ते। योग के कराये मन कामना पुराये सुरधाम को सिधाये रामचन्द्र गुण गाये ते॥ १॥

* आल्हा *

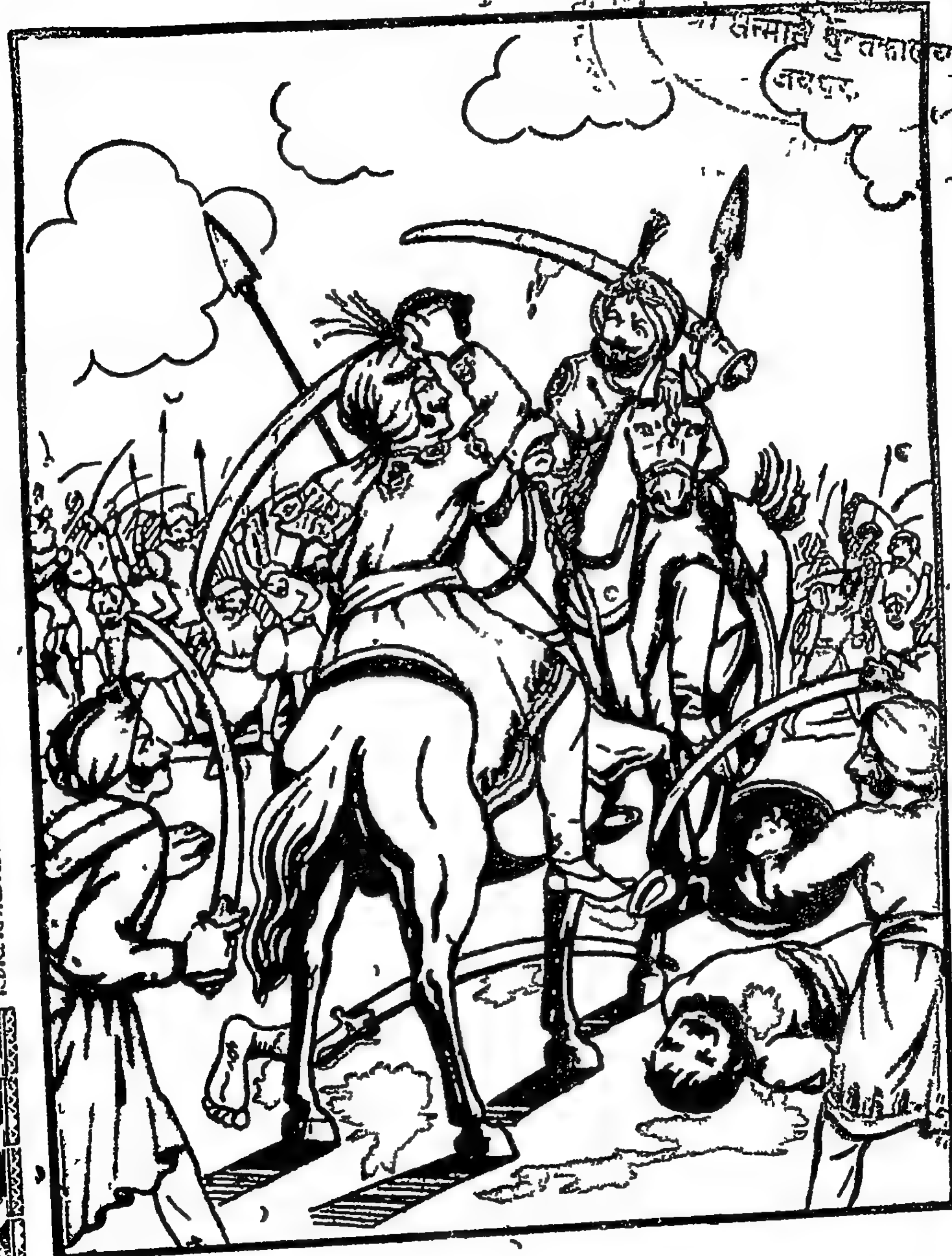
सुमिरन करिये श्री गंगा को * भागीरथी नाम विख्यात॥
को कवि महिमा कहे गंगकी * सबही नाम लेत तरिजात॥

राम घाट काशी मुक्तेश्वर * कनवज कानपूर हरद्वार ॥
गङ्गाजी के तेज पुञ्ज में * जरि जरिपाप होत सब छार ॥
पापैं घोर करत कलियुगमाँ * जाको तीनिलोक माँ शोर ॥
मुक्ति दायिनी वेद बखानत * यम को चलत एक ना जोर ॥
कोटिन पाप कटत दर्शन ते * परसे सकल रोग नशिजात ॥
विमल शरीर होत न्हाये ते * महिमा कहत शेष सकुचात ॥
जेठ दशहरा की पर्वी में * गङ्गा माहिं करन असनान ॥
चलि भये राजा देश देश के * सब विधि लिये दान सामान ॥
बोलत यात्री जै गङ्गा की * ताही समय उदयसिंह राय ॥
अपने संग लिये ढेवा को * वन में खेलन गये शिकार ॥
भारी मेला लखि ऊदन तब * नर ढेवा से लगे बतान ॥
भारी मेला कहाँ जात यह * दादा हमहिं देउ बतलाय ॥
ढेवा बोले तब ऊदन ते * मेला यह बिठूर को जात ॥
भारी मेला को रेला है * लूटत जाय पुराय संसार ॥
गलीगली औ सबसड़कनपर * लागत भीर नारि नर क्यार ॥
जेठ दशहरा की पर्वी है * यह सुनि कही उदैसिंह राय ॥
हमहूँ जैहैं तहँ बिठूर को * करिहैं जाय गङ्ग असनान ॥
बोलो ढेवा तब ऊदन ते * आल्हा लागत बाप समान ॥
चलिके पूछिलेउ अबहीं तुम * यह सुनि चले उदयसिंहराय ॥
जायके पहुँचे तुनिआल्हाते * बोले हाथ जोरि शिरनाय ॥
आज्ञा दैदेउ म्वहिं दादा तुम * बुड़की लेयँ गङ्गकी धार ॥
बोले आल्हा तब ऊदन ते * तुम सुनिलेउ लहुरवा भाय ॥
देश देश के राजा जैहैं * हुइहैं बहुत भीड़ तहँ आय ॥
रारि मचैहो तहाँ जाय तुम * हमको झगड़ा नाहिं सुहाय ॥

तुम ना जावौ तहँ बिठूरको * इतनी मानौ बात हमार ॥
माहिल बैठे उरई वाले * सो आल्हा से लगे बतान ॥
अस बेसमझ नाहिं ऊदन हैं * करिहैं राह चलत तकरार ॥
पर्व दशहरा को भारी है * तुम ना हटकौ गङ्ग नहाय ॥
बोले आल्हा तब ऊदन ते * तुम मामा संग जाउ नहाय ॥
सुनतै ढेबा ऊदन सजिगये * लश्कर डंका दौ बजवाय ॥
डंका सुनतै इन्दल आये * औ ऊदन से कही सुनाय ॥
कहाँको त्यारभयोचाचा तुम * तब ऊदन ने दियो बताय ॥
त्यारी कीन्हों हम बिठूर को * बुड़की लिहैं गंग में जाय ॥
बोले इन्दल तब ऊदन ते * हमहूँ चलिहैं संग तुम्हार ॥
ऊदन बोले तब इन्दल ते * तुम ना चलो लड़ैते लाल ॥
जान न देहैं बाप तुम्हारे * सुनि इन्दलने लियो कटार ॥
पेट मारि अबहीं मरिजैहों * तब इन्दलको संग लिवाय ॥
पहुँचे ऊदन पुनि आल्हापै * बोले हाथ जोरि शिरनाय ॥
संग जान हित इन्दल मचले * आज्ञा देउ साथ लै जायँ ॥
बोले आल्हा तब ऊदन ते * ना लै जैऔ पुत्र हमार ॥
ऐहैं जादूगर बिठूर में * जादू अपने दिहैं चलाय ॥
ऊदनिचलिभये तब बँगलाते * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
संग न छोड़ो तब इन्दल ने * औ बिठूर को भये तयार ॥
कूच कराय दियो ऊदन ने * संगै चले महिल परिहार ॥
पहुँचे जबहीं गंग घाट पर * तुरतै चले महिल परिहार ॥
लाखनि राना कनवज वाले * पहुँचे सोउ बिठूर में जाय ॥
डंका बाजत थो ऊदन को * सुनिलाखनिने कही सुनाय ॥
किसको डंका यहु बाजत है * अबहीं बन्द देउ करवाय ॥

यह सुनि धावनगौ ऊदनते * औ ऊदन से कही सुनाय ॥
हुक्म कनौजी को गालिब है * डंका बन्द देउ करवाय ॥
बोले ऊदन तब धावन ते * डंका बन्द होन को नाहिं ॥
यह कहि दीजो तुम राजा ते * ऊदन आये महोबे क्यार ॥
लौटिके धामन ने लाखनि ते * तुरतै दीन्हों आय जवाब ॥
ऊदन आये हैं महुबे से * डंका बन्द करत हैं नाहिं ॥
सुनते गुस्सा हुइ लाखनि ने * अपनो मुर्चा दियो लगाय ॥
खबरि सुनतही बघऊदन ने * अपनो मुर्चा दियो लगाय ॥
तौ लौं पहुँचे मीरा सैयद * सो लाखनसे लगे बतान ॥
बड़ो लड़ैया बघऊदन है * तासों लड़े पेश ना जाय ॥
कही हमारी लाखनि मानौ * अपनो मुर्चा लेउ हटाय ॥
ढेबा बोलो तब ऊदन ते * तुम्हरो अकिलि गई हिराय ॥
हटको आल्हा थो याही तें * सोई कारण परत दिखाय ॥
चलिके मिलो अबहिं लाखनिते * डंका बन्द देहु करवाय ॥
राजा अजयपाल कनवज में * जिनघरउदयअस्तलौंराज ॥
तिन घर उपजो लाखनिराना * राजा रतीभान को लाल ॥
बेन चक्कवै को नाती है * ताते मानौ कही हमार ॥
आगे जाय मिलो लाखनि से * तुम्हरो नाम होय संसार ॥
यह मन भाय गई ऊदन के * पाँचदुशालालियो मँगाय ॥
ऊपर धरे पाँच हीरा तब * औ चलिभयेलहुरवा भाय ॥
आइक़दम जब लाखनि रहिगे * ऊदन नैके करो सलाम ॥
बोले आना लाखनि राना * हँसि ऊदनसे कही सुनाय ॥
देश देशा यक उदयसिंह हो * राजा दस्सराज के लाल ॥
रारि मचैहो बजवावो तुम * यह कहि मिले कनौजीराय ॥

असली बड़ा आल्हखण्ड



भार्गव भूषण प्रेस, काशी।

हृदय लगाय लियो ऊदनको * पगिया पलटि लई तत्काल ॥
भई मित्रता उन दोनों की * अब आगे को सुनौ हवाल ॥
बलख बुखाराके अभिनन्दन * चित्तररेखा राज दुलारि ॥
गंग नहान हेत मचली जब * तब अभिनन्दन कही सुनाय ॥
नहिं बिठूर जावो बेटी तुम * ऐहैं वहाँ कनौजी राय ॥
ऐहैं महुबिया महुबे वारे * ताते मानौ कही हमार ॥
बात न मानी चित्तरेखा ने * राजा लश्कर लियो सजाय ॥
संग पठाय दश्रो हंसा को * बेटी कूच दियो करवाय ॥
केसरि नटिनीको संग लीन्हों * सोने पिंजरा लियो धराय ॥
जबहि बिठूर घाट पहुँचो सो * अपनो तम्बू दिया तनाय ॥
धाँधू ब्याहन गये रहे जब * रहे बरात इन्दलसी क्वाँर ॥
चित्तररेखाने देखे जब * तबहीं मन में कियो बिचार ॥
कैतौ ब्याह होय इन्दल संग * नातर क्वाँरि रहों संसार ॥
निशिदिन यहै सोच बेटी के * क्यहिविधिमिलैपरिउनालाल ॥
मिलिहैं इन्दल गंग घाट पर * ताते गई गंग दरबार ॥
रैनि बीति गइ गंग घाट पर * भोरहिं उदय भये जब भान ॥
चित्तररेखा उठि तुरतै तब * मेला देखन भई तयार ॥
केसरि नटिनी को संग लीन्हों * अपनो नटिनी भेष बनाय ॥
सखिन संग लै गावन लागी * अपनो करन तमाशा लागि ॥
देखो मेला जहँ महुबे को * तहँ पर करन तमाशा लागि ॥
नाचु देखिकेउन नटिनिनिकी * क्षत्री मोहि मोहि रहिजायँ ॥
देखे इन्दल चितरेखा ने * तब सखियन से कही सुनाय ॥
जादू करिके यहि हरिये अब * सबसे नीको यहै उपाय ॥

* सवैया *

साँवलि मूरति दृष्टि परी, तबते चित चञ्चल होय रहा है।
भोजन भौन नहीं मन भावत, नैनन ते जल जात बहा है॥
नैनके बान जिन्हैं न लगे, वह जानत पीर पराइ कहा है।
लोग कहैं सखि लाज करो, जब लागिगई तब लाज कहा है॥

* आल्हा *

लीन्हीं जादू जब नटिनी ने * ढेबा तुरत गयो पहिचान॥
तुरतै बोलो नरढेबा तब * ऊदन इनहिं देउ निकराय॥
नाच तमाशा अब दिखिहौजो * तो सब जैहैं काम नशाय॥
इतनी सुनतै मुहरैं दै के * तुरतै तहँ ते दियो निकार॥
तब चितरेखा गइ डेरा पर * मनमें बसेउ परेउना लाल॥
बुड़की लेन चले ऊदन जब * इन्दल ढेबा साथ लिवाय॥
यक हजार चत्री लीन्हें सँग * नंगी हाथ लिये तलवारि॥
लैके गोदी महँ इन्दल को * बुड़की लई उदैसिंह राय॥
दान दच्छिणा दै बिप्रन को * ऊदन नाव लई मँगवाय॥
सो छुड़वाय दई गंगा में * पहुँची बीच धार में जाय॥
देखत चलि भइ चितरेखा तब * पहुँची गंग किनारे जाय॥
पाँच मुहर दै मल्लाहन को * तुरतै नाव लई मँगवाय॥
सँग लीन्हे केसरि नटिनीको * बैठी बीच नाव में जाय॥
पिंजरा लैके यक सोने को * तहँते नौका दई खुलाय॥
पहुँची नौका बीच धार महँ * जहँ पर नाव महोबे क्यार॥

देखन लागी चितरेखा तब * औ इन्दल तन रही निहार ॥
पहले जादू लै भैरव की * सो ढेबा पर दई चलाय ॥
दुसरी पुड़िया लै जादू की * सो ऊदन पर दई चलाय ॥
दोउ महुबिया मूर्छित हुइगे * उनकोनजरिचूकहोइजाय ॥
तिसरी पुड़िया लै जादू की * सो इन्दल पर दई चलाय ॥
सुवा बनाय लियो जल्दी से * औ पिंजरामें लियोबिठाय ॥
नाव किनारे पर लगवाई * तुरतै उतरि परी हर्षाय ॥
आय पहुँचि गइ निजडेरा पर * तहँते कूच दियो करवाय ॥
उतरो जादू जब दोनौं को * तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
ढेबा दादा यह कैसी भइ * नायहँ इन्दल परत दिखाय ॥
यह कहि मेला ढूढ़न लागे * ढेबा और उदैसिंह राय ॥
सबही मेला ढूँढ़ि लियो जब * ऊदन जाल लिये मँगवाय ॥
सो डरवायो गङ्गाजी में * फँसिगे मगर मच्छबहुआय॥
पेट फराय दियो जीवन को * पैनहिमिल्योपरेउनालाल ॥
हुइ उदास बोले ऊदन तब * औ ढेबा से कही सुनाय ॥
कौन बहाना अब हम करिहैं * कैसे मुख दिखरैहैं जाय ॥
बोले माहिल बघऊदन से * मनते सोच देउ बिसराय ॥
हम समुझाय दिहैं आल्हा को * कोइजादूकरिगयोलिवाय ॥
तुमहूँ कहियो आधोनी से * जल्दी ढूँढ़ि मिलैहैं लाय ॥
लैके मुहलति छे महिना की * ढूँढ़िहौंजायपरेउना लाल ॥
यह सुनि ऊदन तहँते चलिभे * पहुँचे मदन ताल परजाय ॥
तम्बू तानि दियो अपनो तब * माहिल आगे पहुँचेजाय ॥
दूरिते देखतही माहिल को * आल्हा पूछो हाल हवाल ॥
बोले माहिल तब आल्हा से * हमसे कछू कही ना जाय ॥

ऊदन मारो जस इन्दल को * तस तुम साँची सुनौ हवाल ॥
जैसे इन्दल गोता मारो * ऊदन तेगा दियो चलाय ॥
काटि शीश इन्दल बेटा को * उन गङ्गा में दयो बहाय ॥
बोले आल्हा झूठ कहो नहिं * यह हमरे मन नाहिं समाय ॥
इन्दल प्यारे जस ऊदन को * तैसे हमहिं पियारे नाहिं ॥
कसम खाय बोले माहिल तब * साँची मानो बात हमार ॥
इकलौता हमरो मरिजावै * जो हमझूठ कही कछु होय ॥
बात मानि लइ तब साँची सब * आल्हाअग्निज्वालहुइजायँ॥
माहिल चले गये उरई को * अब आगेको सुनौहवाल ॥
ऊदन बोले नर ढेबा ते * दादै खबर सुनावौ जाय ॥
पहुँचो ढेबा तब आल्हा तें * समुहें करी बंदगी जाय ॥
पीठी फेर लई आल्हा ने * तब ढेबा ने कही सुनाय ॥
काहे दादा हौ गुस्सा तुम * सुनिआल्हानेदियोजवाब ॥
अबहीं लाओ तुम ऊदन को * ढेबा लौट परो ततकाल ॥
पहुँचो ढेबा जब तम्बू में * औआल्हाको कहो हवाल ॥
बोले ऊदन नर ढेबा ते * दादा जतन देहु बतलाय ॥
दादा देखिहैं ना इन्दल को * पुछिहैं तबहीं क्रोधमें छाय ॥
कौन जवाब दिहैं तिनको हम * तब ढेबा ने कही सुनाय ॥
तुम कहि दीजो कोइ मेला में * जादू कर लै गयो चुराय ॥
मुहलति दै देउ छै महिना की * इन्दल ढूँढ़ि मिलैहैं लाय ॥
बात मानि तब ऊदन चलिभे * बहुत अधीनी भेष बनाय ॥
हाथ बाँधि नंगे पायन ते * मुख में दूब पौंड़वा दाबि ॥
सन्मुख पहुँचे जब आल्हा के * तीवा नैनें करौ सलाम ॥
पीठि घुमाय लई आल्हा ने * तब ऊदन ने कही सुनाय ॥

काहे रूठि गये दादा तुम * हमरी खता देउ बतलाय ॥
बोले आल्हा तब क्रोधित हुइ * तुम ना मानौ कही हमार ॥
संग लै गये तुम इन्दल को * औ गंगा पर मारो हाथ ॥
बोले ऊदन तब आल्हा से * दादा सुनहु सत्य यह बात ॥
जादू डारि दियो काहू ने * हरि लै गयो परेउना लाल ॥
ढूँढ़ो मेला तब हमने सब * गंगा में दये जाल डराय ॥
मगर मच्छ फँसि गये जालमें * तिनके डारे पेट फराय ॥
पता न लागो जब इन्दलको * तब हम कूच दियो करवाय ॥
मुहलत दै देउ छे महिनाको * लैहौं ढूँढ़ि इन्दलहि जाय ॥
सुनतहि गुस्सा हुइ आल्हा तब * औ ऊदन से कही सुनाय ॥
माहिल मामा साँची कहिगये * हैं सब झूठी बात तुम्हार ॥
तुमने मारो है इन्दल को * मरिहौं तुमहिं जानते आज ॥
यह सुनि ढेबा अरु ऊदन तब * आल्है बहुत रहे समुझाय ॥
एक न मानी तब आल्हा ने * बाँधे हाथ उदैसिंह क्यार ॥
तुरत बँधाय दियो खभा में * ताजे बाँस लिये मँगवाय !!
बाँसन मारो बघऊदन को * गाठैं पैठि पीठि में जाय ॥
लाल बरन पीठी तब हुइ गइ * औ बहि चली खूनकी धार ॥
सुनी खबरि जब यह देवै ने * तुरतै आयके कही सुनाय ॥
काहे मारत हौ ऊदन को * बेटा छोड़ि देउ ततकाल ॥
बोले आल्हा तब गुस्सा हुइ * याने मारो पुत्र हमार ॥
जियत छाँड़िहौं ना काहूविधि * सुनतै लौटि दिवलदे माय ॥
पहुँची तुरतै रनि सुनमा पै * औ ऊदन को कहो हवाल ॥
कंत आपने को समुझावो * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
सुनतै सुनमा गइ आल्हा पै * औ यह कही सुनमदे रानि ॥

तुमहिं पियारे थे ऊदन जो * काहे देत बाँस की मार ॥
भाइहि मारत हौ गुस्सा हुइ * है यह बात मुनासिब नाहिं ॥
बोले आल्हा तब सुनमा ते * नाहीं समुझो हाल तुम्हार ॥
लै गये इन्दल को गंगा पर * छलिके दियो जान से मारि ॥
जियत छाँड़िहौं ना ऊदनको * चाहे कोटिन करो उपाय ॥
बोली सुनमा आधीनो से * कंता लागों पाँव तुम्हार ॥
हम तुम कायम हैं दुनियाँ में * इन्दल यहाँ जन्मिहैं आय ॥
भाई मिलिहैं ना काहू विधि * ऊदन तुमहिं छुड़ायो जान ॥
तुम सुधि करिलेउनैनागदकी * सो तुम समुझिलेउ मन माहिं ॥
अबहीं बाँसन ते मारत हौ * फिरि पछितैहौ बात बिगार ॥
मारे जैहैं जो ऊदन यहँ * तुम माटीके मोल बिकाउ ॥
गुस्सा करिबो नहिं नीको है * जाते बिगड़ि जाय सब काम ॥
पृथीराज सुनि हैं दिल्ली में * मारे गये उदयसिंह राय ॥
आयके लुटिहैं वे महुबे को * तब तुम करिहौ कौन उपाय ॥
जियत न छुड़िहैंहम ऊदनको * यह तुम मानौ कही हमार ॥
ऊदन बोले रनि सुनमा ते * भौजी पानी देउ पियाय ॥
सुनमा गड़ुआ लै जलको तब * सो ऊदन को दियो गहाय ॥
गड़ुआ छीनिलियो आल्हाने * औ सुनमाको दयो गहाय ॥
भागिके सुनमा गइ फुलवापै * अपने कन्त छुड़ावौ जाय ॥
बोली फुलवा तब खिरकी ते * दादा मानौ बात हमारि ॥
अब नहिंमारौ मेरे बालमको * बेड़ा कौनु लगै हैं पार ॥
यह सुनि आल्हा बोलनलागे * बैठी राज करहु घर माहिं ॥
इन ने मारो है इन्दल को * ताते दिहैं जान से मार ॥
बोले आल्हा तब गुस्सा हुइ * चाहे कोटिन करौ उपाय ॥

सुनतै क्रोध कियो ऊदन ने * औ खम्भाको लयो उखारि ॥
ऊदन मनमें सोचन लागे * जेठो भाई बाप समान ॥
जो हम इनपर हाथ चलैहैं * तो रजपूती जाय नशाय ॥
थकिके आल्हा ने तुरतै तब * जल्लादन को लौ बुलवाय ॥
जल्दी लै जाउ तुम ऊदनको * नैन करेजो लाओ निकारि ॥
सुनि जल्लाद चले जल्दीतब * बघऊदन को साथ लिवाय ॥
पहुँचे जबहीं रनिसुनमाढिग * तब सुनमाने कही सुनाय ॥
हाथ न डरिहौ तुम ऊदन पर * हिरना एक मारि बन माहि ॥
नैन करेजो लै ताको तुम * स्वामिहि जाय दिखैयोलाय॥
इतनी कहिके कराठ हार लौ * जल्लादन को दओ गहाय ॥
पुनि जल्लाद चले आगे जब * तब फुलवाने कही सुनाय॥
हाथ चलैयो ना स्वामी पर * अस कहि तोड़ा दौ पकड़ाय ॥
लै जल्लाद चले आगे को * बनमें पहुँच गये ततकाल ॥
झारखराडमें जब पहुँचे सब * तव ऊदन ने कही सुनाय ॥
छुरियालावौतुमअपनी म्वहि * नैन करेजो देउँ निकारि ॥
सुनि जल्लाद कहौ ऊदन ते * अब तुम यहँते जाउ बराय ॥
अब ना जैयो नगर महोबे * नहि नशि जैहैं काम हमार॥
यहकहि हिरना यक मारो तहँ * नैन करेजो लयो निकारि ॥
जायदिखाय दियो आल्हाको * औ राजा तै पहुँचे जाय ॥
हाल सुनायो चन्देले को * सुनतै गिरे रजा परिमाल ॥
मूर्छा आय गई राजा को * पाई खबर मल्हनदे रानि ॥
मल्हना रोई रङ्गमहल में * तब सब रोय उठो रनिवास ॥
होश भयो जब परिमालै को * तुरत पालकी लई मँगाय ॥
तापर चढ़ि पहुँचे आल्हा तै * उठि आल्हाने कियो सलाम ॥

नहिं सलाम लीन्हों राजा ने * औ गुस्साहुइ कही सुनाय ॥
तुमने मरवायो भाई को * अबको करिहैं आय सहाय ॥
नैन करेजो निकरायो तुम * बारम्बार तुमहिं धिरकार ॥
बिना लहुरवा के महुवे में * को असने में ऐहैं काम ॥
छोटे भाई उदयसिंह बिन * अब माटी के मोल बिकाउ ॥
मन में कायल भै आल्हा तब * समुहें ना दै सके जवाब ॥
बात नाहिं निकसी मुखते कछु * तब ललकारि कही परिमाल ॥
अपने लड़िका के कारण तुम * कोखिको भाई दयो गँवाय ॥
लड़िका तौ फिर भो मिल जैहैं * मिलिहैं नाहिं लहुरवा भाय ॥
यह सुनि आल्हा अति लज्जित हुइ * आँखिन पट्टी लई बँधाय ॥
अधमुख गिरे जाय ऊभे में * काहुइ मुक्ख दिखैहैं नाहिं ॥
इतनी बात इतै छोड़ौ तुम * अब आगे की सुनौ हवाल ॥
मन में ऊदन सोचन लागे * सिरसा बसइ बीर मलिखान ॥
समय बितैहैं तहँ कछु दिन हम * करिके कासु चाकरी क्यार ॥
राह पकरि लइ गढ़ सिरसा की * नंगे पाँव उघारे मूड़ ॥
देवहि बुलवायो सुनमा ने * औ ढेवा से कही सुनाय ॥
जायकै लावो सुधि ऊदन की * औ फिरि हमहिं सुनावो आय ॥
यह सुनि ढेवा तुरतै चलि भौ * घोड़ा मनुरथा भयो सवार ॥
उदया ठाकुर तुमरघार को * सोऊ संग भयो तैयार ॥
दोनों चलि भै दशपुरवा ते * पहुँचे झारखण्ड में जाय ॥
गाय चरावत रहे बरदिया * तिनते ढेवा कही सुनाय ॥
तुमने देखो कहुँ ऊदन को * तब उन तुरतै दियो जवाब ॥
नंगे पायँन अरु नंगे शिर * अबहीं गये उदयसिंह राय ॥
सिरसा ओर जाउ ढूँढन तुम * सुनतै दोउ चले घबराय ॥

पहुँचे ऊदन जब सिरसा में * दरमानी ते कही सुनाय ॥
जाय कहौ तुम नर मलिखेसे * द्वारे खड़े उदयसिंह राय ॥
सुनिदरमानीगो मलिखेढिग * औ ऊदन को कहो हवाल ॥
सुनतै मलिखे दियो हुक्म तब * फाटक बन्द देहु करवाय ॥
लौटिकै आयो दरमानी तब * फाटक बन्द दिये करवाय ॥
तौलौं ढेबा मिलो आय तहँ * पूछन लाग बात जिय क्यार ॥
ऊदन कहन लाग ढेबा ते * दादा कछू कही ना जाय ॥
भई सहायक सुनमा भोजी * ताने लीन्हो जीव बचाय ॥
बहुत आसरा थो मलिखे को * कछुदिन करिहैं जाय मुकाम ॥
हमते रूठि गये सोऊ अब * फाटक बन्द दियो करवाय ॥
सम्पति में सब साथ देत हैं * नहिं कोउ देत बिपतिमें साथ ॥
हम पर रूठे नारायण हैं * यह हम जानि लई मनमाहिं ॥
इतनी सुनतै नर ढेबा तब * बघऊदन से कही सुनाय ॥
धीरज धारौ अपने मनमें * बिपदा हुइहैं दूरि तुम्हार ॥
सङ्ग तुम्हारे हमहूँ रहि हैं * नाहीं छुड़िहैं साथ तुम्हार ॥
पूछन लागे बघऊदन तब * दादा जतन देउ बतलाय ॥
कहँ अब बासकरहिंचलिकेहम * चहुँदिशि बैरी बसत हमार ॥
तापर ज्वाब दियो ढेबा ने * तुम सुनिलेउ लहुरवा भाय ॥
नरवरगढ में मकरन्दी घर * चलिके कछुदिन करहुमुकाम ॥
सुनतै ऊदन अति प्रसन्न हुइ * नरवरगढ को भए तयार ॥
तुमरधार को उदया ठाकुर * सोऊ संग भयो तैयार ॥
तीनौ मिलिकेतुरतै चलिभये * औ नरवरगढ़ पहुँचे जाय ॥
जायके बैठे यक कुआँटा पर * औ ढेबा से लगे बतान ॥
यक दिन आये थे नरवर में * छकड़न माया दई गँवाय ॥

यक दिन आये थे नरवरमें * लश्कर लाय आपने साथ ॥
युद्ध जीतिकेब्याह कियो हम * तब यश छाय रहो चहुँओर ॥
आजु बिपतिमें हम आये यहँ * नाहीं पास ढाल तलवार ॥
यहि बिधिबातकरतकुअँटापर * मालिन तहाँ पहूँची आय ॥
देखत दूरिहि ते सुबहा करि * आई पास उदैसिंह क्यार ॥
पूछन लागी तब हिरिया वह * सुन परदेशी बात हमार ॥
कहाँ से आये औ जैहौ कहँ * साँची बात देउ बतलाय ॥
बोले ऊदन तब हिरिया ते * मालिनि सुनौ हमारी बात ॥
नगर महोबे के रहवैया * बघऊदन है नाम हमार ॥
माया लाये थे यक दिन हम * सो तुम्हरे घर दई गँवाय ॥
तुमहूँ भूलि गई बिपदा में * हम पर रूठि गये भगवान ॥
पूछन लागो तब हिरिया तहँ * ऊदन सुनौ हमारी बात ॥
घोड़ा बेंदुला कहँ छाँड़ो तुम * औ कहँ तजी कटीली फौज ॥
बात बनाई तब ऊदन ने * हम पर चढ़े बीर चौहान ॥
महुबो लूटि लियो पिरथीने * तहँ सब लूटि लियो सामान ॥
पाँचो घोड़ा बड़ी राशिके * हथिपचशावद लियो खुलाय ॥
सब हथियार लूटिअपने सङ्ग * रानिन डोला लिये फँदाय ॥
जीव आपनो लै भागे हम * औ नरवर में पहुँचे आय ॥
सुनी बात जब यह ऊदनकी * हिरिया रङ्गमहल में जाय ॥
हाल बताओ बघऊदन को * सो सुनि रानी लगी बतान ॥
यह नहिं आवत है हमरे मन * तब हिरिया ने कहो सुनाय ॥
बात हमारी साँच मानि लेउ * जो तुम हुक्म देउ फरमाय ॥
सङ्गहि लावौं मैं ऊदन को * तौ लौं मकरन्द पहुँचे आय ॥
बोली रानी मकरन्दी से * बेटा सुनौ हमारी बात ॥

सुनियत आये बघऊदन हैं * ब्याही जिनको बहिन तुम्हार॥
अबहीं जावो तुम कुअँटा पर * लावो खबरि उदैसिंह क्यार ॥
इतनी सुनतै मकरन्द चलिभे * औ कुअँटा पर पहुँचे जाय ॥
जबहीं देखो तहँ ऊदन को * मकरन्द छाती लियो लगाय॥
हुइ उदास पूछो मकरन्द तब * ऊदन साँच देउ बतलाय ॥
फौज कटीली कहँ छौंड़ो तुम * औ कहँ तजो बेंदुला घाड़ ॥
सुनतै ज्वाब दियो ऊदन ने * मकरन्द सुनो हमारो बात ॥
पृथीराज चढ़िके दिल्ली ते * सिगरो महुबो लियो लुटाय ॥
बहिनि तुम्हारी औ सुनमाके * दोनौं डोला लियो फँदाय ॥
सुनतै बोलो मकरन्दो तब * तुम्हरं जियत भयो यह हाल ॥
लानति ऐसी रजपूतो पर * तेगा बाँधन को धिरकार ॥
चलौ साथ हमरे अबहीं तुम * लश्कर सबै लेउ सजवाय ॥
चलिके दिल्ली लुटवैहैं हम * दोनौं डोला लिहैं छिनाय ॥
सुनतै ऊदन बहुत खुशी हुइ * मनमें परो भरोसा आय ॥
इन्दल बेटा मिलि जैहैं अब * मकरन्द सबको संग लिवाय ॥
आये तुरतै रङ्गमहल में * रानी भोजन किये तयार ॥
उदया ठाकुर मकरन्दी अरु * ढेबा और उदैसिंह राय ॥
बैठे चारो जब चौका में * रानी भोजन धरे अगार ॥
कौर उठावत हो ऊदन के * नैनन बही नीर की धार ॥
यह गति देखि कही रानी तब * ऊदन धीर धरौ मन माहिं ॥
पिरथी लूटो जो महुबे को * हम दिल्ली को लिहैं लुटाय ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * साँची बात सुनो महरानि ॥
करो बहाना है हम ने यहँ * महुबे राज करत परिमाल ॥
पीठी खोलि दई ऊदन ने * औ रानी को दई दिखाय ॥

बाँसन मारो म्वहिं आल्हा ने * यह कहि हाल दियो बतलाय ॥
जियत महोबे हम ना जैहैं * कागा मरे हाड़ लै जाय ॥
सुनतै समुझायो रानी ने * धीरज धरो उदैसिंह राय ॥
काम तुम्हारो पूरन हुइ है * औ नशि जैहैं दुःख अपार ॥
भोजन करिके चारो चलिभे * औ बैठक में बैठे जाय ॥
बोले ऊदन नर ढेबा ते * भैया सगुन देउ बतलाय ॥
कहँ चलि ढूँढैं हम इन्दलको * कैसे मिलै परेउना लाल ॥
यह सुनि ढेबा सगुन विचारो * औ ऊदन से कही सुनाय ॥
भेष बनावो तुम योगिन को * योगिन गुदरी लेउ सिलाय ॥
योगी बनिके चलि ढूँढौतब * तबहीं मिलै परेउना लाल ॥
इतनी सुनतै बघऊदन ने * मकरन्दी से कही सुनाय ॥
थान मँगाय लेउ मलमल के * चारि गुदरियाँ लेउ सिलाय ॥
इतनी सुनतै मकरन्दी ने * मलमल थान लयो मँगवाय ॥
चारि गुदरियाँ सिलवाई अस * जिनमें छिपैं ढाल तरवार ॥
बीस पर्तकी सिलीं गुदरियाँ * शोभा कछू कही ना जाय ॥
टोपीसिलाय दियो जोगिनके * जिनमें रतन दिये जड़वाय ॥
ऊदन ढेबा उदया ठाकुर * चौथे मकरन्द भये तयार ॥
तिलकलगायोनिज मस्तकमें * औ देही में भस्म लगाय ॥
कड़ा सोवरन के हाथन महँ * गुदरी पहिरि लई ततकाल ॥
लई बाँसुरी बघऊदन ने * मकरन्द डमरु लई उठाय ॥
लियो मँजीरा तब उदया ने * ढेबा खजरी दई बजाय ॥
चारौ बाजा बाजन लागे * गावन लगे अनेकन राग ॥
गावत आये दरवाजे पर * तब रानी ने सुनी अवाज ॥
आई रानी दरवाजे पर * सूरत देखि योगियन क्यार ॥

मोहित हुइके रानी बोली * जोगिउ सुनौ हमारी बात ॥
बहुत पियारे तुम लागत हौ * कछु दिन यहाँ करौ बिसराम ॥
बोले मकरन्द तब रानी से * माता सुनौ हमारी बात ॥
नहिंपहिचानो तुम माता म्वहिं * हम मकरन्दो पुत्र तुम्हार ॥
जोगी रूप धरो हमने अब * ढूँढन हेतु परेउना लाल ॥
बहुत खुशी हुइके रानी ने * उन जोगिनसे कही सुनाय ॥
काम तुम्हारो पूरन हुइ हैं * बेटा सुनौ हमारी बात ॥
झुन्नागढ़ जैयो पहले तुम * जहँ सेनापति ससुर तुम्हार ॥
करियो खोज जाय इन्दलकी * सब बनि जैहैं काम तुम्हार ॥
कुसुमा रानी मकरन्दो की * सो भीतर से लगो बतान ॥
घर घर जादू है झुन्नागढ़ * तिरिया जादू दिहैं चलाय ॥
पुड़िया चारि लई जादू को * सो मकरन्दे दई गहाय ॥
मुख में दाबे ते पुड़िया यह * जादू एक नाहि अनियाय ॥
लैके पुड़िया मकरन्द चलिभे * सब मिलि चले मोह बिसराय ॥
पाँच रोज की मंजिल करिकै * झुन्नागढ़ में पहुँचे जाय ॥
जबहीं पहुँचे सब पनिघटपर * तुरतै बाजा दिये बजाय ॥
चारौ जोगी गावन लागे * तहँ सब मोहि गये नरनारि ॥
मोहित हुइगइँ पनिहारिन तब * तहँ पर एक पहर हुइजाय ॥
सोची बाँदी रानि कुशला की * गागरि अपनी लई उठाय ॥
जबहीं पहुँची रंगमहल में * सब सखियनसे लगो बतान ॥
चारि योगिया अस आये हैं * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
इतनी उमिरि भई हमरी यहँ * अस नहिं जोगी परे दिखाय ॥
सुनतै दौरि परीं सखियाँ सब * देखो रूप जोगियन क्यार ॥
लैके जादू उन जोगिन पर * डारन लगीं मोहि सब नारि ॥

कोऊ बात करत मकरन्द ते * कोउ ऊदन ते लगीं बतान ॥
कोऊ पूछै नर ढेवा ते * कोउ उदया तै पहुँची जाय ॥
मूड़ मुड़ाय लियो काहे तुम * जोगिउ हाल देउ बतलाय ॥
जादू चलो नाहिं जोगिन पर * तब आपुस में लगीं बतान ॥
पक्के जोगी यह चारौ हैं * इनते कछु पेश ना जाय ॥
चलिभइँ सखियाँ तब कुँ अटासे * रानी सुनहु बात मनलाय ॥
बोलींसब मिलि रनिकुशलासे * रानी सुनहु बात मनलाय ॥
चारि जोगिया अस आये हैं * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
दिये हुक्म तब रनिकुशलाने * अबहीं जोगिन लावो बुलाय ॥
सखी एक गइ उन जोगिनपै * तुरतै लाई साथ लिवाय ॥
आये जोगी जब द्वारे पर * अपने बाजा दिये बजाय ॥
गावन लागे चारौ जोगी * सुनतै मोहि गईं महरानि ॥
कुशला रानी पूछन लागी * जोगिन सुनौ हमारी बात ॥
कौन तपस्या खंडित हुइ गइ * बारे डारे मूड़ मुड़ाय ॥
कहाँसे आये कहँ जैहौ अब * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
यह सुनि ऊदन ज्वाब दियोतब * हमरे लिखा कर्म में जोग ॥
कौन मिटैया है ताको अब * बारे मरिगे बाप हमार ॥
मूड़ मुड़ाय लियो तबहीं हम * है बंगाला देश हमार ॥
हिंगलाज को अब जैहैं हम * भिक्षा हमहिं देउ मँगवाय ॥
बोली रानी तब ऊदन ते * तुमयहँ कछु दिन करौ मुकाम ॥
बोले उदया तब रानी ते * तुम्हरी अक्किलिगई हिराय ॥
बहता पानी रमते जोगी * कोइ नहिं इन्हैं सकतबिलमाय ॥
फिरिके रानी बोलन लागी * जोगिउ करौं रसोईं त्यार ॥
बिलमिजाउ कहुतुमहियनापर * फिरि तुम जेइँ लेउ जिवनार ॥

सुनियहज्याबदियोमकरन्दतब * है मकरन्दी नाम हमार ॥
देबा ऊदन उदया ठाकुर * तीनिहु तुम्हरे खड़े अगार ॥
पूछन लागी रनिकुशला तब * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
जोगी वेष धरो काहे तुम * तब मकरन्द सुनायो हाल ॥
बोली रानी मकरन्दी ते * पूजन करौं अंबिका माय ॥
बड़ी मानता यह देवी की * जिनते पूछि लेउ सब हाल ॥
यह मनमानी तब ऊदन के * रङ्गमहल में कियो मुकाम ॥
सुनी खबरि जब सेनापति ने * सुनतै मिले आय महराज ॥
कांतामल साले मकरन्द के * सोऊ आय मिले महराज ॥
उठिकै ऊदन गै मढ़िया में * पूजा करी अंबिका क्यार ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तब * माता पतो देउ बतलाय ॥
इन्दल खोइ गये गंगा पर * सो यह संकट देउ मिटाय ॥
बोली आभा जगदम्बा की * ऊदन बलख बुखारे जाउ ॥
राज कुमारी चितरेखा है * हरिलै गई परेउना लाल ॥
सुआ बनाय राखो पिंजरा में * दिनमें लीजो पता लगाय ॥
जलदी चले जाउ ऊदन तुम * तुम्हरो काम सिद्धहुइजाय ॥
सुनिप्रणामकरिऊदनिचलिभे * औ रानी ढिग पहुँचे जाय ॥
हाल सुनाय दियो रानी को * तब हँसि कही कुशलदे रानि ॥
काम तुम्हारो पूरन हुइहै * पै तहँ जादू अधिक अपार ॥
यह कहि कांता मलहिं बुलाओ * तिनते कहन लागि महरानि ॥
जाउ साथ तुम मकरन्दी के * औ इन्दल को लेउ ढुँढ़ाय ॥
सुनि कांतामल लइ गुदरीतब * भेष जोगिया लियो बनाय ॥
पुड़िया संग लई जादू की * साथै कूच दियो करवाय ॥
मंजिल करके पन्द्रह दिन की * पहुँचे बलख बुखारे जाय ॥

पाँचौ पहुँचे जब फाटक पर * अपने बाजा दिये बजाय ॥
अलख जगाई जब जोगिनने * तब दरमानी कही सुनाय ॥
कौन देश ते तुम आये हो * आगे कौन देशको जाउ ॥
बोले ऊदन दरमानी से * है बंगाला देश हमार ॥
आगे जैहैं हिंगलाज को * फाटक जल्द देउ खुलवाय ॥
सुनो नाम हम यहि राजाको * ताते मँगिहैं शहर तुम्हार ॥
फाटक खोलो दरमानी तब * जोगी निकरि गये वा पार ॥
पहुँचे जबहीं चौराहे पर * तब फिरि बाजा दिये बजाय ॥
बजी बाँसुरी बघऊदन की * ढेबा खजरी दई बजाय ॥
औ इकतारा कांतामलको * मकरन्द डमरू दई बजाय ॥
बजो मँजीरा तहँ उदयाको * गावन लगे बहुत से राग ॥
मोहित हुइगै नरनारी सब * गलियन दई मोहनी डारि ॥
शाल दुशाला छल्ला मुँदरी * बहुतै लागो मिलन इनाम ॥
डगरत चलिभै पाँचौ जोगी * औ पनिघट पर पहुँचे आय ॥
मोहित हुइगईं पनिहारी सब * पानी भरिबो गईं भुलाय ॥
तारा बाँदी सोचन लागी * यह रानी ते कहिहौं जाय ॥
एक पहर पनिघट पर हुइगो * यह कहि गागरि लई उठाय ॥
पहुँची बाँदी रङ्गमहल में * तब रानी ने कही रिसाय ॥
देर लगाई क्यों पनिघट पर * तेरो डरिहौं पेट फराय ॥
हाथ जोरि बाँदी बोली तब * हमरी खता नाहिं महरानि ॥
बालक आये हैं जोगिन के * शोभा कछु कही ना जाय ॥
रूप जोगियन के देखे ते * तनकी सुरत जात बिसराय ॥
हुक्म तुम्हारो जो पाऊँ मैं * अबहीं उनको लाउँ लिवाय ॥
सुनतै रानी हुक्म दियो तब * बाँदी लाई तुरत बुलाय ॥

आये जोगी जब ड्योढ़ी में * देखो रूप योगियन क्यार ॥
बोली रानी तब बाँदी से * महराजन के राजकुमार ॥
यह नहिंलड़िकाहैं जोगिनके * तेरा पेट फरैहौं आय ॥
इनमें लच्छण सब चत्रिन के * काहे लाई इनहिं लिवाय ॥
इतनी सुनतै ऊदन बोले * है बंगाला देश हमार ॥
कुटी हमारी है गोरखपुर * बारे मर गये बाप हमार ॥
माता हमरी तब बिधवा भइ * सूखा परो देश में आय ॥
जोगिन हाथ बेंचि हमकोतब * दीन्हों हमहिं रूप करतार ॥
कहाँ छिपावैं रूप जाय हम * यह सुनि रानी कही सुनाय ॥
तुमने पाये कहाँ रत्न यह * जो गुदड़िन में दिये जड़ाय ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने * रानी बचन करौ परमान ॥
अलख जगाई हम कनवजमें * राजा जैचन्द के दरबार ॥
मोहित हुइ के महराजा ने * पाँचो गुदड़ी दई सिलाय ॥
बोली रानी तब ऊदन से * हमने जानि लियो अब हाल॥
ठहरि जाउ तुम दरवाजे पर * मैं बेटी को लेउँ बुलाय ॥
देखि तमाशा बेटी लेवै * यह कहि बाँदिहि दओ पठाय ॥
संगै लावौ तुम बेटी को * सुनतै बाँदी लाइ लिवाय ॥
देखो बेटिहि जब रानी ने * तब जोगिनसे कहो सुनाय॥
राग सुनावो अब बावा तुम * बेटिहि नाच देउ दिखलाय ॥
गावन लागे तब जोगी तहँ * नाचे तहाँ उदैसिंह राय ॥
उठिके बेटी ने ऊदन को * बीरा तुरत दियो पकराय ॥
बेटिहि देखो तब ऊदन जब * औ बीरा को लियो चवाय ॥
मुर्छा खाय गिरे ऊदन जब * तब रानी ने कही सुनाय ॥
कैसे कैसे यह जोगी हैं * यहतो छलिया परत दिखाय ॥

देखि रूप मेरी बेटी को * जोगी गिरो धरनि पर जाय॥
यह सुनि ज्वाब दियो ढेबाने * रानी कहाँ तुम्हारो ज्ञान॥
दियो आय बीरा बेटी ने * तामें कडुइ तमाखु डारि॥
तासुपीक लगि गइ जोगीके * जोगी गिरो धरनि मुरझाय॥
बहुतै भूखो यह जोगी है * माँगत तीनि पहर भये आजु॥
चक्कर आय गयो जोगी को * याको शीश गयो सन्नाय॥
इतनी सुनतै बेटी बोली * माता होवै हुक्म तुम्हार॥
धरी मिठाई सतखण्डा पर * जोगिहि अबहीं देउँ जिमाय॥
दियो हुक्म तुरतै रानी ने * बेटी जोगिहिं संग लिवाय॥
जबहीं पहुँची सतखण्डा पर * तुरतै पिंजरा लियो लिवाय॥
सुआते मानुषकरिइन्दल को * औ इन्दल से कही सुनाय॥
हमने जानी तुम सुन्दर हौ * नहिं कोउ सुंदर तुमहिं समान॥
सो तुम देखो यह जोगीको * तब इन्दल ने कही सुनाय॥
तुमको धोखो है जोगी को * यह तौ चाचा खड़े हमार॥
करि लेउ परदा तुम चाचासे * यह सुनि कही उदैसिंह राय॥
परदा त्यहि दिन करवैयोतुम * ज्यहिदिनहोवै ब्याह तुम्हार॥
जो सुनि पैहैं अभिनन्दनयह * मुश्किल हुइहै जान हमार॥
घरसे निकसे हम जोगी हुइ * तुम्हरे कारण शीश घुटाय॥
नगर २ में फिरि आये हम * यहँ पर ढूँढि मिले तुम आय॥
बहुत दुखी हैं सब महुबे में * सो तुम चलो हमारे साथ॥
बोले इन्दल तब ऊदन से * चाचा सुनो बात मन लाय॥
आज्ञा माँगि लेउ रानी ते * अबहीं चलिहौं साथ तुम्हार॥
यह सुनि बोले बघऊदन तब * बेटी सुनौ हमारी बात॥
माँगे देउ मोहिं इन्दल को * तब बेटी ने कही सुनाय॥

बड़ी कठिनता से हमको यह * स्वामी मिले आय संसार ॥
सो हम देहैं कस ब्याहे बिन * ताते ब्याह लेउ करवाय ॥
बोले ऊदन तब बेटी से * हुइहै ब्याह धूम के साथ ॥
ऐहैं इन्दल जब ब्याहन यहँ * चलिहै कठिन यहाँ तलवार ॥
यह सुनि बोली चितरेखा तब * चाचा सुनौ हमारी बात ॥
बाप हमारे बहुत प्रबल हैं * तैसेइ सातौ भाइ हमार ॥
है अधिकार यहाँ जादू को * ताको करिहौ कौन उपाय ॥
इतनी सुनतै ऊदन तड़पे * औ बेटी से कही सुनाय ॥
कलकत्ता से सेतबन्ध लौं * बाजी टाप बेंदुला क्यार ॥
गर्ब न राखो केहु राजा को * जानत हमहिं सकल संसार ॥
बाप तुम्हारे को बँधवावौं * सातौ भैया बाँधि तुम्हार ॥
सातौ भाँवरि डरवैहैं हम * तब बेटी ने कही सुनाय ॥
गङ्गा करिलेउ तुम चाचा जो * तौ हम जानि लेइँ सतभाव ॥
इतनी सुनतै बघऊदन ने * तुरतै गङ्गा लई उठाय ॥
नीको बेटी जहँ जानत हम * जोरा जोरी करत बिवाह ॥
यह प्रण हमरो सत्यसत्य है * बेटी समुझि लेउ मन माहिं ॥
इतनी बात सुनत बेटी ने * साँची बात मान ततकाल ॥
सुआ बनाय दियो इन्दल को * औ पिंजरा में दियो बिठाय ॥
लैके पुड़िया मानुष वाली * सो ऊदनि को दई गहाय ॥
नगर के बाहर जब जैयौ तुम * तबहीं मानुष लिऔ बनाय ॥
यहकहि पिंजरादओऊदन तब * सो लै चले उदैसिह राय ॥
नीचे आये बघऊदन तब * भिक्षा दई आय महरानि ॥
जोगी चलिभयेतबड्योढी से * अपनो कूच दओ करवाय ॥
नगर के बाहर जोगी आये * जादू पुड़िया दई चलाय ॥

मानुष करिके तब इन्दल को * तहँते चलिभे सङ्ग लिवाय ॥
तबहीं पहुँचे गढ़ सिरसा में * उदया ठाकुर गयो अगार ॥
ताने खबरि करी मलिखे को * आयो तुरत वीर मलिखान ॥
करि प्रणाम तब बघऊदनने * सिगरो हाल दयो बतराय ॥
फिरिके बोले उदयसिंह तब * दादा सुनहु बीर मलिखान ॥
आल्हा मारो म्वहिं बाँसन ते * औ जल्लादहि दियो गहाय ॥
दहिने ह्वइगइ तब सुनमा तहँ * ताने दीन्हों जीव बचाय ॥
बड़ो आसरा म्वहिं तुम्हरो थो * सिरसा बसत वीर मलिखान ॥
सो तुम दुख में पीठी दैगये * फाटक बन्द दिये करवाय ॥
साथी होत सबै सम्पति में * नहिं कोउ देत विपतिमें साथ ॥
दादा जावो अब महुबे को * औ इन्दल को साथ लिवाय ॥
जाय मिलैयो तुम आल्हाको * हम नरवर गढ़ रहिहैं जाय ॥
सजि बरात ऐहैं इन्दल की * तब हम चलिहै संग तुम्हार ॥
यहसुनिमचलिगये इन्दलतहँ * हम नहिं छुड़िहैं संग तुम्हार ॥
तब समुझाय दियो ऊदन ने * बेटा सुनो हमारी बात ॥
सजि बरात ऐहैं तुम्हरी जब * तब मिलि जैहैं संग तुम्हार ॥
हाल सुनायो ना काहू को * को म्वहिं मिले उदैसिंह राय ॥
यहकहि पाती यक सुनमाँको * दूजी फुलवा लिखो बनाय ॥
दोनौं पाती दै इन्दल को * नरवर गढ़को कियो पयान ॥
कांतामल औ मकरन्दी तब * सोऊ भये उदैसिंह साथ ॥
देबा इन्दल को लीन्हें संग * महुबे चले बीर मलिखान ॥
पहर एक में महुबे पहुँचे * जहँ दरबार चन्देले क्यार ॥
करी बन्दगी तब राजा को * औ इन्दलको कियो अगार ॥
देखो राजा जब इन्दल को * तब मलिखे से कही सुनाय ॥

आल्है देउ जाय इन्दल को * बघऊदन को देयँ मँगाय ॥
चलिभे मलिखे लै इन्दल को * पहुँचे दशपुरवा में जाय ॥
हाथ जोरि इन्दल बोले तब * चाचा हुक्म देउ फरमाय ॥
माताचाचिहि मिलि आवौं मैं * मलिखे हुक्म दश्रो तत्काल ॥
आज्ञा पाई नरमलिखे की * इन्दल रंगमहल में जाय ॥
समुहैं सुनमा के इन्दल गे * दोनौं हाथ जोरि रहिजाय ॥
शीश लचाय लयो सुनमाने * तब इन्दलने कही सुनाय ॥
बहुत दिनामें हम आये हैं * काहे माता रहीं रिसाय ॥
बोली सुनमा तब गुस्सा हुइ * तुम समुहे से जाउ बराय ॥
बिन कसूर तुम्हरे कारण ते * मारे गये उदयसिंह राय ॥
लैके पाती तब ऊदन की * इन्दल सुनमैं दई गहाय ॥
पाती दुसरी दइ फुलवा को * पढ़तै बहुत खुशी हुइ जाय ॥
आए इन्दल जब मलिखे पै * तब चलिभये बीरमलिखान ॥
आयके पहुँचे दशपुरवा मे * औ आल्हा ते कही सुनाय ॥
दादा देखो तुम समुहे अब * औ ऊदन को देउ मँगाय ॥
देखि इन्दलहि कायल हुइकै * आल्हा लई कटारी काढ़ि ॥
पेड़ मारि अबहीं मरि जैहौं * माहिल तेरो बुरो हुइ जाय ॥
तुरत कटारी मलिखे छीनी * औ आल्हा से लगे बतान ॥
हाल सुनौतुम अब इन्दलको * बलख बुखारे को उमराव ॥
राजा अभिनन्दन की बेटी * हरि लैगई इन्दलहि आय ॥
हमहिं स्वप्न दीन्हों देवी तब * हमने धरो जोगिया भेष ॥
पहुँचि तहाँ हम अलखजगाई * लाये ढूँढि इन्दलहि आय ॥
चितरेखा ने ब्याह करनहित * हमसे गंगा लई कराय ॥
करौ ब्याहअब तुम इन्दलको * औ मदुमी देउ दिखलाय ॥

हमहूँ देखिहैं बिन ऊदन के * कैसे लैहो ब्याह कराय ॥
इहिविधि बहुतैकहा सुनीकरि * सिरसा गये वीर मलिखान ॥
बहुत उदास भए आल्हा तब * लेटे रतन पलँग पर जाय ॥
सुनमा आई तब आल्हा ते * औ आल्हा से कही सुनाय ॥
अबक्योंगाफिलतुम सोवतहो * डटि इन्दल को करो बिवाह॥
तुरतै ज्वाब दियो आल्हा ने * हमसे ब्याह होनको नाहिं ॥
बलख बुखारा नगरकठिन है * तहँ जादूको अधिक प्रचार ॥
ताते चुप हुइ घर में बैठो * रानी मानो कही हमार ॥
हाथजोरि बोली सुनमा तब * स्वामी पकरौं चरण तुम्हार ॥
सजो बरायत तुम इन्दल की * औ बेटा को करो बिआहु ॥
जो ना करिहौ ब्याह पुत्रको * तुमको हँसिहैं सकलजहान ॥
खबरि भेजिदेउगढ सिरसाको * आवैं साजि बीर मलिखान ॥
भेजहु न्यौतो सब राजनको * सो सब जैहैं संग तुम्हार ॥
देवर ऊदन को तुमने क्या * याही बलपर दियो मराय ॥
भेष जनानो करि बैठो घर * लहँगा पहिरि लेउ ततकाल ॥
बस्त्र आपने हमको देदेउ * औ देदेउ खंग अरु ढाल ॥
देखि मर्दुमी लेउ हमरी तुम * हम चढ़ि जैहैं साजि बरात ॥
ब्याहिके लैहैं सुत इन्दल को * तुम घर बैठि रहो महराज ॥
पानमें चूना जस लागत है * डारै खैरि लाल हुइ जात ॥
बात लागि गइ तसआल्हा के * सूखी निकसि गई वा पार ॥
तुरतै आल्हा उठि बोले तब * रानी बचन तुम्हारो मानि ॥
सजि बरात हम लै जैहैं अब * लैहैं ब्याह परेउना लाल ॥
इन्दल हरण भयो पूरण यह *लिखिशिवचरणदियोसमुझाय॥
समयजानि आल्हा गावौतुम * मनमें सुमिरि राम रघुराय ॥

॥ इन्दल हरन सम्पूर्ण ॥

* श्रीः *

अथ

आल्ह खण्ड

* इन्दल का बिवाह *

(बलख बुखारे की लड़ाई)

* सुमिरनो *

* कुण्डलिया *

सुख से विपदा है भली, जो थोड़े दिन होय ।
इष्ट मित्र अरु बन्धु गण, जानि परै सब कोय ॥
जानि परै सब कोय, बात नहिं पूछै कोई ।
जब संकट परिजाय, मित्र होवे रिपु सोई ॥
नारायण धरि ध्यान, आप मनको समुझावै ।
कछु दिन में सुख होय, सदा नहिं बिपति सतावै ॥ १ ॥

* सवैया *

ज्ञान घटै ठग चोर के संग से, रोष घटै मनके समुझाये ।
पाप घटै कछु पुराय किये, अरु रोग घटै कछु औषध खाये ॥
प्रीति घटै नित माँगन से, अरु नीर घटै ऋतु ग्रीषम आये ।
नारि प्रसंग से जोर घटै, यम त्रास घटै हरिके गुण गाये॥२॥

* आल्हा *

बजो बाँसुरी बृन्दाबन में * मधुबन मोर शब्द सुख दैन ॥
सबै गोपिका उठि उठि धाईं * जब श्रीकृष्ण बजाई बैन ॥
उलटे भूषन बसन धारिके * पहुँची जहाँ कृष्णछबि धाम ॥
कीन्हों रास विलास कृष्णने * छायो सुयश जगत घनश्याम ॥
कृष्णचन्द्र छबि परम मनोहर * निशिदिनकरहुध्यान मनलाय ॥
छोड़िसुमिरनी अबलिखिहौंमैं * इन्दल केर ब्याह समुझाय ॥
लगी कचहरी नुनिआल्हाकी * अजगर लागि रहा दरबार ॥
ढेबा बहादुर दहिने बैठो * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
सोचैं आल्हा अपने मनमें * ब्याहन जायँ परउना लाल ॥
लिखिलिखिपातीसबराजनको * सबको लिखो नाम ततकाल ॥
बन्द लिफाफा में कीन्हीं सब * औ हरकारा लिये बुलाय ॥
यक हरकारा बौरीगढ़ को * यक दिल्ली को दियो पठाय ॥
यक हरकारा नैनागढ को * यक नरवरगढ दियो पठाय ॥
यक हरकारा झुन्नागढ़ को * यक पथरीगढ़ दियो पठाय ॥
जितने राजा ब्योहारी थे * सबको न्यौतो दियो पठाय ॥
खबरि पठाई गढ सिरसा को * आयो साजि वीर मलिखान ॥
राजा आये देश देश के * जहँ तहँ सबने करो मुकाम ॥
बोलि नगड़ची को बीरा दै * सोने कड़ा दिये डरवाय ॥
हुक्म दै दियो तब आल्हा ने * लश्कर जल्दी होय तयार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * चत्री होन लगे तैयार ॥
भओ बुलौआ चूड़ामणि को * पंडित बेदी दई रचाय ॥
मोतिन चौक पूरि आँगन में * सोने कलश दओ धरवाय ॥
मल्हना दिवल तिलका रानी * रानी सबहिं चन्देले क्यार ॥

मिलिके कीन्हे नेग जोग सब * महलन भयो मंगलाचार ॥
पंडितबुलवावो तब इन्दल को * औ पाटापर दियो बिठाय ॥
गौरिगणेश पुजाय भलीविधि * सात सुहागिन तेल चढ़ाय ॥
फिरि नहवाय पिन्हाय वस्त्र सब * शिरपर मौर दश्रो धरवाय ॥
बैठि पालकी पर कुँअटा पै * ब्याहो कुँवाँ सुनमदे रानि ॥
चली पालकी तब इन्दल की * पहुँची जाय बरायतमाहिं ॥
कूच नगाड़ा के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न पर असवार ॥
कोइ नालकि कोइ पालकिन * कोइ गजरथ पर भये सवार ॥
अपनी अपनी असवारिन पर * क्षत्री चढ़ि चढ़ि चले अगार ॥
कूच कराओ दशपुरवा से * नरवर गढ़में पहुंचे जाय ॥
खबरि भेजि दइ मकरन्दी को * अबहीं चलौ बरायत साथ ॥
ऊदन बोले तब मकरन्द से * कब इन्दल को करौ बिश्राह ॥
इतनी सुनतै ऊदन चलि भे * औ लश्कर में पहुंचे जाय ॥
हुक्म सुनायो तब लश्कर में * अबहीं लश्कर होय तयार ॥
बजो नगाड़ा नरवरगढ़ में * तुरतै लश्कर भयो तयार ॥
कूच कराय दियो जल्दी से * मकरन्द मिले बरायत जाय॥
चली बरायत नरवरगढ़ से * पहुँची बलख बुखारे जाय ॥
तम्बू तानि दियो धूरे पर * अपने डेरा दये डराय ॥
चूड़ामणि पंडितहिं बुलायो * अबहीं साइति देउ बताय ॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले * ऐपन बारी देउ पठाय ॥
भश्रौ बुलौश्रा तब रुपना को * औ हँसि कही बीरमलिखान॥
बलख बुखारे को जावौ तुम * औ ऐपन को देउ पठाय ॥
धोखे रहियो ना नरवर के * जहँ ऊदन को करो बिश्राहु ॥

बहुत कठिन है बलख बुखारा * जहँ जादू को अधिक प्रचार ॥
हमरे भरोसे नहिं रहियो तुम * नहि हम प्रान गवै हैं जाय ॥
हँसिके मलिखे बोलन लागे * रूपन हरिगो ज्ञान तुम्हार ॥
अवशि व्याह हुइहै इन्दलको * रहिहै कहनहेतु दिनु आज ॥
कही हमारी रूपन मानौ * अबहीं बलख बुखारे जाउ ॥
इतनी सुनतै रूपन बोलो * घोड़ा करिलिया देउ मँगाय ॥
पाग बैजनी हमको दै देउ * इन्दल केर ढाल तलवार ॥
तुरत मँगाय दओ मलिखे तब * रुपना फाँदि भयो असवार ॥
बलख बुखारे के फाटक पर * दरमानी ने कही सुनाय ॥
कौन नगर से तुम आये हौ * आगे कौन तुम्हारो काम ॥
तुरतै ज्वाब दियो रुपना ने * व्याहन आये इन्दलसी क्वाँर ॥
नगर महोबे से आये हम * रुपना बारी नाम हमार ॥
ऐपनवारी हम लाये हैं * राजे खबरि सुनावौ जाय ॥
नेग हमारी दरवाजे को * राजा तुरत देयँ पठवाय ॥
यही नेग हमरो चहिये यहँ * द्वारे बहै रक्त की धार ॥
सुनतै चलिभो दरमानी तब * औ राजासे कही सुनाय ॥
हाल सुनाय दियो रुपनाको * राजा हंसहि लियो बुलाय ॥
शीश काटि लावौ बारी को * हमरी नजरि गुजारौ आय ॥
देर देखि रुपना पहुँचो तब * सन्मुख राजै करो सलाम ॥
ऐपनवारी आगे धरि दइ * औ राजा से कही सुनाय ॥
नेग हमारो जो द्वारे को * हमको अबहीं देउ मँगाय ॥
रिसहा हुइ तब अभिनन्दनने * सातौ लड़िका लिये बुलाय ॥
आज्ञा दै दइ सब क्षत्रिन को * याको घोड़ा लेउ छिनाय ॥
क्षत्रिन घेरि लियो रुपनै तब * खट खट होन लगी तरवार ॥

खैंचि सिरोही लइ रुपना ने * लैंके रामचन्द्र को नाम ।।
चारि घड़ी भरिचली सिरोही * द्वारे बहो रक्त की धार ।।
कलश उतारि लिये द्वारे के * ऐपनबारो लई उठाय ।।
करि सलामनृप अभिनन्दनको * रुपना बारी कही सुनाय ।।
नेग आपनो भरिपाओ हम * दायज लिहैं बनाफर राय ।।
एँड़ लईगा तब घोड़ा के * फाटक निकरि गयो वा पार ।।
पहुँचा रुपना जब बरात में * पूछन लगे बीर मलिखान ।।
हाल सुनावो दरवाजे को * तब रुपना ने कही सुनाय ।।
चारि घड़ी भरि चली सिरोही * द्वारे बहो रुधिर को धार ।।
यहाँ कि बातैं यहँ छोड़ो अब * अभिनन्दन को सुनौ हवाल ।।
बेटा सातो बुलवाये नृप * औ यह हुक्म दियो फरमाय ।।
मारहु छापा तुम बरात में * औ सब लूटि लेउ सामान ।।
मारि भगाओ बन्नाफर को * सुनत भये सातौ तैयार ।।
हुक्म सुनाये तब लश्कर में * डंका तुरत दओ बजवाय ।।
पहिले डंका में जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लिये हथियार ।।
तिसरे डंका के बाजत खन * चत्री फाँदि भये असवार ।।
कूच कराय दिये लश्कर को * तोपैं आगे दई बढाय ।।
सातौ बेटा अभिनन्दन के * अपने घोड़न पर असवार ।।
लश्कर बढ़वावो आगे को * औ धूरे पर पहुँचे जाय ।।
डङ्का सुनतै नर मलिखे ने * अपनो डङ्का दौ बजवाय ।।
हल्ला करिदौ तब लश्कर में * तुरतै लश्कर भयो तयार ।।
भयो सामना दोनौं दल को * मुर्चाबन्दी दई कराय ।।
आल्हन बेटा आगे बढ़िगा * औ मलिखे से कही सुनाय ।।
कहाँ से आये हौ कहँ जैहौ * अटको कौनु काम क्या नाम ।।

सुना नाम हुइहैं हमरो तुम * सिरसा केर वीर मलिखान ॥
नगर महोवे से आये हम * जहँ पर वसत रजापरिमाल ॥
व्याहन आये हम इन्दल को * सातो भाँवरि देउ डराय ॥
व्याह विना हम घर जैहैं ना * चाहै कोटि करौ परकार ॥
इतनी सुनतै आल्हन जरिगै * औ यह हुक्म दश्रो करवाय ॥
बत्ती दै देउ सब तोपन में * इन पाजिन को देउ उड़ाय ॥
मलिखे लौटे तब लश्कर में * तोपन बत्ती दई धराय ॥
दगो सलामी दोनौं दल में * धुँश्रना रहो सर्ग में छाय ॥
बहुत अँधेरिया दोउदल छाई * गोला चलै दनाक दनाक ॥
गोला श्रोला के सम बरसै * गोली मघा बूँद झरिलाय ॥
सरसर छूटै बहुत तीर तहँ * सनसन छुटे अगिनियाँ वान ॥
बरसो गोला चारि घड़ी भरि * तोपैं लाल वरन हुइ जायँ ॥
लागे गोला ज्यहि हाथी के * मानौं चोर सेंधि दै जाय ॥
गोला लागै जौन ऊँट के * भुइमें गिरै चकत्ता खाय ॥
गोला लागै ज्यहि घोड़ा के * चारो सुम्म गर्द हुइ जाय ॥
गोला लागै ज्यहि चत्रिन के * सो गिरि परै भूमि भहराय ॥
बंब को गोला जिनके लागै * तिनकी त्वचा सर्ग मड़राय ॥
गोला जँजिरहा जिनके लागै * तिनकी त्वचा सर्ग मड़राय ॥
चुकै मसाला जब तोपन के * तोपैं छोड़ि दई ततकाल ॥
खैंचि सिरोही लइ चत्रिन ने * खटखट चलन लागि तरवार ॥
चलै उनव्वी औ गुजराती * औ बूँदीकी असल कटार ॥
चटकै तेगा बर्दवान के * कटिकटि गिरैं अरेखा ज्वान ॥
हौदा मिलि गये हैं हौदा संग * हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
पैदल अभिर गये पैदल संग * औ असवार संग असवार ॥

गिरि गये पैदल पैगपैग पर * तिनके दुदुइ पैग असवार ॥
गिरि गये हाथी बिसे बिसेपर * छोटे पर्वत की अनुहार ॥
सुर्वन सुर्वन मलिखे दौरैं * क्षत्रिन कहैं पुकारि पुकारि ॥
सदा तुरैया नहिं बन फूलै * यारो सदा न सावन होय ॥
ब्याह अवशि हुइ हैं इन्दलको * यहु दिन कहिबे को रहि जाय ॥
खटिया परिके मरिजैहौ जो * कोउ न लिहैं तुम्हारो नाम ॥
रण के सन्मुख मरिजैहौ जो * सीधे स्वर्गलोक को जाउ ॥
निमक चन्देले को खायो है * सो हाड़नमें गयो समाय ॥
भागि न जैयो कोउ समुहें से * यारो रखियो धर्म हमार ॥
दियो बढ़ावा अस क्षत्रिनको * मलिखे आगे दियो बढाय ॥
भजे सिपाही तब राजा के * सुनि अभिनन्दनभये तयार ॥
तुरतै हाथी सजवायो तब * चढ़ि लश्करमें पहुँचे आय ॥
समुहें आये जब मलिखे के * तब मलिखे से कही सुनाय ॥
क्योंचढिआये तुम हियनाको * अटको यहाँ कौन सो काम ॥
बोले मलिखे गंग घाट पर * पर्वी परी दशहरा क्यार ॥
तुम्हरी बेटी चितरेखा जो * गई बिठूर हेत अस्नान ॥
सो हरि लाई करि जादू तब * इन्दल बेटहिं सुआ बनाय ॥
जोगी बनिके उदयसिंह यहँ * माँगि इन्दलहिं गये लिवाय ॥
गंगा करिगे थे ऊदन तब * लौटिके ब्याह लिहैं करवाय ॥
सो तुम समुझिलेउअपनेमन * हम चढ़ि आये साजि बरात ॥
ब्याह कराय देउ राजा तुम * इतनी मानौ कही हमार ॥
यह सुनि बोले अभिनन्दन तब * तुम सुनिलेउ बनाफर राय ॥
ब्याहि के लाये तुम ब्रह्माको * तब से मनमें बढ़ो गुमान ॥
सजिके लड़े नाहिं पिरथी तहँ * सोतुम समुझिलेउ मन माहिं ॥

तहाँ के धोखे तुम ना रहियो * मरिहों खेदि खेदि सर्दार ॥
यह सुनि बोले नर मलिखे तब * जानत हमहिं सकल संसार ॥
नीको बेटी जाकी देखत * बरजोरी से करत बिआहु ॥
मुश्क बाँधि लेहैं तुम्हरी हम * सातौ बेटा लिहैं बँधाय ॥
ब्याह कराय लिहैं जल्दी हम * सुनि अभिनन्दन उठे रिसाय ॥
सातौ बेटा बुलवाये तब * औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
मारि भगावो सब लश्कर को * इनकी कटा देहु करवाय ॥
हुक्म पायके सातौ बेटा * अपनी खैंचि खैंचि तलवार ॥
बढ़े अगारू महोबियन पर * दोनों हाथ करैं तलवार ॥
हाथी बढ़ाआ अभिनन्दन ने * औ लश्करको दियो बढ़ाय ॥
बढ़े सिपाही अभिनन्दन के * रणमें कठिनकरैं तलवार ॥
करी बीरता अभिनन्दन ने * मुर्चा हटो महुबियन क्यार ॥
भजत सिपाही मलिखे देखे * तब रुपना कोलियो बुलाय ॥
खबरि सुनावो तुम ऊदन को * रुपना तुरत पहुँचो जाय ॥
हाल सुनावो बघऊदन को * दलमें घिरे बीर मलिखान ॥
जल्दी साजि चलो हमरे संग * यह सुनि उदैसिंह बलवान् ॥
तुरतै बोले मकरन्दी ते * लश्कर जल्द लेहु सजवाय ॥
पहले आये दोउ मठिया में * पूजा करी अम्बिका क्यार ॥
होम कराय दियो देवी ढिग * दोनों हाथ जोरि रहिजायँ ॥
धर्म हमारो माता राखहु * औ गाढ़े में होउ सहाय ॥
बोला आभा तब देवी की * पूरन होइ हैं काम तुम्हार ॥
सुनि प्रणाम करि दोनों चलिभे * लश्कर तुरत सजायो आय ॥
कूच नगाड़ा बजवायो तब * कांतामलहु सजाई फौज ॥
मारू डंका के बाजत खन * लश्कर कूच दियो करवाय ॥

सब मिलि पहुँचि गये धूरे पर * रुपनाबारो पहुँचि अगार ॥
तुरतै खबरि करी मलिखे को * आये उदयसिह मकरन्द ॥
कांतामल आये लश्कर लै * ऊदन गोल गये समुहाय ॥
मारो लश्कर अभिनन्दन को * रणमें कठिन करी तलवार ॥
ऐंड़ लगाई रस बेंदुल पै * औ आल्हा पै पहुँचे जाय ॥
बाजी टापैं पचशावद पर * सोनै कलशा दिये गिराय ॥
समुहैं ठाढ़े थे मलिखे जो * तिनते आल्हा कही सुनाय ॥
बड़ो शूरमा यहु लड़िका है * थोड़ी उमिरि परत दिखलाय ॥
तौलौं सन्मुख ऊदन आये * आल्हा लीन्ही हाथ कमान ॥
देखत मलिखे बोलन लागे * दादा अक्किलि गई तुम्हार ॥
समुहें ऊदन यह ठाढे हैं * कापर लीन्ही लाल कमान ॥
धरि कमान तब बघऊदन को * आल्हा छाती लओ लगाय ॥
बिना बेंदुला के चढ़वैया * को अस युद्ध करै रणमाहिं ॥
हाथ जोर बोले ऊदन तब * दादा सुनौ हमारी बात ॥
जन्म को बैरी जो माहिल है * तेहि जस तुमसे कहो बनाय ॥
सोइ मानि के तुम दादा म्वहिं * मारो बहुत बिना अपराध ॥
सुघर भवानी दहिने हुइ गइ * जल्लादन से लियो बचाय ॥
तब जोगी हुइ ढूँढ़ि इन्दलहिं * हम महुबे में दये पठाय ॥
बीती जाति लग्न ब्याहे की * क्यों ना भौंरी लेत डराय ॥
याही बल पर म्वहि मारो तुम * और जल्लादहिं दयो गहाय ॥
बैठे देखो अब दादा तुम * अबहीं ब्याह लेउँ करवाय ॥
सुनतै कायल हुइ बोले तब * माहिल झूँठी बात बनाय ॥
गंगा करि लइ जब समुहैं पर * तब हम मानि लई सतिभाय ॥
इतनी सुनके ऊदन चलिभे * समुहें गोल गये समियाय ॥

पूरब घेरो मकरन्दी ने * ढेबा दक्खिन लियो घिराय ॥
उत्तर ओर गये कांतामल * पश्चिम घेरि बीर मलिखान ॥
दल में पैठिके दोउ हाथन ते * पाँचौ शूर करैं तलवार ॥
भाला लीन्हें नागदौनि को * ऊदन करत युद्ध घमसान ॥
बाइस हौदा खाली करके * हंसामनि पै पहुँचे आय ॥
हंसामनि बोले गुस्सा हुइ * ऊदन सावधान हुइ जाउ ॥
गुर्ज उठाओ हन्सामनि ने * सो ऊदन पै दओ चलाय ॥
घोड़ा बेंदुला ऊपर उड़िगो * नीचे गुर्ज गिरौ अरराय ॥
खड्ग निकारी तब ऊदन ने * तुरतै मलिखे दियो जवाब ॥
हाथ चलैयो ना ऊदन तुम * हंसामनि को लेउ बँधाय ॥
ढाल की ओझड़ ऊदन मारी * औ घोड़ा से दओ गिराय ॥
हन्सामनि बाँधे ऊदन ने * अपने दलमें दओ पठाय ॥
ऐसेइ बेटा अभिनन्दन के * सातौ सबने लिये बँधाय ॥
ऊदन मलिखे ढेबा मकरन्द * औ कांतामल बढ़े अगार ॥
बढ़े अगारी महुबे वाले * सबके मारु मारु रट लाग ॥
आगे लड़ाई अभिनन्दनको * यारौ सुनौ सहित अनुराग ॥

अभिनन्दन की लड़ाई

गुरु नारायण पद बन्दन करि * अरु करि इष्टदेव को ध्यान ॥
लिखत लड़ाई अभिनन्दन की * श्रीशिवचरणसुमिरिभगवान ॥
सुनी खबरि जबअभिनन्दनने * जो नौ नेजा के सरदार ॥
सातौ बेटा हमरे बँधिगये * रणमें कठिन चलत तरवार ॥
तुरत बढ़ाय दियो हाथी तब * औ क्षत्रिनसे कही सुनाय ॥
कटा कराय देउ सबरे को * कोई घरै लौटि ना जाय ॥

जंग जीतिहौ जो अबकी तुम * सबकी तलब दिहैं बढ़वाय ॥
बढ़े सिपाही तब आगे को * सबके मारु मारु रट लाग ॥
मलिखे कहन लगे चौंड़ाते * अब तुम खबरदार हुइ जाउ ॥
हाथी बढ़ायो तब चौंड़ा ने * औ राजा को दइ ललकार ॥
धमकी सेल एक चौंड़ा ने * देखत हाथी दअो हटाय ॥
चोट बचाई अभिनन्दन ने * अपनी दीन्हों गुर्ज चलाय ॥
लगो चोट जबहीं पुट्ठा पर * हाथी भगा चौंड़िया क्यार ॥
यह गति देखी जब मलिखेने * अपनी घोड़ी दई बढ़ाय ॥
सेल धमक्की अभिनन्दन पर * राजा लीन्हीं चोट बचाय ॥
गुर्ज उठायो अभिनन्दन ने * औ मलिखे पर दअो चलाय ॥
येक चपेट लगो घोड़ी के * घोड़ी सात पैग हटि जाय ॥
बोले ऊदन मकरन्दी से * यह राजा है बुरी बलाय ॥
ब्याहु न हुइहै जो इन्दल को * हमको हँसिहैं सकल जहान ॥
यह कहि ऊदन मकरन्द ढेबा * आगे बढ़े एकही साथ ॥
सुधि करवाई सब छत्रिन को * यारो धर्म तुम्हारे हाथ ॥
युद्ध जीति घरको चलिहैं जब * दूनी तलब दिहैं बढ़वाय ॥
यह सुनि क्षत्री आगे बढ़िगये * रण में करनलाग घमसान ॥
आल्हा घेरो अभिनन्दन को * दहिने डटे वीर मलिखान ॥
समुहें आये बघऊदन तब * घोड़ा बेंदुला दअो बढ़ाय ॥
एँड़ लगाई रस बेंदुल के * सोने कलशा दिये गिराय ॥
तुरते बोले मुनि आल्हा से * अब नहिं राखौ देर लगाय ॥
तुम्हरी बरनी को राजा है * अबहीं लेउ जँजीरन बाँधि ॥
बोले आल्हा तब आगे बढ़ि * अभिनन्दन से कही सुनाय ॥
रारि बढ़ावत हो काहे तुम * बेटी ब्याहि देउ महराज ॥

नहिंतौ लड़ौ आय हमरे संग * यह सुनि राजा उठे रिसाय ॥
लाल कमान लई हाथे महँ * समुहें कँवर दश्रो चलाय ॥
सुंडि उठाय दई हाथीं ने * कँवर निकसि गयो वा पार ॥
आल्हा बचिगये तब हौदासे * अपनो हाथी दश्रो बढ़ाय ॥
हौदा मिलि गओ तबहौदासे * हौदा चली कठिन तलवार ॥
आल्हा पचशावद हाथी को * खाली जँजीर दई पकराय ॥
सन्मुख ठाढ़े अभिनन्दन हैं * अबहीं लेउ जँजीरन बाँधि ॥
फेरी साँकल पचशावद ने * छत्रो लै लै भगे परान ॥
खलभल परिगौ सब छत्रिन में * भागे डारि डारि हथियार ॥
जकड़िजँजोरन अभिनन्दनको * आल्हा बहुत खुशी हुइजाय ॥
नृप अभिनन्दन के बँधतेखन * जीतिको डङ्का दश्रो बजाय ॥
तुरत बुलाय कहो रुपना से * तुम इन्दलकोलाओ लिवाय ॥
जाय इन्दलहि रुपना लाओ * औ लश्करमें पहुँचो आय ॥
बोले आल्हा तब पण्डित से * अच्छी साइत देउ बताय ॥
पत्रा देखि कहो पंडित तब * भाँवरि अबहीं लेउ डराय ॥
सुनतै नेगिन को आल्हालै * कांतामल को संग लिवाय ॥
सबै घरौआ लै पहुँचे तब * महलन खबरि दई करवाय ॥
अबहीं साइति है भौंरिनकी * सुनतै होन तयारी लाग ॥
खंभ गड़ाय दियो आँगन को * ढालन मड़ओ दश्रो छवाय ॥
बेदी रचाय दई पण्डित ने * गौरि गणेश दई पुजवाय ॥
फिरि गठिबन्धन करि दोनौको * औ पाटा पर दश्रो बिठाय ॥
मंगल गावन लगीं सखीसब * पण्डित पाठ उचारन लाग ॥
तब अभिनन्दन बोलन लागे * अबसबहुइगओ काम तुम्हार ॥
तुम सब लायक आल्हा ऊदन * सबकी कैद देउ छुड़वाय ॥

यहसुनि तुरतै कैदि छाँड़ि दई * कन्यादान कियो नियराय ॥
भलीभाँति सब नेग जोग करि * सातौ भाँवरि लई डराय ॥
नेगी बोलि लिये आल्हाने * तुरतै गहनो दश्रो बँटवाय ॥
बोले आल्हा अभिनन्दन से * अबहीं बिदा देउ करवाय ॥
त्यारी हुइ गइ रंगमहल में * बेटी बिदा होन तब लागि ॥
सबको बेटी भेंटन लागी * माता लियो कंठ लिपटाय ॥
सगरी सखियाँ रोवन लागीं * बेटी बिदा भई ततकाल ॥
चली पालकी तब बरात में * ऊदन मुहरैं दई लुटाय ॥
आई दुलहिन जब बरात को * मलिखे हुक्म दियो फरमाय ॥
कूच कराय देउ लश्कर को * तँबुअन मेख देउ उखड़ाय ॥
मेख उखरिगइ तब तँबुअनकी * सो छकड़न पर दई लदाय ॥
लादि सलीता तब ऊँटन पर * जोतिको डंका दश्रो बजवाय॥
मारू डंका के बाजत खन * लश्कर कूच दश्रो करवाय ॥
झुन्नागढ़ पहुँचे दश दिन में * आल्हा ऊदन औ मलिखान ॥
मकरन्द काँतामल पाँचौ मिलि * पहुँचे राज समाज में जाय ॥
करी वन्दगी सेनापति को * औ आल्हा ने कही सुनाय ॥
भये सहायक काँतामल म्वहिं * इन्दल हमहिं मिलाये लाय ॥
बोले राजा तब आल्हा से * तुम सब योग बनाफर राय ॥
दुइ दिन रहिके झुन्नागढ़ में * आल्हा कूच दश्रो करवाय ॥
आठ दिना में महुबे आये * महलन खबरि दई पहुँचाय ॥
करी तयारी मल्हना रानी * तुरत आरती लई सजाय ॥
बारहु रानी चन्देले की * दिवला तिलका लई बुलाय ॥
सखी बुलाई सब महुबे की * महलन भश्रो मंगलाचार ॥
थार सोवरन को मँगवाश्रो * परिछन साज करो तैयार ॥

हरदी अक्षत अरु मेवादधि * सब सामान लओ धरवाय ॥
आई पालकी दरवाजे पर * रानी सबै खुशी हुइ जाय ॥
परछनि करिके दरवाजे पर * मल्हना बहुअर लई उतार ॥
दिवला तिलका सुनमाँ फुलवा * पानी पिओ उतारि उतारि ॥
भीतर महल गईं रानी सब * पूजे इष्ट देव मनलाय ॥
ग्राम देव कुल देव मनाये * दान दक्षिणा दई बटाय ॥
इन्दल चरण छुए मल्हना के * सो माथे माँ लए लगाय ॥
देवै ब्रह्मा के पग छुइ के * सबके चरण छुए मनलाय ॥
बजी बधाई गढ़ महुबे में * घर २ भओ मंगलाचार ॥
नेगी झगरे गढ़ महुबे के * मल्हना सबको दओ इनाम ॥
सब राजन को मिलि ऊदनने * नेगिन गहनो दओ बँटाय ॥
दगी सलामी गढ़ महुबे में * आये ब्याहि इन्दलसिंह क्यार ॥
जितने बराती राजा आये * सबने कूचदिओ करवाय ॥
ऐसो व्याह भयो इन्दल को * लिखिशिवचरणदियोसमुझाय ॥
ऊदनहरण कहत आगे हम * यारो सुनियो कान लगाय ॥

इन्दल का विवाह (वलख बुखारे की लड़ाई) सम्पूर्ण शुभम् ।



* श्रीः *

* अथ आल्ह खण्ड *

ऊदन-हरण

सुमिरन करिके गुरु गणेशको * जगदम्बा के चरन मनाय ॥
आदिसरस्वतिकोसुमिरनकरि * बिनवौं वार वार शिरनाय ॥
जेठ दशहरा की पर्वी परि * शुभदिन आनिपरो रविवार ॥
चलि भये राजा देश देश के * घाट बिठूर गंग दरबार ॥
ठाढ़ी सुनमाँ शतखंडा पर * मेला देखि चित्त हर्षाय ॥
उतरि के आई शतखंडा ते * औ ऊदन से कही सुनाय ॥
पर्व दशहरा की बुड़की है * मेला चलो जात दिन रात ॥
हमहूँ जैहैं श्री बिठूर को * गंगा करन हेत अस्नान ॥
देवर चलौ साथ हमरे तुम * अब ना राखौ देर लगाय ॥
इतनी सुनते ऊदन बाँकुड़ा * घोड़ा बेंदुला लओ मँगाय ॥
तुरत बछेरा पर चढि बैठे * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
डंका बजवाओ लश्कर में * तुरतै फौज भई तैयार ॥
सुनमाँ फुलवाकी पलकी सँग * औ जगनिकको संगलिवाय ॥
सुनो हाल जब यह आल्हाने * तब ऊदन को पठओ बुलाय ॥
बोले आल्हा बघ ऊदन से * कहँ की त्यारी दई कराय ॥
करी तैयारी है भौजी ने * गंगा करन जात अस्नान ॥
इतनी सुनतै आल्हा बोले * तुम सुनि लेउ लहुरवाभाय ॥
बहुत से राजा तहँ पर ऐहैं * घाट बिठूर गङ्ग दरबार ॥
यही अँदेशा है हमरे मन * तुमसे होय बखेड़ा जाय ॥
ताते हमको घबड़ाहट है * यहसुनि कही उदयसिंह राय ॥

हमरो धूरो कछु अटको ना * काहे रारि बढ़ै हैं जाय ॥
गङ्ग नहाय तुरत ऐहैं घर * ताते हुक्म देउ फरमाय ॥
दैदइ आज्ञा तब आल्हा ने * चलि भये तुरत लहुरवा भाय ॥
सात दिवसकी मंजिल करके * पहुँचे गंग घाट पर जाय ॥
खाली जगह देख रेती में * अपने तम्बू दये तनाय ॥
सुभिया नटिनी भुन्नागढ की * सोऊ तहाँ पहूँची आय ॥
डेरा डारि दए रेती में * सहुवा बीरन लओ बुलाय ॥
भोर होत खन सुभिया बिड़नी * तुरतै नटिनी संग लिवाय ॥
जहँ पर मेला थो महुबे को * तहँ पर पहुँच गई हरषाय ॥
पूछन लागी हरिकारा से * मेला कहाँ महोबे क्यार ॥
जौन सो तम्बू थो ऊदन को * हरकारा ने दओ बताय ॥
करन तमाशा सुभिया लागी * जहँ दरबार उदैसिंह क्यार ॥
डारि मोहनी दइ नटिनी ने * सब दल मोहि २ रहिजाय ॥
सुभिया देखो तहँ सुनमा को * मन में लागी करन बिचार ॥
डरिहौं जादू जो ऊदन पर * सुनमा हमहिं डरैहै मारि ॥
असीलाखको गहनो सुनमां * यक डब्बा पर दओ बिठाय ॥
देखिके जादू लै सुभिया ने * तेहि डब्बापर दओ बिठाय ॥
पायके भिक्षासुभियाचलिभइ * सुनमा फुलवा भई तयार ॥
गंग नहान चलीं दोनौं तब * संगहि चले उदैसिंह राय ॥
गंग स्नान करी पूजन करि * दान दक्षिणा दई बँटाय ॥
नमस्कार करि गंग मात को * दोउ पलकी पर भई सवार ॥
देखि के मेला बघ ऊदन ने * लश्कर कूच दओ करवाय ॥
सुभिया बिड़नी ने डब्बा को * निज बीरन से लओ मँगाय ॥
उतरो लश्कर यमुनाजी पर * क्षत्री करन लगे अस्नान ॥

उतरी सुनमा जब पलको ते * तब नहि डब्बा परो दिखाय ॥
खाय सनाका गइ सुनमा तब * औ ऊदन से कहो सुनाय ॥
गहनो भूली मैं मेला पर * ताको करिहों कौन उपाय ॥
तुम्हरे भैया जबहीं पुछिहैं * तब हम दीहों कौन जवाब ॥
इतनी सुनतै ऊदन बोले * भौजी धीर धरौ मनमाहिं ॥
लै हैं डब्बा हम बिठूर ते * यह कहिजगनिकलयेबुलाय ॥
बोले ऊदन जगनायक से * तुम सब संग महोबे जाउ ॥
ऊदन अकिले गै बिठूर को * पहुँचे रात दिना में जाय ॥
मेला देखि परो नाहीं कहुँ * ना कहुँ डब्बा परो दिखाय ॥
देखे पाल लगे सिरकिन के * ऊदन तुरत पहूँचे जाय ॥
समुहें देखो जब ऊदनको * सुभिया उठि के करी सलाम ॥
कहाँ से आये औ जैहौ कहँ * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
बोले ऊदन तब सुभिया से * बघऊदन है नाम हमार ॥
गहनो रहिगो यहँ भौजीको * ताको पता लगत कहुँ नाहि ॥
बोली सुभिया तब ऊदन से * हमसे खेलहु पंसा सार ॥
हम ढुढ़वाय दिहैं गहने को * धीरज धरौ उदैसिंह राय ॥
ऊदन उतरे रम बेंदुल से * ना कछु खटक कीन्ह मनमाहिं ॥
बैठत ही बोले सुभिया से * अपनी चौपड़ लेउ मँगाय ॥
इतनी सुनतै त्यहि सुभियाने * चौपरि तुरत लई बिछवाय ॥
खेलन लागे जब ऊदन तहँ * सुभिया जादू दई चलाय ॥
सुआ बनाओ उदयसिंह को * औ पिंजरा में लओ बिठाय ॥
डेरा अपने उखड़ाये तब * औ दिल्लीको पकरी राह ॥
दिल्ली पहुँचि गई राजा पै * पृथीराज को करी सलाम ॥

हाथ जोर बोली सुभिया तब * मैं ऊदन को लाइ चुराय ॥
जहँ कहुँ ठौर होय दीजै म्वहिं * तहँ मैं डेरा देउँ डराय ॥
तब ललकारो पृथीराज ने * यहँते कूच जाउ करवाय ॥
जो सुनि पैहैं महुवे वारे * नाहक रारि बढ़ैहैं आय ॥
इतनी सुनते सुभिया लौटी * तहँते कूच दियो करवाय ॥
सब राजन के शरण गई वह * काहू ठौर दओ कहुँनाहिं ॥
भुन्नागढ़ के तब डाढ़ेन पर * सुभिया सिरकी दई तनाय ॥
डेरा डारि दिये धूरे पर * चौकी अपनी दई बिछाय ॥
सुभिया पहुँची राज सभामें * सेनापति से कही सुनाय ॥
मैं हरिलाई हौं ऊदन को * हमको ठौर देउ बतलाय ॥
यह सुनि गुस्सा हुइ राजा ने * सुभिया नटिनिहिदौंनिकराय ॥
झारखण्डकी तब झाड़िन में * नटिनी डेरा दियो डराय ॥
कछुक दीन बीते सुनमा ने * तब अपने मन कियो विचार ॥
बहुत दिवस ऊदनको हुइ गये * रहि गये कहाँ उदैसिंह राय ॥
निकलीढूँढ़न रनि सुनमा तब * अपनो जादू लियो उठाय ॥
चिल्हियाबनिगइलोटिपोटिके * ऊपर सरग रही मड़राय ॥
आल्हा पूछो जो जगनिकसे * रहिगो कहाँ लहुरवा भाय ॥
हाल बताओ जगनायक ने * आल्हा बैठि रहे चुप साधि ॥
सुनमा ढूँढ़ो सब शहरन में * नहिं कहुँ मिले उदैसिंहराय ॥
शहर छाँड़ि दै तब सुनमाने * पहुँची झारखण्ड में जाय ॥
झारखण्ड केरे झाबर में * सिरकिन डेरा दिये दिखाय ॥
पिंजरा एक टँगो इमली में * तामें सुआ परो दिखलाय ॥
सुनमा बैठो जब इमिली पर * सुभिया तहाँ पहूँची आय ॥

तुरत उतार लियो पिंजरा तब * तासों लीन्हीं सुश्रा निकारि ॥
जादू डारि कियो मानुष तब * श्रौ पलकी पर लश्रो बिठाय ॥
चौपड़ लैके खेलन लागी * श्राधी राति भई जब श्राय ॥
बोली सुभिया बघ ऊदन से * करिलेउ ब्याह हमारे साथ ॥
नाम लेउ नित खुदा नवीको * तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
धर्म श्रापनो हमना छुड़ि हैं * ना हम लिहैं खुदा को नाम ॥
यह सुनि चिड़ियागुस्साहुइ के * रेशम रस्सा लियो उठाय ॥
ढंड बाँधिके बघऊदन की * श्रौ श्रमिली में दश्रो टँगाय ॥
बाँसन मारौ बघऊदन को * गाँठौ पैठि पीठि में जाय ॥
श्रबहूँ हमरी कही मानि लेउ * तब ऊदन ने दश्रो जवाब ॥
धर्म श्रापनो हम छुड़िहैं ना * चाहे धजो धजो उड़िजायँ ॥
एक पहर जब रजनी रहिगइ * तब यहि सुश्रना लश्रोबनाय ॥
पिजरा टाँगि दयोश्रमिली में * सोवन लगी खाटपर जाय ॥
देखि हाल यह सुनमाँ रानी * तहँ पर दई मसानी डार ॥
सुश्राको पिंजरालै श्रमिलीसे * दुसरे बनमें पहुँचो जाय ॥
मानुस करिके बघऊदन को * पूछन लगी सुनमदे रानि ॥
बड़े बड़े शूरन को मारो तब * लागो नाहिं पीठि में दाग ॥
जाति कि नटिनी ने मारो तब * क्यों नहिं लिया नवोकोनाम ॥
बोले ऊदन रनि सुनमाँ से * है म्वहिं चत्री धर्मकी लाज ॥
धर्म त्यागिहैं ना श्रपनो हम * चहु तन धजी २ उड़िजाय ॥
बोली सुनमा तब ऊदन से * हमरे बचन करौ परमान ॥
चाह होय जो या बिड़नीकी * तौ महुबे को चलौ लिवाय ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने * याको चाह हमैं कछुनाहिं ॥

नहिं लै जैहैं हम महुबे को * ना हम चलिहैं संग तुम्हार ॥
चोरी चोरा हम जैहैं ना * दादै खबरि सुनावौ जाय ॥
मारि भगैहैं जब बिड़नी को * तब हम जायँ महोबे माहिं ॥
यह सुनि जादू करि सुनमा ने * सुआ बनाय दिन्हे बैठारि ॥
पिंजरा टाँगि दओ अमिलीमें * औ महुबे में पहुँची आय ॥
लैके कागज कल्पी वालो * अपनो कलमदान लै हाथ ॥
लिखोहाल सब नर मलिखेको * आवो तुरत बीर मलिखान ॥
लिखिके पाती रनि सुनमा ने * हरकारा को दई गहाय ॥
चलो साँड़िया गढ़ महुबे से * औ सिरसा में पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी तब मलिखेको * पाती तुरतै लई उठाय ॥
नजरिबदलिगइनरमलिखेकी * पाती गही दई चलाय ॥
पाती पढ़िके रनि सुनमा की * मलिखे घोड़ी लई सजाय ॥
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठे * महुबे आय बीर मलिखान ॥
उतरि बछेरी ते भुइँ आये * और ड्योढ़ीपर पहुँचे आय ॥
सुनमाँ ठाढ़ी थी ड्योढ़ी में * आवत देखि वीरमलिखान ॥
आवो देवर सिरसा वाले * हमसे कछु कही ना जाय ॥
सुभिया नटिनी झुन्नागढ़की * हरि लै गई लहुरवा भाय ॥
सुआ बनाय लियो जादू से * राखो झारखंड में जाय ॥
तुम समुझावो अब भाई को * चढ़ि ऊदन को लेयँ छुड़ाय ॥
यह सुनिचलिभैनरमलिखेतब * औ आल्हा पर पहुँचे जाय ॥
उतरि बछेरी से भुइँ आये * औ आल्हा को कियो प्रणाम ॥
हृदय लगायलियो आल्हातब * औ मलिखे से कही सुनाय ॥
हाल बताय देउ सिरसा को * अपनोकुशल कहौ समुझाय ॥

बोले मलिखे तब आल्हा से * दादा कुशल क्षेम सब भाँति ॥
गंग नहान गये बिठूर में * तहँ हरि गये उदयसिंह राय ॥
सुसिया नटिनी झुन्नागढ़ को * हरि लै गई लहुरवा भाय ॥
सुआ बनाय बन्दकीन्हो त्यहि * यक पिंजरा को लियो बिठाय ॥
झारखंड में है बिड़नी वह * दादा चलिके लेउ छुड़ाय ॥
यह सुनि आल्हा बोलन लागे * भैया सुनो बीर मलिखान ॥
हमने हटको थो ऊदन को * तुमना कोउ बिठूरको जाव ॥
कही हमारी उन मानी ना * पायो तुरत तासु फलजाय ॥
यहकहि आल्हा सोचन लागे * तब मलिखे से कही सुनाय ॥
देर करन को नहिं बेरा है * दादा जल्द होउ तैयार ॥
सुनमा मौजी संगै चलिहै * सिगरो जादू दिहैं हटाय ॥
इतनी सुनिकै तुनि आल्हाने * लश्कर डङ्का दो बजवाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री होन लाग तैयार ॥
बड़िबड़ि तोपैं अष्ट धातु की * सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
कूच को डङ्का तब बजवाओ * लश्कर चला बनाफर क्यार ॥
आई सुनमा रंगमहल से * मुखमें जादू लई दबाय ॥
लोटि पोटिके चिल्हिया हुइगइ * औ उड़ि चली फौजके साथ ॥
बीस दिनाकी मंजिल करिकै * झुन्नागढ़ में पहुँचे जाय ॥
लश्कर परिगो ठौर ठौर पर * सुन्दर तम्बू दिये तनाय ॥
आधी रात केरे अमला में * सुनमा त्यहि अमिली परजाय॥
लैके पिंजरा चलि आई तब * दुसरे बनमें सुआ निकार ॥
लैके बनसे बघऊदन को * मानुष कियो सुनमदे रानि ॥
ऊदनि चलिके गये लश्कर में * आल्हे जाय मिले तत्काल ॥

जादू चौकी जो बैठे थे * तिन सुभिया से कही सुनाय ॥
भारी लश्कर केहु राजा की * घेरौ चहूँ ओर से आय ॥
सुनतै सुभिया उठ ठाढ़ी भइ * सहुआ बीरन लओ बुलाय ॥
आयके पहुँचे अब दुश्मनहैं * सब सावधान हुइ जाउ ॥
सात हजार रहैं सिगरे नट * सबने बाँधि लिये हथियार ॥
अपने अपने लै जादू तब * तुम सब मुर्चा पर पहुँचे जाय॥
बोले ऊदन नर मलिखे से * दादा तोपैं देउ लगाय ॥
तोप जुताई तब आगे को * औ मुर्चा पर दई लगाय ॥
तोपैं चढ़ि गइँ जब चरखिन पर * तुरतै बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी तब लश्कर में * गोला छुटन लगे तत्काल ॥
दुइसौ नट जब भुइमें गिरिगे * सहुआ देखि गओ घबड़ाय ॥
जादू ढाका बंगाले की * सो सहुआने लओ जगाय ॥
गोला बाँधिके भुके बेड़िया * सबके मारु मारु रटलागि ॥
सहुआ बीरन की धमकिनमें * कोई कुँवर न आड़ै पावँ ॥
भगे सिपाही तब मुर्चा से * तबमलिखे ने कही सुनाय ॥
मानुष देही यह दुर्लभ है * यारो जन्म न बारंबार ॥
जंग जीतिके जो घर चलिहौ * सबकी तलब दिहैं बढ़वाय ॥
दिओ बढ़ावा रजपूतन को * क्षत्री बीर रूप हुइ जायँ ॥
बढ़े सिपाही महुबे वारे * सबके मारु मारु उच्चार ॥
भगे बेड़िया रण के बाहर * हा दइया गति रहे पुकारि ॥
यह गति देखी जब सुभियाने * अपने जादू लये उठाय ॥
अपनो जादू पढ़ि मारो तब * दल में आग गई बरसाय ॥
देखि हाल यह रानि सुनमाने * अपनो जादू दये चलाय ॥
जल बरसाय दओ लश्कर माँ * तुरतै आगी दई बुताय ॥

आँधी छोड़ी तब सुभिया ने * सुनमा दओ मसान चलाय ॥
बोले आल्हा तब क्षत्रिन से * यारो राखौ धर्म हमार ॥
मारि भगावो इन नटुवन को * औ रखिलेउ आपनो नाम ॥
इतनी सुनतै क्षत्री लौटे * रण खेतन में पहुँचे आय ॥
खट खट तेगा बाजन लागो * बोलै छपक छपक तलवार ॥
मारि शिरोहिन चहला करिदो * मुर्चा डरो बेड़ियन क्यार ॥
तब मनसोचिसमुझि बेड़ियाने * अपने जादू लए उठाय ॥
सबै जगाय लिये नटिनी ने * औ लश्कर माँ दए चलाय ॥
जो जो जादू नटिनि चलावै * सो सो सुनमा दए हटाय ॥
चिल्हिया हुइ तब सुभिया उड़िगइ * आधे सरग रही मँड़राय ॥
तहँ पर चील बनी सुनमाथी * सुभिया तहाँ पहूँची आय ॥
तकि तकि जादू सुभिया मारै * सो सुनमा के ना अनियाय ॥
लैके जादू भैरव वाली * सो नटिनी पर दई चलाय ॥
जादू लै के सहसबान को * सो बिड़ियन पर दई चलाय ॥
बेड़िया भगन लगे लश्करसे * चारौ ओरिन गये बराय ॥
सुभिया बिड़नी देखन लागी * हमरे बिड़िया गये बराय ॥
चिपटी सुभिया तब सुनमा से * दुइमें एक न हारे दावँ ॥
लड़तभिड़त दोनौं चिपटे तब * औ धरती पर पहुँची आय ॥
नीचे सुभिया ऊपर सुनमा * आये तहाँ इन्दल सी क्वाँर ॥
बोली सुनमा तब इन्दल से * याको देउ जान से मारि ॥
बोले इन्दल तब सुनमा से * माता सुनौ हमारी बात ॥
हाथ जो डरिहैं हम तिरियनपर * तौ रजपूती जाय नसाय ॥
उतरि बछेड़ा से भुइँ आये * औ सुभियाते पहुँचे जाय ॥
जूड़ा काटि लओ सुभियाको * जादू सबै झूठ परिजाय ॥

जियत छोड़िदो त्यहि इन्दलने * औ सब गहनो लओ मँगाय ॥
करो तयारी गढ़ महुबे की * लश्कर कूच दओ करवाय ॥
आयके पहुँचे गढ़ महुबे में * महुबे दगन सलामी लाग ॥
ऊदन हरण भयो पूरन यह * सो हम कहो सहित अनुराग ॥
आल्हा निकासी आगे कहिहैं * लिखिशिवचरणलाल समुझाय॥
समय पाय आल्हागावो तुम * मनमें सुमिरि राम रघुनाथ ॥

इति ऊदनहरण सम्पूर्ण ।



* आल्हानिकासी *

* आल्हा *

अलखनिरंजनकोसुमिरनकरि * लै परभात राम को नाम ॥
कहौं निकासी अब आल्हाकी * यारोसुनहु सुमिरिघनश्याम ॥
समय परेपर बिपति सतावत * यारौ बिपति परत संसार ॥
इकदिनपरिगौ नुनिआल्हापर * चन्देले ने दओ निकार ॥
चलिभये माहिल गढ़ उरई से * लिल्ली घोड़ी भए सवार ॥
राह पकरि लइ गढ़ दिल्लीकी * पहुँचे पृथीराज दरबार ॥
करी बन्दगी पृथीराज ने * माहिल उरई के सरदार ॥
देखि माहिलहि पृथीराज ने * ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवौ माहिल उरई वाले * अपनी कुशल देउ बतलाय ॥
बोले माहिल उरई वाले * तुमसुनि लेउ बीर शिरताज ॥
सबै कुसल है गढ़ उरई में * बैठे राज करौ महराज ॥
पै इक शोच रहत हमरे मन * सो सुनि लेउ बीर चौहान ॥
बड़ो लड़ैया सिरसा वारो * है नरनाह बीर मलिखान ॥
चारि चौंसधे के धूरे पर * जबरन किला दओ बनवाय ॥
बीर बली हैं गढ़ महुबे के * नहिं काहू की मार बसाय ॥
पाँच बछेरा बड़ी राशि के * जिनपरचढ़त महुबिया ज्वान ॥
एँड़ लगावत ही घोड़न के * उड़िके लगत जाय असमान ॥
तिनही घोड़न के हुइबे से * उनसे जीति सकैना कोय ॥
यह सुनि पिरथी पूछन लागे * ऐसी बात देउ बतलाय ॥
सबको जीति लेयँ सहजै हम * औ महुबे को लेयँ लुटाय ॥
यह सुनि बोले माहिल राजा * तुम सुनि लेउ पिथौरा राय ॥
जतन बतावत हैं तुमको हम * सहजै काम सिद्ध हुइ जाय ॥
चिट्ठी लिखि के चन्देले को * पाँचौ घोड़ा लेउ मँगाय ॥

हथि पचशावद घोड़ी कबुतरी * सो तुम लिखिके लेउ मँगाय ॥
इनहिं मँगाय लेउ पहिले तुम * पाछे महुबो लेउ लुटाय ॥
वंश नशाय देउ आल्हा को * ओछी जात बनाफर राय ॥
यह मन भाई पृथीराज के * औ माहिल से कही सुनाय ॥
भली बताई माहिल ठाकुर * हमरे मन में गई समाय ॥
लैके कागद पृथीराज ने * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
लिखी हाल यह चन्देले को * तुम सुनि लेउ रजा परिमाल ॥
पाँच बछेरा जो तुम्हरे घर * तिनको भेजि देउ महराज ॥
घोड़ी कबुतरी औ पचशावद * सो पठवाय देउ ततकाल ॥
हमहिं जरूरति है उनकी यहु * दश दिन बाद दिहैं पहुँचाय ॥
ऐसी चिट्ठी लिखि पिरथो ने * हरकारा को दई गहाय ॥
चलो साँड़िया गढ़ दिल्ली से * औ महुबे में पहुँचो आय ॥
सन्मुख पहुँचो परिमालै के * तुरतै झुकि कै करी सलाम ॥
पाती धरि दइ त्यहि गद्दीपर * राजा पाती लई उठाय ॥
खोलि के पाती राजा बाँची * औ हरकारा लियो बुलाय ॥
जल्दी जावौ दशपुरवा लौं * औ आल्हा को लआो बुलाय ॥
धावन चलिभौ तब महुबे से * दशपुरवा में पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी जुनि आल्हा को * औ आल्हा से कही सुनाय ॥
तुमहिं बुलाओ है राजा ने * अबहीं चलौ हमारे साथ ॥
सुनतै आल्हा उठि ठाढ़े भे * हंसामनि पर भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला त्यार कराओ * ऊदन फाँदि भये असवार ॥
दोनों भाई महुबे आये * औ राजा को कियो प्रणाम ॥
हाथ जोरि बोले आल्हा तब * काहे हमहिं लओ बुलवाय ॥
बोले राजा तब आल्हा से * पाती लिखी पिथौरा राय ॥

असली बड़ा आल्हखण्ड



भार्गवभूषण प्रेस, काशी।

पाँच बछेरा जो उड़ने हैं * सो मँगवाय पिथौरा राय ॥
हथि पचशावद और कबुतरी * सो मँगवाइ बीर चौहान ॥
उनहिं जरूरति है घोड़न की * दशदिन गये दिहैं पहुँचाय ॥
सो पठवाय देउ जल्दी तुम * इतनी मानौ कही हमार ॥
इतनी सुनतै आल्हा बोले * दादा समुझि लेउ मनमाहिं ॥
जिन घोड़न पर चढ़ैं चन्देले * तिन पर चढ़ै पिथौरा राय ॥
अपनो घोड़ा हम देहैं ना * हँसिहैं हमहिं सकल संसार ॥
डरिगे राजा पृथीराज ते * तुरतै घोड़ा दिये पठाय ॥
यह सुनिराजासमझाओतब * बेटा मानो कही हमार ॥
इकतो महराजा दिल्ली के * दुसरे शब्दबेध चौहान ॥
ना पठवैहो जो घोड़न को * पिरथी महुबो लिहैं लुटाय ॥
लड़े जीतिहौ नहिं उनसे तुम * तासे घोड़ा देउ पठाय ॥
इतनी सुनतै ऊदन तड़पे * नैना लाल बरन हुइ जाय ॥
काहे दादा तुम डरपत हौ * है क्या वस्तु पिथौरा राय ॥
समुहें देखैं जो महुबे के * तौ हम दिल्ली लेयँ लुटाय ॥
कियो ब्याह हम ब्रह्मानन्दको * तब कहँ रहे पिथौरा राय ॥
करो सामना नहिं हमरो तब * सातौ भाँवरि लई डराय ॥
बावन गढ़ के जो राजा हैं * हम सर किये आपनो हाथ ॥
गर्व न राखो क्यहु राजाको * सो तुम समुझि लेउ नरनाथ ॥
साँची बात कही ऊदन ने * पै जरि मरे रजा परिमाल ॥
गुस्सा हुइके चन्देले ने * बघऊदन से कही सुनाय ॥
कही हमारी जो मानौ नहिं * खाली करि देउ गाँव हमार ॥
भोजन करिहौ जो महुबे में * तौ तुम खाउ गऊ का मास ॥
पीहौ पानी जो महुबे में * तौ तुम पिओ गऊका खून ॥

शय्यासोइहौ जो तिरियासंग * मानहु परे मात के साथ ॥
तीनि तलाकैं परिमालै ने * जब गुस्सा हुइ दई सुनाय ॥
आल्हा ऊदन के हिरदै में * सूखी निकरि गई वा पार ॥
तुरतै चलि भे आल्हा ऊदन * अपने घोड़न भये सवार ॥
जबहीं पहुँचे दशपुरवा में * रुपना बारिहि लयो बुलाय ॥
दश हजार हमरो लश्कर है * सो तुम अबहीं लेउ सजाय ॥
पहुँचो रुपना तब लश्कर में * औ सब लश्कर लयो सजाय ॥
बोले ऊदन तुनि आल्हा से * दादा सुनो हमारी बात ॥
चलिके रहिहौ कहँ दादा तुम * बैरी सिगरे देश हमार ॥
यह सुनि आल्हा बोलन लागे * भैया सुनो हमारी बात ॥
हमहिं भरोसो यक जैचन्दको * चलिके कनवज करो मुकाम ॥
बोले ऊदन तब आल्हा से * हमरे मनमें गई समाय ॥
तुरत बुलायो हरकारा यक * तुम ढेबा को लाओ बुलाय ॥
गौ हरकारा नर ढेबा ते * औ ढेबा से कही सुनाय ॥
तुमहिं बुलायो तुनिआल्हाने * अबहीं चलौ हमारे साथ ॥
घोड़ा मनुरथा पर ढेबा चढ़ि * दशपुरवा में पहुँचो आय ॥
करी बन्दगी तुनिआल्हा को * आल्हा लीन्हो पास बुलाय ॥
बोले आल्हा नर ढेबा से * हमको सगुन देउ बतलाय ॥
हमरी त्यारी है कनवज को * तब ढेबा ने कही सुनाय ॥
काहे त्यारी है कनवज को * दादा हाल देउ बतलाय ॥
हाल बताओ तब आल्हा ने * सुनि ढेबा ने कही सुनाय ॥
संग तुम्हारो हम छोड़िहैंना * दादा सोच देउ बिसराय ॥
सगुन विचारि कही ढेबा ने * पूरन होइहैं काम तुम्हार ॥
यहसुनिआल्हा ऊदनचलिभे * पहुँचे रङ्गमहल में जाय ॥

बात सुनाई सब देवै को * औ रानी से कही सुनाय ॥
गुस्सा आई तब देवै को * जब तलाक को सुनौ हवाल ॥
डोला सजवाये बहुअन के * औ चलिबे को भए तयार ॥
आये इन्दल जो बाहर से * सो ऊदन से पूछन लाग ॥
कहाँ कि त्यारी चाचा कीन्ही * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
हाल बताय दियो ऊदन तब * तुमहू चलौ हमारे साथ ॥
सुनमाँ फुलवा चितरेखा के * डोला तीनि भये तयार ॥
चौथो डोला रानि देवै को * तुरतै तामें भई सवार ॥
तम्बू लदवाये छकड़न पर * ऊँट सलोता दये लदाय ॥
माया जितनी दशपुरवा की * सो बघऊदन लई लदाय ॥
हथि पचशावदको मँगवाश्रो * सोने के हौद दश्रो धराय ॥
घोड़ा करिलिया औ हंसामनि * घोड़ा पपीहा लश्रो सजाय ॥
घोड़ा मनुरथा त्यार कराश्रो * ऊदन फाँदि भये असवार ॥
हंसामनि पर इन्दल चढ़िगो * डोला चलो दिवलदे क्यार ॥
डोला चलिभै सब रानिन के * सबने कूच दश्रो करवाय ॥
रोवै रैयति दशपुरवा की * आल्हा ऊदन कर लै नाम ॥
चलिभैलश्करपुनि आल्हासँग * पहुँचे नगर महोबे जाय ॥
महल के नीचे से निकसे सब * जगनिक करी बात कछुनाय ॥
डोला पहुँचे राजमहल ढिग * द्वारे खड़ी मल्हन दे रानि ॥
बारह रानी चन्देले की * सोऊ तुरतै पहुँचीं आय ॥
बोली मल्हना तब आल्हा से * काहे बेटा चले रिसाय ॥
बिलग न मानौ तुम राजा को * बूढ़े भये चन्देले राय ॥
मति सठियाय गई राजा की * बेटा जानि लेउ मन माहिं ॥
महुबो छोड़ि दिहौ बेटा जो * तौ यहि पिरथी लिहैं लुटाय ॥

तापर ज्वाब दियो आल्हाने * ना कछु समुझो हाल तुम्हार ॥
पाँच बछेरा बड़ी राशि के * सो मँगवाये पिथौरा राय ॥
हथि पचशावद और कबुतरी * सो पिरथी पठये मँगवाय ॥
जब हम मनाकियो राजाको * तब उन दई तलाकै तीनि ॥
भोजन करिहौ जो पुरवा में * तौ तुम खाउ गऊको मास ॥
पानी पीहौ जो पुरवा में * तौ तुम पिओ गऊको खून ॥
सेज पै सोइहौ जो तिरियासङ्ग * मानहु परे मात के साथ ॥
तीनि तलाकैं चन्देले की * हमरे गई करेजे सालि ॥
अब हम रहिहैं नहिं महुवे में * माता बचन करो परमान ॥
रोय के बोली मल्हना रानी * बेटा मानौ कही हमार ॥
जो तुम छोड़ि दिहौ महुवेको * हमको हँसिहैं सकल जहान ॥
चन्द्रावलि निकसी महलन से * औ ऊदन तिर पहुँची जाय ॥
रोइके बोली चन्द्रावलि तब * वीरन बार बार बलिजाउँ ॥
बड़ा भरोसा म्वहिं तुम्हरो है * तुम ना जाउ उदैसिंह राय ॥
जो तुम छोड़ि दिहौ महुबे को * बेड़ा कौन लगै हैं पार ॥
इतनी सुनतै ऊदन बोले * बहिनी सुनो हमारी बात ॥
दोष हमारो कछु नाहीं है * नाहीं कछु हमारी बात ॥
कह अपराध कियो राजाको * जो भादौं मा दओ निकार ॥
समझावै मल्हना ऊदन को * बेटा मानौ बात हमारि ॥
हमने बेटा तुम को पालो * अपने कुचको दूध पिआय ॥
बात मानिलेउ तुम धाई को * औ रुकिजाउ उदैसिंह राय ॥
घर घर महुवो लुटवै हैं वह * तब जग हुइहै हँसी हमार ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तब * माता वचन करौ परमान ॥
हम नहिं रहिहैं अब महुवे में * चाहे कोटिन करौ उपाय ॥

जब चढ़ आवैं पृथीराज यहँ * हमको खबर दिओ पहुँचाय ॥
हम चढ़ि ऐहैं गढ़ कनवजसे * औ पिरथीको दिहैं भगाय ॥
मल्हना समुझाओ बहुतै कछु * आल्हा सुनी एक नहिं बात ॥
बारह रानी चन्देले की * तिनहूँ बहुत कही समुझाय ॥
पै नहिं ठहरे आल्हा ऊदन * औ चलिबे को भये तयार ॥
सिगरी रैयति रोवन लागो * आल्हा छोड़त नगर महोब ॥
बिना मर्द को महुबे रहिगो * बेड़ा कौन लगै हैं पार ॥
कूच कराय दओ आल्हा ने * धावन छुटो महोबे क्यार ॥
जाय के पहुँचे गढ़ सिरसा में * जहँ दरबार बीर मलिखान ॥
करी बन्दगी हरकारा ने * औ सब हाल कही समुझाय ॥
रूठे आवत आल्हा ऊदन * तिनको रोकि लेउ समुझाय ॥
यहसुनि मलिखे उठिकेचलिभे * औ घोड़ी को लियो सजाय ॥
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठे * औ आल्हा ते पहुँचे आय ॥
करी बन्दगी तुनि आल्हाको * बोले हाथ जोरि शिरनाय ॥
कहाँ की त्यारी दादा कीन्ही * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले आल्हा तब मलिखे से * चन्देले ने दओ निकारि ॥
बड़ी राशिके उड़न बछेरा * सो मँगवाये वीर चौहान ॥
घोड़ी कबुतरी हथि पचशावद * सोऊ पिरथी पठये मँगाय ॥
सो इनकार करी हमने जब * तापर राजा गये रिसाय ॥
तीनि तलाकैं दइ राजा ने * औ भादौं माँ दओ निकार ॥
देख निकासी दइ राजा ने * देखैं कहाँ कर्म लै जाय ॥
बोले मलिखे हाथ जोरि तब * दादा मानौ बात हमार ॥
साथ हमारे चलि सिरसा में * बैठे राज करौ महराज ॥
नित उठि सेवा तुम्हरी करिहौं * तब कह करै रजा परिमाल ॥

बोले आल्हा यह सिरसा गढ़ * है रजधानि महोबे क्यार ॥
बोले मलिखे तब आल्हा से * तुम धूरे पर करौ मुकाम ॥
किला दूसरो बनवै हैं हम * जहँ पर भूमि कनौजीक्यार ॥
बात न मानौ यक आल्हाने * मलिखे बहुत भयो लाचार ॥
ऊदनि बोले हाथ जोरि के * दादा सुनो बीर मलिखान ॥
जैसी बात कही राजा ने * कोउ नहिं कहत काहु से ऐसि ॥
तासे दादा तुम रोकौ ना * हम यहँ करिहैं नाहिं मुकाम ॥
यह सुनि अपनेमनउदास भइ * सिरसा गये बीर मलिखान ॥
आल्हा चलिभे तब आगे को * नदि बितवै पर पहुँचे आय ॥
भयो उतारा जब नद्दी पर * सब मिलि उतर गए वा पार ॥
आल्हा ऊदन ढेबा इन्दल * जब झावर में पहुँचे जाय ॥
कबहुँक ऊपर मेघा गरजैं * बरसन लगे मूसला धार ॥
कबहुँक कठिन घाम होवै तहँ * सूरज तपैं मेघ रुख पाय ॥
जब तहँ घाम लगी बद्रीकी * सबके बदन गये कुम्हिलाय ॥
सही मुसीबत मिलि सबनेतहँ * औ यमुना तट पहुँचे जाय ॥
करि मुकाम सबने रेती में * औ असनान करन सब लाग ॥
करी रसोई सब क्षत्रिन ने * औ रजनी भरि करी मुकाम ॥
भोरहि कूच करो आल्हा ने * उतरे घाट कालपी जाय ॥
परहुलशहर पहुँचिदुइदिनरहि * पहुँचे सियरिमऊ में जाय ॥
डेरा डार दए बागन में * अपने तम्बू दए तनाय ॥
फेटैं छुटि गइँ सब क्षत्रिनकी * हाथिन हौदा धरे उतार ॥
सियरिमऊ में आल्हा ऊदन * एक महीना करौ मुकाम ॥
यकदिन बोले उदन बाँकुड़ा * दादा कनवज करौ पयान ॥
हाथी मँगवायो तब आल्हाने * तापर हौदा दओ धराय ॥

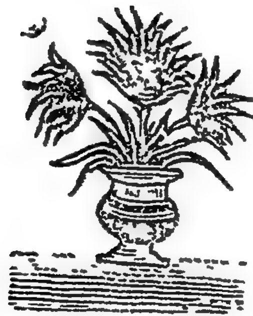
जबहीं बैठि गये हौदा में * क्षत्री चले अरदली साथ ॥
मकरन्दनगर होत आल्हा तब * कनवज बीच पहूँचे जाय ॥
पहुँचे आल्हा तब फाटक पर * दरमानी ने करी सलाम ॥
कौन देशके महराज हौ * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
बोले आल्हा दरमानो से * राजै खबरि सुनावो जाय ॥
आल्हा आये हैं महुवे से * औ ठाढ़े हैं पँवरि दुआर ॥
इतनी सुनतै दरमानो ने * राजै खबरि सुनाई जाय ॥
हुक्म दियो तब राजा जैचन्द * आल्है भेजि देउ ततकाल ॥
आवो दरमानी द्वारे पर * औ आल्हा से कही सुनाय ॥
तुमहिं बुलाओ है राजा ने * आल्हा तुरत पहूँचे आय ॥
करी बन्दगी तब आल्हा ने * जैचन्द चौकी दई डराय ॥
कुशल छेम पूछी महुवे की * तब आल्हा ने कही सुनाय ॥
कुशल छेम है सब महुबे में * सुख से रहत रजा परिमाल ॥
परी आपदा है हम पर यह * चन्देले ने दओ निकार ॥
जगह बताय देउ हमको कहुँ * तहँ पर करैं बास हम जाय ॥
यह सुनि बोले राजा जैचन्द * जो राजा ने दओ निकार ॥
तौ हम जगह तुमहिं दोहैं ना * यह सुनि चले बनाफरराय ॥
आय सवार भये हाथी पर * पहुँचे सियारिमऊ में आय ॥
पूछन लागे बघऊदन तब * दादा हाल देउ बतलाय ॥
बोले आल्हा बघऊदन से * जैचन्द साफ करो इनकार ॥
धीरज राखौ मन अपने में * कबहुँक जैहैं विपति नशाय ॥
तीनि महीना सियारिमऊ में * आल्हा ऊदन करो मुकाम ॥
यक दिन सोचे ऊदन बाँकुड़ा * घोड़ा बेंदुला लओ सजाय ॥
कूदि बछेड़ा पर चढ़ि बैठे * यक सौ सूर साथ सजवाय ॥

घरी चारि में कनवज आये * बाला पीर पहूँचे आय ॥
ऊदनि बिनती करि देवी की * बोले हाथ जोरि शिरनाय ॥
शरण तुम्हारी हम आये हैं * माता मोपर होउ सहाय ॥
करि प्रणामलै सब क्षत्रिनको * चले बजार उदैसिंह राय ॥
लगी दुकानै हलवाई की * ऊदन तुरतै लई लुटाय ॥
लूट करन लागे बनियन की * रैयति भजी कनौजी क्यार ॥
जाय पहूँचो सब जैचन्द ते * और जैचन्दसे कहो सुनाय ॥
अजैपाल औ बेनि चक्कवे * हुइगे रतीभान महराज ॥
रैयति लूटो ना काहू कहुँ * सो तुम समुझि लेहु महराज ॥
तुम्हरे दखल माहि राजा यह * ऊदनि लूटी आय बजार ॥
इतनी सुनतै नृप जैचन्द के * गुस्सा गई देह में छाय ॥
ऐसो कौन शूर पृथवी पर * जाने लूटो नगर हमार ॥
बोले लाखन से राजा तब * अपनी तोपैं देउ पठाय ॥
सो रखवाय देउ धूरे पर * औ फिरि बत्ती देउ लगाय ॥
तोपैं निकमी जब जैचन्दकी * तौ लौं सैयद पहुँचे आय ॥
बोले सैयद महाराज से * कहँ यह तोपैं दईं जुताय ॥
बोले जैचन्द तब सैयद से * कनवज आय बनाफर राय ॥
ऊदन लूटी है बजार यहँ * अबहीं तोपन दिहैं उड़ाय ॥
बोले सैयद तब जैचन्द से * धीरज धरो सुनो महराज ॥
रारि बढ़ैहो जो ऊदन से * तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
बड़े लड़ैया हैं महुबे के * आल्हा और उदैसिंह राय ॥
नहिं भय मानत हैं काहू को * कलहा दस्सराजके लाल ॥
बलख बुखारे के अभिनन्दन * तिनकी बेटी लाये बिआहु ॥
पथरीगढ़ के गजराजा घर * नर मलिखे को करो बिआहु ॥

ऊदन ब्याहे नरवर गढ़ में * सुलिखे शहर कमायूँ माहि ॥
आल्हा ब्याहे नैनागढ़ में * नैपाली घर करो बिआहु ॥
आल्हा ऊदन ने माड़ौ पर * चढ़िके लआो बापको दाउँ ॥
पृथीराज दिल्ली पतिके घर * ब्रह्मानन्द को करो बिआहु ॥
हाथी पछारे दरवाजे पर * जिनको उदैसिंह है नाम ॥
लड़े न जितिहौ तुम ऊदन से * तब जैचन्द ने कही सुनाय ॥
चौंरा भौंरा जा हाथी हैं * सो द्वारे पर देउ छुड़ाय ॥
हाथी पछारे जो ऊदन ने * द्वारे हाथी देइँ पछारि ॥
इतनी सुनतै चौंरा भौंरा * दोनौं हाथा लए मँगाय ॥
राते माते दोउ हाथी करि * दरवाजे पर दये छुड़ाय ॥
यक हरकारा को पठआो फिरि * धामन तुरत पहूँचो जाय ॥
जहँ पर तम्बू थो आल्हा को * धामन करी बन्दगी जाय ॥
तुमहिं बुलाओ है राजा ने * अबहीं चलौ हमारे साथ ॥
करी तयारी तब आल्हा ने * पचशावद पर भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला त्यार करायो * ऊदन फाँदि भये तैयार ॥
कूच करायो सियरमऊ ते * औ कनवज में पहुँचे जाय ॥
सुनी खबरि राजा जैचन्द ने * आये दस्सराज के लाल ॥
राजा आये दरवाजे पर * औ आल्हा से लगे बतान ॥
हाथी पछारे तुम दिल्ली में * सो यह हाथी देउ पछारि ॥
सुनतै चलिभै ऊदन बाँकुड़ा * भाला लियो आपने हाथ ॥
भाला मारि दिये चौंरा के * औ धरती में दयो गिराय ॥
दाँत पकरि के यक भौंरा का * दओ पछारि उदयसिंहराय ॥
देखि हाल यह राजा जैचन्द * तब सैयद से कही सुनाय ॥
अब हम जानो मन अपने में * साँचे दस्सराज के लाल ॥

बहुत खुशी हुइके जैचन्द ने * आल्है रिजिगिरि दई इनाम ॥
करि प्रणाम आल्हा ऊदन तब * अपनो लश्कर लयो बुलाय ॥
सब सामान मँगाय तुरत तब * औ रिजिगिरि में करो मुकाम ॥
रिजगिरि रजधानी छोटी यक * तहँ बसि गये बनाफर राय ॥
बिपदा दूरि भई सबही तब * दहिने भई शारदा माय ॥
आल्हा निकासी यह पूरण भइ * लिखि शिवचरणलाल समुझाय ॥
आगे कहत व्याह लाखनिको * यारो सुनियो कान लगाय ॥

* इति आल्हा निकासी सम्पूर्ण *



* श्रीः *

* अथ *

आल्हखण्ड

लाखनिराना का बिवाह ।

(बूँदी कामरूदेश बंगाला की लड़ाई)

बजी बाँसुरी श्री वृन्दाबन * मधुबन कुहुकि रहे बहुमोर ॥
चर अरु अचर जीव मोहे सब * शुभध्वनि छाय रहो चहुँओर ॥
खुघर गोपिका उठिधाईं सब * जबहीं श्याम बजाई बेन ॥
भूषण बसन धारि उलटे सब * देखन हेतु कृष्ण छबिऐन ॥
पहुँचि गईं जबहीं गोपी सब * बोले कृष्णचन्द्र सुखधाम ॥
सुतपतित्यागिकानिकुलकीतजि * आईं कौन हेतु यहि ठाम ॥
नारिधर्म महँ नाहिं उचित यह * निर्धन अन्धबधिर पतित्याग ॥
कीजिय सेवा तासु निरन्तर * मनमहँसमुझिसहित अनुराग ॥
करि उपदेश सिखायधर्मतिय * गोपिनसहित बिपिन सुरराय ॥
रासविलास कियो मोहनतहँ * त्रिभुवन बीच रहो यशछाय ॥

देश कामरू है प्रसिद्ध अति * अरु बङ्गाल देश सरनाम ॥
बूँदी शहर एक तामें है * राजा तासु गङ्गधर नाम ॥
कुसुमा बेटी गंगाधर की * जाको प्रकट रूप संसार ॥
व्याह जोग बेटी हुइ गइ जब * तब गंगाधर करो बिचार ॥
मोति जवाहिर दुइ बेटा थे * पुत्र जवाहर लियो बुलाय ॥
गङ्गाधर बोले बेटा से * टीका बहिनि केर लै जाय ॥
घरवरसुन्दर जहँ दिखिओ तुम * तहँ पर दीजो तिलक चढ़ाय ॥
नगर महोवे ना जैओ तुम * ओछी जाति बनाफर राय ॥
लैके टीका तीनि लाख को * औ नेगिन को संग लिवाय ॥
चलो जवाहिर गढ़ बूँदी से * औ दिल्ली में पहुंचे जाय ॥
गई सवारी तहँ बेटी की * जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * पाती गही दई चलाय ॥
खोलिके पाती वह टीका की * तुरतै पढ़ी वीर चौहान ॥
पढ़िके फेरि दई चिठिया वह * औ पिरथो ने कही सुनाय ॥
व्याह न करिहैं हम बूँदी में * यह सुनि लौटि जवाहरसिंह ॥
चले साथ लै सब नेगिनको * औ बौरीगढ़ पहुँचो आय ॥
गई सवारी दरवाजे पर * पहुंचे जाय राज दरबार ॥
करी बन्दगी वीरशाह को * पाती राजै दई गहाय ॥
बाँची पाती वीरशाह ने * औ बेटी को दओ जवाब ॥
बहुतै जादू है बूँदी में * हमसे व्याह होन को नाहिं ॥
यह कहि पाती टीका वाली * सो बेटा को दइ लौटाय ॥
चले जवाहर तब बिसहिनको * गजराजा तै पहुंचे जाय ॥
करी बन्दगी गजराजा को * पाती हाथ दई पकराय ॥
पढ़िके सोचिसमुझिअपनेमन * पाती तुरतै दई घुमाय ॥

लड़े न जीतिहैं हम बूँदी में * टीका अनत चढावहु जाय ॥
मन खिसियाने तबहिं जवाहर * तहँते तुरत चले सकुचाय ॥
लड़िका क्वाँरो है कनवज में * तहँ बहिनी को करैं विवाह ॥
यहमन समुझिगयेकनवजमें * पहुँचे बीच राज दरबार ॥
सोने सिंहासन जैचन्द बैठे * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
करी बन्दगी महाराज को * ऊँची बैठक दई डराय ॥
बैठे जवाहिर जब समुहें पर * तब राजा ने कही सुनाय ॥
कौन भूपके तुम लड़िका हौ * आये कौन हेतु यहि ठाम ॥
बोले जवाहिर तब राजा से * गढ़ बूँदो है शहर हमार ॥
लाये टीका हम बहिनो को * लड़िका हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले जैचन्द है लड़िका यहँ * पै हम करिहैं नाहिं बिआहु ॥
कठिन मारु है बंगाले की * औ जादू को बहुत प्रचार ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * तुम्हरो नाम प्रगट ससार ॥
मुखसे हीनी तुम बोलत हौ * जग में हुइहै हँसी तुम्हार ॥
हुइ है हल्ला देश देश में * की डरि गये कनौजी राय ॥
घर को आयो टीका फेरिहौ * यह नहिं उचित बात महराज ॥
यह सुनि बोले राजा जैचन्द * औ ऊदन ते लगे बतान ॥
मनहिं तुम्हारे जस आवै कछु * तैसिहि करो उदयसिंह राय ॥
बोले ऊदन तब राजा से * राजा सुनौ हमारी बात ॥
टीका चढ़हैं हम लाखन को * औ बूँदो में करैं बिआहु ॥
अबहिं बुलाय देहु पंडित को * पंडित तुरत पहुँचे आय ॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले * अबहीं टीका लेउ चढ़ाय ॥
खबरि जनाई तब महलन में * तिलक की त्यारी लई कराय ॥
गायके गोबर से सुन्दर विधि * चन्दन चौक दयो लिपवाय ॥

आये पंडित रङ्गमहल में * पूरी चौक मोतियन क्यार ॥
कलश धराय दये सोने के * चन्दन पाटा दए डराय ॥
आईं सखियाँ रङ्गमहल में * लागीं करन मङ्गलाचार ॥
रोरी अक्षत फूल धूप दधि * दीप गोरजा लई धराय ॥
तुरत बुलायल ओलाखनिको * औ पाटा पर दओ बिठाय ॥
चारों नेगी कुँवर जवाहर * तुरतै महलन लये बुलाय ॥
स्वस्ति पाठ करि तब पंडित ने * गौरि गणेश दये पुजवाय ॥
पग परछा लै कुँवर जवाहर * औ माथे से लए लगाय ॥
लैके बीरा पाँच पान को * सो लाखनि को दओ खवाय ॥
बीरा चावतही छींको क्यहु * तिलका रानी कही सुनाय ॥
हुइगो असगुन है आँगन में * ऊदन टीका देहु घुमाय ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तब * माता सुनौ बातधरि ध्यान ॥
सगुन मनावत है वोई जो * वरधियालादिवनिजको जात ॥
सगुन विचारत ना क्षत्री वह * जो रण चढ़िके लोह चबात ॥
गिरै पसीना जहँ लाखनिको * तहँ बहि चलै खूनकी धार ॥
तौ मैं बेटा रानि देवा को * जो बूँदी में करौं बिआहु ॥
बहुअर लैहौं मैं कनवज में * फिरि पंडित से कही सुनाय ॥
साइत देखौ अब भौरिन की * पंडित लगन विचारन लाग ॥
फागुन चढ़त शिवतेरसि को * देवी लग्न बिआहौ जाय ॥
यह सुनि बोले कुँवरजवाहर * अपने नेगी देव बुलाय ॥
आये नेगी जब कनवज के * सोने के गहने दए बँटाय ॥
बूँदी वाले सब नेगिन को * जैचन्द गहने दए बँटाय ॥
लैकर मोतिन की मालाफिरि * उन नेगिनको दइ पहिराय ॥
चले जवाहर गढ़ कनवज से * औ बूँदी में पहुँचे आय ॥

खबरि सुनाई गंगाधर को * दादा सुनौ हमारी बात ॥
टीका चढ़ाओ हम कनवजमें * शोभा जासु कही ना जाय ॥
अजैपाल राजा तहँ हुइगे * जिनको उदै अस्त लौं राज ॥
फूलमती देवी कनवज में * औ सन्दोहिनिको अस्थान ॥
गोवर्धनि देवी राजत हैं * सीता करी रसोई आन ॥
बहै धार नीचे गङ्गा की * ऊपर किला कनौजी क्यार ॥
राज करत हैं राजा जैचन्द * जहँ पर बावन लगे बजार ॥
वेनि चक्कवै को नाती है * राजा रतीभान को लाल ॥
लाखनि राना नाम प्रगट है * टीका तिन्हें चढ़ायो जाय ॥

* सवैया *

लाखन शूरन में यक शूर, सुरूप निहारत काम लजावै ।
लाखन की गिनती दल में, अरु लाखन शूरन में चलि जावै ॥
लाखन बीर हनै छण में, अरु लाखन शस्त्र प्रहार बचावै ॥
ऐसो महा बलवान है लाखनि, लाखन में तलवार चलावै ॥

॥ आल्हा ॥

सुनितारीफ समुझिअपने मन * तब हम टीका आये चढ़ाय ॥
यह सुनि खुशी भये गंगाधर * बेटा कियो नीक तुम काम ॥
करौ तयारी अब ब्याहे की * यह कहि करन तयारी लाग ॥
त्यारी करते दिवस बीतगे * फागुन माँस पहूँचो आय ॥
मामा लागत जो लाखनिके * कुडहर केरे गङ्ग पमार ॥
राजा परशू परहुल वाले * औ पत्यूँज के मदनगुपाल ॥

रूपन राजा सिरउज वाले * सो बरात में पहुँचे आय ॥
न्योतो पठवौ जिन राजन के * सब बरात में पहुँचे आय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की * सब सजवाय कनौजी राय ॥
हाथी घोड़ा ऊँट सजाये * पैदल पल्टन लई सजाय ॥
खंभा गड़िगयो रङ्गमहल में * तिलकासगुनमनावनलागि ॥
सात सुहागिन तेल चढायो * पण्डित बेद उचारन लाग ॥
नहखुर होनलगो लाखनिको * सिगरे कपड़े दये पिन्हाय ॥
मौर धरि दओ तब मस्तकपर * सिहराचमकिचमकिरहिजाय ॥
सजी पालकी है लाखनि की * सो पलकी में बैठे जाय ॥
भूरी हथिनी त्यार कराई * तापर चढ़े कनौजी राय ॥
जैचन्द बैठे जब हौदा में * ऊपर चौंर ढुरैं गजगाह ॥
घोड़ी सिंहिनी त्यार कराई * मीरा सैयद भए सवार ॥
धनुआँतिली रिजिगिरि वालो * घोड़ी विलिंदनि भओसवार ॥
लला तमोली रतकाले को * सब्जा घोड़ा भयो सवार ॥
हथिनीपचशावदपरआल्हाचढ़ि * ढेबा मनुरथा पर असवार ॥
घोड़ा बेंदुला पर ऊदन हैं * लश्कर सात लाख लै साथ ॥
कूच कराओ गढ़ कनवज से * औ बूँदी को पकरी राह ॥
हाहाकारी बीतन लागी * दलमें रही अँधेरिया छाय ॥
धूरि उड़ानो आसमान लौं * सूरज रहे धुंधि में छाय ॥
चली बरात जात लाखनकी * झंडन रहो लालरी छाय ॥
पन्द्रह दिनकी मंजिल करिके * पहुँचे देश कामरू जाय ॥
चारि कोश जब बूँदी रहिगइ * अपने डेरा दये डराय ॥
लाल बनातन के सुन्दर सब * तम्बू तुरत दये तनवाय ॥
छुटि गइँ फेटैं रजपूतन की * हाथिन हौदा धरे उतारि ॥

जोन उतारि दए घोड़न के * चत्री करन गये अस्नान ॥
चढ़ी रसोइयाँ उमरायन की * कहुँ कहुँ नाच दओ करवाय ॥
आल्हा बोले तब जैचन्द से * अपनो पंडित लेउ बुलाय ॥
सुनतै पंडित बुलवायो तब * औ पंडित से कही सुनाय ॥
साइति देखौ तुम ब्याहे को * तब पंडित ने कही सुनाय ॥
ऐपन बारी अबहीं भेजहु * तुम्हरो काम सिद्धिहुइजाय ॥
बोले आल्हा तब रुपना से * ऐपन बारी लै तुम जाउ ॥
ज्वाब दियो रुपना बारी ने * हम नहिं शीश कटै हैं जाय ॥
सुनतै आल्हा बोलन लागे * रुपना अकिल गई तुम्हार ॥
ब्याह अवशि हुइहै लाखनको * यहुदिनकहिबे को रहिजाय ॥
तुम रहवैया हौ महुबे के * तौहू कहत न बात सम्हारि ॥
तुमको नेगी हमना समझत * तुम तौ भैया लगत हमार ॥
मुखसे हीनी तुम बोलत हो * तब रूपन ने दओ जवाब ॥
घोड़ा बेंदुला हमको दै देउ * औ दै देउ ढाल तलवार ॥
दै देउ भाला ऊदन वालो * सुनि आल्हाने दओ मँगाय ॥
सजिके रुपना चलि ठाढ़ो भै * ऐपनवारी लई उठाय ॥
राह पकरि लइ तब बूँदी की * औ फाटक पर पहुँचो जाय ॥
बोलो दरमानी रुपना से * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
कहाँ से आये औ जैहौ कहँ * तब रूपन ने दओ जवाब ॥
हम आये हैं गढ़ कनवज से * रूपन बारी नाम हमार ॥
ऐपनवारी हम लाये हैं * ब्याहन आये कनौजी राय ॥
खबरि सुनावौ महराजा को * हमरो नेग देयँ पठवाय ॥
इतनी सुनिके गौ हरकारा * औ राजा को करी सलाम ॥
हाल सुनाओ दरवाजे को * तौ लौं रुपना पहुँचो आय ॥

गंगाधर बैठे गद्दी पर * ऊपर खंदक माँ दश्रो डराय ॥
करी बन्दगी महराजा को * ऐपनबारलौ हमारी बात ॥
पूछन लागे महराजा तब * अपनो हाल़ौं दए डराय ॥
बोलो रुपना तब राजा से * रूपन बारी लश्रो मँगाय ॥
हम आये हैं गढ़कनवज से * व्याहन आये कनाजा स्स ॥
अगुआ आल्हा हैं वरात के * तिनही हमका दये पठाय ॥
ऐपनवारी हम लाये हैं * हमरो नेग देहु मँगवाय ॥
नेग हमारो यही होत है * थोड़ी देर करैं तरवार ॥
इतनी सुनतै राजा जरिगै * औ रुपना से कही सुनाय ॥
आल्हा आये क्यों बरात में * ओछी जाति बनाफर राय ॥
द्वार हमारे क्यों आये वह * याको मूड़ लेउ कटवाय ॥
जान न पावें अब बारी यह * टड्डुआ टायर लेउ छिनाय ॥
गुस्सा हुइके गंगाधर ने * फाटक बन्द दई करवाय ॥
बोलो रुपना तब राजा से * राजा कहाँ तुम्हारो ज्ञान ॥
है यह घोड़ा चन्द्रवंश को * याकोकोउनहिं सकतछिनाय ॥
सुनतै दौरि परे चत्री सब * तुरतै घेरि लश्रो ततकाल ॥
खैंचि शिरोही लइ रुपना ने * तुरतै गड़बड़ दश्रो मचाय ॥
मारत घूमै रजपूतन को * जैसे खेती लुनै किसान ॥
चौबिस चत्री रुपना मारे * दरवाजे पर दए गिराय ॥
एँड़ लगाई रस बेंदुल के * औ गद्दी तिर पहुँचो जाय ॥
झालरि तोरि लई मोतिन के * ऐपन बारी लई उठाय ॥
वाकोनेग लिहौं भौरिन में * यह कहि रुपना करीसलाम ॥
एँड़ लगाई रस बेंदुल के * फाटक निकरि गयो वा पार ॥
मन खिसियाने चत्री दौड़े * गलियारेन महँ घेरो जाय ॥

लौटि के आई सतखंडा को * घोड़ा ऊपर दयो उड़ाय ॥
बोले आल्हा तब देवले भो * औ बरात में पहुँचो जाय ॥
घटिहा राजा गंगा ने देखो * पूछन लगे उदयसिंह राय ॥
चलिभौ देबा दरवाजे पर * सुनि रुपना ने दयो जवाब ॥
भई लड़ैया हैं बूँदी के * द्वारे कठिन चली तलवार ॥
धर्म चन्देले को राखो हम * चौबिस क्षत्री दए गिराय ॥
घायल करिदै बहु क्षत्री हम * तहँपर राखो बात तुम्हार ॥
राम बनावें सो बन जावै * बिगड़ी बनत बनत बनिजाय ॥
यहाँ कि बातैं तो छाँड़ो यहँ * अब बूँदी को सुनो हवाल ॥
दोनौं बेटा औ नेगी सब * गंगाधर ने लये बुलाय ॥
बोले राजा तब बेटन से * तुम सब बात सुनौ मनलाय ॥
जिनके नेगी ऐसे जालिम * तिन क्षत्रिन से कौन बसाय ॥
अगुआ आल्हा हैं बरात के * ओछी जात बनाफर राय ॥
ब्याह न करिहैं हम अबहीं यह * ताते सुनौ हमारी बात ॥
तुम छल करके बात बनावहु * चारो नेगी सङ्ग लिवाय ॥
अकिले लाखनिकौंलावो तुम * औ खंदक में देउ डराय ॥
यह तुम कहियोसुनिआल्हासे * हमरे कुला यहै ब्योहार ॥
ब्याहु करिदिहैं हम बेटी संग * अकिलो लड़िका देउ पठाय ॥
संग न भेजो तुम काहू को * यहु कहि दई बुन्देले राय ॥
यह सुनि चलिभे दोनौं बेटा * चारो नेगी सङ्ग लिवाय ॥
चारि घरी केरे अरसा में * औ बरात में पहुँचे जाय ॥
पूछन लागे तहँ क्षत्रिन से * तम्बू कौन कनौजी क्यार ॥
सो बतलाय दियो काहू ने * जहँ मखमलकीलगी कनात ॥
कीमखाब को वह तम्बू है * यह सुनि तहाँ पहूँचे जाय ॥

सोने सिंहासन जैचन्द बैठे * ऊपर चौंर ढुरे गजगाह ॥
करी बन्दगी तब दोनों ने * औ जैचन्द धरी अगार ॥
हम हैं लड़िका गंगाधर के * हमको राजे कहो समुझाय ॥
यह कहि दीन्हीं है दादा ने * अकिलो लड़िका नाम हमार ॥
बोले ऊदन तब क्षत्रिन से * क्षत्रिउ बाँधि लेउ हथियार ॥
कही जवाहिर तब आल्हा से * हमरे कुला यही व्योहार ॥
संग न जैहैं कोइ लड़िका के * अकिलो लड़िका देउ पठाय ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * हमरे देश रीति चलि आय ॥
ब्याहु न होइहैं सहबोला बिन * नेगी सङ्ग झगरिहैं जाय ॥
यह कहि बारह शूर सजाये * औ नेगिन को रूप बनाय ॥
काहुइ दीन्हों आसा बल्लम * काहुइ मुरछल दओ गहाय ॥
काहुइ पङ्खा दओ ऊदन ने * काहुइ झराडा दओ गहाय ॥
यहि विधि बारहुशूर सजिगये * पलकी साथ में भये तयार ॥
लाखनि ऊदनि चलिदोनौं तब * त्यहि पलकी में भये सवार ॥
गई पालकी दरवाजे पर * कुँवर जवाहर कही सुनाय ॥
भीतर नेगी जान न पैहैं * तब ऊदन ने दओ जवाब ॥
घाटि करौ जो तुम हमरे सङ्ग * मोती गङ्गा लई उठाय ॥
भरम न लावो अपने मन में * तुमहूँ छोरि धरौ हथियार ॥
तेगा धरि दो तब द्वारे पर * भीतर चले उदैसिंह राय ॥
फाटक बन्दो करवाइ तब * औ महलन में गये लिवाय ॥
मोती जवाहर बोलन लागे * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
पहले भोजन दोऊ करिलेउ * पाछे भाँवरि दिहैं डराय ॥
दोऊ पहुँचे जब मड़ये तर * औ पाटा पर बैठे जाय ॥
थार सोबरन में दोनौं के * आगे भोजन दियो धराय ॥

कटा कराय दई लश्कड़ा.हर * सो पहिले से रखे छिपाय ॥
इतनी सुनतै अली दनौं के * चत्री निकरि पहूँचे आय ॥
खैंचि सिरोही लगग चत्रिनने * तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
पश्चिम सैयद ता हमरे सङ्ग * झूठी गङ्गा लई उठाय ॥
देद लाखन को ऊदन देखे * ना हथियार परो दिखराय ॥
पलङ्ग पड़ो थी तहै मड़ये तर * ताकी पाटी लई उखारि ॥
लैके पाटी लाखनि ऊदनि * उन चत्रिनको मारनलागि ॥
पाटिन मारो लाखनि ऊदन * बहुतक चत्री दए गिराय ॥
लै लै प्राण भगे चत्री तब * मोती खैंचि लई तलवारि ॥
खैंचि सिरोही लई जवाहर * इन दोनौं को घेरो जाय ॥
पाटी चलाई बघऊदन ने * खाली चोट परी तहँ आय ॥
ऊदनि गिरिगे तब धरती पर * संगै गिरे लखनसीराय ॥
घैंहा हुइगे तहँ दोनौं तब * मोती कैद लए करवाय ॥
सुनी खबरिजब यह गंगाधर * तब यह हुक्म दश्रो करवाय ॥
महल के पाछे जो दाहक है * तामें इनहि देउ डरवाय ॥
लै गये मोती तब दोनों को * चुंगल दहक दश्रा डरवाय ॥
शिला धराय दई ऊपर से * पहरा बिकट दश्रो बैठाय ॥
बन्द कराय दश्रो रस्ता वह * मालिनि देखत रही हवाल ॥
तुरतै पहुँची सतखंडा पर * औ कुसुमा से कही सुनाय ॥
बाप तुम्हारे ने घटि कीन्हीं * लड़िकै दाहक दश्रौ डराय ॥
छलिकै लाये थे मड़ये तर * सब हथियार दए धरवाय ॥
संगहि यक ऊदन आये थे * सोऊ दहक दये डरवाय ॥
ऐसे सुन्दर दोउ लड़िका हैं * मानहु रामलषण दोउ भाय ॥
यह सुनि बेटी सोचन लागी * औ मालिन से पूछन लागि ॥

बहुत से दाहक हैं राजा को * केहि चौंर ढुरे गजगाह ॥
बोली मालिनि तब बेटी से * बेटी सुनु घरी अगार ॥
महलके पीछे जो दहिने है * तामें दोने कहो समुझाय ॥
आधी रात में कुसुमा बेटो * थार सोवरन नाम हमार ॥
धरी मिठाई कनकथार में * रेशम रस्सा लये थियार ॥
तुरतै उतरी सतखंडा से * औ दाहक पर पहुँची जाय ॥
जितने चत्री थे पहरा पर * तिनको मुहरैं दई गहाय ॥
हाल बतैयो ना काहू से * की यहँ आई राजकुमारि ॥
कुसुमा पहुँची जब खंदकपर * बजुरि पिहनियाँ दई हटाय ॥
रेशम रस्सा लटकाओ त्यहि * औ यह कही कुसुमदे रानि ॥
निकरो बालम तुम दाहकसे * स्वामी लागों चरन तुम्हार ॥
बोले लाखनि तब ऊमे से * रानी घटिहा वाप तुम्हार ॥
भाई तुम्हारे दोउ घटिहा हैं * झूठो गंगा लई उठाय ॥
सब हथियार रखाय द्वारपर * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
करिके घायल हम दोनों को * चुगल दहक दओ डरवाय ॥
चोरा चोरी हम निकसैं जो * तौ चत्रीपन जाय नशाय ॥
करिहैं भोजन ना खंदक में * ना यह धर्म चत्रियन क्यार ॥
हमहि निकारो जो चाहो तुम * आल्है खबरि देउ पहुँचाय ॥
इतनो सुनि के कुसमा लौटी * सतखंडा पर पहुँची आय ॥
भोर होतही पाती लिखिके * त्यहि मालिन को दई गहाय ॥
धरिके पाती सो डलिया में * पहुँचो वह बरात में जाय ॥
पूछिके आल्हाढिग पहुँची जब * तुरतै पाती दई गहाय ॥
खोलिके पाती आल्हा बाँची * औ मालिन से कही सुनाय ॥
यह कहि दीजो तुम बेटी से * आजुइ कैदि लिहैं छुड़वाय ॥

कटा कराय दई लश्कर पर * मालिन हाल दश्रो बतलाय ॥
इतनी सुनतै अली ढशा से * अबहीं फौज लेउ सजवाय ॥
खैंचि सिरोही गंगाधर है * लड़िका ऊभे दए डराय ॥
पश्चिम सैयद तब तम्बू से * औ लश्कर में पहुँचो जाय ॥
देद लाख ड़ची को बोरादै * सोने कड़ा दश्रो डरवाय ॥
डंका बाजो तब लश्कर में * लश्कर तुरत भश्रो तैयार ॥
हाथी चढैया हाथिन चढिगै * बाँके घोड़न पर असवार ॥
अपनी अपनी असवारिनपर * क्षत्री सबै भए तैयार ॥
हथि पचशावद त्यार करायो * आल्हा तापर भये सवार ॥
घोड़ा मनुरथा को सजवायो * ढेबा फाँदि भश्रो असवार ॥
मीरा सैयद बनरस वाले * घोड़ो सिंहनी पर असवार ॥
धनुआँ तेली लला तमोलो * अपने घोड़न भए सवार ॥
कूच कराय दश्रो लश्करको * रण खेतन में पहुँचे जाय ॥
एक कोश जब फाटक रहिगो * मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्ट धातु की * सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
सुनी खबरि जब गंगाधर ने * शिर पर फौज पहूँचो आय ॥
दोनौं लड़िकन से बोले तब * लश्कर तुरत लेउ सजवाय ॥
लौटिकै जीवत नाहिं जावै कोउ * सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥
मोती जवाहर बदलत आये * औ लश्कर में पहुँचे आय ॥
त्यार कराय लियोलश्करतब * तुरतै कूच दश्रो करवाय ॥
बढ़ि २ तोपैं जुतवाई तब * सो आगे को दई बढ़ाय ॥
आध कोस जब लश्कररहिगो * मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
मोती बढ़िके तब आगे को * औ आल्हाको दइ ललकार ॥
कौनसो क्षत्री चढ़ि आश्रो है * सो समुहें हुइ देइ जवाब ॥

बढ़िके ज्वाब दियो आल्हा ने * मोती सुँर ढुरे गजगाह ॥
घटिहा राजा के लड़िका हो * झूठी गङ्ग धरी अगार ॥
छलिके लाये तुम लड़िकनको * औ खंदक में हो समुझाय ॥
भलो आपनो जो चाहौ तुम * तौ तुम ब्याह देउ हमार ॥
इतनी सुनतै मोती जरिगे * गुस्सा गई देह मथियाए ॥
नाम जो लैहौ तुम ब्याहे को * मुखमें ठाँसि दिहौं तलवार ॥
धोखे रहिहौ ना दिल्ली के * जहँ ब्रह्मा को करो बिआहु ॥
बोले आल्हा तब मोती से * कायर लैजा प्राण बचाय ॥
घटिहा राजा को लड़िका है * धोखा करत और के साथ ॥
यह सुनि गुस्सा हुइ मोती ने * गोलंदाज लए बुलवाय ॥
बत्ती देदेउ सब तोपन में * इन पाजिन को देउ उड़ाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर * तोपन आगी दई लगाय ॥
धुआँ उड़ानो उन तोपन को * दलमें रही अँधेरी छाय ॥
दगी सलामी दोनौं दल में * गोला छुटन लगे ततकाल ॥
पाँच कोस लौं गोला पहुँचै * गोली आध कोस लौं जाय ॥
बरछी तीर तमंचा छूटै * चहुँदिशिपरी तुपन की मारु ॥
चारि घरी भर गोला बरसो * तोपैं लाल बरन हुइ जायँ ॥
चुके मसाला जब पेटिन के * तोपैं बन्द दईं करवाय ॥
इकमिल हुइगये दोनौं लश्कर * क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ॥
खट खट तेगा बाजन लागो * बोलै छपक छपक तलवार ॥
चलै शिरोही दोनौं दल में * जहँ शिर भुट्टासे उड़िजायँ ॥
हाथी बढाओ तब आल्हा ने * औ सैयद से कही सुनाय ॥
घटिहा राजा है बूँदी को * छलिके लड़िकागयो लिवाय ॥
घेहा करि के उन दोनौं को * ऊभे बीच दओ डरवाय ॥

कटा कराय दई लश्कर की * सैयद रहेउ बहुत हुशियार ॥
इतनी सुनतै अली अली करि * सैयद दौरि पड़े ततकाल ॥
खैंचि सिरोही लइ सैयद ने * धनुआँ खैंचि लई तलवार ॥
पश्चिम सैयद पूरब धनुआँ * दोनौं हाथ करैं तलवार ॥
डेढ़ लाख लश्कर बूँदी को * रण खेतन माँ दओ गिराय ॥
तीनि लाख जूझे कनवजके * ऐसी कठिन चली तलवार ॥
सात कोसलौं मुर्दा डारे * लोथिन ऊपर लोथि दिखाय ॥
नदी बहन सी लगी खून की * कछुआ सरिस शीशउतराय ॥
लाखन लोथैं रणमें डारीं * कौआ गिद्ध मांस ना खायँ ॥
क्षत्री थकिगये सब लश्कर में * सन्ध्या काल रहो नियराय ॥
युद्ध बन्द भो तब दोनौं दल * मुर्दा अपनो दओ हटाय ॥
जोवे लायक जो घायल थे * आल्हा उन्हैं लओ उठवाय ॥
लश्करघटिगो बहु कनवज को * मनमें आल्हा कियो बिचार ॥
होय सहायक जगदम्बा जो * तौ सबकाम सिद्ध हुइजाय ॥
यही विचारत आल्हा चलिभे * औ मठिया में पहुँचे जाय ॥
पूजन करिके जगदम्बा को * तुरतै होम दओ करवाय ॥
हाथ जोरिके आल्हा बोले को * माता हमरी करौ सहाय ॥
ब्याह न हुइहैं जो बूँदी में * तौ जग हुइहै हँसी हमारि ॥
हँसी हुइगई है बूँदी में * दुलहै दाहक दओ डराय ॥
कछु अपराध नाहिं हमरो है * यह छल करो बुन्देले राय ॥
छलिके लैगयेदोउ लड़िकनको * चुंगल दहक दए डरवाय ॥
काज पराये हम आये हैं * माता राखहु धर्म हमारि ॥
बोली आभा तब देवी को * आल्हा मानहु बात हमारि ॥
खबरिभेजिदेउ तुम सिरसाको * औ महुबे को देउ पठाय ॥

ब्रह्मा मलिखे जब ऐहैं यहँ * तब लाखनिको होय बिआहु ॥
इतनी सुनिके आल्हा चलिभये * औ तम्बू में पहुँचे आय ॥
पाती लिखो एक मलिखे को * औ ब्रह्माको लिखी जुहार ॥
ब्याहन आये लाखनि राना * हम अगुआ होइ लायेबरात ॥
लाखनि ऊदनको संग लैगये * गंगा करो हमारे साथ ॥
धोखा दैके उन दोनौं को * चुंगल दहक दओ डरवाय ॥
घटिहा राजा बूँदी वाले * त्यहि घटि करी हमारे साथ ॥
बड़े लड़ैया हैं बूँदी के * लश्कर कटा दई करवाय ॥
तुमहिं बुलावत राजा जैचन्द * अब सङ्कट में होउ सहाय ॥
जल्दी आवो तुम लश्कर लै * तब बूँदी में होय बिआहु ॥
यहिविधिपातीलिखि आल्हाने * हरकारा को दई गहाय ॥
जल्दी जावो तुम महुबे को * ब्रह्मै पाती दीजो जाय ॥
दुसरी पाती गढ़ सिरसा को * नर मलिखेको दिओ गहाय ॥
लैके पाती धामन चलिभो * गढ़ महुबे में पहुँचो जाय ॥
जहाँ कचहरी थी ब्रह्मा की * तहँ पर उतरि परो अरगाय ॥
करी बन्दगी जब ब्रह्मा को * पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके पाती ब्रह्मा बाँची * औ धामन से कही सुनाय ॥
मल्हना माता ने समझायो * ना तुम छाँड़ो नगर महोब ॥
कही न मानी उन माता की * औ कनवज को गये रिसाय ॥
जस उनकीन्हों तसभरि पायो * अब ब्रह्माकी जाय बलाय ॥
इतनी सुनतै धावन चलिभो * गढ़ सिरसामें पहुँचो जाय ॥
करो बन्दगी नर मलिखेको * पाती गद्दी दई चलाय ॥
लैके पाती मलिखे बाँची * औ गद्दी तर दई दबाय ॥
दई निकासी परिमालै ने * तब हम रोकि कही समुझाय ॥

बास करौ यहँ गढ़ सिरसा में * बैठे राज करौ महराज ॥
बात हमारी नहिं मानी उन * सो ऊदन पर गई बिसाय ॥
अस मन सोचत मलिखे चलिभे * पहुँचे रंग महल में जाय ॥
आवत देखो तब रानी उन * दोनौं हाथ जोरि रहिजाँय ॥
बोली गजमोतिन मलिखे से * स्वामी लागौं चरण तुम्हार ॥
कौन सोच में हौ स्वामीतुम * काहे वदन गस्रो कुम्हिलाय ॥
बोले मलिखे गजमोतिन से * हमसे कछु कही ना जाय ॥
ब्याह में लाखन के ऊदनगे * गढबूँदी में कठिन मुकाम ॥
तहँ छल करके गंगाधर ने * खंदक बीच दस्रो डरवाय ॥
पाती आई है आल्हा की * अब गाढ़े में होउ सहाय ॥
लैके लश्कर जब ऐहौ तुम * तब बूँदा में होय बिआहु ॥
हमने हटको थो आल्हा को * तुमयहँछोड़िअनतनहिजाउ ॥
नित उठि सेवा सब करिहैं हम * बैठ राज करौ सुख साथ ॥
कही हमारी नहिं मानी उन * अब तहँ हमरी जाय बलाय ॥
इतनी सुनिके गजमोतिनने * आधीनी करि कहो सुनाय ॥
स्वामी सुनहु बात साँची यह * सो हम तुमहिं देयँ बतलाय ॥
जो मरि जैहैं ऊदन देवर * तुमको हँसिहै सकल जहान ॥
मुख दिखरैबो भारी परि है * की भाई को दियो मराय ॥
याद करौ हमरे नैहर की * ऊभे तुमहिं दस्रो डरवाय ॥
धन्य की छाती थी ऊदनकी * तहँते तुमहि छुड़ाश्रो आय ॥
रणके दुलहा बघऊदन हैं * सो अब उनकी करौ सहाय ॥
बदलो देउ जाय भैया को * नहिं जग हुइहैं हँसी तुम्हार ॥
फिरि पाछे से पछितैहौ तुम * जो नहिं मनिहौ कही हमार ॥
यह सुनि मलिखे सरमाने कछु * औ रानी से कही सुनाय ॥

जो कछुकहिहौसोइकरिहौंहम * सब विधि मानी बात तुम्हार ॥
यह कहि मलिखे चले महलसे * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
हुक्म सुनाइ दओ लश्करमें * क्षत्री साजि होयँ तैयार ॥
हुक्म पाय के बजो नगाड़ा * क्षत्री साजि भये तैयार ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई * मलिखे फाँदि भये असवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को * मन्ना गूजर संग लिवाय ॥
खुनखुनकोरी मदन गड़रिया * अपने घोड़न भये सवार ॥
यह चढ़वायक नर मलिखेके * जो मरिबेको नाहिं डेरायँ ॥
संगै चलि भये नर मलिखेके * औ महुबे में पहुँचे आय ॥
मारू डंका को बजवाओ * सागर डेरा दए डराय ॥
जहाँ कचहरी चन्देले की * पहुँचे तहाँ वीर मलिखान ॥
समुहें पहुँचे जब ब्रह्मा के * ब्रह्मा चौकी दई डराय ॥
पूछन लागे ब्रह्मानन्द तब * गढ़की कुशल देहु बतलाय ॥
बोले मलिखे तब ब्रह्मा से * है सब भाँति प्रताप तुम्हार ॥
राज करत हौं गढ़ सिरसामें * पै यक बात सुनो मनलाय ॥
व्याहन लाखन गै बूँदी में * संगै गये लहुरवा भाय ॥
तहँ छल करिके गंगाधर ने * उनको ऊभे दओ डराय ॥
पाती भेजी है आल्हा ने * की असने में होउ सहाय ॥
लश्कर लाये हैं अपनो हम * सँगैं चलिहैं तुम्हहिं लिवाय ॥
यही मुनासिब है तुमको अब * जल्दी चलौ हमारे साथ ॥
फौज सजाय लेउ अपनी तुम * औ आल्हा की करौ सहाय ॥
बात मानि लइ नरमलिखेकी * यक हरकारा लओ बुलाय ॥
डंका बाजै गढ़ महुबे में * लश्कर जल्द होय तैयार ॥
डंका बाजो तब महुबे में * लश्कर सजो चन्देले क्यार ॥

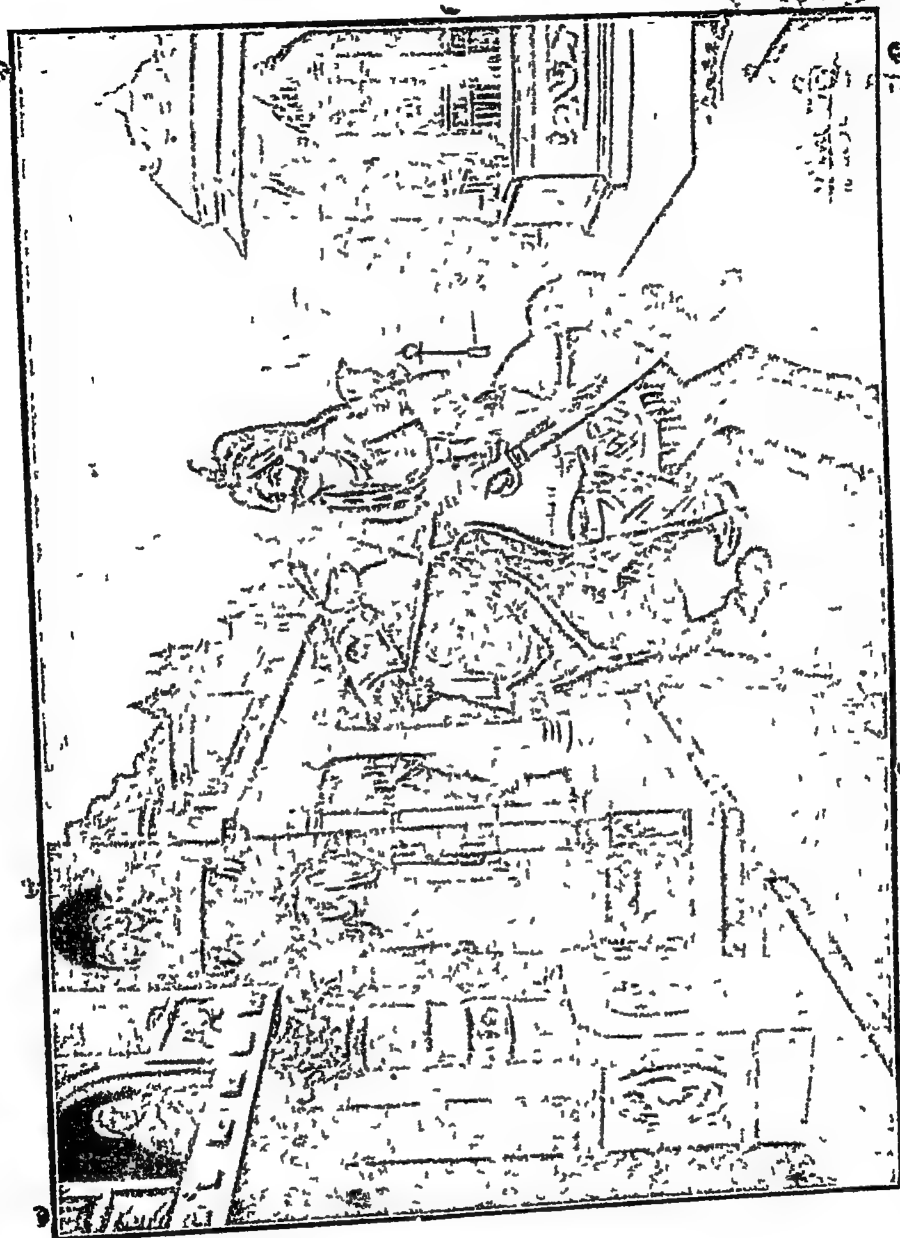
सुनो हालजबयह मल्हना ने * आये यहाँ बीर मलिखान ॥
यक हरकारा को भेजा तब * तुम मलिखे को जाउ बुलाय ॥
गो हरकारा नर मलिखे पै * औ मलिखे से कही सुनाय ॥
रानी मल्हना तुमहिं बुलावत * अबहीं चलौ हमारे साथ ॥
उनही पायन मलिखे चलिभे * औ मल्हना तै पहुँचे जाय ॥
चरण लागिके रनिमल्हनाके * मलिखे माथे लए लगाय ॥
हृदय लगाय लियो मल्हनाने * औ मलिखे से कहो सुनाय ॥
बाट तुम्हारी नित उठि हेरौं * ऐहें आजु बीर मलिखान ॥
कहाँकी त्यारी तुम कीन्हीहै * कहँको डंका दश्रो बजाय ॥
हाथ जोरि बोले मलिखे तब * माता कछू कहो ना जाय ॥
लाखन ब्याहन गये बूँदी में * अगुआ भये बनाफर राय ॥
गंगाधर ने लाखनि ऊदन * चुंगल दहक दये डरवाय ॥
पाती भेजी तब आल्हा ने * आवो साजि बीर मलिखान ॥
संगै लावौ ब्रह्मानन्द को * बूँदी मर्दि करैं खरिहान ॥
संकट पड़ो आय आल्हा पर * हम लशकरको लाये सजाय ॥
संगै जैहैं ब्रह्मानन्द को * सो तुम हुक्म देहु फरमाय ॥
इतनी सुनिके मल्हना बोली * अबहीं कूँच देउ करवाय ॥
ब्याह कराय देउ लाखनिको * औ ऊदन को लेउ छुड़ाय ॥
यहसुनिकरिप्रणाममल्हनाको * तुरतै चले बीर मलिखान ॥
सजी कबुतरी जहँ ठाढ़ीथी * तापर तुरत भये असवार ॥
घोड़ा हरनागर सजवाओ * ब्रह्मा फाँदि भए असवार ॥
कूँच कराय दश्रो लश्करको * औं बूँदी की पकरी राह ॥
सात कोस जब बूँदी रहिगइ * तहँ पर डेरा दए डराय ॥
तम्बू तानि दए नदी पर * अपने झंडा दए गड़ाय ॥

राम बनावैं सो बनिजावै * बिगड़ी बनत बनत बनिजाय ॥
बोले आल्हा तब जैचन्द से * आये नहीं बीर मलिखान ॥
लश्कर थोड़ोहै कनवज को * ताते लौटि चलौ महराज ॥
साथ में लेहैं ब्रह्मानन्द को * लेहैं साथ बीर मलिखान ॥
व्याह करै हैं तब लाखनिको * यहसुनि कही कनौजी राय ॥
पैदल पल्टन क्या लरिहैं अब * ताते कूँच दयो करवाय ॥
इतनी सुनतै तुनि आल्हा ने * लश्कर कूँच दयो करवाय ॥
जितने घायल थे लश्कर में * सो डोलिन में लए बिठाय ॥
दूरि से लश्कर मलिखे देखा * तब हरकारा लयो बुलाय ॥
लश्कर किसको यह आवतहै * अबहीं खबरि सुनावौ आय ॥
मधुकेसलिखे यह अपने मन * की यह फौज बुन्देले क्यार ॥
मुर्चाबन्दी करवाई तब * तोपैं चरखिन दई चढ़ाय ॥
आगे लश्कर आल्हा देखो * नर देवा से कही सुनाय ॥
लश्कर आवत है बूँदी को * मुर्चाबन्दी देव कराय ॥
बड़ि बड़ि तोपनको सजवावौ * औ चरखिन पर देव चढ़ाय ॥
यह सुनि आगे बढ़ि देवाने * मुर्चाबन्दी दई कराय ॥
बड़िबड़ि तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
बत्ती धरिबे को बाकी रहि * तौंलौं धामन पहुँचो आय ॥
खबरैं हुइगइ दोनों दल में * नाहीं कछू युद्ध को काम ॥
सुनी खबरि तब तुनिआल्हाने * आये ब्रह्मानन्द मलिखान ॥
सुनी खबरि ब्रह्मा मलिखे यह * लौटी फौज कनौजी क्यार ॥
घोड़ा हरनागरपर ब्रह्मा चढ़ि * घोड़ी कबुतरी पर मलिखान ॥
दोनों आये तुनि आल्हा पै * औ जैचन्द को करी सलाम ॥
सूरति देखी जब दोनों की * भए प्रसन्न कनौजी राय ॥

हृदय लगाय लियो आल्हा ने * दोउ नैनन से नीर बहाय ॥
बोले मलिखे सुनि आल्हा से * दादा धीर धरौ मनमाहिं ॥
ब्याहु करैहैं हम लाखनि को * सातौ भाँवरि लिहैं डराय ॥
फिरि नरमलिखे बोलन लागे * औ ढेबा से कही सुनाय ॥
उत्तर ओर जाय बूँदी के * अपनो मुर्चा देउ लगाय ॥
मारै धावा बूँदी वारो * तब तुम हटौ पाछिली ओर ॥
बेड़े दक्खिन हुइ ऐहैं हम * बूँदी शहर लिहैं लुटवाय ॥
इतनी सुनतै ढेबा चलिभो * उत्तर ओर गरासो जाय ॥
खड़े ज्वान सब मुचंन मुचंन * नंगी हाथ लिये तलवार ॥
तोपैं चढ़ि गइ तहँ चरखिन पर * मुर्चाबन्दी दई कराय ॥
बारह कोस को फेरु खाय के * दक्खिन गए बीर मलिखान ॥
हुक्म दै दओ नर ढेबा ने * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
हुक्म पाय के झुके खलासी * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
धुआँ उड़ानो आसमान लौं * सूरज रहैं धुंधि में छाय ॥
बूँदी घिरि गइ चारौं ओरी * बहिरो भितरो आय न जाय ॥
सुनो दनाका उन तोपन को * यक हरकारा पहुँचो जाय ॥
हाल सुनो जब गंगाधर ने * दोनौं बेटा लए बुलाय ॥
लश्कर जल्दी सजवावो तुम * जैचन्द फेरि गरासो आय ॥
यहसुनि चलिभे मोती जवाहर * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
तुरतै डंका बजवाओ तिन * लश्कर सबै भओ तैयार ॥
पैदल पलटन के क्षत्रिन ने * अपने बाँधि लए हथियार ॥
लड़िका दोनौं गङ्गाधर के * अपने घोड़न भए सवार ॥
गंगाधर चढ़िगै हथिनी पर * लश्कर कूच दओ करवाय ॥
आई फौज जबहिं खेतन माँ * मुर्चाबन्दी दइ करवाय ॥

तोपन बत्ती लगवाई तब * धुँआना रहो सरग मँड़राय ॥
जबहीं गोला छूटन लागे * बूँदी वाले बढ़े अगार ॥
पीछे हटिके पाँच कोस पर * ढेबा मुर्चा दओ लगाय ॥
बढ़िगे आगे फिरि बूँदी के * तब फिरि ढेबा हटो पिछार ॥
मलिखे रहे जहाँ दक्खिनपर * तहँ तोपनको दओ लगाय ॥
मारे गोला दरवाजे पर * फाटक तुरतै दओ गिराय ॥
जौन सिपाही थे द्वारे पर * सबकी कटा दई करवाय ॥
धावा करिदो नर मलिखे ने * औ ड्योढ़ी में पहुँचे जाय ॥
रानी आई रङ्ग महल से * औ मलिखे से कही सुनाय ॥
तुम सब लायक हो महुबे के * जानत तुमहि सकल संसार ॥
हाथ चलैओ ना तिरियन पर * तुम समरत्थ बनाफर राय ॥
बोले मलिखे तब रानी से * धर्मकि माता लगौ हमार ॥
घटिहा राजा गंगाधर है * तिन छल करौ हमारे साथ ॥
लाखनि ऊदन को छलिलाये * औ ऊभे में दओ डराय ॥
कौन से खन्दक में दोनों हैं * रानी हमहिं देउ बतलाय ॥
महल के पीछे जो दहिने है * तेहि ऊभे से लेउ निकारि ॥
पहुँचे मलिखे तब ऊभे पर * बज्जुर पिहनिया दई हटाय ॥
जौन सिपाही थे पहरा पर * सबकी कटा दई करवाय ॥
टेरो मलिखे ने ऊदन को * निकरो बेगि लहुरवा भाय ॥
सुनतै बोली पहिचानी तब * बोले तुरत उदयसिंह राय ॥
बहुत घाव लागे देही में * कैसो करैं बीर मलिखान ॥
ताना दीन्हों तब मलिखे ने * तुम सुनि लेउ उदयसिंह राय ॥
हम ब्याहन गै जब पथरीगढ़ * राजा दहक दओ डरवाय ॥
तुमने टेरो तब दाहक पर * आवो निकरि बीर मलिखान ॥

असली बड़ा आल्हखण्ड



भार्गवभूषण प्रेस, काशी।

तुरतै निकरे थे दाहक से * सो सुधि करौ लहुरवा भाय ॥
राखे बाना रजपूती की * क्या बल घटौ भुजनते आय ॥
बात लागि गइ तब ऊदन के * मन में सुमिरि शारदा माय ॥
तड़पि के ऊदन बाहर निकरे * औ ब्रह्मा को करी सलाम ॥
चरण लागिके नर मलिखेके * सो माथे से लए लगाय ॥
बोले मलिखे फिरि लाखनिते * आवौ निकरि कनौजी राय ॥
लगे घाव हैं जो पसुरी में * भारो कसक करेजे क्यार ॥
यह मन सोचे लाखनि राना * हँसिहै हमहिं बीर मलिखान ॥
मौका नाहीं कछु कहिबे को * लैके अजयपाल को नाम ॥
सुमिरन करिके फूलमती को * तड़पे तुरत कनौजी राय ॥
बाहर आये लाखन राना * पलकी तहाँ लई मँगवाय ॥
लाखनि ऊदन चढ़ि पलकी में * मलिखे पलकी संगलिवाय ॥
पहुँचे जबही दोउ तम्बू में * तुरतै घाव दए सिलवाय ॥
मरहम पट्टी करवाई तब * लश्कर आगे दश्रौ बढ़ाय ॥
चलिभौ लश्करनरमलिखेको * धौंसा होत गोल में जाय ॥
उत्तर ढेबा आल्हा घेरे * पूरब सैयद लई घिराय ॥
पश्चिम पाटी ब्रह्मा घेरी * दक्खिन घेरी बीर मलिखान ॥
बीच में लश्कर बूँदी वारो * चारौ ओर चलै तलवार ॥
आठ कोस के चौफेरा में * अंधा धुन्ध चली तवारि ॥
पहर एक लौं चली शिरोही * औ बहि चली खून की धार ॥
पाँच लाख छत्री बूँदी के * महुबे वारेन दए गिराय ॥
बचे बचाये जो छत्री थे * सो सब भागे प्राण बचाय ॥
मोती जवाहर ने देखो जब * हमरो लश्कर गश्रो बिलाय ॥
घोड़ा बढ़ाश्रो तब मोती ने * औ ब्रह्मा से कही सुनाय ॥

खबरदार रहियो घोड़ा पर * यक कहि लीन्हो हाथ कमान ॥
तीर चलाओ जब ब्रह्मा पर * ब्रह्मा घोड़ा गये हटाय ॥
कावा दैके फिर मोती ने * अपनी खैंचि लई तरवारि ॥
करो जड़ाका जब ब्रह्मा पर * ब्रह्मा दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
टूटि शिरोही गइ मोती की * ब्रह्मा घोड़ा दओ गिराय ॥
ढाल की ओझड़ ब्रह्मा मारी * औ मोती को दओ गिराय ॥
डंड बाँधि लइ मोतीमलकी * यह गति लखी जवाहरसिंह ॥
बढ़िके आये जब ब्रह्मा तें * सन्मुख आयगये मलिखान ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है * हमसे खेलौ जूझ अघाय ॥
इतनी सुनतै कुँवर जवाहर * तुरतै खैंचि लई तलवार ॥
चोट चलाई नर मलिखे पर * मलिखे घोड़ी दई बढ़ाय ॥
टूटि शिरोही गइ उनहूँ की * मलिखे लै गयो बार बचाय ॥
टक्कर मारी यक घोड़ी के * तुरतै भुइँ में दओ गिराय ॥
बाँधो तुरतै नर मलिखे ने * गंगाधर यह सुनो हवाल ॥
हाथी बढ़ाओ तब आगे बढ़ि * गंगाधर को दओ जवाब ॥
कौने बाँधो है लड़िकन को * सो समुहें हुइ देइ जवाब ॥
बोले मलिखे तब आगे को * ओसमुहें हुइ कही सुनाय ॥
छलिया राजा हौ बूँदी के * ऐसो तुमहि मुनासिब नाहिं ॥
अबहीं तुम्हरो कछु बिगरोना * सातौ भाँवरि देउ डराय ॥
बिना बिआहे हम ना जैहैं * चाहै प्राण रहै कै जाय ॥
यह सुनि गुस्सा हुइ गंगाधर * अपनो जादू लओ उठाय ॥
भैरव जादू तकि २ मारो * सोमलिखे पर ना अनियाय ॥
सोचे गंगाधर अपने मन * जादू झूठो परत हमार ॥
बोले मलिखे गंगाधर से * राजा सुनौ हमारी बात ॥

पुष्य नक्षत्र माहि जन्मा हौं * बरहें पड़े वृहस्पति आय ॥
जादू एक केर गिनती क्या * शंका हमहि कालकी नाहिं ॥
गुर्ज चलाश्रो तब गंगाधर * मलिखे लीन्ही चोट बचाय ॥
घोड़ी कबुतरी ऊपर उठि गइ * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
मलिखे पहुँचे तुनिश्राल्हातर * औ आल्हा से कही सुनाय ॥
बरनी तुम्हारी को राजा है * दादा लेउ जँजीरन बाँध ॥
यह सुनि आल्हा आगे बढ़िके * गंगाधर से कही सुनाय ॥
या तौ ब्याह करौ बेटी को * या तुम लड़ो हमारे साथ ॥
इतनी सुनतै गंगाधर ने * अपनो हाथी दश्रो बढ़ाय ॥
भाला लैंके गंगाधर ने * तुनिश्राल्हा पर दश्रो चलाय ॥
चोट बचाय लई आल्हा ने * दहिने भई शारदा माय ॥
भाला गिरो जाय धरती में * हौदा एक साथ मिलि जाय ॥
झुरमुट ह्वइगा दोउ हाथिनको * राजा खैंचि लई तरवार ॥
छुरी कटिके डंडा कटिगे * आल्हा लैगे चोट बचाय ॥
झपटे आल्हा तब हौदा से * गंगाधर को पकरो जाय ॥
डराड बाँधिके गंगाधर की * त्यहि हौदा में दश्रो बँधाय ॥
तब समुझाश्रो गंगाधर ने * तुम सब योग्य बनाफर राय ॥
अब हम जानिलई अपने मन * तुम्हरे बाँट परी तलवार ॥
ऐसे क्षत्री हैं जिनके घर * क्यों नहिं राज करैं परिमाल ॥
कैदिछोड़िदेउ दोउ लरिकनकी * अबहीं भाँवरि देउँ डराय ॥
बात मानिके नर मलिखे ने * उनकी कैदि दई छुड़वाय ॥
लश्कर चलिके गौ टीहा पर * तम्बू जहाँ कनौजी राय ॥
करो तयारी ब्याह करन की * तुरतै खम्भा दश्रो गड़वाय ॥
मड़वो छाय दियो जल्दी से * आँगन चौक दई पुरवाय ॥

कलश सोबरन को धरवाश्रा * तापर दीपक दश्रो धराय ॥
फिर मन सोचे तहँ गङ्गाधर * दोनौं बेटा लए बुलाय ॥
ब्याह करै हैं जो महुबे के * हमको हँसिहैं सकल जहान ॥
शूर बुलाये दुइ हजार तब * सो कुठरिन माँ दए छिपाय ॥
चलिभै मोती तब नेगिन सङ्ग * औ बरात में पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी तब मोती ने * औ जैचन्द से कही सुनाय ॥
नीकी साइति है भौंरिन की * अबहीं लड़िकन देउ पठाय ॥
बोले जैचन्द तब आल्हा से * तुम लाखनि को देउ पठाय ॥
आल्हा ब्रह्मा मलिखे ढेबा * औ सैयद को संग लिवाय ॥
पाँच शूर सजितयार भये तब * पलकी चली लखनसोक्यार ॥
जबहीं पहुँचे दरवाजे पर * नेगी संग पहूँचे जाय ॥
खबरि पठाई रंग महल में * लड़िका द्वार पहूँचे जाय ॥
भश्रो बुलौश्रा तब भीतर को * सो मड़ये में पहुँचे जाय ॥
पाटा डारि दश्रो चन्दन को * तापर लाखनि बैठे जाय ॥
नाऊ बारी भाट पुरोहित * चारौ नेगी लए बुलाय ॥
पंडित बेद उचारन लागे * गौरि गणेश दए पुजवाय ॥
कुसुमा बेटी को बुलवावो * औ गठिबन्धन दयो कराय ॥
होम कराय दश्रो बेदी पर * राजा हल्ला दश्रो कराय ॥
छिपे महल में जो क्षत्री थे * सो सब निकरि परे ततकाल ॥
पहली भाँवरि के परतै खन * क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ॥
यह गति देखी जब मड़ये में * मलिखे ढेबै कही सुनाय ॥
यह छल कीन्हों है गंगाधर * भैया बहुत रह्यो हुशियार ॥
आल्हा ब्रह्मा मलिखे ढेबा * सैयद खैंचि लई तलवार ॥
चली शिरोही तब मड़ये में * मड़श्रा टूक टूक हुइ जाय ॥

मड़त्र्यो गाड़ो फिरि साँगनको * ढालन मंडप लग्र्यो छ्वाय ॥
एक हजार शूर मढ़ये तर * महुबे वारेन दए गिराय ॥
एक हजार शूर भागे तब * अपने लैगये प्राण बचाय ॥
मोती जवाहर दोनौं बेटा * नर मलिखे ने दए बँधाय ॥
डंड पकरि के गंगाधर की * कन्यादान लग्र्यो करवाय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वारे * सातौ भाँवरि लई डराय ॥
झिगरन लागे सब नेगी तब * मलिखे गहनो दग्र्यो बँटाय ॥
नेगी ठाढ़े जो कनउज के * राजा गहनो दग्र्यो बँटाय ॥
बोले मलिखे गंगाधरसे * बेटी बिदा देउ करवाय ॥
तापर ज्वाब दियो गंगाधर * तुम सुनिलेउ वीरमलिखान ॥
साल के भीतर गौनो देहैं * हमरे कुला यहै ब्योहार ॥
यह कहि भीतर गये गंगाधर * तब रानी ने कही सुनाय ॥
बड़े लड़ैया हैं महुबे के * इनते जीत होन की नाहिं ॥
इन्हैं पठावौ हँसी खुशी से * इतनी मानौ कही हमार ॥
आल्हा ब्याहे नैनागढ़ में * औ गजराजा घर मलिखान॥
ऊदन ब्याहे नरवर गढ़में * दिल्ली माहिं ब्रह्म सरदार ॥
इन्दल ब्याहे अभिनन्दन घर * सोतुमसमुझि लेउ मनमाहिं ॥
बौरीगढ़ से चन्द्रावलि को * जीतिके लाये बिदा कराय ॥
ताते जितिहौ ना इनते तुम * मनते भरम देउ बिसराय ॥
यह सुनि बोले गंगाधर तब * रानी मनिहौं बात तुम्हारि ॥
लहर पटोरो सवालाख को * सो वह हार लई मँगवाय ॥
अस्सी मुहरैं धरि राजा ने * लाखनि रानै लियो बुलाय ॥
खीर खवाई बड़े प्रेम ते * मोहन माला दग्र्यो पहिराय ॥
रोको द्वारे जब सरहज ने * लाखनि हार दग्र्यो पहिराय ॥

रूप देखि सखियाँ मोहित हुइ * महरानी से लगीं बतान ॥
धनिधनि माता इनकी कहिये * जिनकी कोखि लयो औतार ॥
दायज दीन्हो पाँच लाखको * कीन्ह्यो बिदा बुँदेले राय ॥
चली पालकी तब लाखन को * औ छकड़न माँ लयो भराय ॥
जितनो दायज तहँ आयो थो * सो छकड़न माँ लयो भराय ॥
कूँच कराय दयो बूँदी से * औ कनवज को पकरो राह ॥
तेरह दिन मारग में बीते * उतरे घाट कालपी आय ॥
ब्रह्मा मलिखे गये महुबे को * औ कनवज को आइ बरात ॥
लाखनि आये जब द्वारे को * परछनि करी तिलकदे रानि ॥
दान दच्छिणा दे विप्रन को * बहुतक मुहरैं दईं पठाय ॥
दगी सलामी गढ़ कनवजमें * आये ब्याहि कनौजी राय ॥
ऐसे ब्याह भयो लाखनिको * लिखिशिवचरणदयोसमुझाय॥
आगे लड़ाई है गाँजर की * सो हम लिखिके दिहैं सुनाय ॥

इति लाखनिराना का विवाह ॥

(बूँदी 'कामरूदेश' बंगाले की लड़ाई ॥

॥ सम्पूर्ण ॥



* श्रीः *

* अथ *

आल्हखण्ड

* गाँजर की लड़ाई *

(ऊदनि विजय)

* सुमिरनी *

दोहा—सुमिरि शम्भु गिरिजा चरण, गुरु पद अंबुज ध्याय।
गाँजर युद्ध बखानऊँ, सुनहु सुजन मन लाय॥

* आल्हा *

मैं पद बन्दौं गणनायक के * जाते सिद्ध होय सब काम॥
पुनि पद बन्दो श्रीगौरी के * सुमिरहिंजिनहिं सदानरबाम॥
मात सरस्वति के पद बन्दौं * बन्दौं कृष्णचन्द्र भगवान॥
सकल गोपिकनके पद बन्दौं * जिनके मध्य कीन्ह हरिगान॥
भुइयाँ सुमिरौं यहि खेरे की * माता नाम न जानौं तुम्हार॥
तुम्हरे अखाड़े माँ गावति हौं * बेड़ा खेइ लगैयो पार॥
देवी सुमिरौं नीमसार की * जो प्रत्यक्ष सकल संसार॥
सकल तीरथन के पद बन्दौं * पुनि २ तीर्थराज पद ध्याय॥
साहि गुर्ज पराडनका सुमिरौं * तरवर बहीं गोमती माय॥

छोड़ि सुमिरनी अब आगे मैं * बरनौं विजय उदैसिंह क्यार ॥
लगी कचहरी नृप जैचन्दकी * भारी लागि रहो दर्बार ॥
हितू सनेही मित्र कुटुम्बी * बैठ बड़े बड़े सर्दार ॥
बड़े बड़े क्षत्री बंगला बैठे * टिहुना नांगिन धरे तरवार ॥
मंत्री बोले नृप जैचन्द से * सुनिये महाराज बल धाम ॥
बारह बरस को पैसा अटको * गाँजर मिलौ न एक छदाम ॥
राजनीति में यह भाषत है * नाशै नृप संतोषी तात ॥
ताते राजनीति मत छोड़ो * बरतौ सदा शास्त्र की बात ॥
इतनी सुनि के नृप जैचन्द ने * सोने कलशा लियो मँगाय ॥
गंगाजल से सो भरवायो * बीच कचेहरी दियो धराय ॥
बीरा मँगवायो पाँच पानको * सो कलशा पर दियो धराय ॥
भरी सभा राजा की बैठी * तब उठि कही कनौजी राय ॥
बारह बरस को पैसा अटको * गाँजर मिलो न एक छदाम ॥
है कोइ क्षत्री मेरे दल में * गाँजर जाय करै संग्राम ॥
लूटि साफ है सब गाँजर की * भारी खिललति देउँ इनाम ॥
इतनी कहि के जैचन्द बैठे * क्षत्री जपैं हिये घनश्याम ॥
काना फूसी करैं सिपाही * कोइ २ बैठे मूड़ लचाय ॥
कोइ २ कायर सटकन लागे * लोटिया लै झाड़े को जायँ ॥
एक पहर बीरा को हुइगो * सोकलशा पर गो कुम्हिलाय ॥
तड़पि के ऊदन बीरा लीन्हों * तुरतै मुख में लियो चबाय ॥
फिरि ललकारिकहीक्षत्रिनसे * मैं सब दाम लिहौं भरवाय ॥
मारिसिरोहिन चहला करिहौं * गाँजर गर्द दिहौं करवाय ॥
ऊदनि चलिभये तब बँगलासे * औ लाखनि ढिग पहुँचे जाय ॥
हाल बताओ सब ऊदन ने * औ लाखन से कही सुनाय ॥

करौं तयारी अब गाँजर की * सारी फौज लेउ सजवाय ॥
देर लगैबे को दिन नाहीं * जल्दी हुक्म देहु फरमाय ॥
इतनी सुनतै लाखनि राना * अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
बोलि नगड़ची को बीरा दओ * लश्कर डंका देहु बजाय ॥
बजो नगाड़ा गढ़ कनवज में * क्षत्री उठे भरहरा खाय ॥
फौजैं सजन लगीं कनवजकी * कछु तारीफ करी ना जाय ॥
पहिले नगाड़ा भइ जिनबंदी * दुसरे माँ बाँधिलीन्हहथियार ॥
तिसरे नगाड़ाके बाजत खन * क्षत्रिन धरे रिकाबन पाँव ॥
हाथि चढ़ैया हाथिन चढिगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
कोइ नालकिन कोइपालकिन * कोइ गजरथ पर भये सवार ॥
जितनी फौजैं थीं आल्हाकी * सोऊ साजि भईं तैयार ॥
पैदल पल्टन जो कनवज की * तिनहूँ बाँधि लीन्ह हथियार ॥
जितनी तोपैं थीं कनवज की * सब आगे को दई जुताय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर दईं चढ़ाय ॥
फौजैं सजिगइँ सब कनवजकी * संगे फौज बनाफर राय ॥
भुरुई हथिनी का सजवायो * लाखनि चढ़े सुमिरि करतार ॥
घोड़ा बेंदुला पर ऊदनि हैं * ढेबा मनुरथा पर असवार ॥
हथि पचशावद त्यार करायो * तापर मंडरीक औतार ॥
इन्दल चढ़िगये हंसामनि पर * लश्कर कूँच दियो करवाय ॥
जोगा भोगा नैनागढ़ के * सजिके सोऊ चले अगार ॥
घोड़ा पपीहा औ सब्जा पर * यक यक शूर भयो असवार ॥
आठ लाख लश्कर मङ्ग लैके * ऊदनि कूँच दियो करवाय ॥
आठ कोस लौं रे फौजन में * मुराडै मुराड रहे दिखराय ॥
दबी बयासी गढ़ कनवज की * मानौं घन घमंड घहराय ॥

ईंट फूटिके गोटई हुइ गइ * गोटई छार छार हुइ जाय ॥
गर्द उड़ानी आसमान लौं * सुरज रहे धुंधि में छाय ॥
बिहँसत चले जाहिं आपसमें * क्षत्री कालरूप दर्शायँ ॥
मारू बाजा दल में बाजै * कायर सुनत बीर हुइ जायँ ॥
रात दिना की मंजिलि कीन्हीं * ना मगमध्य कियो बिसराम ॥
जाय के पहुँचे गोरखपुर ढिग * औ धूरे पर कियो मुकाम ॥
फेटैं छुटि गइँ रजपूतन की * घोड़न जीन दिये उतराय ॥
लश्करपरिगयो गढ़कनवजको * संगै फौज बनाफर राय ॥
चारिकोश बिरियागढ़ रहिगो * ऊदनि मनमें कियो बिचार ॥
तीनि रोज धूरे पर हुइगौ * अब लौं सरो न एकौ बार ॥
सोचि समुझि कै बघऊदनिने * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
कागद लैके कलमी वारो * तुरतै चिठिया लिखो बनाय ॥
सिद्धि श्रीनारायण लिखिके * ताके पीछे लिखो जोहार ॥
चिठिया भेजत हौं मैं तुमका * पढ़ियो बिरिया के सरदार ॥
बारह बरसैं तुमका हुइ गइँ * कनवज दई न एक छदाम ॥
कर तहसीलो तुम गाँजरको * सो सबराखि लियो निजधाम ॥
राजा जैचँद हमको भेजो * जल्दी दाम देहु भरवाय ॥
बिन कर दीन्हेंअबना बचिहौ * चाहे कोटिन करौ उपाय ॥
नीके दीहौ तौ यश पैहौ * नाहीं होउ जगत में ख्वार ॥
सहज न पैसा तुमका पचिहै * अब दिन रात बजै तरवार ॥
ऐसी चिठिया लिखि ऊदनने * बंद लिफाफा दइ करवाय ॥
सो पकराय दई धामन को * धामन कूँच दिया करवाय ॥
एक घरी केरे अरसा में * बिरिया गढ़ में पहुँचे जाय ॥
हिरसिंह बिरसिंह बँगला बैठे * धामन करी बँदगी जाय ॥

चिठिया लैके ऊदन वारी * सो गद्दी पर दई चलाय ॥
नजर बदलि गइ हीरसिंह की * तुरतै पाती लई उठाय ॥
खोलिके पाती राजा बाँची * आँकुइ आँकु नजरि करिजाय ॥
दसखत बाँचे जब ऊदनि के * मुहका थूक बंद हुइ जाय ॥

बिरियागढ़ के राजा हिरसिंह बिरसिंह के राजा की लड़ाई

पाती बाँचत दोनों डरपे * धरि धीरज मन किया बिचार ॥
सोचि समुझिके उन दोउनने * तुरत नगड़ची लियो हँकार ॥
हुक्म दै दियो हीरसिंह ने * लश्कर डाका देहु बजाय ॥
बोलि दरोगा हाथिन वालो * घोड़न वारो लिया बुलाय ॥
हाल बताय दियो दोनों को * जल्दी बाहन देहु सजाय ॥
हुक्म पायके चले दरोगा * निज २ काज लगे सब जाय ॥
बजो नगाड़ा बिरिया गढ़ में * कारो फौज उठी भर्राय ॥
निजनिजअस्त्रशस्त्रसब साजैं * देवन अर्घ देयँ मनलाय ॥
हाथी सजिगै बिरियागढ़ के * तिन पर हौदा दिये कसाय ॥
मुड़िया हौदा को धरवाया * औ अम्मारी दई डराय ॥
घोड़ा साजे गे सब रंगा * शोभा एक न बरनी जाय ॥
हरियल मुरका ताजो तुर्की * टाँवन दुइ पायन ठन्नाय ॥
जीन धराय दिये मखमल के * रेशम तंग दिये कसवाय ॥
डारि हुमेलैं गल चाँदी की * शोभा बरन करो ना जाय ॥
चारि घरी केरे अरसा में * सबदल साजि भयो तैयार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै * बाँके घोड़न के असवार ॥

कूँच को डंका बाजन लागे * लश्कर कूँच दिया करवाय ॥
यक हरिकारा आजति आवै * सो ऊदनि ढिग पहुँचो आय ॥
करी बन्दगी हाथ जोरि के * बिरियागढ़ का कहो हवाल ॥
फौजैं आईं बिरियागढ़ की * अब तुम खबरदार हुइ जाव ॥
सुनिके बातैं हरिकारा की * ऊदनि हुक्म दियो फरमाय ॥
बजै नगाड़ा मेरे लश्कर में * सारी फौज होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा रे लश्कर में * क्षत्रिन बाँधि लिये हथियार ॥
कूच कराय दिये डेरन से * रण खेतन में पहुँचे आय ॥
दोनों लश्कर डटे बरोबरि * रहि गयो आध कोस मैदान ॥
सुर्चाबन्दी ऊदनि कीन्हीं * मनमें धारि मातु पद ध्यान ॥
भयो सामना जब फौजनको * हिरसिंह हाथी दियो बढ़ाय ॥
पुनि ललकार दई हिरसिंहने * कौने धुरौ दबाओ आय ॥
केहिकी माता नाहर जाये * केहि रजपूत लये औतार ॥
कौन सो क्षत्री है दुनियाँ में * जेहि के जमे करेजे बार ॥
कान भनक ऊदनिके परिगइ * तुरतै बेंदुला दियो बढ़ाय ॥
सन्मुख ज्वाबदियोहिरसिंहको * ठाकुर सुनियो कान लगाय ॥
हमरी माता ने बर पररछे * हम रजपूत लये औतार ॥
हमहिं सरमा चढ़ि आये हैं * हमरे जमे करेजे बार ॥
राजा जैचन्द जो कनवज के * तिनने हमको दियो पठाय ॥
छोटे भैया हम आल्हा के * औ ऊदन है नाम हमार ॥
देश हमारो नगर महोबो * जहँ पर बसैं चन्देले राय ॥
देश देश में नाम हमारो * ठाकुर सुनियो ध्यान लगाय ॥
बारह बरसैं तुमको हुइ गइं * कनवज दई न एक छदाम ॥
तेहिते तुमको समुझैयति हैं * नाहक करो नाय बदनाम ॥

चिंता तजहु नींद से जागहु * देखहु कौन पवन लहराय ॥
जितनो डाँड़ हमारो चहिये * सो सब जल्द देहु बतलाय ॥
नजरि गुजारो तुमलाखनिका * घूरे परे कनौजो राय ॥
कही हमारी ठाकुर मानौ * तुम्हरो बारु न बाँको जाय ॥
इतनो सुनतै हिरसिंह जरिगये * नैनन रहो लालरी छाय ॥
तुरत जवाब दियो ऊदनि का * तुम सुनि लेहु बनाफर राय ॥
जब चढ़ि आये राजा जैचन्द * हमना दीन्ही एक छदाम ॥
तुम्हरे आये अबका दीहैं * नाहक आइ भयो बदनाम ॥
धोखे रहियो ना माड़ो के * जहँ लै लियो बापको दाउँ ॥
चुप्पे चलै जाउ महुबे का * नाहित गर्द बर्द हुइ जाउ ॥
आस लकड़िया हो रंड़िया को * नाहक डरिहो मूड़ कटाय ॥
तेहिते मानौ कही हमारी * ऊदनि लौटि कनौजे जाउ ॥
हँसिके ज्वाब दियो ऊदनि ने * ठाकुर सुनौ हमारी बात ॥
हम उन चत्रिन मा नाहीं हैं * जो हटि धरैं पिछारू पाँय ॥
यादि भुलिजाउ तुम जैचन्दकी * जो कनवज को गये बराय ॥
हम हैं चत्री गढ महुबे के * ठाढ़े दाम लिहैं भरवाय ॥
कही हमारी जो ना मनिहौ * गढिया गर्द दिहैं करवाय ॥
लूटि कराय लिहौं गढियाको * औ पुनि आगी दिहैं लगाय ॥
इतनी सुनतै हिरसिंह जरिगे * नैनन रही लालरी छाय ॥
हुक्म दैदियो हीरसिंह ने * तोपन आगी देउ लगाय ॥
मारि भगावो इन पाजिन को * सबकी कटा देहु करवाय ॥
जितने आये हैं कनवज से * सबके मूड़ लेहु कटवाय ॥
इतनी सुनिकै छुटे खजासी * औ तोपन पर पहुँचे जाय ॥
रंजक डारि दई प्यालन में * ऊपर बत्ती दई धराय ॥

दगी सलामी दोनौं दल में * धुँआ ना रहो स्वर्ग में जाय ॥
छाय अँधेरियागइ दोनौं दल * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
चारि घरी भरि तोपैं बरसीं * ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ॥
हाथी गिरिगे तहँ खेतन में * सो बठिया से परे लखाय ॥
गोला लागै जेहि घोड़ा के * सो असवारसहित उड़िजाय ॥
गोला लागै जौन ऊँट के * सो गिरि परै भूमि भहराय ॥
मारु बन्द भइ तब तोपन की * अन्तर पाँच पैग रहि जाय ॥
सुमिरि भवानी श्राजगरानी * दुर्गा महा कालिका माय ॥
भाला बर्छी और कटरिया * ज्वानन खैंचि लई तलवार ॥
हल्ला हुइगौ दोनौं दल में * क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै * बोलैं छपकि छपकितलवारि ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती * ऊपर बर्छिन की दुइ मारु ॥
पैदल के संग पैदल अभिरे * औ असवारन से असवार ॥
कौ[illegible] के रंग हौदा मिलिगो * ऊपर पेश कब्ज की मारु ॥
[illegible] २ खट २ चलै शिरोही * कटि कटिगिरैं सुघरुआज्वान॥
क[illegible] बच्चा सन्मुख जूझैं * कायर लै लै भजे परान ॥
सन्मु[illegible] पर पैदल डारे * दुइ दुइ पैग परे असवार ॥
हमरी स[illegible] पर हाथी डारे * छोटे पर्वत की अनुहार ॥
हमहिं स[illegible] के[illegible] मुराडरुराडरणडोलैं * घैहा रठैं कराहि कराहि ॥
कोउ भुजहीन चरणबिनकोऊ * लुढ़कत बहैं रक्तनद माहिं ॥
चारि घरी भरि बजी सिरोही * धूरे बही रक्त की धार ॥
मुर्चन मुर्चन ऊदन डोलैं * सबसे कहैं पुकारि पुकारि ॥
भाजि न जैयो कोइ मोहराते * रखियो धर्म बनाफर क्यार ॥
मानुप देही यह दुर्लभ है * पारो जन्म न बारम्बार ॥

सगै मड़ैया सब काहू की * कोई आजु मरे कोई कालिह ॥
खटिया परिके जो मरि जैहौ * कलि में कोइ न लीहैं नाम ॥
जो मरि जैहो रण खेतन में * साको चलो अगारू जाय ॥
प्राण गमैहौ समर भूमि में * सीधे बसौ स्वर्ग में जाय ॥
दै दै पानी बघऊदनि ने * क्षत्रिन आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही महुबे वाले * अपनो मया मोह बिसराय ॥
जैसे पान तमोली कतरै * जैसे खेती लुनै किसान ॥
तैसे महोबिया दलको कतरैं * क्षत्रिन काटि करैं खरिहान ॥
यह गति देखी जब हिरसिंहने * मनमें बहुत गये घबराय ॥
मुर्चा फिरि गयो हीरसिंह को * लश्कर तिड़ीबिड़ी हुइ जाय ॥
भजे सिपाही बिरियागढ़ के * अपने डारि डारि हथियार ॥
बढ़े सिपाही महुबे वारे * नंगी हाथ लिये तलवार ॥
मन खिसियाने हीरसिंह तब * अपनो हाथी दियो बढाय ॥
जहँ रस बेंदुल पर ऊदन हैं * हिरसिंह तहाँ पहूँचे जाय ॥
तब ललकारो बीरसिंह ने * ऊदन खबरदार हुइ जाउ ॥
सम्हरि के बैठो तुम घोड़ा पर * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
इतनी सुनतै बघऊदन ने * हँसि के घन्डी दई उघारि ॥
छाती अड़ाय दई समुहें पर * हीरसिंह से कही सुनाय ॥
चोट आपनी पहिले करि लेउ * मन के मेटि लेउ अरमान ॥
इतनी सुनतै हीरसिंह ने * हँसिके लीन्हीं हाथ कमान ॥
चोट चलाई बघऊदन पर * ऊदन लीन्ही ढाल अड़ाय ॥
तीनि शिरोही हिरसिंह मारो * ऊदनि तीनों लईं बचाय ॥
मन खिसियाने हीरसिंह तब * अपनो लीन्हो गुर्ज उठाय ॥
सो धरि धमको रणबोरे पर * ऊदन घोड़ा गये नचाय ॥

बायें से घोड़ा दहिने हुइगो * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
बचि गये ऊदन रस बेंदुल से * दहिने भई शारदा माय ॥
एँड़ लगाई रस बेंदुल के * घोड़ा आसमान उड़िजाय ॥
हिरसिंह जानी अपने मनमें * ऊदनि घोड़ा गये भगाय ॥
तौ लौं गाज गिरी ऊपर से * हिरसिंह हौदामें घुसिजाय ॥
गाफिल देखो जब ऊदन ने * तुरतै डंड लई बँधवाय ॥
हिरसिह बँधतै परलै हुइ गइ * बिरसिह हाथी दियो बढ़ाय ॥
फरि ललकारो बघऊदनि का * ठाकुर खबरदार हुइ जाउ ॥
अजे न बचिहौ तुमकनवजलौं * नाहक रारि बढ़ाई आय ॥
तेहिते मानौ कही हमारी * अपनी कूच जाउ करवाय ॥
तब जवाब ऊदन ने दीन्ही * ठाकुर सुनो हमारो बात ॥
डाँड़ मगाय देहु सब हमरो * अबहीं कूँच जायँ करवाय ॥
इतनी सुनतै बिरसिह बिगड़े * औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
डाँड़के नाते टका न मिलिहै * नाहक भरम गँवायो आय ॥
बातन बातन बतबढ हुइगौ * बिरसिंह लीन्ही गुर्ज उठाय ॥
सो धरि धमकी बघऊदनि पर * बेंदुल पाँच पैग हटिजाय ॥
बचि गयो लड़िका देवै वारो * ओहिकाराखिलओभगवान ॥
मन खिसियाने बिरसिंह ठाकुर * अपनी लीन्हीं काढि कृपान ॥
करो भड़ाका रण बौरे पर * ऊदनि दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
तीन शिरोही हनि २ मारी * उनकी टूटि शिरोही जाय ॥
तब मन सोचैं बिरहसिंह ठाकुर * हे प्रभु आज कहा होनहार ॥
गाफिलदेखो जब बिरहसिंहको * ऊदनि बेंदुल दियो अड़ाय ॥
ऊदनि दाबैं रस बेंदुल को * गज मस्तीक अड़ाये पायँ ॥
ढाल कि औभड़ ऊदनि मारी * सोने कलश गिरे भहनाय ॥

रस्सा काटि दिये हाथी के * हौदा गिरो धरणि में आय ॥
हौदा के संगबिरसिह गिरिगये * पुनि उठि बैठि बीर खिसियाय ॥
बड़े लड़ैया बिरसिह ठाकुर * मारे पहलवान बलवान ॥
ताल ठोंकि ऊदन से बोलो * मनमें सुमिरि चरण हनुमान ॥
आज अखाड़े में बरनी है * लड़िये मल्ल युद्ध मम साथ ॥
यह मन भाइ गई ऊदन के * उतरेउ नाइ मातु पद माथ ॥
कट कटाइ बिरसिह पुनि दौरे * औ ऊदनि को लियो उठाय ॥
माख जताइ बचन पुनि बोलेउ * फेकौं कहाँ देहु बतलाय ॥
तब जवाब ऊदनि ने दीन्हों * मरजी जहाँ होय तव तात ॥
तहँ तुम फेंकि देहु बेखटके * जानहु सत्य हमारी बात ॥
रोष खाय मन बिरसिहठाकुर * पुनि मम फेंकन कियो बिचार ॥
तौलौं पेंच कियो बघ ऊदनि * औ छाती पर भयो सवार ॥
डंड बाँधि लइ तब बिरसिह की * दोनों कैदि लियो करवाय ॥
माल खजाना सब लुटवायो * बिरियाकिलादिया गिरवाय ॥
संगे लेके दोउ भैयन को * ऊदनि कूँच दियो करवाय ॥
रात दिनाकी मंजिल करिकै * पट्टागढ़ में पहुँचे जाय ॥

पट्टी के राजा सातनि से ऊदनि की लड़ाई

॥ आल्हा ॥

सुमिरण करिके जगदम्बे को * नारायण के चरण मनाय ॥
लिखौं लड़ाई मैं सातनिकी * दहिने होहु शारदा माय ॥
सातनि राजा पट्टी वारो * जो मरिबे को नाहिं डेराय ॥
पट्टी राज करै बेखटके * ज्यों मृगराज बिपिन केमाहिं ॥

घुरो दबायो बघ ऊदनि ने * चहुँदिशि पट्टी लई घेराय ॥
डेरा डारि दियो घूरे पर * फिरियकचिठियालिखीबनाय ॥
पहिले लिखिके सिरनामाको * पीछे लिखिके राम जोहार ॥
ताके पीछे लिखी हकीकत * पढ़ियो पट्टी के सर्दार ॥
बारह बरसैं तुमको हुइ गईं * कनवज दई न एक छदाम ॥
कर तहसीलौ तुम रैयत से * धरिलियोसकल आपनेधाम ॥
हमहिं पठाओ है जैचन्द ने * हमरो नाम उदयसिंह राय ॥
हम रहवैया हैं महुबे के * जहँ पर बसैं चन्देले राय ॥
नाम हमारो सबजग जाहिर * हम आल्हाके छोटे भाय ॥
हिरसिंहबिरसिंह बिरियावाले * तिनकी कैदि लई करवाय ॥
ठाढ़े पैसा सब भरवायो * ताते मानौ कही हमार ॥
पत्री बाँचि दूरि की लखियो * नाहक मती बढ़ैयो रार ॥
जो ना मनिहौ कही हमारो * तो गढ़ सहित धूरि हुइ जाय ॥
ताते मानौ कही हमारो * पैसा जल्दी देउ पठाय ॥
लै नजराना तुम लाखनिका * जल्दी मिलो अगारू आय ॥
ऐसी चिटिया लिखिऊदनि ने * बन्द लिफाफा दई कराय ॥
सो पकराय दई धामन को * धामन कूँच दियो करवाय ॥
जायके पहुँचो गढ पट्टी में * धामन उतरि परो हरखाय ॥
लगी कचहरी नृप सातनिकी * भारी लागि रहा दरबार ॥
बड़े बड़े क्षत्री बँगला बैठे * टिहुना धरे नागिन तरवार ॥
ओहि समैया के औसर माँ * धामन पहुँचि कचहरी जाय ॥
करी बन्दगी नृप सातनिको * पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके पाती राजा बाँचो * आँकुइ आँकु नजरि करि जाय ॥
दसखत बाँचे जब ऊदनि के * मुँहको पान गयो कुम्हिलाय ॥

उठे कचेहरी से नृप सातनि * औ कोठे पर पहुँचे जाय ॥
लश्कर देखा जब धूरे पर * टिड्डी दल सम परो लखाय ॥
जिय घबराय गयो राजा को * लज्जितभयोसमुझिनिजनाम ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो * मनमें सुमिरि राम घनश्याम ॥
बजै नगाड़ा मेरे लश्कर में * नृप यह हुक्म दियो फरमाय ॥
हुक्म पायके चलो नगड़ची * तुरतै डंका दियो बजाय ॥
मारू डंका के बाजत खन * क्षत्री उठे भरहरा खाय ॥
निज निजबाहनसाजन लागे * निजनिजसाजिलियेहथियार ॥
जितने जोधा पट्टीगढ़ के * सबने बाँधि लिये हथियार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिनचढ़िगये * बाँके घोड़न के असवार ॥
जितनी तोपैं पट्टीगढ़ की * सो सब आगे दई जुताय ॥
तीनि लाख दल पैदल साजी * कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
राजा पहुँचे रंग महल में * घट गंगाजल लियो मँगा[illegible] ॥
करिअस्नानध्याननिजमनमें * पुनि पुनि इष्ट देव पदध्[illegible]ाय ॥
संध्या वंदन करि बहुबिधि सों * पूजैं बहुरि शारदा [illegible]ाय ॥
हे जग बंदनि शत्रु निकंदनि * रखियो लाज अंबिका माय ॥
पैंधि पजामा मिसरू वालो * जामा पहिरि दुदामी क्यार ॥
टोप झलरिया धरि माथे पर * ऊपर पहिने कुलह कबार ॥
छप्पन छुरियाँ कम्मर बाँधे * कलहा दुइ बाँधे तरवार ॥
अगलबगल पर दुइ पिस्तौलैं * बायें सिंहिनि मूठि कटार ॥
पगिया बाँधी रेशम वाली * कलँगी मोतीचूर की लाग ॥
सजिके सातनि बाहर आये * पुनि निज हाथीलियोसजाय ॥
गद्दा डारो मखमल वालो * रेशम रस्सन दियो कसाय ॥

धरी अमारी ताके ऊपर * चाँदी हौदा दियो धराय ॥
सिढ़ी लगाई मलयागिर की * कछु तारीफ करी ना जाय ॥
सिढ़ियनसिढ़ियनराजाचढ़िगे * औ हौदा में बैठे जाय ॥
कूँच को डंका तब बजवायो * लश्कर कूँच दियो करवाय ॥
कछुक देर केरे अरसा में * धुरखेतन में पहुँचो आय ॥
मुर्चाबन्दी तब करवाई * आगे हाथी दियो बढ़ाय ॥
लश्कर आयो पट्टीगढ़ को * पाई खबर उदयसिंह राय ॥
फौज सजाय लई जल्दी से * मुर्चाबन्दी दई कराय ॥
घोड़ा बढाय दियो आगे को * दोउ दल जुटे बरोबरि आय ॥
तब ललकारो नृप सातनि ने * कौने धुरो दबाओ आय ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो ऊदनि ने * औ राजा से कहा सुनाय ॥
हम चढि आये हैं कनवज से * हमने धुरो दबाओ आय ॥
हमहिं पठाओ है जैचन्द ने * हमरो नाम उदयसिंह राय ॥
देश हमारो नगर महोबो * जहँ पर बसैं चन्देले राय ॥
हम रहवैया हैं महुबे के * हम आल्हा के छोटे भाय ॥
कर तहसीलो तुम गाँजरको * कनवज दई न एक छदाम ॥
हमहिं पठाओ है जैचन्द ने * ठाढे दाम देहु भरवाय ॥
नीके देहौ तो यश पैहौ * नाहित कठिन होय संग्राम ॥
तेहिते तुमका समुझैयति हैं * जल्दी दाम देहु भरवाय ॥
इतनी सुनिके सातनि जरिगे * नैनन रही ललरी छाय ॥
फिरि समुझाय कही ऊदनिसे * नाहक भरम गमाँयो आय ॥
चढिके आये राजा जैचन्द * हमने दई न एक छदाम ॥
तुम्हरे आये अब का देहौं * नाहक आइ भयो बदनाम ॥

चुप्पै लौटि जाउ महुबे काँ * नाहक देहौ प्राण गमाय ॥
मारे जैहौ धुरखेतनमाँ * देवै रोय रोय रहिजाय ॥
तब जवाब ऊदनि ने दीन्हों * सुनिये पट्टी के सरदार ॥
बिना दाम के हम जो लौटैं * तौ रजपूती को धिक्कार ॥
दमड़ी दमड़ी कर तहसीलौं * तुम्हरौ दराड लेहुँ बँधवाय ॥
लूट कराय लेहुँ पट्टी की * गढ़िया गर्द देहुँ करवाय ॥
रहेउ भरोसे ना जैचन्द के * हमरो नाम उदैसिंह राय ॥
इतनी सुनिके सातनि जरिगै * नैनन रही लालरी छाय ॥
हुक्म दै दिया नृप सातनिने * तोपन आगी देहु लगाय ॥
मारि भगावो इन पाजिनका * सबकी कटा देहु करवाय ॥
इतनी सुनिके चले खलासी * औ तोपन पर पहुँचे जाय ॥
थैला डारी बारूदन की * औ पुनि आगी दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * धुँअना रहो सर्ग मड़राय ॥
गोला ओला के सम बरसै * गोली मघा बूँद अरराय ॥
अररर अररर गोला छूटै * सर सर परी तीर की मारु ॥
सन सन सन सन गोला छूटै * अंधा धुन्ध तोप की मारु ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * तोपैं लाल बरन हुइ जायँ ॥
मास उड़ाय गये चुटकिन के * ह' दैया गति कही न जाय ॥
मारु बन्द भइ सब तोपन की * ज्वानन खैंचि लई तरवार ॥
हल्ला हुइगो दोनों दल में * खट खट चलन लगी तरवार ॥
पैदल के सङ्ग पैदल अभिरे * औ असवारन से असवार ॥
हौदनके संग हौदा अड़िगो * ऊपर पेशकब्ज की मार ॥

चारौ बिरियन को मसकापरो * अन्धाधुन्ध चलै तरवार ॥
हौदा भरि गये रे लोहू से * औ चुचुआति फिरैं असवार ॥
झुके सूरमा गाँजर वाले * जिनकी मारु सही ना जाय ॥
भजे सिपाही महुबे वारे * हा दैयागति कही ना जाय ॥
भजत सिपाही ऊदन देखे * तुरत बेंदुला दिये बढ़ाय ॥
सातनि राजा के हाथी पर * बाजो टाप बेंदुला क्यार ॥
करो भड़ाका बघऊदन ने * मनमें सुमिरि राम रघुराय ॥
ढाल अड़ाय दई सातनि ने * उनकी लीन्हीं चोट बचाय ॥
तब ललकार कही सातनिने * ऊदनि खबरदार हुइ जाउ ॥
गुर्ज चलायो तब सातनि ने * सो ऊदन पर राखो जाय ॥
लगो चपेटा रे घोड़ा के * घोड़ा खड़ा खड़ा थर्राय ॥
एँड़ लगाई फिरि ऊदन ने * दुइ मस्तीक अड़ाये पायँ ॥
ढालकी ओझड़ ऊदन मानी * सोने कलशा दिये गिराय ॥
गुर्ज चलायो फिरि राजा ने * सो घोड़ा के लागो जाय ॥
भजो बेंदुला रे ऊदनि को * पजशावद ढिग गयो छिपाय ॥
यह गति देखो जब इन्दलने * तब आल्हा से कही सुनाय ॥
जालिम राजा यहु सातनि है * दादा सुनहु बनाफर राय ॥
घोड़ा डरिगो है चाचा को * अब तुम करो सामना जाय ॥
इतनी सुनि के मडरोक ने * अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
पुनि ललकारि कहोसातनिसे * ठाकुर खबरदार हुइ जाउ ॥
हमरो तुमरो अब बरनी है * देखै कापर राम रिसाय ॥
यह मन भाय गई सातनिके * तुरतै हाथी दियो बढ़ाय ॥
लाल कमान लई हौदा से * औ तरकस से तीर निकाल ॥

हियरा डाटो सुनि आल्हा को * सन्मुख छाँड़ि दीन्ह हरषाय ॥
चोट बचाई सुनि आल्हा ने * औ बचिगये बनाफर राय ॥
यह गति देखी जब सातनिने * तुरतै दीन्ही साँगि चलाय ॥
हाथी पचशावद दहिने हुइगो * नीचे साँगि गिरी अरराय ॥
यह गति देखत सातनि सोचै * औ निज मनमें करै बिचार ॥
दोनों चोटैं खाली परि गइँ * जानै कहा रची करतार ॥
हाथी भिड़ाय दियो हाथी से * करमें नग्न लई तलवार ॥
फिरि समुझावै सुनि आल्हाको * सुनिये बीर बनाफर राय ॥
अबहूँ लौटि जाउ महुबे का * नाहक देहो प्राण गमाय ॥
तब ललकारि कही आल्हा ने * ठाकुर अक्किलि गई तुम्हार ॥
धर्म क्षत्रियन के नाहीं हैं * रण चढ़ि धरैं पिछारू पावँ ॥
धोखे न रहियो केहु कायरके * पट्टी गर्द दिहौं करवाय ॥
बिन कर लीन्हे हम ना जैहैं * चाहे प्राण रहै की जाय ॥
इतनी सुनतै सातनि जरिगे * तुरतै तेगा दियो चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई आल्हा ने * तीनो चोटैं लई बचाय ॥
टूटि शिरोही गइ सातनि की * खाली मूठि हाथ रहि जाय ॥
देखि दशा यह सातनि राजा * मनमें सोचि २ रहि जाय ॥
जानि सिरोहिन से गज काटे * औ घोड़न के चारो पायँ ॥
वही सिरोही धोखा दै गइ * हमरो काल रहो नियराय ॥
खोलि जँजीर दई आल्हा ने * पचशावद से कही सुनाय ॥
बड़ो भरोसा तुम्हरो राखे * अब गाढ़े में होउ सहाय ॥
सन्मुख बैरी यहु ठाढो है * याको अब तुम देउ गिराय ॥
साँकरि फेरी गज पचशाब्द * हौदा धरती दियो गिराय ॥
हौदा के संग सातनि गिरिगे * पुनि उठि बैठ शूर सर्दार ॥

कोतल घोड़ा तुरत मँगायो * तापर बीर भयौ असवार ॥
लैके तेगा बर्दवान को * आगे बढ़ो वीर रिसखाय ॥
जोगा भोगा के समुहैं पर * सातनि बीर पहूँचे जाय ॥
सन्मुख देखो जब जोगा को * तुरतै तेगा दियो चलाय ॥
जोगा बीर सम्हरि नहिं पायो * धरनी गिऱ्यो तड़ाका खाय ॥
जोगा गिरतै भोगा दौरे * अपनी दीन्ही तेग चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई सातनि ने * औ बचिगयो गँजरहा ज्वान॥
सम्हरिके सातनि तेगा लीन्हौं * औ भोगापर दियो चलाय ॥
छूटि जनेवा गओ भोगा को * धरती गिरे करौटा खाय ॥
घोड़ा पपीहा ज्खमी ह्वइगौ * औ लश्कर से गयो बराय ॥
मरण देखि जोगा भोगा को * आल्हा बहुत गये घबराय ॥
दशा देखिके यह इन्दल ने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
धरि ललकारो नृप सातनिको * सम्हरो बीर गँजरहा राय ॥
कावा दैके तब इन्दल ने * ढालकि औफड़ दई चलाय ॥
सो भरिपूर लगी सातनि के * धरती गिरे भरहरा खाय ॥
डंड बाँधि लइ तब सातनिकी * औ लाखनि ढिग दियो पठाय ॥
जीतिको डंका तब बजवायो * पट्टी लूटि लई करवाय ॥
फौज बढ़ाय दई आगे को * पहुँचे कामरूप में जाय ॥
आगे लड़ाई कमला:पति की * लिखिहौंसुमिरिशारदा माय ॥

कामरू के राजा कमलापति की लड़ाई

॥ आल्हा ॥

आदि सरस्वति के पद बंदौं * बंदौं कृष्ण चरण मनलाय ॥
पुनि सीतापति के पद बंदौं * बंदौं हनूमान सुखदाय ॥

युद्ध बखानौं कमलापति को * जीते जङ्ग उदैसिंह राय ॥
डंड बाँधिके कमलापति की * सँवियाँ डाँड़ लियो भरवाय ॥
लश्कर पहुँचे देश कामरू * घूरे डेरा दश्रो गड़ाय ॥
शहर घेर लिये चौतरफा से * नाके बन्दी दई कराय ॥
फिरियकचिठियाऊदनलिखिके * कमालापति पर दई पठाय ॥
बारह बरसन को पैसा है * जल्दी डाँड़ देहु भरवाय ॥
लैके चिठिया धामन चलिभौ * जेहिका चलत न लागोबार ॥
जायके पहुँचो कामरूप में * जहँ पर लगा नृपति दरबार ॥
पाँच कदम ते करो बन्दगो * पाती गद्दो दई चलाय ॥
पाती लैगइ कमलापति ने * बाँची तुरत बघेले क्यार ॥
पाती बाँचत परलै हुइ गइ * कमला गये सनाका खाय ॥
नारी छुटिगइँ नौ कोठन ते * मुखको पान गयो कुम्हिलाय ॥
सोचिसमुझिके राजाचलिगये * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
बोलि नगड़ची को बीरा दश्रो * लश्कर डाका देउ बजाय ॥
हुक्म पायके चला नगड़ची * तुरतै डाका दियो बजाय ॥
चोप नगाड़ा के बाजत खन * लश्कर उठा भरहरा खाय ॥
बड़े बड़े जोधा साजन लागे * जिनके बलको नाहिं शुमार ॥
पैदल पलटन जो राजा की * सबने बाँधि लियो हथियार ॥
पहले नगाड़ा भइ जिनबन्दी * दुसरे माँ बाँधि लीन्ह हथियार॥
तिसरे नगाड़ा के बाजतखन * चत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी घोड़न के चढवैया * निज निज बाहन भये सवार ॥
जितनी तोपैं कामरूप की * सो सब सजिके चलो अगार ॥
जबरजङ्ग और जबरदस्त खाँ * नामी शूरबीर बलवान ॥
शंका नहीं जिनहि कालहुकी * कर में लीन्हें नगन कृपान ॥

सोऊ त्यार भये लड़िबे को * निजनिज अश्व चढ़े सरदार ॥
धौलागिर कुंजर सजवायो * तापर भये नृपति असवार ॥
कूचको डङ्का बाजन लागो * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
दबति अन्धेरिया दलमें आवे * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
जायके पहुँचे धुरखेतन में * राजा मुर्चा दियो लगाय ॥
पाइ खबरिया रन बौरे ने * आयो कामरूप नर राय ॥
हुकम दै दिया बघऊदन ने * जल्दी फौज होय तैयार ॥
एक घरी केरे अरसा में * लश्कर सजा उदैसिंह क्यार ॥
कान अवाज परी कमलाके * डङ्का सुनो बघेले क्यार ॥
हाथी बढ़ाय दियो कमलाने * आगे बढ़ा बीर रिसखाय ॥
आवत देखो जब कमला का * ऊदनि बेंदुला दियो बढ़ाय ॥
जायके पहुँचे जबसमुहें पर * तब कमला ने कही सुनाय ॥
कौन सूरमा है धरती पर * कौने धुरो दबाओ आय ॥
केहिको कागद भयो बरोबरि * किन यह डङ्का दियो बजाय ॥
तब जवाब ऊदनि ने दीन्हो * औ कमला से कही सुनाय ॥
हमहिं सूरमा हैं धरती पर * हमने धुरो दबाओ आय ॥
हमरो कागज भयो बरोबरि * हमने डङ्का दियो बजाय ॥
देश हमारो नगर महोबो * जहँ पर बसैं चन्देले राय ॥
तिनके घरमा हम उपजे हैं * हमरो नाम उदैसिंह राय ॥
काम हमारो ना कछु अटको * पै यकबात सुनहु मनलाय ॥
राजा जैचन्द जो कन्नवजके * तिनने हमका दियो पठाय ॥
बारह बरसन को पैसा है * सो सब जल्द देहु भेजवाय ॥
नजरि गुजारो तुम लाखनिका * इतनी मानौ कही हमार ॥
जो ना मनिहौ कही हमारी * नाहक होहु जगतमें ख्वार ॥

इतनो सुनिके कमला जरिगये * नैना रक्त बरन हुइ जाय ॥
डाँड़ के नाते टका न पैहौ * अपनो कृत्य जाउ करवाय ॥
काज तुम्हारो ना कछु अटको * नाहक देहौ प्राण बिसार ॥
ऐहैं कारज महराजन के * चाकर सुनहु चन्देले क्यार ॥
तब ललकारि कहो ऊदन ने * ठाकुर बोला बात सँभार ॥
एहिबाणी को फिरि ना कहियो * नहिं मुख ऑसि देहुँ तरवार ॥
बातन बातन बतबद हुइगो * औ बातन माँ बाढ़ो रार ॥
गुस्सा हुइकै कमलापति ने * तुरत खलासो लियो हँकारि ॥
हुक्म दै दियो कमलापति ने * तोपन आगी देहु लगाय ॥
मारि भगावौ इन पाजिन को * सबको क्रिया देहु करवाय ॥
जितने आये हैं महुबे से * सबके शीश लेहु कटवाय ॥
खेदिके मारौ गढ़ कनवज लौं * ये बिन घाय एक ना जायँ ॥
ब्याज सहित सब डाँड़ भरावौ * अब ना राखहु देर लगाय ॥
इतनी सुनि के चले खलासी * औ तोपन पर पहुँचे जाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * लश्कर रही अँधेरिया छाय ॥
दोउ ओर से गोला छूटैं * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
गोला ओला के सम छूटैं * गोलो मघा बूँद झरिलाय ॥
क्या गति बरनौं ओहि बेरा की * क्षत्री रँधे भात ना खायँ ॥
चारि घरि भरि गोला बरसो * तोपैं लाल बरन हुइ जायँ ॥
तोपैं छोड़ि दईं ज्वानन ने * क्षत्रिन हाथ धरे ना जायँ ॥
तोप लड़ाई पीछे परि गइ * रहिगयो चारि कदम मैदान ॥
झुके सिपाही दोनों दल के * करमें लीन्हें नग्न कृपान ॥
चलैं सिरोही रे लश्कर माँ * कटि २ गिरैं शूर सर्दार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै * बोलै छपाकि २ तरवार ॥

चलै उनब्बी औ गुजराती * औ तरवारि पिहानी क्यार ॥
कटि कटि बोटी गिरै खेतमाँ * उठि उठि रुन्ड करैं तरवार ॥
बीर बहादुर दल के योधा * सन्मुख प्राण देहिं बिसराय ॥
कायर योधा मलैं विभूती * रण से भागि जायँ भयखाय ॥
झुके सिपाही महुबे वारे * कर में नग्न लिये तरवार ॥
भजे सिपाही कमला वाले * अपने डारि डारि हथियार ॥
यह गति देखी जब कमलाने * अपनो जादू लियो उठाय ॥
सोपढ़ि मारिदियो लश्करमें * पै नहिं पेश एक भी जाय ॥
पढ़ि पढ़ि जादू कमला मारै * लश्कर एक नहीं अनियाय ॥
मन्त्र के बाँधे सब क्षत्री हैं * ताते चलत न एक उपाय ॥
मन में सोचै कमला ठाकुर * जानै कहा रची रघुराय ॥
जादू झूठे हमरे ह्वइ गे * इनते एक न पार बसाय ॥
लड़त लड़तसिगरोदिन बीतो * तिसरो पहर पहूँचो आय ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले * जे मरिबे को नाहिं डेरायँ ॥
ऐसी बातैं कमला सोचैं * तौं लौं ऊदनि पहुँचे आय ॥
सन्मुख देखो जब ऊदनि को * कमला हाथी दियो बढ़ाय ॥
पुनि ललकार कही ऊदनिसे * तुम सुनि लेउ बनाफर राय ॥
दस २ रुपिया के नौकर हैं * नाहक डरिहौ मूड़ कटाय ॥
हम तुम खेलैं समरभूमि में * दुइ में एक आँकु रहिजाय ॥
जोई रोगी के मन भावै * सोई वैद देइ बतलाय ॥
यह मन भाय गई ऊदनि के * तुरतै घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
फिरि समुझायो कमलापतिने * मानो कही उदयसिंह राय ॥
अबहिंतुम्हारो ना कछु बिगरो * अबहूँ कूच जाउ करवाय ॥
तब जवाब ऊदन ने दीन्हों * ठाकुर सुनियो कान लगाय ॥

जिन कर लीन्हें हम ना जैहैं * चाहे प्राण रहै की जाय ॥
इतनी सुनतै कमला जरिगये * अपनो दीन्हो गुर्ज चलाय ॥
बाँये से घोड़ा दहिने हुइगौ * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
बचिगयो लड़िका देवै वारो * दहिने भई शारदा माय ॥
ऊदनि एँड़ दई बेंदुल के * घोड़ा आसमान उड़ि जाय ॥
कमला जानी अपने मनमाँ * कायर घोड़ा गयो भगाय ॥
जैसे बाज कुही पर टूटे * जैसे सिंह दबोचे गाय ॥
ऐसे ऊदनि हौदा टूटे * कमला बहुत गयो घबराय ॥
गाफिल देखो जब कमला काँ * ऊदनि डंड लई बँधवाय ॥
माल खजाना तब लुटवायो * अपनो पहरा दियो बिठाय ॥
फौज सङ्ग ले नृप कमलाको * अपनो कूच दियो करवाय ॥
जीति कामरू और कमच्छा * पहुँचे बंगाले में जाय ॥
आगे युद्ध भयो गोरखा से * सोऊ लिखिकै दिहौं सुनाय ॥
जेहिबिधियुद्ध किया बघऊदन * सो सब सुनियो कान लगाय ॥



बंगाले के राजा गोरखा की लड़ाई

* आल्हा *

सुमिरण करिके सरस्वती की * गुरुपदबन्दि स्वमति अनुसार ॥
आगे युद्ध लिखौं गोरखाको * जो बङ्गाल केर सरदार ॥
ऊदनि चलि भये कामरूपते * पहुँचे बंगाले में जाय ॥
डेरा डारि दये धूरे पर * ऊँचे झंडा दिये गड़ाय ॥
नाके बन्दी करि गढ़ घेरा * पुनि यक पाती लिखी बनाय ॥
सो पकराय दई धामन को * धामन कूच दिया करवाय ॥
जायके पहुँचा बंगाले में * जहँ दरबार गोरखा क्यार ॥
करी बन्दगी पाँच कदम ते * पाती दई सुमिरि करतार ॥
पाती बांची जब राजा ने * मन में बहुत गयो घबराय ॥
पुनि उठि पहुँचो शाहिबुर्जपर * चहुँदिशि झंडा परे लखाय ॥
फौज देखि चिन्ता मनव्यापी * पुनि धरिधीरसुमिर रघुराय ॥
बोलि नगड़चीको बीरादश्रो * लश्कर डंका देहु बजाय ॥
बजो नगाड़ा बंगाले में * क्षत्री उठे भरहरा खाय ॥
निज २ अस्त्र शस्त्र सब साजे * पुनि निजबाहन सजे बनाय ॥
एक घरी केरे अरसा में * पैदल पल्टन भई तयार ॥
सारी परटन और रिसाले * तिनका सजत न लागीबार ॥
हाथी घोड़ा ऊँट पालकी * गजरथ ऊँटरथ भये तयार ॥
घोड़ा साजे रंग रंग के * जिनपर छैल भये असवार ॥
जितनी तोपैं थीं लश्कर में * सो सब आगे दई जुताय ॥
बड़ि २ तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥

मकुनी हाथी को मँगवायो * तापर हौदा दियो कसाय ॥
सिढ़ी लगाई मलयागिरि को * तापर बैठे गोरखाराय ॥
कूच नगाड़ा को बजवायो * फौजैं आगे दई बढ़ाय ॥
जायके पहुँचे रण खेतन में * अपना मुर्चा दियो लगाय ॥
नजर उठाये राजा देखैं * चहुँ दिशि लश्करपरे दिखाय ॥
सन्मुखलश्कर लखिगुरखाको * ऊदनि घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
आवत देखो जब ऊदनि का * तब राजा ने कही सुनाय ॥
कौन शूरमा चढ़ि आयो है * कौने धुरो दबाओ आय ॥
तब जवाब ऊदन ने दीन्हों * सुनिये बीर गोरखा राय ॥
हम चढ़ि आये हैं कनवजते * हमरो नाम उदयसिंह राय ॥
हम रहवैया हैं महुबे के * जहँ पर बसै चन्देले राय ॥
हमहिं पठाओ नृप जैचन्द ने * संगै लाखनि दिये पठाय ॥
बारह बरसैं तुमका हुइ गईं * कनवज दई न एक छदाम ॥
कर तहसीली सब रैयति से * सो सब धरी आपने धाम ॥
बारह बरसन को पैसा हैं * जल्दी डाँड़ देहु भरवाय ॥
लाखनि परे आय धूरे पर * नहिं वह लेहैं शहर लुटाय ॥
इतनी सुनतै गुरखा जरि गये * औ ऊदनि से कही सुनाय ॥
चढ़िके आये राजा जैचन्द * तब ना डाँड़ लओ भरवाय ॥
अब तुम आये डाँड़ लेन को * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
भलो आपनो जो तुम चाहो * अबहीं कूच जाउ करवाय ॥
धोखे रहियो ना माड़ौ के * जहँ लै लियो बाप को दाँव ॥
पाले परिहौ जब गोरखा के * महुबो लाख कोस हुइ जाय ॥
तब जवाब ऊदनि ने दीन्हो * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
बिन कर लीन्हें हम ना जैहैं * चाहे युद्ध होय दिन रात ॥

नीके दीहौ तौ यश पैहौ * नातरु डण्ड लिहौं बँधवाय ॥
माल खजाना सब लुटवैहौं * पुनिपुर आगि दिहौं लगवाय ॥
इतनी सुनतै राजा जरि गये * नैनन रही लालरी छाय ॥
हुक्म दै दश्रो तब राजा ने * इन पाजिन को देउ भगाय ॥
झुके सिपाही सब राजा के * अपनी खैंचि खैंचि तलवार ॥
खट खट तेगा बाजन लागे * बोलन लागि छपक तलवारि ॥
भाला बरछी छूटन लागे * सबके मारु मारु रट लागि ॥
खलभल परिगो दोनौं दलमें * कायर भगे डारि हथियार ॥
बढ़े सिपाही महुबे वारे * दोनौं हाथ करैं तरवार ॥
भगे सिपाही बंगाले के * अपने डारि डारि हथियार ॥
फौज गोरखा की भागी तब * राजा हाथी दश्रो बढ़ाय ॥
बढ़ि ललकार दई ऊदन को * ऊदन खबरदार ह्वइ जाउ ॥
काल तुम्हारो आय पहूँचो * अस कहि दीन्हों गुर्ज चलाय ॥
घोड़ा उड़िगो तब ऊपर को * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
बचिगे ऊदन रसबेंदुल पर * दहिने भई शारदा माय ॥
एँड़ लगाई रसबेंदुल के * औ हाथी पर बाजी टाप ॥
ढाल कि औझड़ ऊदन मारा * औ राजा को दश्रौ गिराय ॥
डण्ड बाँधि लइ बघऊदन ने * औ लश्कर में दश्रो पठाय ॥
बाँधि गोरखा बङ्गाले को * ऊदन धावा दश्रो कराय ॥
माल खजाना सब लुटवायो * सो छकड़न माँ दश्रो भराय ॥
फौज बढ़ाय दई आगे को * जीति को डंका दश्रो बजाय ॥
इहि विधि जीते बङ्गाले को * आगे बढ़े उदैसिंह राय ॥

कटक आदिके राजाओं से लड़ाई।

* आल्हा *

सुमिरन करके गणनायकको * शिवशंकर के चरण मनाय ॥
लिखत लड़ाई हौं आगे को * सोऊ सुनहु सुमिरि रघुराय ॥
करिके धावा बंगाले से * ऊदन कटक लई घिरवाय ॥
तोपैं लगवाई फाटक पर * तौलौं प्रजा पहूँची आय ॥
बोली परजा बघऊदन से * काहे फाटक दिहौ गिराय ॥
राजै बाँधि लेउ जल्दी से * तुम्हरो काम सिद्ध हुइ जाय ॥
फाटक बन्दी करवाई तब * अपनो पहरा दओ बिठाय ॥
मुरली मनोहर दुइ भाइ थे * ऊदन तिनका लओ बँधाय ॥
माल खजाना ऊदन लेके * सो छकड़न माँ लओ भराय ॥
कूच कराओ कटक नगरसे * औ जिन्सी में पहुँचो जाय ॥
जगमनि राजा जिन्सीवारो * तिनपै खबरि दई करवाय ॥
आल्हा ऊदन चढ़ि आये हैं * पैसा तुरत देउ पहुँचाय ॥
सुनी खबरि जब राजाजगमनि * तब द्वारे पर पहुँचे जाय ॥
हुक्म दै दओ तब मंत्रिन को * अबहीं फौज लेउ सजवाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * लश्कर तुरत भयो तैयार ॥
हाथी सजाओ राजा जगमनि * तुरतै तापर भए सवार ॥
कूच कराय दओ लश्कर सब * मारू डंका दौ बजवाय ॥
जबहीं पहुँचे रण खेतन में * तब राजा ने कही सुनाय ॥
कौन शूरमा चढ़ि आओ है * सो समुहें हुइ देइ जवाब ॥
आगे बढ़ि के ऊदन बोले * हमको जैचंद दओ पठाय ॥
लाखनि राना साथ हमारे * हमरो उदयसिंह है नाम ॥

बारह वर्षको पैसा मारो * तुम नहिं दीन्हीं एक छदाम ॥
सो तुम देउ आज हमको जो * तौ हम कूच जायँ करवाय ॥
इतनी सुनिके जगमनि बोले * क्यों कमबख्ती लगी तुम्हार ॥
पैसा हमसे ना मिलिहैं अब * नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने * नाहीं जानो हाल तुम्हार ॥
पैसा लिए बिना जैहैं ना * चाहे प्राण रहे कै जायँ ॥
डंड बाँधिके हम तुम्हरी यहँ * अबहीं पैसा लिहैं भराय ॥
सुनतै जरिगे राजा जगमनि * तुरतै हुक्म दओ फरमाय ॥
भागि न पावैं कोउ समुहें से * सबकी कटा देउ करवाय ॥
खैंचि सिरोही लइ ज्वाननने * खट २ चलनलगी तलवारि ॥
झुके सिपाही बघऊदनि के * सबके मारु मारु रट लाग ॥
चारि घरी भरि चली सिरोही * मुर्चा हटो गँजरहन क्यार ॥
एँड़ लगाई रस बेंदुल के * ऊदन राजै घेरो जाय ॥
चोट चलाई अम्मारी पर * औ धरती पर दियो गिराय ॥
डंड बाँधि लइ तब जगमनिकी * माल खजाना लओ लदाय ॥
चिन्ता ठाकुर हसनी वारे * तिनकी डंड लई बँधवाय ॥
माल खजाना मँगवाओ सब * सो छकड़न में लओ भराय ॥
फौज बढाय दई आगे को * औ गोरखपुर लओ घिराय ॥
राजा सूरज को बाँधो तहँ * औ सब पैसा लओ लदाय ॥
पूरन राजा थे पटना में * तिनकी कैदि लई करवाय ॥
हंसामनि काशी के राजा * ऊदनि तिन्हैं दिओ बँधवाय ॥
बारह राजा गाँजर वारे * बाँधे उदयसिंह सरदार ॥
तीनि महीना तेरह दिन लौं * गाँजर कठिन चली तरवार ॥
कूच करायो तब लश्करको * औ लाखनिको संग लिवाय ॥

पगिया पलटी बघऊदन से * औ लाखनिने कही सुनाय ॥
जादिन चलिहौ तुम महुबेको * हमहूँ चलिहैं साथ तुम्हार ॥
फौजैं पहुँच गईं कनवज में * चत्रिन छोरि धरे हथियार ॥
आल्हा ऊदनि लाखन राना * पहुँचे जहाँ राज दरबार ॥
बारह राजा जो कैदी थे * सो जैचँद के कियो अगार ॥
माल खजाना सौंपि दओ सब * तब उठि कही कनौजी राय ॥
तुम सब लायक देवै वारो * धनि धनि बीर बनाफरराय ॥
कठिनकाम कीन्हीं तुमने यहँ * जो सब पैसा लओ भराय ॥
अब बिश्राम करहु घरपर तुम * यह सुनि कही उदैसिंहराय ॥
रहैं अधीन भूप सिगरे यह * इनसे सोइ नियम लिखवाय ॥
छोड़ि देउ इन सब राजन को * मानहु बात कनौजी राय ॥
सुनी बात जब यह ऊदनसे * जैचँद मानि लई ततकाल ॥
आदरसहितलिखायनियमसब * जैचँद बिदा किये भूपाल ॥
लिखी लड़ाई यह गाँजर की * श्री शिवरचणलालमनलाय ॥
सिरसा समर लिखत आगे हम * सो सुनिलीजै ध्यान लगाय ॥

इति गाँजर की लड़ाई (ऊदन विजय सम्पूर्ण)



* श्रीः *

* अथ *

आल्ह खंड

* सिरसा समर *

* सुमिरनी *

* सवैया *

लाज गई बछराज के साथ, तलवारि गई मलिखान अकेले ।
काढ़िके तेग फिरो दलमें, पृथिराज कि फौजन मारिके ठेले ॥
लोहू के नारे पनारे चले, सुमनो रँगरेज कुसुम्भ सनेले ।
ठाढ़ो कहै मलिखान कि नारि, कि आवत कंत बसन्त से खेले ॥

* दोहा *

सिरसा के रण खेत महँ, लड़ो बीर मलिखान ॥
कपट सहित मार्‍यो गयो, जीति गयो चौहान ॥ २ ॥

सुमिरन करिकेजगदम्बा को * औ गणपति के चरण मनाय ॥
माता सरस्वति को सुमिरनकरि* हिय से सुमिरि शारदामाय ॥
सिरसा समरलिखत आगे अब * श्रीशिवचरण लाल मनलाय ॥
पढ़हु निरन्तर समय पाय तुम * हियसे सुमिरि राम रघुराय ॥

उपजत कमल नाहिं पर्वतपर * मोती लगत लखे नहिं डारि ॥
गई जवानी फिरि आवत नहिं * माँगे मिलत न रूप उधार ॥
सोचे इकदिन मन अपनेमहँ * माहिल उरई के परिहार ॥
खालो महुबो यहु डारो है * ना कोउ रहत शूर सरदार ॥
हाल सुनावौं पृथीराज को * चलिके महुबो लेउ लुटाय ॥
यह बिचारि मन माहिलराजा * लिल्लो घोड़ो लई मँगाय ॥
सो सजवाय लई जल्दी से * चढ़िके चले महिल परिहार ॥
राह पकरि लइ गढ दिल्लीकी * पहुँचे पृथीराज दरबार ॥
सोने सिंहासन पिरथी बैठे * माहिल रहिगे माथ नवाय ॥
नजरि बदलिगइ पृथीराजकी * ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवौ बैठौ उरई वाले * अपनी कुशल देउ बतलाय ॥
हाल सुनाय देउ महुबे को * केहि बिधि बसत रजापरिमाल॥
बोलो माहिल तब राजा से * सबबिधि कुशल छेम महराज॥
आल्हा ऊदन हैं कनवज में * चन्देले ने दओ निकार ॥
सूनो डारो है महुबो अब * चलिके लूटि लेउ करवाय ॥
सिरसा मलिखे रहत अकेले * तुम से लड़े जीति हैं नायँ ॥
फौज सजाय लेउ जल्दी से * अपनो कूच देउ करवाय ॥
पहले लूटो गढ़सिरसा को * पाछे लूटो नगर महोब ॥
समय नाहिं पैहौ ऐसी फिरि * ताते जल्द होउ तैयार ॥
बात मानिके तब माहिल की * यक हरकारा लओ बुलाय ॥
बजै नागाड़ा हमरे दल में * सिगरो लश्कर होउ तैयार ॥
डङ्का बाजो तब लश्कर में * क्षत्री सबै भए हुशियार ॥
पहले डङ्का में जिनबन्दी * दुसरे में बाँधि लए हथियार ॥
तिसरे डङ्का के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥

हाथी घोड़ा मस्त सजाये * पैदल पलटन भई अगार ॥
आदि भयंकर हाथी साजो * तापर चढ़े वीर चौहान ॥
हाथी यकदन्ता मँगवायो * तापर चौंड़ा भयो सवार ॥
चन्दन बेटा पृथीराज को * अपने घोड़ा भयो सवार ॥
घोड़ा दलगंजन सजवायो * ताहर तुरत भए असवार ॥
हाथी सजवायो भौरानन्द * धाँधू तापर भये सवार ॥
भूरा घोड़ा को सजवायो * तापर पारथ भयो सवार ॥
हाथी कालिया सजवायो तब * तापर घोरसिंह असवार ॥
भूरा मस्ता खूनी मुड़िया * कद्दर हाथी लए मँगाय ॥
हाथी दुइदुइ सौ सब विधिके * सो सजवाये पिथौरा राय ॥
दशसौ हाथिन के हलका में * भूभत आदि भयंकर नाग ॥
सजिगौ पैदल तीनिलाखसब * सजिगे चारि लाख असवार ॥
सातलाखलश्कर सब सजिगो * कूँच नगाड़ा दो वजवाय ॥
चलिभौलश्कर गढ़ दिल्लीसे * धौंसा होत में जाय ॥
आय के घेरो गढ़सिरसाको * चौंड़े हुक्म दिओ फरमाय ॥
तोप रिसाला लै पहले तुम * सिरसा किला देउ गिरवाय ॥
सुनतै चलिभौ चौंड़ा ब्राह्मण * पाई खबरि वीर चौहन ॥
तुरतै बुलवाओ मलिखे को * औ मलिखे से कही सुनाय ॥
जल्द सजाय लेउ लश्कर सब * आये साज वीर चौहान ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई * तापर चढ़े वीर मलिखान ॥
चढतै छींक भई सम्मुहें जब * तब तिलका ने कही सुनाय ॥
असगुन हुइगौ है बेटा यह * तुम ना जाउ लड़ैते लाल ॥
बोले मलिखे तब माता से * माता सुनौ हमारी बात ॥
जो हम बैठि रहैं सिरसा में * तौ जग होवै हँसी हमार ॥

कैसे बैठि रहैं घर में हम * शिर पर चढ़े बीर चौहान ॥
दै असीस भेजौ माता अब * जाते काम सिद्ध हुइ जाय ॥
आज्ञा दै देउ तुम माता अब * तब तिलकाने कही सुनाय ॥
बेटा जावौ तुम जल्दी ते * पूरन हुइहैं काम तुम्हार ॥
कुशल छेम से घर ऐहो तुम * यह सुनि तुरत बीरमलिखान॥
चरण लागिके तब माता के * पहुँचे जहाँ हते सुलिखान ॥

चौंड़ा और मलिखान की लड़ाई

अलखनिरंजनकोसुमिरनकरि * लै परभात राम को नाम ॥
लिखत लड़ाई अब चौंड़ाकी * यारोसुनहुसुमिरि घनश्याम ॥
मलिखे आये जब समुहे पर * चौंड़ा ब्राह्मण कही सुनाय ॥
किलागिरायदेउसिरसाकाको * है यह हुक्म पिथौरा क्यार ॥
इतनी सुनतै मलिखे तड़पे * गुस्सा गई देह में छाय ॥
तुरत जवाब दियो चौड़ाको * ब्राह्मण सुनौ हमारी बात ॥
क़िलाबनाओ हम अपने बल * सो हम कैसे देयँ गिराय ॥
होय जो ताक़त पृथीराज में * तो यह किला देयँ गिरवाय ॥
खेदि के मरिहैं हम दिल्लीलौं * टद्धवा टायर लिहौं छिनाय ॥
सुनतै गुस्सा हुइ चौंड़ा ने * तोपन बत्ती दइ लगवाय ॥
अबहिं उड़ाय देउ सिरसा को * कारे पाँखे देउ गिरवाय ॥
दगी सलामी तब लश्कर में * सुलिखे बत्ती दइ लगवाय ॥
धुआँ उड़ानो आसमान लौं * सूरज रहे धुंधि में छाय ॥
तोपैं छूटी दोनों दल में * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
गोला ओला के सम बरसैं * गोलो मघाबूँद झरिलाय ॥

बाण अगिनियाँ छूटन लागे * सरसर परी तीर की मारु ॥
एक पहर भरि गोला बरसो * तोपैं अगिन बरन हुइ जायँ ॥
तोपैं छोड़ि दई चत्रिन ने * तुरतै खैंचि लई तलवार ॥
दोनौं लश्कर यकमिल हुइगइ * चमचम चलनलगीं तरवार ॥
खट खट खट तेगा बाजै * बोलै छपक छपक तलवार ॥
चलै उनब्बी औ अहिगर्बी * ऊना चलै विलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं बर्दवान के * कटि कटि गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
हौदा मिलिगे हैं हौदन से * हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
पैदल के संग पैदल अभिरे * औ असवारन ते असवार ॥
ढालसे ढाल अड़ी ज्वाननकी * अंधाधुन्ध चलै तलवारि ॥
अकिले मलिखेकी धमकिन में * लश्कर रेन बेन हुइ जाय ॥
भजे सिपाही तब दिल्लो के * यह गति देखि चौंड़िया राय ॥
हाथी बढ़ावो तब चौंड़ा ने * औ मलिखे को दइ ललकार ॥
खबरदार रहिहो घोड़ा पर * तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
बोले मलिखे तब चौंड़ा से * पहले चोट चलावौ आय ॥
सुनतै चौंड़ा साँगि उठाई * सो मलिखे पर दई चलाय ॥
घोड़ी कबुतरी दहिने हुइगइ * नीचे साँगि गिरी अरराय ॥
एँड़ लगाई तब घोड़ी के * सो हाथी पर पहुँची जाय ॥
बजी टाप तुरतै मस्तक पर * मलिखे तेगा दओ चलाय ॥
छतरी टूटि गिरी धरती पर * सोचे तुरत बीर मलिखान ॥
हमना मरिहैं यहि ब्राह्मणको * खींची पकरि चौंड़िया राय ॥
मलिखे बाँधिलिओ चौंड़ाको * औ लश्कर में राखो राज ॥
लहँगा लुगरी चुरियाँ बिछिया * सब पहिराये चौंड़िया राय ॥
भेष जनानो करि चौंड़ा को * दोनौं डंड दई बँधवाय ॥

नाक नथुनिया पहिराई तब * माथे बेंदी दई लगाय ॥
चुनरि उढाई बूँदी वारी * सेंदुर माँग दई भरवाय ॥
एक पालकी सजवाई तहँ * तामें चौंड़े दश्रो बिठाय ॥
परदा डारि दश्रो पलकी पर * दुइ हरकारा लये बुलाय ॥
तिन्हें सिखाय दश्रो मलिखेने * यह पिरथी से कहियो जाय ॥
चौंड़ा जीतो है मलिखे को * श्रौ महुबे को लश्रो लुटाय ॥
डोला फँदाश्रो चन्द्रावलि को * सो तुम्हरे ढिग दश्रो पठाय ॥
ब्याह करो श्रब तुम ताहरसे * यह कहि दई चौंड़िया राय ॥
उठी पालकी चौंड़ा वाली * घुमरत श्रावैं बीस कहार ॥
श्राई पालकी पृथीराज ढिग * मनमें खुशी पिथौरा राय ॥
बात सुनाई हरकारा ने * जो जो मलिखे कही बुझाय ॥
सुनत खुशी भये पृथीराज तब * श्रौ पलकी तें पहुँचे श्राय ॥
खोलिके पलकी देखन लागे * बिस्मय मानि वीर चौहान ॥
मुँह पहिचानो जब चौंड़ा को * मनमें बहुत गये खिसियाय ॥
दाँत में श्रँगुरी दाब रहे तब * है यह महा बीर मलिखान ॥
जालिम क्षत्री है सिरसा को * जाते हारि गई तलवार ॥
डंड खोलि दइ तब चौंड़ा की * सोचन लगे पिथौरा राय ॥
दहिने बैठो जो पारथ थो * सो पिरथी से लगो बतान ॥
खेदिके मरिहों मैं मलिखे को * दादा धीर धरो मनमाहिं ॥



पारथ और मलिखान की लड़ाई

* आल्हा *

सुमिरण करिके रामचन्द को * लै बजरङ्ग बली को नाम ॥
लिखौं लड़ाई अब पारथ की * मलिखे जीतिगये त्यहि ठाम ॥
भोर होतही पारथ उठिके * लश्कर हुक्म दश्रो करवाय ॥
बाजै डङ्का अब लश्कर में * अबहीं फौज होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री सजन लाग ततकाल ॥
पहले नगाड़ा में जिनबन्दी * दुसरे बाँधि लए हथियार ॥
तिसरे नगाड़ाके बाजत खन * क्षत्री फाँदि भए असवार ॥
हाथो चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
पैदल पल्टन के सजतै खन * लश्कर कूच दश्रो करवाय ॥
यक हरकारा बदलति आयो * औ मलिखे ते पहुँचो आय ॥
तुम पर पारथ चढ़ि आयो है * तमहूँ खबर दार ह्वइ जाउ ॥
इतनी सुनतै नर मलिखे ने * अपनो लश्कर लश्रो सजाय ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई * मलिखे फाँदि भए असवार ॥
कूच कराय दश्रो लश्कर को * औ समुहें पर पहुँचे आय ॥
घोड़ा बढ़ायो पारथ ठाकुर * औ मलिखे पै पहुँचे जाय ॥
बोले पारथ नर मलिखे से * अबहीं किला देहु गिरवाय ॥
सुनतै मलिखे ने ललकारो * पारथ कहाँ तुम्हारो ज्ञान ॥
किला बनाओ जब हमने यहँ * तौ यह कैसे देयँ गिराय ॥
होय जो पौरुष कछु देही में * तौ तुम किला देउ गिरवाय ॥
इतनी सुनतै पारथ जरिगे * लश्कर हल्ला दिश्रौ कराय ॥
खैंचि सिरोही लइ क्षत्रिन ने * रण में होन लाग घमसान ॥
चलै शिरोही रण खेतन में * ऊना चलै बिलायत क्यार ॥

तेगा चटकै बर्दवान के * कटि २ गिरैं रँगीले ज्वान ॥
पैदल भभिरे सब पैदल संग * औ असवारन से असवार ॥
बड़े लड़ैया सिरसा वाले * सबके मारु मारु रट लागि ॥
पारथ मलिखे दोनों जुटिगये * अपने अपने दाँव चलाय ॥
कबहुँक बढ़िके पारथ मारैं * कबहुँक चोट करैं मलिखान ॥
बज्र समान देह दोनों को * जामें खड्ग नाहिं भनियाय ॥
लड़त लड़त दिनभर बीते तब * संध्या समय बन्द हुइजाय ॥
भोर होतही लड़ै दोउ तहँ * यहिबिधिसात रोज हुइजाय ॥
सोचे मलिखे तब अपने मन * कारण जानिपरत कछु नाहिं ॥
सोचत पहुँचे रङ्गमहल में * औ रानी पै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिके रानी बोली * काहे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
कौन सोच में हो स्वामी तुम * साँचो हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले मलिखे गजमोतिन से * रानी सुनो हमारी बात ॥
देही पारथ की पाथर सम * जामें खड्ग नाहिं समियात ॥
आजु सात दिन भये दंगलमें * मारि न मिलो पिथौरालाल ॥
बोली रानी तब मलिखे से * स्वामी सुनहु बात धरिध्यान ॥
पाथर देही है दिन भर को * सन्ध्या समय मोम हुइ जाय ॥
कालिह रातमें करहु युद्ध तुम * हुइहैं पूरन काम तुम्हार ॥
यहसुनिमलिखे बहुतखुशीभये * औ लश्कर में पहुँचे आय ॥
भोर होत दोनों भभिरे तब * संध्या समय भयो अब जाय ॥
मुर्चा फेरि दओ पारथ ने * तब हँसिकहोवीर मलिखान ॥
धर्म क्षत्रियन को नाहीं यह * जो हटि धरैं पिछारू पावँ ॥
नाम तुम्हारो जग जाहिर है * क्यों समुहें से चले पराय ॥
समुहें लड़ो आय हमरे संग * हो तुम महाबीर सरनाम ॥

इतनी सुनतै तेह आयगो * सन्मुख लड़न लाग सरदार ॥
चोट चलाई नर मलिखे पर * मलिखे लैगो चोट बचाय ॥
सोचि समुझिके नर मलिखेने * अपनी लीन्हीं सेल उठाय ॥
तुरतै घमकि दई पारथ पर * लगतै गिरो पिथौरा राय ॥
खैंचि शिरोही लइ मलिखे ने * सो पारथ पर दई चलाय ॥
शीश काटिलो तब पारथ को * औ लश्कर सब दओ भगाय ॥
सुनो हाल जबहीं पिरथी ने * पारथ जूझि गये रणमाहि ॥
तब मन सोचे पृथीराज यह * मलिखे सरिस बीर जगनाहि ॥

धीरसिंह और मलिखान की लड़ाई

॥ आल्हा ॥

सुमिरि भवानी श्रीजगरानी * दुर्गा महा कालिका माय ॥
दानव मारे मधुकैटभ से * औ महिषासुर दीन्ह गिराय ॥
चण्डमुण्डको मारि गिराओ * कीन्हा रक्त बीज का नाश ॥
शुम्भ निशुम्भ बिदारे माता * निशदिन करौं तुम्हारी आस ॥
सुनी खबरि जब पृथीराजने * पारथ जूझि गये मैदान ॥
सांवत शूर बुलाय सभा में * धाँधू बोलि बीर चौहान ॥
सम्मति करिके पृथीराज ने * बीरा तुरत दओ धरवाय ॥
कौन सो क्षत्री है हमरे यहँ * जो यह बीरा लेय उठाय ॥
बाँधिके लावै नर मलिखे को * सो बीरा उठि लेय चबाय ॥
चारि घरी बीरा को हुइ गइ * नहिं कोउ तासु ओर समुहाय ॥
तब मनसोचिसमुझिपिरथीने * धीरसिंह को लियो बुलाय ॥
बाँधिके लावो तुम मलिखेको * हमरी नजरि गुजारो आय ॥
कही मानिके पृथीराज की * धीरज बीरा लओ चबाय ॥

हाथी सजवायो जल्दी ते * औ हौदा में बैठे जाय ॥
साथ सवार लये चौबिस तब * औ सिरसा में पहुँचे जाय ॥
पहले फाटक पर आये जब * दरमानो से कहो सुनाय ॥
फाटक खोलि देउ जल्दी तुम * दरमानी ने दओ जवाब ॥
जान न दीहैं हम हाथी को * है यह हुक्म बीर मलिखान ॥
धीरसिंह उतर हाथी ते * औ घोड़ा पर भये सवार ॥
दुसरे फाटक पर पहुँचे जब * तहँ दरमानो कह्यो सुनाय ॥
घोड़ा चढ़िके नहिं आवै कोउ * है यह हुक्म बीर मलिखान ॥
सुनतै सोचे धीरसिंह तब * है यह शुभ प्रबन्ध मलिखान॥
बाँधिके घोड़ा दरवाजे पर * पैदल गये धीर सरदार ॥
चौबिस शूर संग पहुँचे जब * बँगला माहिं धीर सरदार ॥
शोभा देखी जब बँगला को * धीर प्रसन्न भए त्यहि काल ॥
खंभ अठासो की बैठक है * चौबिस खम्भ बनी चौपारि ॥
बिछे गलीचा हैं मखमल के * बैठे बड़े बड़े उमराव ॥
सोने सिंहासन रत्नजटित सो * बैठे बीच बीर मलिखान ॥
हीरा चमकि रहो माथे पर * ऊपर चँवर ढुरैं गजगाह ॥
सिंहकि बैठक क्षत्री बैठे * सबके बीच बीर मलिखान ॥
साथी अपने बाहर छोड़े * अकिले गयो धीर सरदार ॥
करो जोहार जाय समुहें पर * ऊँचो चौकी दई डराय ॥
धीर सिंह बैठे चौकी पर * नर मलिखे से कही सुनाय ॥
हमहिं पठाओ पृथीराज ने * लावो संग बीर मलिखान ॥
साथ हमारे जो चलिहो तुम * तो रहि जैहैं बात हमार ॥
चलिके मिलौ आजु पिरथोसे * सुखसे करहु राज्य महराज ॥
जो नहिंचलिहो तुम हमरे संग * हमको हँसिहैं सकल जहान ॥

लाज हमारी आजु राखिलेउ * संगै चलौ वीर चौहान ॥
यह सुनिज्वाबदियो मलिखेने * ओ महराज धीर सरदार ॥
शीश झुकै हैं हम ईश्वर को * मालिक जौनसकल संसार ॥
क्षत्री हुइ जो करै अधीनी * है त्यहि बार बार धिरकार ॥
करत गर्वजो कोउ हमरे संग * त्यहि हम मिलत तेगकी धार ॥
फिरि समुझाओ धीरसिंह ने * मलिखे मानौ बचन हमार ॥
चलिके मिलिहौजो हमरे संग * तुम्हरे देहैं प्राण बचाय ॥
जो कछु होवै जिय तुम्हरेको * तौ म्वहिं कोटि बार धिरकार ॥
तापर ज्वाब दियो मलिखेने * नहिं हठ करौ धीर सरदार ॥
चढै पिथौरा सात लाख से * चाहे चढै लाख उनचास ॥
करैं अधीनी नहिं तौहू हम * हमको पड़ी कौन परवाह ॥
धर्म क्षत्रियन को नाहीं है * जो चढ़ि करैं अधीनी जाय ॥
शिर पर काल रहत सबके है * यक दिन मरण होय संसार ॥
मित्र लगतहौ तुम आल्हाके * आल्हा भाई लगत हमार ॥
ताते तुमको समुझावत हौं * हम नहिं करैं अधीनी जाय ॥
सुनतै गुस्सा हुइ धीरज ने * अपनी लीन्हीं साँग उठाय ॥
सो धरिधमकी वा बँगलामें * सातौ तवा तोरि धँसिजाय ॥
धीरज बोले नर मलिखे से * तुम सुनि लेउ बीरमलिखान ॥
साँगि उखारि देउ हमरीतुम * या तुम चलो हमारे साथ ॥
सोचे मलिखे तब अपने मन * है यह धीर बीर सरदार ॥
बोले मलिखे धीरसिह से * धीरज धरौ धीर सरदार ॥
सुमिरन करिके जगदम्बाको * औ शारद के चरण मनाय ॥
मारि के ठोकर नरमलिखेने * तुरतै साँगि दई पकराय ॥
देखि पराक्रम नरमलिखेको * धीरज मनमें गये समाय ॥

करि जुहार धीरज तब चलिभे * पहुँचे जहाँ बीर चौहान ॥
पूछन लागे पृथीराज तब * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बड़ो बीर है गढ़ सिरसा को * हमने दीन्हीं साँगि गड़ाय ॥
तुरत उखारि दई मलिखे ने * औ नहिं मानी बात हमार ॥
जीति न पैहौ नरमलिखे को * ताकी जग जाहिर तरवार ॥
सुनी हकीकति जब धीरज से * मनमें हारि बीर चौहान ॥
सोचन लागे अपने मन में * है यह महाबीर चौहान ॥

मलिखान विजय और सुलिखान का स्वर्गबास

॥ आल्हा ॥

सुमिरन करिके रामचन्द्रको * मनमें सुमिरि बीर हनुमान ॥
विजय बखान करौं मलिखेकी * अरु रणमरण बीरसुलिखान॥
सोचि समुझ के पृथीराजने * अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
बजै नगाड़ा हमरे दल में * लश्कर साजि होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंका भइ जिन बन्दी * दुसरे बाँधि लये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भए असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथी चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
सजिगौ लश्कर दिल्ली वालो * डंका होत गोल में जाय ॥
आदि भयंकर हाथी साजो * हौदा धरो सोबरन क्यार ॥
अपना सजन लगे पिरथीतब * शोभा कछु कही ना जाय ॥
पहिरि पैजामा मिसरू वारो * जामा पहिरि दुदामी क्यार ॥
अगल बगलपर दुइ पिस्तौलैं * बायें सिंहिनि मूठि कटार ॥

बारह छुरियाँ कम्मर बाँधे * लीन्हे हाथ ढाल तलवारि ॥
पाग बैजनी शिर पर सोहे * कलँगी मोतीचूरकी लागि ॥
गज भरि छाती पृथीराजकी * अरु नैनन में बरै मसाल ॥
सजि के पृथीराज ठाढ़े भे * मानहुँ इन्द्र अखाड़े जाय ॥
सिढ़ी लगाई मलयागिरि की * डंडा कुम्भ कलिनधरिपावँ ॥
सिढ़ियनसिढ़ियनपिरथीचढ़िगै * औ हौदा में बैठे जाय ॥
हाथी भौंरानन्द सजवायो * तापर धाँधू भयो सवार ॥
घोड़ा दलगंजन सजवायो * ताहर बेटा भयो सवार ॥
यकदंता हाथी सजवायो * तापर चौंड़ा भयो सवार ॥
चन्दन बेटा पृथीराज को * अपने घोड़न भए सवार ॥
औरो राजा संगै सजि गए * अपने घोड़न भए सवार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातु की * सो चरखिन पर दई चढ़ाय ॥
लश्कर चलिभौ पृथीराज को * डंका होत गोल में जाय ॥
ठाढ़ी करखा बोलत आवैं * घुमरत आवैं लाल निशान ॥
छाहाकारी बीतति आवैं * क्षत्री बीर रूप ह्वै जायँ ॥
चारि चौंसधे के धूरे पर * आई फौज पिथौरा क्यार ॥
खबरि सुनी यह नर मलिखे ने * आये साजि पिथौरा राय ॥
घोड़ी कबुतरी तब सजवाई * तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
फौज सजाय लई जलदी से * मारू डंका दौ बजवाय ॥
घोड़ी हिरौंजिनि को सजवायो * तापर सुलिखे भये सवार ॥
कूँच कराय दओ लश्कर सब * औ धूरे पर पहुँचे जाय ॥
हाथी बढ़ाओ पृथीराजने * औ सन्मुख पर कही सुनाय ॥
कौन शूरमा है सिरसा में * जिन यह किलालओबनवाय ॥
सुनत सामुहें आगे बढ़िके * नर मलिखे ने करी सलाम ॥

बोलो नाहर सिरसा वाला * वह ब्रह्मा को बीर जुझार ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं * हमरे बचन करौ परमान ॥
धरती बंजर यह देखी हम * ताते किला लओ बनवाय ॥
सुनि ललकारो पृथीराज ने * अबहीं किला देउ गिरवाय ॥
तापर ज्वाब दियो मलिखे ने * क्यों हम किलादेहिं गिरवाय ॥
अपनेबल हम किला बनाओ * ना काहू की करी बिगार ॥
रारि बढ़ावत हौ काहे यहँ * ना कछुअटको काम तुम्हार ॥
बोले पृथीराज मलिखे से * हम यहु किला दिहैं गिरवाय ॥
बात हमारी जो मनिहौ ना * सिरसा गर्द दिहौं करवाय ॥
बोले मलिखे पृथीराज से * यह नहिं कहौ पिथौराराय ॥
हमसे दूजी जा करिहौ तुम * दिल्ली गर्द दिहौं करवाय ॥
गर्व न राखो हम काहूको * हमको जानत सकलजहान ॥
कठिन जादवा बौरीगढ है * तहँते चौथी लाये छुटाय ॥
मुहरा मारो अभिनन्दन को * सातौ भाँवरि लई डराय ॥
दिल्ली ब्याहन गै ब्रह्मा को * द्वारे हाथी दये पछारि ॥
सातौ बेटा तुम्हरे बाँधे * तुरतै भाँवरि लई डराय ॥
छीनो सिरसा हम पारथ से * तब कहँ हते बीर चौहान ॥
सुनतै गुस्सा हुइ पिरथी ने * तुरतै हुक्म दओ फरमाय ॥
दै देउ आगी मेरि तोपन में * अबहीं किला देउ उड़वाय ॥
हुक्म पायके झुके खलासी * तोपन आगी दई लगाय ॥
धुँआँ उड़ानो आसमान लौं * दलमें रहो अँधेरी छाय ॥
अररर गोला बरसन लागे * गोली सात कोसलौं जाय ॥
एक कोश लौं गोली पहुँचै * कदम डेढ़पर चलै कटार ॥
बरछी छूट पाँच कदम पर * सबके मारु मारु रटिलाग ॥

एक पहर भरि गोला बरसो * अन्धाधुन्ध तोप की मार ॥
तोपैं धैं धैं लाली हुइ गइँ * ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ॥
तोपैं छोड़ि दई जल्दी से * क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ॥
दोनौं फौजन के अन्तर में * रहिगौ तीनि कदम मैदान ॥
चलै शरोही दोनौं दल में * कटि कटि गिरैं रँगीलेज्वान ॥
उठै कबन्ध वीर रण खेलैं * घैहा उठैं कराहि कराहि ॥
डारी लोथैं रजपूतन की * चेहरा हँसै जवानन क्यार ॥
जौन शूर समुहें हुइ जूझै * ताको इन्द्रपुरी लैजायँ ॥
लिए विमान अप्सरा डोलैं * कुण्डरी दै दै नाचैं गीध ॥
कोई रोवत है पुरखिन को * कोई लड़िकन को बिललाय ॥
कोई रोवै घर तिरियन को * हालै लाए गौनमाँचार ॥
मुचंन मुचंन मलिखे टेरैं * दोनौं भुजा उठाय उठाय ॥
भागि न जैओ कोइ मुहरा से * यारो रखिओ धर्म हमार ॥
रणके सन्मुख जो लड़िमरिहो * हुइहै जुगन २ लौं नाम ॥
खटिया परिके जो मरि जैहो * जग में कोउ न लैहैं नाम ॥
झुकै सिपाही सिरसा वारे * रण में कठिन करैं तलवार ॥
सिरसा गढ़ के तहँ धूरे पर * है वहि चली रक्त की धार ॥
घोड़ो बढ़ाई नर मलिखे ने * कर में लिये नग्न तरवार ॥
भिड़हा पैठे जस भेड़न में * ज्यों बन सिंह बिडारै गाय ॥
पान तमोली जैसे कतरै * जैसे खेती लुनै किसान ॥
तैसे मलिखे रण में पैठे * क्षत्रिन काटि करो खरिहान ॥
राजा अंगद को मारौ उन * रण खेतन माँ दओ गिराय ॥
सूरज राजा हाड़ा वारौ * ताको हनो बीर मलिखान ॥
राजा सूरत बाँदा वारो * ताको मलिखे दओ बढ़ाय ॥

तीनि शूर मलिखे जब मारे * रण महँ गड़बड़ दश्रो मचाय ॥
चन्दन बेटा पृथीराज को * ताने घोड़ा दश्रो बढ़ाय ॥
करत लड़ाई थे जहँ सुलिखे * चन्दन तुरत गये नियराय ॥
समुहें सुलिखे के ललकारो * अब तुम खबरदार हुइ जाउ ॥
यहकहि गुर्ज लिश्रो चंदनतब * श्रौ सुलिखे पर दश्रो चलाय ॥
घोड़ी हटिगइ तब सुलिखेकी * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
खैंचि शिरोही लइ चन्दनतब * सो सुलिखे पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई सुलिखे ने * श्रौ चन्दन की चोट बचाय ॥
बोले सुलिखे तब चन्दन ते * तुम्हरा काल रहो नियराय ॥
खबरदार रहिश्रो घोड़ा पर * यह कहि खैंचि लई तरवार ॥
करो जड़ाका जब चन्दनपर * चन्दन दीन्हें ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटिगइ तब चन्दनकी * उनको छूटि जनेवा जाय ॥
चन्दन गिरतै ताहर देखो * अपनो घोड़ा लये बढ़ाय ॥
यक ललकार दई सुलिखे को * अब तुम खबरदार हुइ जाव ॥
खैंचि शिरोही तब सुलिखेलइ * श्रौ ताहर पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई ताहर ने * तापर भयो जड़ाका जाय ॥
लश्रो गुर्ज तब नरसुलिखेने * सो ताहर पर दश्रो चलाय ॥
बायें से घोड़ा दहिने हुइगौ * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
गुस्सा हुइके तब ताहर ने * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करो झड़ाका जब सुलिखे पर * तब उन दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटिगइ तब सुलिखेकी * सुलिखे जूझि गए मैदान ॥
सुनीखबरिजब नर मलिखेने * अपनी घोड़ी लाये बढ़ाय ॥
तुरतै ललकारो ताहर को * ताहर खबरदार हुइ जाउ ॥
लै के भाला नर मलिखे ने * सो ताहर पर दश्रो चलाय ॥

लगो चपेटा तब घोड़ा के * ताहर घोड़ा गये भगाय ॥
मरो देखि के तब भाई को * बहुतै दुखी भए मलिखान ॥
मोह आयगो नरमलिखेको * तुरतै खैंचि लई तलवारि ॥
रणमें पैठि परे मलिखे तब * औ क्षत्रिनको काटन लाग ॥
गड़बड़ करिदौ नर मलिखे ने * क्षत्री लै लै भगे परान ॥
अकिले मलिखेकीधमकिनमें * लश्कर भगो पिथौरा क्यार ॥
भाजो लश्कर आठकोस लौं * मारत चले वीर मलिखान ॥
पृथीराज तब सोचन लागे * है तलवार धनो मलिखान ॥
बड़े लड़ैया हैं सिरसा के * जिनसे हारि गई तलवारि ॥
मुर्चा हटिगो पृथीराज को * सो दिल्ली में पहुँचे आय ॥
लौटिके आये गढ़ सिरसा में * जीते जंग वीर मलिखान ॥
आगे लड़ाई है धोखे की * सो सुनिलेउ सुमिरिहनुमान ॥

मलिखान का धोखे से मारा जाना।

सुमिरन करिये सब दुष्टन को * हैं जो युगन युगन विख्यात ॥
सतयुग सुमिरौंहिरणायाक्ष को * त्रेता लङ्कपती उत्पात ॥
द्वापर सुमिरौं कंसासुर को * जानेयुद्ध कृष्ण से कीन ॥
कलिमें सुमिरौं मैं माहिलको * भारत खंड छीण करिदीन ॥
माहिल भूपतिकी चुगलिनमें * राजा बिगरि गये परिमाल ॥
चुगली करि करि देश नशायो * क्षत्री भये काल के गाल ॥
धान पान महुबे में उपजै * ना महुबे में होय उखारि ॥
क्षत्री उपजै ना मलिखे सम * ना फिरि तपैं चन्द्र सरदार ॥
सिरसा गढ में जो धोखा दै * मारे गये वीर मलिखान ॥
राजा माहिलकी चुगली को * यारो सुनो सोइ धरिध्यान ॥

सुनी खबरि जब माहिल राजा * जीते जंग बीर मलिखान ॥
लिल्ली घोड़ी पर चढ़ि बैठे * औ सिरसा को करो पयान ॥
जहाँ महल थे रानि ब्रह्माको * माहिल तहाँ पहूँचे द्वार ॥
खबरि जनाई तब बाँदी ने * द्वारे खड़े महिल परिहार ॥
सुनतै ब्रह्मा उठि ठाढ़ी भइ * औ माहिलको लाइ लिवाय ॥
करी आरती तब माहिलकी * औ धरती पर दई धराय ॥
कुशल छेम पूछी माहिल से * बोले तुरत महिल परिहार ॥
कुशल छेम है सब उरई में * गढ़ में राज करौं सुखसार ॥
बड़े लड़ैया मेरे मलिखे हैं * रण में जीति लिये चौहान ॥
देन बधाई यहँ आये हम * जीते जंग बीर मलिखान ॥
पै यक बिगर भई सिरसा में * सुलिखे गये जूझि मैदान ॥
यह सुनि बोली माता ब्रह्मा * बीरन सुनहु बातधरि ध्यान ॥
पाँव पद्म है नर मलिखे के * यह भगवान दयो बरदान ॥
जबलग पाँव पद्म कायम हैं * तबलग जिएं बीर मलिखान ॥
कौन सो क्षत्री है दुनियाँ में * जो रण जीतिलेय मलिखान ॥
इतनी बात सुनी ब्रह्मा की * माहिल बहुत खुशी मनमाहिं ॥
जोई रोगी के भावै मन * सोई बैद बताई आय ॥
भेद लेन माहिल आये थे * सो ब्रह्मा ने दयो बताय ॥
भेद पाइके माहिल चलिभये * फूले अंग नाहिं समियाय ॥
भेद बतैहों हम पिरथी को * अब ना बचैं बीर मलिखान ॥
राह पकरि लइ गढ़ दिल्लीकी * पहुँचे पाँच रोज में जाय ॥
जहाँ कचहरी पृथीराज की * माहिल तहाँ पहूँचे जाय ॥
उतरि बछेरी से भुइँ आये * औ राजा को करी सलाम ॥
नजरिबदलि गइ महाराजको * ऊँची चौकी दई डराय ॥

गये भगाय ॥
आवौ बैठो उरई वाले * अपनो कुशल कहा मलिखान ॥
हाल बताय देउ महुबे को * औ सिरसा को कहौ हवारि ॥
बोले माहिल पृथीराज से * बैठे राज करौ महराज ॥
फिरि हँसिमाहिल बोलनलागे * मनसा पूरी भई हमार ॥
अबहीं गये हते सिरसा हम * तहँ को भेद लेन के काज ॥
ब्रह्मा बहिनी ने बातन महँ * हमको भेद दओ बतलाय ॥
पाँव पद्म है नर मलिखे के * तामें रहत जीव मलिखान ॥
सीख हमारी अब मानौ तुम * सोई करौ वीर चौहान ॥
जबलगि पाँव पद्मफटिहैनाहिं * तबलगि नाहिं मरै मलिखान ॥
सीख हमारी अब मानौ तुम * सोई करौ बीर चौहान ॥
खंदक खुदवावौ धूरे पर * तिनमें साँगैं देउ गड़ाय ॥
तरवा फटिहैं जब मलिखेको * तबही बनिहै काम तुम्हार ॥
यह सुनि पृथीराज बोलेतब * माहिल भली बताई आय ॥
मनमें आय गई हमरे है * अब हम करिहैं यहै उपाय ॥
सुरँग खोदैया बुलवायो तब * औ यह हुक्म दओ फरमाय ॥
सिरसा गढ़ के यहि धूरेपर * दुइ सौ खंदक करो तयार ॥
इकसौ उनमाँ खुले राखियो * इकसौ पटपर दियो कराय ॥
भाला बरछी साँगि कटारी * तिनमाँ विरमा बाढ़ि धराय ॥
सो गड़वाय दिऔ ऊमन महँ * पाछे खबरि दिऔ पहुँचाय ॥
इतनी सुनतै चले खोदैया * औ सिरसा में पहुँचे जाय ॥
खंदक त्यार करे धूरे पर * जैसो हुक्म पिथौरा क्यार ॥
खबरि भेजि दइ गढ़दिल्लीको * खंदक सबै भये तैयार ॥
सुनी खबरि जब पृथीराजने * तुरत नगड़ची लओ बुलाय ॥
बजो नगाड़ा हमरे दल में * लश्कर जल्द होय तैयार ॥

हुक्म पायके चला नगड़ची * औ डंकाको दियो बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * लश्कर तुरत भयो तैयार ॥
फौजैं सजिगइँ सब दिल्लीकी * कूच नगाड़ा दयो बजाय ॥
आदि भयंकर हाथी साजो * तापर चढ़े बीर चौहान ॥
हाथी साजो तब भौंरानन्द * तापर धाँधू भये सवार ॥
हाथी यकदंता सजवायो * तापर चौंड़ा भयो सवार ॥
घोड़ा दलगंजन सजवायो * तापर ताहर भये सवार ॥
कूच कराय दयो लश्करको * सिरसा धुरो दबायो जाय ॥
डेरा डारि दये धूरे पर * अपने तम्बू दये तनाय ॥
लैके कागद कल्पी वालो * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
लिखी हकीकति पृथीराजने * पढ़ियो याहि बीर मलिखान ॥
जीवन अपनो जो चाहो तुम * तौ तुम किल्ला देहु गिरवाय ॥
कहो न मनिहौ जो हमरी तुम * तुम्हरे प्राण बचैंगे नाहिं ॥
यह लिखि दीन्हीं हरकाराको * सो सिरसा में पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी नर मलिखेको * पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके पाती मलिखे बाँची * गुस्सा गई देह में छाय ॥
तुरतै उठिके मलिखे चलिभे * खटकत जाय ढाल तलवार ॥
किला कंगूरन पर चढ़िदेखो * लश्कर पड़ो पिथौरा राय ॥
उनहीं पायन मलिखे उतरे * औ फाटक पर पहुँचे जाय ॥
हुक्म दिया तब हरकाराको * लश्कर देउ तयार करवाय ॥
ज्वाबलिखिदयो पृथीराजको * सिरसाकिला गिरनको नाहिं ॥
होय पराक्रम जो तुम्हरे में * तौ तुम किला देहु गिरवाय ॥
बजो नगाड़ा गढ़सिरसा में * क्षत्री तुरतै भये तयार ॥
सूरज बंसी चंदर बंशी * औ रघुबंशी राजकुमार ॥

बंश बघेले और चन्देले * औ सकसेने भये तयार ॥
बंश डौड़िया खेर वाले * धारा नगरी केर पमार ॥
तोमर ठाकुर तुमरधार के * औ राठौर भये तैयार ॥
गहिवार और दर्शनी भट * हाड़ा बूँदी केर जवान ॥
कछवाहे गहलौत सुभट सब * क्षत्री सजिके भये तयार ॥
एक पहर में लश्कर सजिगो * महलन आये बीर मलिखान ॥
गंगाजल मँगवाय न्हायकरि * धोती पहिरि पोतिया क्यार ॥
इष्ट ध्यान करि लै चन्दन तब * माथे अपने लओ लगाय ॥
पाग बैजनी शिर पर बाँधी * कलँगी मोतीचूरकी लागि ॥
मुकुट जड़ाऊ धरि रतननकी * तुर्रा चमकि चमकि रहिजाय ॥
कमर में बाँधी बारह छुरियाँ * औ दुइ बाँधि लई तरवारि ॥
दुइ पिस्तौलैं अगल बगलपर * दहिने सिहिनि मुठि कटार ॥
सजिके ठाढ़ भये मलिखे जब * मानहुँ इन्द्र अखाड़े जायँ ॥
रोरी अच्छत लै ब्रह्मा तब * मलिखे निकट पहूँचो आय ॥
जैसेइ टीका ब्रह्मा कीन्हो * समुहें भई छींक तब आय ॥
ब्रह्मा माता ने हटिको तब * तुम ना जाउ लड़ते लाल ॥
बोले मलिखे तब माता से * बैरी शिर पर खड़ो हमार ॥
घरमें बैठि रहैं कैसे हम * माता समुझि लेउ मनमाहिं ॥
काल बिराजत हैं सबके सिर * कोई आजु मरै कोइ काल ॥
सदा न जीवत कोई रहि है * खटिया परिके मरै बलाय ॥
घर में रहिके जो मरि जैहैं * जगमें कोउ न लैहैं नाम ॥
सन्मुख जुझि हैं पृथीराजके * हुइहै युगन युगन लौं नाम ॥
सन्मुख ठाढ़ी गजमोतिन थी * सो मलिखे से लगी बतान ॥
माता मने करत जैबे को * नहिंतुमजाउआजुरण माहिं ॥

सुनिके डपटो तब मलिखे ने * रानी लौटि जीभ मुँह दाबु ॥
निजघर घोड़ा पिउ अलबेला * रानी कहा शत्रु की त्रास ॥
नित्य लड़ाई जिनको रणमें * तिनकी कह चुरियनकी आस ॥
जायके बैठो रंगमहल में * हम पर चढ़ो पिथौरा राय ॥
हमजो बैठि रहैं महलन में * बूड़ै सात साखिको नाम ॥
आज्ञा लैके तब मातासे * औ घोड़ी पर भये सवार ॥
कूच कराय दओ लश्करको * चलपड़ो तुरत बीरमलिखान ॥
लश्कर आओ जब धूरे पर * तब मलिखे ने कही सुनाय ॥
कौन शूरमा चढ़ि आयो है * सो समुहें हुइ देइ जवाब ॥
ताहर घोड़ा दाबे आये * औ मलिखे से कही सुनाय ॥
किला गिराय देउ सिरसाको * है यह हुक्म बीर चौहान ॥
तुरत जवाब दओ मलिखे ने * काहे किला देयँ गिरवाय ॥
दई चुनौती पृथीराज को * हमरो किला देयँ गिरवाय ॥
इतनी सुनतै ताहर जरिगै * लश्कर हुक्म दिओ करवाय ॥
बत्ती दै देउ मेरि तोपन में * इन पाजिन को देउ उड़ाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर * तोपैं बत्ती दई लगाय ॥
धुआँ उड़ानों आसमन लौं * सविता रही धुंधिमें छाय ॥
अररर अररर गोला छूटैं * सर सर परी तीर की मारु ॥
सननन गोली छूटन लागी * कह कह करै अगिनियाँबान ॥
तोपैं छाँड़ि दई ज्वानन ने * तुरतै खैंच लई तलवारि ॥
दोनों फौजन के अन्तर माँ * रहिगो डेढ़ पैग मैदान ॥
खट खट तेगा बाजन लागो * बोलै छपक छपक ललवार ॥
सुर्चन सुर्चन नचै कबुतरी * मलिखे कहैं पुकारि पुकारि ॥
भागि न जैओ कोइ समुहें से * यारो रखियो धर्म हमार ॥

नमक चँदेले को खाओ है * सो हाड़न माँ गओ समाय ॥
आजु सहाय करो हमरी तुम * हम पर चढ़े वीर चौहान ॥
बढ़े सिपाही सिरसा गढ़के * सबके मारु २ रटलाग ॥
छाँड़ि आसरा जिन्दगानीको * अपनो मया मोह बिसराय ॥
खैंचि शिरोही लइ मलिखेने * समुहें गोल गये समियाय ॥
सिंहा पैठे जस भेड़न माँ * ज्यों बनसिंह बिडारै गाय ॥
जैसे लड़िका कबडी खेलैं * गिन गिन धरैं अगारू पावँ ॥
तैसेइ मलिखे रण में पैठे * दोनों हाथ करैं तलवार ॥
बोले मलिखे निज घोड़ी से * अब गाढ़े में आवौ काम ॥
माघ महेला तुमको दीन्हों * औ सावन में कडुए तेल ॥
बचपन से तुमको पालो * मल्हना गौवन दूध पिलाय ॥
पाँव पिछारु ना धरिओ तुम * रण में रखिओ धर्म हमार ॥
मलिखे मारैं दश पन्द्रह को * घोड़ी मारै बीस पचीस ॥
समुहें आवै जो क्षत्री कोउ * त्यहि दाँतन से जाय चबाय ॥
दहिने बायें जाको पावै * त्यहि टापन से देय गिराय ॥
हौदन हौदन नचै कबुतरी * भारत फिरैं बीर मलिखान ॥
पैग पैग पर पैदल गिरिगो * उनके दुदुइ पैग असवार ॥
हाथी डारे बिसे बिसे पर * छोटे पर्वत की अनुहार ॥
डाली लोथैं जो लोहू में * मानो कच्छ मच्छ उतरायँ ॥
डाली पगियाँ जो लोहू में * मानहु नदी परो सिवार ॥
डारी ढालैं जो लोहू में * मानो कछुआ सी उतरायँ ॥
अकिले मलिखेकी डपटनि में * सब दल रेन बेन ह्वै जाय ॥
ऊँचे खाले कायर भाजे * जे रन दुलहा चले बराय ॥
लम्बी धोतिन के पहिरैया * तिन नारेन की पकरो राह ॥

जिनहिं पियारी घरमें तिरिया * रण में डारि दए हथियार ॥
प्राण पियारे जिन क्षत्रिनको * तिन धरि लयो साधुको भेष ॥
बाँधि लँगोटी पहिरि कर्धनी * देही माहि भभूति रमाय ॥
हमहिं न मरियो भाई क्षत्रिउ * हम तो हरद्वार को जायँ ॥
भिक्षा माँगन हम आये थे * तौ लौं चलनलगी तलवारि ॥
पहरु एक भरि चली शिरोही * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले * अपने डारि डारि हथियार ॥
भजत सिपाही पिरथी देखे * मनमें गये सन्नाका खाय ॥
चालिस हौदा खाली करिके * मलिखे पृथीराज पै जाय ॥
बोले मलिखे पृथीराज से * तुम सुनि लेउ धनी चौहान ॥
आजु अखाड़े में बरनी है * समुहें खेलौ जूझ अघाय ॥
पिरथी सोचे तब अपने मन * औ तलवारि धरी मलिखान ॥
जौलौं लैहैं बाण हाथ हम * तौ लौं मारि देहैं तलवारि ॥
यह मन सोचे पृथीराज तब * औ मलिखे से कही सुनाय ॥
तुम्हरी बरनी है ताहर से * समुहें लड़ो खेत में जाय ॥
यह मन भाय गई मलिखेके * आगे घोड़ी दई बढ़ाय ॥
ऊभे खुदवाये पिरथी जहँ * मलिखे तहाँ पहूँचे आय ॥
एँड़ लगाई जब घोड़ी के * ऊभे फाँदि गई वा पार ॥
समुझे मलिखे यह धरती है * वह थो ऊभेन को मैदान ॥
जबहीं पटरी गिरी नीचे को * घोड़ी ऊभे गई समाय ॥
लगी साँगि जब पाँयपद्म में * तरवा फटो बीर मलिखान ॥
मूर्छा आवनलगी तबहितिन * रोवन लगे सोचि मलिखान ॥
धोखा देवै जो काहू को * ताको बार बार धिक्कार ॥
धोखा दीन्हों पृथीराज ने * औ धोखा से दयो मराय ॥

समुहैं हुइके जो लड़ता कोइ * हमको नाहिं होत पछिताव ॥
मनकी बात रहो मनही में * अब क्या करों हाय करतार ॥
काल हमारो अब आयो है * अस कहि दियेप्राण बिसराय ॥
तड़पी घोड़ो तब ऊभे से * नर मलिखेको लई निकारि॥
लाश देखिके नर मलिखेकी * धामन्न खबरि दई पहुँचाय ॥
ब्रह्मा माता रोवत दौरी * औ फाटक पर पहुँची जाय॥
सुनी खबरिजब यह मलिखेकी * मूर्छित गिरी भूमि महराय ॥
दौरो बाँदी तब फाटक से * औ रानी तर पहुँची जाय ॥
सोवत टेरी तब रानी को * बेटी जगो बिसेने क्यार ॥
बड़ी उड़ानी है मलिखे की * सुनियत जूझे कन्त तुम्हार ॥
एक हरकार है फाटक पर * त्यहि यह खबरि सुनाई आय॥
इतनी सुनतै रानी दौरी * औ फाटकपर पहुँची आय ॥
कैसी गुजरी है लश्कर में * यह धामन से पूछन लागि ॥
हाथ जोरिके धामन्न बोलो * हमसे कछू कही ना जाय ॥
घोड़ो कबुतरी मँडर बाँधिगइ * औ ऊभे में गई समाय ॥
पद्म फाटिगो तब तरवा को * जूझे तुरत बीर मलिखान ॥
पलकी मँगवाई रानी ने * तापर तुरतै भई सवार ॥
ब्रह्मा माता संगै चलि भइ * औ लश्कर में पहुँची जाय ॥
लाशि पड़ी थी जहँ मलिखेकी * पिरथी तहाँ पहूँचे जाय ॥
तब ललकारी गजमोतिन ने * तुम सुनिलेउ पिथौरा राय ॥
यहनहिजनिऔतुमअपनेमन * मारे गए बनाफर राय ॥
खेदि के मरिहौं मैं दिल्लीलौं * कारे पाँखे दिहौं कराय ॥
ताते तुमका समुझावतिहौं * दिल्ली कूच जाउ करवाय ॥
कही हमारी जो मनिहौनहिं * अबहीं दिहौं शाप तत्काल ॥

सत्त विधाता म्वहि दीन्हौं है * दुइहौं सती कन्त के साथ ॥
तीनि महीना सत्रह दिनमें * धरती बहे रक्त की धार ॥
नगर महोबे से दिल्ली लौं * हुइहैं सबै सुहागिन राँड़ ॥
तुमहि मुनासिब यहनाहींथी * जो घटि करी हमारे साथ ॥
अब तुम देखहु ना सिरसाको * अबहीं कूच जाउ करवाय ॥
मनमें सोचे पृथीराज जब * अपनो मुहरा दओ फिराय ॥
लश्कर लौटारो पिरथी ने * औ दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
हुक्म कियो तबगजमोतिन ने * चन्दन लकड़ी लई मँगाय ॥
चारि चौंसधे के धूरे पर * रानी चिता लई रचवाय ॥
जितनोखजाना थो सिरसाको * सो सब करो पुराय ततकाल ॥
माता ब्रह्मा प्राण छोड़िदै * तिनकी दई क्रिया करवाय ॥
सबने समुझावो रानी को * रानी मानि लेउ तुम बात ॥
सती होउ नहिं साथ कन्तके * सिरसा बैठि करौ तुम राज ॥
किये सिंगार सबै गजमोतिन * औ सेन्दुर से माँग भराय ॥
हाथ नारियल मुख में बीरा * रानी सती होन को जाय ॥
सती पुकारे सर के ऊपर * अब तुम जागौ कन्तहमार ॥
भामरि बदले भामरि देहौं * औ जरि मरिहौंसाथ तुम्हार ॥
अहमद बाबा पूछन लागे * रानी सुनौ हमारी बात ॥
जीवत तनको क्योंजारति हो * तुम इस मरे मर्द के साथ ॥
बैठी सिरसा राज करौ तुम * औ हरिभजन करौ मनलाय ॥
मरे से पीतम अब मिलिहैं ना * नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
बोली रानी तब अहमद से * बाबा सुनो शेषजी बात ॥
प्राण पियारो पति सबहीको * जगमें पिया पियारो साम ॥
वह पतिआज गओ दुनियाँसे * केहि पर राखौं प्राण पियार ॥

12990

जो जरि जैहौं संग पीतमके * चलिहै जगमें नाम हमार ॥
सुयश बाढ़ि है सास ससुरको * औ फिरि मिलिहै कंत हमार ॥
जगमें आये पति रहि जै है * हुइहै सती धर्म विस्तार ॥
मोह छाँड़िके मात पिताको * औ ईश्वर के चरण मनाय ॥
सत्त सुमिरिके रनिमल्हना का * लै आल्हा ऊदनको नाम ॥
ऐसे धोखा भौ सिरसा में * बनिके बिगड़ि गए सबकाम ॥
सिरसा समर भओ पूरा यह * लिखिशिवचरणदओसमुझाय॥
आगे लड़ाई सागर पर की * सोऊ लिखिके दिहैं सुनाय ॥

* इति सिरसा समर सम्पूर्ण *



* श्रीः *

* अथ *

आल्ह खंड

* कीरति सागर पर *

[भुजरियों] की लड़ाई ।

* सुमिरनी *

* दोहा *

श्रीगुरुवर पद ध्यान उर, शम्भु चरण मन लाय ।
ब्रह्मानन्द महाविजय, लिखिके दिहौं सुनाय ॥ १ ॥

* सवैया *

योगी यती तपसी न रहे, न रहे नृप चक्रवती धनुधारी ।
नाहिं रहे जग शूरुवीर, महान बली गुण पंडित भारी ॥
ज्ञानीरु ध्यानी रहे न इहाँ, रहे धनवान न दीन दुखारी ।
ईशहु देह धरे न रहे, नर नाहिं रहे तो कहा दुखभारी ॥२॥

॥ कुण्डलिया ॥

जगमें सारो शोध ले, हित अनहित की बात ।
बिना भक्ति भगवान की, औसर बीता जात ॥

औसर बीता जात, खात हैं भूलि के धोखा ।
बिन चेते निज रूप, होय न तेरी मोखा ॥
नाशयणा मन समुझि, देख दुख सुख अरु रोषा ।
धर्म सनातन त्यागि, धरै मत शिर पै दोषा ॥ २ ॥

* आल्हा *

सुमिरन करिकेशिवशङ्करको * औ गणपति के चरणमनाय ॥
देवी गैये आदि भवानी * भूले अक्षर देहु बताय ॥
कोट काङ्गड़े की देवी को * सुमिरौं बार बार सिरनाय ॥
जिह्वा बैठो मात शारदा * जाते काम सिद्धि हुइजाय ॥
धौलागिरि पर्वत की देवी * निशिदिन पूजौंचरणतुम्हार ॥
मोती लैके बीच बीच में * गुँधौं मौरसरी को हार ॥
सो पहिरावैं जगदम्बे को * होउ सहाय राजदरबार ॥
देवी लालना नैमिषार की * मुम्बा देवि मुम्बई क्यार ॥
विन्ध्यवासिनीबिन्ध्याचल की * हिरदै करै ज्ञान उजियार ॥
देश कामरू की कामक्षा * सुमिरन करत जाहि संसार ॥
मातु सङ्कठा हैं लखीमपुर * मन्दिर मातु शीतला क्यार ॥
सिंह सवारी देवी गरजैं * औ बैरी को करैं संहार ॥
दर्शन कीन्हे श्री देवी के * जरि २ पाप होत सब छार ॥
छोड़ि सुमिरनी अब आगे मैं * कहिहौं हालभुजरियनक्यार॥
लगो महीना जब सावनको * घर घर परे हिंडोला आय ॥
झूलन लागी तब चन्द्रावलि * सुखद मलारराग बहुगाय ॥
जब सुधिआई आल्हा ऊदनकी * औ सुधि आई बीरमलिखान॥
रोवन लागी डिडकारिन तब * सो हम कहँ लग करैं बखान॥

हाय लिखानकहाँमिलिहौतुम * को सुधि लिहै हमारी आय ॥
बाट हेरिहैं अब केहिकी हम * कहँ तुमगये छोड़ि म्वहिंआय॥
आल्हा ऊदन विरन हमारे * तुम बिन हमहिं सून्य संसार ॥
ऐसे याद करै चन्द्रावलि * नैनन बहै नीर की धार ॥
यक दिन माहिल उरई वाले * जो परिहार गुटैया टार ॥
सोचन लागे मन अपने माँ * खाली भूमि महोबे क्यार ॥
देउँ बढ़ावा पृथीराज को * महुबो नगर लेयँ लुटवाय ॥
सोचि समुझि माहिलराजाने * लिली घोड़ी लई सजाय ॥
कूदि बछेरी पर चढि बैठे * औ दिल्लो को पकरी राह ॥
पाँच दिना को धावा करिके * दिल्ली नगर पहूँचे जाय ॥
जहाँ कचहरी दिल्लो पतिकी * पहुँचे तहाँ माहिल परिहार ॥
उतरि बछेरी से भुँइ आये * घोड़ी थाम लई थमवार ॥
सोने सिंहासन पिरथी बैठे * ऊपर चौंर ढुरैं गजगाह ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * माहिल रहिगे माथ नवाय ॥
नजरि बदलिगइ पृथीराजको * ऊँची चौकी दई डराय ॥
आओ बैठो उरई वाले * अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले माहिल तब पिरथी से * तुम सुनि लेउ वीर चौहान ॥
कुशल छेम है मेरि उरई में * बैठे राज करौं महराज ॥
एक बात तुमसे कहियत हैं * सो तुम मानि लेउ महराज ॥
आल्हा छाये हैं कनवज में * सूनो परो महोबे गाँव ॥
ऊजर खेरो अब सिरसा है * कोई फेट बँधैया नाहिं ॥
महुबे लूटि लेउ चलिकै अब * ऐसो समय मिलन को नाहिं ॥
यह मन भाय गई पिरथी के * औ माहिल से लगे बतान ॥
भली बताई माहिल ठाकुर * हमरे मनमें गई समाय ॥

इतनी कहिके पृथीराज ने * तुरतै हुक्म दयो करवाय ॥
बजै नगाड़ा हमरे दल में * लश्कर तुरत होय तैयार ॥
डंका बाजो तब लश्कर में * लश्कर तुरत भयो तैयार ॥
आदि भयंकर हाथी साजो * तापर चढ़े बीर चौहान ॥
हाथी यकदन्ता सजवाओ * तापर चौंड़ा भयो सवार ॥
भौंरानन्द हाथी सजवायो * तापर धाँधू भयो सवार ॥
ताहर चढ़ि गये दलगंजनपर * सूरज सब्जा पर असवार ॥
सरदन मरदन दोनों भैया * अपने घोड़न भए सवार ॥
भूप टंकवै सजि आओ तब * भूरा मुगल भयो असवार ॥
चढ़ो पिथौरा सात लाख से * सारा खुरासान गुजरात ॥
सात दिना को धावा करिके * महुबे धुरो दबाओ आय ॥
फौजैं बाँधि दई पिरथी ने * औ महुबे को लओ घिराय ॥
कोई परिगौ खजुहागढ में * कोई लुहर गाँव में जाय ॥
कोई परिगौ मदन ताल पर * कोइ बैरागि ताल पर जाय ॥
कानमा खेरे पर धाँधू ने * अपनो तम्बू दओ तनाय ॥
तानिगौ तम्बू पृथीराज को * चन्दन बगिया के मैदान ॥
बारह कोसी चौगिर्दा में * झराडन रही लालरी छाय ॥
फाटक बन्दी भइ महुवे में * बाहर कोई आय नहिं जाय ॥
रैयति काँपै गढ़ महुवे की * कोई रँधे भात ना खाय ॥
सोचैं मल्हना अपने मन में * पिरथी लुटिहैं नगर महोब ॥
पाती भेजैं अब कैसे हम * आल्है खबरि सुनावै कौन ॥
काहि पठावैं हम कनवज को * को गाढ़े में आवै काम ॥
धीरज धरिके पुनि अपने मन * मल्हना आरति लई सम्हारि ॥
आधि राति केरे अमला में * औ मठिया में पहुँची जाय ॥

पूजन करिके जगदम्बा को * मल्हना दयो होम करवाय ॥
हार चढाय दयो लौंगन को * औ बिनती करि कही सुनाय ॥
होउ सहायक अब माता तुम * माता गढ़ कनवज में जाय ॥
सपनो देउ जाय ऊदन को * अब असने में आवैं काम ॥
महुवो घेरो पृथोराज ने * आवैं यहाँ उदयसिंह राय ॥
धरी भुजरियाँ महलन बिलखैं * आइके पवनी देयँ कराय ॥
देवी चलिभइ तब मठियासे * औ रिजिगिरसें पहुँची जाय ॥
सोवे ऊदन रतन पलँग पर * देवी स्वप्न दयो तब जाय ॥
तुम तो सोवो सतखंडा पर * महुबे चढ़ो पिथौरा राय ॥
धरी भुजरियाँ महलन बिलखैं * ऊदन तिन्हैं देउ सिखवाय ॥
धर्म राखि लेउ चन्देले को * भोरहि कूच देउ करवाय ॥
सुनतै सपना नैना खुलिगे * ऊदन उठे भरहरा खाय ॥
तुरतै ढेबा को बुलवाओ * औ असने को कहो हवाल ॥
बोले ढेबा तब ऊदन से * लाखनि रानै संग लिवाय ॥
करो बहाना कछु आल्हासे * जल्दी कूच देउ करवाय ॥
भोर होतही ढेबा ऊदनि * पहुँचे जहाँ कनोजी राय ॥
करी बन्दगी तब ऊदन ने * औ लाखनिसे करी सलाम ॥
जैसो महुवे होत सनीनो * ऐसो कहूँ होत है नाहिं ॥
करैं बहाना हम आल्हा से * लाखनि खेलनजात शिकार ॥
हमहूँ संग जात लाखनिके * तुमहूँ मानि लेउ यह बात ॥
बोले लाखनि तब ऊदन से * यह तुम कीन्हीं नीक विचार ॥
बहुत दिना से हम चाहत थे * की हम देखैं नगर महोब ॥
लाखनि ऊदनि ढेबा चलिभे * औ जैचन्द कचहरी जाय ॥
करी बन्दगी जब तीनो ने * पूछन लगे कनोजी राय ॥

कहँ को त्यारभए तीनौं तुम * सो तुम हमैं देउ बतलाय ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तब * लाखनि खेलनजात शिकार ॥
हमहूँ जैहैं संग लाखनिके * गाँजर खेलहिं जाय शिकार ॥
आज्ञा दैदेउ हँसी खुशी से * तब हँसि कही कनौजी राय ॥
मनहिं तुम्हारे जैसी आवै * तैसो करौ उदयसिंह राय ॥
संग लिवाय जाउलश्करकछु * बाहर बहुत रहेउ हुशियार ॥
आज्ञा पाय चले तीनौं तब * अपनी करन तयारी लाग ॥
आल्हा पूछो तब ऊदन से * साँची हमहिं देउ बतलाय ॥
कहाँ की त्यारी तुमनेकीन्हो * तब ऊदन ने दओ जवाब ॥
संग जात हैं हम लाखनि के * गाँजर खेलन हेतु शिकार ॥
आज्ञा दैदेउ म्वहिं दादा तुम * तब आल्हा ने कहो सुनाय ॥
खेलहु जाय भले शिकार तुम * पै नहिं जैओ नगर महोब ॥
हाथ जोरि बोल ऊदन तब * दादा वचन करौ परमान ॥
जियत न जैहौं हम महुवेको * कागा मरे हाड़ लै जाय ॥
असकहि करिसलामतीनौंतब * फाटक निकरि गये वा पार ॥
हुक्म कराय दओ लश्करमें * मारू डंका देउ बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्करमें * क्षत्री सबै भए हुशियार ॥
पहिले डंका में जिन बन्दी * दुसरे माँ बाँधिलीन्ह हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढैया हाथी चढ़िगे * बाँके घोड़न के असवार ॥
कोइनालकिनकोइपालकिन * कोइ गजरथ पर भए सवार ॥
देवै ठाढ़ी थी द्वारे पर * सो ऊदन से पूछन लागि ॥
कहाँ की त्यारी तुमनेकीन्ही * तब ऊदन ने दओ जबाब ॥
संग जात हैं हम लाखनिके * गाँजर खेलहिं जाय शिकार ॥

इतनी सुनिके देवै बोली * तुम ना जैश्रो नगर महोब ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तब * हम ना जैहैं नगर महोब ॥
वही तो महुबे चन्देले को * भरि भादों में दश्रो निकारि ॥
चरण लागि के तब माताके * श्रो चलि भये उदैसिंह राय ॥
सुनमा खिरकीतर ठाढ़ी थी * ऊदन तहाँ पहूँचे जाय ॥
चरणलागि के रनिसुनमाँके * सो माथे से लए लगाय ॥
सुनमाँ पूछो तब ऊदन से * देवर कहाँ को भए तयार ॥
हाथ जोरिके ऊदन बोले * भौजी सुनौ हमारी बात ॥
चर्चा करिश्रौ ना दादा से * हमरो जियत मरन हुइजाय ॥
सात लाख से चढ़ो पिथौरा * महुबो नगर लियो घिरवाय ॥
पवनी खोटो जो हुइ जैहैं * तौ जग हुइहै हँसी हमार ॥
करी तयारी हम महुबे की * लाखनि ढेबा संग लिवाय ॥
यह सुनि बोली सुनमा रानी * जल्दी जाउ उदैसिंह राय ॥
धन्य धन्य देवर ऊदन तुम * तुमबिन कौन करै असकाम ॥
चरण लागिके ऊदन चलिभै * श्रो लश्कर में पहुँचे जाय ॥
ढेबा आगम को जानत थो * जोगिन गुदरी लई सिलाय ॥
बहुत सी गेरू तब मँगवाई * सो छकड़न पर लई लदाय ॥
कूच कराय दश्रो लश्करको * श्रो महुबे की पकरी राह ॥
तीनि दिनाको धावा करिके * नदि बितवापर पहुँचे जाय ॥
गेरु घोरवाई ऊदन ने * श्रो सब कपड़ा लिये रँगाय ॥
जोगी बनाश्रोसब लश्करको * नदिया होन उतारा लाग ॥
पार उतरि गये नदि बितवैके * भावर डेरा दए डराय ॥
फेटैं छुटि गइँ रजपूतन की * हाथिन हौदा घरे उतारि ॥
जीन उतारि घरे घोड़न के * चत्री खेलन लगे शिकार ॥

लाखनि ऊदन ढेबा सैयद * अपने अङ्ग विभूति रमाय ॥
मुँदरी पहिरि लई जोगिनकी * चारौ बाजा लए उठाय ॥
डमरू लीन्हीं लाखनि राना * बँसुरी लई उदैसिंह राय ॥
लओ इकतारा मीरा सैयद * ढेबा खँजरी लई उठाय ॥
बोले ऊदन नर ढेबा से * दादा सुनौ हमारी बात ॥
मलिखे बिछुरे बहुत दिनासे * देखत चले बीर मलिखान ॥
पहिले चलिहैं हम सिरसाको * पाछे चलिहैं नगर महोब ॥
इतनी कहिके चारो जोगी * गढ़ सिरसा ढिग पहुँचे जाय ॥
देखो फाटक जब सिरसा को * ऊदन सोचि सोचि रहिजाय ॥
ऊजर खेरो यहि डारो है * उड़िउड़ि काग बसेरा लेयँ ॥
खड़ा बहेलिया दरवाजे पर * सो जोगिनसे लगो बतान ॥
बाबा आए यहँ काहे तुम * यहँ कोइ भीख दिवैया नाहिं॥
जो मालिक थो सिरसा वारो * मारो गओ बीर मलिखान ॥
सुनतै ऊदन रोवन लागे * ढेबा छाँड़ि दई डिडकार ॥
तबहि बहेलिया पूछन लागो * बाबा हाल देउ बतलाय ॥
नाम सुनतखन तुममलिखेको* काहे रोय उठे ततकाल ॥
क्या कछु नाता है मलिखेसे * या वे भैया लगैं तुम्हार ॥
यहसुनि ज्वाब दियो ऊदनने * वे गुरु भाई लगत हमार ॥
एक गुरू के हम चेला हैं * ताते आयो मोह अपार ॥
अब बतलाय देउ हमको यह * कैसे मरे बीर मलिखान ॥
यह सुनि बोला तुरतबहेलिया * बाबा सुनो हाल धरिध्यान ॥
सात लाखसे चढ़ो पिथौरा * औ सिरसाको लओ घिराय ॥
सुर्चा फेरो तब मलिखे ने * दिल्लिहि लौटि गये चौहान ॥
देन बधाई माहिल आये * महा हाल दओ बतलाय ॥

माहिल पहुँचेफिरिदिल्ली में * औ सब भेद दयो बतलाय ॥
पाँव पद्म है नर मलिखे के * तामें काल बीर मलिखान ॥
इतनी सुनतै पृथीराज ने * फिरिसे लश्कर लयो सजाय ॥
ऊभे खुदवावे धूरे पर * तिन में साँगैं दई गड़ाय ॥
घास लगाय दई ऊपर से * पटपर भूमि दई करवाय ॥
आधे दाहक खालो राखे * तहँ पर खड़े पिथौरा राय ॥
खन्दक पार खड़े ताहर थे * मारत आये बीर मलिखान ॥
करी बन्दगी जब पिरथी को * तब पिरथी ने कही सुनाय ॥
तुम्हरी वरनी है ताहर से * सन्मुहें खेलौ जूझ अघाय ॥
जानी मलिखे यह धरती है * आगे घोड़ी दई बढ़ाय ॥
फाँदिके घोड़ी गई पटे पर * जातै भीतर गई समाय ॥
पद्म फाटिगो तब तरवाको * भारी लगो साँगि को घाव ॥
घायल हुइगइ घोड़ी कबुतरी * मूर्छित भये बीर मलिखान ॥
तड़पी घोड़ी तब भीतर से * औ ऊपर को लाइ निकारि ॥
जूझे सुलिखे पहिले ही थे * ब्रह्मा माता तजे परान ॥
रानी संगै सत्ती हुइ गइ * लै आल्हा ऊदन को नाम ॥
रैयति सबही गढ़ सिरसाकी * सोऊ जहँ तहँ गई बराय ॥
ऐसो धोखा दै पिरथी ने * मारे आय बीर मलिखान ॥
यह सुनि ऊदन फिर पूछातब * सत को चौरा देउ बताय ॥
ठौर बताई तब ऊदनको * सुनतै तहाँ पहूँचे जाय ॥
जहँ पंचपेड़ा थो मलिखे को * चौरा देखि उदैसिंह राय ॥
रोय के ऊदन बोलन लागे * भाई मेरे बीर मलिखान ॥
खबरि तुम्हारो हम नहिं पाई * नहिं हम लेते तुमहिं बचाय ॥
हमसे बिछुरि गये भाई तुम * अब कब हुइहै फेरि मिलाप ॥

बोली आभा तब सरमें से * अबना मिलिहैं भाइ तुम्हार ॥
रोये तुम्हरे कछु ना हुइहै * अब महुवे को करौ पयान ॥
पिरथी घेरो नगर महोबे * राखौ धर्म चन्देले क्यार ॥
बोले ऊदन तब आभा से * हम ना जैहैं नगर महोब ॥
थोरिहि दूर बसत चन्देले * उनना तुम्हरी करी सहाय ॥
पिरथी लूटैं नगर महोबा * हमना धरिहैं पाँव अगार ॥
बोली आभा गजमोतिन को * देवर सुनौ उदैसिंह राय ॥
काहे आये अब सिरसा में * नाहक राख बटोरी आय ॥
बड़ो भरोसा म्रहिं तुम्हरो थो * तब नहिं आये लहुरवा भाय ॥
अब तुम जल्दजाउ महुबे को * उनकी पवनी देउ कराय ॥
जो कहुँ पिरथी महुबालुटिहैं * तुमको हँसिहैं सकल जहान ॥
जो ना जैहो तुम महुबे को * दीहों शाप भस्म हुइ जाउ ॥
पवनी खोटी जो कहुँ हुइहैं * तुम्हरे जीवन को धिकार ॥
यह सुनि तुरतै जोगी चलिभे * औ महुबे में पहुँचे जाय ॥
अलख जगाई जब फाटक पर * तब दरबानी कही सुनाय ॥
फाटक बन्दी है हियनापर * भिक्षा यहाँ मिलनको नाहिं ॥
बोले ऊदन दरबानी से * फाटक जल्द देउ खुलवाय ॥
सुनो नाम हमने काशी में * महुबे बसत रजा परिमाल ॥
पारस पूजा है उनके घर * लोहा छुवत सोन हुइ जात ॥
माँगिहैं भिक्षा हम रानी से * जासो कछू दिना कटिजायँ ॥
इतनी कहिके चारौ जोगिन * अपने बाजा दए बजाय ॥
डारि मोहनी दइ जोगिन ने * फाटक तुरत लए खुलवाय ॥
गावत गावत जोगी चलिभये * औ पनिघटपर पहुँचे जाय ॥
रूप देखिके उन जोगिन को * रैयति मोहि मोहि रहिजाय ॥

काहू दीन्हें शाल दुशाला * मोहन माला दइ पहिराय ॥
काहू दीन्हें मूँगा मोती * छल्ला मुँदरी दई इनाम ॥
सब पनिहारी मोहित ह्वैगइँ * पानी भरिबो गईं भुलाय ॥
नैना बाँदी राजमहल की * ताको डेढ़ पहर ह्वै जाय ॥
सोचत चलिभइ सो पनिघटसे * औ महलनमें पहुँची जाय ॥
गुस्सा देखो जब मल्हना को * तब बाँदी ने कही सुनाय ॥
चारि जोगिया ऐसे आये * जिनके रूप न बरने जायँ ॥
छोटो जोगी अस नाचति है * जैसे वनमें नचै पुछारि ॥
हुक्म तुम्हारो जो मैं पाऊँ * तो जोगिनको लाउँ बुलाय ॥
सुनतै मल्हना डपटन लागी * औ बाँदी से कही सुनाय ॥
टरिजा बाँदी मेरे आगे से * अब ना मोको नाच सोहाय ॥
हाथ जोरि तब बाँदी बोली * रानी लागौं पावँ तुम्हार ॥
बड़े तेजधारी जोगी हैं * तुम्हरे काम सिद्धि ह्वैजायँ ॥
हुक्म दै दओ तब मल्हनाने * बाँदी तुरत पहूँची जाय ॥
चारौ जोगी जहँ गावत थे * नैना बाँदी कही सुनाय ॥
तुमहि बुलाओ है रानी ने * जोगिओ चलौ हमारे साथ ॥
आये जोगी तब ड्योढ़ी में * देखो महल कनौजी राय ॥
लाखनिराना बहुत खुशी भै * शोभा देखि देखि रहिजायँ ॥
खंभालागे रतन जटित तहँ * छौनी मोरपंख की लागि ॥
सोने कँगूँरा ऊपर चमकै * मोतिन बन्दनवारि सुहाय ॥
कटीखिरिकियाँ मलयागिरकी * तिनसों आवै मन्द बयारि ॥
कहँ लग बरनै कोउमहलनकी * शोभा कछू कही ना जाय ॥
सूरति देखी बैरागिन की * मल्हना बोली तुरत रिसाय ॥
जान से बाँदी तोहिं मारिहौं * तू छलियनको लाइ लिवाय ॥

यहतो लड़िकानहिं जोगिनके * ये दिल्ली के राजकुमार ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनि ने * धर्मको माता लगौ हमारि ॥
हैं रहवैया बंगाले के * है गोरखपुर कुटी हमारि ॥
हैं हम लड़िका वैरागिन के * माता भरम देउ बिसराय ॥
रूप बिधाता ने दीन्हों है * ताको कहाँ छिपावैं जाय ॥
पूछन लागी फिरि रानी तब * साँची हमहिं देउ बतलाय ॥
ऐसी गुदरी कहँ पाई तुम * जिनमें जड़े जवाहर लाल ॥
कुण्डलझलकतहैं मोतिन के * हाथन कड़ा सोबरन क्यार ॥
यह सुनि ज्वाब दश्रो ऊदनने * माता सुनौ हमारो बात ॥
माँगन आये हम कनवजमें * पहुँचे जहाँ राजदरबार ॥
बहुत खुशी हुइ राजा जैचन्द * जोगिन गुदरी दइ बनवाय ॥
रानी तिलका रतीभान की * सोने कड़ा दए डरवाय ॥
तहँतेचलिके रिजगिरि आये * औ तहँ करी तमाशा आय ॥
आल्हा ऊदन दुइ भैया हैं * ऊदन कुण्डल दए पिन्हाय ॥
सवा लाखकी चीरा कलँगी * सोऊ ऊदन दई इनाम ॥
सुनौ नाम जबहीं ऊदनको * मल्हना रोय उठी तत्काल ॥
होउ जो ऊदन आसमानपर * हम पर फाटि परौ अरराय ॥
कहँ मैं पाऊँ अब ऊदनको * जो गाढ़े में आवै काम ॥
पूछन लागे तब ऊदन तहँ * ऊदन लागत कौन तुम्हार ॥
बोली मल्हना तब ऊदन से * ऊदन बेटा लगत हमार ॥
जोगिन जैओजो कनवजको * तौ ऊदन से कहिऔ जाय ॥
हमने तुमको यहँ पालोथो * ऊदन याहि दिना के काम ॥
असनो परिहै जब काहूदिन * तब गाढ़े में ऐहैं काम ॥
सो तुम छाय रहे कनवजमें * औ रिजगिरिमें रहे रिसाय ॥

औरो कहिओ तुम ऊदन से * जादिन कुवाँ बिआहो आय ॥
प्राण निछावर तुमने कीन्हे * सो क्या भूलि गये वह बात ॥
सो तुम सोवत सुखनिदिया में * हम पर बिपति परी अब आय ॥
यह सुनि पूछो तब ऊदनने * माता हमहिं देउ बतलाय ॥
कौन बिपति तुम पर आई है * जो तुम रोय रोय रहिजाउ ॥
पारस पूजा है तुम्हरे घर * लोहा छुवत सोन ह्वइ जाय ॥
तौ तुम दुखिया कवन बातको * साँचो बात देउ बतलाय ॥
यहसुनिमल्हना बोलन लागी * जोगिउ सुनौ हमारी बात ॥
चढ़ो पिथौरा दिल्ली वारो * महुबो नगर लिओ घिरवाय ॥
धरी भुजरियाँ रङ्गमहल में * सागर कौन देय सिरवाय ॥
तौ लौं आई तहँ चन्द्रावलि * देखो रूप जोगियन क्यार ॥
बोलन लागो रनि मल्हना से * माता सुनौ हमारो बात ॥
छोटो जोगी अस लागति है * मानहुँ मेरे उदैसिंह राय ॥
रोयके ज्वाब दियो मल्हना तब * बेटी सुनो हमारी बात ॥
ऊदन जोगी काहे ह्वइहैं * जिनकी बेड़ि बहै तरवारि ॥
करो इशारा तब लाखनि ने * ऊदन नाम देउ बतलाय ॥
सैनन ज्वाब दओ ऊदन ने * अबहीं नाहिं बतै हैं नाम ॥
बोले ऊदन फिरि मल्हना से * तुम्हरी पचनी दिहैं कराय ॥
सुनतै मल्हना बोलन लागी * जुगिओ सुनौ बात धरि ध्यान ॥
रण में लड़िबो क्या जानो तुम * कैसे पचनी दिहौ कराय ॥
कौन दुसरिहा है ऊदनि बिन * जो पिरथी से माढ़ै रारि ॥
बोले ऊदन रनि मल्हना से * माता बचन करो परमान ॥
हैं हम जोगी बंगाले के * मारैं राज भंग ह्वइ जाय ॥
बोली चन्द्रावलि जोगी से * बाबा सुनो हमारी बात ॥

होय आसरो तब हमरे मन * जो तुम गंगा लेउ उठाय ॥
गंगा कीन्ही तब ऊदन ने * माहिल आय गये ततकाल ॥
देखि हाल चुप माहिल लौटे * पहुँचो पृथीराज पै जाय ॥
चलिभै जोगी रंगमहल से * औ डेरन पर पहुँचे जाय ॥
बोले माहिल पृथीराज से * अब तुम कूच जाउ करवाय ॥
चुगुली करिके चन्देले से * आल्है तुरत दओ निकराय ॥
सूनो महुबो थो इतने दिन * तब काहे ना लओ लुटाय ॥
आये जोगी बंगाले के * माँगो रंगमहल में जाय ॥
गंगा कीन्ही उन मल्हना से * पवनी तुम्हरो दिहैं कराय ॥
बड़े तेजधारी जोगी हैं * जादू पढ़े बीर बैताल ॥
खेदिके मरिहैं वे दिल्ली लौं * ताते कूच जाउ करवाय ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब * माहिल सीख देउ बतलाय ॥
कैसे लूटैं अब महुबो हम * माहिल सुनतै दओ जवाब ॥
मारि भगावो जो जोगिनको * महुबो तुरत लेउ लुटवाय ॥
इतनी सुनतै पृथीराज ने * चौंड़ा धाँधुहि लओ बुलाय ॥
अबहीं जावो तुम भावरको * जोगिन कूच देउ करवाय ॥
आज्ञा सुनतै दोनौं चलिभै * औ जोगिन तर पहुँचे जाय ॥
बोलो चौंड़ा उन जोगिन से * बाबा सुनो हमारी बात ॥
कहाँसे आय परे बाबा तुम * यहँते कूच जाउ करवाय ॥
चढ़ो पिथौरा दिल्ली वारो * महुबो नगर लओ घिरवाय ॥
कहा हमारी बाबा मानो * बनसे निकरि जाउ महराज ॥
ऊदन ज्वाब दियो चौंड़ा को * ब्राह्मण सुनो हमारी बात ॥
कूच करैहैं हम भादों में * औ सावन लौं करौं मुकाम ॥
देखि सनीनो हम महुबे की * तब हम कूच दिहैं करवाय ॥

यही हुक्म है गुरु हमरे को * यह सुनि कही चौंड़ियाराय ॥
नवयें निद चढ़िहैं पिरथी यहँ * सिगरो महुबो लिहैं लुटाय ॥
आठ कोसलौं हल्ला हुइ है * तब तुम गर्द वर्द हुइ जाउ ॥
ताते मानो कही हमारी * अपनो कूच जाउ करवाय ॥
बोले ऊदन तब चौंड़ा से * ब्राह्मण अकिलि गई तुम्हार ॥
देखि सनीनों गढ़ महुबे की * तब हम जैहैं कूच कराय ॥
जल्दी चले जाउ समुहें से * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनतै दोनौं लौटे * देखी फौज जोगियन क्यार ॥
शंका मानी तब दोनौं ने * पहुंचे पृथीराज ते आय ॥
हाल सुनाओ बैरागिन को * वे जोगी हैं बुरी बलाय ॥
आठ कोस लौं लश्कर डारो * तंबुअन रही लालरी छाय ॥
जोगिन रहन देउ जंगल में * अपनो लीजै काम बनाय ॥
नौदिन हुइगौ महुबो घेरे * पहुँचो दिवस सनीनो आय ॥
ठाढ़ी मल्हना सतखंडा पर * हेरै बाट जोगियन क्यार ॥
डेढ़ पहर हुइगौ अंटा पर * रोवन लगी मल्हनदे रानि ॥
पूछन लागो तब चन्द्रावलि * काहे रोय रोय रहि जाय ॥
बोली मल्हना तब बेटी से * ना कहुँजोगी परत दिखाय ॥
हमसे जोगी गंगा करिगै * अब को पवनी देय कराय ॥
कही हमारी बेटी मानौ * कूप भुजरियाँ देउ सिराय ॥
पवनी करलेउ तुम कुअँटापर * को सागर पर जाय लिवाय ॥
यह सुनि बेटी रोवन लागी * औ माता से लगी बतान ॥
जैहैं भुजरियाँ ना सागर पर * जगमें हुइहै हँसी हमार ॥
उतरी मल्हना सतखंडा से * औ महलन में पहुँचो आय ॥
तौ लौं आए माहिल राजा * सो मल्हना से लगे बतान ॥

काहे बहिनी महलन रोवौ * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोली मल्हना तब माहिल से * हमसे कछु कही ना जाय ॥
बिना मर्द को यह महुवो है * को यह पवनी देय कराय ॥
ऊदन होते जो यहि दिन में * तौ बनि जातो काम हमार ॥
बोले माहिल तब मल्हना से * बहिनी सुनौ हमारी बात ॥
हार नौलखा पारस पूजा * माँगत उड़न बछेड़ा पाँच ॥
बैठक माँगत खजुहागढ को * सिगरो शहरग्वालियरक्यार ॥
डोला माँगत चन्द्रावलि को * इतनो डंड देउ पहुँचाय ॥
बोली मल्हना तब माहिल से * भैया सुनो हमारी बात ॥
डोला देहौं ना बेटी को * अपनो पेट मारि मरि जाउँ ॥
बोली बेटी तब माता से * चलि ब्रह्मा से कहौ सुनाय ॥
माहिल चलिभए रंग महलसे * ना कछु चलो चुगलको दावँ ॥
चलि भइ मल्हना रंगमहल से * चंद्रावलि को संग लिवाय ॥
समुहें आवत मल्हनै देखो * ब्रह्मा उठे भरहरा खाय ॥
चरण लागिकै ब्रह्मा बोले * आई यहाँ कौन से काज ॥
बोली मल्हना ब्रह्मानन्द से * बहिनी की पवनी देउ कराय ॥
धरीभुजरियाँ महलन चिलखैं * सागर माहिं देउ सिरवाय ॥
तुरतै ज्वाब दियो ब्रह्माने * हम नहिं शीश कटैहैं जाय ॥
तुमहिं आसरा है जोगिन को * वेई पवनी दिहैं कराय ॥
यह सुनि रोई मल्हना रानी * औ चन्द्रावलि रोवन लागि ॥
बोले अभई तब मल्हना ते * हम यह पवनी दिहैं कराय ॥
त्यारी करौ जाय चलिबे की * यह सुनिमाहिलकहीसुनाय ॥
जन्मके बैरी महुबे वारे * तिनकी ओर लड़नतुमजात ॥
अक्किलितुम्हरी क्यों खोई है * बेटा मानो कही हमारि ॥

घरमें बैठि रहो चुपके हुइ * इनकी ओर लड़न ना जाउ ॥
इतनी सुनिके अभई बोले * दादा सुनौ हमारो बात ॥
हमरे लेखे जस पिरथी हैं * तैसेइ हमहिं रजा परिमाल ॥
पृथोराज जानी अपने मन * कोई मर्द महोबे नाहिं ॥
बात कहि चुके हम मल्हनासे * ताते पवनी दिहैं कराय ॥
अस कहि अभई चलिठाढ़े भे * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
हुक्म दैदओ तब लश्कर में * अबहीं डंका देउ बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
मारू डंका के बाजत खन * लश्कर तुरत भओ तैयार ॥
बेटा रंजित चन्देले को * सोऊ संग भओ तैयार ॥
घोड़ी हिरौंजिनपर रंजितचढ़ि * अभई सब्जा पर असवार ॥
खबरि कराय दई महलन में * डोला सबै होयँ तैयार ॥
सजिगै डोला सबसखियनको * औ सागर को भए तयार ॥
सब्ज पालकी सब्ज नालकी * उनपर सब्जै परे उहार ॥
सब्जै डंडा मलयागिरि को * सब्जै बाँस पालकिन क्यार ॥
सब्जै झालरि हैं रेशम की * वर्दी सब्ज कहारन क्यार ॥
सब्ज घँघरा सब्जै चूनरि * सब्जै चादरि परैं दिखाय ॥
सब्जै रस्सा रेशम वाले * सो झूलन को लए धराय ॥
सब्ज पकरिया को पेड़ो है * सब्जहि डोला परैं दिखाय ॥
सब्ज भुजरियनको जैसो रंग * त्यों सब सब्ज रंग दिखराय ॥
सब्जै काई है सागर की * सब्जै पात कपालिनिक्यार ॥
करो यत्न जो रानि मल्हनाने * सोऊ सुनिलेउ कान लगाय ॥
पुरिया यक यक लै महुरे की * सब सखियन को दइ पकराय ॥
छुरिया यक यक जहरबुताई * सो सखियन को दई थम्हाय ॥

यक यक मटुका बारूदन को * सब सखियन पै दश्रो धराय ॥
पत्थर चकमक लै मल्हना ने * सब सखियन काँ दश्रो गहाय ॥
असना परै आय तुमपर जब * तब तुम जहरखाय मरिजाउ ॥
जहर खान जो तुम पावौनहिं * तौ तुम छुरी मारि मरिजाउ ॥
जियत न जैश्रो तुम दिल्लीको * डोलन आगी लिश्रौलगाय ॥
लईं भुजरियाँ अपनी अपनी * सब डोलन में बैठीं जाय ॥
डोला सजिगे सब चौदह से * डोला बीच चन्द्रावलि क्यार ॥
आगे डोला रानि मल्हना को * बारह रानि चन्देले क्यार ॥
डोला आये सब फाटक पर * रंजित अभई भये अगार ॥
चलतै छींक भई जबहीं तहँ * तब मल्हना ने कही सुनाय ॥
सगुन बिगरिगो है फाटकपर * तुमना धरौ अगारी पाँव ॥
बोले अभई तब मल्हना से * मनसे भरम देउ बिसराय ॥
सगुन मनावत नाहिं चत्री वह * जो रण चढ़िके लोह चबाय ॥
सगुन बिचारत बनिये बाट्ट * जो कछु लादि बनिजकोजात ॥
सगुन चाहिये उन लोगनको * जो धरि मौर बिश्राहन जात॥
दुबिधा छाँड़ि देउ जियरा को * सब बनि जैहैं काम तुम्हार ॥
चलिभे डोला सब आगे को * माहिल पृथीराज पै जाय ॥
हाल सुनाश्रो सब डोलन को * औ पिरथी से कही सुनाय ॥
अकिले रंजितहैं डोलन संग * चलिके डोला लेउ छिनाय ॥
बोले पृथीराज माहिल से * तुम चौंड़ा से कहौ सुनाय ॥
माहिल कही जाय चौंड़ा से * है यह हुक्म पिथौरा क्यार ॥
डोला छीन लेउ अबहीं सब * यह सुनि चला चौंड़ियाराय ॥
हाथी यक दंता सजवाश्रो * तापर तुरतै भश्रो सवार ॥
फौज सजाय लई जल्दी से * अपनो कूच दश्रो करवाय ॥

असली बड़ा आल्हखण्ड



भार्गव भूषण प्रेस, काशी।

जायके पहुँचिगश्रोसागर पर * श्रौ अभई से कही सुनाय ॥
कहाँ कि त्यारी तुमने कीन्हीं * कहँ यह डोला चले लिवाय ॥
बोले अभई तब चौंड़ा से * ब्राह्मण सुनो हमारी बात ॥
आजु सनीनोकी पर्बी है * डोला जात महोबे क्यार ॥
रानो मल्हना श्रौ चन्द्रावलि * सब सखियनको संगलिवाय ॥
धरी भुजरियाँ थीं महलनमें * सो हम सागर दिहैं सिराय ॥
पवनी भारी है महुबे की * सो हम पवनी दिहैं कराय ॥
इतनी करि देउ तुम पहले अब * अभई सुनौ हमारी बात ॥
डोला धरि देउ चन्द्रावलिको * तब तुम धरौ अगारू पाँव ॥
गुस्सा हुइके अभई बोले * तुम नहिं बोलत बात सम्हारि ॥
या बानीको फिरिजो कहिहौ * मुखमें ठाँसि दिहौं तरवार ॥
देत चुनौती हैं हम तुमको * हमसे डोला लेउ छिनाय ॥
इतनी सुनतै चौंड़ा जरिगो * गुस्सा गई देहमें छाय ॥
हुक्म कराय दश्रो लश्करमें * सिगरे डोला लेउ छिनाय ॥
आगे बढ़िके तब क्षत्रिन ने * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
भुरमुट हुइगै दोनौं दल में * खटखट चलन लगी तलवारि ॥
पैदल के संग पैदल भिरगै * श्रौ असवारन से असवार ॥
हौदन के संग हौदा मिलिगे * हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
चारि घरी भरिचली सिरोही * श्रौ बहि चली रक्तकी धार ॥
बढ़े सिपाही महुबे वाले * रणमें खूब करी तलवारि ॥
भजे सिपाही चौंड़ा वाले * कायर लै लै भगे परान ॥
भजत सिपाही चौंड़ा देखे * अपनो हाथी दश्रो बढाय ॥
यक ललकार दई अभई को * श्रौ फिरि दीन्हौं गुर्ज चलाय॥
घोड़ा हटिगौ तब अभई को * नीचे गिरो गुर्ज अरराय ॥

एँड़ लगाई तब घोड़ा के * औ मस्तक पर बाजी टाप ॥
करो जड़ाका जब हौदा पर * सोने कलशा दये गिराय ॥
मुर्चा हटिगौ तब चौंड़ा को * चौंड़ा हाथी गओ भगाय ॥
सुनो हाल जब पृथीराज ने * मुर्चा हटो चौंड़िया क्यार ॥
डोला पहुँचि गयो सागरपर * सिगरे डोला लेउ छिनाय ॥
बोले पृथीराज सूरज से * बेटा जल्द होउ तैयार ॥
जल्दी चले जाउ सागर पर * सिगरे डोला लेउ छिनाय ॥
डोला लावो चन्द्रावलि को * हमरी नजर गुजारौ आय ॥
इतनी सुनतै सूरज चलि भै * लश्कर तीनि लाख सजवाय ॥
कूच कराय दओ लश्कर को * औ सागर पर पहुँचे जाय ॥
संगै पहुँचे टंकराव तब * सूरज बदि के कही सुनाय ॥
धरिदेउ डोला तुम अबहें यहँ * तब अभई ने दओ जवाब ॥
समुहें देखै जो डोलन के * ताके नैन लेउँ निकराय ॥
इतनी सुनतै सूरज जरिगे * औ यह हुक्म दओ फरमाय ॥
लैलेउ डोला चन्द्रावलि को * सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥
इतनी सुनतै बढ़े सिपाही * अपनी खैंचि खैंचि तलवार ॥
झुकै सिपाही महुबे वाले * खट खट चलनलगी तरवारि ॥
आये सूरज तब मुर्चा पर * औ रंजित से कही सुनाय ॥
हमरी तुमरी अब बरनी है * समुहें खेलौ जूझ अघाय ॥
इतनी कहिके सूरजमल ने * अपनी खैंचि लई तरवारि ॥
तीनिसिरोही गहिगहि मारी * रंजित लीन्हीं चोट बचाय ॥
खैंचि शिरोही तब रंजितने * सूरजमल पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाई सूरजमल ने * तापर भओ जड़ाका जाय ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ावाली * सूरज गिरे भूमि मुरझाय ॥

देखि हकीकत टंकराज ने * अपनो हाथी दयो बढ़ाय ॥
हमरी तुमरी अब बरनो है * रंजित खबरदार हुइ जाउ ॥
साँगि उठाई टंकराज ने * तौ लौं अभई पहुँचे आय ॥
हमरे सन्मुख लड़ौ आय तुम * यह सुनि टंकराज समुझाय ॥
साँग चलाय दई अभई पर * अभई लीन्हीं चोट बचाय ॥
भाला लैके तब अभई ने * टंकराज पर दयो चलाय ॥
घुसिगो भाला वह तोंदी में * मूर्छित भये टंक सरदार ॥
टङ्क जूझिगये रणखेतन में * लश्कर रेन बेन हुइ जाय ॥
यक हरकारा दौरति आयो * औ पिरथी से कही सुनाय ॥
विकट लड़ाई भइ सागरपर * सूरज जुझि गये मैदान ॥
टङ्कराज जूझे सागर पर * तिनकी लाश लेउ उठवाय ॥
सुनि घबराय गये पिरथीतब * सरदन मरदन लए बुलाय ॥
ताहर बेटा को बुलवायो * औ यह हुक्म दयो फरमाय ॥
फौज सजाय लई जल्दी से * औ सागर पर पहुँचो जाय ॥
परी लाश तहँ टङ्क सूर्यकी * सो उठवाय दई पहुँचाय ॥
हुक्म पायके तीनों चलिभे * औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥
फौज सजाय लेउ जल्दी से * औ घोड़न पर भये सवार ॥
कूच कराय दयो लश्करको * औ सागर पर पहुँचे जाय ॥
लाशैं उठवाईं दोनों की * सो बगिया में दई पठाय ॥
घोड़ा बढ़ाय दयो आगेको * समुहें जाय दई ललकार ॥
कौने मारो है सूरज को * सो समुहें हुइ देइ जबाब ॥
सुनते अभई आगे बढ़िगे * औ ताहर को दयो जवाब ॥
हमने मारो है सूरज को * क्यों यहँ लाये फौज चढ़ाय ॥
करन सनीनो हम आये यहँ * तुम क्यों रारि बढ़ाई आय ॥

बोले ताहर तब अभई से * अभई सुनो हमारी बात ॥
डोला धरि देउ चन्द्रावलिको * चुप्पै लौटि महोबे जाउ ॥
तापर ज्वाब दओ अभई ने * क्यों कम्बख्ती लगी तुम्हार ॥
नाम जो लेहौ तुम डोलाको * मुखमें ठाँसि दिहैं तलवार ॥
इतनी सुनतै ताहर जरिगये * नैना अग्नि ज्वाल हुइ जाय ॥
हुक्म दै दिओ तब लश्करमें * सिगरे डोला लेहु छिनाय ॥
खैंचि शिरोही लइ चात्रिनने * तुरतै चलन लगी तलवार ॥
दोनौं फौजैं यक मिल हुइगइँ * सबके मारु मारु रट लागि ॥
लाल बरन सब चत्री हुइगये * लश्कर रही लालरी छाय ॥
घोड़ा बढ़ाओ तब ताहर ने * औ रंजित से कही सुनाय ॥
धरि देउ डोला चन्द्रावलि को * जो जीतै सो लेइ उठाय ॥
सुनतै गुस्सा हुइ रंजित ने * अपनो खैंचि लई तलवार ॥
तीनिशिरोही गहिगहि मारी * ताहर दीनी ढाल अड़ाय ॥
टूटि शिरोही गइ रंजित की * तब ताहर ने कही सुनाय ॥
खबरदार रहियो घोड़ा पर * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
खैंचि शिरोही लइ ताहर ने * औ रंजित पर दई चलाय ॥
रंजित गिरिगये तब खेतनमें * अभई खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका तब ताहर पर * ताहर दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
धोखा दैके तब ताहर ने * तुरतै मारि दई तलवार ॥
अभई गिरिगै तब घोड़ा से * ताहर लीन्ही शीश उतार ॥
रोई मल्हना तब डोला में * चन्द्रावलि से कहो सुनाय ॥
याहो दिनको हम हटको थो * तुम नहिं मानी कही हमार ॥
अभई रंजित खेत जूझिगे * अबको रखिहैं धर्म हमार ॥
बोली आभा तब दोनों की * औ मल्हना से कही पुकारि ॥

जो लौं ब्रह्मा यहँ लग ऐहैं * तौ लौं रुण्ड करैं तलवारि ॥
जगे कबंध तहाँ दोनों के * रण में कठिन करैं तलवारि ॥
विकट मारु रुण्डन कीन्हीं तब * लश्कर भगो पिथौरा क्यार॥
यक हरकारा गो सागर से * ब्रह्मानन्द पै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी तब ब्रह्मा को * रणको दीन्हों हाल सुनाय ॥
रंजित अभई दोनौं जूझे * तिनकी लाश लेउ उठवाय ॥
सुनो हाल जब यह सागरको * ब्रह्मा उठे भरहरा खाय ॥

ब्रह्मानन्द संग्राम

सुमिरनकरिकेगणनायकको * लैके रामचन्द्र को नाम ॥
गुरुवर चरण हृदयधारणकरि * लिखिहौं ब्रह्मानन्द संग्राम ॥
सुनी खबरिया जब सागरकी * सोचै ब्रह्मानन्द मनमाहिं ॥
अब हम जैहें चढ़ि सागर पर * करिहैं घोर युद्ध रण माहिं ॥
कियोमुनासिबनहिंपिरथीयह * की यहँ रारि मचाई आय ॥
आजु अखाड़े में बरनी है * मरिहौं खेदि पिथौरा राय ॥
यहमनसमुझिसोचिब्रह्मानन्द * अपनी फौज लई सजवाय ॥
हरनागर घोड़ा मँगवाओ * तुरतै ताहि लओ सजवाय ॥
कूदि सवार भयो घोड़ा पर * लश्कर कूच दओ करवाय ॥
बोले ताहर तब भूरा ते * लील को झंडा देहु फिराय ॥
लैके झंडा तब भूरा से * उन रुण्डन पर दओ फिराय ॥
जहँपर डोलारनि मल्हनाको * तहँ पर रुण्ड गिरे भहराय ॥
तौ लौं आय गये ब्रह्मानँद * दोनों रुण्ड लए उठवाय ॥
सो पठवाय दए महुबे को * औ क्षत्रिन से कही सुनाय ॥

आजु सामना चौहानन से * यारो रखिओ धर्म हमार ॥
जीतिके चलिहो रणखेतनसे * तौ हम तलब दिहैं बढ़वाय ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ * तुम सब भाई लगौ हमार ॥
पाँव पिछारु को ना धरिओौ * रखिओ धर्म चन्देले क्यार ॥
पवनी हमारी जो हुइ जैहैं * तमको देहैं बहुत इनाम ॥
दओ बढ़ावा जब ब्रह्मा ने * क्षत्री वीर रूप हुइ जायँ ॥
झुके सिपाही महुवे वारे * सबके मारु मारु रटलागि ॥
सुमिरन करके जगदम्बा को * ब्रह्मा खैंचि लई तलवार ॥
जैसे भिड़हा भेड़न पैठै * जैसे सिंह बिडारै गाय ॥
तैसेइ ब्रह्मा दल में पैठे * सब दल काटि करो खरिहान ॥
अकिलै ब्रह्मा की दपटनि में * सब दल रेनबेन हुइजाय ॥
भगे सिपाही दिल्ली वारे * अपने डारि डारि हथियार ॥
दपटनि झपटनि ब्रह्मानन्दकी * ताहर देखि देखि रहिजाय ॥
देखैं सन्मुख जब ब्रह्मा को * ब्रह्मा काल रूप दिखरायँ ॥
यह गति देखी जब ताहरने * यक हरकारा लओ बुलाय ॥
सो पठवाय दओ राजा पै * अबहीं लावैं फौज सजाय ॥
गो हरकारा तब बगिया में * झुकिके करी बन्दगी जाय ॥
हाल सुनाओ सब सागरको * तौलौं माहिल पहुँचे आय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * औ धीरे से कहो सुनाय ॥
जोहर कीन्हें हैं ब्रह्मा ने * रणमें खूब कियो घमसान ॥
ब्रह्मावाँधि लेउ चलिके अब * औ सब डोला लेउ लुटाय ॥
उठो पिथौरा सिंहासन से * चौंड़ा धाँधू लए बुलाय ॥
हुक्म दै दओ पृथीराज ने * लश्कर जल्द होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * सिगरी फौज भई तैयार ॥

दुइ सौ हाथी भूरा साजे * यकसौ मुड़िया लए सजाय ॥
दुइ सौ हाथी मकुनी साजे * यक सौ खूनी लए सजाय ॥
दुइ सौ हाथी मुकुट बन्धनी * सो सजवाये पिथौरा राय ॥
यक सौ हाथी मस्ता कहिये * सो सजवाये बीर चौहान ॥
हाथी भयंकर को मँगवाश्रो * सो सजवायो पिथौरा राय ॥
चुम्बक पत्थर को हौदा है * जामें शेल बिलौंचा खाय ॥
सिढ़ी लगाई मलयागिरिकी * तापर चढ़े धनी चौहान ॥
सिढ़ियन २ ऊपर चढ़िगौ * डंडा कुम्भ कलिन धरि पावँ ॥
जाय के बैठे जब हौदा में * मारू डंका दो बजवाय ॥
यक दंता पर चौंड़ा चढ़िगो * श्रौ भौंरानंद लश्रो सजाय ॥
तापर चढ़िगे धाँधू ठाकुर * लश्कर कूच दश्रो करवाय ॥
धूरि उड़ानी श्रासमान लौं * चहुँदिशि रही अँधेरी छाय ॥
श्राश्रो लश्कर तब सागरपर * लश्कर जहाँ महोबे क्यार ॥
हुक्म दै दश्रो पृथीराज से * डोला सबै लेउ लुटवाय ॥
दोनौं फौजन के संगम में * खटखट चलन लगी तलवार ॥
कहुँ २ गोली कहुँ २ बर्छी * कहु कहुँ परी तीरकी मार ॥
भाला छूटैं श्रसवारन के * श्रौ बुबकारिन बोलैं घाव ॥
चलै सिरोही सात कोश लौं * श्रावौं भोर चलै तलवारि ॥
बीच में दबिगै जब ब्रम्हानंद * श्रागे घोड़ा दश्रो बढ़ाय ॥
छाँड़ि श्रासरा जिंदगानी की * श्रपनो मयामोह बिसराय ॥
प्राण हथेली पर धरि लीन्हो * श्रपनो घोड़ा दश्रो बढ़ाय ॥
पान तमोली जैसे कतरै * जैसे खेती लुनै किसान ॥
तैसेइ ब्रह्मा दल में घुसि के * चत्रिन काटि करै खरिहान ॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले * देखैं खड़े बीर चौहान ॥

सोचन लागे अपने मनमें * धनि यह ब्रह्मा राजकुमार ॥
बड़े बड़े शूर वीर महुवे में * एकते एक रहत सरदार ॥
दपटनि झपटनि ब्रह्मानन्द के * देखत बढ़ो चौंड़िया राय ॥
बोलो चौंड़ा ब्रह्मानन्द से * ब्रह्मा खबरदार हुइ जाउ ॥
असकहि चौंड़ा गुर्ज उठायो * औ ब्रह्मा पर दओ चलाय ॥
उड़िगो घोड़ा ब्रह्मानन्द को * नीचे गिरो गुर्ज अरराय ॥
सोचे ब्रह्मा अपने मन में * हमहैं ब्रह्म युक्त संसार ॥
हाथ जो डरिहैं हम ब्राह्मणपर * तौ यह हमहिं मुनासिब नाहिं॥
यह मनसोचि समुझिब्रह्माने * दो संमोहन बाण चलाय ॥
मुर्छित हुइके चौंड़ा गिरिगो * मुर्चा हटो चौंड़िया क्यार ॥
आये धाँधू तब समुहें पर * औ मनमें यह करो विचार ॥
ब्रह्मा भैया हमरे लागत * कैसे लड़ैं सामुहें जाय ॥
जो ना लड़िहैं संग ब्रह्मा के * करिहैं क्रोध वीर चौहान ॥
यह मन सोचि लड़े धाँधू तब * ब्रह्मा दीन्हों बाण चलाय ॥
गिरिगो धाँधू तब होंदा में * मरदनि मरदनि पहुँचे आय ॥
आगे बढ़िके सरदनि बोले * ओ महुवे के राजकुमार ॥
धरि देउ डोला चन्द्रवलि को * सुनि ब्रह्मा ने दओ जवाब ॥
नाम जो लैहो तुम डोला को * मुख में ठाँसि दिहौं तलवार ॥
सुनतै गुस्सा हुइ सरदनि ने * अपनो खैंचि लई तलवार ॥
चोट चलाई ब्रह्मानन्द पर * तुरतै टूटि गई तलवारि ॥
खैंचि सिरोही लइ ब्रह्मा तब * औ सरदनि पर दई चलाय ॥
सरदनि जूझि गये समुहें पर * मरदनि खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका ब्रह्मानन्द पर * ब्रह्मा दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
तीनि सिरोही गहि गहिमारी * उनके अंग न आयो घाउ ॥

आगे बढ़ि तब ब्रह्मानन्द ने * अपनो तेगा दश्रो चलाय ॥
चोट बचावन को मरदनि ने * अपनी दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ा वाली * गद्दी कटि मखमलकी जाय ॥
बारह कड़ियाँ कटि बख्तरकी * उनको छूटि जनेवा जाय ॥
मरदनि जूझि गये खेतन में * ताहर घोड़ा दश्रो बढ़ाय ॥
ब्रह्मा ताहर दोनौं अभिरे * ब्रह्मा भक्त धन्य संसार ॥
लगो चपेटा जब घोड़ा के * ताहर घोड़ा गये भगाय ॥
बोले चन्द भाट पिरथी से * ब्राह्मण भाला दश्रो चलाय ॥
जीति न पैहैं कोइ ब्रह्मा से * ताते अब तुम गहो कमान ॥
सुनिकेपिरथीसोचिसमुझिमन * धीरसिंह को लश्रो बुलाय ॥
बोले पिरथी धीरसिंह से * ब्रह्मानन्दहिं लेहु बँधाय ॥
डोला लूटि लेउ सबही तुम * यह सुनि चले धीर सरदार ॥
आवत देखो धीरसिंह को * तब ब्रह्मानन्दकरो बिचार ॥
आजु सामना है धीरज को * है यह देवि भक्त सरनाम ॥
भारी शूरमाँ में गिनती है * आवत आजु वीर रण माहिं ॥
आये धीरसिंह समुहें जब * तब ब्रह्मा से कहो सुनाय ॥
उमिरि तुम्हारी अति थोरी है * औ महुबे के राजकुमार ॥
धरि देउ डोला तुम खेतनमाँ * है यह हुक्म वीर चौहान ॥
ब्रह्मा ज्वाब दियो धीरजको * सुनलो धीरसिंह सरदार ॥
तुम्हहिं मुनासिब यह नाहीं थो * हमरो करो सामना आय ॥
बड़े मित्र हो तुम आल्हा के * आल्हा भाई लगैं हमार ॥
बड़े नीति वाले पिरथी हैं * जो यहँ लाये फौज चढ़ाय ॥
ब्याहो बेटी जब हमको उन * तब क्यों भूमि मँझाई आय ॥
लानति ऐसी रजपूतो को * पानी पीबे को धिरकार ॥

आजु अखाड़े में बरनी है * हमसे करौ सामना आय ॥
जो नहिं इच्छा होयलड़नकी * तौ समुहें से जाउ बराय ॥
इतनी सुनतै धीरसिंह ने * अपनी दीन्हों साँगि चलाय ॥
चोट बचाई तब ब्रह्मा ने * धीरज दीन्हों गुर्ज चलाय ॥
घोड़ी उड़िगो तब ऊपर को * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
गुस्सा ह्वै तब धीरसिंह ने * अपनो वेगा दयो चलाय ॥
ढाल अड़ाई तब ब्रह्मा ने * औ धीरज से कही सुनाय ॥
हमहूँ परम भक्त देवी के * तुमहू भक्त अंबिका क्यार ॥
जितने शस्त्र होयँ तुम्हरे संग * सो सब हमपर लेउ चलाय ॥
इतनी सुनिके धीरज सोचै * है यह महाशूर सरदार ॥
चोटैं हमरी सब खाली गईं * औ बदनामी भई हमार ॥
धीरज लौटि चले समुहें से * देखैं खड़े वीर चौहान ॥
हाथी बढाओ पृथीराज तब * औ ब्रह्माको लयो घिराय ॥
हुक्म दैदयो पृथीराज ने * सिगरे डोला लेउ लुटाय ॥
चौंड़ा ताहर दोनों बढ़िगे * औ डोलन को लयोघिराय ॥
नौ सै हाथी के हलका में * आगे बढो पिथौरा राय ॥
बीच में घिरगै हैं पैदल सँग * चारों ओर चलै तलवारि ॥
पैदल अभिरे तहँ पैदल सङ्ग * औ असवारन से असवार ॥
हौदाके सँग हौदा मिलि गये * हाथिन अड़े दाँत से दाँत ॥
घोड़ा दाबे ताहर आये * औ डोलन को घेरा जाय ॥
घेरो डोला चन्द्रावलि को * पिरथी चौंड़े कहो सुनाय ॥
गहना लूटि लेउ भरहनाको * फिरि सब डोला लेउ लुटाय ॥
बजै नगाड़ा दुइसौ जोड़ी * बाजै तुरही औ करनाल ॥
चोट नगाड़ा की घनघोर * गूँजै सुनै कनौजी राय ॥

बोलो लाखनि तब ऊदन से * अब सागर पर होउ तैयार ॥
हमरे मनमें अस आवत है * सागर चलत विषम तलवार ॥
हुक्म दैदओ तब ऊदन ने * लश्कर तुरत होय तैयार ॥
बाजो डंका तब लश्कर में * क्षत्री तुरत भये तैयार ॥
सुरुही हथिनी सजवाई तब * लाखनि तुरत भये असवार ॥
घोड़ा बेंदुला त्यार कराओ * ऊदनि फाँदि भये असवार ॥
घोड़ा मनुरथा को सजवाओ * ढेबा तुरत भये असवार ॥
घोड़ो हिरौंजिनि त्यार कराई * मीरा सैयद भए सवार ॥
धनुआँ तेली लला तमोली * अपने घोड़न भये सवार ॥
कूच कराय दओ लश्करको * औ सागर पर पहुँचे जाय ॥
जहाँ मोर्चा थो धाँधू को * पहुँचो फौज जोगियन क्यार ॥
जोगिन फौज देखि धाँधू ने * इन जोगिन से कही सुनाय ॥
चलत सिरोही रण भीतर है * काहे प्राण गमाये आय ॥
पाछे लौटि जाउ झावा को * यह सुनि ऊदन कही सुनाय ॥
पर्बी देखिहैं हम सागर को * फिरि लाखनसे लगे बतान ॥
कठिन मोरचा है सागर पर * दादा बहुत रहेउ हुशियार ॥
हुक्म फेरि दओ लाखनि राना * क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
बढ़े सिपाही बैरागिन के * खटखट चलनलगीं तलवारि ॥
सुमिरन करके रामचन्द्र को * लै बजरंग बली को नाम ॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदन ने * औ रण भीतर गये समाय ॥
हौदन हौदन नचै बेंदुला * माला नाग दौनिको हाथ ॥
बाइस हौदा खाली करि दै * तब धाँधू लर पहुँचे जाय ॥
समुहें देखो जब जोगी को * धाँधू दीन्हों गुर्ज चलाय ॥
चोट बचाई तब ऊदन ने * औ रस बेंदुल दओ बढ़ाय ॥

पैंड़ लगाई बघऊदन ने * औ हौदापर पहुँचे जाय ॥
ढाल कि ओझड़से अम्मारी * सो धरती पर दई गिराय ॥
सोचे धाँधू अपने मन में * है यह जोगी बुरी बलाय ॥
धाँधू हटिगये तब समुहें से * आगे बढ़े उदयसिंह राय ॥
जैसे भिड़हा भेड़न पैठे * जैसे सिंह बिडारै गाय ॥
तैसेइ ऊदन दल में घुसिगै * औ क्षत्रिनको काटन लाग ॥
कल्ला कटिगे तहँ घोड़न के * चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ॥
कटि भुजदण्डैं रजपूतन को * हा दैया गति कही न जाय ॥
पैग पैग पर पैदल गिरिगै * उनके दुइदुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसे पर हाथी डारे * छोटे पर्वत की अनुहार ॥
विकट लड़ाई भइ सागर पर * तहँ बहि चली रक्तकी धार ॥
मुड़न के तहँ मुड़ चौरा भये * औ लोथिन के लगे पगार ॥
डारे घैहा जा लोहू में * तिनके प्यास २ रटलाग ॥
झुके सिपाही ऊदन वारे * रण में कठिन करी तलवार ॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले * कायर लै लै भगे परान ॥
बोले पृथीराज चौंड़ा से * मल्हनाको डोला लेउ लुटाय ॥
हाथी बढ़ाओ तब चौंडा ने * औ मल्हना ते पहुँचो जाय ॥
एकखेत जब मल्हना रहिगइ * तब चौंड़ा ने कहो सुनाय ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं * रानी बचन करौ परमान ॥
यही हुक्म है पृथीराज को * रानी को डोला लेउ लुटाय ॥
हार नौलखा हमको दै देउ * औ सब गहनौ देउ उतारि ॥
मल्हना बोली तब चौंडा से * यह पिरथी से कहियो जाय ॥
मर्द महोबे कोउ नाहीं है * कापर चढ़े पिथौरा राय ॥
भारी राजा हैं दिल्ली के * औ फिरि अग्नि बंश चौहान ॥
तुमहिं लूटि सोहत नाहीं है * औ तिरियन पर हाथचलाव ॥

क्यों नहिं आये तब महुबे पर * जब यहँ हते उदैसिंह राय ॥
बोलो चौंड़ा तब मल्हना से * हम ना मानिहैं ठकुर तुम्हार ॥
हमें हुक्म है पृथीराज को * डाला लूटि लेउ तुम जाय ॥
इतनी सुनतै मल्हना बोली * कहँ ऊदन को पाऊँ आज ॥
हे जगदीश्वर दीनबंधु प्रभु * यह कहि ऊपर हाथ उठाय ॥
होउ जो ऊदन आसमान पर * हम पर फाटि परो अररराय ॥
तौलौं पहुँचि गये ऊदन तहँ * समुहैं चौंड़ा परो दिखाय ॥
रानी मल्हना को डोला तहँ * देखत ऊदन बढ़े अगार ॥
मल्हना देखो जब जोगिनको * तब अपने मन करो बिचार ॥
धर्म राखिलो जगदीश्वर ने * आई फौज जोगियन क्यार ॥
बोलो चौंड़ा तब जोगिन से * काहे प्राण गँवाये आय ॥
सात कोशलों चलै शिरोही * ताते लौटि जाउ महराज ॥
बोले ऊदन तब चौंड़ा से * तुम क्यों लाये फौज चढ़ाय ॥
भलो आपनो जो तुम चाहो * तब समुहें से जाउ बराय ॥
इतनो कहिके बघऊदन ने * लेके रामचन्द्र को नाम ॥
खैंचि शिरोही लइ जल्दी से * औ रण भीतर गये समाय ॥
बाइस हौदा खाली करके * तब चौंड़ा पै पहुँचे जाय ॥
एँड़ लगाई रस बेंदुल को * औ हौदा पर पहुँचे जाय ॥
हटिगो मुर्चा तब चौंड़ा को * चौंड़ा मन में करो बिचार ॥
बड़े शूरमा ये योगी हैं * इनसे जीति होन को नाहिं ॥
ऊदन पहुँचे रनिमल्हना तै * औ मल्हना से कही सुनाय ॥
भिक्षा हमहिं देउ माता तुम * सुनि मल्हनाने कही सुनाय ॥
होउ सहायक अब बाबा तुम * पिरथी डोला लिहैं लुटाय ॥
लै गये डोला चन्द्रावलि को * पचपेड़न ते राखो जाय ॥

घेरो ब्रह्महिं पृथीराज ने * यह सब बिपदा देहु हटाय ॥
बोले ऊदन तनि मल्हना से * माता धीर धरो मन माहिं ॥
बिपदा टरिहैं जगदीश्वर सब * जो सब जगकी करत सहाय ॥
पवनी तुम्हारी हम करवै हैं * यह कहि ऊदन चले अगार ॥
ढेबा समुझायो ऊदन ने * दादा रहेउ बहुत हुशियार ॥
लाखनि सैयद को संगलैके * पच पेड़न तै पहुँचे जाय ॥
आगे बढ़ि तब ताहर बोले * जोगिउ सुनौ हमारी बात ॥
सात कोस लौं चलै शिरोही * यहँ क्यों माथा गँवाये आय ॥
बोले ऊदन हम मल्हना ढिग * महलन गङ्गा लई उठाय ॥
पवनी तुम्हारी हम करवै हैं * तासों लाए फौज चढ़ाय ॥
कही हमारी ताहर मानौ * डोला ठौर देहु धरवाय ॥
चुप्पै लौटि जाउ दिल्लीको * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनतै ताहर जरिगे * नैना अग्नि ज्वाल हुइजाय ॥
हुक्म दै दओ तब जल्दी से * अबहीं जोगिन देहु भगाय ॥
बढ़े सिपाही दोउ ओर के * तुरतै चलन लगी तलवारि ॥
ताहर बढ़िगे तब आगेको * औ लाखनि तै पहुँचे जाय ॥
खैंचि शिरोही लइ ताहर ने * सो लाखनि पर दई चलाय ॥
चोट बचाई लाखनि राना * अपनो घोड़ा गये भगाय ॥
ऊदन डोला चन्द्रावलि को * लै मल्हनाढिग राखो जाय ॥
लाखनि राना ते बोले तब * दादा सुनौ बात धरि ध्यान ॥
ब्रह्मै घेरि लियो पिरथी ने * चलिके खबर लेउ तत्काल ॥
यहकहिलाखनि ऊदनचलिभे * अब ब्रह्मा की सुनो हवाल ॥
देखि लड़ाई ब्रह्मानन्द को * चन्द भाट ने कही सुनाय ॥
मारि गिरावौ अब ब्रह्मा को * नहिंसब जैहैं काम नशाय ॥

सोचि समुझि तब पृथीराजने * करमें लीन्हीं लाल कमान ॥
सोचे ब्रह्मा तब अपने मन * अब यह हरो चहत ममप्रान ॥
अब चुप रहिबेको मौकानहिं * है यह शब्दवेधि चौहान ॥
सोचि समुझि यह ब्रह्मानन्दने * लीन्हों तुरत मोहनी बान ॥
तानि धनुष मारो ब्रह्मा ने * हौदा गिरे वीर चौहान ॥
मूर्छित हुइगये पृथीराज तब * तौलौं आये उदयसिंह राय ॥
लाखनि सैयद संगहि आये * धनुआ तेली सङ्ग लिवाय ॥
लला तमोली रतकाले को * अपने घोड़ा पर असवार ॥
बारौ राजा गाँजर वाले * बारह कुँवर बनौधे क्यार ॥
मुरलिमनोहर कल्पी वालो * साँगनि पट्टी के सर्दार ॥
हिरसिंह बिरसिंह बिरियावाले * जिनको बेड़ि बहै तलवार ॥
चिन्ता ठाकुर रुसनी वाले * जगमनि जिन्सीके सरदार ॥
रूपन राजा सिरउँज वाले * चन्दन दतिया के सरदार ॥
चिन्तामनि हैं गोरखपुर के * औ पत्यूँज के मदनगुपाल ॥
मोहन राजा हर्दीगढ़ को * पूरन पूरा के सरदार ॥
राउ गोरखा बंगाले को * जाके जादू को अधिकार ॥
मधुकर राजा गढ़ चित्तौरको * जाको जानत सकल जहान ॥
दबी बायसो इन जोगिनकी * कीरति सागर के मैदान ॥
देखो लश्कर जब जोगिन को * ब्रह्मा लौटि परे तत्काल ॥
जागी मुर्छा पृथीराज को * आदि भयंकर दओ बढाय ॥
मारत काटत ऊदन आये * जहँ पर फौज पिथौरा क्यार ॥
लाखनि भुरुही दाबे आये * औ पिरथी तै पहुँचे आय ॥
टक्कर मारी तब समुहें हुइ * आदि भयंकर दओ हटाय ॥
सोचे पृथीराज मन में तब * हमरो हाथी दओ हटाय ॥
बिन बिजरासिनकेदूजो नहिं * हमरो हाथी सकत हटाय ॥

लौटिके पिरथी देखन लागे * औ ऊदन तन रहे निहारि ॥
जूझिकोकंकन देखि हाथ में * मन में सोचि गये सकुचाय ॥
मुर्चा फेरि दओ अपनो तब * औ लश्करहिं दओ लौटाय ॥
कीरति सागरकी पारिन पर * लश्कर परो पिथौरा क्यार ॥
बढ़ि गये डोला सब रानिनके * सो सागर पर पहुँचे जाय ॥
दक्खिन पाटी पर पिरथी हैं * उत्तर फौज कनौजी क्यार ॥
बोले ऊदन चन्द्रावलि से * अपनि भुजरियाँ देउ सिराय ॥
लईभुजरियाँ तब चन्द्रावलि * सो सागर में दई सिराय ॥
बोले माहिल तब पिरथी से * सगुन को दोना लेउ उठाय ॥
इतनी सुनते पृथीराज ने * तब चौंड़ा से कही सुनाय ॥
डारो दोना जो चन्द्रावलि * सो सागर से लेउ उठाय ॥
हाथी बढ़ाओ तब चौंड़ा ने * औ सागर पर पहुँचो आय ॥
तब पुकारि बोली चन्द्रावलि * दोना लिहैं चौंड़िया राय ॥
तो यह पवनी खोटी हुइ है * औ जग हुइहै हँसी हमारि ॥
जो कहुँ होते ऊदन भैया * तो यह दोना लौते उठाय ॥
यह सुनि लाखनिने सैनन से * बघऊदन को दो उसकाय ॥
दाबे बेंदुला तब ऊदन ने * औ चौंड़ा ढिग पहुँचे जाय ॥
बोले चौंड़ा तब ऊदन से * जोगी सुनो हमारी बात ॥
दोना लीजो ना आगे बढ़ि * नहिं हम भाला दिहैं चलाय ॥
बोले ऊदन तब चौंड़ा से * दोना तुमहिं मिलनकोनाहिं ॥
मारो भाला तब चौंड़ा ने * ऊदन लीन्हीं चोट बचाय ॥
झपटि के दोना लै ऊदन ने * चन्द्रावलि को दओ गहाय ॥
चन्द्रावलि बोली माता से * माता सुनो बात मनलाय ॥
दोना डरता थी सागर में * ऊदन लावत ताहि उठाय ॥
सोइ भुजरियाँ में घुरसति थी * मुँह माँगो म्वहिं देत मँगाय ॥

कहँ मैं पाऊँ अब ऊदन को * जिनके भुजरियाँ घुरसौं जाय ॥
तब समुझाओ रनिमल्हना ने * समुहें जोगी खड़े तुम्हार ॥
जाय भुजरियाँ इनके घुरसो * जिन यह राखो धर्म हमार ॥
जबहिं चन्द्रावलि घुरसन लागी * तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
धर्म की बहिनी हो हमरी तुम * पै इक मानो बात हमार ॥
जेठो जोगी जो समुहें है * पहले घुरसि देउ तुम जाय ॥
लई भुजरिश्राँ तब चन्द्रावलि * सो लाखनि के घुरसी जाय ॥
अस्सी हथिनी जो कोतलथी * सो लाखनि ने दई मँगाय ॥
घुरसी भुजरियाँ फिरिऊदनके * ऊदन कंकन दश्रो उतारि ॥
सवालाख को यह कङ्कन थो * लै मल्हना तर पहुँची जाय ॥
यह तो कङ्कन है ऊदन को * जोगी कैसे लाये चुराय ॥
सुनीबात जब यह बहिनीको * तब हँसि पड़े उदयसिंह राय ॥
बिजुली चमकी तब दाँतन की * तुरतै मल्हना गइ पहिचान ॥
मिली चन्द्रावलि तब ऊदन से * नैनन नीर बहाय बहाय ॥
चन्द्रावलि बोली तब मल्हनासे * हमने पहलेइ लो पहिचान ॥
ड्योढ़ी नाचो जब जोगो थो * तबही हमने दश्रो बताय ॥
छोटो जोगी अस लागति है * मानो मेरो लहुरवा भाय ॥
बिना बेंदुला को चढ़वैया * को पिरथी को देय हटाय ॥
बारहु रानी चन्देले की * सबको मिले उदयसिंह राय ॥
सिगरी सखियाँ औ रानिनने * दोना सागर दये सिराय ॥
पृथीराज ने तब ललकारो * दोनो सागर लेउ उठाय ॥
धाँधू भाई को बुलवाश्रो * एक तो दोना लाउ उठाय ॥
धावा करिदो तब धाँधू ने * औ दोनन ढिग पहुँचे जाय ॥
बोले लाखनि तब ऊदन से * दोना तुरतै लेउ उठाय ॥
एको दोना दिल्ली जैहैं * तो बदनामी होय तुम्हार ॥

हल्ला करिदो तब ऊदन ने * त्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
कीरति सागरकी सिढ़ियनपर * खटखटचलनलगी तलवारि ॥
आठ कदम जब दोना रहिगो * तब धाँधू ने कही सुनाय ॥
हाथ चलैहो जो दोना पर * मुँहमें खोंसि दिहौं तरवारि ॥
इतना सुनतै बघऊदन ने * अपनो घोड़ा दश्रो बढ़ाय ॥
एँड़ लगाई रस बेंदुल के * औ मस्तक पर पहुँचे जाय ॥
ढाल कि ओझड़ ऊदन मारी * सोने कलशा दए गिराय ॥
गुहरा मारो तब धाँधू को * धाँधू हाथी लश्रो हटाय ॥
यह गति देखी जब धाँधू की * वीर भुगन्ता गश्रो बराय ॥
लैके भाला तब ऊदन ने * नोक से दोना लए उठाय ॥
दुइश्र लाख पैदल पिरथी के * जूझे सागर के मैदान ॥
नब्बे हाथी रणमें जूझे * जूझे पाँच हजार सवार ॥
घोड़ा जूझे पाँच सहस सब * लोथिन ऊपर लोथि दिखाय ॥
सरदनि मरदनि सूरज बेटा * राजा टंक सूर सरदार ॥
इतने जूझे सब दिल्ली के * मुर्चा हटो पिथौरा क्यार ॥
बोले माहिल पृथीराज से * तुम सुनिलेउ वीर चौहान ॥
जीति न पैहो तुम ऊदनको * दिल्ली कूच जाउ करवाय ॥
अब जब ऊदन कनवज हुइहैं * तब हम खबरि सुनैहैं आय ॥
तबहीं चढ़िके गढ़ दिल्ली से * महुबो नगर लिश्रो लुटवाय ॥
इतनो सुनतै पृथीराज ने * तम्बुअन मेख दई उखराय ॥
कूच कराय दश्रो महुबे से * औ दिल्ली की पकरी राह ॥
छै सौ घोड़ा ब्यालिस हाथी * जूझे त्रत्री बीस हजार ॥
रंजित अभई रण में जूझे * जिनकी खाड करी तरवार ॥
इतने जूझे गढ़ महुबे के * कीरति सागर के मैदान ॥
खबरि पहूँची जब महुबे में * ऊदन मुर्चा दश्रो हटाय ॥

सुनो नाम जब बघऊदन को * चलिभै मिलन रजापरिमाल ॥
चली पालकी चन्देले की * औ सागर पर पहुँची जाय ॥
परे हिंडोला तब सागर पर * सखियाँ गावैं राग मलार ॥
झूलन लागी चन्द्रावलि तब * लै आल्हा ऊदन को नाम ॥
बोले ऊदन चन्द्रावलि से * बहिनी सुनौ हमारी बात ॥
नाम लेउ तुम इन लाखनिको * जिन यह पवनी दई कराय ॥
आवत देखो चन्देले को * सन्मुख भये उदैसिह राय ॥
पाग उतारि धरी चरणन पर * ऊदन हाथ जोरि रहि जाँय ॥
हृदय लगाय लओ राजा ने * नैनन बही नीरकी धार ॥
मोह आयगो चन्देले को * बघऊदन से कही सुनाय ॥
सुधि बिसराय दई हमरी तुम * औ कनवज को गये रिसाय ॥
बिना तुम्हारे गढ़ दिल्ली से * जब तब चढ़त पिथौरा राय ॥
अबना जानौ तुम कनवज को * औ आल्हा को लेउ बुलाय ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तब * दादा सुनौ हमारी बात ॥
सावन चिड़िया नहिं घरछोड़ै * ना बनिजार बनिज को जाय ॥
कौन काज हमसे बिगरो थो * जो भादों माँ दओ निकार ॥
तीनि तलाक दई तुमने जब * हमरे गई करेजे शालि ॥
त्यहि महुबे को हम जैहैं ना * कागा मेरे हाड़ लै जायँ ॥
नमक तुम्हारो हम खाओ है * सो असने में भए सहाय ॥
यह सुनि मल्हनारोवनलागी * बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
बड़े प्रेम से हम पालो थो * अपने कुचको दूध पिआय ॥
लौटि जोजैहौ तुमकनवजको * चढ़िहैं फेरि पिथौरा राय ॥
घर घर महुबे को लुटवैं हैं * तब हम करिहैं कौन उपाय ॥
बोले ऊदन तब मल्हना से * अब जब चढ़ै पिथौराराय ॥
खबरि पठाइ दिओ जल्दी से * तब हम लै हैं फौज चढ़ाय ॥

मारि भगे हैं हम दिल्ली लौं * माता बचन करौ परमान ॥
आगे ठाढ़ो करि ब्रह्मा को * फिरि मल्हनाने कही सुनाय ॥
तुमका सौंपति हौं ब्रह्मा को * इनके तुमहीं हौ रखवार ॥
बैठे राज करौ महुबे में * नहिं कनवजको करौ पयान ॥
तापर ज्वाब दश्रो ऊदन ने * माता सुनौ हमारी बात ॥
हम कहि आये हैं आल्हा से * को नहिं जैहैं नगर महोब ॥
करो बहाना हम आल्हा से * लाखनि खेलन जात शिकार ॥
संग जात हमहूँ उनके हैं * छिपिके आये कनौजी साथ ॥
हमतो सोवत थे अंटा पर * सपनो दियो अम्बिका माय ॥
पृथोराज घेरो महुवो हैं * जल्दी जाउ उदैसिंह राय ॥
तब हम छिपिके यहँ आये हैं * यहिते हम रहिबे को नाहिं ॥
अब जब पिरथी चढ़िके आवैं * तब तुम दीजौ खबरिकराय ॥
तब हम ऐहैं गढ़ महुबे को * लाखनि रानैं संग लिवाय ॥
बोली मल्हना तब लाखनि से * जुगजुगजिओ कनौजीराय ॥
धनिधनि बेटा रनि तिलकाके * बिछुरे ऊदन दए मिलाय ॥
मुर्चा फेरो चौहानन को * औ यह पवनी दई कराय ॥
बोले लाखनि हाथ जोरिके * सब परताप तुम्हारो माय ॥
सबसे आज्ञा लै लाखनि तब * ऊदन लशकर संग लिवाय ॥
अपने डेरन पर आये तब * लशकर कूच दओ करवाय ॥
मल्हना रानी सबको लैके * पहुँची रंगमहल में जाय ॥
लिखी लड़ाई यह सागर को * श्री शिवचरण दई समुझाय ॥
आगे गौना है लाखनि को * सोऊ लिखिके दिहैं सुनाय ॥
समय पाय सब आल्हा गावो * मनमें सुमिरि राम रघुराय ॥

इति कीरति सागर पर—
(भुजरियों की लड़ाई सम्पूर्ण)

* श्री *

आल्ह खंड

* लाखनि का गौना *

* सुमिरनी *

गणपति पद शुभ सुमिरि उर, हरिहर चरण मनाय ।
लाखनि को गौना लिखहुँ, शारद होउ सहाय ॥

* आल्हा छन्द *

मैं पद बन्दौं देव नदी के * महिमा सकलजगत विख्यात ॥
सकल जगत की तारन हारी * माता धर्म तुम्हारे हाथ ॥
छोड़ि सुमिरनी अब हियनाते * बरणौं गौन कनौजी क्यार ॥
माहिल राजा उरई वाले * जो परिहार गुटैया टार ॥
सुखी देखि आल्हा ऊदन को * माहिल हृदय रहो दुखछाय ॥
माहिल सोचैं अपने मन में * अब कोइ ऐसो रचो उपाय ॥
काहू विधि कनवज में छलसों * मारे जायँ लहुरवा भाय ॥
यहै विचार करत मन माहिल * पहुँचे जैचन्द के दरबार ॥
करी बन्दगी माहिल राजा * जैचन्द चौकी दई डराय ॥
माहिल बैठि गये चौकी पर * तब जैचन्दने कही सुनाय ॥
कैसे आवन भयो कनवज में * अपनी कुशल कहो समुझाय ॥
तब जवाब माहिल ने दीन्हों * हे महराज कनौजी राय ॥
कुशल कुशलिया है उरई में * बैठे राज करौं महराज ॥
पर्व नहैबे गये बिठूर में * तहँपर मिले जवाहिर लाल ॥
गङ्गाधर बूँदी के राजा * तिनको कहिय लड़ैते लाल ॥
बातन २ जिकर आइ गयो * तब तिन हमते कहो बुझाय ॥

जो तुम जैयो गढ़कनवजको * तौ जैचन्द से कहियो जाय ॥
समय अइगो है गौने को * सो वह गौना लेइँ कराय ॥
इतनी सुनतै नृप जैचन्द ने * तुरतै बीरा लियो मँगाय ॥
सो धरवाय दियो कलशापर * औ सब शूर लिये बुलवाय ॥
ठाढ़े हुइके सिंहासन पर * पुनि यह कहो कनौजीराय ॥
कौन शूर है गढ़ कनवज में * जो बूँदी पर पान चबाय ॥
इतनी कहिके जैचन्द बैठे * चत्रो कानन में बतरायँ ॥
एक पहर बीराको हुइ गयो * सो कलशा पर गयो सुखाय ॥
तौ लौं ऊदन बँगला आये * औ बीरा को सुनो हवाल ॥
तड़पिकेऊदनगयेकलशा ढिग * निज कर बीरा लियो उठाय ॥
चुपके बात कहो माहिल ने * तुम सुनि लेउ कनौजीराय ॥
बहुतक शूर भरे कनवज में * इनते बीरा लेहु छिनाय ॥
तब समुझायो नृप जैचन्दने * तुम सुनिलेहुमहिल परिहार ॥
बड़े लड़ैया ये ऊदनि हैं * कलहा पूत दिवलदे क्यार ॥
जो कहुँ रारि होय ऊदनि से * तो सब जो हैं काम नशाय ॥
मन खिसियाने माहिल हुइके * तुरतै कूच दिओ करवाय ॥
खाली दाँव गयो माहिल को * याही सोच रहो जिय छाय ॥
यहै बिचार करत मन माहिल * पहुँचो गढ़ बूँदी में आय ॥
जहाँ कचहरी गङ्गाधर की * माहिल तहाँ पहूँचे आय ॥
आवत देखो जब माहिल को * राजा चौकी दई डराय ॥
करी बन्दगी माहिल ठाकुर * औ चौकी पर बैठे जाय ॥
तब गजराजा पूछन लागे * अपनीकुशल कहोसमुझाय ॥
तब जवाब माहिल ने दीन्हों * है सब कुशल छेम महराज ॥
एक बात अतिअनुचितहुइगइ * सो अब सुनहु गरीबनेवाज ॥
राजा जैचन्द हैं कनवज में * गौनै लेन हेत महराज ॥

बीरा धराय दयो कलशा पर * सो ऊदन ने लियो चबाय ॥
लेन गौनमाँ आल्हा ऐहैं * ओछी जाति बनाफर क्यार ॥
हँसी तुम्हारी जगमा ह्वइ है * कोई न पिये घड़ा को पानि ॥
तेहिते मानहु कही हमारी * हम यक जतन देहि बतलाय॥
जबहें आवैं वे बूँदी में * छलिके लैयो साथ लिवाय ॥
आल्हा ऊदनि को मरवैयो * औ फाँसी माँ दियो डराय ॥
नाम तुम्हारो जगमाँ ह्वइ है * सबरै बारु दूरि ह्वइ जाय ॥
इतनी सुनिके राजा बोले * तुम ने उचित बताई बात ॥
मैं मरवैहों दोउ भैयन को * राखहु गुप्त हृदय को बात ॥
सुनिके माहिल बहुतखुशीह्वइ * माँगी बिदा तुरत शिरनाय ॥
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठे * औ उरई में पहुँचे आय ॥
हियाँ की बातैं हियनै छोड़ौ * अब कन्नवजको सुनौ हवाल ॥
हाथ जोरि के नृप जैचन्द ते * बोले देव कुँवरि के लाल ॥
थोड़े दिवस रहे गौने के * परसों कूच देहु करवाय ॥
लिखिकै पाती सब राजनको * अबहीं नेउता देहु पठाय ॥
सजिके आवैं सब बूँदी को * अपनो लश्कर सङ्ग लिवाय ॥
इतनी कहि के ऊदनि चलिभे * औ लाखनि ढिग पहुँचेजाय॥
हाल बताओ सब गौनो को * महलन खबरि दई पहुँचाय ॥
सखियन मङ्गल गावन लागीं * घर घर होयँ मङ्गलाचार ॥
त्यारी होन लगी गौना की * सखियाँ सोरह करैं सिगार ॥
चिट्ठी लिखि के इत जैचन्दने * सब राजन को दई पठाय ॥
जो जो राजा थे नजदीकी * सजि२कनवज पहुँचेआय ॥
ऊदनि चलिभये तब बङ्गलासे * औ लश्कर में पहुँचेजाय ॥
बोलि नगड़ची को बीरादओ * लश्कर डंका देहु बजाय ॥

हुक्म पायके चलो नगड़ची * लश्कर डंका दियो बजाय ॥
चोब नगाड़ाके बाजति खन * चत्री उठे भरहरा खाय ॥
एक घरी केरे अरसा में * लश्कर साजि भयो तैयार ॥
हाथी घोड़ा ऊँट सजाये * पैदल पल्टन भई तयार ॥
चारि लाख पैदलकनवजके * साजे तीनि लाख असवार ॥
चारि लच्च दल सब राजाको * एक लाख फौजमहोबे क्यार ॥
बारह लाख फौज संग लैके * जैचन्द कूच दियो करवाय ॥
कूच नगाड़ा के बाजत खन * चत्री चले गनेश मनाय ॥
जितनी तोपैं थीं कनवजकी * सो सब आगे देहु जुताय ॥
राति दिनांकीमंजिल करिके * बूँदी निकट पहूँचे आय ॥
डेरा डारि दोन धूरे पर * तम्बू गाड़ि दिये हरषाय ॥
जीन उतारि दिये घोड़न क * हाथी के हौदा धरे उतार ॥
फेटैं छुट गईं रजपूतन की * चत्रिन खोलि धरे हथियार ॥
जैचन्द बैठे रे तम्बुआ में * लाखनि और उदयसिहराय ॥
दहिने बैठे मंडरीक जी * तिन जैचन्दते कही बुझाय ॥
पाती लिखिके गंगाधर को * सो बूँदी को देहु पठाय ॥
तापर ज्वाब दियो जैचन्दने * समुहैं पाती देहु पठाय ॥
इतनी सुनि के मण्डरीक ने * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
लैके कागद कल्पी वारो * तुरतै पाती लिखी बनाय ॥
गौनेकि साइति अतिनोकीहै * सो तुम सोचौ हृदयमझार ॥
पाती लिखिके फिरि अल्हाने * अपने दसखत दिये बनाय ॥
बंद लिफाफा माँ करिदीन्हीं * और रूपन को दई गहाय ॥
लैके पाती रूपन चलि भयो * औ फाटक पर पहुँचो जाय ॥
बोल्यो रूपन दरमानी ते * चाकर सुनहु बुँदेले क्यार ॥

असली बड़ा आल्हखण्ड



भार्गवभूषण प्रेस, काशी।

हमहैं बारी गढ़ महुबे के * औ रूपन है नाम हमार ॥
चिट्ठी लाये हैं गौने की * राजै खबरि देहु पहुँचाय ॥
इतनी सुनिके गौ दर्मानी * बीच कचेहरी पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी गंगाधर को * औ सब हाल कहो समुझाय॥
तौ लौं रूपन दाखिल हुइगये * औ राजा को करी सलाम ॥
लौटि गर्दना नाहर कैसा * गंगाधर ने कही सुनाय ॥
केहिकी पाती तुम लै आये * अपनो हाल कहो समुझाय ॥
तापर ज्वाब दियो रूपन ने * तुम सुनिलेहु बुन्देले राय ॥
आल्हा ऊदनि महुबे वारे * जो मरिबे को नाहिं डेरायँ ॥
लेन गौनमाँ जैचन्द आये * अगुआ करे बनाफर राय ॥
पाती बाँची गंगाधर ने * आँकुइ आँकु नजरिकरिजाय॥
गुस्सा हुइ के गंगाधर ने * फिरि रुपना ते कहो सुनाय ॥
धामन जाइ कहो आल्हा ते * जो निज कुशल चहैं महराज ॥
चुप्पै लौटि जायँ अपने घर * नाहिंत भङ्ग होय सुखराज ॥
जौ लौं आल्हा रहैं यहाँ पर * तौ लौं गौन होन को नायँ ॥
इतनी सुनिके रुपना लौटो * औ लश्कर में पहुँचो आय ॥
हाल सुनायो सब जैचन्दको * सुनतै आल्हा गये रिसाय ॥
रिसहा हुइके ऊदनि बोले * बूँदी शहर लेहु लुटवाय ॥
जो गति कीन्ही है माड़ौ की * सो बूँदी की करौं बनाय ॥
तब समुझाओ नृप जैचन्दने * धीरज धरौ लहुरवा भाय ॥
अपनो कलमदान मँगवायो * पुनि यक चिट्ठी लिखी बनाय॥
स्वस्ति श्री सकल गुणखानी * सुनिये नृपति बुँदेले राय ॥
नीकी साइति पर गौना दै * हर्षित करहु चित्त ममआय ॥
बैर की बातैं तुम मति गावौ * यामें भली होन की नायँ ॥

तुम मति बँहको बहकाये से * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
जो शुभगुणराजन में चहिये * सो सब इसमें परत लखाय ॥
बड़े बड़े राजन घर ये व्याहे * जैसे भूप पिथौरा राय ॥
ताते मानौ कही हमारी * जल्दी गौना देहु कराय ॥
इतनी बातैं जैचन्द लिखिके * औ रूपन को दई गहाय ॥
लैके पाती रूपन चलिभो * औ बूँदी में पहुँचो आय ॥
करी वन्दगी गंगाधर को * पातो गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके पाती राजा बाँची * आँकुइ आँकुनजरि करिजाय ॥
लौटि जवाब लिखे चिठियाको * पढियो याहि कनौजी राय ॥
गौनों सहज होन को नाहीं * चाहे कोटिन करौ उपाय ॥
पहिले भगाय देहु आल्हाको * पाछे गौना लेहु कराय ॥
जाति बनाफर की ओछी है * ताते यह हुइबे को नाहिं ॥
ऐसी बातैं लिखि गङ्गाधर * चिट्ठी रूपनै दई गहाय ॥
रूपन चलिभये गढ बूँदीते * औ लश्करमाँ पहुँचो आय ॥
खोलि के पाती गङ्गाधर की * सो जैचन्द को दई गहाय ॥
लैके पाती जैचन्द बाँची * आँकुइ आँकु नजर करिजाय ॥
पाती बाँचत परलै हुइ गइ * गुस्सा गई बदन में छाय ॥
कारी पुतरियाँ सुर्खी हुइगई * पुनि आल्हा ते कही सुनाय ॥
फौज सजाय लेहु जल्दी ते * बूँदी शहर लेहु घिरवाय ॥
इतनी सुनि लइ मराडरीक ने * तुरत नगड़ची लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो तुनि आल्हा ने * लश्कर डंका देहु बजाय ॥
हुक्म पायके चलो नगड़ची * तुरतै डंका दियो वजाय ॥
जितने क्षत्री थे लश्कर में * सो सब साजि भये तैयार ॥
मुर्चा बन्दी करि ऊदन ने * पहिले तोपैं दईं लगाय ॥

इतते फौजैं कनवज वारो * उतते फौज बुँदेले क्यार ॥
दोनों फौजैं डटीं बरोबरि * एकते एक शूर सरदार ॥
सन्मुखफौज देखि कनवज में * गंगाधर ने कही सुनाय ॥
बत्ती दै देउ मेरि तोपन माँ * इनपाजिन काँ देउ उड़ाय ॥
इतनी सुनिके झुके खलासी * औ तोपन पर पहुँचे जाय ॥
दगी सलामी दोनौं दल में * लश्कर रही अँधेरिया छाय ॥
अररर अररर गोला छूटै * सनसन तीरनकी घमकान ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो * तोपैं लाल बरन हुइ जाय ॥
माळबन्द तोपन की हुइ गइ * रहिगयो तीन कदम मैदान ॥
दोनों फौजें संगम हुइगौ * घूमिके चलन लगी तरवार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै * बोलै छपकि छपकि तरवार ॥
चलै उनऽ्ची औ गुजराती * औ तरवारि पिहानी क्यार ॥
पैदल के संग पैदल अभिरे * औ असवारन से असवार ॥
हौदाके सँग हौदा अड़िगयो * ऊपर पेश कब्ज की मार ॥
चारि कोस के चौफेरा में * चारो ओर चलै तलवार ॥
बीर बहादुर झुके सिपाही * कायर भजन लगे भयखाय ॥
मुचँन मुचँन नचै बेंदुला * ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ॥
भागि न जैयो कोइ मोहराते * रखियो धर्म महोबे क्यार ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ * तुम सब भैया लगौ हमार ॥
जीतिके चलिहौ जब बूँदी ते * दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
दैके पानी रे चत्रिन कौं * ऊदनि आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही रे कनवज के * अन्धाधुन्ध करैं तरवार ॥
उत्तर पाटी आल्हा घेरो * दक्खिनघेरो उदयसिंह राय ॥
पूरब घेरो ढेबा बहादुर * पश्चिम सैयद पहुँचे जाय ॥

चारो ओर ते घिरे बुन्देले * रण में कठिन मचो संग्राम ॥
लश्कर चारि लाख बूँदी को * महुवे वार न कियो तमाम ॥
लश्कर भाजो रे बूँदी को * सारी फौज गई बिल्लाय ॥
यह गति देखी जब मोती ने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जायके पहुँचे वै ऊदनिढिग * औ मोती ने कही सुनाय ॥
दस दस रुपया के नौकर हैं * नाहक डरिहौ मुण्ड कटाय ॥
हम तुम खेलैं समरभूमि में * दुइ में एकु आँकु रहिजाय ॥
यह मन भाय गई ऊदनिके * तुरतै घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
लई कमनियाँ तब मोती ने * औ तरकस ते तीर निकार ॥
हियरा डाटो वघऊदन को * छाँड़ो तीर सुमिरि करतार ॥
आवत तीर लखो ऊदनि ने * तुरत वेंदुला दियो उड़ाय ॥
खाली वार गयो मोती को * ऊदनि सन्मुख पहुँचे आय ॥
खैंचि सिरोही लइ मोती ने * सो ऊदन पर राखी जाय ॥
ढाल अड़ाय दई ऊदनि ने * उनकी टूटि शिरोही जाय ॥
मोती सोचैं अपने मनमाँ * हमरो काल रहो नियराय ॥
तौ लौं ऊदनि सन्मुख पहुँचे * ढालकि औझड़ दई चलाय ॥
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी * मोती गिरे धरणि भहराय ॥
डाण्ड बाँधि लइ तब ऊदनिने * औ लश्करकों दओ पठाय ॥
देखि दशा यह मोतीमल की * कुँवर जवाहिर पहुँचे आय ॥
पुनि रिसखाय वीर हुंकरो * करमें नग्न लई तलवार ॥
तौ लौं ढेवा सन्मुख पहुँचो * औ यह तुरतै कही पुकारि ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है * हमसे खेलौ युद्ध अघाय ॥
इतनी सुनतै कुँवर जवाहिर * औ ढेवा पर पहुँचे आय ॥
तेगा तानि दियो शिर ऊपर * मनमें सुमिरि कालिका माय ॥

पै नहिं बार लगो ढेबा के * तुरतै दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
तीनि शिरोही हनि २ मारी * उनकी टूटि शिरोही जाय ॥
खाली मूठि हाथ में आई * तबहिं जवाहिर कियो विचार ॥
अब ना बचिहैं प्राण हमारे * हम पर रूठि गयो करतार ॥
कावा दैके तब ढेबा ने * तुरतै कियो ढाल को वार ॥
खाय तमारो गिरो अचानक * गङ्गाधर को राजकुमार ॥
डंड बाँधि के तब ढेबा ने * औ लश्कर को दियो पठाय ॥
जीतिको डङ्का तब बजवायो * अपनो मुर्चा दियो फेराय ॥
लश्कर भाजो बूँदी वारो * सारी फौज गई बिल्लाय ॥
दोनों लड़िका गङ्गाधर को * महुबे वारेन लिये बँधाय ॥
वाही दिवस भूप गाँजर के * सब बूँदी में पहुँचे जाय ॥
डेरा गाड़ि दिये धूरे पर * चहुँदिशि तम्बु परै दिखाय ॥
पाइ खबरिया गंगाधर ने * बँधि गये दोनों पुत्र हमार ॥
लड़ेन जितिहैं हम आल्हा से * हुइहैं फौज बृथा सब छार ॥
सोचिसमुझि के नृपगंगाधर * देवि को मढ़ी पहूँचे जाय ॥
अस्तुति करन लगे देवी की * जै जगदम्ब मातु सुखदाय ॥
आजु विपत्ती हमरे परि गइ * माता हम पर होहु सहाय ॥
पुत्र हमारे दोनों बँधि गये * अब यह संकट देहु मिटाय ॥
आभा बोली तब देवी की * तुम सुनि लेहु बुन्देले राय ॥
तुम बिन काज बैर नृप ठानो * ऐसा तुमहिं मुनासिब नायँ ॥
आल्हा अम्मर हैं दुनियाँ में * यह बर दियो शारदा माय ॥
लड़ेन जितिहौ तुम आल्हासे * यहनृप समुझि लेहु मनमायँ ॥
आज्ञा नृपति हमारी मानहु * बेटी को बिदा देहु करवाय ॥
सुनि के बातैं ये गंगाधर * मनमें बहुत गये समाय ॥

आज्ञा शीश धारि देवी की * रहिगये सन्मुख माथ नवाय ॥
राजा चलिभै रंग महल को * देवी स्वर्ग लोक को जाय ॥
आवत देखो पति अपने को * रानी उठी भरहरा खाय ॥
हाथ जोरि के विनतीकीन्ही * बालम पैयाँ परों तुम्हार ॥
बड़े लड़ैया देवै वारे * जिनके बाँट परी तलवार ॥
तेहिते मानौ कही हमारी * वेटी विदा देहु करवाय ॥
यह मन भाय गई राजा के * तुरतै बीच कचहरी जाय ॥
लैके कागद कलमी वालो * पुनि यक पाती लिखीबनाय ॥
सिद्ध श्री सकल गुण खानी * श्री जैचन्द नृपति सर्दार ॥
करौं प्रणाम जोरियुग पाणी * सब विधि कुशल करै करतार ॥
पुत्र हमारे तुमने बाँधे * उनकी मुश्कै देहु खोलाय ॥
दूजी करिहैं ना तुम्हरे संग * अबहीं गौना दिहैं कराय ॥
ऐसो अघोनी लिखि पातीमें * पुनि धामन को दई गहाय ॥
लैके पाती धामन गमनो * औ तम्बू में पहुँचो जाय ॥
हाथ जोरि के करी बन्दगी * पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके पाती जैचन्द बाँचो * मनमें बहुत खुशी हुइ जायँ ॥
तुरत बुलायलियो आल्हाको * पढ़िके पाती दई सुनाय ॥
आल्हा बोले तब जैचन्द से * तुम सुनि लेउ कनौजी राय ॥
मुश्कखोलिदेउदोउलरिकनकी * अब ना राखौ देर लगाय ॥
इतनी सुनिकै नृप जैचन्दने * तुरतै मुश्क दई खुलवाय ॥
मोतीजवाहिर दोनौंचलिभए * सो बूँदी में पहुँचे जाय ॥
हुक्म दै दियो गंगाधर ने * सब सामान लियो मँगवाय ॥
मंगल होन लगे महलन में * पुनि शुभ वेदी दई रचाय ॥
भयो बुलौआ तबलाखनिको * सब बूँदी में पहुँचे जाय ॥

आल्हा ऊदनि जैचन्द ढेबा * गंगा आदि शूर सर्दार ॥
वीर भदावर और रुहेले * आये संग रठूर पमार ॥
बिदा कराय लई कुसुमा की * आगे पलकी दई पठाय ॥
चली पालकी जब बूँदी से * ऊदन मोहरैं दईं लुटाय ॥
पाँच लाख दाइज नृप दीन्हां * सो छकड़न माँ लियो भराय ॥
कूच कराय दियो बूँदी ते * औ कनवज में पहुँचे जाय ॥
पलकी आई दरवाजे पर * तिलका परछन करी बनाय ॥
बहू उतारि भवन लै आई * दान दाक्षिणा दई बँटाय ॥
जितने भूप न्योतहरी आये * तिनकी बिदा दई करवाय ॥
यहिविधिगौनभयोलाखनिको * सो शिवचरणदओ समुझाय ॥
आल्हा मनौआ आगेलिखिहौं * सो सब सुनियो कानलगाय ॥

* इति लाखनि का गौना समाप्त *



* श्रीः *

* अथ *

आल्ह खंड

* आल्हा मनौआ *

* सुमिरनी *

* आल्हा *

सुमिरणकरके गणनायक को * शिवशंकर के चरण मनाय ॥
लिखतमनौआ अब आल्हाको * हितसों सुनहुसुमिरि रघुराय ॥
छाँड़ि महोबे गढ़ कनवज में * आल्हा छाय रहे उतजाय ॥
माहिल सोचे इत उरई में * महुबो नगर लेहुलुटवाय ॥
चलि भये माहिल गढ़ उरई से * पहुँचे पृथीराज दरबार ॥
करी बन्दगी महराजा को * तब उन चौकी दई डराय ॥
आवौ बैठो राजा माहिल * औ सब हाल देउ बतलाय ॥
बोले माहिल महराजा से * सूनो हुइगौ नगर महोब ॥
ऊदनि चले गये कनवजको * चलिके लूटि लेउ करवाय ॥
बात मानिके पृथीराज ने * तुरतै हुक्म दियो करवाय ॥
बजै नगाड़ा हमरे दल में * सिगरी फौज होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब दिल्ली में * लश्कर तुरत भयो तैयार ॥
ताहर चन्दन मोती बेटा * इन तीनों को लयो बुलाय ॥
तीनों त्यार भये जल्दी से * अपने घोड़न भए सवार ॥
आदि भयंकर हाथी साजो * तापर चढ़े बोर चौहान ॥
सातलाख सबलश्करसजिगो * कूच नगाड़ा दओ बजाय ॥

चलिभौ लश्कर गढदिल्ली से * डङ्का होत गोल में जाय ॥
सात दिना को धावा करिके * गढ महुबे में पहुँचे जाय ॥
महुबो घेरो चहूँओर से * ना कोउ आय जाय बहिराय ॥
कीरति सागरकी पारिन पर * तम्बू तने पिथौरा क्यार ॥
तब बुलवाय लओमाहिल को * औ पिरथी ने कही सुनाय ॥
अब तुम जावो रङ्गमहललौं * औ मल्हनासे कहौ सुनाय ॥
डाँड़ भराय देउ जल्दी तुम * नहिं लुटि जैहैं नगर महोब ॥
इतनी सुनतै माहिलचलिभये * औ मल्हना तै पहुँचे जाय ॥
अंटा परसे फौज देखिकै * नीचे उतरि परी तत्काल ॥
हाल सुनाओ तब राजा को * तौ लौं माहिल पहुँचे आय ॥
बोले माहिल रानि मल्हना से * भेजो हमहिं बीर चौहान ॥
यह कहि पठई पृथीराज ने * हमरो डाँड़ देयँ भिजवाय ॥
डाँड़ पठैहौ ना हमरो जो * तौ हम महुबो लिहौं लुटाय ॥
यह सुनिमल्हना रोवनलागी * औ माहिलसे कही सुनाय ॥
यह कहि दीजो पृथीराज से * ऐसी कही मल्हनदे रानि ॥
मुहलति दै देउ बारहदिन की * तेरहें डाँड़ दिहैं भरवाय ॥
इतनी सुनतै माहिल लौटे * औ पिरथी ते पहुँचे जाय ॥
हाल सुनायदियो मल्हनाको * मानो बात पिथौरा राय ॥
आधो रात समय आओ जब * मल्हना पलकी भई सवार ॥
साथ लै लओ हरकारा को * पहुँचो जगनेरी में जाय ॥
गौ हरकारा जगनायक तै * औ मल्हना को कहो हवाल ॥
आये जगनायक द्वारे पर * तब मल्हना ने कही सुनाय ॥
सात लाखसे चढो पिथौरा * घर घर महुबो लियो घिराय ॥
फाटक बन्दी उन करवाई * सो तुम विपदा देउ मिटाय ॥

खबरि सुनावो तुम आल्हाको * तब जगनिक ने दश्रो जवाब ॥
घोड़ा हरनागर हमको दै देउ * तौ हम तुरत कनौजे जायँ ॥
यह सुनि सङ्गलिये जगनिकको * मल्हना घरपर गई लिवाय ॥
ब्रह्मानन्द माहिल आए तहँ * जहँ पर हती मल्हनदेरानि ॥
बोली मल्हना ब्रह्मानन्द से * तुम हरनागर देउ मँगाय ॥
इतनी सुनतै ब्रह्मानन्द ने * तुरतै घोड़ा दश्रो मँगाय ॥
लैके कागज तब मल्हना ने * अपनो कलमदान मँगवाय ॥
रोयके लिखनलगीमल्हनातब * पढिश्रौ याहि लड़ैते लाल ॥
सात लाख से बढ़ौ पिथौरा * घर घर महुबे लश्रो घिराय ॥
याहि दिनाको हम पालो थो * को गाढ़े में ऐहौ काम ॥
सो तुम छाय रहे कनवज में * हमपर विपत परी यह आय ॥
बारह दिनको मुहलति दीन्ही * तेरहें लुटिहैं नगर महोब ॥
चिट्ठी बाँचत खन आवो तुम * तो बनि जैहैं काम हमार ॥
ऐसी पाती लिखि मल्हना ने * जगनायक को दई गहाय ॥
लैके पाती जगनिक चलिभये * औ घोड़ा पर भए सवार ॥
माहिल खबरि दई चौंड़ा को * चौंड़ा नदि बितवापर जाय ॥
घाट रुकाये सब चौंड़ा ने * जगनिक आय गये तेहिकाल॥
पहले घोड़ा हमको दै देउ * यह चौंड़ा ने कही सुनाय ॥
बोले जगनिक तब चौंड़ा से * आल्है खबरि सुनैहैं जाय ॥
लौटिके आवैं जब कनवज से * तब तुम घोड़ा लिश्रौ छिनाय ॥
लाल कमान लई चौंड़ा तब * औ जगनिकसेकही सुनाय ॥
चुप्पै उतरि परौ घोड़ा से * नहिं घोड़ा से दिहौं गिराय ॥
एँड़ लगाई हरनागर के * औ हौदा पर पहुँचे जाय ॥
सिरकी कलँगी लै चौंड़ा की * जगनिक उतरिगए वा पार ॥

तबहीं चौंड़ा लज्जित हुइ के * आपनो कूच गयो करवाय ॥
पहुँचे जगनिक जब कुड़हरि में * पेड़ी देखि बरगदा क्यार ॥
उतरे जगनिक तहँ घोड़ा से * तुरतै लीन्हीं जीन बिछाय ॥
घोड़ा बाँधि दयो बरगद में * औ तहँ सुखसे सोवनलागि॥
माली आयो त्यहि बगियाको * सो घोड़ा को देखन लाग ॥
जायके पहुँचो वह गंगा पै * औ गंगा को करी सलाम ॥
हाल सुनाओ त्यहि घोड़ा को * ऐसो घोड़ा लेउ मँगाय ॥
सुनतै गङ्गा गये बगिया में * औ घोड़ा को लाये चुराय ॥
जगनिक जागे जब सोवतसे * तब नहिं घोड़ा परो दिखाय ॥
खोजन लागे मन अपने में * पाछे लगो चौंड़िया राय ॥
सोई लैगो हरनागर को * तौ लौं टापैं परीं निगाह ॥
देखि चिन्ह तब उन टापनके * जगनिक कुड़हरिपहुँचेजाय ॥
पानी भरती पनिहारिन थीं * सो आपुस में लगीं बतान॥
गंगा लाये हैं घोड़ा यक * ऐसो कबहुँ न परो दिखाय ॥
कान अवाज परी जगनिगके * तब चलि गये राजदरबार ॥
समुहें पहुँचे जगनायक जब * तब गंगा ने कही सुनाय ॥
कहाँ से आये औ कहँ जैहौ * अपनो नाम देव बतलाय ॥
बोले जगनिक तब गंगा से * ठाकुर सुनौ हमारी बात ॥
हम आये हैं गढ महुबे से * आगे हम कनवजको जात ॥
लाये घोड़ा तुम बगिया से * सो तुम हमहिं देउ मँगवाय ॥
यह सुनि बोले गंगा ठाकुर * जगनिक बोलौ बात सम्हारि॥
तुम्हरो घोड़ा हम ना लाये * क्यों तुम हमहिं बनावतचोर॥
बोले जगनिक तब गंगा से * हमरो घोड़ा देहु मँगाय ॥
घोड़ा देहौ ना जो राजा * तौ मैं पेट्ट मारि मरि जाउँ ॥

गुस्सा हुइ के तब गंगा ने * जगनायक को लयो बँधाय ॥
आधी राति केर बीते पर * तहँ पर रानी परी दिखाय ॥
बोले जगनिक आधीनो से * रानी सुनो हमारी बात ॥
हम तो जात रहे कनवज को * ठाकुर घोड़ा लाये खुलाय ॥
जो यह सुनिहैं आल्हाऊदन * तुम्हरो कुंडहरि लिहैं लुटाय ॥
सोचिके रानी बोलन लागी * भोरहि घोड़ा दिहैं गहाय ॥
भोर होतखन घोड़ा मिलिगो * तापर जगनिक भए सवार ॥
सवालाखको कोड़ा रखिलो * तब जगनायक दयो जवाब ॥
कोड़ा के बदले गंगा ठाकुर * लौटत कुँडहरि लिहौं लुटाय ॥
चलिभैजगनिकगढ़कनवजको * पहुँचे तीनि रोज में जाय ॥
पूँछो जगनिक हलवाइन से * हमका आल्है देउ बताय ॥
ज्वाब दियो इक हलवाई ने * ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
एक तो आल्हा तेली है यहँ * दूजो नगर केर कुतवाल ॥
तीजे आल्हा गये गाँजर को * तहँवे जूझ गये मैदान ॥
लड़का ढाढ़निके आवत थे * तिनसे जगनिक लगेबतान ॥
आल्हा ऊदन कहँपर मिलिहैं * सुनिलड़िकननेदयो जवाब ॥
आल्हाऊदनरिजिगिरिमिलिहैं * सीधे चले जाउ तुम राह ॥
इतनी सुनतै जगनायक ने * पकरी राहरिजागिरी क्यार ॥
जाय पहूँचे जब रिजागिरिमें * औ फाटक पर पहुँचे जाय ॥
बोलो दरमानी जगनिक से * कहँसे आवन भयो तुम्हार ॥
बोलो जगनिक दरमानी से * आल्हे खबरि सुनावौ जाय ॥
जगनिक ठाढ़े हैं फाटक पर * हैं हरनागर पर असवार ॥
गयौ दरमानी तब फाटक पर * आल्हे खबरि सुनाई जाय ॥
बोले आल्हा दरमानी से * तुम्हरी अकिल गई हेराय ॥

होते जगनिक जो फाटकपर * तौ हरनागर औते फँदाय ॥
इतनी सुनिके धामन लौटो * औ जगनिकसे कही सुनाय ॥
ज्वाब दओ है यह आल्हाने * घोड़ा अपनो लावैं फँदाय ॥
एँड़ लगाई तब घोड़ा के * फाटक फाँदि गयो वा पार ॥
देखो आल्हा जगनायक को * उठिके छाती लओ लगाय ॥
बैठो जगनिक सावधान हुइ * अपनो हाल कहो समुझाय ॥
सुनतै पाती लै मल्हना को * आल्है तुरत दई पकराय ॥
खोलिके पाती आल्हा बाँची * मनमें बहुत गये घबराय ॥
पूछन लागे बघऊदन तब * दादा हाल देउ बतलाय ॥
बोले आल्हा तब ऊदन से * हमसे कछू कही ना जाय ॥
घर घर महुबो पिरथी घेरो * औ दशपुरवा दओ उजारि ॥
चिट्ठी लिखिके यक मल्हनाने * जगनिक हाथ दई भिजवाय ॥
हमहिं बुलाओ है मल्हना ने * राखो धर्म हमारो आय ॥
जल्दी जावो रंगमहल को * अबहीं होय रसोई त्यार ॥
सुनतै ऊदन महलन पहुँचे * औ देवै से कही सुनाय ॥
आये जगनिक गढ़ महुबे से * माता करो रसोई जाय ॥
लौटिके ऊदन गै आल्हा तै * तब जगनिक ने कही सुनाय ॥
फौज सजाय लेउ जल्दी से * औ चलिबे को होउ तयार ॥
भओ बुलौआ तब महलनसे * चलिके जेइँ लेउ ज्यौनार ॥
आल्हा ऊदन ढेबा इन्दल * औ जगनिकको संगलिवाय ॥
लैके गडुआ पाँचो चलिभै * औ चौका में बैठे जाय ॥
जेवन लागे जगनायक जब * तब सुधि आइ बीर मलिखान ॥
आँसू देखे जब देवै ने * तब जगनिकसे पूछन लागि ॥
काहे जगनिक तुम रोवतहो * गढ़ महुबे को कहौ हवाल ॥

पूछन लागी सुनमाँ रानी * तुम सिरसा को कहो हवाल ॥
बोले जगनिक तब सुनमाँ से * हमसे हाल कहो ना जाय ॥
रोय रोय के तब जगनिकने * सिरसा हाल दियो बतलाय ॥
सुनतै हा हाकार मचो तब * रोवन लगो सबै रनिवास ॥
आल्हा ऊदन इन्दन ढेबा * रोवन लागे शोर मचाय ॥
आए आल्हा तब द्वारे पर * घोड़न जीन दए उतराय ॥
जगनिक पहुँचे दरवाजे पर * औ आल्हा से लगे बतान ॥
जीन धराये थे घोड़न पर * सो काहे तुम दये उतराय ॥
गुस्सा हुइ तब आल्हा बोले * घटिहा बसत चन्देले राय ॥
खबरिपठाई ना हम पर कछु * मारे गये बीर मलिखान ॥
जियत न जै हैं हम महुबेको * सुनि जगनिकने कहोसुनाय॥
जो तुम चलिहो ना महुबेको * तौ हम देहैं प्राण गँवाय ॥
तौ लौं आई देवै माता * सो आल्हे समुझावन लागि ॥
बेटा चले जाउ महुबेको * राखौ धर्म चन्देले क्यार ॥
कहा बिगारो हम राजा को * जो भादों में दओ निकारि ॥
मलिखे मारे गए सिरसा में * नहिं तिनहूँ की करी सहाय ॥
हम ना जै हैं गढ़ महुबे को * चाहे कोटिन करौ उपाय ॥
पहुँची देवै तब ऊदन पै * बेटा जल्द महोबे जाउ ॥
हमने आल्हे बहुत बुझावो * सो नहिं मानत कही हमारि ॥
तापर ज्वाब दओ ऊदन ने * जेठो भाई बाप समान ॥
आल्हा भेजिहैं तो जै हैं हम * माता बचन करौ परमान ॥
कहा बिगारो थो राजा को * जो भादों में दओ निकारि ॥
रोई देवै तब बँगला में * लागी कहन तोख की बात ॥
होती बिटिया जो मेरी यक * केहु राजा को देती ब्याहि ॥

तेहिते छुम्मक मैं लै औती * औ महुबे को लेति बचाय ॥
बात लागि गइ यह देवै की * जैसे लगत करेजे बान ॥
तुरतै बोले बघऊदनि तब * माता मनिहैं बात तुम्हारि ॥
आल्हैछोड़दिहौं रिजिगिरि में * अकिले जैहौं नगर महोब०॥
यह कहि ऊदनि उठि ठाढ़ेभे * औ आल्हा तै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिके ऊदन बोले * दादा जल्द होउ तैयार ॥
तड़पे आल्हा तब ऊदन पर * ऊदन अकिलि गइ बौराय ॥
नाम न लीजो अब चलिबेको * हम ना जै हैं नगर महोब ॥
तमके ऊदन तब आल्हा पर * हमतो जैहैं नगर महोब ॥
फौज बाँटिदेउतुम आधी म्वहि * माया देउ तिहाई बाँटि ॥
इन्दल बेटा को हम ली हैं * अबहीं त्यारी लिहैं कराय ॥
हँसी खुशी से जो ना देहौ * तो मैं कठिन करौं तलवारि ॥
ढेबा समुझाओ आल्हा को * मानौ बात लहुरवा क्यार ॥
दूजी करिहौ जो ऊदन सँग * तौ सब जै हैं काम नसाय ॥
तापर ज्वाब दओ आल्हा ने * जान न दिहैं कनौजी राय ॥
बोले ऊदन तब आल्हा से * अबहीं जाउ कनौजी पास ॥
आज्ञा लै आवो राजा से * तब तुम महुबे होउ तयार ॥
सुनतै कसवाओ हाथी तब * तापर तुरतै भये सवार ॥
चलिभे आल्हा तब बँगलासे * जैचन्द पस पहूँचे जाय ॥
करी बन्दगी तब जैचन्द को * जैचन्द पास लओ बैठाय ॥
हाल सुनाओ गढ़ महुबे को * औ आल्हा ने कही सुनाय ॥
आये जगनिक हैं महुबे से * आज्ञा देउ जाउँ महराज ॥
बोले जैचन्द तब गुस्सा हुइ * आल्हा सुनो हमारी बात ॥
गेहूँ खाये हैं गाँजर के * औ यहँ कियो गंगजलपान ॥

खायके मोटे भये कनवज में * तब तुम घरको भए तयार ॥
सोनो पाये जो गाँजर के * सो सब महुबे दश्रो पठाय ॥
लेखा दै देउ जब गाँजर को * तो तुम नगर महोबे जाव ॥
यह कहिकैदि करो आल्हाको * औ तहँ पहरा दश्रो बिठाय ॥
रूपनै भेजो तब आल्हा ने * तुम ऊदन से कहो हवाल ॥
दौरो रुपना तब बँगला से * औ ऊदन पै पहुँचो जाय ॥
हाल सुनाओ तब बँगलाको * जल्दी जाउ उदैसिंह राय ॥
सुनतै ऊदन उठि ठाढ़े भए * औ जगनिकको संग लिवाय ॥
घोड़ा बेंदुला पर ऊदनि चढ़ि * जगनिक हरनागर असवार ॥
ऊदन जगनिकदोनौंचलिभये * औ फाटक पर पहुँचे जाय ॥
खबरि पायके राजा जैचन्द * द्वारे हाथी दए ढिलाय ॥
बोले ऊदन जगनायक से * इन हाथिन को देउ पछारि ॥
भाल लैके जगनायक ने * दोनौं हाथी दए पछारि ॥
कूदिके घोड़ा पर चढ़ि बैठे * फाटक निकरि गए वा पार ॥
दोनौं पहुँचि गए बँगला ते * जहँ दरबार कनौजी क्यार ॥
उतरे ऊदन रस बेंदुल से * औ जगनिकसे कही सुनाय ॥
तुम्हें बुलावैं जबहीं जैचन्द * तबहीं करिश्रो आय सलाम ॥
सात तवा जैचन्द गड़वाये * तिनपरसाँगि धमकिश्रो आय ॥
यह कहिऊदन आगे चलिभये * पहुँचे बीच कचेहरी जाय ॥
करी बन्दगी बघऊदन ने * औ जैचन्द से कही सुनाय ॥
चढ़ो पिथौरा दिल्ली वारो * घरघर महुबो लियो घिराय ॥
बड़ी बिपति में चन्देले हैं * आज्ञा देउ महोबे जायँ ॥
बोले जैचन्द तब ऊदन से * कोऊ तुम्हैं रुकैया नाहिं ॥
लेखो दै दो तुम गाँजर को * सूधे चले महोबे जाउ ॥

हाथ जोरि तब ऊदन बोले * मनमें समुझि लेउ महराज ॥
बारह बरस लड़े गाँजर में * तुम ना पाई एक छदाम ॥
लेखो माँगत हौ हमसे अब * बढ़िके बात करत हौ आज ॥
तीनि महीना तेरह दिन लौं * गाँजर लड़े गँजरहन साथ ॥
घोड़ा पपीहा घायल हुइगो * है जो सब कनवजके मोल ॥
जोगा भोगा नैनागढ के * दोनौं जूझि गये तहँ आय ॥
यहु लेखा है गाँजर वालो * तापर आल्हा लए बँधाय ॥
घोड़ा पपीहा के बदले में * हथिनी भुरुही लिहौं खुलाय ॥
जोगा भोगा के बदले में * लौहैं लाखनि संग लिवाय ॥
हँसी खुशी से ना देहौ जो * तौ मैं कठिन करौं तलवारि ॥
यह सुनि जैचन्द बोलन लागे * तुम सुनि लेहु उदयसिंह राय॥
करौ हँसौआ हमने तुमसे * सो तुम मानि गए सतिभाउ ॥
कौन खबरि लाओ महुबे से * ताको अबहिं लेउ बुलवाय ॥
भयो बुलौआ तब जगनिकको * सो समुहें पर पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी जब जगनिक को * तब हँसि कही कनौजी राय ॥
आवौ भैने चन्देले के * औ यह हमहिं देउ बतलाय ॥
क्या यह बख्तर माँगि के लाये * या काहू को लओ उठाय ॥
सुनतै ज्वाब दियो जगनिकने * तुम सुनि लेउ कनौजी राय ॥
माँगिके लाए ना काहू को * ना काहू को लओ उठाय ॥
बड़ बड़ योधा हमने जीते * तिनके बख्तर लए उठाय ॥
यह कहि तुरतै साँगि धमकी * सातौ तवा तोरि धँसिजाय ॥
देखत काँपि गए जैचन्द तब * मनमें गये सनाका खाय ॥
कैदिछाँड़िदइ तब आल्हा की * सो रिजगिरि में पहुँचे जाय ॥
जायके पहुँचे वह लाखनि पै * औ लाखनि से लगे बतान ॥

पृथीराज आये दिल्ली से * घर घर महुवो लग्नो घिराय ॥
पाती भेजी है मल्हना ने * हम महुबेको भये तयार ॥
सुनि हँसिलाखनिबोलनलागे * हमहूँ चलिहैं साथ तुम्हार ॥
पै तुम पूँछि लेउ माता से * यह सुनि चले उदैसिंहराय ॥
दोनौं पहुँचे रंगमहल में * औ तिलका को कियो प्रणाम॥
पूछो तिलका तब ऊदन से * कहाँ की त्यारी दई कराय ॥
बोले ऊदन तब तिलका से * माता यह महुबे को जात ॥
महुबे घेरो है पिरथी ने * मल्हना पाती दई पठाय ॥
सङ्ग हमारे लाखनि जैहैं * माता हुक्म देहु फरमाय ॥
बोली तिलका तब ऊदन से * बेटा सुनौ हमारी बात ॥
बारह रानिन को इकलौता * औ सोरह को सर्वसिंगार ॥
यही सहायक हैं जैचन्द के * कैसे जैहैं संग तुम्हार ॥
सुनते ज्वाब दियो ऊदन ने * माता सुनलो वचन हमार ॥
तुम्हें पियारे लाखनि राना * सो तुम घरमें लेउ बिठाय ॥
हमहीं भारु थे देवै के * जो गाँजर को दश्रो पठाय ॥
तीनि महीना तेरह दिन लौं * गाँजर कठिन करी तलवार ॥
बात राखि लइ हम जैचन्दकी * ठाढ़े पैसा लश्रो भराय ॥
इतनी सुनिके तिलका बोली * बेटा सुनौ हमारी बात ॥
तबलौं लड़िका मात पिताको * जबलौं नाहिं होत हैं ब्याह ॥
ब्याह भए पर तिरिया मालिक * त्यहिते पूँछि लेउ तुम जाय ॥
सुनतै लाखनि गे अटापर * कुसुमा हाथ जोरि भइ ठाढ़ ॥
स्वामी दिना में कैसे आये * सुनि लाखनि ने दश्रो जवाब॥
पिरथी चढ़ि आये दिल्ली से * औ महुबो को लश्रो घिराय॥
लश्कर त्यार भश्रो आल्हाको * संगै हमहूँ भए तयार ॥

आज्ञा लाये हम माता से * तुमहूँ हुक्म देउ फरमाय ॥
बोली कुसुमा तब लाखनिसे * स्वामी सुनौ हमारी बात ॥
महिना सावन को आवत हैं * सखियाँ गै हैं राग मलार ॥
बिना तुम्हारे कछु ना भै हैं * ताको करिहौं कौन उपाय ॥
तापर ज्वाब दियो लाखनिने * रानी सुनौ ध्यान से बात ॥
सावन महीना जबही आवै * तब तुम मात पिता घर जाय ॥
झूला झुलिऔ तुम नैहर में * लै लै अपने बिरन को नाम ॥
बोली कुसुमा हाथ जोरि तब * ओसन प्यास बुझत है नाहिं ॥
कंत तुम्हारे बिन देखे म्वहिं * चहुँ दिशि सूझपरत अँधियार॥
तुम्हरी त्यारी थी महुबे जो * तो क्यों लाए गौनमाचार ॥
पृथीराज घेरो महुबे को * तौ नहिं जारो कन्त हमार ॥
तुम घिरिजैहौ जब दंगल में * तबतुम करिहौ कौन उपाय ॥
पीठि परंतो ना भाई कोउ * जो असने में ऐहैं काम ॥
स्वामी साथ चलौं जो तुम्हरे * तौ गाढ़े में ऐहैं काम ॥
जहँ पर देखिहैं कठिन मोरचा * तहँ पर दैहैं साथ तुम्हार ॥
सुनतै ललकारो लाखनि ने * रानी लौटि जीभ मुँह दाबु ॥
तुम्हरो डोला सँग लेहैं जो * हँसिहै हमहिं सकल संसार ॥
चार घरी के हम पाहुन हैं * मनमें सोचि समुझि तुम लेउ ॥
डेढ पहर अंटा पर बीतो * नीचे खड़े उदयसिंह राय ॥
यह कहि लाखनि उठि ठाढ़ेभै * औ चलिबे को भए तयार ॥
हाथ जोरि बोली कुसुमा तब * कन्ता छोरि धरो हथियार ॥
स्वामी ठहर जाउ अंटा पर * हम ऊदनहिं दिहैं समुझाय ॥
बोली कुसुमा तब खिरकी ते * तुम सुनि लेउ उदयसिंह राय ॥
हठनहिं ठानो तुम स्वामीसँग * नहिं लै जाउ आपने साथ ॥

चुरियाँ हमरी अम्मर करिलेउ * इतनी बिनती मानि हमार ॥
कठिन लड़ाई नहिं कीन्हीं इन * ना कहुँ कठिन करी तरवार ॥
ताते मानौ बात हमारी * ना लै जाउ आपने साथ ॥
माया चहिये जो तुमको कछु * सो हम छकड़न देयँ भराय ॥
लश्कर चहिये जो तुमको कछु * तो हम लश्कर देयँ सजाय ॥
पै नहिं संगै लेउ बालम को * रहि रहि मेरो प्राण घबराय ॥
जो कहुँ स्वामी मारे जैहैं * बेड़ा कौन लगैहैं पार ॥
ऊदनि ज्वाब दश्रो कुसुमा को * रानी सुनौ हमारी बात ॥
पगिया पलटी राजघाट पर * गंगाकरी हमारे साथ ॥
ताते लाखनि संगै जैहैं * रखिहैं धर्म चन्देले क्यार ॥
रोयके कुसुमा बोलन लागी * मरिश्रो पूत दिवलदे क्यार ॥
जो मैं जनती स्वामी जैहैं * श्रौतै देतीं तुमहिं निकार ॥
डारि मोहनी मेरे बालम पर * भुरए लए महोबे जात ॥
आल्है डसैजाय बनसाँपिनि * औ ऊदनहिं कालिया नाग ॥
भरी जवानी इन्दल मरियौ * जिन यह जोड़ी दई छुड़ाय ॥
सुनतै गुस्सा हुइ ऊदनि ने * लाखनि रानै कहो सुनाय ॥
अब हम लाखनि तुमको जाना * अंटा छोरि धरौ हथियार ॥
देखिके रानी को मुख मोहे * रणमें कस करिहौ तरवारि ॥
जब सुधि ऐहैं घर रानी की * तब धरि दिहौ ढालतरवारि ॥
सुनतै लाखनि कायल हुइगे * झटै उठे चलन के काज ॥
बोले लाखनि तब रानी से * रानी सुनौ हमारी बात ॥
अब हम रहिहैं ना अन्टा पर * हमको पलपल होत अबेर ॥
दामन पकड़े कुसुमा ठाढ़ी * औ लाखनिसे कही सुनाय ॥
वही तो राजा पृथीराज हैं * डोला लश्रो संजोगिन क्यार ॥

गुस्सा हुइ लाखनि बोले तब * औ रानी को दओ जवाव ॥
चोराचोरो संयोगिन को * डोला लिये पिथौरा राय ॥
लैहैं बदलो हम ताहू को * तब छाती को डाहु बुताय ॥
तीनि बरसको मोर उमिरिथी * तब हम करते कौन उपाय ॥
डोला लैंहैंहम अगमा को * पद्मिनि मानौ बात हमार ॥
रोयके कुसुमा बोलन लागी * अब रोकनको कोन उपाय ॥
चटक चुनरिया ना मैली भइ * ना धोबी घर गयो पशेर ॥
लाज न छूटी इन नैनन की * बालम चले छाँड़ि परदेश ॥
अब के बिछुरे फिरिकबमिलिहौ * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
चारि महीना के बीते पर * पँचयें हेरिश्रो बाट हमार ॥
बोली कुसुमा तब लाखनि से * खालो परिगौ संग हमार ॥
संग तुम्हारो नौ दिन कीन्हों * अबना मिलिहौ कन्तहमार ॥
दओ दिलासा तब लाखनिने * रानी धरौ धीर मन माहिं ॥
बिना मौतके कोउ मरत नहिं * आये मौत मरत संसार ॥
काज पराये जो मरि जैहैं * हुइहैं जुगन २ लों नाम ॥
फिरिके कुसुमा बोलन लागी * नदिया खेलो जूझ अघाय ॥
काज सुधारो चन्देले को * पै यरु बचन करो परमान ॥
पाँव पिछारू को ना धरिओ * रखियो धर्म चन्देले क्यार ॥
जो मैं सुनिहौं भागे कनउजी * तौ मैं पेट्ट मारि मरि जाउँ ॥
तब हँसि बोले लाखनि राना * औ कुसुमा से कहो सुनाय ॥
इन्दर डोल जाय इन्द्रासन * औ शिवडोलि जाय कैलाश ॥
लाखनि लौटन के नाहीं हैं * चाहे धजी धजो उड़िजायँ ॥
बोली कुसुमा फिरिलाखनिसे * स्वामी मानौ बात हमार ॥
पाछे जैओ तुम महुबे को * परहुल दिया बुझाये जाव ॥

जो अन्टा से देखि परत है * ताको खटका हमहिं सिवाय ॥
सिहा ठाकुर परहुल वाले * ताको खटका देउ मिटाय ॥
ज्वाब दियो लाखनि राना ने * पहिले दिया दिहैं बुझवाय ॥
तब हम जैहैं गढ़ महुबे को * रानी बचन करौ परमान ॥
इतनीकहिकैलाखनिचलिभये * संगै चले उदयसिंह राय ॥
हुक्म दै दओ लाखनि राना * लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * क्षत्री सबै भए तैयार ॥
यहँते चलिभे लाखनि ऊदन * औ जैचन्द पै पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी लाखनि ऊदन * हाथ जोरिके कहौ सुनाय ॥
हँसी खुशी से आज्ञा दै देउ * जाते पूर्ण होय सब काम ॥
सोने सिंहासन जैचन्द बैठे * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
चारौ राजा गाँजर वाले * बारह कुँवर बनौधे क्यार ॥
मीरा सैयद बनरस वाले * दाढी रही तोंद पर छाय ॥
धनुआँ तेली लला तमोली * सबसे जैचन्द कही सुनाय ॥
तुमका सौंपतिहौं लाखनिको * फिरिके हमहिं मिलैओजाय ॥
सैयद बोले अलीअली करि * धनुआँ गंगा लई उठाय ॥
लला तमोली औ राजन ने * सबने गंगा लई उठाय ॥
जहाँ पसीना गिरै कुँवरको * तहँ दै दिहैं रुधिरकी धार ॥
पहले जुझिहैं हम खेतन में * ता पाछे से पुत्र तुम्हार ॥
ठाढी तिलका थी ड्योढ़ी में * त्यहि ऊदन से कही बुलाय ॥
तुमको सौंपतिहौं लाखनिको * इनको फेरि मिलैओ आय ॥
थाती सौंपै क्या क्षत्री को * जो रण चढ़के लोह चबाय ॥
पै हम बचन देत माता को * सो तुम बचन करौ परमान ॥
पहले जुझिहैं आल्हा ऊदन * पाछे जुझिहैं पुत्र तुम्हार ॥

भाई मानत हौं हिरदे से * सो तुम समुझि लेहु महरानि ॥
बार न बाँको इनको हुइहै * जबलौं जियै उदयसिंह राय ॥
इनती सुनिके रनि तिलकाने * भुरुही हथिनी लई मँगाय ॥
बाँह पकरिके तब लाखनिको * औ भुरुही से कही सुनाय ॥
तुमको सौंपतिहौं लाखनिको * तुमना धरिओ पाँव पिछार ॥
करिके रुचना तब लाखनिके * मस्तक पूजि दओ ततकाल ॥
पाँव अगारू धरि हथिनी ने * अपनो मस्तक दओ झुकाय ॥
चरण लागिके तब माताको * लाखनि हथिनी लई सजाय ॥
जायके बैठे जब हौदा में * कूचको डंका दो बजवाय ॥
दोनौं फौजैं एक मिल हुइके * संगे चले गणेश मनाय ॥
भोर होतखन तेहि परहुलमें * अपनो लश्कर दओ झुकाय ॥

सिँहा ठाकुरकी लड़ाई

* आल्हा *

पहुँचो लश्कर जब धूरे पर * तब लाखनि ने कही सुनाय ॥
बचन दओ है हम रानी को * परहुल दिया दिहैं बुझवाय ॥
इतनी सुनिके आल्हा बोले * लाखनि धीर धरो मनमाहिं ॥
लैके कागज कलपी वारो * आल्हा पाती लिखी बनाय ॥
लिखिके पाती हरिकाराको * सो दै दीन बनाफर राय ॥
गौ हरकारा तब परहुल में * औ लश्करमें पहुँचो जाय ॥
जहाँ कचहरी थी सिंहाकी * तहँ हरकारा समुहें जाय ॥
करी बन्दगी त्यहि सिंहाको * पाती गही दई चलाय ॥
खोलिके बाँची जब पाती वह * गुस्सा गई देह में छाय ॥

हुक्म दै दश्रो सिहा ठाकुर * लश्कर तुरत होय तैयार ॥
बाजो डंका तब परहुल में * लश्कर तुरत भयो तैयार ॥
कूच कराय दश्रो लश्कर को * औ धूरे पर पहुँचो जाय ॥
मुर्चा बन्दी करवाई तब * औ आगे बढ़ि कही सुनाय ॥
कौन शूरमा चढ़ि आश्रो है * सो समुहैं हुइ देइ जवाब ॥
दाबे घोड़ा ऊदन आये * औ सिंहाको करी सलाम ॥
आये लाखनि गढ़ कनवज से * औ महुबे को करो पयान ॥
चलो साथ तुम सजि लाखनिके * औ दीपक को देउ बुझाय ॥
सुनतै गुस्सा हुइ सिंहा ने * लश्कर हुक्म दश्रो करवाय ॥
आगि लगाइ देउ तोपन में * औ इन सबको देउ उड़ाय ॥
बत्ती लगि गइ सब तोपन में * धुश्रना रहो स्वर्ग में छाय ॥
दगी सलामी दोनों दल में * तोपैं छुटन लगीं ततकाल ॥
घरी चारि भरि गोला बरसो * ज्वानन खैंचि लई तलवार ॥
खट खट तेगा बाजन लागो * कटिकटिगिरनलागतहँ ज्वान॥
झुके सिपाही लाखनि वाले * सबके मारु मारु रट लाग ॥
भगे सिपाही सिंहा वाले * लै लै भागे अपने प्रान ॥
भजत सिपाही सिंहा देखे * आगे हथिनी दई बढ़ाय ॥
बोले सिंहा तब लाखनि से * हम तुम खेलैं जूझ अघाय ॥
खैंचि शिरोही तब सिहा ने * औ लाखनि पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाई लाखनि राना * तापर भश्रो जड़ाका श्राय ॥
टूटि शिरोही गइ सिंहा की * तब लाखनिने लश्रो बँधाय ॥
डँड बाँधि लइ जब सिंहाकी * आगे मुश्की दई बढ़ाय ॥
पहुँचे लाखनि सतखण्डा पर * लैके अपनी लाल कमान ॥
बाण मारके तेहि अटा से * तुरतै दीपक दश्रो गिराय ॥

लश्कर साथ लयो सिंहाको * औ सिंहाकी डाड छुड़ाय ॥
साथ लैलयो तेहि सिंहा को * लश्कर कूच दयो करवाय ॥

गंगा ठाकुर की लड़ाई

पहुँचो लश्कर जब कुँडहरिमें * कुँडहरि डेढ़ कोस रहिजाय ॥
बोले जगनिक तब ऊदन से * तुम सुनि लेउ उदैसिंहराय ॥
यह बगिया में हमरो गंगा * घोड़ा कोड़ा लयो चुराय ॥
जबहीं माँगन गये घोड़ा हम * हमरी लीन्हीं लैदि कराय ॥
करी अधीनी हम रानी से * घोड़ा अपनो लयो मँगाय ॥
सवा लाख को जो कोड़ा थो * सो नहिं दियो पमारे राय ॥
तब हम यहकहि चलि ठाढ़ेभे * लौटत कुँडहरि लिहैं लुटाय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलनलागे * औ लाखनि से कहा सुनाय ॥
कोड़ा मँगाय लिहैं गंगा से * नाहिं हम कुँडहरि लिहैं लुटाय॥
बोले लाखनि तब ऊदन से * धीरज धरौ उदैसिंह राय ॥
गंगा हमरे मामा लागत * उनको लिखिके दिहैं मँगाय ॥
यहकहिचिट्ठीलिखिलाखनिने * हरकाराको दई गहाय ॥
पहिले लिखिके सरनामा को * फिरि गंगाको लिखी सलाम ॥
मामा हमरे तुम लागत हो * ऐसी तुम हिमुनासिब नाहिं ॥
लावौ कोड़ा चन्देले को * सो जगनिकै देउ तुम आय ॥
दूजी करिहौ जो मामा तुम * तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
ऐसो पाती लै हरकारा * कुँडहरि बीच पहूँचो जाय ॥

जाय कचहरी में गंगा को * धावन झुकिके करी सलाम ॥
चिठ्ठी दीन्हीं सो गङ्गा को * गङ्गाधर पाती पढ़ी बनाय ॥
पाती बाँचत हुक्म सुनायो * लश्कर तुरत होय तैयार ॥
बाजो डंका तब कुंडहरि में * क्षत्री सबै भये तैयार ॥
हथिनी अपनी शेर सिंहिनी * सो सजवाई पँवारे राय ॥
तुरतै चढ़िके गङ्गा ठाकुर * लश्कर कूच दियो करवाय ॥
तीनि लाख लश्कर गङ्गा को * सो धूरे पर पहुँचो जाय ॥
आगे बढ़िके गङ्गा ठाकुर * समुहैं जाय कही ललकार ॥
कौन शूरमा चढि आयो है * सो समुहें हुइ देइ जवाब ॥
बढ़िके बोले लाखनि राना * मामा मानौ बात हमार ॥
मुँहजो लगिहौ तुम आल्हाके * कुँडहरि गर्द वर्द हुइ जाय ॥
तापर ज्वाब दियो गंगा ने * हैं क्या चीज बनाफर राय ॥
हुक्म दै दओ तब गंगा ने * तोपन आगी देहु लगाय ॥
झुके सिपाही तब तोपन पर * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनौं दल में * धुँआ रहो सरग मड़राय ॥
चारि घरी भरि तोपैं छुटीं * धैंधैं लाल बरन हुइ जायँ ॥
मारु बन्द करि तब तोपन की * ज्वानन खैंचि लई तलवार ॥
बढ़े सिपाही महुवे वारे * सबके मारु २ रट लागि ॥
भजे सिपाही गंगा वाले * अपने डारि २ हथियार ॥
लाखनि बढ़िगे तब आगे को * औ गंगा से कही सुनाय ॥
बात हमारी मामा मानौ * अबहूँ कोड़ा देउ मँगाय ॥
कही न मानी तब गंगा ने * आगे बढ़िके कही सुनाय ॥
आल्हा लौटि जाउ महुबे को * नहिं हम शीश लिहैं कटवाय ॥
हाथा बढ़ाओ तब आल्हा ने * औ गंगा से कही सुनाय ॥

कोड़ा मँगाय देउ ठाकुर तुम * नहिं अब खबरदार हुइ जाउ ॥
इतनी सुनिके गंगा ठाकुर * तुरतैं खैंचि लई तरवार ॥
चोट चलाई पुनि आल्हा पर * आल्हा लीन्हीं चोट बचाय ॥
हाथी बढ़ओ तब आल्हाने * लोहे साँकल दइ पकराय ॥
साँकल फेरी पचशावद ने * सब दल रैन बैन हुइ जाय ॥
तुरतै बाँधि लयो गंगा को * कुँडहरि खबरि पहूँची जाय ॥
पहुँचे ऊदल तब कुँडहरि माँ * लीन्हीं सबै बजार लुटाय ॥
सुनतै आओ बौना ठाकुर * कोड़ा आल्है दओ गहाय ॥
करी अधीनी त्यहि आल्हासे * तुम्हरो कोइ दुसरिहा नाहिं ॥
कोड़ा लैके तब आल्हा ने * जगनायक को दौ पकराय ॥
दंड खोलि दइ तब गंगा को * औ अपने संगलओ लिवाय ॥
फौज साथ में लै गंगा की * लश्कर कूच दओ करवाय ॥
नगर कालपी से बितवै लौं * लश्कर डेरा दओ डराय ॥
परी फौज दोनौं नदिया पर * झराडन रही लालरी छाय ॥
जगनिक बोले तब आल्हासे * मल्हनै खबरि देउ पहुँचाय ॥
खबरि न पैहैं जौलौं मल्हना * नाहीं करहिं अन्न जल पान ॥
सुनतै चिठिया लिखि ऊदनने * जगनायक को दइ पकराय ॥
लैके पाती जगनिक चलिभे * औ महुबे में पहुँचे जाय ॥
आई बाँदी दरवाजे से * औ मल्हनासे कही सुनाय ॥
जगनिक ठाढ़े दरवाजे पर * सुनतै द्वारे पहुँची आय ॥
हृदयलगायलियोजगनिकको * गद्गद् कराठ मल्हनदेरानि ॥
चिट्ठी लैके तब ऊदन की * जगनिक मल्हनै दई गहाय ॥
बाँची चिट्ठी बघऊदन की * मल्हना बहुत खुशी हुइजाय ॥
तुरत बुलाय लओ राजाको * सोऊ पाती बाँचन लाग ॥

आल्हा ऊदन इन्दल आये * आये सङ्ग कनौजी राय ॥
अब क्या करिहैं दिल्ली वाले * जो चढ़ि आये उदैसिंह राय ॥
मल्हना बिनती करिके बोली * इज्जति राखि लई करतार ॥
छिपिके सुनत रहे माहिल सब * सुनतै चले महिल परिहार ॥
पहुँचे माहिल तब बगिया में * औ पिरथी से लगे बतान ॥
आल्हा ऊदन लाखनि आये * लश्कर पड़ा आय मैदान ॥
घाट बयालिस सोलह घाटी * सो तुम जल्द लेउ रुकवाय ॥
इतनी सुनतै घाट रुकाये * अपनो पहरा दओ बिठाय ॥
बन्दोबस्त करिके चौंड़ा ने * सिगरे घाट दये रुकवाय ॥
कोउ न आय जाय बाहर को * इहिविधि महुवो लयो घिराय ॥
आल्हा मनौआ यह पूरा भयो * लिखिशिवचरणदओसमुझाय ॥

॥ इति आल्हा मनौआ सम्पूर्ण ॥



श्रीः

* अथ *

आल्ह खण्ड

नदिया बितवै की लड़ाई



[लाखनि विजय]

* आल्हा *

अलखनिरंजनकोसुमिरनकरि * लै परभात राम को नाम ॥
लिखौं लड़ाई नदि बितवापर * लाखनि केर घोर संग्राम ॥
घाट बयालिस पिरथी रोके * पाई खबरि बनाफर राय ॥
सोचि समुझि मनमें आल्हाने * सोने कलशा लयो मँगाय ॥
कलश सोबरनको आओ जो * सो तम्बू ढिग दियो धराय ॥
पाँच पान को बीरा लैके * सो कलशा पर दओ धराय ॥
बोले आल्हा तब तंबुआ में * अपनो दोनौं हाथ उठाय ॥
है कोउ क्षत्री दोनौं दलमें * जो बितवा पर पान चबाय ॥
इतनी सुनिके बहुतक क्षत्री * तेहि बँगला से गये बराय ॥
एक घरी बीरा को हुइगइ * तब आल्हा ने कही सुनाय ॥

गाँजर उसरी थी ऊदन की * नदिया उसरि कनौजी क्यार ॥
पान चबैहैं लाखनि राना * औ मुर्चा को दिहैं हटाय ॥
इतनो सुनतै लाखनि राना * उठिके बीरा लओ चबाय ॥
हुकम सुनाय दओ लश्करमें * जल्दी फौज होय तैयार ॥
बाजो डंका तब लश्कर में * क्षत्री तुरत भये तैयार ॥
भुरुही हथिनीपरचढ़िलाखनि * धनुआ तेली संग लिवाय ॥
राह पकरि लइ तब नदिया की * नदि बितवा पर पहुँचे जाय॥
बढ़िगौ लश्कर तब लाखनिकी * नदिया उतरि गओ वा पार ॥
हथिनो नौसै थीं लाखनि की * सातसै रहैं पिथौरा क्यार ॥
सोरह सै हथिनी जहँवा पर * सो सब लाखनि लई खेदाय॥
दौरत आओ हरकारा तब * औ चौंड़ा से कही सुनाय ॥
तुमतो यहँ गाफिल बैठे हो * आये उतरि कनौजी राय ॥
हथिनी खेदि लई सोरह सै * अपने दलमें दई पठाय ॥
इतनी सुनतै चौंड़ा चलिभये * लश्कर डङ्का दौ बजवाय ॥

चौंड़ा और लाखनि की लड़ाई

चढ़ि इकदन्ता पर चौंड़ा ने * आगे बढ़िके कही पुकार ॥
कौन शूरमा चढ़ि आओ है * नदी करो उतारा आय ॥
तापर ज्वाब दओ लाखनिने * लाखनि राना नाम हमार ॥
हम आये हैं गढ़ कनवज से * औ आल्हा हैं साथ हमार ॥
हम अब देखिहैं गढ़ महुबेको * तासे करो उतारा आय ॥

बोलो चौंड़ा तब लाखनि से * तुम सुनि लेउ कनौजी राय ॥
चढ़ो पिथौरा सात लाख से * घाट बयालिस लये रुकवाय ॥
चढ़िहैं लश्कर पृथीराजको * जब चौरासी बंब बजाय ॥
तब घिरिजैहो तुम लश्कर में * नाहीं रुकिहैं पाँव तुम्हार ॥
ताते तुमको समुझावत हौं * सीधे लौटि कनौजे जाउ ॥
तुरतै लाखन बोलन लागे * चौंडा ब्राह्मण बात बनाउ ॥
सूरज लौटैं धरती लौटै * लौटैं शेष नाग पाताल ॥
बचनहारि गये हम आल्हासे * ताते हम लौटन के नाहिं ॥
फिरिके चौंड़ा ने समुझाओ * लाखनि एक न मानी बात ॥
बातन बातन बतबढ़ हुइगो * औ बातन में बाढ़ी रार ॥
गुस्सा हुइगौ बहुतै चौंड़ा * मनसे बहुत गयो खिसियाय ॥
दैदेउ आगी इन तोपन में * औ इन सबको देउ उड़ाय ॥
झुके खलासी जब तोपन पर * तोपन बत्ती दई लगाय ॥
धुआँ उड़ानो आसमान लौं * सूरज रहे धुंधि में छाय ॥
घरी तीनि लौं गोला बरसो * तोपैं अग्नि बरन हुइजायँ ॥
छोड़िके तोपैं तब क्षत्रिन ने * अपनी खैंचि खैंचि तलवार ॥
बढ़े सिपाही दोनौं दलके * खटखट चलन लगी तलवार ॥
चारो राजा गाँजर वाले * बारह कुँवर बनौधे क्यार ॥
दबी बायसी कनवज वारी * रण में कठिन करैं तलवार ॥
गोल फूटिगो भर्रा परिगो * लश्कर रेन बेन हुइ जाय ॥
भगे सिपाही चौंड़ा वारे * अपने डारि डारि हथियार ॥
हाथी बढ़ाओ तब चौंड़ा ने * औ लाखनि से कही सुनाय ॥
हम तुम खेलैं रण खेतनमें * दुइमा एक आँकु रहिजाय ॥
यह मन भाई तब लाखनिके * आगे हथिनी दई बढ़ाय ॥

लै कमान बोलो चौंड़ा तब * लाखनि खबरदार हुइजाय ॥
कैवर छाँड़ो जब लाखनि पर * लाखनि लीन्हीं चोट बचाय ॥
भाला लीन्हों तब लाखनिने * मनमें सोचि कनौजी राय ॥
मस्तक मारो तब हाथी को * औ धरती पर दयो गिराय ॥
पाँव पियादे चौंड़ा रहिगो * तब लाखनि ने कही सुनाय ॥
पाँव पियादे को ना मारैं * ना भुइँ गिरो लेइँ हथियार ॥
भजत सिपाही को ना मारैं * हाथी दुसरो लेउ मँगाय ॥
चौंड़ा सोचो अपने मनमें * औ मुर्चा को दयो फिराय ॥

पृथ्वीराज और लाखनि की लड़ाई

सुमिरन करिके शिवशंकरको * लैके रामचन्द्र को नाम ॥
लिखौं लड़ाई पृथीराज की * लाखनि विजय करे संग्राम ॥
चलो सौंड़िया नदि बितवै से * पहुँचो पृथीराज ढिगजाय ॥
करी बन्दगी महाराज को * औ चौंड़ा को कहो हवाल ॥
घाट छुटिगये हैं चौंड़ा से * लाखनि करो उतारा आय ॥
इतनी सुनतै पृथीराज ने * ताहर बेटा लयो बुलाय ॥
वजै नगाड़ा हमरे दलमें * लश्कर तुरत होय तैयार ॥
बाजो डंका तब लश्कर में * चत्री साजि भये तैयार ॥
नौसै हाथी के हलका में * झूमत आदि भयङ्कर जाय ॥
लश्कर तीनि लाख पैदल हैं * संगै चार लाख असवार ॥
चारि घरी केरे अमला में * लश्कर खेत पहुँचो आय ॥

ताहर बेटा पृथीराज को * जो दलगञ्जन पर असवार ॥
बीसकदम जब लाखनिरहिगे * तब ताहर ने कही पुकारि ॥
कौन शूरमा चढ़ि आओ है * जिसने करो उतारो आय ॥
घाट बयालिस हम रुकवाये * तहँ क्यों फौज उतारा आय ॥
सुनतै ज्वाब दओ लाखनिने * बेटा सुनो पिथौरा राय ॥
हम रहवैया हैं कनवज के * औ लाखनि है नाम हमार ॥
महुबो देखन हम आये हैं * तुम क्यों घाट लये रुकवाय ॥
बोले ताहर तब लाखनि से * चुप्पै लौटि कनौजै जाउ ॥
काजतुम्हारो यहँ अटको नहिं * काहे प्राण गवैंहौ आय ॥
तापर ज्वाबदओ लाखनिने * हमतो जैहैं नगर महोब ॥
इतनी दूरि से हैं आये हम * मिलिहैं जाय रजा परिमाल ॥
अब हम लौटन को नाहीं हैं * चाहे प्राण रहै को जाय ॥
सुनिके हुकम दओ ऊदनि ने * तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर * तोपन थैली दई चलाय ॥
बड़िबड़ि तोपैं अष्टधातु की * सो लश्कर में गर्जन लागि ॥
अररर गोला छूटन लागे * कह २ करैं अगिनियाँ बान ॥
सननन गोली छूटन लागी * सरसर परो तीरकी मारु ॥
घरी चारि भरि गोला बरसो * हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
तोपैं धैं धैं लाली हुइ गईं * ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ॥
तुरतै छाँड़ि दईं तोपैं सब * चत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
खट खट तेगा बाजन लागो * बोलन लागि छपक तलवार ॥
चारि घरी भरी चली शिरोही * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
लौटो मुर्चा तब ताहर को * आगे बढ़े बीर चौहान ॥
नौ सै हाथिन के हलका में * झूमें आदि भयंकर ठाद ॥

सातलाख लश्कर पिरथीको * बीचमें घिरे कनौजी राय ॥
आठ कोस लौं चलै शिरोही * सबके मारु मारु रट लाग ॥
पैदल अभिरे तहँ पैदल सँग * औ असवारन से असवार ॥
झुरमुट हुइगौ सब शूरन में * ऊपर घसक महौतन क्यार ॥
भुरुही घिरिगइ तहँ लाखनिको * घेरो आय बीर चौहान ॥
मीरा सैयद धनुआँ तेली * औ सब भूप कनौजी क्यार ॥
मनमें डरिगये सब संगी तहँ * औ मुर्चा से गए बराय ॥
लौटन लागो है जब भुरुही * तब लाखनि ने कही सुनाय ॥
पूजो मस्तक थो माता ने * तब यह तुमसे कही सुनाय ॥
तुमको सौंपतिहौं लाखनिको * तुमना धरिहो पाँव पिछार ॥
सो तुम समुझ लेउ अपनेमन * औ तुम खबरदार हुइ जाउ ॥
एक आसरा अब तुम्हरो है * भुरुही रखियो धर्म हमार ॥
अकिलेघिरिगयेहमलश्करमें * अब तुम जौहर देउ दिखाय ॥
इतना कहिके साँकल लैके * सो भुरुहो को दई गहाय ॥
सुमिरन करिके अजैपालको * लके रामचन्द्र को नाम ॥
खैंचि शिरोही लाखनि राना * समुहें गोल गये समियाय ॥
जैसे भिड़हा भेड़न पैठे * ज्यौं बनसिंह बिडारै गाय ॥
तैसेइ लाखनि दल में पैठे * रणमें कठिन करैं तलवारि ॥
साँकल फेरो भुरुही हथिनी * सब दल रेन बेन हुइ जाय ॥
डेढ़ पहर भर चली शिरोही * नदिया बही रक्त की धार ॥
देवि शारदा दहिने हुइ गइँ * मुर्चा हटो पिथौरा क्यार ॥
अकिलेलाखनिकी डपटनमें * कोई कुँवर न आड़ै पाँव ॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले * अपने डारि डारि हथियार ॥
ढाल अड़ाये लाखनि राना * रणमें कहैं पुकारि पुकारि ॥

है कोइ चत्री गढ़ दिल्ली को * समुहैं अड़ै हमारे साथ ॥
राम बनावैं सो बनि जावै * बिगड़ी बनत बनत बनिजाय ॥
हियाँ की बातैं हियनैं छोड़ौ * अब आगे को सुनौ हवाल ॥
घोड़ा प्यावन रुपना बारी * नदि बितवापर पहुँचो जाय ॥
पानि लाल देखि नदियाको * तब ऊँचे चढ़ि देखन लाग ॥
बिजुली चमकै ज्यों बादल में * तसरण चमकि रहे तलवारि ॥
देखि हाल यह रुपना चलिभो * औ डेरन पर पहुँचो जाय ॥
देवै ठाढ़ी था तम्बू में * सो रुपना से पूछन लागि ॥
काहे अनमन हौ रूपन तुम * सो तुम साँचि देउ बतलाय ॥
बोलो रुपना तब उदास हुइ * माता कछु कहो ना जाय ॥
मनहि हमारे अस आवति है * मारे गये कनोजी राय ॥
बिकट लड़ाई भइ नदिया पर * नदिया बही रक्तकी धार ॥
खबरि मँगाय लेउ लाखनिकी * इतनो मानो कही हमार ॥
इतनी सुनतै देवै चलि भइ * औ आल्हा ते पहुँची जाय ॥
देखत आल्हा उठि ठाढ़े भै * औ माताको करी प्रणाम ॥
बोली देवै तब आल्हा से * बेटा सुनो हमारी बात ॥
सात लाख से चढ़ो पिथौरा * नदिया कठिन चलै तलवारि ॥
खबरिलैआवो तुम लाखनिको * इतनो मानौ कहो हमार ॥
बोले आल्हा तब देवैसे * नाहीं जानौ हाल तुम्हार ॥
गाँजर उसरी थी ऊदनिकी * नदिया उसरि कनौजीराय ॥
ताते समुझि लेउ माता तुम * क्योंहम जायँ लड़न के काज ॥
देवै चलिभइ तब तँबुआ से * औ ऊदन ते पहुँची जाय ॥
सूरत देखी जब माता को * ऊदन तुरतै कियो प्रणाम ॥
बोली देवै तब ऊदन से * बेटा सुनो हमारी बात ॥

साथ तुम्हारे लाखनि आये * सो तुम अकिले दए पठाय ॥
खबरि लैआवौतुम लाखनिकी * नदिया कठिन चलै तरवारि ॥
हम समझायो बहु आल्हाको * उन नहिं मानी बात हमार ॥
यह सुनि ज्वाब दओ ऊदनने * माता समुझि लेउ मनमाहिं॥
आल्हा पठवैं तौ जावैं हम * जेठो भाई पिता समान ॥
फिरि समझावौ रनिदेवै ने * बेटा सुनौ बात धरिध्यान ॥
रानी तिलका औ जैचन्द ने * सौंपो तुमहि मानि विश्वास॥
मित्र तुम्हारो मारो जैहैं * तुमको बार बार धिरकार ॥
कही न मानत तुम माताकी * हौ कलजुगहा पुत्र हमार ॥
हुक्म न मानौ तुम दोनौं ने * हमरे जीवन को धिरकार ॥
सुनिके ऊदन लज्जित हुइगये * औ माता से कही सुनाय ॥
हमहिंबुलाओनहिं लाखनिने * कैसे खबरि लेयँ हम जाय ॥
यह सुनि देवै उठि ठाढी भइ * औ सुनमा पै पहुँची जाय ॥
हाल सुनाओ सबलाखनिको * औ आल्हा को कहो स्वभाव ॥
यह सुनि सुनमा बघऊदनको * बाँदिहि भेजि लओ बुलवाय ॥
तुरत प्रणाम कियो ऊदन ने * सुनमाँ चौकी दई डराय ॥
बैठ ऊदन जब चौकी पर * तब सुनमाँ ने कही सुनाय ॥
माता देवैसी ना मिलि है * भाई न मिलैं वीर मलिखान ॥
मित्र कनौजी सो ना मिलिहै * चाहे धरौ सात औतार ॥
लावो खबरि जाय नदियाको * जहँ धिरि गये कनौजीराय ॥
नाहिं होय इच्छा तुम्हरी जो * तौ तुम सुनो हमारी बात ॥
भेष जनानो धरि बैठो घर * हमको देउ ढाल तलवारि ॥
अबहीं जैहैं हम नदिया पर * लैहैं खबरि कनौजी क्यार ॥
इतनी सुनतै ऊदन बोले * भौजी मनिहौं बात तुम्हार ॥

अब हम जैहैं नदिबितवा पर * लैहैं खबरि कनौजो क्यार ॥
चलिभये ऊदन तब तम्बुआसे * औ आल्हा तै पहुँचे आय ॥
हाथ जोरिके ऊदन बोले * दादा जल्दी होहु तयार ॥
घिरिगैलाखनिनदिबितवापर * लैहैं खबरि कनौजी क्यार ॥
सुनतै हुक्म दयो आल्हा ने * लश्कर तुरत होय तैयार ॥
बाजो डंका तब लश्कर में * चत्री साजि भये तैयार ॥
कूच कराय दयो लश्करको * लीन्हे साथ साठि असवार ॥
बढ़िगो ऊदन तब आगे को * मीरा सैयद मिले अगार ॥
पूछो ऊदन तब सैयद से * तुम लाखनिको कहो हवाल ॥
धनुआँ तेली मिलो राह में * मनमें बहुत रहो घबराय ॥
नौ सै हाथिन के हलका में * हैं घिरि गये कनौजी राय ॥
बोले ऊदन तब सैयद से * चाचा अक्किल गई तुम्हार ॥
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं थी * अकिले तजे कनौजी राय ॥
धनुआं कहन लाग सैयद से * पुछिहैं हाल कनौजी राय ॥
तिनको कवन जवाब दिहैं हम * जियतै हुइहै मरन हमार ॥
धनुआँ सैयद दोनों लौटे * औ बितवै पर पहुँचे जाय ॥
पहुँचे ऊदन रणखेतन में * समुहें गोल गये समियाय ॥
हियाँ की बातैं हियनै छाँड़ो * अब लाखनिको सुनोहवाल ॥
हटिगयो मुर्चा जब पिरथीको * तब बढ़ि कही कनौजी राय ॥
है कोउ चत्री गढ़ दिल्ली को * रण में लड़ै हमारे साथ ॥
समुहे देखो पृथीराज को * लाखनि तहाँ पहूँचो जाय ॥
टक्कर मारी तब भुरुही ने * आदि भयंकर दियो हटाय ॥
सोचै पृथीराज अपने मन * गरुई गाज कनौजी क्यार ॥
अपने गर की मोहन माला * पृथीराज ने लई उतारि ॥

हँसिके पहराई लाखनि को * औ यह कही बीर चौहान ॥
जैसेइ लड़िका रतीभान के * तैसेइ लड़िका लगौ हमार ॥
भुरुही लाओ हमरे दल में * मिलिके महुवो लेयँ लुटाय ॥
संग छाँड़ि देउ तुम आल्हा को * घटिहा वंश बनाफर क्यार ॥
उचित मित्रता है समान सों * ओछी संग मुनासिब नाहिं ॥
यह सुनि बोलेलाखनिराना * तुम सुनि लेउ पिथौरा राय ॥
धर्म क्षत्रियन के यह नाहीं * जो रण चढ़िकै घूसैं खाय ॥
हमरे मनमें यह भाई नहिं * जो तुम कही बीर चौहान ॥
सोचिसमुझि हमकरीमिताई * सो हम कबहुँ छोड़िहैं नाहिं ॥
यह सुनि गुस्सा हुइ पिरथीने * तब लाखनिसे कही सुनाय ॥
कबसे लाखनि भये तरवरिहा * तब कहँ गई रही तलवार ॥
लाये संयोगिन हम कनवजसे * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
सुनिके लाखनि बोलन लागे * तब कुछ उमिरि हमारी नाहिं ॥
तीनि बरसके हम बालक थे * तुम संयोगिन लाये चुराय ॥
ताको बदला हम लैहैं अब * तब छाती को डाहु बुताय ॥
इतनी सुनतै पृथीराज ने * करमें लीन्हीं तानि कमान ॥
तौ लौं ऊदन समुहें पहुँचे * खाली भुरुही परी दिखाय ॥
मनमें सोचे बघऊदन तब * मारे गये कनौजी राय ॥
हटिकै पाछे ऊदन देखो * तब लाखनि पर परी निगाह ॥
समुहें देखो पृथीराज को * करमें लीन्हें लाल कमान ॥
माथा हथेली पर धरि ऊदन * समुहें गये पिथौरा क्यार ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * हाथ जोरिके कही सुनाय ॥
ना चढ़ि आये राजा जैचन्द * ना चढ़ि आये रजापरिमाल ॥
लड़िकै लड़िका चढ़ि आये हैं * तिनपर लीन्हीं लालकमान ॥

यह सुनि लज्जितहुइपिरथी ने * हौदा धरि दइ लालकमान ॥
डाटो घोड़ा तब ऊदन ने * औ हौदा पर पहुँचे जाय ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं * नातरु जौहर देत दिखाय ॥
होत हमारे अस कोऊ ना * जो महुबे को लेहु लुटाय ॥
यह सुनि सोचे पृथीराज मन * है यह बली उदयसिंह राय ॥
यहमनसोचिसमुझिपिरथी ने * अपनो मुर्चा दियो हटाय ॥
रुधिरन बूड़े लाखनि राना * नाहीं कोउ सकै पहिचान ॥
लैके पटुका बघऊदन ने * पोंछी देह कनौजी क्यार ॥
चढ़िगये लाखनि तबभुरुहीपर * औ हौदा में बैठे जाय ॥
ऊदन चढ़िगये रस बेंदुला पर * तुरतै लाखनि बढ़े अगार ॥
तौ लौं लश्कर आल्हा लाये * नदिया बितवै के मैदान ॥
हल्ला करिदो सब क्षत्रिनने * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
बढ़े सिपाही दोनों दल के * खटखट चलन लगी तलवार ॥
धाँधू धनुआँ को मुर्चा थो * धनुआँ मुर्चा दओ हटाय ॥
घाट छूटिगो जब धाँधू से * साबस कही कनौजी राय ॥
रहिमत सहिमत को समुहोथो * हिरसिंहबिरसिंहदओ गिराय ॥
बंशगोपाल भूप दतिया के * मारो तिनहिं कनौजी राय ॥
लाये ताहर बेड़ा लश्कर * औ लाखनि तें पहुँचे जाय ॥
यक ललकार दई ताहर ने * लाखनि खबरदार हुइ जाय ॥
खैंचि शिरोही लइ ताहर ने * सो लाखनि पर दओ चलाय ॥
तीनि शिरोही ताहर मारी * लाखनि दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
लयो गुर्ज तब लाखनि राना * औ ताहर पर दओ चलाय ॥
लगो चपेटा जब घोड़ा के * ताहर घोड़ा दओ भजाय ॥
सोरह घाटी घाट बयालिस * लाखनि तुरतै लए छुड़ाय ॥

जीति को डंका बाजन लागो * घूमन लागो लाल निशान ॥
चलिभौ लश्कर तबलाखनिको * चन्दन बगिया पहुँचो जाय ॥
लागे तम्बू तहँ पिरथी के * तहँते रस्सा दए कटाय ॥
लूटि करन लागे चत्री सब * गालिब हुक्म कनौजी राय ॥
पृथीराज लौटे दिल्ली को * माहिल उरई करो पयान ॥
चलो सौंढ़िया यक बितवा से * औ महुबे में पहुँचो जाय ॥
खबरि सुनाई परिमालै को * नदिया चली विषमतलवारि ॥
सोरह घाटी घाट बयालिस * सो लाखनि लै लए छुड़ाय ॥
मुर्चा फेरि दश्रो लाखनि ने * दिल्ली गये पिथौरा राय ॥
सुनतै हुइ प्रसन्न राजा तब * ब्रह्मानन्दहि लियो बुलाय ॥
दगै सलामी गढ़ महुबे में * आये यहाँ कनौजी राय ॥
इतनो सुनतै ब्रह्मानन्द ने * बड़ि बड़ि तोपैं दईं जुताय ॥
बत्ती दैदइ उन तोपन में * छुँछी दगन सलामी लाग ॥
भेजो ब्रह्मा को तम्बुन में * संगै लाउ कनौजी राय ॥
हुक्म फेरिदो चन्देले ने * घर घर महुबो लेउ सजाय ॥
चलि भये मंत्री तब राजा के * कूँचा गली दए भरवाय ॥
कलश सोबरन की जोड़ी लै * सबके द्वारे दई धराय ॥
बन्दनवारैं घर घर बँधिगईं * झालरि लगे मोतियनक्यार ॥
रोशनचौकी बाजन लागी * कहुँ कहुँ बजन नगाड़ालाग ॥
खबरि हुइगई रानि मल्हना को * जीते जंग कनौजी राय ॥
पिरथी लौटि गये दिल्लीको * मनमें बहुत खुशी हुइ जाय ॥
सुनतै मल्हना बहुत खुशी भइ * औ सब सखियाँ लईं बुलाय ॥
बारह रानी चन्देले की * सो सब साजि भईं तयार ॥
बेटी चन्द्रावलि बहुत खुशीभइ * अपनो कीन्हों सकलसिंगार ॥

मल्हना रानी चन्देले की * मनमें बहुत खुशी हुइ जाय ॥
ढोलक बाजै ठौरन ठौरन * सखियाँ करैं मंगलाचार ॥
छाय लालरी गइ छज्जन पर * महुबो इन्द्रधाम दिखलाय ॥
आई सवारी तब लाखनिकी * औ सब साथ बनाफरराय ॥
सिगरे राजा संगमें आये * गलियारेन में पहुँचे जाय ॥
दगी सलामी गढ़ महुबे में * घर घर खुशी भये सब लोग ॥
जहँजहँ हुइकेलाखनि निकरैं * सखियाँ रहीं फूल बरसाय ॥
राजा जितने थे लाखनिसंग * महुबो देखि देखि रहिजायँ ॥
देखत शोभा गढ़ महुबे की * पहुँचे राजभवन ढिग जाय ॥
नगर महोबा लाखनि देखो * औ आल्हा से लगे बतान ॥
नगर महोबो इन्द्र धाम है * जामें बसत रजा परिमाल ॥
सुन्दर सुन्दर महल बने हैं * छौनी मोरपङ्ख की लाग ॥
रतन जटित खंभा लागे हैं * औ छज्जन पर नाचत मोर ॥
पहुँचि सवारी गइ लाखनिकी * द्वारे खड़ी मल्हनदे रानि ॥
भुजबल पूजे त्यहि लाखनि के * तुरत आरती धरी उतार ॥
रुचना करिदो सब लड़िकन के * सब पर आरति धरो उतारि ॥
चली सवारी फिरि लाखनिकी * आई जहाँ राजदरबार ॥
चरण लागिके चन्देले को * औ माथे से लए लगाय ॥
राजा सिगरे जो आये थे * तिनसों मिले रजा परिमाल ॥
मोह आयगो चन्देले को * नैना बही नीर की धार ॥
बातैं बहुत भईं आल्हा से * राजा बहुत गये शरमाय ॥
करी अधीनी परिमालै ने * बेटा रहौ खुशी के साथ ॥
पिरथी घेरत गढ़ महुबे को * सूनो जान मचावत रारि ॥

ब्रह्मानन्द मिले सबही से * बँगला खुशी रही बहु छाय ॥
करिके आदर परिमालै ने * सब काहू को दयो टिकाय ॥
आल्हा ऊदन गये पुरवा में * फिरि दशपुर को करो अबाद ॥
अनँद बधैया घर घर बाजी * सबकी राखि लई मरजाद ॥
भई लड़ाई जो बितवा पर * लिखि शिवचरणदई समुझाय ॥
आगे गौना है बेला को * सो हम लिखिके दिहैं सुनाय ॥

* इति नदी बितवै की लड़ाई सम्पूर्ण *



बेला के गौने की पहिली लड़ाई ।

(ब्रह्मा का घायल होना)

* दोहा *

श्री गिरजा पद सुमिरि उर, रघुपति पद शिरनाय ।
बेला को गौना लिखौं, दीजै नाथ सहाय ॥

* आल्हा *

बन्दन करिके शिवशंकर को * अरु हनुमत के चरण मनाय ॥
गुरुपद पंकज में मन लावौं * जिनकी कृपा दृष्टि सुखसार ॥
छोड़ि सुमिरिनी अब हियनाते * आगे लिखौं युद्ध को हाल ॥
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन * तेहि पर बैठ रजा परिमाल ॥
छत्रपती गढ़पति नरपती * बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
आल्हा ऊदनि ब्रह्मा ढेबा * लाखनि और महिल परिहार ॥
भरी सभा राजा की बैठी * मनमें सुखी चँदेले राय ॥
माहिल राजा जे उरई के * जरि जरि चित्तरहे दुखपाय ॥
औसर देखितुरत उठि बोले * तुम सुन लेहु चन्देले राय ॥
लड़िका बिछुरे तुम्हरे आये * ऐसी समय धन्य संसार ॥
संग में आये लाखनि राना * नाती बेनि चकवै क्यार ॥
बड़े बड़े राजा औ महराजा * हाजिर आजु सकल संसार ॥
ऐसी समय फेरि नहिं मिलिहै * यह मन समुझि लेहु सर्दार ॥
ताते मानौ कही हमारी * ऐसो समय मिलन को नाय ॥
गौना लैलेउ तुम ब्रह्मा को * अब ना राखहु देर लगाय ॥
यह मन भाई चन्देले के * होनी होत अधिक बलवान ॥
तुरत मँगाय लियो बीरा को * औ कलशापर दियो धराय ॥

फिरि उठिनृपतिकही क्षत्रिनते * बीरौ सुनियो कान लगाय ॥
है कोइ क्षत्री या बंगला में * जो गौने पर पान चबाय ॥
सुनिके बातैं ये राजा की * बँगला सुन्नसान हुइ जाय ॥
तड़पिके ऊदनगये कलशा पर * तुरतै बीरा लयो उठाय ॥
गौना करिहैं हम ब्रह्मा को * हमरो नाम उदयसिंह राय ॥
मोहरा मारौं बादशाह को * बहुअर बिदा लेहुँ करवाय ॥
यह गति देखतमाहिलराजा * जो सरनाम चुगुल परिहार ॥
कानमें बोले तब ब्रह्मा ते * तुम सुनिलेहु चन्द्र सरदार ॥
जाति बनाफर की ओछी है * जानत बात सकल संसार ॥
संग बनाफर को लै जैहैं * तौ दिन रात चलै तरवार ॥
तेहिते मानौ कही हमारी * तुम बीरा को लेहु छिनाय ॥
बीरा चाबौ तुम जल्दी से * नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
हम समुझै हैं पृथीराज को * तुम्हरो गौना दिहैं कराय ॥
भावी बश प्रतीत उर आई * ब्रह्मा बीरा लियो छिनाय ॥
आइ कायली गइ आल्हाको * ऊदन बहुत गयो शरमाय ॥
सीधे पाँसे गिरे माहिल के * मनमें हँसा चुगुल परिहार ॥
आल्हा ऊदनि दोनौं रूठे * दशपुरवा में पहुँचे जाय ॥
रंग भंग महुबे में हुइगा * ऐसा पड़ा कपट का दाँव ॥
दुखी चित्त हुइ आल्हा बोले * भैया सुनहु उदयसिंह राय ॥
घटिहा राजा है महुबे का * जाको नाम चन्देले राय ॥
हमना आवत थे कनवज से * तुमना मानी उदयसिंह राय ॥
आल्हा ऊदनि यहिविधि सोचैं * निशिदिनमनमहँकरैं बिचार ॥
कछुक दिवस यहिविधिसोंबीते * आए दिना गौनमाँ क्यार ॥
करी तयारी चन्देले ने * साजे ब्रह्मा राजकुमार ॥

जितनो लश्कर थो महुबे को * सो सब साजि भयो तैयार ॥
मल्हना रानी मन महँ सोचै * अबना बचिहैं पुत्र हमार ॥
आल्हा ऊदनि नाहीं रूठे * हम पर रूठि गयो करतार ॥
सोचि समुझिकैरनि मल्हनाने * तुरतै धामन दियो पठाय ॥
लाखनि राना कन्नवज वारे * तिनको मल्हनालियो बुलाय ॥
हुक्म सुनतही रनिमल्हनाको * लाखनि राना भये तयार ॥
जायके पहुँचो सिंहपँवरि पर * मल्हना छाँड़ि दई डिडकार ॥
लाखनि पूछैं रनिमल्हना से * माता हमैं देहु बतलाय ॥
कौन बिपत्ती तुमपर परगइ * जो तुम रोय रहिउ दुखपाय ॥
तबहें मल्हना बोलन लागी * बेटा सुनहु कनौजी राय ॥
आल्हा ऊदनि हम पर रूठे * अब हम करिहौं कौन उपाय ॥
मोहरा मारै पृथीराज को * को गौने को लेय कराय ॥
तब जवाब लाखनि ने दीन्हों * माता धीर धरौ मन माय ॥
गौन करै हैं हम ब्रह्मा को * अपनो सोच देहु बिसराय ॥
इतनीकहिकेलाखनिचलिभये * औ तम्बुअन माँ पहुँचे जाय ॥
हुक्म देदिया लाखनि राना * लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्कर में * तब दल सजा कनौजी क्यार ॥
कान अवाज परी ऊदनि के * रस बेंदुल पर भयो सवार ॥
जायके पहुँचो तेहि तम्बुआमें * जहँ पर बैठ कनौजी राय ॥
करी बन्दगी बघऊदनिने * दोनौं हाथ जोरि शिरनाय ॥
समुहें बैठि गये कुर्सी पर * फिरिलाखनिसे कही सुनाय ॥
कहौंकि त्यारी तुमने कीन्हीं * दादा हमहिं देउ बतलाय ॥
तब जवाब लाखनि ने दीन्हा * भैया सुनहु उदयसिंह राय ॥
मल्हना रानी हमहिं बुलाओ * रोय रोय हाल कहो समुझाय ॥

तब हम त्यार भये दिल्ली को * ब्रह्मा को गौना देहिं कराय ॥
तड़पि के ऊदनि बोलन लागे * दादा मेरे कनौजी राय ॥
घटिहा राजा है महुबे को * हमसे बीरा लियो छिनाय ॥
भरी सभा राजन की बैठो * कायल कियो हमहिं बुलवाय ॥
तुमना जावौ गढ़ दिल्ली को * नाहीं अटको काज तुम्हार ॥
संग हमारे तुम आये हो * ताते मानौ कही हमार ॥
अकिले दिल्ली जान न देहौं * चाहे कोटिन करौ उपाय ॥
सुनिके बातें ये ऊदन की * मनमें सोचि कनौजी राय ॥
बन्द कराय दियो डङ्काको * सबकी कमरैं दईं खोलाय ॥
अकिले ब्रह्मा करी तयारी * लश्कर साजि चन्देले राय ॥
कूच कराय दियो महुबेसे * अरु माहिलकाँ साथ लिवाय ॥
आठ रोजकी मंजिल करिके * गढ़ दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
डेरा डारि दिये धूरे पर * अपनो तम्बू दियो तनाय ॥
माहिलचलिभये तबलश्करसे * पहुँचे पृथीराज दरबार ॥
आवत देखो जब माहिलको * राजा चौकी दई डराय ॥
करी बन्दगी माहिल ठाकुर * औ चौकी पर बैठे जाय ॥
कुशल क्षेम पिरथीने पूँछी * तब माहिल ने कहो सुनाय ॥
कुशल कुशलिया है उरई में * बैठे राज करौं महराज ॥
ब्रह्मा आये हैं महुबे से * दिल्ली गौन लेन के काज ॥
डेरा डारे हैं धूरे पर * सो तुम समुझि लेहु महराज ॥
अकिलो ब्रह्मा हैं धूरे पर * सो सुनि लेहु पिथौरा राय ॥
जैसी मनसा होय आपको * तैसो करौ धनी चौहान ॥
तब जवाब पिरथी ने दीन्हों * माहिल सुनो हमारो बात ॥
पहिले गौना हमना करि हैं * रणमें खेलैं युद्ध अघाय ॥

ताके पीछे गौना करिहैं * सो सुनि लेहु माहिल परिहार ॥
इतनी बात सुनी पिरथी की * माहिल तुरत भये असवार ॥
जाइके पहुँचे वे धूरे पर * बैठ जहाँ ब्रह्म सरदार ॥
बात सुनाई जब माहिल ने * जो कछु कहा पिथौरा राय ॥
सुनतै ब्रह्माने चिठिया एक * तुरतै लिखी पिथौरा पास ॥
बीर शिरोमणि सब राजनमें * सुनिये बीर बंश चौहान ॥
बिदा कराय देहु बेटी को * अब ना राखहु देर लगाय ॥
जो ना मनिहौ कही हमारी * तो मैं दिल्ली लिहौं लुटाय ॥
मारि सिरोहिन के सुँहतोरौं * ठाढ़े बिदा लेहुँ करवाय ॥
ऐसी पाती लिख ब्रह्मा ने * सो धामन कों दई गहाय ॥
लैके पाती धामन गमनो * पहुँचो जहाँ पिथौरा राय ॥
करी बन्दगी हरिकारा ने * पाती गहो दई चलाय ॥
खोलिके पाती राजा बाँची * गुस्सा गई बदन में छाय ॥
चन्दन गोपी ताहर बेटा * चौंड़ा धाँधू लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दिया पृथीराज ने * जल्दी फौज लेहु सजवाय ॥
बाँधि लै आवहु तुम ब्रह्माको * अब ना राखहु देर लगाय ॥
हुक्म पायके पाँचो चलि भये * तुरतै डंका दियो बजाय ॥
चोब नगाड़ा के बाजतखन * लश्कर सबै भयो तैयार ॥
सुमिरन करिकै जगदम्बेको * ताहर कूच दओ करवाय ॥
कछुक देर केरे अरसा में * धुर खेतन में पहुँचे जाय ॥
तोपैं साजि धरीं चरखिनपर * मुर्चा बन्दो दई कराय ॥
कान अवाज परी ब्रह्मा के * डंका सुनो चन्देले राय ॥
हुक्म दैदियो निज फौजन में * जल्दो फौज होय तैयार ॥
जितने चत्री थे महुबे के * सो सब साजि भये तैयार ॥

कूच कराय दियो डेरन ते * औ खेतन में पहुँचे आय ॥
मुर्चा बन्दी दलकी करि के * ब्रह्मा घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
यक ललकार दई ताहर ने * औ ब्रह्मा से कही सुनाय ॥
कौन काज हितु तुम आये हो * काहे लायो फौज चढ़ाय ॥
तब जवाब ब्रह्मा ने दीन्हों * बेटा सुनहु पिथौरा राय ॥
बिदा करावन हम आये हैं * जल्दी देहु गौनमा चार ॥
इतनी सुनतै ताहर जरिगये * औ ब्रह्मा ते कही सुनाय ॥
बिदा न हुइहैं वह दिल्ली से * नाहक प्राण गमायो आय ॥
कही हमारी ब्रह्मा मानौ * चुप्पै लौटि महोबे जाउ ॥
तब जवाब ब्रह्मा ने दीन्हों * बेटा सुनहु पिथौरा क्यार ॥
मारि सिरोहिन के मुँह तोरौं * ठाढ़े लेउँ गौनमा चार ॥
इतनी सुनिके ताहर जरिगये * तोपन बत्ती दई धराय ॥
एक पहर भर गोला बरसो * तोपैं लाल वरन दिखलायँ ॥
मारु बन्द भइ तब तोपन की * रहिगयो एक कदम मैदान ॥
खैंचि सिरोही लइ क्षत्रिन ने * घूमिके चलन लगी तरवार ॥
तेगा चटकैं बर्दवान के * कटि२ गिरैं सुघर असवार ॥
चारि घरी भरि चलो सिरोही * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
भजे सिपाही दिल्ली वाले * अपने डारि डारि हथियार ॥
बढ़े महोबिया रे दङ्गल माँ * दोनौं हाथ करैं तलवार ॥
यह गति देखो जब गोपी ने * अपनो घोड़ा दओ बढ़ाय ॥
करो झड़ाका तब गोपी ने * ब्रह्मै लै गये चोट बचाय ॥
तीनि शिरोही गोपी मारी * उनके अंग न आयो घाय ॥
टूटि शिरोही गइ गोपी की * खाली मूठ हाथ रहिजाय ॥
करो झड़ाका तब ब्रह्मा ने * गोपी दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥

ढाल फाटि गइ गैंड़ा वाली * गद्दी कटि मखमलकी जाय ॥
छूटि जनेवा गओ गोपी को * धरती गिरे भरहरा खाय ॥
गोपी जूझत टोंडर देखे * तुरतै घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
पुनि रिसखाय बीर हुंकारो * सर में दई तड़पि तरवारि ॥
टूटि शिरोही गइ टोंडर की * बचि गये ब्रह्मा राजकुमार ॥
तौ लौं ब्रह्मा सन्मुख पहुँचे * ऊपर करी अचानक वार ॥
टोंडर बीर सम्हरि नहिं पायो * धरती गिरो सुमिरि करतार ॥
टोंडर गिरतै ताहरमल ने * तुरतै करो सामना आय ॥
गुर्ज चलाओ ब्रह्मानन्द पर * सो हरनागर गयो बचाय ॥
रिसहा हुइ के तब ताहर ने * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
सात वार ब्रह्मा पर कीन्हे * तबहूँ बचे ब्रह्म सरदार ॥
गुर्ज उठायो ब्रह्मानन्द ने * सो ताहर पर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा रे घोड़ा को * सारी देह गई सन्नाय ॥
घोड़ा भाजि चलो ताहर को * ना रोके से रुकी लगाम ॥
यह गति देखी जब चौंड़ा ने * मनमें सुमिरि सियावर नाम ॥
हाथी बढ़ाय दियो चौंड़ा ने * अपनी लीन्हीं गुर्ज उठाय ॥
सो धरि धमको ब्रह्मानन्द पर * ब्रह्मा घोड़ा गये नचाय ॥
खाली चोट गई चौंड़ा की * धरती गुर्ज गिरो अरराय ॥
तौ लौं गुर्ज लियो ब्रह्मा ने * सो चौंड़ा पर दियो चलाय ॥
घाव आइ गयो गज मस्तक में * हाथी बैठि खेत में जाय ॥
पैदल हुइगा चौंड़ा ब्राह्मण * औ मुर्चा से गयो बराय ॥
यह गति देखत धाँधू सोचै * औ निज हाथी दियो बढ़ाय ॥
गुस्सा हुइके तब धाँधू ने * अपनी दीन्हीं साँगि चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई ब्रह्मा ने * औ बचि गये चन्देले राय ॥
पुनिनिज गुर्ज लियो ब्रह्मा ने * सो धाँधू पर दियो चलाय ॥

लगो चपेटा रे हाथी के * हाथी खेत छोड़ि भगिजाय ॥
यह गति देखी जब ब्रह्माने * जीति को डंको दियोबजाय ॥
चौड़ा धाँधू ताहर भाजे * सो दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
हाल सुनायो सब लश्करको * सुनि भये दुखी पिथौराराय ॥
भेष जनानो बेटा धारौ * लहँगा लुगरी पहिरि बनाय ॥
डोली बैठि जाउ लश्कर को * यों ब्रह्मा से कहौ सुनाय ॥
डोला भेजो पृथीराज ने * तुम बेला को जाउ लिवाय ॥
गाफिल पावो जब ब्रह्मा को * तबहीं डंड लेहु बँधवाय ॥
ऐसी युक्ति सुनी ताहर ने * तब माहिल से कही सुनाय ॥
भेष जनानो हम ना धरिहैं * चाहे प्राण रहै की जाय ॥
तब जवाब चौंड़ा ने दीन्हों * हम धरि रूप मेहरिया क्यार ॥
जइके मरिहैं ब्रह्मानन्द को * सारो झगड़ा दिहैं मिटाय ॥
इतनी कहिके चौंड़ा चलि भो * पहुँचो रंगमहल में जाय ॥
लहँगाचुनरी चुरियाँ बिछिया * पहिरो हरषि चौंड़िया राय ॥
जहर बुझाई छुरियाँ लैके * सो कम्मर माँ लईं छिपाय ॥
उठी पालकी तब चौंड़ा की * लै लश्कर को भयो तयार ॥
ताके पीछे ताहर आवै * अपने घोड़ा पर असवार ॥
कछुक देर केरे अरसा में * पहुँचे जहाँ ब्रह्म सरदार ॥
ताहर भेजि दियो धामन को * ब्रह्मै खबरि सुनावौ जाय ॥
डोला भेजा पृथीराज ने * सो धूरे पर पहुँचो आय ॥
सुनिके बातें ये धामन की * अति खुश भये चन्देले राय ॥
घोड़ा हरनागर को मँगवाये * तापर फाँदि भये असवार ॥
ताहर बैठे जहँ डोला ढिग * पहुँचे तहाँ ब्रह्म सरदार ॥
बीस कदम ते ताहर देखो * तुरतै उठिके करी जोहार ॥
पुनि यह कहन लगे ब्रह्मा ते * बेटा सुनहु चन्देले क्यार ॥

गरुये नातेदार हमारे * ताते डोला दियो पठाय ॥
संगमें लाये हम डोला को * सो तुम बिदा लेहु करवाय ॥
सुनिकै बातैं ये ताहर की * ब्रह्मा मानि लई सतभाय ॥
तुरतैं उतरि परे घोड़ा ते * मन से वैर भाव बिसराय ॥
दुचितो देखो जब ब्रह्मा को * चौंड़ा निकरि परो हरखाय ॥
काढ़ि कटरिया जहर बुझाई * सो ब्रह्मा पर दई चलाय ॥
बायें घाव कोख में लागा * मस्तक तीर लगो पुनिश्राय ॥
दहिने साँगि हनी ताहर ने * ब्रह्मा धरणि गिरे मुरझाय ॥
तौलौं धाँधू गयो तहाँ पर * देखी दशा ब्रह्म सरदार ॥
रोष श्राइ गयो रे धाँधू को * पुनि ताहर से कही सुनाय ॥
लानति ऐसी रजपूतीको * तेगा बाँधन को धिक्कार ॥
लाज न श्राई तुम कहँ चौंड़ा * पैहौ विप्र नरक को धाम ॥
यह ना जनियो श्रपने मनमाँ * दिल्ली सोइहो टाँग पसार ॥
चढ़िकै ऐहैं श्राल्हा ऊदनि * मरिहैं बीनि बीनि सरदार ॥
सुनिकै बातैं ये धाँधू की * ताहर लीन्हों शीश नवाय ॥
जबाब न श्रायो कछु चौंड़ाको * सो दिल्ली को गयो बराय ॥
जबहीं ब्रह्मा गिरे धरणिपर * तुरतै जगनिक पहुँचे जाय ॥
तिन उठवाय लियो ब्रह्माको * तब जगनिकने कही सुनाय ॥
मुर्छा जागी जब ब्रह्मा की * तब ब्रह्मा ने कही सुनाय ॥
हम ना जैहैं गढ़ महुबे को * ताते खबरि देउ पहुँचाय ॥
इतनी सुनके जगनायक ने * महुबे खबर दियो भेजवाय ॥
मरहम पट्टी करि ब्रह्मा की * तीनों घाव दिये सिलवाय ॥
हियाँ की बातैं हियनै छोड़ो * श्रब दिल्ली की सुनो हवाल ॥
ताहर चौंड़ा धाँधू चलिभये * पहुँचे जहाँ पिथारा राय ॥
हाल बतायो तब ताहर ने * जेहि विधि गिरे चन्देलेराय ॥

खबरिपहुँचिगइरानिअगमाको * ब्रह्म हनो चौंड़िया राय ॥
रानी बिलखैं रंगमहल में * धुनि धुनि शीश रही पछिताय ॥
सुनी खबरिया रानि बेला ने * चौंड़ा मारे कन्त तुम्हार ॥
भूषण बसन तुरत तजि डारे * महलन छाँड़ि दई झिडकार ॥
महल छोड़िकेरनिअगमाको * पहुँची महल दूसरे जाय ॥
खाय पछार गिरै धरणी पर * धुनिधुनि शीशरही पछिताय ॥
हियाँकी बातैं तजि दिल्ली माँ * तनि महुवे को सुनो हवाल ॥
धामन पहुँचो गढ महुबेमाँ * बैठी जहाँ रानि परिमाल ॥
खबरि सुनाई हरिकारा ने * दिल्ली जूझे राजकुमार ॥
इतनी सुनतै गिरी धरणिपर * व्याकुल रोय उठी करि शोर ॥
धुनिधुनि छाती मल्हना रोवै * शिरको पटकै जार बेजार ॥
मल्हना रानी के रोइबे माँ * पक्के महल दरारा खाँय ॥
ऐसी बिपतो गढ़ महुबे माँ * बूते हाल कहो ना जाय ॥
हाय हाय करि रोवन लागे * बूडी नाव बीच मझधार ॥
खबरि पहुँच गइ दशपुरवामें * दिल्ली जूझे राजकुमार ॥
सुनवाँ फुलवा दिवला रानी * रोवन लागीं जार वेजार ॥
हाहाकार मचो महलन माँ * बिलखै सकल नगर नरनारि ॥
खबर सुनतखनआल्हा ऊदन * तिनहूँ छाँड़ि दई डिडकार ॥
हाय विधाता यह कैसी भइ * मारे गये चन्देले राय ॥
घटिहा राजा है दिल्ली का * जाको नाम पिथौरा राय ॥
ऐसेइ मारो इन मलिखे को * तैसेइ हनो चन्देले राय ॥
ऐसे ब्रह्मा घायल हुइगे * सो हम लिखिकेदओ सुनाय ॥
आगे युद्ध लिखौं ऊदन को * जिमिहनि गये बनाफर राय ॥

* इति पहिली लड़ाई (ब्रम्हा का घायल होना) समाप्त *

* श्रीः *

* अथ *

आल्ह खंड

बेलाके गौने की दूसरी लड़ाई।

(लाखनि, आल्हा, ऊदनि आदिकी चढ़ाई करना)

* आल्हा *

सुमिरण करिके जगदम्बा को * अरु विघ्न के चरण मनाय ॥
लिखौं लड़ाई अब दिल्ली की * जेहि विधि चढ़े बनाफरराय ॥
वेला त्रिलखे सतखरडा पर * मन अपने माँ करै बिचार ॥
सोचिसमुझिके मन अपनेमाँ * तुरतै कागद लियो मँगाय ॥
रोय २ पत्र लिखो ऊदनको * पढियो याहि बनाफर राय ॥
बड़े लड़ैया देवै वारे * जिनते हारि गई तरवारि ॥
हाथी पछारो दरवाजे पर * कीन्हों ब्याह चन्देले राय ॥
पै क्यों बैठि रहे गौने में * याको कारण कहो बुझाय ॥
होउ जो पैदा रनि देवै से * हमरो गौना लेहु कराय ॥
कसम खाइगये होउ गौनेको * तौ मैं जतन देहुँ बतलाय ॥
करो चौकरी तुम दिल्ली में * भरती करिहौं फौज बनाय ॥
ऐसी पाती लिखि बेला ने * हरिकारा को दई गहाय ॥
लैके पाती धामन चलि भयो * औ आल्हा को दई गहाय ॥
खोलिके पाती आल्हा बाँची * मन में बहुत गये घबराय ॥

तबहें ऊदनि पूछन लागे * दादा हाल देउ बतलाय ॥
तब जवाब आल्हा ने दीन्हों * पाती बेला दई पठाय ॥
तुमहिं बुलायो है दिल्ली माँ * हमरो आइ गमन लै जायँ ॥
लैकै पाती ऊदन बाँचो * फिरि आल्हा से कही सुनाय ॥
अब हम जैहैं गढ़ दिल्लीको * जल्दी फौज लेहु सजवाय ॥
फिरिसमुझायकहीलाखनिसे * दादा मेरे कनौजी राय ॥
जल्दी त्यार होउ दिल्ली को * अब ना राखौ देर लगाय ॥
इतनीसुनिकेलाखनिचलिभये * संगै भये लहुरवा भाय ॥
हुकमसुनाय दियो लश्कर में * जल्दी डंका देहु बजाय ॥
सोचिसमुझिकेलाखनिऊदन * कारी वर्दी दई रंगाय ॥
फिरि समुझायकही.चत्रिनते * चितदै सुनहु सकल सरदार ॥
जो कोई पूछै फौज कहाँको * तबकहि दियोगजरहनक्यार ॥
नाम न लीजो गढ़ महुबे को * कहियो हम दिल्ल को जायँ ॥
इतनी कहिके फौज रँगाई * औ दिल्ली को करी पयान ॥
रातदिनाकी मञ्जिल करिके * पहुँचे चारि रोज में जाय ॥
डेरा डारि दिये बागन में * अपने तम्बू दिये तनाय ॥
चौंड़ा ब्राह्मण बागन आयो * सो फौजनको रहो निहार ॥
सोचि समुझिके चौंड़ा पूँछे * अपनो हाल देहु बतलाय ॥
कहाँ से आये औ कहँ जैहो * सो सब हमैं कहौ समुझाय ॥
तब जवाब ऊदन ने दीन्हीं * गाँजर देश हमारो भाय ॥
हिरसिंह बिरसिंहनामहमारो * आये शहर आपके धाय ॥
सुनी चाकरी हम दिल्ली में * भरती होत दिना अरु रात ॥
बेला बेटी बादशाह की * ताकी करन चाकरी जात ॥
तब जवाब चौंड़ा ने दीन्हों * ठाकुर सोचौ हृदय मँझार ॥

करौ चाकरी तुम तिरियाकी * तुम्हरी अक्किलको धिक्कार ॥
राजा पृथीराज दिल्ली के * जिनको जानत सकल जहान ॥
करौ चाकरी तुम सब तिन्की * जो हैं शब्द बेधि चौहान ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे * औ चौंडा से कही सुनाय ॥
जहाँ नोकरी ज्यादा मिलिहै * तहँ हम करैं चाकरी जाय ॥
एक लाख जो प्रतिदिन मिलिहैं * तौ तो बनै हमारो काम ॥
तब जवाब चौंड़ा ने दीन्हों * पहिले पूछि लेयँ चौहान ॥
इतनो कहिकै चौंड़ाचलिभयो * पहुँचो बीच कचेहरी जाय ॥
हाल बताओ सब बगिया को * आई फौज गजरहन क्यार ॥
चारि दिना केरे भीतर माँ * सारो महुबो लेहु लुटाय ॥
नित २ चहिये लाख रुपैया * सो तुम सुनो बीर चौहान ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब * अबहीं नाम लेउ लिखवाय ॥
तुरत बुलाये लाखनि ऊदन * चिहरा लिखे पिथौरा राय ॥
हुक्म दै दओ महराजा ने * खटका हमहिं उदैसिंह क्यार ॥
गाँजर वारेन को बैठारो * बेला बेटी केर दुआर ॥
चौंड़ा बोलो बघऊदन से * हिरसिंह सुनो हमारी बात ॥
यही हुक्म है महराजा को * है जो महल बिलमदे क्यार ॥
तहँ तुम जावो दरवाजे पर * रहिओ बहुत खूब हुशियार ॥
बहुत खुशीहुइ लाखनि ऊदन * ढेबा सैयद संग लिवाय ॥
चौकी बैठे महल द्वार पर * तब हँसि कही कनौजीराय ॥
खालो बैठे से ऊदन अब * चौपड़ खेल नीक है आज ॥
लगे खेल करन दोनों तब * लै लै नाम बिलमदे क्यार ॥
कान अवाज परी बेला के * त्यहि बाँदो से कही सुनाय ॥
खबर ले आवो तुम द्वारेकी * पहरा कौन सिपाहिन क्यार ॥

रूपा बाँदी द्वारे आई * पूछन लगी सुनहु सरदार ॥
नाम आपनो बतलावो तुम * भेजा हमहिं विलमदे रानि ॥
बोले ऊदन तब बाँदी से * यह बेला से कहियो जाय ॥
गौनो लीबे ऊदन आये * बेला जल्द होउ तैयार ॥
सुनतै बाँदी दौरति आई * औ सब हाल दियो बतलाय ॥
बोली बेला तब बाँदी से * हम नहिं मनिहैं बात तुम्हार ॥
जायकै पूछौ तुम ऊदन से * व्याहको हाल देउ बतलाय ॥
लौटि के बाँदी द्वारे आई * औ ऊदन से कही सुनाय ॥
व्याहन आये थे भाई को * सो सब हाल देउ बतलाय ॥
यह सुनि बोले ऊदनबाँकुड़ा * रूपा बैठि जाउ कुछ काल ॥
लैकै कागज कलपी वारो * अपनी कलमदान लै हाथ ॥
पहले लिखिके सरनामा को * औ सब लिखो ब्याह को हाल॥
लिखिके पाती ऊदन बाँकुड़ा * रूपा बाँदिहि दई गहाय ॥
लैकै पाती बाँदी चलि भइ * औ बेला को दीन्ह गहाय ॥
पाती बाँची जब बेला ने * तब हिरदै से लई लगाय ॥
पठवो बाँदी को बेला ने * तुम ऊदन को लाउ लिवाय॥
आई बाँदी दरवाजे पर * ऊदन चलौ हमारे साथ ॥
ऊदन चलिभये तब भीतरको * आवत देखि विलमदे रानि॥
पूछन लागी उदयसिंह से * यह तुम हमहिं देउ बतलाय॥
व्याहन आये थे दिल्ली जब * गोरे रहे उदयसिंह राय ॥
अब क्यों चेहरा कालो परिगै * यह तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
तापर ज्वाब दओ ऊदन ने * गाँजर युद्ध कियो हम जाय ॥
तीनि महीना तेरह दिन लौं * गाँजर कठिन करी तलवार ॥
बखतर पहिरे रहे रात दिन * ताते बदन गओ करिआय ॥

असली बड़ा आल्हखण्ड



भार्गव भूषण प्रेस, काशी ।

बोलन लागी बेला रानी * ऊदन साँच देहु बतलाय ॥
रण के दुलहा तुम घर बैठे * हमरे कन्त दिये मरवाय ॥
तुम घटि कीन्हीं यह हमरे संग * अबहीं शाप देउँ जरि जाउ ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तब * माता सुनौ धर्म की बात ॥
बीरा उठायो हम गौने को * सो ब्रह्मा ने लओ छिनाय ॥
करी तयारी हम गौने की * माहिल उनहिं दओ बहकाय ॥
फैंट हमारी तब छुटवाई * अपनो अकिले करो पयान ॥
यह सुनि बेला बोलन लागो * तुम सुनिलेउ उदयसिंहराय ॥
पहलो जन्म भओ द्रौपदिको * अर्जुन भए चन्देले राय ॥
तहँ सब कौरव बैरी हुइगे * ना करि पाओ राज अघाय ॥
दुसरो जन्म मेरो बेला भो * मैं दिल्ली में प्रगटी आय ॥
बाप हमारे तहँ बैरी हुइ *.हमरे कन्त दए मरवाय ॥
बिना स्वामिके यहिजगअन्दर * सबदिशि अन्धकार दिखलाय ॥
जबलौं बैठी हौं नैहर में * यहँ सोने के मोल बिकाउँ ॥
राह में डोला जबछिनिजैहैं * तब कौड़ो के मोल बिकाउँ ॥
उमिरि तुम्हारी अति थोरी है * हमरो डोला दिहो छिनाय ॥
ज्वाब दओ तब बघऊदन ने * लाखनि राना साथ हमार ॥
देवा बहादुर महुबे वारो * लश्कर संग कनौजी राय ॥
धनुआ तेली रिजिगिर वारो * जाकी बेढ़ि बहै तलवार ॥
मीरा सैयद बनरस वाले * जिन नौ पूत अठारह नाति ॥
लश्कर आओ है महुबे से * जिन बागन में करो मुकाम ॥
सुनि बुलवाऔ रनि बेला ने * लाखनि सैयद पहुँचे आय ॥
बीरा बघऊदन ने * सो दोनौं ने लए चबाय ॥
बेला तब लाखनि से * हमरो डोला लिहौ फँदाय ॥

तुरतै उठिके लाखनि बोले * तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
सुहरा मरिहैं चौहानन को * तुरतै कंत दिहैं मिलवाय ॥
हँसि कै बेला बोलन लागो * औ लाखनि से कहो सुनाय ॥
लड़े न जितिहौ तुम दिल्ली महँ * लाखनि लौटि कनौजे जाव ॥
गरुई गाजैं पृथीराज की * तुम पर मार सहो ना जाय ॥
तापर ज्वाब दश्रो लाखनिने * तौ नहिं लाखनि नाम हमार ॥
मारिशिरोहिन चहला करिहौं * तुमको कन्त मिलैहौं जाय ॥
चोरा चोरी गढ़ कनवज से * संयोगिन को लाये निकारि ॥
सोई बदलो हम लैहैं अब * अगमाको डोला लिहैं फँदाय ॥
सुनि हँसि बोली बेला रानी * अब हम मानी बात तुम्हारि ॥
चोरा चोरी जो हम जावैं * तौ परिजाय भगेड़िन नाम ॥
नेगसमुझि देउ तुम नेगिनको * गौनेकी अधकर लेउमँगाय ॥
तब हम चलिहैं साथ तुम्हारे * यह सुनि उठे उदयसिंहराय ॥
तोड़ा चारि धरे सुहरन के * औ घोड़ा पर भये सवार ॥
बोले ऊदन तब लाखनि से * जल्दी डोला लेउ सजाय ॥
पहुँचि गये ऊदन तुरतै तब * जहँ दरबार बीर चौहान ॥
करो बन्दगी पृथीराज को * तोड़ा सुहरन धरे अगार ॥
अधकर चहिये अब गौनेको * यह नेगिन को देउ बँटाय ॥
बेला उमँगी हैं महुवे को * जैं हैं जहाँ चन्देले राय ॥
नाम हमारो बघऊदन है * यह सुनि कही पिथौराराय ॥
आवो बैठो तुम चौकी पर * अबहीं बिदा देहुँ करवाय ॥
दोउ कर जोरे तब ऊदन ने * पृथीराज को दश्रो जवाब ॥
तुम्हरी बराबरि जो बैठें हम * तौ क्षत्रियपन जाय नशाय ॥
पृथीराज ने दुइ कुण्डल लै * सो ऊदन के धरे अगार ॥

दोनौं कुण्डल लै जावो तुम * चन्देले को दिखावौ जाय ॥
चारो ओरी ऊदन देखे * क्षत्री होन लगे हुशियार ॥
कावा दैके रस बेंदुल को * भाला लओ हाथमें साधि ॥
नोक से लैके दोनौं कुण्डल * ऊदन घोड़ा दओ उड़ाय ॥
देखत रहिगये पृथीराज तब * पहुँचे द्वार उदयसिंह राय ॥
इतकी बातैं इत छाँड़ो तुम * अब बेला को सुनौ हवाल ॥
सजी पालकी जब बेला की * तब लाखनि से कही सुनाय ॥
गहनो रहिगो राजमहलमें * सो माता से लिहैं मँगाय ॥
मिलिके माता से ऐहैं हम * यह सुनि लाखनि भये सवार ॥
भुरुही हथिनी पर लाखनि हैं * सैयद धनुआँ संग लिवाय ॥
गई पालकी राजमहल में * अगमा छाती लओ लगाय ॥
बोली रानी तब ताहर की * ननदी सुनिलेउ कान लगाय ॥
होउ जो भूखी राजपाट की * कयहु राजा घर देउँ बिआहि ॥
इतनी सुनतै भौजाई ते * बेला अग्नि ज्वाल हुइ जाय ॥
होयँ जो बिटिया दिल्लीपतिके * सो मुगलन घर देयँ बियाहि ॥
हमपर मोहे ताहर भैया * हमरे कन्त दए मरवाय ॥
लानति ऐसी रजपूती पर * तेगा बाँधन को धिरकार ॥
रँड़िया हुइहैं सब दिल्ली में * परिहैं आसमान ते गाज ॥
यह कहि आई दरवाजे पर * औ पलकी पर भई सवार ॥
डोला बढाय दओ लाखनिने * तौ लौं आये उदयसिंह राय ॥
बेला पूछो तब ऊदन से * गौनेको अधकरदेउ दिखाय ॥
कहा बिदाई तुम ने पाई * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
दोनौं कुण्डल नवोलाख के * सो ऊदन ने धरे अगार ॥
देखिके बेला बहुत खुशी भइ * हो तुम बीर उदयसिंह राय ॥

सुनी खबरि जब पृथीराजने * लाखनि डोला लीन्हें जात ॥
तुरत बुलाय लओ चौंड़ा को * औ यह हुक्म दओ फरमाय ॥
छीनि लै आवो तुम डोलाको * हमरी नजर गुजारो आय ॥
फौज सजाय लई जल्दी से * औ डोला को घेरो जाय ॥
गुस्सा हुइ तब चौंड़ा बोलो * डोला अबहीं देउ धराय ॥
बोले लाखनि तब चौंड़ा से * डोला यह लौटन को नाहिं ॥
गुस्सा हुइके तब चौंड़ा ने * अपनो हुक्म दओ फरमाय ॥
डोला छीनि लेउ अबहीं तुम * इनको कटा देउ करवाय ॥
चली शिरोही तीनि घरी लौं * तहँ बहि चली रक्तकी धार ॥
भगे सिपाही दिल्ली वारे * देखत चौंड़ा बढ़ो अगार ॥
यक ललकार दई लाखनिको * समुहें दीन्हों गुर्ज चलाय ॥
खाय सनाका गये सैयद तब * औ लाखनि तें पहुँचे जाय ॥
बोले सैयद तब लाखनि से * काहे बदन गओ मुरझाय ॥
घाव न आयो कहुँ देही में * यह सुनि लाखनिकहीसुनाय ॥
गरुये चौंड़ा की धमकी में * हमरो बदन गओ मुरझाय ॥
बढ़िगयेलाखनि फिरिआगेको * औ चौंड़ा को दइ ललकार ॥
भाला मारो लाखनि राना * सो हाथी के लागो जाय ॥
गिरिगो हाथी तब चौंड़ा को * पैदल भयो चौंड़िया राय ॥
सुनी खबरि जब पृथीराजने * डोला नगर महोबे जात ॥
हाथी सजिगो आदि भयंकर * तापर चढ़े वीर चौहान ॥
कूच कराय दओ लश्करको * मारू डङ्का दौ बजवाय ॥
कछुक दूरि जब डोला रहिगो * पृथीराज ने कही सुनाय ॥
कौन शूरमा डोला लाओ * सो समुहें हुइ देइ जवाब ॥
आगे बढ़ितब लाखनि बोले * हम डोला लै महुबे जात ॥

बोले पृथीराज लाखनि से * तुम क्यों प्राण गमाये आय ॥
तापर उवाब दओ लाखनिने * अब तुम समुझि लेउ महराज ॥
पगिया बदली हम ऊदन से * गंगा करी बनाफर साथ ॥
इतनी सुनतै पृथीराज ने * लश्कर हुक्म दओ करवाय ॥
डोला छीनि लेउ इनसे तुम * सबकी कटा देउ करवाय ॥
बढ़े सिपाही दोनों दल के * क्षत्रिन खैंचि लईं तरवार ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै बिलायति क्यार ॥
तेगा चटकै बर्दवान के * कटिकटिगिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
लाखनि बोले तब धनुआँ से * भैया बहुत रहेउ हुशियार ॥
तुमको डोला मैं सौंपति हौं * यह कहि लाखनि बढ़े अगार ॥
सांकल लैकै तब लाखनि ने * सो भुरुही को दई गहाय ॥
सांकल फेरी तब भुरुही ने * लाखनि खैंचि लई तलवार ॥
लाखनिधनुआँ कांधमकिन में * लश्कर रैन बैन हुइजाय ॥
भजे सिपाही दिल्ली वारे * अपने डारि डारि हथियार ॥
बोले पिरथी तब धाँधू से * डोला अबहीं लेहु छिनाय ॥
बढ़िगे धाँधू तब आगे को * अपनी लीन्हों गुर्ज उठाय ॥
सोधरिधमकिदियो धनुआँपर * धनुआँ लैगो चोट बचाय ॥
मारो भाला फिर धनुआँ के * धनुआँ उतरिपरो भुइँ आइ ॥
रोई बेला तब डोला में * तुम कहँ गये उदयसिंहराय ॥
कान अवाज परी लाखनिके * सो धनुआँ तै पहुँचे आय ॥
गोदी उठाय लओ धनुआँ को * हँसिके धीरज दओ बढ़ाय ॥
एँड़ लगाई तब घोड़ी के * औ हौदा ढिग पहुँचो जाय ॥
भारी चोट करी धनुआँ ने * सोने कलशा दये गिराय ॥
डोला छीनि लई धाँधू से * सो लाखनि तै राखी आय ॥

यह गति देखी जब अङ्गद ने * अपनो घोड़ा दओ बढ़ाय ॥
राजा अङ्गद चोट चलाई * औ धनुआँ को दओ भगाय॥
देखो लाखनि तब सैयद तन * चाचा खबरदार हुइ जाउ ॥
सैयद दौरे अलो अलो करि * औ जल्दी से पहुँचे जाय ॥
सेल चलाओ तब सैयद ने * भूरा मुगलहि दओ भगाय ॥
दुचितौ देखो जब सैयदको * ताहर डोला लओ उठाय ॥
लाखनि बढ़िगै तब आगेको * ताहर घोड़ा गए भगाय ॥
सेल धमको लाखनि राना * औ ताहर को दइ ललकार ॥
यह गति देखी पृथीराज ने * आदि भयङ्कर दओ बढ़ाय ॥
ऊदन लड़त रहे सुर्रा पर * देखत तुरत पहूँचे आय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * हाथ जोरि के कही सुनाय ॥
हाथ न डरिओतुमलाखनि पर * ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहि ॥
यहसुनिसोचिसमुझिमन मेंकछु * अपनी धरि दइ लाल कमान ॥
आगे बढ़िके तब मुरही ने * आदि भयंकर दओ हटाय ॥
जायके पहुँचे तब तम्बू ते * जहँ पर रहैं चन्देले राय ॥
यहो लड़ाई पूरन हुइ गइ * लिखिशिवचरणदई समुझाय ॥

इति बेलाके गौनेकी दूसरी लड़ाई सम्पूर्ण ।



* श्रीः *

आल्ह खंड

बेला और ताहर की लड़ाई

* ताहर का स्वर्गबास *

* आल्हा *

सुमिरन करिके रामचन्द्र को * लै बजरंग बली को नाम ॥
लिखौं लड़ाई अब बेला को * ताहर केर भओ सुरधाम ॥
जौन से तम्बू में ब्रह्मा थे * बेला तहाँ पहूँची जाय ॥
सूरत देखी ब्रह्मानन्द की * मनमें बहुत गये घबराय ॥
धीरज धरके लई आरती * सो ब्रह्मा पर धरी उतारि ॥
हाथ बिजनियाँ लै फूलनकी * पति पर लागी करन बयार ॥
फिरि पुकारि बोली बेला तब * जोगी जागौ कन्त हमार ॥
जगी मूर्छा तब ब्रह्मा की * औ बेला तन रहे निहार ॥
देखि सामुहें बघऊदन से * ब्रह्मानन्द ने कही सुनाय ॥
कौन नारि यह छलि लाये हो * सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोली बेला हाथ जोरि तब * मैं दासी हौं नारि तुम्हारि ॥
हौं मैं बेटी दिल्ली पति की * औ बेला है नाम हमार ॥
बोले ब्रह्मा तब गुस्सा हुइ * घटिहा वंश पिथौरा क्यार ॥
मुख दिखराओ आय वृथा यहँ * यहि तम्बू से देउ निकार ॥
बोली बेला आधोनी से * स्वामी मानौ बात हमार ॥
दोष हमारो कछु नाहीं है * हम पर रूठि गओ करतार ॥
हुक्म तुम्हारो अब होवै जो * सोई करौं चन्देले राय ॥
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागे * रानी सुनौ बचन मन लाय ॥

शीश लै आवौ जो ताहरको * तौ जी जाय चन्देले राय ॥
इतनी सुनतै बेला बोली * घोड़ा अपनो देउ मँगाय ॥
पाग बैजनी अपनी दै देउ * औ दै देउ ढाल तरवार ॥
तौ हम लैहैं शीश काटिके * स्वामी बचन करौ परमान ॥
हमको आज्ञा पंहले दै देउ * की हम देखैं नगर महोब ॥
पाँव लागिहैं हम सासू के * औ वह भूमि मँझहैं जाय ॥
आल्है बुलवाओ ब्रह्मा ने * औ आल्हा से कही सुनाय ॥
डोला संगै तुम लै जावौ * महुबो नगर देउ दिखलाय ॥
बात मानिके सुनि आल्हाने * अपनो हाथी लओ सजाय ॥
डोला मँगवाओ बेलाने * तापर चढी विलमदे रानि ॥
चलिभौ डोला रानि वेला को * संगहि आल्हा चले अगार ॥
सुनो हाल जब पृथीराज ने * चौंड़ा ब्राह्मण लये बुलाय ॥
नारे रुकरिहा पर डोला को * तुम आल्हा से लेउ छिनाय ॥
हुक्म पाय तब चले चौंड़िया * औ लश्कर में पहुँचो जाय ॥
जल्द सजाय फौज थोड़ीसी * आल्है घेरो चौंड़िया राय ॥
जातै हुक्म दओ चौंड़ा ने * मारिके आल्हा देउ भगाय ॥
सुनतै हल्लाकरि क्षत्रिन ने * तुरतै खैंचि लई तलवार ॥
गज पचशावद तब चिग्घारो * सुनि लइ गुँज कनौजी राय ॥
बोले लाखनि तब ऊदन से * तुम सुनि लेहु उदयसिंह राय ॥
हाथी घिरिगो है आल्हा को * जल्दी खबरि लेउ तुम जाय ॥
सुनतै ऊदन घोड़ा सजायो * तापर फाँदि भये असवार ॥
घिरोदेखिके तब आल्हा को * घोड़ा बेंदुला दओ बढ़ाय ॥
ऊदन ललकारे चौंड़ा को * औ गजमस्तक पहुँचे जाय ॥
ढालकि ओंझड़से ऊदन ने * सोने कलशा दये गिराय ॥

मुर्चा लौटि गयो चौंड़ा को * ऊदन डोला दयो बढ़ाय ॥
सुनो हाल जब यह पिरथी ने * लश्कर तुरत लयो सजवाय ॥
कूच कराय दयो लश्कर को * श्रौ नारे पर पहुँचे जाय ॥
देखी लश्कर पृथीराज को * लाखनि अपनी फौज सजाय ॥
कूच कराय दयो लश्करको * श्रौ नारे पर पहुँचे आय ॥
हल्ला हुइगो दोनों दल में * क्षत्रिन खैंचि लई तरवारि ॥
खट २ तेगा बाजन लागो * हाहा कारी बीतन लाग ॥
कबहूँ डोला पिरथी छीनैं * कबहूँ लेयँ कनौजी राय ॥
घोड़ा बढ़ाय दिश्रो ऊदन ने * पृथीराज के समुहें जाय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को * हाथ जोरि के कही सुनाय ॥
जब लौं रहिहैं जीव देह में * तबलौं लड़िहौं साथ तुम्हार ॥
हमना हटिहैं रथा समुहें से * ताते लौटि जाउ महराज ॥
यहसुनिसोचसमुझिपिरथीने * अपनो मुर्चा दयो हटाय ॥
कूच कराय गये दिल्ली को * तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
अब तुम दादा जाउ महोबे * सुनतैं आल्हा बढ़े अगार ॥
डोला चलिभयो तब नारेसे * मालिन पुरवा पहुँचो जाय ॥
खबरिसुनतहीफुसियामालिनि * परछन करी बिलमदे क्यार ॥
बोले आल्हा तब बेला से * अब तुम देखो नगर महोब ॥
सुन्दर महल बने महुबे में * बेला देखि २ रहि जाय ॥
महुबे घर घर खबरि फैल गइ * आई बहू चन्देले क्यार ॥
मल्हना देवै सुनवाँ फुलवा * बारहु रानि चन्देले क्यार ॥
साजि आरती द्वारे आईं * परछनि करीं बिलमदे क्यार ॥
आरति करिके लै बेला को * रंगमहल में दयो बिठाय ॥
मुख दिखराई में बेला को * मल्हना दयो नौलखाहार ॥

मल्हना रानीके चरणन पर * बेला कङ्गन धरो उतारि ॥
पूछी मल्हना तब बेला से * कैसे लगे पुत्र के घाव ॥
जवाब दओ तब रनि बेलाने * बायें लगी कटारी आय ॥
गाँसी लागी है मस्तक में * कैवरि निकरि गओ वा पार ॥
सेल लगो है बाँयें अंग पर * ताते हमहिं भरोसा नाय ॥
सुनतै मल्हना रोवन लागी * धरती गिरी तड़ाका खाय ॥
मल्हना रानी के गिरतै खन * सिगरो रोय उठो रनिवास ॥
पूछो बेला चन्द्रावलि से * म्वहि सतखण्डा देउ दिखाय ॥
बेलै संग लओ चन्द्रावलि * चढि अंटा पर पहुँची जाय ॥
ब्रह्मानन्द को सतखंडा तब * बेला देखि २ रहिजाय ॥
देखिके अंटा अपने पतिको * बेला छाँड़ि दई डिडकार ॥
बिन स्वामी के यह अंटा अब * ऐहैं कौने काम हमार ॥
उतरि के बेला सतखण्डासे * औ मल्हना तें पहुँची आय ॥
बोली बेला अब स्वामी को * चन्दन बगिया देउ दिखाय ॥
यह सुनिपलकी मँगवाई तब * रानी सबै भईं असवार ॥
चलिभयेडोला सब रानिनके * औ बगिया में पहुँचो जाय ॥
उतरि के बेला तब डोला से * फुल बगियाको देखनलाग ॥
बीच में बँगला जो ब्रह्माको * तापर चढ़ी बिलमदे रानि ॥
शोभा देखे बेला रानी * नैनन बहै नीर की धार ॥
मल्हना समुझाओ बेला को * महुबे बैठि करो तुम राज ॥
यह सुनिबेला बोलन लागी * हम पर रूठि गओ करतार ॥
लेख विधाता को जैसो कछु * ताको कौन मिटावन हार ॥
बोली बेला रनि देवै से * तुम आल्हा को देउ बुलाय ॥
भयो बुलावा तब आल्हाको * आल्हा आय गये ततकाल ॥

बोली बेला तब आल्हा से * कीरति सागर देउ दिखाय ॥
सङ्ग भए आल्हा बेला के * औ सागर पर पहुँचे जाय ॥
नाव मँगाय लई चन्दन की * औ बङ्गला में पहुँचे जाय ॥
शोभा देखत वा बङ्गला की * बेला मोहि मोहि रहिजाय ॥
देखी चौपरि एक ताख में * सो बेला ने लई उठाय ॥
आवौ लड़िका रनि देवै के * हम तुम खेलैं पंसा सार ॥
आँचल खोलि दयो बेलाने * आल्हा देखि गये शरमाय ॥
तब तौ रूप धरौ डाइन को * औ आल्हा घड़ रही निहार ॥
खैंचि के खाँड़ा आल्हा बोले * चत्री हम डरपन के नाहिं ॥
बोली बेला तब आल्हा से * हौ तुम साँचे जेठ हमार ॥
नाहिं पाप है कछु तुम्हरे मन * साँचे धर्म राज अवतार ॥
तहँ ते उठिके बेला चलिभइ * औ नौका में बैठो जाय ॥
आई नाव पार सागर के * तब डोली में बैठी जाय ॥
बारह ताल हते महुवे में * देखे सबै विलमदे रानि ॥
देखि के आई रङ्गमहल में * औ सासुन से लगी बतान ॥
माता हुक्म देउ जल्दी से * सेवा करौं स्वामि की जाय ॥
शीश काटिके मैं ताहर को * सो स्वामिहि दिखरैहौं जाय ॥
शीश देखि जीहैं स्वामी जो * कछु दिन सेवा करौं बनाय ॥
राज विधाता जो देहैं म्वहिं * तौ मैं देखिहौं चरण तुम्हार ॥
नातरु सती होय स्वामी सङ्ग * जैहौं स्वर्ग लोक सुखधाम ॥
दीन्हीं आज्ञा तब मल्हनाने * पूरन हुइहै काम तुम्हार ॥
चरण लागिके तब मल्हनाके * बेला चली बनाफर साथ ॥
एक पहर केरे अरसा में * गढ़ सिरसामें पहुँची आय ॥
जहँ चौरा थो गजमोतिनको * तहँ पर डाला दयो धराय ॥

उतरि के डोलासे खुइँ आई * घी गुड़ आरति लई मँगाय ॥
करिके पूजा वा चौरा की * बेला हाथ जोरि रहि जाय ॥
करि पैकरमा बेला चलिभइ * औ डोली में भई सवार ॥
आय पहूँची जब तम्बू में * तुरतै लागी करन बयार ॥
नैन उघरि गये तब ब्रह्मा के * औ बेला पर परी निगाह ॥
पूछन लागे तब ब्रह्मानन्द * कहँ तुम लाई शीश उतार ॥
हाथ जोरि बोली बेला तब * धीरज धरौ स्वामि कछु काल ॥
हम हुइ आई गढ़ महुवे को * लागीं चरन सासु के जाय ॥
अब मैं शीश लाय ताहरको * तुम्हरी नजर गुजरिहौं आय ॥
यह कहि हुक्म दओ बेलाने * लश्कर डङ्का देउ बजाय ॥
हुक्म सुनत खन बजो नगाड़ा * लश्कर तुरत भओ तैयार ॥
सजिके बेला ऐसी लागी * जैसे वीर ब्रह्म सरदार ॥
नमस्कार करिके ब्रह्मा को * हरनागर पर भई सवार ॥
आय के ऊदन बोलन लागे * हमहूँ चलिहैं साथ तुम्हार ॥
तब समझाओ बेला रानी * तुम यहुँ रहौ बहुत हुशियार ॥
आज्ञा शीश धारि स्वामीकी * अबहीं लेहौं शीश उतारि ॥
इतनी कहिके बेला चलिभइ * लश्कर कूच दओ करवाय ॥
परिगो लश्कर जब हाँड़े पर * बेला कागज लओ उठाय ॥
कलम दान लै आगे धरिके * पाती लिखन लगी ततकाल ॥
लिखिके पाती पृथीराज को * सो धामन को दई गहाय ॥
लैके पाती धामन चलि भो * पहुँचो पृथीराज दरबार ॥
करी वन्दगी महाराज को * पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलि के पाती राजा बाँची * औ ताहर को लओ बुलाय ॥
बेला पहुँची गढ़ महुवे को * ताने ब्रह्मै दओ जियाय ॥

ब्रह्मा आये हैं लश्कर लै * गौनेको अधकर रहे मँगाय ॥
अबहीं जाय खबर लाओतुम * लश्कर तुरत लेउ सजवाय ॥
इतनी सुनिकै ताहर चलिभै * लश्कर तुरत लओ सजवाय ॥
कूच कराय दओ लश्करको * आ डाँड़े पर पहुँचे आय ॥
भओ सामना दोउ लश्करको * ताहर घोड़ा दओ बढ़ाय ॥
हथि इकदंता पर चौंड़ा है * सोऊ साथै बढ़ो अगार ॥
बोली बेला तब ताहर से * गौने को अधकर देउ मँगाय ॥
इतनी सुनतै ताहर बोले * ब्रह्मा चलौ हमारे साथ ॥
भोजन करो संग हमरे तुम * तो बनिजावै काम तुम्हार ॥
तापर ज्वाब दओ बेला ने * तुम्हरी हमहिं नाहिं विश्वास ॥
तुम्हरे छल में हम ऐहैं ना * ना हम खायँ छलीके साथ ॥
बातन बातन रार बाढ़ि गइ * गुस्सा गई देह में छाय ॥
तुरतै ताहर हुक्म दओ तब * इन पाजिन का देहु भगाय ॥
झुके सिपाही दोऊ दलके * अन्धा धुन्ध करैं तलवार ॥
चलै जुनब्बी औ गुजरातो * ऊना चलै विलायत क्यार ॥
तेगा चटकै बर्दवान का * कटि २ गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
भजत सिपाही ताहर देखे * आगे घोड़ा दओ बढ़ाय ॥
बोले ताहर गुस्सा हुइके * अब तुम खबरदार हुइजाउ ॥
काल आइगो है तुम्हरे सिर * असकहि खैंच लई तलवार ॥
चोट चलाई तब ताहर ने * बेला दीन्हों ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ा वालो * गद्दी कटि मखमलको जाय ॥
फटि अस्तीन गई जामाकी * चुरियाँ खुली विलमदेक्यार ॥
देखि चौंड़िया हाथो घेरो * औ ताहर से कही पुकारि ॥
हाथ न डरिओ तुम बेलापर * सुनतै ताहर गये सकाय ॥

दुचितो देखो जब ताहर को * बेला खैंचि लई तलवारि ॥
आगे बढ़िके शीश काटिलो * औ मुर्चाको दओ हटाय ॥
लश्कर अपनो कूच कराओ * औ तम्बू में पहुँची आय ॥
चौंड़ा लौटि गओ दिल्लीमें * औ पिरथी से कहो हवाल ॥
सुनि घबरायगए पिरथी तब * महलन खबर दई पहुँचाय ॥
रोई अगमा तब महलन में * सिगरो रोइ उठो रनिवास ॥
परो सनाका गढ़ दिल्ली में * रैयति रोय रोय रहिजाय ॥
यहाँ लड़ाई पूरी हुइ गइ * लिखिशिवचरणदईसमुझाय ॥

॥ बेला और ताहर की लड़ाई सम्पूर्ण ॥



॥ श्रीः ॥

अथ

आल्ह खण्ड

चन्दन बगिया की लड़ाई

* आल्हा *

सुमिरन करिके रामचन्द्र को * लै बजरंग बली को नाम ॥
चन्दन बगिया केर लड़ाई * सो अबलिखौंसुमिरिघनश्याम॥
शीश काटि लाई बेला जो * सो थारी में लओ धराय ॥
निकट पहूँची ब्रह्मानन्द के * बोली हाथ जोरि शिरनाय॥
काटि लै आई शिर ताहरको * सो तुम देखौ दृष्टि पसार ॥
सुनतै आँखि खुली ब्रह्मा की * औ बेला को रहे निहार ॥
शीश देखिलो जब ताहरको * तब ब्रह्मा ने कही सुनाय ॥
बैरिहिमारि हुक्म मानो तुम * हमरो दीन्हों डाहु बुताय ॥
शीतल छाती हमरी हुइ गइ * अब तुम सुनो हमारी बात ॥
राज पाट को जो भूखो होउ * तौ तुम नगर महोबे जाउ ॥
नैहर प्यारो होय तुम्हें जो * तौ तुम दिल्लिहि करौ पयान ॥
संग हमारो कियो चहो जो * तौ तुम साथ सती हुइ जाउ ॥
अब हम जीबे को नाहीं हैं * चाहे कोटिन करौ उपाय ॥
इतनी कहतै प्राण छोड़ि दै * बेला गिरी धरनि भहराय ॥
हाय गुसैयाँ यह कैसी भइ * चहुँदिशि रही अँधेरी छाय ॥
दिया बुझाय गयो दोनोंदिशि * अब हम करिहैं कौन उपाय ॥

ऐसेइ बहुत विलापकरो त्यहि * औ ऊदन को लओ बुलाय ॥
बोली बेला बघऊदन से * तुम सुनि लेउ उदैसिहराय ॥
सच विधाता ने दीन्हीं ग्वहिं * हुइहौं अवशि सती पति साथ॥
चन्दन बगिया दिल्ली पति की * सो तुम लावो जाय कटाय ॥
बात हमारी ऊदन मानौ * तव ऊदन फिरि कही सुनाय ॥
हैं सब ओर फौज पिरथीकी * सो हम कस बगियालौंजायँ ॥
गुस्सा हुइ बोली बेला तब * देहौं शाप भसम हुइजाउ ॥
कोपे ऊदन तब तम्बू मैं * औ लाखनि से कही सुनाय ॥
चलिके हम तुम गढ़ दिल्ली से * चन्दन बगिया लावौं कटाय ॥
करि सलाह ऊदन लाखनिने * तुरतै लश्कर लओ सजाय ॥
कूच कराय दओ जल्दी से * औ दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
चन्दन बढ़ई को बुलवाओ * औ दुइ तोड़ा दए गहाय ॥
जल्दी काटो तुम चन्दन अब * यहसुनि चन्दन काटनलाग ॥
तुरत कटाई चन्दन बगिया * लकड़ी छकरन दई भराय ॥
माली भागो तब बगिया से * औ पिरथी तै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी पृथ्वीराज को * औ बगिया को कहो हवाल ॥
लाखनि ऊदनि चढ़ि आये हैं * चन्दन बगिया लई कटाय ॥
सुनतै गुस्सा हुइ पिरथी ने * चौंड़ा धाँधुहिं दियो पठाय ॥
चन्दन बगिया आय कटाई * सो 'ऊदन से लेउ छिनाय ॥
सुनतै चलिभे चौंड़ा धाँधू * औ लश्कर लै चले लिवाय ॥
छकरा घेरि लए चन्दन के * मारा मार दई मचवाय ॥
डाँटो घोड़ा तब ऊदन ने * औ हौदा पर पहुँचो जाय ॥
ढालकि ओझड़ से ऊदन ने * सोने कलशा दओ गिराय ॥
मुर्चा लौटो तब चौंड़ा को * आगे बढ़े उदयसिंह राय ॥

बढ़े सिपाही महुबे वारे * मारु मारु रट रहे लगाय ॥
रोके छकड़ा बिजैसिंह ने * बीकानेर केर सरदार ॥
हिरसिंहबिरसिंहलाखनिभेजो * चन्दन छकड़ा लेउ छिनाय ॥
दोनों झपटे विजयसिंह पर * होदा चलन लगी तलवार ॥
गाँजर वारे हिरसिंह विरसिंह * दोनौं जूझि गये तत्काल ॥
तब लाखनि बोले गंगा से * मामा छकड़ा लेउ छिनाय ॥
हाथि बढ़ाओ तब गङ्गा ने * समुहें बिजैसिह के जाय ॥
झुरमुट हुइगो तब दोनोंको * अपनी खैंचि खैंचि तलवार ॥
गङ्गा मारो बिजैसिंह को * उनको छुटि जनेवा जाय ॥
आगे बढ़ाय दए छकड़ा तब * औ सब लश्कर बढ़ो अगार ॥
झुके महुबिया बीर रूप हुइ * सबके मारु मारु रट लाग ॥
भजे सिपाही तब दिल्ली के * मुर्चा हटो चौंड़िया क्यार ॥
लाखनि ऊदन छकड़ा लैकै * यमुना पार पहूंचे जाय ॥
तम्बू जहाँ रहै ब्रह्मा को * तहँ सब छकड़ा दए पहुँचाय ॥
बोले लाखनि तब ऊदनिसे * बेलै हाल सुनावो जाय ॥
सुनतै चलि भए उदैसिंह तब * बेला पास पहूँचे जाय ॥
करा बन्दगी तब बेला को * औ सबहाल दियो बतलाय ॥
देखो बेला जब चन्दन वह * तब ऊदन से लगी बतान ॥
गीलो चन्दन यह जारहैं ना * सर पर हुइहैं हँसी हमार ॥
सूखो चन्दन लै आवौ तुम * सो हम तुमहिं देयँ बतराय ॥
खंभा बारह हैं दिल्ली में * जहँ पर पृथीराज दरबार ॥
सोई खंभा लै आवौ तुम * पूरन होवै काम हमार ॥
तापर ज्वाब दओ ऊदन ने * है नहिं आरू प्राण हमार ॥
सूखो चन्दन गढ़ कनवजसे * हम जल्दो से दिहैं मँगाय ॥

गुस्सा हुइ तब बेला बोली * अब हम जानी बात तुम्हार ॥
रूप देखि हमरो मोहे तुम * हमरे कन्त दए मरवाय ॥
पारस देखि लखो महुवे में * ताते अकिले दए पठाय ॥
काम तुम्हारो पूरन हुइगो * औ सब इच्छा पुरी तुम्हार ॥
जो नहिं जैहौ तम दिल्लीको * दीहों शाप भस्म हुइ जाउ ॥
यह सुनि चलिभे उदनबाँकुड़ा * औ लाखनि पै पहुँचे जाय ॥
करि सलामसब हाल सुनाओ * सुनतै चले कनौजी राय ॥
आयके बोले रनि बेला से * महुबे करौ राज महरानि ॥
आज्ञा मनिहैं हम तुम्हरी सब * सेवा करैं बनाफर राय ॥
ज्वाब दओ बेला रानी ने * यह नहिं हमरे मनहिं समात ॥
सेज सम्हारो ना बालम की * ना मैं चखी रसोंई जाय ॥
अपने मनको समझाऊँ कस * मैं हुइ गईं निरासिनि राँड़ ॥
कैतो लावो सूखे चन्दन * कै तुम छोरि धरौ हथियार ॥
बोले लाखनि तब ऊदन ते * जल्दी चलौ उदैसिंह राय ॥
कै तौ लैहैं सूखो चन्दन * कै लड़ि दीहैं प्राण गमाय ॥
आगे लड़ाई है खम्भन की * लिखिशिवचरणदिहैंसमुझाय ॥

* इति चन्दन बगिया कटाने की लड़ाई सम्पूर्ण *



* श्रीः *

* अथ *

आल्ह खंड

चन्दन खंभ उखाड़ने की लड़ाई

* आल्हा *

सुमिरनकरिके शिवशङ्करको * लैके रामचन्द्र को नाम ॥
भई लड़ाई जो खम्भन पर * सोसबलिखौंसुमिरिघनश्याम ॥
छाँड़िआशसबनिजजीवनकी * औ सब मया मोह बिसराय ॥
प्राण हथेली पर लीन्हे धरि * ऊदन डंका दौ बजवाय ॥
चलिभये दोनौं तब तम्बू से * लश्कर डंका दौ बजवाय ॥
बाजो डंका तब लश्कर में * तुरतै क्षत्री भये तयार ॥
कूच नगाड़ा के बाजत खन * लश्कर कूच दओ करवाय ॥
पहुँचे धूरे पर दिल्ली के * तहँ पर डेरा दए डराय ॥
सोचैं लाखनि तब अपने मन * औ सब शूर लए बुलवाय ॥
तिनते लाखनि बोलन लागे * यहँ है कठिन मोरचा आजु ॥
मारौ धावा तीनि गोल हुइ * चन्दन खम्भ लेउ उखराय ॥
सुनतैचलिभये सबखम्भनपर * अपनो मरण जानि तत्काल ॥
करिके धावा तीनि गोल हुइ * खम्भन निकट पहूँचे जाय ॥
बारहु खम्भा थे चन्दन के * सो लाखनि ने लए उखराय ॥
सो लदवाय लए छकड़नमें * औ आगे को दए जुताय ॥
सुनी खबरि जब वीर भुगन्ता * रमया दानव लओ बुलाय ॥
लाख सवार लये अपने संग * तुरतै धावा दओ कराय ॥

जायके घेरा उन छकड़न को * औ वीरन से कही सुनाय ॥
भगि न पावैं कोउ समुहें से * सबकी कटा देहु करवाय ॥
इतनी सुनतै सब क्षत्री तब * अपनी खैंचि २ तलवार ॥
बढ़े सिपाही दिल्ली वारे * खट २ चलन लगी तलवारि ॥
लोथैं गिरिगइँ हैं लोथिनपर * रण में बही रक्त की धार ॥
वीर भुगन्ता ने डपटो तब * औ अंगद से कही सुनाय ॥
छकड़ा छीनि लेउ आगे बढ़ि * यह सुनि अंगद बढ़े अगार ॥
खम्भा घेरि लए अंगद ने * लाखनि परशू लये बुलाय ॥
राजा अंगद खम्भा घेर * तुम खम्भनको लेउ छिनाय ॥
इतनी सुनिकै परशू बढ़िगै * औ अंगद को दइ ललकार ॥
खैंचि शिरोही लइ अंगद ने * औ परशू पर दई चलाय ॥
चोट बचाई तब परशू ने * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
चोट चलाई तब अंगद पर * अंगद जूझि गये मैदान ॥
वीर भुगन्ता बढ़ि आगे तब * अपनो भाला दओ चलाय ॥
लगतै भाला परशू जूझे * तब लाखनिने कहो सुनाय ॥
आगे बढ़िकै तुम ऊदन अब * इन खम्भनको लेउ छिनाय ॥
बोले ऊदन तब लाखनि ते * धीरज धरौ कनौजी राय ॥
ऊदन बढ़िगै अब आगे को * लशकर आगे दओ बढ़ाय ॥
वीर भुगन्ता को ललकारो * अब तुम खबरदार हुइ जाउ ॥
बेंड़ी मार दई ऊदन ने * मुर्छा हटो भुगन्ता क्यार ॥
रमया दानव आगे बढ़िगो * औ ऊदन को दइ ललकार ॥
सम्हरो ऊदन तुम घोड़ा पर * यह कहि खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका बघऊदन पर * ऊदन लीन्हीं चोट बचाय ॥
गुर्ज उठाओ बघऊदन ने * सो रमया पर दओ चलाय ॥

गुर्ज के लागत रमया जूझो * ऊदन छकड़ा दए जुताय ॥
बढ़िगै लाखनि तब आगेको * घेरो महल पिथौरा क्यार ॥
लेहौं बदलो संयोगिन को * तव छाती को डाहु बुताय ॥
तौ लौं आए ऊदन बाँकुड़ा * औ लाखनि से लगे बतान ॥
कौन बातको दादा बिचले * सो तुम हमसे कहो सुनाय ॥
बोले लाखनि तब ऊदन से * डोला लिहैं अगमदे रानि ॥
बदलो लेहौं संयोगिन को * तव छाती को डाहु बुझाय ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तव * दादा समुझि लेउ मनमाहिं ॥
पृथीराज बिसहिन को चढ़िगे * कोई मर्द रहो यहँ नाहिं ॥
हाथजो डरिहो तुम महलनमें * तो जग हुइहै हँसी तुम्हार ॥
धीरज राखौ तुम अपने मन * अवहीं डोला लिहौं फँदाय ॥
असकहिचलिभयेउदनबाँकुड़ा * पहुँचे रङ्गमहल में जाय ॥
अगमा देखो जब ऊदन को * मन में बहुत गई घबराय ॥
बोलन लागी तब ऊदन से * तुम सुनिलेउ उदैसिंह राय ॥
हाथ न डारिश्रो तुमतिरियनपर * नहिं चत्रीपन जाय नशाय ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तव * धर्म की माता लगौ हमार ॥
लाखनि बिचले हैं फाटकपर * बदलो लिहैं संजोगिनक्यार॥
सो हम पहिले उनहिं बुझाश्रो * पाछे आए पास तुम्हार ॥
बात मानलेउ यह हमरो तुम * बाँदी को डोला देउ सजाय॥
सुनतै बाँदी को बुलवाश्रो * औ डोला को दश्रो सजाय ॥
चलिभौ डोला रंगमहल से * औ फाटक पर पहुँचो आय ॥
ऊदन आय गए फाटक पर * डोला आगे दश्रो निकार ॥
करी वन्दगी तव लाखनि को * औ यह कही उदयसिंह राय॥
पैज तुम्हारी पूरी हुइ गइ * डोला आश्रो अगमदेक्यार ॥

डोला फेरि देउ अपनो करि * तो जग होवै नाम तुम्हार ॥
कही मानिके बघऊदन की * लाखनि डोला दयो घुमाय ॥
लाखनिचलिगयेतबफाटकसे * औ सुर्ग पर पहुँचे जाय ॥
फ़ौज कटीलो पृथीराज की * बिसिहिनिजीति पहूँची आय ॥
सुनी हाल यह पृथीराज ने * लाखनि खंभ लए उखराय ॥
सङ्ग में उनके बघऊदन हैं * यह सुनि पृथीराज चौहान ॥
चौंड़ा धांधू को बुलवायो * अबहीं खंभा लेउ छिनाय ॥
हुक्म पायके तब दोनों ने * अपने हाथी दए बढ़ाय ॥
झूमत आओ आदि भयंकर * तापर चढ़े वीर चौहान ॥
बोले पृथीराज धाँधू से * चन्दन खंभा लेउ छिनाय ॥
हाथी बढ़ाओ तब धाँधू ने * चन्दन खंभ लिए घिरवाय ॥
लाखनि बोले तब धनुआँसे * भैया बहुत रहेउ हुशियार ॥
जो यह खम्भा दिल्ली जै हैं * तौ सब जै हैं काम नशाय ॥
इतनी सुनतै धनुआँ तेली * अपनो घोड़ो दई बढ़ाय ॥
यरु ललकार दई धाँधू ने * धनुआँ खबरदार हुइ जाउ ॥
खैंचि शिरोही लइ धनुआं ने * औ धाँधू पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई धाँधू ने * धनुआँ चोट चलावन लाग ॥
सात शिरोही गहिगहि मारो * तुरते टूटि गई तलवार ॥
खाली मूठ हाथ में रहि गइ * तब धाँधू ने कहो ललकार ॥
खैंचि शिरोही धाँधू मारो * धनुआँ गिरो भूमि में जाय ॥
धनुआँ जूझत परलै हुइ गइ * लला तमोली बढ़ो अगार ॥
बोले लाखनि तब ऊदन से * धाँधू छकड़ा लए छिनाय ॥
घोड़ा बढ़ाओ बघऊदन ने * औ धाँधू तै पहुँचे जाय ॥
गुर्ज उठाओ तब धाँधू ने * औ ऊदन पर दयो चलाय ॥

चोट बचाई बघऊदन ने * अपनो भाला दयो चलाय ॥
हाथी भागि गयो धाँधू को * देवी मरहठा पहुँचो जाय ॥
खैंचि शिरोही लइ जल्दी से * सो ऊदन पर दई चलाय ॥
चोट बचाई बघऊदन ने * तुरतै खैंचि लई तलवार ॥
चोट चलाई तब देवी पर * देवी गिरो भूमि पर जाय ॥
देवी मरहठा जूझि गयो जब * पिरथी लश्कर दयो बढ़ाय ॥
बढ़े सिपाही दिल्ली वाले * रणमें कठिन करैं तलवार ॥
धीरज दै दै रजपूतन को * लाखनि आगे दयो बढ़ाय ॥
झुरमुट हुइगो दोनों दलको * अन्धा धुन्ध चलै तरवारि ॥
पाँच कोसलों चली शिरोही * औ बहि चली रक्तकी धार ॥
बोले ऊदनि तब लाखनि से * अब हौदा पर होहु सवार ॥
चढ़िगे लाखनि तबहथिनीपर * तुरतै साँकल दई गहाय ॥
पूरब पाटी गे लाखनि तब * पश्चिम गये उदयसिंह राय ॥
निकसै भुरुही जौन गोलहुइ * तहँ पर काटि करैं खरिहान ॥
लाखनि ऊदनकी धमकिनमें * सब दल रैन बैन हुइजाय ॥
भजे सिपाही तब दिल्ली के * अपने डारि २ हथियार ॥
भजत सिपाही पिरथी देखैं * आदि भयङ्कर दयो बढ़ाय ॥
एक ललकारदई लाखनिको * आगे बढ़े उदयसिंह राय ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तब * तुम सुनि लेउ बीर चौहान ॥
करैं सामना जो तुम्हरो हम * तौ यह हमहिं मुनासिबनाहिं ॥
तुम्हरी बरोबरि के नाहीं हैं * हमतौ मानत अदबतुम्हारि ॥
चन्दन खम्भा हम लै जैहैं * चाहे कोटिन करौ उपाय ॥
सती होइहैं बेला रानी * ताते मानो कही हमार ॥
यहसुनिसोचिसमुझिपिरथीने * अपनो मुर्चा दयो फिराय ॥

पिरथी लौटि गये दिल्ली को * लाखनि छकड़ा दए बढ़ाय ॥
रंगमहल में गये पिरथी जब * तब अगमा ने कही सुनाय ॥
लाखनि बिचले थे फाटक पर * बदलो लिहैं संयोगिन क्यार ॥
महल में आये उदैसिंह तब * बाँदी को डोला लो सजवाय ॥
सो दिखलाय दओ द्वारे पर * औ लाखनहि दओ समुझाय ॥
डोला फेरि दओ महलन को * राखी लाज उदैसिंह राय ॥
इतनी सुनतै पृथीराज तब * बहुतै खुशी भए त्यहिकाल ॥
यहौ लड़ाई पूरी हुइ गइ * लिखि शिवचरण दई समुझाय ॥

* इति चन्दन खंभ उखाड़ने की लड़ाई सम्पूर्ण *



बेला के सती होने पर लड़ाई

सुमिरन करिके नारायण को * औ शङ्कर के चरण मनाय ॥
लिखत लड़ाई सती होन की * यारो सुनियो कान लगाय ॥
लाये खम्भा उदयसिंह जब * तब बेला तै पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी बघऊदन ने * औ खम्भन को कही हवाल ॥
बोली बेला बघऊदन से * तुम सुनिलेहु उदयसिंह राय ॥
पहिलो धूरा जहँ दिल्ली को * दूजो धुरो महोबे क्यार ॥
तीजो धूरा जहँ कनवज को * चौथो बलख बुखारे क्यार ॥
चारों धूरे के अन्तर माँ * ऊदन सरा रचावो जाय ॥
सुनतै चलिभये उदन बाँकुड़ा * संगै चले कनौजी राय ॥
लश्कर कूच कराय दयो सब * चन्दन छकड़ा दए जुताय ॥
सरो रचाय दम्रो धूरे पर * औ लाखनिसे कही सुनाय ॥
समय आयगो अब मरिबे को * दादा फौज लेउ सजवाय ॥
जितनो लश्करथोकनवजको * सो सजवावो कनौजी राय ॥
जितनो लश्करथो महुबे को * सो सजवावो बनाफर राय ॥
चारि चौंसधे के धूरे पर * सुन्दर चिता भई तैयार ॥
खबरिपहुँचिगइगढ़दिल्लीको * बेला सती होनको जाय ॥
हुक्म दै दओ पृथीराज ने * सारी सजै फौज चौहान ॥
सजिगो लश्कर गढ दिल्लीको * अपना सजे बीर चौहान ॥
आदि भयंकर हाथी आयो * तापर बैठि पिथौराय राय ॥
चौंड़ा धाँधूको बुलवाओ * औ उनसे यह कही सुनाय ॥
झारि महोबे चढ़ि आओ है * औ चढ़ि आये कनौजी राय ॥
ऐसोसमयनफिरिफिरिमिलिहैं * ताते बहुत रहेउ हुशियार ॥

वेला केर सत्त के बाजै * मारू बजैं पिथौरा क्यार ॥
सब लश्कर लै पिरथीचलिभै * ओ धूरे पर पहुँचे आय ॥
खबरि फैलि गइ गढ़ महुबे में * वेला सती होन को जात ॥
रैयति धाई सब देखन को * औ धूरे पर पहुँची आय ॥
अगहन शुक्ल पक्ष एकादशि * बेला सती भई तेहि काल ॥
सरके निकट गई वेला जब * पतिकी लाशि लई मँगवाय ॥
सो धरवाय लई सर ऊपर * तब सबहीविधिकियोसिंगार ॥
मुखमें बीरा हाथ नारियल * बेला सती भई तेहि काल ॥
करि पैकरमा सर पर बैठी * तब पिरथी ने कही पुकारि ॥
जो कोउ होवै चन्द्रवन्श में * सो सरमाहिं लगावै आगि ॥
जाति बनाफर की ओछी है * सो नहिं आग लगावै जाय ॥
इतनी सुनिके ऊदन बोले * है यह हुक्म विलमदे क्यार ॥
सर में आगी तुमही दीजो * सो हम आगी दिहैं लगाय ॥
आगी सर में हमहीं देहैं * चाहे प्राण रहै की जाय ॥
बातन बातन बतबढ़ हुइगो * औ बातन में बढ़िगइ रारि ॥
हुक्म दै दओ पृथीराज ने * सबके मूड़ लेहु कटवाय ॥
बढ़े सिपाही दोनों दल के * क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
खट २ खट २ तेगा बाजै * बोलै छपक २ तलवारि ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै विलायत क्यार ॥
तेगा चटकै बर्दवान के * कटि २ गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
पैदल गिरि गये पैग २ पर * उनके दुइ दुइ पैग असवार ॥
हाथी डारे बिसे बिसे पर * छोटे पर्वत की अनुहार ॥
बारह कोसी चलै शिरोही * तहँ वहि चली रक्तकी धार ॥
चौंड़ा ब्राह्मण के समुहें पर * ढेबा करो सामना जाय ॥

बिकट लड़ाई भइ दोनौं में * ढेबा जूझि गयो मैदान ॥
घोड़ी बढ़ाई जगनायक जब * औ चौंड़ा को दई ललकार ॥
बहुत लड़ाई भइ दोनौं में * जगनिक जूझि गये मैदान ॥
धावन भेजो पृथीराज ने * भूरा मुगलै लयो बुलाय ॥
हुक्म दैदओ तब भूरा को * सबकी कटा देहु करवाय ॥
जान न पावैं कोइ महुबे को * अपनी खैंचि लई तलवार ॥
बोले सैयद से लाखनि तब * चाचा राखो धर्म हमार ॥
बरनी तुम्हरी को भूरा है * सो तुम खूब रहेउ हुशियार ॥
घोड़ो बढ़ाई तब सैयद ने * औ भूरा पै पहुँचे जाय ॥
यक ललकार दई भूरा को * भूरा खबरदार हुइ जाय ॥
खैंचि शिरोही लई भूरा ने * औ सैयद पर दई चलाय ॥
तीनि बार कीन्हें भूरा ने * तब उड़ गई तेगकी धार ॥
खैंचि शिरोही सैयद लीन्हों * बिस्मिल्ला कर दई चलाय ॥
गिरिगो भूरा तब धरती पर * सैयद लीन्हों शीश उघारि ॥
भूरा जूझत पृथीराज ने * बीर भुगंतै लयो बुलाय ॥
बीर भुगन्ता आगे बढिगो * औ सैयद तहँ पहुँचे जाय ॥
खबरदार रहिहो घोड़ापर * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
लै कमान हियरा डटिगैत्यहि * बीर भुगन्ता बढ़ो अगार ॥
चोट बचाय लई सैयदने * तब त्यहि खैंचि लई तलवारि ॥
झुरमुट हुइगो तहँ दोउनको * औ फिरि खूब चली तलवार ॥
चोट चलाई बीर भुगन्ता * औ सैयद को दओ गिराय ॥
बोले लाखनि तब गंगा से * बीर भुगंते देउ भगाय ॥
हथिनी दाबी तब गङ्गा ने * बीर भुगंतै दइ ललकार ॥
लैके भाला बीर भुगन्ता * सो गङ्गापर दओ चलाय ॥

चोट बचाय लई गंगा ने * औ फिरि खैंचि लई तलवार ॥
चोट चलाई तब गंगा ने * बीर भुगन्ते दओ गिराय ॥
यह गति देखी पृथीराज ने * तब धाँधू से कही सुनाय ॥
बीर भुगन्ता यहु मारो गो * को गाढ़े में ऐहैं काम ॥
हाथी बढ़ाओ तब धाँधू ने * औ आगे बढ़ि दइ ललकार ॥
कौने मारे बीर भुगन्ते * सो समुहें हुइ देइ जवाब ॥
समुहें पहुँचे गंगा ठाकुर * अपनी हथिनी दई अड़ाय ॥
गुर्ज उठाओ तब धाँधू ने * सो गंगापर दओ चलाय ॥
बढ़ि गइ हथिनी तब आगे को * नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
खैंचि शिरोही लइ गंगा तब * औ धाँधू पर दई चलाय ॥
टूटि शिरोही गइ गंगा की * खाली मूठ हाथ रहिजाय ॥
सोचे गंगा अपने मन में * हमरो काल रहो नियराय ॥
हाथी बढ़ाओ तब धाँधू ने * औ फिरि खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका तब गंगा पर * गंगा दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटिके गद्दी कटि गइ * उनको छूटि जनेवा जाय ॥
गंगा जूझि गये खेतन में * लाखनिसोचिसोचि रहिजाय ॥
सुपना महावतसे बोलो तब * भुरुही आगे देहु बढ़ाय ॥
भुरुही बढ़ि गइ तब आगेको * औ धाँधू तै पहुँचो आय ॥
बोले लाखनि तब धाँधू से * अब तुम खबरदार हुइ जाउ ॥
धाँधू बोले तब लाखनि से * पहिले लीजै चोट चलाय ॥
यह सुनि धाँधूलै कमानतब * कैवर छाँड़ि सामुहे दीन्ह ॥
हथिनीहटिगइ तबलाखनिकी * कैवर निकरि गओ वा पार ॥
भाला मारो तब धाँधू ने * लाखनि लीन्हों चोट बचाय ॥
खैंचि शिरोही लइ धाँधू ने * सो लाखनिपर दई चलाय ॥

ढाल अड़ाय दई लाखनिने * तापर भयो जड़ाका जाय ॥
टूटि शिरोही गइ धाँधू को * खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
सोचे धाँधू अपने मनमें * हमरो काल पहूँचो आय ॥
गुर्ज उठाओ लाखनि राना * लैके रामचन्द्र को नाम ॥
चोट चलाई तब धाँधू पर * माथे में गो गुर्ज समाय ॥
धाँधू जमुत परले हुइ गइ * बोले पृथीराज घबराय ॥
बड़ो शूरमा यहु मारो गो * अबको करिहैं आय सहाय ॥
नौसे हाथी को हल्का है * आदि भयंकर बढ़ा अगार ॥
बीच में घिरिगे लाखनिराना * चारो ओरी देखन लाग ॥
अपनो सूझि परै कोऊ नहिं * सोचे मनहि कनौजी राय ॥
छाँड़ि आसरा तब प्राणन को * सबकी मया मोह बिसराय ॥
खैंचि शिरोही लइ लाखनिने * रण रू सन्मुख गये समाय ॥
जौन गोल हुइ मुरुहा निकसे * क्षत्रिन काटि करै खरिहान ॥
मारत धावैं लाखनि राना * भारी देत जायँ ललकार ॥
अकिलेलाखनिकीधमकिनमें * सबदल रेन बेन हुइ जाय ॥
डेढ़ पहर भर चलो शिरोही * सरपर बहो रक्त की धार ॥
लाखनि राना ढाल अड़ाये * समुहें खड़े पिथोरा राय ॥
आगि लगन पाई नहिं सरमें * बेला लटैं दई छिड़काय ॥
लपटैं छूटन लगी लटन से * तब सर जरन लगो ततकाल ॥
बोले लाखनि पृथीराज से * तुम सुनि लेउ पिथोरा राय ॥
है कोउ शूर बीर तुम्हरे दल * समुहें लड़े हमारे साथ ॥
हम नहिं हटिहैं रण समुहेंसे * चाहे प्राण रहै कै जाय ॥
तब समुझायो पृथीराज यह * लाखनि मानो कही हमार ॥
लावो मुरुही हमरे दल में * हम तुम लूटैं नगर महोब ॥

तापर ज्वाब दियो लाखनिने * यहनहिं धर्म क्षत्रियन क्यार ॥
घूँस खाँय जोरखा चंदिके कहुँ * औ घटि करैं काहु के साथ ॥
इतनी सुनतै पृथीराज ने * करमें लै लइ लाल कमान ॥
बाइस तीर रहे तरकस में * सो सब समुहें दई चलाय ॥
ढाल फार लाखनि रानाकी * छाती निकरि गये वा पार ॥
देह न हाली जब लाखनिकी * पिरथी गये सनाका खाय ॥
महाबली जोधा लाखनि है * जासो हम जीतनि के नाहिं ॥
मारे न मरिहैं यह काहू से * यह कहि मनमें गये लजाय ॥
सुरही हथिनी तब आगे बढ़ि * आदि भयङ्कर दओ हटाय ॥
मुर्चा हटिगो पृथीराज का * पीठी देखि पिथौरा क्यार ॥
मुर्छितहुइतबलाखनिगिरिगये * करते छूटि परो तब ढाल ॥
ढाल उठाय लई चौंड़ा ने * औ ऊदनि तै पहुँचो जाय ॥
बोलो चौंड़ा हँसि ऊदन से * ऊदन देखो दृष्टि पसार ॥
थाती लाये जो कनवज से * सो तुम यहँ पर दई गमाय ॥
पड़ो लाशि लाखनि रानाको * सो तुम जाय लेउ पठवाय ॥
सुनतै घबरायो ऊदन तब * औ घोड़ा को दओ बढ़ाय ॥
जाय लाश देखो लाखनिकी * ऊदन रोय उठे ततकाल ॥
हाय राम कहँ गये मित्रतुम * गद कनवजको दीप बुझाय ॥
माता मिलिहै ना देवै सम * भाइ न मिलै बीरमलिखान ॥
मित्र कनौजी सम ना मिलिहैं * चाहे धरौं सात अवतार ॥
हम कहि आये थे तिलकासे * पहिले मरैं उदयसिंहराय ॥
सो हम झूठे भये यहाँ पर * कैसे मुख दिखरैं हैं जाय ॥
मरणा हमारो अब नीको है * जाते शोक मोह मिटि जाय ॥
सोचि समुझिके ऊदनचलिभये * अपनौ मरणा करी अखत्यार ॥

विना कनौजी के जीबो अब * हमरो बृथा अहै जगमाहिं ॥
चौंड़ा ब्राह्मण जो म्वहिं मारै * मैं बैकुण्ठधाम को जाउँ ॥
यही सोचि के बघऊदनि ने * घोड़ा बेंदुला दओ बढ़ाय ॥
जाय सामुहें ललकारो तब * ब्राह्मण खबरदार हुइजाय ॥
हम तुम खेलैं रण खेतन में * देखौं कापर राम रिसायँ ॥
इतनी सुनिके चौंड़ा ब्राह्मण * अपनो हाथी लओ बढ़ाय ॥
ऊदन सम्हरि जाउ घोड़ा पर * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
इतनी कहिके चौंड़ा ब्राह्मण * करमें लैलइ लाल कमान ॥
तीर निकारि लओ तरकससे * औ ऊदन पर दओ चलाय ॥
चोट वचाय लई ऊदन ने * चौंड़ा लीन्हीं साँग उठाय ॥
सो धरि धमकी बघऊदन पर * ऊदन लीन्हीं चोट बचाय ॥
मारो भाला तब चौंड़ा ने * सोऊ ऊदन गये बचाय ॥
फिरिसुधि आई बघऊदन को * हमने मरन करो अखत्यार ॥
फिरि क्यों लड़त बृथा चौंड़ासे * यह मन सोचि उदैसिंह राय ॥
डाटो घोड़ा बघऊदन ने * औ हौदा पर पहुँचे जाय ॥
ढाल की ओझड़ से ऊदनने * सोने कलशा दियो गिराय ॥
मुड़िया हौदा भौ चौंड़ा को * चौंड़ा खैंचि लई तलवार ॥
तीर चलाय दओ समुहें पर * आल्हा लै गए चोट बचाय ॥
गुर्ज चलायो तब चौंड़ा ने * सोऊ आल्हा गए बचाय ॥
खैंचि शिरोही लइ चौंड़ा तब * सो आल्हा पर दई चलाय ॥
सात शिरोही हनिहनि मारी * आल्हा दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
टूटि शिरोही गइ चौंड़ा की * मनमें गओ सनाका खाय ॥
चौंड़ै पकरो तब आल्हा ने * औ हौदा से लओ उतारि ॥
सोचे आल्हा अपने मन में * द्रोणाचारज को औतार ॥

यहि वरदान अहै देवी को * धरती रक्त बुन्द गिरिजाय ॥
दुसरो चौंड़ा होय त्यार तब * ताते मारौं याहि सम्हारि ॥
करो जड़ाका बघऊदन पर * बायें उठी गैंड़ की ढाल ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ावाली * सोने फूल गिरे झहनाय ॥
शीश उतारि लओ चौंड़ा ने * ऊदन स्वर्ग लोक को जाय ॥
ऊदन मरगा देखि इन्दल ने * बढ़ि आल्हा से कही सुनाय ॥
काहे दादा यह कैसी भइ * पहुँचे उदयसिंह सुरधाम ॥
चौंड़ा मार्यो है चाचा को * तुम चौंड़ा को डारो मारि ॥
बरनी हमरो को नाहीं वह * देतो अबहिं जान ते मारि ॥
यह सुनि आल्हा गुस्सा हुइके * आगे हाथी दओ बढ़ाय ॥
पहुँचि सामुहेंत्यहि ललकारो * ब्राह्मण खबरदार हुइ जाउ ॥
हाथी बढ़ाय दओ चौंड़ा ने * औ समुहें पर पहुँचो जाय ॥
लाल कमान लई चौंड़ा ने * लओ तर्कस से तीर निकार ॥
मीजि मीजि के चौंड़ा मारो * औ धरती में दओ गिराय ॥
देखि हाल यह पृथीराज ने * अपनो हाथी दओ बढ़ाय ॥
यक ललकार दई आल्हाको * आल्हा खबरदार हुइ जाय ॥
सम्हरि जाउ तुम अब हौदामें * तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
भाँगे बचिहौ ना खेतन में * समुहें खेलौ जूझ अघाय ॥
घुन्डी खोलि दई आल्हा ने * समुहें से छाती दई अड़ाय ॥
धर्म नहीं है यह क्षत्रिन को * जो समुहें जायँ बराय ॥
चोट चलाय लेउ अपनी तुम * मन ते मेटि लेउ अरमान ॥
इतनी सुनिके पृथीराज ने * करमें लीन्ही लाल कमान ॥
तीर चलाय दिओ समुहें पर * लागो तीर बाँह में जाय ॥
दुध धार निकरी भुजते तब * आल्हा सोचिसोचि रहिजाय ॥

हम जानते थे अपने मन में * अम्मर मेरे उदैसिंह राय ॥
जो हम जनते हम अम्मर हैं * तौ क्यों मरत उदैसिंह राय ॥
साँकल लैकै तब आल्हा ने * पचशावदको दइ पकराय ॥
फेरो साँकल पचशावद ने * सब दल काटि करै खरिहान ॥
तेग निकारि लई आल्हा ने * समुहें गोल गये समियाय ॥
सिंहकि झपटनि आल्हा दौरे * रणमें करन लगे तलवार ॥
हाथी घोड़ा औ क्षत्रिन को * आल्हा रणमें दयो गिराय ॥
सब दल कटिगो चारि ओरसे * लोथिन ऊपर लोथि दिखाय ॥
चारो ओरी आल्हा देखो * सबदिशि सूनसान दिखराय ॥
शूर बीर सबही रण जूझे * अकिले रहो पिथौरा राय ॥
हाथी बढ़ायो तब आल्हा ने * पृथीराज से कही सुनाय ॥
अब तुम सम्हरि जाउ होश में * हमरी देखि लेउ तलवारि ॥
खैंचि शिरोही लइ आल्हा जब * तब इन्दल ने कही सुनाय ॥
हाथ चलैयो ना पिरथी पर * है यह शब्दबेध चौहान ॥
बात मानि लइ तब इन्दल की * औ हौदा पर गे नगिचाय ॥
लील छुआय दयो आँखिन में * अपनो करिके दौ लौटाय ॥
खबरि हुइ गई गढ़ महुवे में * सब कटिमरे महुबिया ज्वान ॥
जितनी फौज हती कनवज की * सोऊ कटी समर मैदान ॥
हाहाकार परो महुवे में * रैयत रोय रोय रहिजाय ॥
देवै सुनमा फुलवा चलिभइ * सरके निकट पहूँची जाय ॥
संग में लीन्है सब रंडियनको * सुनमाँ सबसे बढ़ो अगार ॥
समुहें इन्दलको देखो जब * तब इन्दल से पूछन लाग ॥
आल्हा ऊदन तुम देखे कहुँ * उनकी बदी उड़ानो आय ॥
बोले आल्हा तब इन्दल से * समुहें ठाढ़ी मात तुम्हार ॥

नाम हमारो लेत सामुहें * कलियुग समुहें है इहिकाल ॥
नाम क्षत्रियन की तिरियालइ * तिनको क्षत्रिधर्म नशि जाय ॥
बेटा चलौ साथ हमरे अब * हम तुम बनको करैं पयान ॥
हाथी बढ़ायो जब आल्हा ने * सुनमाँ पकरी पूँछ सुधारि ॥
पूँछ काटि दीन्हो हाथी की * सुनमाँ गिरी धरनिपर आय ॥
कजली बनका गे आल्हा तब * बेटा इन्दल संग लिवाय ॥
सुनमाँ आई लौटि सरापर * कुण्डमें गिरि दै प्राण गमाय ॥
रँड़िया जितनी थीं महुबेकी * सबने दीन्ही प्राण गमाय ॥
रण जागत है नित महुबे को * मारहु मारहु शब्द सुनाय ॥
सुनी खबरि जब रनिमल्हनाने * तिरिया दीन्हें प्राण गमाय ॥
हाय हाय करि रोवन लागी * सूना हुइगौ नगर महोब ॥
सुनो हाल जब परिमालै ने * सिगरे क्षत्री गये बिलाय ॥
तेरह लङ्घन करि दुखसे तब * राजा दीन्हे प्राण गमाय ॥
मल्हना रानी सत्ती हुइ गइ * लै लै पारबती को नाम ॥
आल्हखण्ड यह पूरो हुइगौ * रहिगौ एक रामको नाम ॥
असली तेइस बावन गढ़को * साखालिखो शिवचरण लाल ॥
पावस ऋतु महँ पढ़हु निरन्तर * सुखसो युवक वृद्ध अरु बाल ॥

* इति बेलाके सती होने पर लड़ाई *

* आल्ह खण्ड सम्पूर्ण *

पुस्तक मिलने का पता—

भार्गव पुस्तकालय,

गायघाट, बनारस सिटी ।

बाबू कैलासनाथ भार्गव द्वारा-भार्गवभूषण प्रेस, काशी में मुद्रित ।

नक्कालोंसे सावधान

प्रकाशक-भार्गव पुस्तकालय, बनारस

लेखक—अमरपाल सिंह "विशारद"

देखकर लीजियेगा

अन्यथा धोखे में पड़कर पछताइयेगा।

कोकशास्त्र

[मानव रति तथा जीवन सम्बन्धी एक अपूर्व ग्रंथ]

आजकल वैवाहिक जीवन भार-स्वरूप और दुनियाँके झंझटोंका केन्द्र बन रहा है। पति और पत्नी इच्छा रखते हुए भी एक दूसरेको प्रसन्न नहीं रख सकते, कारण यह है कि पति-पत्नी अपने २ कर्तव्योंको नहीं जानते। दम्पतिका एक दूसरेके प्रति क्या कर्तव्य है, वैवाहिक जीवन क्योंकर सफल और सुखमय हो सकता है, गृहस्थाश्रम किसप्रकार स्वर्गका नमूना बनाया जा सकता है, स्त्री पुरुषको पुरुष स्त्रीको किस प्रकार प्रसन्न और वश में रख सकता है इत्यादि २ बातोंको सर्वसाधारणके सामने रखनेके लिये ही यह पुस्तक प्रकाशित की गई है। पृष्ठ संख्या ४०० । सचित्र और जिल्ददार पुस्तकका दाम २)

पता—भार्गव पुस्तकालय बनारस सिटी

